সাহিত্য-পরিষদ্রাত্ববিদী--সং ৫০

শ্রীশ্রীপদকণ্পতরু

অর্থাহ

পদকর্জা বৈশ্ববনাদের সঞ্চলিত দার্গ্ধশতাধিক বৈশ্বব পদকর্জ্ব-গণের তিন সহজ্ঞের অধিক দানামণি এবং সম্পাদকের সংস্থলীত ও পরিশিন্টে মুক্তিত প্রায় এক সহয় গদাবলি, শন্ধশোষ, পদস্তী, ভূমিক। ইত্যাধি-সম্বশিত পদসংশ্বঃ।



দ্বিভীয় খণ্ড

(ভূতীয় শাৰা)

শ্রীসভীশচন্দ্র রায় এম্ এ সম্পাদিত

কলিকাতা

২৪০া১ অপান সারকুলার রোড, বস্টার-গাহিত্য-পরিষ্ মন্দির হইতে

শ্ৰীরাসক্ষণ সিংহ কর্ত্তক

প্রকাশিত।

26.0 m

205

Barrior;

8-1-4/81

Ban 294.5512 P1235

Printed by

P. C. Mittra, at the Visyakosha-Press

9. Visrakosha Lane, Bagbazar, CALCUTTA.

THE ASIATIC SOCIETY
CALCUTTA 700016

Acc. No. 63733

SL. NO- 065406

বিশ্বর-স্কৃতী তৃতীয় শাখা

প্রথম পর্ব	,	विवन	शृ क्षेत्र
		विकरमस्यत्र द्वाम अङ्गरकत्र प त्रश्रमोछा	2.3
(अश्वरमोज्य)		वाक्षिकरत्रत्र स्थान श्रीकृत्कत्र व्यवश्लोकः	***
বিষয় প্রাথ		চতুর্থ পল্লব	
४वर(पोका, — श्रीरमोत्रहः	>		
वंबरकोळा,—-शिन्नणान-वृत्त्व	\$	(স্বহুংদৌজ্য-সম্প্রোগ	
यमध्योजा भाषाम-मूत्र श्रीतमीत्राम		बिक्टक केल्पल जिल्लाम अस्क-बावा	43.5
प्रश्म हो, श्रीप्राधात केंकि	8	दबूना-कृत्त याथवी-कृत्य जैतायात चार्किता	40
গ্রীকৃষ্ণের প্রকৃতি	ŧ	শ্রীরাধাক্তকের সঙ্গোগ	\ "\"
গোবটন-কুলে জীক্তফের স্থিত জীক্তাধার বিশ্ন	*	প্ৰথম পদ্ৰব	
,, বিতীয় প্রাব		(क्रमांगभ)	
্য (ব্যয়ংলোজ্য)		त्रभागम,	6 b
	٠.	जीवाधाङ्गरक्षत्र समाग्न	28
44641201 (441) 0-1141	•	সারী ও শুকের উক্তি	8 •
শ্ৰীরাধার দিবাভিসার	;>	শ্ৰীয়াধা,—খাধীনভৰ্কা	82
পিবাভিসারে শ্রীরাধা ও শ্রীক্ষকের উক্তি-প্রত্যুক্তি	и	बिश्वास्थ्य मिन गुलिस्य जनम	. 63
क्रिक्षमध्य क्रितानात्र वर्षा त्वाथ थ क्रियाशास्त्रका		বৰ্চ পল্লৰ	
উন্ধি-প্রত্যক্তি	78	•	
বীরাধাক্তকের কুল-পূত্র মিশন	30	(মুসোদসার)	
ভূজীয় পম্বৰ		इरनांग्नाम,	#9
• ",		স্থীৰ নিকটে জীয়াধায় বলোলায়	34
(वदश्योग)		দ্বসোৰগাৰাছৰাৰ,—জীগৌরচজ	84
पनरकोळा,विद्योतस्य	>5	শ্ৰীরাধ্যর প্রতি সধীর শ্রন্থ	¢-
परारहोका,विविधानमध्य	>	শীরাধার মদোদশার	45
नानिकामीत द्वारन कैत्ररकत प्रदर्शनका		वश्च-वरमामात्र,शिरमोत्रहस्र	***
मानिनीत त्रात वीकृत्कत प्रशासका	२५	🕒 বাধার অপ্নবদোদনার	₩8
शतानीत त्यान जिल्लाक नाम्याचा	· 10	পুনক জীয়াধার অভি স্থীয়-অম	* **
द्यवानिनीय त्यत्न विकृत्कत बुक्तरानोका	3.0	Mainia scrippia	*1
Allegia Car. Bacat annies	44	न्त्रक प्रत्यापम्हत्राच्यान-विद्योगस्य	. 65
		Bristo care, mair blo	, triburi - 19 #

.

(449	† *	্ বিশ্বস	- Service
্ৰৰণ —	45	্থেবৰ স্থান্ত কণাছত্বাপ শ্ৰীকাণাৰ কণাছত্বাপ	isty Sales
सम्बद्धाः अस्त्रात् । पाद्यस्य । सम्बद्धाः अस्त्रात् । पाद्यस्य । स्त्रात् । स्त्रात् । स्त्रात् । स्त्रात् ।	44	्यमण्यात्र प्राथम् भूमणः ज्ञाशस्त्रात्र	3 ep.
पुनक भैंदाधात स्माहरात, — नवार स्व पुनक भैंदाधात स्माहरात	* 7	्राच्या आराहर्षाय-क्यायाः शास्त्रद्धाः (सर्वेशाय-स्थापः विश्विकः)	252
पुरुष्क अस्ताकाक— मणीव देखा	2) 1)	গুন্ত শ্ৰীকাধাৰ স্বপান্তবাপ	224
चन्य अस्मानम् व देशकोत्रस्य		्याच्याच्याः भन्तवात्रवरम् इत्तवः अकृति वृद्धाः स्वति । 	3 84,
कला च अरमानम्बाद्धाःमधीन् विकि	6.4 6.4	四本作品 可假式	
प्रमाण मध्यावसम्भविश्वयात व्यक्तः भूमण्ड स्ट्रम्प्रयोग्न,विश्वयात व्यक्तिः	F-8	(আলেগ্রপুরাগ)	
্রিনাধার কল্প-সংস্থাত লাক্ষ	e s a s	क्संटकशास्त्रवातात सक्संदरत्वा (स्थाक)	. 4.34
	*, 4	অংকেন্য মুখালন - শ্রীনোরিচেম্বর্	234
সঞ্স প্রব		कारणात्र्याणाः स्वरणायः स्वरणायः । क्रिक्राकृषा सन्दि श्रीताबात्र व्यात्मरनास्कि	27.5
(ব্যক্তিস্থান্যাস)		क्षेत्रप्रकृष का हा क्षित्रप्रकृष्टिक स्थापण स्थापक विद्युष्टिक का हा कि	201
অভিনামান্ত্রাগ,— দিলো গেল	: ৩	प्रका कुलाव स्ट्राक्टाम् जराज्य व्यक्ताम)* ·
প্রবাদার হোঁরী-কাশাধন দলে নিজুতে অভিনার	y	े करण व वृश्कीत कांक और-तेत्र ा रकत	42.
নিকুল-মন্দিতে জীলাগালাকার সিগন	23	antematoritate	25.0
क्षकेत श्राप		নীক্ষের মুবলীর প্রতি ই রাধার খালেলোভি	*
(অপুনাণ ২ কুড়েও মিলন)		শীৰাগাৰুত্ব স্থায় বিকাৰে শীকাকেও সুম্বনীৰ	-
নবধীপ নাথমীর উচ্চি প্রিসোর্ডন্স	35	∜देख- वर्गन	141
স্থীর সহিত শ্রীরাধার উত্তি-প্রসূত্রি	54	প্রতিষ্ঠারচন্দ্রের নিংশুর প্রতি আংক্রেপেন্ট্রি	? ₹:
শীরাধার জ্যোংখ্যাধিলার	. 24	श्रिश्रांक निरम्भ व्यक्ति क्यांत्रस्थात	>0
রাধা-কুণ্ডের তীর-নিকুলে শ্রীক্তকের স্বরিত		সধানবের গুভি গ্রীগৌরচজের আফেপোক্ষি	7.07
প্রিরাধার কিল্ফ।	والم	গ্ ৰাসণের প্ৰতি জীবাধার প্ৰা ক্ষেপো জ	744
শীনাৰাস্কল্যের পরশ্বর লাম্বরাপ উক্তি প্রকৃতি	46	দৃতীর প্রজি জীরাধার আন্দেশোক্তি	3.54
শীৰাবাঞ্জেৰ সংখ্যাপ	> .	বিধান্তার প্রাক্তি শ্রীরাধার আন্দেশোক্তি	>44
विश्वासक्त्या प्रणाटक मृह्या	> > >	কৰপের প্রতি শীরাধার আক্ষেণোভি	304
নবম প্রব		জীরাধা কর্ত্ত সধীর নিক টে কলপে র	
(दश्य-देविति)		চরিত্র-বর্ণন	70;
(बाब-रेनहिका,बीश्मोत्राज	>•₹	গুরুজনাদির প্রতি এপৌরচজের স্বাক্ষেণােছি	F >8.
শীরাধার প্রেম-,বাট্ডা,স্থীর উঞ্জি	>•«	ভরতনামির প্রতি শীরাধার খাবেশোকি	` >8:
विकास द्यान देशहरहा	3.6	স্চলার সাহত প্রারাধার ভাক্ত প্রস্থাক	584
		স্থীর নিক্ট গ্রীরাধার ধেলোখি	>#1
नर्णम श्रह्मक		তেনেৰ অতি শ্ৰীৱাৰাৰ পাৰেংশাজি	586
(क्रशास्त्रांग)		श्रमक अञ्चलन,विश्वोत्रक्त	
प्रहारितंत राष्ट्र (cale :)	(T)	क्रियामा क्रम क्रियाका द्वारमा प्रश्निक न्त्र	in .

	d	•	
1 वर य	गुडां च	तिम	्रंशेष
ন্যেন-বিচার,—স্থীগণের গ্রুপ্র উজি	365	প্রীরাধার দিশ্বরাভিসার ও সিকুকে শ্রীকৃক্ষের	
পুন-চ অমুরাগ,জ্রীপৌরচপ্র	Suc	স্ট্ত বিল্ল	4.4
শ্রুক্তের প্রতি শ্রীরাধার অন্তব্যগ		প্ৰশন্ত দিনাৰুছে শীয়াধার অভিযায়	805
भूजक व्यमुद्राज <u>जि</u> रमोत्र्रस्य	313	পুনল্ড শ্রীষাধার কোগোডিগার	5),
मेबाधां व तरनांगाचारण जास्वान	244		
্ৰক শীলাধাৰ অংকপান্ত্ৰাগ	396	· ১৬ুর্দাশ পার্ব	
ाशी कर्जुक जीतांशा-इटकेश कृटक मटकनन	7540	(সংগ্ৰামণ)	
দ্রাদশ পরাব		कत्मांमाग्,—शिल्तोत्रहतः	525
(অভিদাবাশুরাপ)		ন্ধীয় প্রভাধানিশয়ক স্কলোক্সান স্কলোচালে স্থীকড়ক শ্রীমাধার ক্ষিণাবেরটি	* † † * * * * * * * * * * * * * * * * *
मिल्राबाएशन,श्रीको प्रवन्त	P 45	्यम-व्रष्ठन	470
ত্রীবাধার ডিমিডাভিশার	"	জীয়াধার শান্তসার	a r
MINO-PER MATTER BEARS	746	মাত্ৰদায় কালে প্ৰীৱাধায় প্ৰতি স্বাট্য উদ্ভি	279
কুল্লে শ্ৰীরাধার আগমন ত প্রকলেই নিক্ট	প্ৰের	কুল্পে শ্রীকৃক্ষের সহিত শ্রীস্তাধার মিলন 🕾	237
স্লেশ-বর্ণন	37%	রপোলাদে আরাধার দৰ্ভ জীক্তকর উঞ্জি	
用心脏性	>24	প্রকু)(জ	•
जित्योगम शहर		नदब्रान	₹₹\$
(স্বন্ধিসাবোৎকণ্ঠা)		भूतम्ह स्रट्याकाम्, —- श्रेरमोद्दर्यः	२२२
শভিষারোৎকর্তা,— শ্রীপৌরচন্ত	>>>	শ্রীকৃষ্ণের রূপ	
শ্রীরাধার অভিসামে। হস্প	377	वैद्वस्था कृत्य यश्चित्रात	२२७
শ্ৰীয়াধাৰ নিকুলে অভিসায়	328	ভাকুক্তের প্রতি প্রীরাধ্যর লাওদ্কীর উজি	* { ? \$
শ্ৰীয়াধার অন্ত শ্ৰীক্তকের উৎকণ্ঠা	386	শ্রীকৃঞ্চের কুজে শ্রীরাধার অভিসার	₹ ₹
প্রিয়াধারকের নিকৃতে নিল্ন	.58	জীয়াধাকুকের মিশ্ব	214
দিনান্তরে শ্রীরাধার ছার্দিনাভিগার	>36	পুনত প্রীরাধার অভিসার	
জীৱাৰাৰ বৰাকালোচিত দিবাভিনাৰ		অভিসারিক। জীয়াধার শ্রেতি জীরুক্ষের উদ্বি	ર ૨ ૨ ৮
প্রবাধার শীতকালোচিত দিবাতিসার	254	সংস্থ াগ	
পুনত জীবাধার বর্ষাকালোচিত অভিনার	, >>V	शक्तम शहर	
विकास मिन्ड नेथी कर्क विवासित स			
CP1-11/A		(मर्खकारमाहिष्ठ निषा-ब्राम)	J
विश्वाम वीश्वमारमाठिक पिनाकिनात	20)	निका-बान,—धीरनोडिक	२३%
Bendiamos Baiais maiferia	See . 344	প্ৰীৱাধা ও গ্ৰীকৃত্তের স্থীপণ সহ বাস-ক্ষীকৃ	
Carte Manual Contestionia	A CAN	দিপরীত-নজেগ	1.0
are Burn Callington Total	***	अवाम्यताहिक वर्	S. S. C.

ষোড়শ পদ্ধৰ

বংশ পল্লব

4117			
(काम उरमामभी व)		🦡 (প্রকারান্তর বাৎসণ্য-রস)	1.
विवर	পুঠাৰ	विषम	পৃষ্ঠাক
धाम-बामाना - शिर्मात्राख	285	ध्यकाबास्त्र थार्नमान्यम्, त्रीरभोतस्त	202
দৰীৰ সন্থিত আপোন্ধর-ক্রমে শ্রীথাধার রাস-		बिक्राक्षत्र नवनी-१द्रम मीला	3 % *
sento(!a	es	भारतिकी भीमा श्रीभारक	२५०
वान-स्टमान्धाय,— टीटशोत्रहत्व	269	श्रीकृत्रवनदात्वद शांशहेको नीना	•
স্থাগণের নিকট শ্রীকৃষ্ণের প্রাস-যদোগারে		वर्भावनामि गौग।—श्रीरगोद्रवः	२ १ इ
कुलारक्यों कर्जुक ब्रांधाकूछ-लीय-निकृत्त		শ্রীস্ক্রতের বংগচারণাদি কলৈ	tə
लीवाश्राक्षक मध्यमन	₹8₩	একবিং শ প ল্লব	
লগ-জৌড়া,— প্রিগৌরচম	25-	(সধারদ গোষ্ঠলীশ:)	
श्रास्ट्रक श्रीदाशकास्त्र अन-क्रीए।	₹8≯	বোঠ-পদন — প্রীগৌরচক্র	292
নুপ্তদশ পুত্ৰব		अङ् क्षित्र (शर्क-गण्या	*
(अव्यक्तित अम्बानीमा)		শ্রীকৃষ্ণের পোঠ-দীশা	2/12
•		শ্ৰীক্ষকের স্থাগণের সহিত বন-ভোজন	२४%
শ্ৰীকাৰৈত চাঞ্জন্ম অস্থ-দীলা	२,€●	প্রীকৃষ্ণের উত্তর-গোঠ কর্ণাৎ গোঠ মইতে	
জীনতানিক্চক্রের ক্ম-শীণা	\$ 6 3	প্ৰভাগেশ	र्भा
এ তিভক্তমন্ত্ৰ শ্ৰ-গাণা	₹48	দাবিংশ পল্লব	
অষ্টাদশ পল্লব		(প্রকারান্তর স্বাদ্রবাৎস্কা)
(গ্রিকুঞ্জের জন্ম-লীলা)	•	গোৰ্ভবিধানাদি,—শ্ৰীগৌৰচজ্ৰ	5 20
ভত্তিত— শ্রীগৌর চন্ত	269	শ্ৰীক্লকের গোষ্ঠ-বিহার	
क्षित्र अम् जीवा (नत्यां रत्र)		ক্ৰীকৃষ্ণকৰ্ত্ৰ ৰাজিক-পদ্মীয় অন্ন-ভোলন	345
ীপাৰিকার অন্মোৎসব	205	- জীক্ষণেয় স্থাপণ সলে বন-বিহার 🕟	165
উন্বিংশ পল্লব		ত্ৰয়োবিংশ পৰ্মৰ	
1	`	(टगावर्षन-गीमा)	V
(কৌমান্নোচিত বাৎসল্য)		त्नावक्म-वाबा,—जीत्नावहन	445
क्षित्रात्र-कारमहिष्ठ वार्यमा,—श्रीरभीत्रहर	¥ . 545	জ্ঞাক্তম গোৰ্ডন-ধাৰণ দীলা	
্ৰীকৃষ্ণবিধয়ক কৌষায়-কালোচিত ব্যংস	गु २७०		1. 发展感染
	300	ठळूर्विश्म शह र	. #I
কৌমার-পৌগত-কালোচিত বাংরল্য,	1000	(শরৎকালীর সহারাস)	
ूर्त किरमोडण्ड १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	S. De Sales	· Seps-Achtes	Justin jurish and
	S ARA	विकास गुरुती साहि असल सम द्रापि	
a richal	·	TOTAL STREET, Williams	

	فمرا	• ,	
विवा	yāt u	ब् बर	7914
াৰ্থৰ জাৰ-শরীক্ষাৰ্থ গোপীগণের প্রতি শ্রীক্টফের		अक्रुक्क क्रिकाश अर्थ-(बार्थ	-88
জাৰ-প্ৰশ্নৰ পৰিহাস-উজি	***	গ্ৰীরাধার প্রতি জীক্তের পরিহাস	986
खर् वार्य राज्यान वार्य खर् वार्य राज्यानी नरमंत्र देनरथा जि	6.9	শ্ৰীকৃষ্ণের প্ৰতি শ্ৰীদাধান ভৰ্গন-উন্ভি	
জংশ্রবদ্ধে সোণাগণের দেওজাত গোলীগণের সহিত জীক্ষকের মহারাদ	_	গ্রীবাধার প্রতি শ্রীক্ষকের সরস প্রত্যুতি	487
গোপাগণের সাহত প্রারণের বংগেন রাস-মধ্যল হটতে প্রীরাধার সহিত ব্রীকৃঞ্জের	•	দ্ৰীয় গচনে শ্ৰীদাধায় গোৰ্ছন-কুলে প্ৰস্থান	Ø87
व्यान-माध्यम हर्गाठ व्यानमा व्यान व्यापन मा		ভদ্ৰুলে শ্ৰীক্ষণেৰ তথাৰ গমন ও শ্ৰীৱাধাৰ	
শান্তপান ও কাত্ৰা এল-গোপীপণকৰ্ত্ক	Selv	সহিত মিলন	.
क्रमार्थरन	009	পোষ্ঠগদন সময়ে শ্ৰীক্তকের রূপ-দর্শনে শ্রীরাধা	¥.
श्रीवाधाव श्रक्रवम्छः छोत्रांव निकृष्टे ब्हेट७		উ ভি	*
শ্রীকৃষ্ণের অন্তর্জান ও শ্রীয়াগার সহিত		माक्क-मूत्रवी योगन,	963
গোপীগণের মিশন	4.6	्रशार्क श्रीकृत्यक नाइन-मुत्रनी नामन	4
শ্ৰীৰাধার সহিত সকল গোপীগণের খেদ	19	मधुबात (शावम-विकास करण श्रीत्राधात्र त्यारक	•
लीक्र क द सम्बा-ल्भिटन वश्मी-वामन	37 •	•	વ્યર
শীক্ষের সহিত গোপীগণের দিশন	933	গমন জীরাগার প্রতি শ্রীক্সক্ষের পরিষ্ঠান-বাক্য	
अवाधा ६ গোণাগণ मर श्रिक्षत्मत्र दोन-न्छ।	975		* '363
রাসাবসানে উল্লেখ্যক্ষের জল-কেপি	950	জীকুফের রূপো রা ণ	- Je - J
শ্ৰীরাধাককের কুলে ভোলনাদিশীশা	. •	ভৎপ্রবৰে শ্রীকৃষ্ণের প্রতি শ্রীরাধায় কৃত্রিম	
পুনক রাদ,—শ্রীগৌরচন্দ্র	929	ডৎ সমা-ব্কা	~ •
পুন্ত শ্ৰীণাধাৰুকের রাস-গীণা	410	শ্ৰীক্ষক ও জীৱাধার পরম্পানের প্রতি	
রাসাত্তে সভোগ	७ २ १	ः - शास्त्रात्शिकः	966
পঞ্চবিংশ পল্লব		क्षय-मूर्ण क्रीबांधाकृत्कप्र विनन	969
	•	धकादाखर मान-क्कि—-व्यक्तितहरू	•
(গোষ্ঠ-বিহার ও দান-লীলা)		মধুৰাৰ পোৰস-বিজৰ ছলে বড়াইয় সহিত	
त्राई-विकास,शिरगोत्रहतः	05F	শ্রীরাধার শভিদার	951
প্রীকৃষ্ণের গোর্ড-বিহার	७१३	পুথে শ্ৰীকৃষ্ণ-বাধাৰ সপৰিহান উক্ষি-প্ৰত্যুক্তি	469
💐 প্রধার গোষ্ঠ-নিকুলে ছিবাভিসার	७७१	গ্ৰিবাণাক্তফের নিৰ্জন-কুজে গোপনে দিলন	980
স্থাপণ্ডে ছলমাপুর্জ্ব সংখত-কুলে জীৱাবা	H	দিনান্তরে পুনশ্চ দান-কেলি	
া সহিক্ষ:🖣 ফুকেয় বিশন		লোরস-বিসাত্তিক জীয়াধার অভিনার	***
উত্তয়-গোর অর্থাৎ জীয়াবদের গুরাগদন	008	বড়াইৰ ও শীক্ষকের সপরিধাস উচ্চি আড়াধি	p obe
ग्नक त्यांक-विस्था, श्रीरगोतकक	,	জীক্ক ও জীৱাধার সপরিবাস উক্তি প্রাভূচি	
कड्डिक-निकामनवज्ञ		श्रीबाबादक পরিত্যাগ করিয়া ছলে কথীপনের	
विकास त्यांक विश्वास	***		010
शासनीमा, - किलाशस्य	6.20 085	क्षकृत्व विश्वासाङ्ग्यक विनम	418
Manual principals and administration		Sie e Antein numbere eile min-	•
But we have been a			, ,

দ্ ড়∫বংশ পল্ল ব		বিষয়	•	7014
((नोका-दिलाम)		প্ৰকানান্তৰ ছোৱি-লী		649
दिश्व	可刻年		াণের সহিত কোরি-গীপ	
त्मेणा-विकास,— क्षेरगोत्रहत्व	950	ত্রাক্রনের কলে নিজ্ ত্রমে শ্রীরাধার ম	প্রতিবিখ-দর্শনে ঋ ঞ্চ ন	
बाबम-धकाब श्रीकार्याकास (न)का-विवास			•	8.3
नचीत्रम महत्र शिकाधात्र मानत-श्रमा-छोरत त्रम	 म ,,		ভ্ৰমণনতনে মান-ভঙ্গন 	
নাবিক-রূপী জ্রিককের নৌকার স্থীন্ত স্থ	·	প্রাধার অভিযানের		8.0
উ াধার আরোহণ	29%	ज्यादावात्र जास्यस्याद्यार ज्ञीद्राक्षांत्र (दलिटन स्वी		8 • €
नवीत उत्रम सर्पत्न खेवागात कान्छ।	,5		ष्याद्र । श्रिक्कायम्ब समक्र-विद्या	2+4
নাবিকের বাহত শ্রীগাধার ব্যক্তিশ্র উল্লি-	•			8 8 • 9
প্রভূগক	.593	व्यक्तातायम् वस्यान्ति	•	,^
सम्बाद (नो का-विवाध खोटशोद्राहरू	546	স্থীর স্থে শ্রীরালায় ক্ষতিদার	有责任于实可任何变C 解	
· স্থীন্ধ সঙ্গে জীৱাধার বৃদ্ধিভূতে গ্রন	19	· ·	San See woulder	4 = 6
শ্রিকক্ষের নৌশার স্থীগণ সহ শ্রীরাধার		ীত্বকেং প্রতি দুঠার উক্তি	(चनवाकाद्र(न्।क्र	41 .
wicates .	394	ভাক শ্রিকাকের প্রভাবত		8 - 4
वसूनाव छत्रेक । नीता श्रीवादा आनक्षा	292	আক্লাক্ষর জড়ারর শ্রীরাধাক্তকের নিকুলে	turanu.	82>
ৰড়াইর প্রান্তি শ্রীবাণার কুলিন তৎসনা ও নৌ	काय		द्रापा-विभिन्न क्रिकाकुट	
^{की} क्षांबाक्टरक व मिलन		भिजन	Automitation of Millare	866
পুনক্ত দিনাক্তন নৌকানবলাগ	640		ধার নিকট দুকীর পদন	
		উতি ও প্রীয়াধার		» 8>€
দপ্তবিংশ পল্লব		भी बांधाकुरम्ब विभन	-11 co.1(#	
(यमस्य-लीला)		वानको वान-नीमा—	irelas: w	827
स्तव गोमा, क्रीत्योत्रहत्त्व	480		ন্তান্ত্র বাহ কুম্বা-বিশিকে অভিয	
ख्येत्रावा ७ मधीनन मह शिकृत्यात्र यमस-नीना			ग्रंक जीकरणह नामकी	
वमस-वर्गन	er a	রাসংখণি	ted makes this	*>>
হোরি-নীলা,—শ্রীনৌরচক্ত	31-4	,	। এতি टीइस्का निर्सि	
अक्षां कृद्यः प्र दशकि-गोगा	OF1		क्रमारम क्षेत्राशांत्र क्षास्त	
(बान-बीना	9≱9	ওক্পনৈ শ্রীকৃঞ্যের পর		***
জীবানার সহিত জীভাকের বোল-লীবা	929	नवीत पूर्व कीशवात के		
द्यात्र-तरमाश्यात्र —श्रेटनोत्रहत्त्व	494	्र निकृष्ठे श्रीकृतकत्र न	•	
श्रीवाशास व्यक्ति संयोगत्यत समाव सकताविवस्य	121	Sprug urfen Bull	1 10	
		विवाबायस्य प्रमानम	The State of the S	
digitus ner Mainia nertunia		श्रमण जागची-प्रामगोगा	- Boisse	
Agint Montaigate-gerfe	د سلوران	Saint effection	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	
	1 -1-1-A . 1 8- W.	ENTERNAL CONTROL DAY		

.

विवय	गृ क्षीय	ত্রিংশ পল্লৰ	
গ্ৰীথাকুফেয় বিলন ও বাস-কেলি	886	(ঝুলন-বাত্রা)	
गरकान	951	विषय	পৃষ্ঠাত
रून-दर्ग <i>न,</i> —क्रीदशोत्रहस्स	805	भूगन, औरशीबहत्त	88>
नवीशन मह जीवाशास्त्रका भूम-कण्यकोश		নীয়াধাৰুছেন খুলন-দীলা	883
क्लोफ़ी-सुब	*	विनाबाद जूनन, श्रीत्योत्रकतः	888
শ্রীরাধারণের স্থা-দোল-বিশাল	8.95	क्रिमासदा श्रीवाधात्रात्कात युगन	884
भाषनी-विकास,चैदगीब्रह्थ	800	একতিংশ পল্লয	
জিবাধাক্ত কেব বাধবী-বিশাস	18		
.		(अश्वित्वक-मीमा)	
স্কীবিংশ প্লৰ		শ্ৰীধাস পণ্ডিডের স্থূৰে শ্রীগৌরচন্ত্রের	
(স্থান-যাত্র।)		অভি বেক	810
वास-गावा,—औरभोवरुख	१७३	অশ্বিকা নপতে জ্বিগৌৰীদাস প'ভাতের গুড়ে	
नामन्याका, — अस्तामका जीकृतकात्र वाल-बोर्का	808	শ্ৰীগোৱাৰ ও জীনিত্যানদের অভিধেক	862
क्षेत्रमान दार्वक योजन्यामा	509	গ্ৰীগৌৰ্চজ্ৰেৰ অবভাৱের পূৰ্ব্বে অভিষেক	8 🕻 🕏
Canada de Cara de se de la cons	54,	দেবগৰ লং খুৱপড়িকর্ড্ড জীক্তের	
উন্তিংশ পল্লব		শভিবেক	8 2 8
		শ্ৰীরাধার কভিবেক	MS.
(রথকাত্রা)		প্রনন্ড শক্ষতিথি-পূঞা উপলক্ষে শ্রীস্বচ্চের	
क्षिमद्रांच त्यरवर द्रवाट्य भावित्रवर्ग गर		अ श्चिट्य क	846
ীপৌরচন্তের নৃ ত্য	৪৩৯	এছকাহের থার্থনা	

<u>শ্রীপ্রাপতরু</u>

(তৃতীয় শাখা)

শ্রীগোরচন্দ্র কামোদ।

কলিযুগ-মত্ত-মতঙ্গজ-মরদনেং কুমতি-করিণি ছুরু গেল। পামর তুরগত নাম-মোতিঃ শত-দাম কণ্ঠ ভরি দেল। অপরুপ গৌর বিরা**জ** । শ্রীনবদ্বীপ-নগর-গিরি-কন্দরে উয়ল কেশরি-রাজ॥ ধ্রু॥ সংকীর্দ্তন-রণণ লক্ষতি শুনইতে ছরিত দীপি-গণ ভাগি । ভয়ে আকুল অণিমাদি মৃগীকুল পুণবভ^৮ গরব তেয়াগি॥ ভ্যাগ যাগ যম তিরিপি বরত সম শশ প জন্মকি জরি যাতি। বলরাম দাস কহ অতয়ে সে জ্বগ মাহ হরি-ধনি>> শবদ খেয়াতি ॥১॥৬১৭॥ পাঠান্তর

 'মতক্ষক্ষমবদনে' প-র-সা। ৩। 'দূর' ক, চ।

১। 'মোতিম' ক। ৫। 'বন' ক, ঘ, চ; 'বনহ'
ধ। ৬। 'বীপগণ' ক, ধ, চ, প-র-সা। ৭। 'ভাগ'
ক। ৮। 'পূমবত' ক; 'পূমরত' ধ, ঘ, চ;
'পথরত' প-র-সা। ৯। 'তেয়াগ' ক। ১০। 'সম'
চ; 'শশি' ক। ১১। 'হরি' ক, চ, (পাঠাস্কর—
'ধনি')।

টাকা

>--২। "কলিযুগ" ইত্যাদি। কলিযুগরাপ (মন)-মন্ত মাতঞ্জের মর্জন অর্থাৎ বিনাশ হেডু (তদাপ্রিত) কুবৃদ্ধিরূপ হস্তিনী দূরে পলারন করিল। (স্ত্রী-জাতি অবধ্য বলিয়া পরিত্যক্ত হইল, ইহাপ্ত ব্যঞ্জিত হইতেছে)।

৩—৪। "পামর" ইত্যাদি। (শ্রীগৌরাক)
নাম-রূপ (অমূল্য গজদস্ত-জাত) মৃক্তাসমূহের মালা
অধম ও দরিদ্র ব্যক্তিদিগকে কণ্ঠ ভরিয়া দিলেন।

৫—१। "অপকৃপ" ইত্যাদি। অপুর্ব শ্রীগোরাল বিরাজ করিতেছেন। (বোধ হইতেছে বেন) শ্রীনব্দীপ নগরের পর্বত-শুহার অর্থাৎ পর্বত-চূড়ার ভার সমুদ্র মন্দিরের গর্ভে সিংহ-শ্রেষ্ঠ উদিত হইয়াছেন।

৮—>>। "সংকীর্ত্তন" ইত্যাদি। সংকীর্ত্তনরপ বুদ্ধের হন্ধার শুনিয়া পাপরূপ (হিংল্র প্রাণী) নৈকড়ে বাব সকল (সিংহের ভ্রের) পলায়ন করিল। (বোক্রের্ব্য) অণিমা প্রভৃতি (নিরীহ প্রাণিস্কুশ) ষুগীসমূহ ভয়ে আংক্ল (হইল); পুণাবান্ বাকি (পুণ্য-কার্য্য-জনিত) গর্কা পরিত্যাগ করিল।

১২—১৫। "ত্যাগ" ইত্যাদি। দান, যজ্ঞা, সংযম, তীর্থ ও ব্রতস্থরপ (ক্ষুদ্র প্রাণী) শশক ও শুগাল (সকল) জালাতন হইল। (পদকর্ত্তা) বল-রাম দাস কহিতেছেন,—এই জ্বন্তই ত জগতের মধ্যে (শ্রীগোরাঙ্গের উদয়ে) হরিধ্বনি শব্দ (এক অর্থে — 'হরি' 'হরি' শব্দ, অপর অর্থে 'সিংহ' 'সিংহ' শব্দ) প্রচারিত হইরাছে। ('হরি' শব্দের 'রুক্ত' ও 'সিংহ' উভর অর্থই প্রসিদ্ধ বটে; এই পদে বলরাম দাস শ্রীগোরাঙ্গ-লীলার সহিত সিংহ-লীলার সাদ্ভা প্রদর্শিত করিরাজেন)। তুলনা করুন,—

"হরিঃ পুরটস্থন্দরছাতিঃ কদশ্বনীপিতঃ। সদা হৃদয়কন্দরে কুরতুবঃ শচীনন্দনঃ॥" —বিদশ্বমাধ্ব নাটক।

শ্রীরাগ।১

নিতাই গুণমণি মোর নিতাই গুণমণি। আনিয়াং প্রেমের বন্তা ভাগাইলেও অবনী॥ প্রেমের বন্তা লইয়া নিতাইও

আইলা গোড়দেশে।

ভূবিল ভকত সব দীন-হীন ভাসে॥
দীন-হীন পতিত পামর নাহি বাছে।
ব্রহ্মার তুর্লুভ প্রেম সভাকারে যাচে॥
আবদ্ধ করুণা-সিন্ধু কাটিয়া মুহান।
ঘরে ঘরে বুলে প্রেম-অমিয়ার বান॥
লোচন বোলে আমার নিতাই যেবা
নাহি মানে।

আনল জালি দিয়ে তার মাঝ মুখখানে• ॥২॥৬১৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯২ সংখ্যক পদ। ২। 'অমিয়া' চ। ৩। 'ভাসাইয়া' ক; 'ভাষা-

ইল' প-র-সা। ৪। 'নিতাই আংইলা' ফলে 'আইলা নিতাই' ক, খ। ৫। 'জুহান' প-র-সা। ৬। 'আনল আলি' ইত্যাদি ফলে 'আনল আলিয়া দি' ইত্যাদি ঘ; 'আনল আলিয়ে তার মুখ মাঝ খানে' প-র-সা।

টীকা

৭—৮। "আবদ্ধ" ইত্যাদি। (শ্রীভগবানের)
করুণারূপ সমুদ্ধ আবদ্ধ অর্থাৎ নিরুদ্ধ (ছিল);
(নিভাই) উহার মুহান অর্থাৎ জল-নির্গমের প্রশানী
কাটিয়া (দিলেন)। (তথন) প্রেম-রূপ অমৃতের
বক্তা ঘরে ঘরে বেড়াইতে লাগিল অর্থাৎ সমস্ত
দেশ প্লাবিত করিয়া ফেলিল।

অথ সম্ভোগরণস্থ স্বয়ংদোত্যং*
তদ্ভাবযুক্তঃ শ্রীগোরচক্রঃ।

कारमाम । ३

দেখ দেখং গৌরচন্দ্র বর-রঙ্গী।
কামিনি-কাম মনহিঁ মন সঞ্চক
তৈছন লগিত ত্রিভঙ্গী॥ গ্রন্থ॥
শ্মিত-যুত বয়ন কমল অতি স্থন্দর
শোভা বরণি না হোয়।
কত কত চাঁদ মলিন ভেল রুপণ হৈরি
কোটি মদন পুন রোয়॥

• 'স্বাংদোতা'—'স্বাং দৃত' বা 'স্বাং দৃতী' শব্দের উত্তর ভাবার্থে 'ষ্ণ' প্রতার হারা 'স্বাংদোতা' শব্দটি সিদ্ধ হইরাছে। প্রীরূপ গোস্বামী "উচ্ছল-নাল-মণি" গ্রহে লিথিয়াছেন,—"অত্যোৎস্থক্য-ক্রটদ্রীড়া বা চ রাগাতিমোহিতা। স্বাংমবাভিষ্ভ কে দা স্বাংদ্তী ততঃ স্থতা ॥" অর্থাৎ যে নামিকা অত্যন্ত ওৎস্কা হেছু বিগতলক্ষা ও অনুরাগে বিমোহিতা হইরা নিকে নারকের নিকট মনের ভাব ইলিতে প্রাকাশ করে, তাহাকে 'স্বাংদ্তী' বলা হয়।

স্বয়ং দৌত্য

ڧ

চামরি-চা্মর লাধে স্থকুঞ্জিত
কুঞ্জিত কেশক বন্ধ।
পস্থহিঁ পদ্ম চলত অতি মন্থর
মদগজ-দমনকঃ ছাদ ॥
আন উপদেশে কহতং করি চাতুরি
মধুর মধুর পরিহাস।
নিজ অভিযোগ করত পুরুব মত
ভণ রাধামোহন দাস ॥৩॥৬১৯॥

পাঠান্তর

১। ইছা পার-সা পৃথির ১০৯৩ সংখ্যক পদ।
২। 'দেখ দেখ' স্থলে 'দেখ' ক, চ, প-র-সা।
৩। 'ক্লপ' ক, চ, প-র-সা। 'ক্লপ' পাঠে
ছন্দংপতন অনিবার্থা। ৪। 'গ্রমনক' ক, চ;
'দেশনকি' পার-সা। ৫। 'বোলত' ক, খ, ঘ, চ।
টীকা

১—৩। "দেখ দেখ" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর কক্তত "দেখ দেখ" ইত্যাদি পংক্তিরেরর অর্থ লিথিয়া-ছেন—"কামিন্তাঃ শ্রীরাধায়াঃ কামস্ত কামক্রীড়াদি-কারণক্রপক্ত প্রেম্বস্তা মনস্তেব সঞ্চরণাৎ তদ্ধাবা-ক্রম্বস্তু অস্তু মনসি অ্তরাং সঞ্চরণাৎ তক্রপং লশিত-ভাবৰিশিষ্টভলিযুক্তং পশ্র পশ্র। তথাহি—

'বিস্থাসভঙ্গিরঙ্গানাং জবিশাসমনোহর।।

স্থার ভবেদ্যত গণিতং তছ্ণীরিতম্॥'
পক্ষে শ্রীনবদীপকামিনীনাং সর্বাসাং মনসি মনসি
প্রতিমনসি কামসঞ্চারকং গণিতং স্থল্পরং বিশিষ্টং
ভালি যক্ত তং পঞ্চ।" অর্থাৎ (এক অর্থে)
শ্রীগৌরালকে দেখ; (তাঁহার) চিত্তে কামিনীর
অর্থাৎ শ্রীরাধার কাম, কি না—কাম-ক্রীড়ার মুগীভূত
প্রেম সঞ্চরণ করিতেছে; (তজ্জক্ত) তাঁহারও
সেইরূপ স্থাণীত অলভলী হইরাছে। (গ্রীগৌরাল
শ্রীরাধার ভাবে বিভাবিত বণিরা, তাঁহার পক্ষে
শ্রীরাধার প্রেমভাব ও স্থাণীত অলভলী স্থানত
স্ট্রাছে)। (অপর অর্থে) শ্রীগৌরালের স্থল্পর রূপ

দর্শনে নবন্ধীপ-নাগরীদিগের সকলের মনেই কাম--ভাব সঞ্চারিত হইতেছে।

৪—৭। "শ্বিভ্যুত" ইত্যাদি। "হাশ্বযুক্ত
বদন-কমল" বাক্য দারা পদকর্ত্তা ব্রাইতেছেন
যে, প্রীগৌরাঙ্গের মুখ-পদ্ম সাধারণ পদ্মের স্থায়
রক্ষনীতে মুদিত ও মান-কান্তি না হইয়া দিবারাত্র
সমভাবে বিক্ষিত থাকে; স্থতরাং প্রীগৌরাঙ্গের
মুখপদ্মরূপ অসাধারণ পদ্ম-দর্শনে চন্দ্র লক্ষা কিংবা
ভয় হেতু মলিন হইতেছে; (অভ্যুত নবীন কাম-দর্শনে) কোটি কোটি কাম রোদন করিতেছে।

১২ — ১৫। "আন উপদেশে" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর "আন উপদেশে" ইত্যাদি পংক্তিগুলির
অর্থ লিথিয়াছেন — "অগুব্যপদেশেন চাতুর্য্যেণ শক্ষোঅর্থ বিব্যান্তল্যাদিন। পরিহাসং বিতনোতি। অতঃ
পূর্ব্ববিতারোচিত-বাচিকান্ধিক-চাকুষা দ-জনিতান্তিযোগং করোতি।" অর্থাৎ প্রীগোরাদ অন্ত ছলে
কৌশল করিয়া, মধুর পরিহাস ব্যক্ত করিতেছেন;
(অতএব) রাধানোহন বলিতেছেন যে, প্রীগোরাদ
পূর্ববিৎ সর্থাং প্রীক্ষাবভারের স্থার নিক্ত অভিযোগ
কি না — বাক্য, অন্তল্পী, নয়নভদী ইত্যাদি আরা
প্রপ্রেম্বিত বাক্ত করিতেছেন।

বেলোরার।১

অতি অমুরাগং ভরল মন উৎস্ক
টুটল ধৈরজ লাজ।
তমু অমুলেপন সম্পক পরিজ্ঞন
তেজল যত কিছু সাজ॥
দেখ রাই চলত অতিং মন্দ।
নিজ অভিযোগ করত অতি নিশ্চয়
বৃষিয়ে কাজকং বন্ধ॥
মুখ জিতে শ্রদ-স্থাকর তমু-ক্চিকবলিত-কাঞ্চন-দণ্ড।
নয়ন তিখন শ্র ফুলশ্র-মদহর
ভাঞ্জু মদন-ধ্যু-খণ্ড॥

• ঐছন ভাতি ভাবিনি ভালে ভেটল মনমথ-মনমথ পাশে। অফুভব লাগি গুপতহিঁ° সথি চৰু কহু রাধামোহন দাসে॥৪॥৬২•॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০>৪ সংথ্যক পদ।
২। 'অফুরাগে' প-র-সা। ৩। 'প্তি' চ।
৪। 'বুঝিয়া' ক, প-র-সা; 'বুঝিয়ে'থ। ৫।
'কাজকি'প-র-সা। ৩। 'লিতি' প-র-সা। ৭।
'গোপতহি'প-র-সা।

টীকা

e—१। "দেখ" ইত্যাদি। (কোনও স্থী অপর স্থীকে সম্বোধন করিয়া বলিতেছেন) দেখ, রাধা অভিশয় ধীরগমনে চলিতেছে; (সে) নিজে অভিযোগ অর্থাৎ বাক্য ও অঙ্গভঙ্গী ধারা কৌশলে প্রাণ্ডেছিত প্রকাশ করিতেছে; (অভএব) অভিনিশ্চিতভাবে (ভদ্মারা তাহার স্বয়ংদৌতারূপ) কার্য্যের অফুবন্ধ ব্রিতে পারিতেছি।

৮—১১। "মুখ" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার) মুখ—
ক্ষিত হইয়াছে শরতের অধাকর যৎকর্তৃক অর্থাৎ
শারদচক্রবিজয়ী; (তাঁহার) দেহ-কায়ি—কবলিত
হইয়াছে কাঞ্চনদণ্ড যৎকর্তৃক অর্থাৎ অর্থ-ষ্টের
শোভাহারিনী; (তাঁহার) নয়ন অর্থাৎ নয়নের
কটাক্ষ পুষ্পাশরের গর্অ-হারক তীক্ষ শরস্বরূপ;
(তাঁহার) ক্র কন্দর্পের (ত্রিজ্বনবিজয়ী) ধহুর
একাংশ কিংবা কন্দর্পান্তরের (গর্বের) খণ্ডনকারী। "ফুলশর-মদহর" বিশেবণের হারা পদকর্তা
ব্রাইতেছেন যে, কন্দর্প পুষ্পাময় শর হারা ত্রিভ্বন
জয় করিয়া, মনে মনে যে বিজয়-গর্ব জয়ুত্বব করিতেন, শ্রীরাধার নীলোৎপলবৎ নয়নের অুতীক্ষ
অপাল-লৃষ্টি হারা সেই গর্ব নিয়াক্রত হইয়াছে।

शाननी ।> মুরলী - মিলিভ অধর নব পল্লব গায়ত কত কত রাগ। কুলবতি হোই মন্দির ছোড়ি আয়লু সহইং না পারি বিরাগ॥ মাধব তোহে কি শিখায়ব গান। গৌরি আলাপি শ্যাম নট সঞ্চরু তবঙ তুহুঁ বিদগধ জান ॥ ধ্রু ॥ মুরলি ছোড়ি অছু মধুর আলাপবি তেসর জন জনি জান। কণ্ঠহি কণ্ঠ মেলি অব সম্বিধ্যে যতি খণে গোড স্কঠান ১০॥ নিরজন>> জানি হৃদয়ে অবধার্রি>২ ঐছন গুণবতি-ভাস১৩। গুণিজন-লাজ যৈতে নাহি হোয়ত কহতহি^{১৪} গোবিন্দ দাস ॥৫॥৬২১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৯।২৩৭ সংখ্যক ও পার পুথির ২০০ সংখ্যক পদ। ২। 'মুক্লী' চ। ৩। 'গাওত' থ, পার-সা। ৪। 'কহই' থ। ৫। 'নঠ' পার সা। ৬। 'জব' পার-সা। ৭। 'তেসর' ইত্যাদি ছলে 'সো ('তে' ২০৭ পদ, পার-সা) সব নাহিক জান' পার-সা। 'তে সব জন নাহি আন' ক; 'তে সব জন নীক জান' চ। ৮। 'সমুবারে' চ; 'সমুবাহ' পার-সা। ৯। 'বতি থানে' হলে 'তৈথনো' পার-সা; 'যত খনে' পার। ১০। 'হঠাম' ক, থ, চ, পার। ১১। 'নিক জান' পার-সা। ১২। 'অব্ধার্ত্তি' পার-সা। ১৩। 'ভাস' (পারত' পার-সা।

টাকা

>--৪। "মুরলী" ইত্যাদি। (প্রীরাধা প্লিষ্ট ও ইন্দিতপুর্ণ বাংক্য প্রীকৃষ্ণকে কহিতেছেন) মুরলী- সংবৃক্ত (তোমার) নব পল্লবরূপ অধর কত কত বাগ (এক অর্থে—মলার মালবাদি রাগ, অন্ত অর্থে— অন্তরাগ) গাহিতেছে অর্থাৎ প্রকাশ করিতেছে; কুলবতী হইয়া, (আমি) মন্দির ছাড়িয়া আসি য়াছি; (কেন না) বিরাগ (এক অর্থে—রাগ-রাগিণীর ব্যক্তিক্রম, অন্য অর্থে— উদাসীন্য) সহিতে পারি না।

েশ। "মাধব" ইত্যাদি। ছে মাধব।
তোমাকে কি গান শিথাইব । গোরী (রাগিণী)
আলাপ করিয়া (তৎপরে) শ্রাম ও নট (রাগিণীর)
সঞ্চার অর্থাৎ বিস্তার করিবে; তবে জানিব, তুমি
অভিজ্ঞা বটে। (অপর অর্থে) ছে মাধব!
তোমাকে রদ-রীতি কি শিথাইব । হে নট অর্থাৎ
নটবর শ্রাম! (তুমি) গোরী মর্থাৎ গৌরাদ্বী
(আমার সহিত্ত) (রদ)-আলাপ করিয়া সঞ্চার
অর্থাৎ আননন্দের বিস্তার করিবে; তবে তোমাকে
রদিক বিশ্বা জানিব।

৮—১১। "মুরলি" ইত্যাদি। মুরলী পরিত্যাপ করিয়া এইরপ অমধুর আলাপ (এক অর্থে—রাগালাপ, অস্ত অর্থে—রাগালাপ) করিবে, যেন তৃতীয় ব্যক্তি জানিতে না পারে! (সেইরূপ করিলে) কঠে কঠ মিলাইয়া দেখিব, যতক্ষণে অন্দর হয়! (এক অর্থে—তোমার অরের সহিত আমার অর মিলাইয়া যতক্ষণ না অন্দররূপে রাগালাপ অভ্যপ্ত হয়, ততক্ষণ চেটা করিব। অতা অর্থে—গলায় গলায় লাগিয়া দেখিব, যতক্ষণ পর্যায় অ্থেশির না হয়।)

১২—১৩। "নিরন্ধন" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর 'ঐছন গুণবভিচাস' পাঠ গ্রহণ করিয়া, অর্থ নিধিরাছেন,—'এতাদৃশগুণবতীভাসঃ কান্তিরূপাঃ স্মান্' অর্থাং এতাদৃশ গুণবতী আমাদিগের (গৌরবে বছবচন) কান্তিসমূহ বক্ষে ধারণ করিবে। স্মাদিগের বোধ হর, পদকর্ত্তা 'বাক্য' ও 'কান্তি' উভর অর্থ প্রকাশ করার জন্তুই শ্লিষ্ট 'ভাস' শব্দের প্রেরাগ করিরাছেন।

গান্ধার।১

রাগ তালং ছহু হৃদয়ে ধয়ল তুহুঁ
জানলু বচনক রীতে।
গ্রাম তিন স্বর বহুবিধ পরকার
জানসি কত কত নীতে॥
গুণবতি অতয়ে নিবেদিয়ে তোয়।
মধুর আলাপ শিখায়বি নিরজনে
নিজ জন জানিয়া মোয়॥ গ্রম॥
মুরলি ছোড়ি হাম নিকটিছি বৈঠব
শীখবং সুমধুর গান।
গৌরি শ্রাম নট তব নহ ছরঘট
হোয়ব মিলন-সন্ধান॥
মুখহিঁ মুখহিঁ যব তুহুঁ শিখায়বি
হৃদয়ে ধরব তবঙ হাম।
ভণ রাধামোহন বচন-রচন পুন

পাঠাস্তর

ভালে সে জানয়ে শ্রাম ॥৬॥৬২২॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯৫ সংখ্যক পদ।

২। তোন' প-র-সা। ৩। জন জানিয়া ছলে
জনে জানিয়ে প-র-সা। ৪। শিশ্ব' ক, থ,
প-র-সা, 'সীথব' ঘ। ৫। 'মুখহি মুখহি ছলে 'মুখহি মুখ' ক, খ; 'শুখহি শুখহি' প্-র-সা।

। 'তব' ক, খ পুথিতে নাই।

টাকা

১—৪। "বাগ" ইতাদি। (প্রীরাধার প্রতি
প্রীক্ষের প্লিষ্ট প্রত্যান্তর) তুমি রাগ (এক অর্থে—
রাগ-রাগিনী, অন্ত অর্থে—অমুরাগ) ও তাল (এক
অর্থে—সন্ধীতের কাল-পরিমাণক্ষাণক রূপক প্রভৃতি
তাল, অন্ত অর্থে—তাল-ফল-বুগলস্বরূপ ন্তনের)
ক্লানে ধারণ করিয়াছ—(তোমার) কথার ভাবে
ক্লানিলাম, ভূমি (সন্ধীতের) তিন গ্রাম, বছবিধ
স্বর্ম এবং কত প্রকার স্বর-রীতি (অন্ত অর্থে—মং-

ব্দৰ্ভক সম্ভোগের উপযোগী ও মুরলী-গীতির নিবারক বছবিধ বিলাস) জ্ঞাত আছে।

৫— १। "গুণবতি" ইত্যাদি। ছে সঙ্গীতকুশলে! (অপর অর্থে—হে বিলাস-নিপুণে!)
তাই তোমার নিকট নিবেদন করিতেছি; আমাকে
আপনার জন জানিয়া নির্জ্জনে স্নমধুর আলাপ
(এক অর্থে—রাগাণাপ, অপর অর্থে—রসালাপ)
শিধাইবে!

৮—১>। "মুবলি" ইত্যাদি। আমি মুরনী পরিত্যাগ করিরা, (তোমার) নিকটে বদিব;—
(তোমার নিকট) স্থমধুর গান শিক্ষা করিব;
গৌরী, শ্রাম, নট (প্রভৃতি রাগিণী) তোমার পক্ষে ছর্ঘট অর্থাৎ হংসাধ্য নহে। (অপর অর্থে) হে
গৌরি! নট অর্থাৎ নটবর শ্রাম তোমার পক্ষে ছ্প্রাপ্য নহে। (এই প্রকারে) মিলন-সন্ধান অর্থাৎ (এক অর্থে) বহু রাগ-রাগিণীর সম্মেলন-সংগাধন, (অপর অর্থে) সঙ্গম-দিদ্ধি হইবে।

১২—১৫। "মুখহি'" ইত্যাদি। তুমি যথন
মুখে মুখে শিখাইবে, তথন (তোমার সঙ্গীত-উপদেশ)
হাদরে ধারণ করিব; (অক্ত অর্থে) তুমি যথন আমার
মুখে মুখ দিয়া (মুখচুম্বন) শিখাইবে, তথন (তাগার
প্রতিদানে) আমি তোমাকে বক্ষে ধারণ করিব।
রাধামোহন বলিতেছেন, শ্রাম বাক্য-রচন ভালক্রণে
জানেন।

বরাড়ী।১

মনমথ-মকর ডরহিঁ ডর-কাতর
মঝু মানস-বায কাঁপং।
তুয়া হিয়ে° হার-তটিনি°-তট কুচ-ঘট॰
উছলি পড়ল দেই॰ ঝাঁপে॰॥
স্থন্দরি সম্বরু কুটিল কটাখ।
কলসিক মীনি বড়সি কিয়ে॰ ডারসি
এ ক্ষতি কঠিন›৽ বিপাক ॥ঞ্চ॰> ॥

পুন দেই কাঁপাং পড়ল যব ২০ আকুল
নাভি-সরোবর মাহ।
তাহিঁ রোমাবলি-ভুজিগি ২-সঙ্গ ভয়ে
ত্রিবলি-বেণি অবগাহ॥
তাহি ফিরত কত কতহুঁ ২ মনোরথ ২৬
দৈবকি ২৭ গতি নাহি জান।
কিন্ধিণি জালে পড়ত ভেল ২৮ সংশয়
গোবিন্দ দাস রস গান॥৭॥৬২৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা পর-সাপুথির :৮২ সংখ্যক ও প-র
পুথির ২৪।০ সংখ্যক পদ। 'বরাড়ী' ছলে 'কামোদ'
প-র। ২। 'কাঁপি' প-র-সা। ৩। 'হিয়া' প-র-সা।
৪। 'তটনি' খ। ৫। 'ঘটে' খ, ছ। ৬। 'তহি'
প-র-সা; 'তহি' প-র। ৭। 'বাঁপি' প-র-সা। ৮।
'মীনে' প-র। ৯। 'অব' প-র-সা, প-র। ১০।
'এ অতি কঠিন' হলে 'এ তুয়া কোন' প-র সা; 'ইহ
অতি কঠিন' বেলে 'এ তুয়া কোন' প-র সা; 'ইহ
অতি কঠিন' প-র। ১১। ক, খও প-র পুথিতে
'ধ' নাই। ১২। 'ঝাঁপি' প-র-সা। ১৩। 'অব'
প-র। ১৪। 'ভুজফ' প-র-সা। ১৫। 'কত
কতহ' হলে 'কতহুঁ কত' ঘ; 'কত শতহি' প-র।
১৬। 'মনমধ' খ, ছ। ১৭। 'দৈবক' ক, চ, প-র-সা, প-র। ১৮। 'পড়ত ভেল' ছলে 'পড়ল
ভেল' ঘ, চ; 'পড়ল সব' প-র-সা; 'পড়ল হব'
প-র।

টীকা

১—৪। "মনমণ" ইত্যাদি। (শ্রীকৃষ্ণ চাটু-বাক্যে শ্রীরাধাকে বলিতেছেন), আমার চিত্তরূপ মীন মন্মথের (বাহন-রূপ) মকরের ভরে ভরাজুর হইরা কাঁপিতেছিল; তোমার বক্ষের (মুক্তা)-হাররূপ তরন্ধিনীর তীরে (তোমার) কুচরূপ কল্সী দেখিরা উন্নদিত হইরা (জীবন রক্ষার জঞ্চ) স্থাঁপ দিল্লা (উহার মধ্যে) পড়িল।

শেশ । "প্রকরি" ইত্যাদি। হে আ্ফরি!
(পুনি) কুটিল কটাক সম্বরণ কর;

ক্লসীর

(মধ্য-ছিত) মীনের উপর (বঙ্কিম কটাক্ষরপ) ৰড়শী নিক্ষেপ করিতেছ,—ইহা অতি দারুণ কর্মফল অর্থাৎ হরদৃষ্ট বটে ।

৮--> । "পুন" ইতাদি। (কটাক্ষরপ বড়্শীর ভয়ে) অম্বির হইয়া (আমার চিত্তরূপ মীন) পুনরার যথন (তোমার) নাভি-রূপ সরোবরের মধ্যে পতিত হইল, (তখন) সেথানে (তোমার) রোমাবলী-রূপ কাল-ভূজ্জীর সঙ্গ-ভয়ে ব্রিবণী-রূপ (স্কীর্ণ) জল-প্রণালীর মধ্যে নিম্ম হইল।

১২—১ং। "তাহি" ইত্যাদি। সেথানে বিচরণ করিতে করিতে (তাহার) কতই (মুধ)-বাসনা (হইতে লাগিল); (কিন্তু) দৈবের (বিচিত্র) গতি (কেহ) জানিতে পারে মা; (সেই জক্ত সেতোমার) কিন্ধণীজালে (এক অর্থে—কিন্ধিণী-সমূহে, অন্থ অর্থে—কিট্ড্রণ কিন্ধিণীক্রপ মংক্ত ধরার 'জাল' নামক যন্ত্রে) পতিত হওয়া মাত্র (জীবন)-সংশব্ধ হইল। গোবিন্দদাস (এই) রহস্ত গান করিতেছেন।

প্রক্ষিপ্ত পদ।

এীরাগ।>

মদন-কিরাত-কুস্থম-শর দারুণং
বুন্দাবন-বন মাঝ।
তেএি আকুল হরি তোহারি শরণ করি
পরিহরি পোরুষ লাজ॥
স্থান্দরি তুয়া দিঠি অথির সন্ধান।
মনমধ মারিতে জোড়ি নয়ন-শর
হানল হামারি পরাণ ॥ গ্রন্থা
ছহঁ শরে জর জর জাবন অন্তর
কীয়ে করব নাহি জান।
নিজ বশ চাইদ রাই অবশ্ব দেয়বি
স্থারস-পান শ্র

মণিময়-হার-তরক্ষিণি-ভীরহি
কুচ-কনকাচল-ছায়।
ঐছে তপত জনে ১০ গোপতে রাথবি তবংং
গোবিন্দ দাস যশ্য গায়॥

পঠিশস্তর

১। हेहा প-द्र-मा পूषिद्र ১৮১।२७१ मःश्रांक छ প-র পুথির ২৪।ও সংখ্যক পদ। এই পদটি পদকর-তক্ষ এন্থে অন্তন্ত হা হইগেও এ স্থলে ইহা প্রক্রিপ্ত বলিয়াই বোধ হয়; কারণ, এই পদটি গণনা করিলে তৃতীয় শাধার ১ম পল্লবের পদসংখ্যা ১০টি खाल ১১টि इंदेश পড়ে। প্রাচীনতর **খ**, ঘও চ পুথিতে এই পদটি নাই; কিন্তু পদামূতসমূদ্র ও পদ-রত্বাকর গ্রন্থে এই পদটি অয়ংদৌত্য-পদাবলির অন্ত র্গত করা হইয়াছে এবং এই পদটি পদকরতক গ্রন্থে व्यक्त पृष्टे इस मा-वह क्या व्यक्तिश्च हरेता व मृत्न মুদ্রিত হইল। ২। 'কুসুম-শর দারুণ' স্থলে 'কুসুম-শরে জর জর'ক। ৩। 'ডেহি' ক। ৪। 'মরণ' প-র-সা। ৫। 'এ ধনি' প-র। ৬। 'মারুড' প-র-সা। ৭। 'ভুহ' প-র-সা। ৮। 'যশ চাই' স্থলে ''জন চাহি' প-র-সা। ৯। 'মোহে' প-র। ১। 'मान' প-র। ১১। 'क्वन' প-র-সা, প-র। ১২। 'রাথবি তব' ফলে 'রাথ বরু' প-র-সা; 'রাখু বর' প-র। ১৩। 'গুণ' ক ; 'রদ' (পাঠান্তর — প-র-সা)।

টাকা

> -৪। "মদন" ইত্যাদি। বৃন্দাবন-বিপিনের
মধ্যে মদনরূপ ব্যাধের কুন্থমময় শর (প্রচুর ও ন্থাড
বিলয়া) নিতান্ত দারুণ; তাই (কুন্থম-শরের ভয়ে)
অন্থির শ্রীক্বন্ধ পুরুষে। তোমারই শরণ লইমাছেন।
বিশেষ (বৃন্দাবনেশ্বরী) তোমারই শরণ লইমাছেন।
বিশেষ হিতে
বিপরীত হইল); হে স্ব্লেরি! তোমার (চঞ্চল) নয়নের
দৃষ্টি অর্থাৎ কটাক্ষ-বাণ অন্থির-লক্ষ্য বটে; (তাই
ভূমি) মন্থাক্কে মারিবার করা দৃষ্টি-শর বোজনা করিমা

(অহির-লক্ষ্যতা হেতু) আমার হৃদরে বাণাবাত করিলে !

৮—১১। "গুছ্" ইত্যাদি। (মন্মধের প্রকাশর ও তোমার দৃষ্টি-শর) উভর শরে (আমার হৃদর
ও প্রাণ জর্জনিত; কি করিব বুঝিতে পারি না;
(আশ্রিত জনকে অকারণে বধ করিলে অধ্যাতি
হয় বলিয়া) এখন নিজের যশের দিকে চাহিয়া,
(আমাকে বাঁচাইবার জন্ত) অধ্রামৃতের পান দান
করিবে।

১২ — ১৫। "মণিময়" ইত্যাদি। (দাহ-পীড়িত জনের শৈত্য-সেবন সমূচিত বলিয়া) তোমার মণি-হার-রূপ তর্মাদিনীর তীরে, তোমার কনক-গিরিরপ কুচযুগলের ছায়াতে এইরপে দাহার্ত জনকে গুপ্তভাবে
রাখিবে; তাহা ছইলে পদক্র্যা গোবিন্দদাস তোমার
যশ গাহিবে।

তথা রাপ।১

কনক-লতাং কিয়ে বিকশলত পতুমিনি
কিয়ে মহি বিজুরি উজোর।
কুঞ্জ-কুটিরে কিয়ে উয়লঃ হিমকর
হেরইতে আয়লুঁ ভোর॥
স্থানর তোহারি চরিত বিপরীতে।
কাজর-গরলহি ভরল নয়ন-শর
হানলি অস্তর চীতে॥ প্রভ॥
তব অগেয়ানে কয়লি তুতুঁ ঐছন
অব স্থপুরুষ বধ জান।
উচ কুচ-চুম্বকদ সরস পরশ দেই
উদঘাটহ দিঠি-বাণ॥
আশা-পাশ হাসি দরশায়সি
কতি খণে রাখবি পরাণ্ড।
বিষ্টল্ড সময় পালটি নাহি আয়ত
গোবিক্ষদাস পরমাণ্ড ॥৮॥৬২৪॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৪ সংখ্যক ও প-র পুথির ২৪।৫ সংখ্যক পদ। ২। 'কনকলভার' প-র-সা; 'কলকলভারে' প-র। ৩। 'বিকসিল' চ। ৪। 'কিরে উরল' হুলে 'উরল কিরে' প-র। ৫। 'উভ গেফ্' ক; 'উভ গেল' প-র-সা। ৬। ক, ঘ, চ পুথিতে 'ঐ' নাই। १। 'আসেয়ান' ক। ৮। 'পাথর' ক; 'কঞুক' থ, ঘ, চ। ৯। 'পাশে' প-র-সা। ১০। 'হাসি দরশায়িস' হুলে 'হাস দরশায়ই' ঘ, চ, প-র-সা। ১১। 'কভি থেণে ইভ্যাদি হুলে 'কভি থেণে বধবি পরাণ' থ, ঘ, চ; 'কভি থণে ধরবি পরাণ' ক। ১২। 'বিষ্টন' ক, থ, চ, প-র-সা। ১০। 'রস গান' প-র।

টাকা

>--৪। "কনক-লতা" ইত্যাদি। শ্বৰ্ণ-লতিকায় (ইংা) কি বিকশিত পদ্ম ? কিংবা মহী-তলে দীপ্তিময় বিহাৎ ? কিংবা কুঞ্জ-গৃহে চক্স উদিত হইয়াছে ? (আমি) মুগ্ধ হইয়া দেখিতে আসিলাম।

৫—१। "প্রন্ধরি" ইত্যাদি। হে প্রন্ধরি! ভোমার চরিত্র বিপরীত! (ভূমি) কক্ষণরূপ বিবে পরিপূর্ণ (ভোমার) নয়ন-(কটাক্ষ)রূপ শর (আমার) হৃদয় ও প্রাণে আবাত করিলে!

৮—১১। "তব" ইত্যাদি। তথন তুমি অজ্ঞানে অর্থাৎ না বুঝিরা ঐকপ (কার্যা) করিলে, (কিন্তু) এখন (উহার ফলে) স্থপুরুষের বধ ভানিতে পারিতেছ; (উহার প্রতিকার জক্তু) তোমার উরত কুচ-রূপ চুম্বক পাধরের স্থাকর স্পর্শনিন করিয়া (আমার বক্ষঃ-প্রবিষ্ট) চুষ্টি-বাণ উদ্ঘাটন কর। (চুম্বক লোহকে আকর্ষণ করিয়া থাকে; স্থতরাং তান-রূপ চুম্বকের স্পর্শে বক্ষঃ-প্রবিষ্ট চুষ্টি-রূপ বাণ নির্গত করা শ্রীক্ষকের জীবন-রক্ষার একমাত্র সন্ত্পার বটে। এ স্থলে রূপক্ষুলক কার্যালিক অলকারের বারা শ্রীক্ষকের সজ্যোগায়কুল প্রিয়ালিকন-লাল্যা ব্যক্তিত হইতেছে)।

১২—১৫। "আশা-পাশ" ইত্যাদি। (ভূমি)
ঈ্বং হাক্ত করিয়া, (দৃষ্টি-শরে জর্জারিত আমাকে)
আশা-রূপ ফাঁদ দেখাইতেছ; (কিন্তু কেবল
আশার জীবন-রক্ষা হয় না; তাই বল) কতক্ষণে
(আমার) জীবন রক্ষা করিবে পু বিঘটণ অর্থাৎ
বিনষ্ট সময় ফিরিয়া আসে না অর্থাৎ স্থােগ একবার নষ্ট হইলে আর ফিরিয়া পাওয়া যায় না,—
গোবিন্দােস (ইহার) প্রমাণ অর্থাৎ গোবিন্দাা
ইহার সভ্যতা উত্তমক্রণে জানেন।

(क्षांत्र।)

গিরিবর-কুঞ্চে চললি ছুহুঁ নিরজনে উচ্জ্ল-সমরক লাগি। নিজ অভিযোগ-বচনক কৌশলে মনহিঁ মনোভব জাগি॥ সজনি আজু পর্ম রস ভেল। অভিনব রাগং ভুরক্স-মনোরথে তুহুঁক ঘটন পুন ভেল। গ্ৰু। অওজগণ পুন ভেল রণ-বাদক কোকিলগণ সর-শৃঙ্গ। ভেরি-ভূরি-কুল বাজাওত শিখিগণ বির পন গাওত ভূক ॥ ভাঙু কামান কটাথ তিখিন শর অদভুত পুলক কচুকা। অত্য শেল ভেল ঘান পরশুকুল স্বর-ভেদ মদন-বন্ধক॥ এছন সাজ মদন-রণ-পণ্ডিত युवाव १० यूगल किटनात । ভণ রাধামোহন দরশন ক্রিয়ে উহ>> লীলা হোয়ৰ মোর ॥৯॥৬২৫॥

পঠিস্কর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১০৯৬ সংখ্যক পদ।

২। 'অভিনব রাগ' স্থলে 'অভি অফুরাগ' ক।

০। 'অব'ক, খা ৄ৪। 'শিখিগণ' স্থলে 'স্থীগণ'ক, প-র-সা। ৫। 'বারপন'ক, থ, প-র-সা।
৬। 'ভিথন' ক, খা ৭। 'কঞ্ক' ক, খ;
'কচ্ক' চ। ৮। 'শ্রেণী' ক; 'শ্রেণী' প-র-সা।
১। 'পর মুকুল' ক; 'প্রশু কুল' ব, চ। ১০।
'ভুবব' চ; 'যুঝব' ক। ১১। 'ভুহ' প-র-সা।

টীকা

১—१। "গিরিবর" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা ও
শ্রীকৃষ্ণ) উভরে নির্জনে গোবর্দ্ধন) পর্বতের কুঞ্জে
স্থরত-বুদ্ধের জন্ত গমন করিলেন; (তাঁহাদিগের)
ফদমে নিজ নিজ প্রাণমেন্দিত-স্চক বাক্যের কৌশলে
মদন উদ্দীপিত হইল।

শেল । "সঞ্জনি" ইত্যাদি। হে স্থি! আজ্ঞ অপুর্ক আনন্দ হইল! নব অনুরাগ ও (বেগাতি-শ্যা হেতু) তুরক্ষরপ মনোরও ছারা পুনরার (এীরাধাও এক্রফ) উভ্রের (মিলন) সভ্যটন হইল।

'৮—১১। "অগুল' ইত্যাদি। (নিকুঞ্ল-স্থিত)
পক্ষিণণ (স্বরত-মুদ্দের) রণ বাদক হইল অর্থাৎ
উহাবা কল নাদ ধারা শ্রীরাধাক্তক্ষের কাম-ভাব
মধিকত্তর উদ্দীপিত করিয়া স্বরত-মুদ্দের সাহাধ্যকারী
হইল; (সেইক্লপ) কোকিলগণ স্বর-শৃক্ষ স্বরূপ
হইল; ধ্রুরগণ (তীত্র কেকা-নাদে) তৃরী-ভেরী
বাজাইল; ভৃদ্পণ (গুঞ্জন-শন্দে) উভ্রের বীরত্ব
গান করিতে লাগিল।

>২—: ৫। "ভাঙ্," ইত্যাদি। (উভরের স্থরত-যুদ্ধে) ক্র ধম্ম স্থরপ, কটাক্ষ তীক্ষ শরস্থরপ, রোমাঞ্চ অন্তুত বর্ম্মসরপ, অঞা-(ধারা) শেল-অস্ত্র-স্থরপ, বর্ম (কিন্দুসমূহ) পরশু-স্থরপ ও (রসাতিশব্যে) স্থর-ভেদ অর্থাৎ ভগ্ন কণ্ঠ-স্থর কন্দর্পের বন্দৃক স্থরপ ইইল।

১৬— . ৯। "এছন" ইত্যাদি। মদন-বুদ্ধে পাৰদৰ্শী কিশোৰ ও কিশোৰী উভৱে ঐকপ সাজে

যুদ্ধ করিবে; (সধী-স্থানীয়) রাধামোধন কভিতে-ছেন--- ঐ লীলা আমার দর্শন হটবে কি ?

ভধা রাগ ৷১

স্থি অনুমানে জানিয়ে কাজ। জয় জয় কিঞ্জিনি তুহুঁ নৃপুর-মণি কঙ্কণ রণ-রব॰ বাজ ॥ ধ্র ॥ নিবিড় আলিগন ভুজে ভুজে বন্ধন প্রতি অপ জনু ভট বীর। কীয়ে পরস্পর করু পরিরম্ভন कानिया नमत अधीत॥ কল্প বলয়া সঘন সম বোল ১ চুম্বন যুগ যুগ থোর। বুঝলুঁ মদন পরাভব পায়লং জীতল যুগল-কিশোব॥ সৌরভে মাতি ভ্রমরকুল ধায়ত ছোড়ল কুন্তম-বিলাস। নিজ অভিযোগ হোয়ত পুন ঐছন কহ রাধামোহন দাস ১০ ০০ ৬২৬॥ এতদগীতং সম্ভোগ-রাব্রোপযুক্তম্। ইতি প্রথম-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯৭ সংখ্যক পদ।
২। 'ফানিরে' প-স ফলে 'বুঝল' ক, থ, ঘ, চ,
প-র-সা। ৩। 'রগ-রব' ফলে 'রব রব' থ। ৪।
'বুঝল' ক, চ, প র-সা। ৫। 'পাওল' ক; 'মানল'
খ, ঘ। ৬। 'ধারল' প-র-সা।

টাকা

১—১৫। "স্থি" ইত্যাদি। রাধানোহন ঠাকুর উাহার এই স্বর্গচিত পদের ব্যাধ্যা করিতে বাইরা লিথিয়াছেন—"ততো নিকুঞ্জ বাজে পূর্বাসীডোক্ত 'স্থি অন্ব্যানে জানিরে কাল' ইত্যাদিনা পুলারত যুদ্ধ মণে কৌশলং জনান্তিকং বর্ণয়তি সর্বাদানি সেনাগণানি। পরম্পারং যুদ্ধনৈপ্ণ্যাদিকং ছুই্বা আলিজনং কুর্বজাবিব তৌ। স্থগমত্বাৎ রহস্তত্বা-চ্চান্তেযামর্থোন কুতঃ।" অর্থাৎ নিক্ষ্ণের বাহিরে থাকিয়া কোনও সধী অপর স্থীর নিকট জীরাধাক্ষণ্ণের রভি-রণের বর্ণনা করিতে যাইয়া জীরাধাক্ষণ্ণের সমস্ত অক্ষণ্ডলিকে সৈঞ্জগনকণে বণিত করিতেছেন। উহারা যেন পরস্পরের যুদ্ধনৈপ্ণ্য দোঝয়া আননেশ পরস্পরকে আলিজন করিয়া রাহয়াছে। স্থবোধ্য ও গোপনীয় বালয়া অক্সান্ত বাক্যের ব্যাধ্যা করা হইল না।

অত্র রাধামাধব বৈঠলি ইত্যাদি পদং গেয়ম্। অথ স্বয়ংদোত্যং দিবায়াং যথা। তদুচিত-দিবাভিসার:। ভত্নচিত-দ্রীগোরচন্দ্রঃ। गांदक 15 লাখবান হেম চম্পক জিনি গোৱা তমু-লাবণি অবনি উজোর। চন্দন-চরচিত মালতি-মণ্ডিত হেরইতে আঁখি ভেল ভোর॥ মাঝ দিনহিঁ আজু গৌর কিশোর। বসনহি ঝাঁপি নিজ আপদং মন্তক যায়ত হুরধুনি-ওর॰॥ ঞ ॥ বাম নয়নে ঘন চাহত দশ দিশ বাম পদ আগু সঞ্চার। বাম ভুজহি কাংে বসন আগোরইং গজ-গতি চলু অমিবার । গদ গদ শবদে করত হরিকীর্ত্তন व्ययुगानि गुथ-मिन हाटम । রাধামোহন দাস না বুঝয়ে ও রস निकरमाय छाविया कारन्य ॥১॥५२१॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১০৯৮ সংখ্যক পদ।
২। 'আপাদ' ব, চ, প-র-সা। ৩। 'রোর' ব, চ;
'জোর' ক। 'রোর' পাঠের 'য়'কারের বিন্দৃটি
লিপিকর-প্রমাদে পরিত্যক্ত হইয়া 'বোর' এবং পরে
'বোর'ই 'জোর' পাঠে পরিণত হইয়াছে। ৪।
'নরন' ব, চ। ৫। 'আগোরহি' চ, প-র-সা।
৬। 'বৃঝিরে' ব; 'বৃঝিয়ে' চ। ৭। 'য়ো' চ;
'ঝো' পর-সা।

ी का

৫—१। "মাঝ" ইত্যাদি। আজ মধ্যাংশ্বেই প্রীগৌরাক্ষ বদন ছারা নিজের চরণ ছইতে মন্তক পর্যান্ত আবৃত করিয়া গঙ্গার তীরে যাইতেছেন। (দিবাভিদারিকা প্রীরাধার ভাবে বিভাবিত হইয়া প্রীগৌরাক্ষ প্রীরাধার অভিসারাভিনয় প্রদর্শিত করিতেছেন)।

বরাড়ী ।>

দেব-আরাধন-ছলেই চলু গোরীই।
সক্ষহি সম-বয় নবিন কিশোরী॥
চন্দন কুকুম আর ফুল-মাল।
লেয়ল বছ উপরার রসাল॥
চলু বয়-নাগরি সঙ্গব মাহ।
সচকিত নয়নে দীগট দশ চাহ॥
ঐছন সময়ে নিবিড় বন মাঝ।
মীললাই একলে বিদেগধ-রাজ॥
হেরি স্থবদনি অতি হর্ষিত ভেলি।
কছ কবিশেখর তৃত্ত জন কেলি ॥২॥৬২৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১০৯৯ সংখ্যক পদ। ২। 'আরাধন ছলে' হলে 'আরাধনে' ক, খ, প্রুলা। ৩। 'পৌরি' চা ৪। 'দিগ' ক,

প-র-সা। ৫। 'সমর' প-র-সা। ৬। 'মিলল' ক,প-র-সা।

थानगी।>

কাননে কুন্থম তোড়িসি কাছেং গোরি।
কুন্থমহিঁ নির্মিত সব তকুং তোরি ॥
জ্ঞানন হেম-সরোক্ষং ভাস।
সোরভে শ্যাম-ভ্রমর মিলু পাশ ॥
নয়নয়ুগল নিলং উত্তলল জোর।
সহলে শোহায়লং ভ্রাবণক ওর ॥
অপরুণং তিল-ফুল স্থললিত নাসা।
পবিমলে জিতলং অমর-তক্র-বাস ॥
বান্ধুলি-মিলিত অধর ঘাহাঁ হাসং।
মুকুলিত কুন্দ-কুমুদ্ধং পরকাশ ॥
সব তকু ফুটল চম্পক-গোরংং।
পাণিক তল থল-কমল উজোরংং॥
গোবিন্দ্দাস অতথে অনুমান।
পুজহ গশুপতি নিজ তকু দান ॥০॥৬২৯॥

পঠিস্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮০ সংখ্যক ও প-র পুথির ২৪।২ সংখ্যক পদ। ২। 'ভোড়দি কাহে' হলে 'কাহে ভোড়দি' প-র-সা। ৩। 'কুস্থমহ' প-র-সা, 'কুস্থমত' প-র। ৪। 'নিরমিত সব তম্ম' হলে 'সব তম্ম নিরমিত' ক, প-র-সা, প-র। ৫। 'নীল' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'সহজে শোহায়ল' হলে 'সহজ শোহায়ল' ব; 'সহজে দোহায়ল' চ; 'সহজে দোহায়ল্' প-র-সা। ৭। 'অপরূপ' ক, চ। ৮। 'অপরূপ তিল-স্থা। ৭। 'অপরূপ' ক, চ। ৮। 'অপরূপ তিল-স্থা ইত্যাদি হলে 'মূল্লিত কিংশুক কোরক নাস' পর-সা। প্রাচীন কবিগণ শুক-চঞ্র সহিত নাদিকাকে উপমৃত্ত করিয়াছেন; কিংশুকের সহিত শুক্-মুথের উপমৃত্ত করিয়াছেন; কিংশুকের সহিত

কিংশুকৈ: শুক্মুথচ্ছবিভিন্ন দঝং, কিং ক্লিকারকুষ্টমন্ কতং মনোজৈ:।"— ঋতুসংহার। স্থতরাং
কিংশুক-কোরকের সহিত নাসিকার উপমা অভিনব
কুইলেও অসমীচীন নহে। ৯। 'জীতল' ঘ;
'জিনল' প-র-সা। ১০। 'বাল্পুলি-মিলিত' ইত্যাদি
স্থলে 'বাল্ধলি অধর মিলিত' ইত্যাদি ঘ; 'বাল্পিলি
অধর মিলত ষত হাস' প-র-সা; 'বাল্পিলি বল্প অধরে
মধু হাস' প-র। ১১। 'মুকুলিত কুন্দ' ইত্যাদি
স্থলে 'দেশনহি কুন্দ কুসুম পরকাশ' ক; 'দেশনহি
কুন্দ কুমুদ পরকাশ' ক, প-র। ১২। 'সব তন্ত্ ইত্যাদি স্থলে 'সব তন্ত্ ফুটল' ইত্যাদি চ; 'সব তন্ত্ স্কুটল চম্পক্দল গোর' ঘ; 'সব তন্ত্ ফুট চম্পক্ সম
গোরা' ক; 'সব তন্ত্ ফুটল চম্পক্ গোরি' প-র-সা।
১৩। 'উলোরি' প-র-সা।

টীকা

১-->৪। "কাননে" ইত্যাদি। (ঐক্সফকে দেৰিয়া এীরাধা ভাব-দঙ্গোপন জন্ম ছল করিয়া ফুল তুলিতে প্রবৃত্ত হইলে, শ্রীকৃষ্ণ তাঁহাকে রুসিকতা করিয়া বলিতেছেন) হে গৌরাঙ্গি! তুমি কি জন্ম কাননে কুসুম চয়ন করিতেছ ? ভোমার সকল অঙ্গই কুম্ম ছারা নির্মিত বটে ৷ (তোমার) বদন স্থর্ণ-পদ্মের কান্তিযুক্ত; (উহার) সৌরভে শ্রাম ভ্রমর (এক অর্থে—কৃষ্ণবর্ণ ভ্রমর; অন্য অর্থে ঐকৃষ্ণ-রূপ অমর) পার্খে আসিয়া মিলিত হইয়াছে। (তোমার) নয়নবয় নীল উৎপল-যুগলম্বরণ; (উহা) খাভাবিক সৌন্দর্যো । নীলোৎপল-কর্ণভূষণের ন্যায়) ভোমার কর্ণের প্রাস্ত শোভিত করিল। (ভোমার) হুগঠিত নাদা অলোকিক তিল কুল স্থরাণ ; (উহার) সৌরভে পারিস্বাত-তঙ্গর স্থগন্ধকে পরাজিত করিল। (জীরাধার নিশাদ-বায়ু পারিকাত পুষ্প হইতেও অধিক শ্বন্তি,-এতদ্বারা ইহাই ব্যঞ্জিত হইতেছে।) (তোমার) বান্ধলি-পূপা-সংযুক্ত (আরক্তিম) অধর বেখানে হাদিতেছে, (পেখানেই) মুকুলিত কুলা ও কুমুদ পুষ্প প্ৰাকৃটিত হইরা উঠিতেছে.! (ভোমার) সকল অঞ্ প্রকৃতিত চম্পতের নার স্থগোর; কর-

ভল স্থল-পালের স্থায় উজ্জ্বল। অভ্নব (স্থী স্থানীয়) গোবিন্দাস অস্থান স্থারা স্থির করিতে ছেন—,পুস্থাময়ী ভোমার অস্থাপুস্থা আহরণ নিপ্রাের্জন!) ভূমি (পুস্থাময়) নিজ্ঞ দেহ দান করিয় পশুপতিকে (এক অর্থে—শিবকে, অস্থা অর্থে— ব্রজ্যের গো-রক্ষক ক্লাফ্টকে) পুজা কর।

ভূপানী।১

পতি অতি তুরমতি ক্লবতি নারী।
স্বামি-বরত পুনং ছোড়িং না পারি॥
তেঁঃ রুপ যৌবন একু নহ উনং।
বিদেশধ নাহ না হোয় বিনি পূণ্ণ॥
এ হরি সভয়ে দেখায়বিং পস্থ।
পূজব পশুপতি গোরি একস্তুদ ॥ধ্রু॥
সহজে বধু-জন গতি মতি-হীনং।
ঘর সঞ্জে বাহির পস্থ না চীনংং॥
না মিলল কোই বনহিঁ বন আন।
অমুসরিংংমুরলি আয়লুঁ এহিংং ঠাম॥
আয়লুঁ দূর পুরব নিজ সাধেংং।
একলি বোলিংং করহ জনি বাধেংং॥
তুহুঁ যৈছে গোরিংং আরাধলি কানংং।
গোবিন্দ দাস তাহেংদ প্রমাণ॥৪॥৬৩০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-দা পুথির ১৯৩।২০৯ সংখ্যক ও
প-র পুথির ২০৷২ সংখ্যক পদ। 'বড়ারি' প-র।
২। 'হাম' প-র-দা। ৩। 'লেই' প-র-দা। ৪।
'তে' ক, ৬, ঘ, চ, প-র-দা। ৫। 'একু নহ
উন' হলে 'এক নহে উন' ক, ৬, চ, প-র-দা।
৬। 'হোর বিনি পুণ' হলে 'হোরে বিপুন' ক;
'হোরে বিনি পুন' প-র, প-র-দা ১৯৩; 'হোরেড
পুন' প-র-দা ২৬৯; 'হোরে নিপুন' च; 'হোরে

নিপুন'চ। ৭। 'দেখায়দি' প-র-সা। ৮। 'একান্ড' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৯। 'গতি-মতি-হীন' স্থলে 'মতি অতি হীন' প-র-সা, প-র। ১০। 'পছ না চীন' স্থলে 'পছ না চিন' ক, খ, প-র-সা। 'পথ নাচি চিছু' প-র। ১১। 'আঞ্চমরি' প-র-সা। ১২। 'তুয়া' প-র। ১৩। 'নিজ সাধে' স্থলে 'মন সাধে' প-র-সা; 'নিজ সাধ' প-র। ১৪। 'বলি' ক; 'জানি' প-র। ১৫। 'বাদ' প-র। ১৬। 'গৌর' ঘ। ১৭। 'ভোন' প-র-সা। ১৮। 'তোহে' খ। 'তাহে আছে' প-র-সা।

টাকা

১—২। "পত্তি" ইত্যাদি। (খ্রীরাধা খ্রীক্তফের রিদিকতার উত্তরে ইন্ধিতপূর্ণ বাক্যে কহিতেছেন)— আমার স্বামী অভিশন্ধ অল্লবৃদ্ধি; আমি কুলবতী নারী,—(ভাই, পাতিব্রত্য ত্যাগ করিতে পারি না'। (ব্যঙ্গনাগম্য অর্থ) আমার পতি অর্থাৎ পালন-কর্ত্তা (প্রিয়তম নতে) নিভাস্ত অস্বদৃদ্ধি; আমি কুলাঙ্গনা; (স্থতরাং) পতিকুলের ও পিতৃকুলের ভয়ে আমাকে (বাহ্নিক) পাতিব্রত্য প্রকাশ করিতে ইইতেছে।

৩—৪। "তেঁ রুপ যৌবন" ইত্যাদি। ভাহাতে আবার (আমার) রূপ কিংব' যৌবন একটিও কম নছে! (কিন্তু তাহা হইলে কি হইবে ?) রুদিক আমী বিনা পুণ্যে হয় না। (ব্যঞ্জনা-গম্য অর্থ) আমার হার স্থন্দরী ও যুবতি নারিক। অরুদিক আমীতে সম্ভৱ থাকিতে পারে না; স্থতরাং রূপ-বৌবনসম্পন্ন স্থর্দিক নারক পাইলে বে তাহার প্রতি অসুরক্ত হইবে, তাহাতে সন্দেহ কি আছে?

৫—৬। "এ হরি" ইত্যাদি। হে হরি ! অতএব তুমি আমাকে পথ দেখাইয়া দিবে; আমি
একান্তে অর্থাৎ নির্জ্জনে পশুপতি মহাদেব ও গৌরী
পার্বাতীকে (স্বামীর স্থব্দি ও রূপগুণ বৃদ্ধির জয়)
অর্চনা করিব। (ব্যশ্ধনা-গমা অর্থ) হে আমার
কজ্জা ধর্মাদির সন্থিত চিত্তের অপহারক। তাই
ভূমি আমাকে (অভিসার-বোগ্য স্থেলর) পথ দেখা-

ইয়া দিবে; গৌরাঙ্গী আমি (বজের) পশুপালক তোমাকে নির্জ্জনে ভন্ধনা করিব।

৭—. •। "সহজে" ইত্যাদি। বধ্দনেরা খভাবতঃ গতি-বৃদ্ধি-হীন হইয়া থাকে; (তাহারা) ঘর হইতে বাহিরে (যাভায়াত করার) পথ চিনে না; (তাহাতে আবার) বনে বনে (ঘুরিয়া) অঞ্জানেকর দেখা পাইলাম না; (কেবল) তোমার বংশীধ্বনির অমুসরশ করিয়া এই ফানে আসিলাম। (ব্যক্তনাগ্য অর্থ) এই বনভূমিতে লোকের গভায়াত নাই; তোমার বংশী নীরব হইলে উহার শব্দ শুনিয়া যদি কাহারও এখানে আগার আশক্ষা থাকিত, তাহাও আর থাকিবে না; আমি ভোমার বংশীরবে মোহিত ও আরু ই হইয়া ভোমার নিকট আসিঢাছি; মুভয়াং ভূমি আমার সম্বন্ধে যাহা ইছহা, ভাহাই করিতে পার।

১১—১২। "আয়নুঁ" ইত্যাদি।(পুর্ব্বোক্ত বাক্য দাবা মনের গৃঢ় ভাব যদি প্রকাশ না পাইরা থাকে, এই আশকার অন্থরাগ ও উৎকণ্ঠার আভিশয়ে বিগত্তলজ্জা শ্রীরাধা অধিকতর স্পট্ট ইক্সিত করিয়া বলিতেছেন)—নিজের মনোবাসনা পূর্ণ করিব বলিয়া অনেক দূরে আসিয়াছি; আমি একাকিনী বলিয়া দেখিও যেন, (আমার ইচ্ছায়) বাধা না জন্মাও! (বাঞ্জনা-গম্য অর্থ—সেবার অন্ত অনুরাগতা অন্থরাগবতী নায়িকাকে নির্জ্জনে পাইয়া যে তাহার বাসনা পূর্ণ না করে, তাহার তাম অর্সিক ও অন্তবৃদ্ধি পুরুষ নায়কার প্রশেষভাজন হইতে পারে না।)

১৩—১৪। "তুর্ছ" ইত্যাদি। (সধীয়ানীয়
গোবিদ্দদাস এই স্বধ্বদোত্যের অবসানে শ্রীরাধাক্রম্বের গুরু সম্ভোগ-লীলা ইলিতে বর্ণনা করিতে
যাইয়া শ্রীরাধাকে রসিকতা সহকারে বলিতেছেন)—
হে গোরি! তুমি যেরপে শ্রীক্রফের সেবা করিলে,
সে বিষয়ে গোবিদ্দদাসই প্রমাণ অর্থাৎ সাক্ষী বটে!
পদকর্ত্তার এই উব্জির তাৎপর্য্য বোধ হয় এই বে,
বে স্থলে নারক-নাহিকা অনিষ্ক্রিভভাবে সম্ভোগ-

কেলিতে প্রবৃদ্ধ হয়, সে হলে উহাতে পূজা বা পরিচর্ব্যার ভাব অপেকা প্রভিদ্দিতা বা কলহের ভাবই
সমধিক দৃষ্ট হইয়া থাকে; স্থতরাং উহাকে সেবা না
বলিয়া তাহার বিপরীতই বলা সঙ্গত। তুলনা
কক্ষন—"কলহরপং স্থরতমাচক্ষতে" ইত্যাদি—
বাৎস্থায়ন-কাম-স্বত্য।

শদোর্জ্যাং সংযমিতঃ পরোধরভরেণাপীড়িতঃ পাণিবৈদ্ রাবিদ্ধো দশনৈ: ক্ষতাধরপুটঃ শ্রোণীতটেনাংতঃ। হত্তেনানমিতঃ কচেহধরস্থাপানেন সম্মোহিতঃ কান্তঃ কামপি তৃপ্তিমাপ তদহো কামশুবামা গতিঃ॥"

—গীতগোবিন্দ, ১২শ দর্গ।

অথ বজু-রোধনম্।

वहाड़ी।>

ন কুরু কদর্থনমত্র স্বব্যাং ।
মামবলোক্য সতীমশরণ্যাং ॥
চঞ্চল মুঞ্চ পটাঞ্চলভাগং ।
করবান্তধুনা ভাক্ষর-যাগং ॥ ধ্রু॰ ॥
ন রচয় গোকুল-বীর বিলম্বং ।
বিদধে বিধুমুখ বিনভি-কদন্বং ॥
রহসি বিভেমি বিলোল-দৃগন্তং ।
বীক্ষ্য সনাতন দেব ভবস্তং ॥१॥৬৩১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০০০ সংখ্যক পদ। ২। 'শরণ্যাং'ক, খ, ঘ। ৩। ক, চওপ-র-সা পুথিতে 'ঞ' চিহু নাই। ৪। 'বিবিদ্ধে' প-র-সা।

টাক1

১-৩। "নে"তি। অপরণ্যাং (অসহায়াং)
সভীং (পতিত্রতাং) মাং অত্ত (অস্মিন্) সরব্যাং
(বর্জানি) অবলোক্য (দৃষ্ট্রা) কদর্থনং (কুৎসনং
লাখনামিতি ভাবঃ) ন কুক্ব। একাকিস্তাঃ কুলাক্নারাঃ দুরাধ্বসমনং বস্তাপি অভিসারাভাশভাং অন-

রতি তথাপাসহায়ারা মম গরিষ্ঠপ্রয়োজনামুরোবাৎ প্রসমনং নাজ্ঞা শঙ্কনীয়মিতার্থঃ।

৩—৪। "চঞ্চলে"ভি। ছে চঞ্চল! প্রীকৃষণ!
মম পটাঞ্চল-ভাগং (পট্টবসন প্রান্তং) মুঞ্চ (ত্যজ্ঞ)।
অহং অধুনা (ইদানীং) ভাত্মর-যাগং (স্ব্যপুজনং)
করবাণি। স্ব্যপুজনার্থং স্ব্যমন্দিরং পমিব্যামীতি
ভাবঃ।

শেভ। "নে"তি। হে গোকুলবীর ! (প্রবীরভাং গোকুলৈক-রক্ষক !) বিলম্বং (মম স্থ্যপুজারাং
কালহানিং) ন রচয় (জনয়)। হে বিধুমুধ (চজ্রবদন) অংং ভূভ্যং বিনতিকদমং (প্রণামসমূহং)
বিদধে।

৭—৮। "রহসী"তি। হে সনাতন দেব! ভবতং রহসি (নিভ্তে) বিলোলদৃগত্তং (চঞ্চলা-পান্ধং) বীক্ষ্য (দৃষ্ট্ৰা) বিভেমি (ভীতাম্মি) নির্বিক্রিক্ত ভগবতঃ কিমপি কারণং হিছা বিকার-ভাবঃ ন শুভাবহ ইত্যর্থ:।

অহ্বাদ

>--- । অসহায়া পতিব্ৰতা আমাকে এথানে পথে দেখিয়া কুৎসা করিও না।

৩—৪। হে চঞ্চশা আমার পট্টবসনপ্রাস্ত পরিত্যাগ কর; আমি এখন স্থ্য-পূকা করিব।

৫—৬। হে গোকুলবীর ! আমার কালহানি করিও না; হে চক্রবদন! ভোমাকে আমি শত শত প্রণাম করিতেছি।

৭-৮। হে সনাতন দেব ! তোমাকে নির্জ্জনে বিলোল-কটাক-যুক্ত দেখিয়া আমার ভর পাইতেছে।

ভাৎপর্য্য

প্রথম ছই পংক্তির ভাবার্থ এই বে, বদিও একা কিনী:কোন ব্রতিকে দুর পথে পমন করিতে দেখিলে, তাহার চরিত্র সহদ্ধে মনে আশহা ক্ষরিতে পারে, কিন্ধবিশেব প্রয়োজনে সহায়হীনা সতী নারীও প্রথমন করিয়া থাকেন; স্কৃতরাং কেবল একাকী পথ পমন করা হইতেই অন্চারিতের অনুমান সক্ষত নহে। গা৮ পংক্তির ভাবার্থ এই বে, বিনি সনাতন দেবতা অর্থাৎ নির্মিকারাক্সক ভগবান, তিনি অংপজ্ঞানের মঙ্গলার্থে কোন সময়ে স্বেক্ছায় বিকার-ভাব
অবলম্বন করিলেও তাঁহার পক্ষে জন-শৃত্ত স্থলা
নিপ্রােজনে বিলোল কটাক্ষ প্রভৃতি অন্তাব ঘারা
বিকার-ভাব প্রকাশ করা অতি আশ্চর্যাজনক
বটে,—স্থতরাং না জানি, অক্সাৎ জগতের কি এক
বিভাট উপস্থিত হইল, ইহা মনে ক্রিয়া দর্শকের মনে
ভয়ের সঞ্চার হওয়া স্বাভাবিক। 'ন কুরু কদর্থনং'
ইত্যাদি বাক্যগুলির সরণ অর্থ ছাড়া স্থবীজনবাধ্য
অপর গৃঢ় বাকার্থ আছে; সেই ব্যঙ্গার্থের ইলিতে
শ্রীরাধা শ্রীকৃষ্ণকে স্বেজাক্সরপ কার্য্য করিতেই
প্রোৎসাহিত ক্রিতেছেন।

সৌরাষ্ট্রী ;>

পুলকমুপৈতি ভয়াশ্মম গাত্রং।
হসসি তথাপি মদাদতিমাত্রং ॥
বারয় তূর্ণমিমং সথি কৃষ্ণং।
অমুচিত-কর্ম্মণি নির্ম্মিত-তৃষ্ণং ॥ ধ্রু॰ ॥
জানে ভবতীমেব বিপক্ষাং।
ম াপনীতা যদনকক্ষাং৽॥
অভ্য সনাতনমতিমুখহেতুং।
ন পরিহরিষ্যে বিধি-কৃত-সেহুং॥৬॥৬৩২॥

পাঠান্তর

১। ইহা পর সা পুলির ১১০১ সংখ্যক পদ।
 ২। 'তৃশ্মিরং' দ। ০। ক, চ ও প-র-সা পুলিতে
'ঐ' নাই। ৪। 'বদবনকক্ষাং' ধ; 'বছকুলকক্ষাং'
ক, চ, প-র-সা।

तिका

১-২। "পুলক"মিতি। "রহদি বিভেমী"ত্যাদি শ্রীরাধাবাক্যং শ্রুদা শ্বরমানং শ্রীকৃষ্ণং প্রতি শ্রীরাধা পুনরাহ 'পুলক্ষ্ণৈতী'ত্যাদি। ভরাৎ (শ্বনিষ্টা-শহরা) বন গান্তং পূল্বং (রোমাঞ্চং) উপৈতি

(প্রাপ্রোভি) (রাগাভিরেকাৎ জাভরোমান্দীতাপি ব্যঞ্জাতে)। তথাপি দং মদাৎ (রূপ্যোবনরোর্গ্র্বাৎ) অভিমাত্তং হসদি।

৩—৪। "বারয়ে"তি। হে স্থি ! আং অফ্চিত্তকর্মণি (পরাঞ্চনাধর্যপদ্ধণে অধর্মকার্য্যে)
নির্মিত্ত্যকং (সঞ্জাতস্পৃহং) ইমং পুরোবর্ত্তিনং ক্রফং
তুর্ণং (শীঘ্রং) বার্ম বধারং কিমপি বিস্পৃশং
নাচরতীতি ভাবঃ।

৫ – ৬। "জানে" ইতি। সথীং কিমপ্যুত্তরমকুর্বতীং প্রমুদিতাঞ্চ দৃষ্ট্র শ্রীরাধা তাং গর্হয়তী
বদতি 'জানে' ইত্যাদি। ভবতীমেব (ছামেব) মম
বিপক্ষাং (বৈরিণীং) জানে (অবগচ্ছামি) বং
(যক্ষাৎ / ছং মাং বনকক্ষাং (বিপিনপ্রদেশং) উপনীতা (প্রাপিতা) অসীতি শেষঃ।

৭—৮। "অন্তে"তি। অদ্য সনাতনং (চিরন্তনং) অতিস্থহেতুং (অত্যন্তস্থকারণং) বিধিক্বতসেতুং (বিধাত্কতনিরমং প্রাণা ত্যরেহপি সতীত্বং
রক্ষণীর্মিতি সনাতনধর্মবিধানং ইতি ভাবঃ) ন
পরিহ্রিষ্যে (ন ত্যক্ষ্যামি) ক্ষণিক স্থলবলোভেনেতি শেষঃ।

অহুবাদ

১—২। হে কৃষণ ! আমার গাতে ভরে রোমোদগম হইভেছে,—তথাপি ভূমি গর্ক হেতু অভিশর
হাস্ত করিতেছ।

৩—8। হে স্থি । তুমি অফুচিত কার্য্যে ক্লাত-ভৃষ্ণ এই ক্লফকে সম্বর নিবারণ কর।

e—৬। তোমাকেই আমার শব্দ বণিয়া জানি-তেছি; বেহেতু তুমিই আমাকে এই বনস্থ্নিতে আনিয়াছ!

৭—৮। অন্য আমি প্রভৃত স্থপের নিদান বিধাতৃক্বত সনাতন নিয়ম পরিত্যাগ করিব না।

তাৎপর্যা

৭৮ পংক্তির সরল ভাবার্থ এই যে, ত্রী জাতির স্তীম্ব রক্ষা বিধাতার ক্বত সনাতন নিরম বটে, ক্ষণিক স্থালাভের প্রাত্যাশার অশেষ হৃথের নিদান সতীত্বধর্ম পরিত্যাগ করা নিতান্ত মৃঢ়তার কার্য। পূর্বপদের স্থার এই পদের "পূলকমুপৈতি" ইত্যাদি
বাক্যেরও গূঢ় ব্যঙ্গার্থ আছে; ঐ ব্যঙ্গার্থের ইন্সিতে
শ্রীরাধা শ্রীক্ষফকে যথেচছ কার্য্যে প্রোৎসাহিত
করিতেছেন।

थाननी ।>

সুন্দরি কাহে কংসি কেন বাণি।
মোহে পরশবি অব নিজজনং জানি॥
সব ছোড়ি আয়লু তোহারি লাগিয়া।
পুরহ আশ অধর-স্থা দিয়া॥
এত কহি চুফ্যে চিবুক্ত ধরিয়া।
ঠমকিত ঝাঁপয়ে মুখ গটাঞ্চল দিয়া॥
করে ধরি গিরিধর আয়লত নিকুঞ্জে।
রচিত কুস্থম-শেজ মধুকর গুঞ্জে॥
বৈঠল ছুহুঁ জন পুরল মন আশ।
নির্ধয়ে ছুহুঁ রূপ জগলাথ দাসত ॥৭॥৬৩৩॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১১∙২ সংখ্যক পদ।
 ২। 'নিরজন' প-র-সা। ৩। 'চিকুর' ঘ।
 । 'চমকি' প-র-সা। ৫। 'আঙল' খ,ঘ।
 । 'বছনাথ দাপ' ক,চ,প-র-সা।

भारत ।

অপর ব দিনহি কুঞ্জ-মণি-মণ্ড পে
শিতগং পবন বহ মন্দ।
ভিজ-কুল-নাদ স্থাদন বৈছন
মনমধ-যক্তক ছন্দ॥
জয়ঃ রাধামাধব মেলি।
তুত্ঁক প্রেম-লবং কো করু অনুভব
বব্হু স্থাত-রুল-কেলি ঃগ্রা

তহিঁ পুন অতিশয় নাগরি আগরি সত্যে সে নিমিলিত-আঁখি। আনন্দ-সিন্ধু-নিবেশহিঁ মাহিত দেয়ই প্রতি**অঙ্গ সা**খি॥ তহিঁ অতি স্থাতল জানন্দ-নিরঝর পুলক ভরল সব অঙ্গ। চীত-পুতলি জমু কাঁপয়ে ঘন ঘন অদভুত পুন সর-ভঙ্গ॥ অনধিন দেহ-দও পরি শোভিত মুকুতা সম স্বেদ-বিন্দু। বিগলিত অঙ্গ রাগ মণি-ভূষণ কঞ্ক অরুণ নিবি-বন্ধ॥ যাকর পরিমলে মাতল থাবর তাহে কিয়ে জঙ্গম লেখি১১। রাধামোহন-পহু-চিতে নিতি জাগই জমু উহ পাথর-রেখি>২॥৮॥৬৩৪॥ ইভানস্তরং সম্ভোগ-পদং যথাসম্ভবং গেয়ম্। ইত্যাদি স্বঃং-দৌত্যম্। ইতি দ্বিতীয়-পল্লব:।

পাঠান্তর

১। 'অপক্ষ' প-স হলে 'অপক্ষপ' ঘ, 'অপরূপ' ক, ঝ, চ। ২। 'নীতল' ক। ৩। 'তৈছন'
ক, ঘ, চ। ৪। 'জয় জয়' ক, চ। ৫। 'এেম
নব' ক, ঘ, চ। ৬। 'নাগরি আগরি' ছলে 'নাগর
আগরি' ক, ঘ, ৮। 'তহি অতি হ্দিতল' ছলে
'তহি অতি মিনিত' ঝ। ৯। 'অনধিন' প-স ছলে
'জনধি' ঘ, চ, 'জনধী' ধ। .০। 'আধ' ক, ধ;
'আর' ঘ, চ। ১১। 'বেশ' খ। ১২। 'রেশ'।

টীকা

>—৪। "অপক্ষৰ" ইত্যাদি। দিবাভাগে অপূৰ্ব কুঞ্জের মণিগৃহে শীক্তল পৰন মক্ষ মন্দ বহিতেছে; পক্ষিগণের শব্দ যেন মন্মথের যন্ত্রের স্থবাভের ভার।

৫—१। "জয়" ইত্যাদি। প্রীরাধামাধবের মিলনের জয় হউক; যথন (উভয়ের) স্থরত রস-কেলি (নির্বাহিত হয়), তথন উভয়ের প্রেমানন্দের কণামাত্রও কে অন্থতব করিতে পারে ?

৮—১১। "তহিঁ" ইত্যাদি। তাহাতে আবার (উভ্তরের মধ্যে) নারিকা অতিশয় রসে পরিপূর্ণা; তাই তিনি নিমীলিতনয়না; (বেন) তিনি আনন্দ-ক্লপ সমুদ্রের রসাস্বাদনে বিমোহিত হইয়াছেন— (তাঁহার) প্রত্যেক অঙ্গ ইহা সাক্ষ্য দিতেছে!

১২—১৫। "তহিঁ" ইত্যাদি। তাহাতে অতি
স্থাতিল আনন্দ-জল অর্থাৎ সাহিক-ভাব-জনিত
ঘর্মজল ঝরিতেছে; সকল অঙ্গ পুলকে পরিপূর্ণ
হইয়াছে; (বোধ হইতেছে) যেন চিত্র-লিধিত
প্রতিমূর্তি; সকল অঙ্গ ঘন ঘন কম্পিত হইতেছে
এবং অন্তুত শ্বর-ভঙ্গ প্রেকাশ পাইতেছে)।

১৬—১৯। "অনধিন" ইত্যাদি। (রসাতি-শব্যে) অনারত দেহ-যঞ্চির উপরে মুক্তার স্থায় খেদ-কণা শোভিত হইরাছে; অঙ্গ-রাগ, মণি-আভরণ, কাঁচুলী ও কটি-বদন-গ্রন্থি খালিত হইরাছে।

২০—২০। "বাকর" ইত্যাদি। বেই সজোগের পরিমলে অর্থাৎ সজোগ-বিমর্জ-জনিত সৌরভে (গিরি, তক প্রভৃতি) দ্বিতিশীল পদার্থ পর্যান্ত (জানন্দে) উন্মত্ত হইয়াছে, তাহাতে পশু-পক্ষী প্রভৃতি গতিশীল প্রাণীদিগকে কি লিখিব ? অর্থাৎ গতিশীল প্রাণীদিগের কথা কি বলিব ? পদক্তা রাখামোহনের প্রকৃত্তীক্বক্ষের চিত্তে উহা প্রস্তরে (অভিত) রেখার ভার নিত্য জাগরিত রহিয়াছে।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং।
তত্ত্বিত-শ্রীগোরচন্দ্রঃ।
ধাননা।>
ভাব ভবে গরগর চিত্রং।
ব্যেবে উঠে বেণে বৈসে না পায় সম্বিত্রণ।

অতি রসে নাহি বান্ধে থেছ।
সোঙরি সোঙরি কান্দে পুরুব স্থনেহণ ॥
নাচে পক্ত গোরা নট-রাজ।
কি লাগি গোকুল-পতি সংকীর্ত্তন মাঝ ॥ এক ॥
নিজ্পর কিছুই না জানে।
দীন হান উত্তম অধম নাহি মানে ॥
প্রিয়-গদাধর-করদ ধরি।
মরম-কথাটি কহে ফুকরি ফুকরি॥
ডগমগ আনন্দ-হিলোলে ।
লোলিয়া লোলিয়া পড়ে পভিত্তর>>
কোলে॥

গোরা-রসে সব রসময় ২। না দরবে ২০ বলরাম পাধাণ জনর ॥১॥৬০৫॥

পাঠান্তর

 रेश প-द-मा পुथित ১১১२ ও প-त পुणित ২১।৬১ সংখ্যক পদ। এই পদটি পদকলতক্র তৃতীয় শাখার ১১শ পলবে ৯০৯ সংখ্যক পদরাপে পুনরুদ্ধৃত হইয়াছে। ২। 'চীত' ঘ, চ। ৩। পায় স্থিত' স্থলে 'পান সন্বিত' ক, চ; 'পায় সন্বীত' হ। ৪। 'हर्ति' क, थ, घ, ह (७०६ मःश्रोक भन)। १। 'श्रूरमह' क, ४, ६, १-ब-मा; 'मिरनइ' भ-त्र। ७। भ-ब-मा ছাড়া অভাত পুথিতে 'ঞ' নাই। १। 'নিজ পর' ইভ্যাদি পংক্তিশ্ব ক, ধ, ঘ, চ পুণির ৬৩৫ সংখ্যক পদে ও প-র-সা পুথিতে নাই। ১০১ সংখ্যক পদে 'দীনহীন উত্তৰ অধম' ইত্যাদি স্থলে ক প্ৰভৃতি পুথিতে 'উত্তম অধম' ইত্যাদি পাঠ আছে। ৮। 'করে' চ। ১। 'আনন্দ-হিলোলে' স্থলে 'প্রেম-हिर्लाल' क, थ, घ, ठ शूथि, > > मश्थाक भए। > । 'লোলিয়া লোলিয়া' স্থলে 'ঢ়লিয়া ঢ়লিয়া' খ ৯০৯ পদ ; 'চলিয়া ঢলিয়া' প-র। ১১। 'ভকতের' क. ब, घ, ह পूबि (> > সংখ্যক সংখ্যক পদ), প-র। ১২। 'গোরা' ইত্যাদি ছলে 'এ রসে জগত াস্থিত । রসময়' ক, ধ, ব, চ পুথি (১০৯ সংখ্যক পদ), 'ও I ASIATIG SOCIETY CALCUTTA

637330 to 8:12.93.

রদে অংগত রসময় প-র। ১৩। 'বিদরে' ঘ,চ; 'দরণে' প-র-সা।

শ্রিনিত্যানন্দচন্দ্রস্থা

काटमाम ।

২৯ন - গঞ্জন লোচন রঞ্জন গতি অতি ললিত স্বঠান। পুন উঠি গরজত চলত খলত পুন চাহনি বক্ষ নয়ান ॥ গৌর গৌর বলি ঘন দেই করতালি কঞ্চ-নয়নে বহে লোর। প্রেমেড ব্যবশ হৈয়া প্রতিতেবে নির্থিয়া আইস আইস বলি দেই কোর॥ ত্তকার ঘন ঘন মালদাট পুন পুন কত কত ভাব বিথার। কদন্ব-কেশর জন্ম পুলকে পুরল তমু

ভাইয়ার ভাবে যেন মাজোয়ার ॥

আগম-নিগম-পর বেদ-বিধি-অগোচর

তাহা কৈল পতিতেরে দান।

কহে আত্মারাম দাসে না পাইলুঁ॰ কুপা-লেশে

রহি গেলু পাষাণ সমান ॥২॥৬৩৬॥

পাঠান্তর

১। 'অংখনগঞ্জন' ক। ২। 'প্রেমেডে' ক, চ। ৩। 'পাইয়া' ক, চ'।

তথা সম্ভোগত্য স্বয়ংদোত্যং প্রকারান্তরং যথা।

शाननी ।>

ধরি নাপিডানী-বেশ মহলেডে পরবেশ 'ব বেখানে বসিয়া আছেং রাই। হাতে দেইং দরপণী খোলে নথরঞ্জনী বোলে বৈস দেই কামাই॥ এবে

বসিলা যে রসবতী নারী। থুলিল কনক বাটী অ।নিল বিমল ঘটী ঢালিল স্থবাসিত বারি॥ ধ্রু॰॥ करत नथ-त्रक्षनी চাঁচয়ে নখের কণি শোভিত করল যেন চাঁদে। নাপিতানী একে শ্রামা পুনীর অধিক ঝামাণ বুলাইছে মনের আনন্দে॥ ঘসিয়া ঘসিয়া পায় আলতা লাগায় ভায় নির্থি নির্থি অবিরাম। রচয়ে বিচিত্র করি চরণ হৃদয়ে ধরি তলে লেথে আপনার নাম। নাপিতানী বলে ধনি দেখহ চরণখানিদ ভাল মন্দ করহ বিচার। (मिश्र स्वयमनी कटर कि नाम लिशिना उटर পরিচয় দেহ আপনার॥ নাপিভানী কহে ধনি শ্যাম নাম ধরি আমি বসতি এ' তোমার নগরে। বিজ চণ্ডীদাসে কয় এহ নাপিতানী নয় কামাইলা>> যাহ নিজ ঘরে ॥৩॥৬৩৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১১৪ সংখ্যক পদ।
২। 'দিয়া' ক, ঝ, ড়, চ; 'দেয়' দৌ: পুথি। ৩।
'দিয়া' ক, ঝ, ড়, চ। ৪। 'আনিল বিমল ঘটা'
ফলে 'আনিয়া' ইভ্যাদি ক, ঝ, ড়, চ; 'আনিল
কনক ঘটা' দৌ: পুথি। ৫। ক, ঝ পুথিতে 'ঝ'
নাই। ৬। 'বেন চাঁদে' ফলে 'নএচাঁদে' দৌ: পুথি।
অতঃপর দৌ: পুথিতে নিয়লিবিত অতিরিক্ত পাঠ
ছাই হয়; ব্যা,—

'অলনে উলস পার বুম লাগে আথো গার হাত দেয় নাপিতানীর কাছে॥'

1 'নাণিতানী' ইত্যাদি ছলে 'নাণিতানী
 একে স্থানা ছনীর পুত্নী বানা' ক, ব, ব, চ।

'নাপিতানী' ইত্যাদি পংক্তি ছয়টির পরিবর্থে দৌঃ পুৰির পাঠ; বথা,---ননির সমান রামা 'নাপি চানী বলে খ্রামা ৰোণাবে মনের আকুতে। আলতা লাগাএ ভার অসিতে ঘসিতে পায় বচএ যে মনোহর বীতে॥ চরণ উপরে ধরি বচএ বিচিত্র করি তলে লিখে নাম আপনার।' ৮। 'নাপিতানী বলে ধনি' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি প-র-সা পুথিতে নাই। ১। 'দেখি অবদনী কছে' ইত্যাদি পংক্তি ছয়টির পরিবর্ত্তে দৌঃ পুথির পাঠ: যথা.---'ভুনি নাপিডানী-বাণী দেখিএ চরণধানি হেটে দেখে খ্রামের নাম। চাহে নাণিতানী পানে বঝিয়া আপন মনে বলে কহ আপনার নাম॥ জগত মোহিবার তরে ভাষা নাম কছে তারে ফিরি আমি নগরে নগরে। নাপিতানী নহে চণ্ডীদাসে কভে কামাইলে যায় আপনার বরে॥ ১०। '(व' क. थ. প-त्र मा। ১১। 'कामहित्न' 41

টীকা

৮—১১। "করে" ইত্যাদি। (নাপিতানী) করে নথরঞ্জনী অর্থাং নক্রন্ (ধরিয়া) নথের কোণা চাঁছিতেছে; (উহাকে) চক্রের স্থায় শোভার্ক করিল। নাপিতানী একে যুবতী, (তাহাতে আবার) মনের উল্লাসে নবনীত অপেক্ষা অধিক (কোমল-ভাবে) ঝামা ঘর্বণ করিতেছে। (এ স্থলে 'স্থামা' শক্রের 'স্থাম-বর্ণা' অর্থ স্থসক্বত নহে। দৌঃ পুথির পাঠে 'স্থামা' নাপিতানীর নাম বলিয়া উক্ত হইছাছে; কিন্তু সৃদ্ধিত পাঠে সেইরপ অর্থও সংলগ্ম হর না; স্থতরাং অগত্যা 'শ্রামা' শক্ষের অর্থ 'বুবতী' করা হইয়াছে। তুলনা করুন—"তথী শ্রামা শিধ্রি দশনা প্রক্রিবাহে। তুলনা করুন—"তথী শ্রামা শিধ্রি

क्रिनो ।)

নাপিতানী কছে শুন গোং সই । অনাথী জনের⁸ বেতন কই^e ॥ কহ তুমি যাই রাইয়ের কাছে। বেওন লাগি সে বসিয়া আছে । যদি কৰে তবে নিকটে যাই। যে ধন দেন তা সাক্ষাতে পাই॥ e্চনি সখী কহে রাইয়ের^৬ কাছে। নাপিতানী বসি আছুয়ে নাছে। রাই কংে তবে আনহ তায়। কভেক বেতন আমারে চায়॥ স্থী যাই তবে ডাকয়ে গাইস। আসিয়া রাইয়ের নিকটে বৈস 🛭 আসি নাপিতানী কহয়ে ভায়। বেতন কেন না দেহ আমায়॥ বাই করে কিবা হইবে তোর। সে কহে বেতনে নাহিক ওর॥ হাসিয়া কহয়ে স্থন্দরী রাই। তেন নাপিতানী দেখিয়ে নাই॥ এমতে ধন ১০ যে কর্যাছ কত। সে কহে ভুবনে আছুয়ে যত। এক ধন আছে ভোমার ঠাঞি। সে ধন পাইলে ঘরকে যাই॥ क्रमाय कनक-कनम आहि। মণিময় হার তাহার কাছে । ভাহার পরশ-রতন দেই। দরিদ্র-জনারে কিনিয়া লেহ ॥ श्रामिया कराय श्रुमात्री (गात्री। ভালে > নাপিতানী পরাণ-চোরী > । পরশ-রতন পাইবা বনে। এখন[>] ठलह निक खब्दन ॥

চণ্ডীদাসে কহে না কর লাজ। নাপিতানী নহে রসিক-রাজ ॥৪॥৬৩৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১১৫ সংখ্যক পদ।
২। 'লো' দৌ: পুথি। ৩। 'সোই' ए। ৪।
'লোকের' ক, থ, প-র-সা। ৫। 'কোই' ए। ৬।
'রাইক' ক। १। 'আমার' ক, থ; 'আমার' প-র-সা। ৮। 'বেতন' ক, থ, প-র-সা। ৯। 'দেথি
বে' ক; 'দেথিএ' প-র-সা। ১০। 'ধনে' ক।
১১। 'ভাল' ক, প-র-সা। ১২। 'পরাণচ্রি'
প-র-সা। ১৩। 'এখনে' ক; 'এখনি' ए। দৌ:
পুথিতে সম্পূর্ণ পদটির নিম্নলিথিত রূপান্তর দৃষ্ট
হয়, বংগ,—

'নাপিতানী বলে শুন লো সই। অনাথিনি লোকের সাক্ষাতে পাই॥ मुखी यारे करह त्राहेरवत्र कारह । বেতন লাগিয়া নাপিতানী আইছে॥ ক্হিল বোল্ই আন্ত তাএ। কতেক বেতন নাপিতানী চাএ॥ ক্ষেৰলি (?) বলিয়া ডাকএ আইস। বাই বলে অই ছলিচাএ বৈস। বসিল ছবিনী নাপিতানী স্থামা। কছএ বেডন দেছএ বামা॥ কতেক বেতন হইবে তোর। আমার বেতনের নাহিক ওর॥ হাসিরা কহই স্নলরী রাই। **এ**मन ছिथनी (मिथि नारे॥ এত ধন ভূমি করিয়াছ কত। ভূবন ভরিয়া আছএ বৃত্ত । এক ধন আছে তোমার ঠাই। সে ধন পাইলে খরেতে যাই ॥ मत्रां कति एक मित्रदार धन। ্চাহিলে না দেএ ফুপীন জন।

কুচ্বুগ-গিরি মোর মনছিত।
ইহা দিয়া মোরে করছ হিত॥
আর বে বেতন না হএ মোর।
পরশ-রতন পাইএ যে তোর॥
হাসিয়া বোলএ রসবতি গোরি।
ভালে সে নাপিতানি পরাণচুরি॥
চঞ্জীদাসে কহে না কর লাজ।
নাপিতানী কহে (?) রসিকরাজ॥
টীকা

১৫—১৬। "রাই কছে" ইত্যাদি। রাই কহিলেন—'তোর (বেতন) কত হইবে ?' সেই (নাপিতানী) কহিল—'(আমার) বেতনে সীমানাই!'

১৯—২০। "এমতে ধন" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা বলিলেন)—এই প্রকারে অর্থাৎ সামাস্ত্র কার্য্যের প্রতিদানে অসীম ধন লইশ্বা, কত ধন সঞ্জিত করিয়াছ ? সেই নাপিতানী কহিল, ভূবনে যত আছে অর্থাৎ ভূবনে যত ধন আছে, সকলই আমি সঞ্চিত্ত করিয়াছ। (কপট নাপিতানীর পরিহাস-উক্তি সতা বলিয়া প্রমাণিত করার উদ্দেশ্রেই পদ-কর্ম্বা কৌশবে এই বাক্য সন্ধিবেশিত করিয়াছেন)।

২৫—২৬। "তাহার" ইত্যাদি। তাহার অর্থাৎ সেই কুচরূপ স্থবর্গ-কলসের স্পর্শ-রন্ধ (এব অর্থে—পরশ পাধর, অন্ত অর্থে উৎক্কট্ট স্পর্শ) আমাকে দান কর; ('লাতো জাতো তু যৎ শ্রেষ্ঠা তদ্রনিহ কথ্যতে।') দরিদ্র জনকে (স্পর্শ-রন্ধ-দান-রূপ অপরিশোধ্য মূল্য হারা) ক্রয় করিয়া লগু।

২৯—৩ । "পরশ-রতন" ইত্যাদি। (ত্রীরাধা ছল্প-বেশিনী নাপিতানীর কৌশলমর বাক্যের কৌশলমর বাক্যের কৌশলমর উদ্ধর দিতে যাইয়া বলিতেছেন)—বনে ম্পর্শ-রত্ম পাইবে, এখন নিজ্প-গৃহে যাও। 'বনে ম্পর্শ-রত্ম পাইবে' এই প্লিষ্ট বাক্যের একটি অর্থ এই বে, পরশ পাথর প্রহে খাকে না; উহা ক্লাচিং কোন সৌতাগ্যবান্ ব্যক্তি বনেই প্রাপ্ত হইয়া খাকে; স্থতরাং পরশ পাথর কামনা করিলে তাহার

জক্ত বনে বাইরা অমুসন্ধান করিও। অপর গৃচ অর্থ এই বে, শ্রেষ্ঠ স্পর্শ অর্থাৎ আলিজন বনে (সঙ্কেত-কুঞ্জে) পাইবে। উভয় অর্থেই অস্থানে বুণা বাজ্ঞার কালহরণ না করিরা, স্পর্শ-রত্ন লাভের উদ্দেশ্যে গৃহে বাইরা বন গমনের উচ্ছোগ করাই একাক্ত কর্ত্ব্য—ইহা বুঝা বাইতেছে।

তথা রাগ ।১

এক দিন মনে রভস-কাজ। মাল্যানী^২ হইলা রসিক-রাজ ॥ ফুল-মালা গাঁথি ঝুলাই হাতে । क निरंत क निरंत⁸ कुकरत्र शर्थ ॥ তুরিতে আইলা ভামুর বাড়ী। রাই কহে কত লইবে কড়ি॥ মাল্যানী লইয়া নিভুতে বসি। মালা মূল করে ঈষত হাসি॥ मानामी कराय माजारे आरग। পাছে দিবা কড়ি যতেক লাগে॥ এত কহি মালা পরায় গলে। वनन पूचन कत्राय इटन ॥ वृतिया नागती धतिला करत । এত টাটপনা আসিয়া ঘরে॥ নাগর কহয়ে নহি যে পর। চণ্ডীদাস কহে কি কর ভর ॥१॥৬৩৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১১৬ সংখ্যক পদ।

২। 'মাল্যামি' প-র-সা। ৩। 'ঝুলায়ে' क;
'ঝুলাইয়া' च, চ। ৪। 'কে নিবে কে নিবে'
ছলে 'কে নিবি কে নিবি' প-র-সা। ৫।
'লইয়া' ছলে 'হইয়া' প-র-সা। ৩। ন 'য়ৢয়' च।
१। 'সাজাইয়া' খ; 'সাজাইয়ে' ক, च, চ।

৮। 'পরায়ে' ক, খ, ঘ, চ। २। 'করেন' क। ১•। 'নহি যে' ऋলে 'নহিয়ে' क, খ, ঘ, চ।

বালা ধানশী।১ গোকুল নগরে ইন্দ্ৰ-পূজা করে দেখি আইল যত নারা। নগর ভিতরে মহা কলরবং নাগর হইলাও পদারী॥ মেলিলা তখন (नाकान-नाकान⁸ দেখিয়া গাহকীগণ। কহয়ে পদারে বহু দ্রব্য আছে যে চাহে নিতে যে ধন"॥ মণিময় মাল মুকুতা প্ৰবাল পোতিক মাণিক যত্ত্য। বহু দিন মনে১১ আনিল ১২ যতনে তোমাদের অভিমত্ত ।। খন্তিকা পুতিয়া মুকুতা ঝুলাঞা>ঃ কহে গাহকিনী আগে । শুনি গাহকিনা আসিয়া>৬ আপনি (पाकान निकटि लाट्ग ॥ স্থমধুর বাণী वल (म (माकानी কিসের লইবে ছড়া। মুকুতা-মাল লইবা ভাল> कि एवं लोशित्व वीष्रीभ ॥ र्श्वन नात्रीगन र्वामरम वहन গাহকী নহিয়ে' মোরা। কিবা ভাগ্যে মেনেং (मशाह्र जनाम এমন ধন যে তোরা॥ নিল এক মাল যুবতী রসাল पिल এक मश्री-शरल^{२०}।

আনন্দ বাঢ়িলং

পরিমাণ হৈল^{২৪}

কভেক লইবে বলে।

আর এক জনে সাধ করি ২৬ মনে লইল সোণার স্থূট। लाहे हिल्रिश यात्र বেডনং৮ না দেয় পসারী ধরিল কুচ। ফিরাফিরিং করে কুচ নাহি ছাড়ে°• करह मूला (पर (भांत्रः)। সঘন ৩২ বদন করয়ে চুম্বন এমতি^{৩৩} ক**জি** সে ভোর॥ কাড়াকাড়ি ঘন না মানে বচনঙ অরাজক হৈল পারা। যাহার বন° কাটে সেই জন র**ক্ষক হইব^{৩৬} কারা** ॥ রজকীণ সঞ্চতি চণ্ডীদাস গীতি त्रिल यानम वर्षे। (मोकान-माकान^e देश्ल ममाधान मक्न रान (य नुर्हे ।७॥७८०॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১১৭ সংখ্যক পদ। ২। 'মছা কলরব' খলে 'কলরব করে' দৌ: পুথি। ৩। 'নাগর হইলা' ভলে 'আনন্দে বদিলা' দৌ: পুৰি। ৪। 'দোকান-দাকান' স্থলে 'দোকানি पाकान' प्रो: श्वा e। '(प्रतिश' क, च; 'मिनिना' भ-त्र-मा, त्मोः भूषि। ७। 'भमात्री' ক। 'কহরে পদারে' স্থলে 'আমার দোকানে' भी: श्री । १। 'मिवा' घ, ठ। ৮। 'त्व bice' ইত্যাদি স্থলে 'বে নিতে চাহ বে ধন' ক ; 'বেবা চাহ य्वा धन' मोः পृथि। । 'পৃতিকার' मोः পুৰি। ১ । 'পোতিক' ইত্যাদি স্থলে 'আর বেবা हारे वर्ज को: श्रवि। >>। 'वर मिन मतन' ऋता 'वहपूत हत्न' (मो: পूबि। >२। 'व्याहेनाहि' (मो: পুৰি। ১৩। 'তোমাদের অভিমত' স্থলে 'তোমা সভার বেই মত' দৌ: পুথি। ১৪ 'বস্তিকা প্তিরা' ইত্যাদি বলে 'এডুকা' ইত্যাদি প-র-সা; 'ৰস্তিকা পুভিন্না মতি' ইত্যাদি দৌঃ পুথি। ১৫। 'কৰে গাছকিনী আগে' হলে 'কহয়ে গাহকী আগে' ক, খ, ঘ, চ; 'কহই গ্রাহকি আগে' দৌঃ পুথি। ১৬। 'আইসে' দৌ: পুথি। ১৭। 'মুকুতা-মান' ইত্যাদি স্থলে 'মুকুভার মালা লইবা ভোমরা' দৌঃ পুথি। ১৮। 'বাড়া' ক, চ, প-র-সা. পুৰি। ১৯। 'নহি যে' দৌ: পুৰি। ২০। 'ভागा' क। २०। '(वरन' त्नी: श्रुवि। २२। '(मिथिष्ट' क, ठ; '(मिथिष्ट' थ, घ, भ-त्र-मा; 'দেখিয়াছ' দৌ: পুথি। ২৩। 'দিল এক' ইত্যাদি ऋल 'मिल य मथीत शाल' मी: भूथि। २8। 'टेहरन' (मी: भूबि। २६। 'वाड़िन' थ, भ-त्र-मा: 'वाड़ित्ल' त्नोः शूथि। २७। 'माथ कवि' ऋत्न 'शांत कति' त्नीः शूथि। २१। 'मेरे हिन' ऋत्न 'লইয়া' বৌ: পুথি। ২৮। 'মূল্য' দৌ: পুথি। 'ফেরাফিরি' ক। ৩ । 'কুচ' ইত্যাদি श्रुत्म 'कूट्ट धन्नि द्यारम' त्मीः भूषि। ७১। 'कर्ड मुना' इंड्रांनि ऋल '(वंडन त्वहें त्य त्मांत्र' त्नीः পুৰি। ৩২। 'সঘনে' প-র-সা; 'ঘন যে' দৌঃ পুথি। ৩০। 'এমনি' দৌ: পুথি। ৩৪। 'কাডি' ইত্যাদি স্থলে 'কাঢ়াকাঢ়ি' ইত্যাদি ক, খ; 'ডাকা-**ডांकि क**रत वहन ना जरते 'तो: शूथि। ७०। 'त्य वन' क ; 'এ वन' थ। ७७। 'त्रक्षक हहेव' ऋत्त 'त्रक्षक हरेरव' क; 'त्रका रय कत्रिव' ली: शूथि। ৩१। 'वाक्षि' हो: भूष। अ। 'हाकानि क्षाकान' को: श्रेश ।

টীকা

২১—২৪। "শুনি" ইত্যাদি। (ছন্মবেশী পদারীর বাক্য) শুনিয়া নারীগণ বলিল—'আমরা গ্রাহকী নহি'; (তাহাতে অসন্তই হইরা পদারী পরিহাদ করিয়া বলিল)—না জানি কোন্ ভাগ্যে ভোমরা জন্মের মধ্যে এরূপ ধন দেখিতে পাইরাছ! (তাই জনর্থক গোল্যোগ করিতেছ!) মুবতীরা স্বভাবতঃ অল্কার-প্রিয়, তাহাতে এইরূপ পরিহাদ-বাধ্য কে স্ক ক্রিতে পারে!

ন্তরাং ছলবেশী পদারীর কৌশল সফল হইল সভাকার জয় এবং 'যুবতী রদাল নিল এক মাল দিল এক মান স্বী-গলে।" ইত্যাদি।

৩:-৩২। "লই" ইত্যাদি। 'লই চলি যান'
ইত্যাদি বাক্যের তাৎপর্যা এই বে, হুঁচ-গৃহিত্তী ছল্লবেশী প্রীক্ষণকে চিনিতে পারিয়া, তাঁহার সহিত
রসের ঝগড়া বাঁধাইবার জক্ত বিশ্বতির ছল করিয়া
হুঁচের মূল্য না দিয়াই চলিয়া যাইতেছিল। অথবা
এরপ অর্থপ্ত হইতে পারে যে, যেরূপ সচরাচর
ঘটয়া থাকে, হুঁচগৃহিত্তী আনন্দবিহবেল হইয়া
বিশ্বতিবশতঃ কিংবা হুঁচটি স্থীকে দেখাইয়া
পছল করাইবার জক্তই মূল্য না দিয়া চলিয়া
ঘাইতেছিল। 'ফিরাফিরি করে' ইত্যাদি পরবর্তী
বাক্যগুলি দেখিলে প্রথমোক্ত অর্থই স্মীচীন বলিয়া
বোধ হয়।

সিক্ড়া ।>

দেয়াসিনীং বেশে মহলে প্রবেশে রাধিকাণ দেখিবার তরে। স্থ্রক্ত' চন্দ্র কপালে লেপন कु छन कार्पाण भरत ॥ নাগর সাজিও বাম করে ধরে । পিন্ধিয়া বিভূতি শাজিল মূরতি ক্রদ্রাক্ষ জগয়ে করে ॥ঞ॥>• ত্রঙ্গপুর সেবি करह खग्न (मवी গোকুল-রক্ষণ নিতি। গোপ গোয়ালিনী স্বভগ-দাইনী১১ পুদ্ধ দেবী ১২ ভগৰতী ১০ ॥ আশীর্বাদ শুনি গোপের রমণী' व्यादेगांश्य (प्रग्नांत्रिनो काट्य । জিজ্ঞাসা করয়ে **যত মৃনে ল**য়ে>• বলে গোপ ভাল আছে ।।

भे क इत्याम क्य মনে ভয় না ভাবিবে। ভোমাদের পতি হুন্দর হুম্ভি১৯ সভাকার ভাল হবেং ॥ সঙ্গেতে কুটিল। আসিয়া জটিলা পড়য়ে চবণ ধরি। পতির মঞ্চল আমার বধুর বর দেহ কুপা করিং ॥ **छ**नि (५४) त्रिनी হর্ষিত বাণী জটিলা সমুখে কয়। বর ধে লাইবে ভাগই হইবে নিকটে আনিতে হয়ংং॥ জটিলা২০ যাইয়া আনিল ধরিয়াং আপন বধূর হাতে। বসিলা হরিষে দেয়াসিনী পাশে ঘুচাঞা বদন মাথেং ॥ দেখিঽ৬ দেয়াসিনী বোলে শুভবাণী मव *ञ्लक*न-यूक्तर । গন্ধৰ্ব-পাৰনী **জগদান**िमनो२५ রাধা নাম ভামুস্তা॥ ধরি ধনী-হাতে মনের আকুতেং নিরখে বদন তার। দেখিতে দেখিতে আনন্দিত চিত্তে मनन क्रिल क्रांत्र ।। ফুলটি তুলিয়া° माकिंि थूलिया॰> वास्त्रन नागत्रीत्र पूरन। मक्**नि**° शाहरवः আনন্দে থাকিবে কলক নহিবে কুলে॥ करह भीत्रि भीति १ গুনিয়া সুন্দরীঞ এ কথা কহবি মোয়খ। বেপাটি ঘূচয়ে** আমার হৃদয়ে তবে সে জানিয়ে তোয়॥

একটি শপতি রাখহ যবভি দেখিতে বাসিয়ে ভয় । প্রাণ-পতি ⁸⁾ সনে বাদ্ধ্যাছ পরাণেঃ देशदे (**पव**जा कग्न⁸⁰॥ হাসিয়া নাগরী চাহে ফিরি ফিরি (नग्रां निनो चत्र (कांथा। আমার⁸⁸ ঘর হয়ে যে নগর কহিব বিরল । কথা।। সকেত বুঝিয়া ন্য়ান ফিরাইয়াঃ তাক করে এক দিঠে8৮। নির্থি বদন চিহ্নিল তখন শ্রাম নাগর টাটে।। शीत्रि शीति⁸³ कति বসন সম্বরি यन्दित हिलला लाखा। হ্ববৃদ্ধি যে হয় **हशीला**दम क्य (वक्ख ना करत्र कार्फ ॥५॥५८)॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১১১৮ সংখ্যক পদ।

২। 'দেয়াশিনী' ক; 'দিয়াসিনি' থ। ৩। 'দেয়াসিনী' ইত্যাদি স্থলে 'ধরি দেয়াসিনি-বেশ মহলে করে
পরবেশ' দৌ: পুৰি। ৪। 'রাধিকার' দৌ: পুৰি।
৫। 'রালা যে' দৌ: পুৰি। ৩। 'সাজী' ক।
৭। 'নাগর' ইত্যাদি স্থলে 'সাজী ধরি বাম করে'
দৌ: পুৰি। ৮। 'পিরিয়া বিভৃতি' স্থলে 'পিরি
রালা ধুতি' দৌ: পুরি। ৯। 'সাজিল মুরতি'
স্থলে 'সাজল মুরতি' ক, চ; 'সাজিল মুরতি' দৌ:
পুরি। ১০। ক, ঘ, চও দৌ: পুরিতে 'ঞ্র' নাই।
১১। 'স্তেগলারিনী' ক; 'শুতলাইনি' দৌ: পুরি।
১২। 'পুরু' দৌ: পুরি। ১০। 'কছে জয় দেবী'
ইত্যাদি কলিটির পরিবর্জে দৌ: পুরির পাঠ বর্থা—
'জয় জয় পোকুলরক্ষক দেবতী।

'শর শর গোকুগরক্ক দেবতা। গোপগোপিনি গুভদাইনি পূন্দ পূন্দ ভগবতী ॥' ১৪। 'গোপিনী' দো: পুথি। ১৫। 'বিদলা'
দো: পুথি। ১৬। 'হরে' ধ, খ। ১৭। 'বলে গোপ'
ইত্যাদি স্থলে 'গোপেরা কেমন আছে' দো: পুথি।
১৮। 'হরে' খ, চ। ১৯। 'স্থলর মতি'
ক, খ, চ; 'স্থলরহ মতি' প-র-সা; 'স্থলর মেতি'
দো: পুথি। ২০। 'সভাকার' ইত্যাদি স্থলে
'সভার ভাল বে হবে' দো: পুথি। ২১। 'সক্ষেতে
কুটিলা' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি দো: পুথিতে নাই।
২২। 'শুনি দেয়াসিনী' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির
পরিবর্ত্তে দো: পুথির পাঠ যথা,—

'আমার বধ্র বোলহ স্থীর দেবতা কি সব কয়। বর যে লইবে ভাল যে হইবে নিকটে আসিতে হয়॥"

২০। 'আপনে' দৌ: পুথি। ২৪। 'ধরিশ' পর-সা। ২৫। 'বসিলা হরিষে' ইত্যাদি পংক্তিশবের
পরিবর্তে দৌ: পুথির পাঠ যথা,—

'আসিয়া বসিলা দেয়া**সিনি দেখিলা** বসন ঘুচিয়া মাথে॥"

২৬। 'আনন্দে' দৌঃ পুথি। ২৭। 'সব স্থলকণমূতা' হলে 'হলকণ দেখি মাধ'' দৌ: পুথি। ২৮। 'জগতানন্দিনী' ঘ, চ, প-র-সা; 'জগত-তারিণী' দৌ: পুথি। কোন লিপিকর 'জগদানন্দিনী' শব্দের 'গ' অক্ষরটি ভূলে 'স' লিখায় 'জসদা-নন্দিনী' ও উহাই কোন পণ্ডিতক্ষম্ভ লিপিকর-কৰ্ত্তক সংশোধিত (?) হইয়া বটতলার মুদ্রিত গ্রন্থ ও তদুমুবারী অধিকাংশ চণ্ডীদাসের মুদ্রিত পদাবলীতে হাক্সজনক 'যশোদানন্দিনী' পাঠের উৎপত্তি করিয়াছে। কোন কোন টীকাকার বিশোদার जानिमनी जर्थाए जानमपात्रिनी' এই রূপ जर्थ করিবা 'বলোদানন্দিনী' পাঠের অর্থ-সঙ্গতি রক্ষা করার চেষ্টা क्तिबारहन: किस यिनि सगरछत्र साननात्रिनी, ভাঁহাকে যশোদার আনন্দদারিনী বলিয়া বর্ণিড করার কোনই সার্থকতা দেখা বার না; স্থতরাং 'बर्लाकानिक्जी' भाक खममूनक वनिवार विरवहनारव।

২৯ ৷ 'মনের আকুতে' স্থলে 'মনেরানন্দেতে' 'ধরি ধনী হাতে' ইত্যাদি স্থলে 'মনের অক্ষেরত (?) দিয়াসিনি কৌতুকে' पो: श्रुथि। ७०। 'यमन' हेलामि ऋत्म 'यमन কেবল বিকার' দৌঃ পৃথি। ৩১। 'ধরিয়া' দৌঃ পুৰি। ৩২। 'পাড়িয়া' দৌঃ পুৰি। ৩০। 'নাগরী' क, थ, त्नोः शृथि। ७८। 'प्रकन' भन्त-मा। ७६। 'সকলি পাইবে' স্থলে 'কুশল হইবে' দৌঃ পুথি। ७५। 'कामिनो' (मो: পूथि। ७१। 'करह' इंछापि च्रत्न 'वरण मधुत्र वांनी' रहाः शृक्षि। ७৮। 'ध कथा' हेजानि ऋरन 'এमिक इहेरव सोम्र' हो: श्री । ৩৯। 'আমার হৃদয়ে' ইত্যাদি স্থলে 'আমার হৃদয় त्वशां चूहित्व' त्मीः भूषि। 8 । '(मिथिएक) वानित्य ज्या श्राम 'कहिएज वानित्य ज्या क, भीः পুথি; 'দেখিতে বাসহ ভন্ন' ধ, ব, চ, প-র-সা। ৪১। 'পরপতি' ক, দৌ: পুথি। শ্রীরাধা 'পর-পতির' সহিত প্রণয়-বন্ধন করিয়াছেন, এইরূপ কথা বলিয়া তাঁহাকে অপ্রতিভ করা চড়ুর-শিরোমণি শ্রীক্বঞ্চের পক্ষে সম্ভবপর বোধ হয় না; স্থতরাং 'প্রাণপতি সনে' ইত্যাদি লেষপূর্ণ পাঠই সমীচীন। ৪২। 'বানিঃগছ পরাণে স্থলে 'বেঁধেছ পরাণে' ক ; 'বান্ধিয়াছ মনে' **খ,** ঘ, চ, প-র-সা। ৪৩। 'ইহাই দেবতা কয়' স্থল 'স্বরূপে কহিবি মোর' দৌঃ পুথি। 'आभारतत्र' तोः श्रुवि। ৪৫। 'বির্লে' দৌঃ পুথি। ৪৬। 'করিয়া' প-র-সা; 'কানিয়া' দৌঃ পুথি। ৪৭। 'ফিরিয়া' ক। ৪৮। 'ডাক করে' रेजािन ऋत्न 'जात्क ह्रात वक मिर्का सो: श्री। ৪৯। 'ধির ধির' দৌ: পুথি। ৫০। 'বেকড' ইত্যাদি স্থলে 'বেকত করয়ে কাঞ্জে' ক; 'বেকত ना करत्र लारकत्र मारवा लीः भूषि।

টাকা

১৮—৫)। "একটি শপতি" ইত্যাদি। ছে ব্বতি! তুমি আমার একটি শপথ (অর্থাৎ সত্য কথা বলিবার জন্ত দিব্য) পালন কর; তুমি প্রাণ-পতির সহিত্ত প্রাণ বীধিরাছ, অর্থাৎ প্রেম-বন্ধনে বাঁধা পড়িরাছ,—ইহাই আমার দেবতা কহিতেছেন।
('প্রাণ-পতি' শক্ষটি প্লিষ্ট, ইহার সরল আর্থ—প্রাণনাথ বা আমী; কিন্তু ইহার গৃঢ় অর্থ জনবেশর"
অর্থাৎ যিনি কেবল পালনকর্তা বলিয়া পত্তি
নহেন, কিন্তু প্রিয়তম বলিয়া জীবন ও মৃত্যুর
মালিক। 'আর্যা সপ্রশান্তী' প্রভৃতি কোন কোন
ব্যঞ্জনা-প্রধান কাব্যে পরকীয়া-নায়িকার বর্ণনপ্রসক্তে 'পতি' শক্ষটি পেরকীয়ার প্রেমসম্মন্দ্রীন আমী ও প্রিয়' শক্ষটি প্রেমাস্পদকে বুঝাইতে
প্রায় সর্ব্বদা প্রযুক্ত হইয়াছে।)

সিজ্জা ৷১

देशा विश्विनीर নাগর আপনি কৌতুক করিব॰ মনে। हुश ८य ह**म्म**न আমলকী বৰ্ত্তৰণ যতন করিয়া আনে 🛭 কেশর যাবক কম্বনী দ্রাবকৎ व्यानिन (त्रगात क्रफ्॰। সোন্ধা হৃকুকুম কপুর চন্দন আনিল মুথা শিকড় ॥ থালিতে করিয়া আনিল ভরিয়া উপরে বসন > দিয়া। মিছামিছি১১ করি ফিরে বাড়া বাড়ী ভাতুর ছয়ার দিয়া^{১২} 🛭 চুবক্ত লইবেগ ফুকরি ১৫ কছরে আইল দাসী> যে তবে। व्यांत्रि (महभ्र राज মোদের ১৭ মহলে व्यत्नक निष्ड (य) वर्ष ॥ আইলা লইয়াং থালিতে ধরিয়াং ষেখানে নাগরী বসি। কর্ রচন চুয়া স্কুচন্দন বেণ্যানী মনেতে খুসি ॥

লইনে কতেক চন্দন চুবক জানিতে চাহিয়ে আমি। বেতন সে দিবংঃ मकृति लहे्वः যতেক আনহ^২ তুমি॥ **जिल (यर मार्थ** আমলকী হাতে ঘসিতে লাগিল কেশ। শ্রম যে হইল খসিতে ঘসিতে नागती भारेल द्वम ॥ স্থ্যমধুরং বাণী কহে সে বেণ্যানীংদ চুয়া মাখিবার তরে। চুল যে ছাড়িয়াং । হাত নামাইয়া মাখায়॰ क्षप्रशं अपत्र ॥ হইলা আগরিণ্ পরশে নাগরী পড়িয়া বেণ্যানী কোরে। নিন্দ যে আইল অতি মুখ হৈলত সব প্রম গেল দূরে ॥ (वगानी वरन গেল সে বেলে য**িতে চাহিয়ে ঘরে**। উঠিলা নাগরী বগন সম্বরি কহে কি লাগিবে **মো**রে । বট আনিবারে कशिल मशीरत श्वियां वागत-तार्खा ক্ৰেনা লইৰ আর ধন নিব৽৽ ना कहि (लामांत्र॰ लाट्य ॥ কি আছে শ্মন কহ না কেনে শুনিতে চাহিয়ে খাম। থাকিলে পাইবে নতুবাণ্ণ যাইবে থির হৈয়া কহ তুমি⁸ ॥ হিয়ার ভিতরে*> ৰেণ্যানী কংয়ে বড় ধন আছে সেহ। কুপা বে করিয়া বাস উব্বরিয়া त्म थन जामादन तरह ।

বুঝিল চাভুরী তখন নাগরী হাসিয়া• ব্লাপন মনে। হইল এমন গন্ধের বেডন कीवन रयोवन छोटन ॥ বুঝিলাম কান কর সমাধান আর না বলিহ মোরে। এতেক গুণে মারহ প্রাণে কেবা শিখাইল ভোৱে। আশ যে করি পরের নারী मन्द्रां व्यापन मत्न। কোণা বা হৈয়াছে কেবা বা পাইয়াছে ना दिश्या दकान श्राद्यक्ष ॥ চণ্ডীদাসে কয় কত ঠাঞি হয় যাহাতে যাহাতে বনে। ८यो वन- धरन কিবা বা মানে (मॅाभरय़⁸⁹ (म প্রাণে প্রাণে⁸⁶ ॥৮।७८२॥

পাঠান্তর

১। हेरा भ-त-मा পूथित ১১:२ मःशाक भन। २। 'देहला विविक्ती' ऋषा 'इहेना वार्शित' हो: পুৰি। ৩। 'করিবার' দৌ: পুৰি। ৪। 'উবর্তন' (मो: श्रृथि। < । '(भोत्रव' (मो: श्रृथि। ७। '(वनात्र</p> कफ़' ऋरम 'रवानाक कफ़' हो: शूचि। १। 'मध्या' প-র-সা। ৮। 'সোধা' ইত্যাদি পংক্তিবর হলে— 'দোন্ধা যে শুনি কৃষ্ণের বাথানি व्यानिन (मथित्र कन।' त्नीः श्र्वि। ৯। 'छानिया' भ-त-मा। ১०। 'छित्र (होत ?) (व' (बो: श्रवि। ১১। 'मिक्शिम्ब' (बो: श्रवि। ১২। 'ভাতুর ছ্যার দিয়া' খলে 'ভাতুর ছ্যারে तिशा क, ब, च, ठ। >०। 'हुश (व' त्नोः পूबि। >8। 'गहेरव' क। >e। 'छाकिवा' स्मोः পুথ। ১৬। 'স্থী' দৌ: পুথ। ১৭। 'আমার' तोः श्रुव। **२৮। 'कांत्र त्वर' व्**रत 'त्वर जानि' (मो: श्रुवि। ১৯। 'मिरफ (व' व्यंत 'नरेंख'

ल-त-ना, लो: शृथि। २०। 'नहेबा' लो: शृथि।
२०। 'ठिनिवा' तो: शृथि। २२। 'ठृबा च्रुठन्मन'
चरल 'ठृबा त्य ठन्मन' तो: शृथि। २०। 'नहेद्द'
तो: शृथि। २८। 'ठाहिद्द' लो: शृथि। २७।
'ता' चरल 'निन त्य त्म' क; 'थानिक निन' लो:
शृथि। २०। 'मधूब' थ, प, ठ; 'मधूबम' भ-त-ना।
२৮। অত: পর লো: প্রথতে 'ठृबा माथिताর তবে'
গংক্তিটির পূর্বে নিম্নলিখিত অতিরিক্ত গংক্তিগুলি দৃষ্ট
ছব, यथा—

'বসিতে জানিএ আমি ভালে।

যদি মোরে বল আমলকি বসিয়া

থানিক মাথিএ চুলে॥

ডাকিলা আপনি ৰসিলা বাস্তানি'

২৯। 'ঝাড়িয়া' দৌঃ পুৰি। ৩০। 'মাথায়'

ক। ৩১। 'হৃদ্দেম' প-র-সা; 'কুচের' দৌঃ
পুথি। ৩২। 'পাগলি' দৌঃ পুথি; 'পাগিয়ি' প্রঃ
পুথি। ৩২। 'অতি' ইত্যাদি হুলে 'য়্বথ যে
পাইল' দৌঃ, প্রঃ পুথি। ৩৪। 'বরে' দৌঃ পুথি।

৩৫। 'হাসিলা' দৌঃ পুথি। ৩৬। 'কংহ' ইত্যাদির
হুলে দৌঃ পুথির পাঠ বথা.—

হৈহা বে লাগ এ আর যে চাহিএ'
৩৭। 'তোনারে' ব, দৌঃ পুঝি । ৩৮। 'কি
আছে' হলে 'বে থাকে' দৌঃ পুঝি। ৩৯। 'নহিলে'
প-র-সা। ৪০। 'কহ না' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির
হলে দৌঃ পুঝি ও প্রঃ পুঝির পাঠ বধা,—

'কহ না কেনে কি আছে মনে
শুনিতে চাহিরে তারে।
হিরার বদনে রাখ্যাছ কে ধনে
দে ধন কেহ কে মোরে॥'

३১। 'বেণ্যানী কহরে' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি দৌ: পুৰি ও প্রঃ পুথিতে নাই। ৪২। 'হাসিলা' দৌ: ও প্রঃ পুথি। ৪৩। 'গল্পের বেতন' ইত্যাদি হলে 'আমদক্তি বেতন চাহে বেবা ধন' দৌ:

ও আ: পুথি। ৪৪। 'কারণ' প-র-সা। 'কর সমাধান' ইভ্যাদি পংক্তি চারিটির স্থলে—

'কর সমাধান বুঝিয়া জেন বেকত হও পাছে ধরে।

রেভেক ধনে চাহে জে পরাণে

ধন্দ ব্দে লাগত মোরে ॥'—দৌ: পুথি। ৪৫। 'মারহ' থ; 'মরত' দৌ: পুথি। ৪৬। 'কোধা' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির পরিবর্ত্তে—

'কে কোথা পাইছে কেবা দেখিয়াছে হইয়াছে কোন বা স্থানে।'—দৌ: পুথি। ৪৭। 'সোঁপে' ক, চ। ৪৮। 'চণ্ডীদাসে কর' ইত্যাদি কলিটির স্থাল—

'চণ্ডীদাসে কএ কন্ত ঠাঞি হয়ে

ফাহার ফেমন মোনে।
বৌবন ছার কে করে বিচার

সপএ আপন প্রাণে ॥'—দৌঃ পুথি।

টিকা

en— e । "কর সমাধান" ইত্যাদি। হে কৃষ্ণ! (ডোমার চাতুরী) বুঝিয়'ছি; (এখন) কান্ত; কর; আমাকে আর (এরপ কথা) বলিও না; তুমি এই সকল ওলে (নারিকাগণকে ডোমার অমুরাগিণী করিয়া) প্রাণে মার; (এইরপ মোহিনী বিছা) ভোমাকে কে শিক্ষা দিল।

৬১—৬৪। "পরের নারী" ইত্যাদি। (কামুক পুরুষ) পরের রমণীর আশা করিরা (আশা-পূর্ণ না হওরার) নিজের মনে (তাবিরা) মরে; (এই-রূপ ছ্রাকাজ্জার সকলতা) কোথার হইরাছে? কোন্ ব্যক্তি পাইরাছে? কোন স্থানেই (এরুপ) দেখি নাই!

৬৫—৬৮। "চণ্ডীদাদে" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার পুর্ব্বোক্ত বাক্যের উত্তরে) চণ্ডীদাদ বনিতেছেন— (হইবে না কেন?) বাহার সহিত বাহার বিশ হর, (এরপ) কত স্থানে হইতেছে; বৌবন-ধন বারা কিংবা সন্মান বারা কি প্রারোজন? সে (প্রেমাম্পাদের) কুদ্রের উদ্দেশ্যে (নিজের) কুদ্রতে অর্পণ করে। নৌ: পুথির 'বৌবন ছার' ইত্যাদি পাঠের অর্থও প্রায় এইরূপ; তবে উহার অবয় আরও সুস্পাই।

ৰয়াড়ী।১

বাদিয়ার বেশ ধরি বেড়ায় সেং বাড়ী বাড়ী আইলেন ভাগুর মহলে। বাহির করে সাপিনী খুলি হাঁড়ির চাকুনিং লইয়া এক করিলেন গলে"॥ विष्टती विन (मेरे कत्र)। দেখিতে আইলা খেলা শুনিয়া যতেক বালা খেলাইছে মাল্ম পুরন্দর॥ গ্রন্থ। जानिनीदत्र (पग्न थांवे जानिनोत्र वार्ट (कांने) म छ कत्रि উঠে ধরি ফণা >>। নাগিনী>২ ফিরিয়া চায় অঙ্গুলী মুড়িয়া যায় ছোয়ে যাই > বাদিয়ার দাপনা ॥ খেলা দেখি গোপীগণ বড আনন্দিত মন কহে তুমি থাক কোন স্থানে। থাকি বনের ভিতরে, নাগ-দমন বোলে^{১৪} মোরে মোর নাম জানে সব জনে '।। বস্ত্রু শাগিবার ভরে, আইলু ১৭ ভোমাদের ১৮ ঘরে বস্ত্র > দৈহ আনিয়া আপনি। ভাল একখানি পাব^২১ ছিডা বস্ত্র শ্ নাহি লব দেখি দেহ^{২২} শ্রীঅক্সের খানি^{২৩}॥ বছমূল্য নিতে ১৪ চাও বটের ভিখারি হও नहिरम (मां जिज्^{र व}न्द वर्षे^{र ।} বনে থাক সাপ ধর তেনা পরিধান কর সদাই বেড়াও নদীতটে॥ বাছা^{২৭} কহে ধীরে ধীরে, তোমার বস্ত্র^{২৮} নিব শিরে মনে মোর হবে বড় হুখ। ভোমার সম করিতে অভিনাষ হয় চিতে ছুমি যদি না বাসহ ছুখং ॥

চুপ কর্যা থাক বাতা যা পাও তা লও সাধ্যা ও জরমে জরমে যাহ ও ঘরে ও ।

চুরি দারি নাহি করি জিখ ও মাগি পেট ভরি
আমি ভয় করিব কাহারে ॥
তোমা লৈয়া করি ক্রীড়া, তুমি কেন মান ও প্রীড়া ও স্থী কর এ চুথিয়া জনে ।
বিজ্ঞ চণ্ডীদাসে কয় ও বাদিয়া যে এই নমু ও বুথিয়া দেখহ ও সাপন মনে ॥১॥৬৪৩॥

পাঠান্তর

)। इंहा भ-त-मा পूषित ১১२ • मःश्र**क भए।** २। '(क' (मो: পूणि। ७। 'आहेमा व' (मो: প-র-সা। ৪। 'খুলি হাঁড়ির ঢাকুনি' স্থলে 'খুলি হাঁড়ি ঢাকুনি' ক; 'থোলে হাঁড়ি व्याशिन' तमोः श्रूथि। ४। 'तम माशिनी' क, ४, ६। e। 'नहेम्रा' हेन्सान ऋत्न 'जूनिमा नहेन এक গলে' ক, প-র-সা। १। 'দেই কর' ছলে 'দেছ वत्र' (मो: পুथि। ৮। '(মানে' (मो: পুथि। ३। 'लाना' (मो: श्रुवि। >०। বাঢ়ে কোপ' ছলে 'সাপিনী বাঢ়ায় কোপ' ক: 'সাপিনীর বাড়ে কোপ' চ; 'নাগিনি হয় বড় কোপা' দৌ: পুথি। ১১। 'দণ্ড' ইত্যাদি ছলে 'উঠে দশু ধরিয়া যে ফণা' দৌ: পুবি; চণ্ডীদাসের মুদ্রিত সংশ্বরণসমূহে লিপিকরপ্রমাদ হেতু 'দঙ' স্থলে 'দন্ত' পাঠ স্থষ্ট হইয়াছে। (সা: প: পত্রিকার २०म ভাগের ১১২ পৃষ্ঠার পাঠ-বিচার জইবা) ১২। 'जानिन' (मो: পूथि। ১৩। 'ह्हास बाहे' ऋत्न '(छा: (सव' (सो: श्वि। >8। '(वारम सादत' ऋरम 'त्वारम' क, थ। >१। 'नर्स करन' रमोः शूचि। ३७। 'वजन' क, च, च, ठ, श-ब्र-जा। >१। 'আইলাম' প-র-সা; 'আদিলাম' ছৌ: পুর্বি। ১৮। '(छात्र' (मो: श्रृचि। ১৯। 'वह्र' भ-द्र-मा। २०। 'वस्तु' श-क्रमा। २०। 'ভाग' ইन्फ्रांनि इरन 'ভাन स्टेरन नहेश जाद' हो। श्री। হং। 'দের' ক। ২৩। 'দেখি দেহ' ইত্যাদি

হলে 'দেহ ডোমার অঙ্গের এক খানি' দোঃ পুথি।

২৪। 'নিডে' ছলে 'বস্ত্র' দোঃ পুথি। ২৫।
'শোভিডে' থ, ঘ, চ, প-র-সা। ২৬। 'নহিলে'

ইত্যাদি ছলে 'নহিলে শোভিত চার বটে'

ক; 'নহিলে শোভিতে চার বটে' থ, ঘ, চ,
প-র-সা। দোঃ পুথির পাঠ ব্যতীত কোন পাঠেই

অর্থবোধ হয় না; হত্রাং ঐ পুথি অধিক প্রাচীন না

হইলেও অগত্যা সেই পুথির পাঠই মূলে গৃহীত

হইল। ২৭। 'বাদিরা' প-র-সা। ২৮। 'বস্তু'
প-র-সা। ২৯। 'বাছা কহে' ইত্যাদি কলিটির
পরিবর্জে দোঃ পুথির পাঠ যথা;—

'তোমার বস্ত্র শিরে করি আনন্দিত হবো বড়ি বহুত বাসিএ মনে স্থুধ।

আপনার হাতে ধরি বস্ত্র বাহ্নো শিরোপরি মনে কিছু না ভাবিহ গুধ॥'

৩০। 'হৃধ্যা' দৌ: পুথি। ৩১। 'ষাও' ক,
দৌ: পুথি। ৩২। 'ভরমে' ইত্যাদি ছলে 'ভরমেতে যাহ নিজ ঘরে' প-র-সা। ৩০। 'ভিক্ষা'
ক, দৌ: পুথি; 'ভিক' প-র-সা। ৩৪। 'পাও'
প-র-সা। ৩৫। 'ভূমি কেন' ইত্যাদি ছলে 'মনে কেন দেও পীড়া' দৌ: পুথি। ৩৬। 'কংহ'
দৌ: পুথি। ৩৭। 'নংহ' দৌ: পুথি। ৩৮।
'ব্ৰিয়া দেখহ' ছলে 'বুঝি কাজ কর' দৌ: পুথি।

টাকা

১৪ — ১৫। "থাকি" ইত্যাদি। (বাদিয়ার বেশধারী প্রীকৃষ্ণ স্থাদিগের প্রশ্নের উদ্ভরে প্লেষপূর্ণ ভাষার কহিতেছেন) আমি বনের ভিতর থাকি; (এক অর্থে— নাল ধরিতে বনে বনে বিচরণ করি; অপর অর্থে— বন-প্রিয় বলিয়া বনে অর্থাৎ বৃন্ধাবনে বাস করি) আমাকে লোকে নাগ-দমন বলে; (এক অর্থে— 'নাগ-দমন' বলিয়া ভাকে; অপর অর্থে কালিয়-নাগেয় দমনকারী বলিয়া বোষণা করে); আমার নাম সকলেই জানে; (এক অর্থে— আমি সকলের বাড়ীভেই সাপ ধেলাইতে বাই বলিয়া

আমাকে সকলেই চিনে, অপর অর্থে—আমি অগদীখর বলিয়া, আমার 'হরি', 'ক্লফ' প্রভৃতি নাম সকলেরই স্বিদিত আছে।)

২০—২১। "বটের ভিথারি" ইত্যাদি।
বাদিয়ার বেশধারী ক্রফ সথীর নিজ পরিধের
বন্ধধানা প্রার্থনা করায়, উহা তাহার নিতাম্ভ
ধৃষ্টতা বিদ্যা স্থী তাহাকে তিরস্কার করিয়া বিলতেছেন) তুমি কড়ার ভিথারী বটে; (কিন্তু) বহুমূল্য বস্তু লইতে চাহিতেছ; (তাহা) না হইলে
কি কড়িতে (কর্ত্তায় ৭মী) শোভা পাইত না অর্থাৎ
কড়ি তোমার পক্ষে মানাইত না ? 'নহিলে
শোভিতে চায় বটে' পাঠ গ্রহণ ক্ষিলে কোন সদর্থ
হয় না; তবে 'চায়' শক্ষটির হুলে 'চায়', 'চাইয়া'
পাঠ কর্মনা করিলে, উহার অর্থ এইরূপ হইত যে—
তাহা না হইলে তুমি কড়ি চাহিয়া শোভা পাইতা
অর্থাৎ কড়ি চাহিলে তোমার শোভা পাইত।

২৮—২ন। "চুপ কর্যা" ইত্যাদি। (বাদিয়ার ধৃষ্টভাপূর্ণ বাক্যের উত্তরে সধী তিরস্কার করিরা বলিতেছেন) বাদিয়া! চুপ করিরা থাক; (ছেঁড়া বস্ত্র পুত্তি) যাহা পাও, তাহাই ধোসামুদী করিরা শগু (এবং) মানে মানে গৃহে যাও।

৩০—৩১। "চুরি দারি" ইত্যাদি। (বাদিরা স্থীর ভিরস্পারের উস্তবে বলিভেছে) আমি চুরি-দারি করি না; ভিক্ষা মাগিরা উদর পূর্ণ করি; (গুবে) আমি কাহাকে ভর করিব? অর্থাৎ কি জন্ম উচিত কথা বলিতে কাল্ক হইব?

ভাটিয়ারি।>

গোকুল নগরে প্রতি ঘরে ঘরে ।
বেড়াই চিকিছা করি।
বে রোগ যাহার দেখি এক বারণ
ভাল যে করিতে পারি।

भिरत भित्र-भंल পিরিডির শ্বরণ হৈয়া থাকে যে রোগীর[।]। আঁখি নাহি মেলেদ বচন না চলে তাহারে পিয়াই নীর ॥ এ কথা শুনিয়া বাহির হইয়া কহে এক সখী ধাই। রোগী আছে জ্বরে আমাদের ঘরে দেখ একবার যাই॥ এই বাডী হৈতে আসিছি তুরিতে কহে হেথা থাক বসি। সাজ সাজিতে চলিলা নিভুতে মনের হরিষে ভাসি ।। আপন বসন ঘুচাঞা তখন লেপয়ে ১ কেশর মাটী। ভকলবি^{১২} ছান্দে বসন পিন্ধে मरक हलरग्रे शिष मरनाश्त्र यूनि कारक। শিক্ড-নিক্র ভাহার ভিতর যতন করিয়া বান্ধে॥ ধ্রু॥ शुहादेश लाटक हिकिङ्क-नाटकः বসিলা রোগীর । কাছে। নিরুখে বদন যুচাঞা বসন রোগ যে ইহার আছে॥ বাম হাথে ধরি অঙ্গুলি মুড়ি ১৬ रमर्थ थाकू किया यग्र । পিরিভি-বিষে জার্যাছে ইহারে ১৭ পরাণ রছে না রর ১৮॥ উঠে अत्र मृष् হাসিয়া>> নাগরী खान (य किशा वरते। ৰল কি খাইলে হইব সবলে (वशिधि दक्ष्मरन इटि ।

ঔষধ হয়

এখনি খাওয়াইয়া যাইভাম^{২১}।
ভাল বে হইভ জর বে যাইভ

যদি সে সময় পাইভাম
ভখন নাগরী বুঝিলা চাতুরী

টাট নাগর-রাজ ।
বাশুলী নিকটে চণ্ডীদাস রটে

এমন^{২২} কাহার কাজ ॥১০॥৬৪৩॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২২১ সংখ্যক পদ।
২। 'ফিরি' দৌ: পুথি। ৩। 'বেড়ারে'
ধ, ঘ, 'বেড়ার' চ। ৪। 'চিকিৎসা' ক, ঘ, দৌ:
পুথি। ৫। 'বে রোগ' ইত্যাদি স্থলে 'জার জে
কথার বেদনা সারএ' দৌ: পুথি। ৩। 'শিরে'
ইত্যাদি স্থলে 'সির:তল জর পিরিতি রসের' দৌ:
পুথি। ৭। 'বে রোগীর' স্থলে 'বেবা নর' দৌ:
পুথি। ৮। 'বচন' ইত্যাদি স্থলে 'আঁথি নাহি
মেলে অন্তর যে জলে' দৌ: পুথি। ১। অতঃপর
দৌ: পুথিতে নিম্নলিথিত অতিরিক্ত কলিগুলি দৃষ্ট
হয়; যথা,—

'কেবল একান্ত ধ্যন্তরি। নাহি জানে বিধি এমন মহোষধি পিয়াইলে জায় জরি ॥ এক জনে তথা छनिएन व कथा कहिला बाहेब काटह। ও্টব্যধি থাও ভাগ জে হও বট দিহ তাহে পাছে ॥ পরের মুথে ভনিয়া স্থাৰ रविष्ठ देशन मन। कृषि (व कार्रेश আনহ ধাইরা (मिथ्र क्मन सन॥' >। 'এ কথা ভনিয়া' ইত্যাদি আটটি পংক্ষির পরিবর্জে দৌঃ পুথিতে নিম্নলিখিত পংক্তিগুলি মৃষ্ট শব্দ হইতে গৃহীত; উহা মুসলমানী বাদালার অভাপি हम ; स्था,---

'ৰাহির হইয়া বোলএ চাহিয়া কেমনে গেলা রে ভাই। কুগি আছে ভৱে चार्यात्मत्र चटत

দেখ একবার জাই।

ভাসিলা সাগৱে ভনিয়া নাগৱে আপনার মনে খুসি।

এই বাড়ি হৈতে আসিএ তুরিতে এইখানে রহ বসি॥

সাৰ জে সাজিতে চলিলা ভুরিতে বেজার হইবে মনে।

ধাতুজ্ঞান হএ

চণ্ডাদাসে কছে

शृथि ।

তবে দে চিকিৎসা জানে ॥' দৌ: পুথিতে 'আগন বসন' ইত্যাদি অবশিষ্ট অংশ শ্বতন্ত্র পদরূপে লিখিত হইয়াছে: ক্রিজ্ব রচনা দর্শনে উহা 'গোকুল নগরে' ইত্যাদি পদের শেষাংশ বলিয়াই প্রতীত হয়। ১১। 'লেপিলা' দৌ: পুথি। ১২। 'তকল্লকি' ক; 'তগল্গভি' দৌ: পুথি। 'চলিলা' দৌ: পুথি। ১৪। 'চিকিছক-সাজে' श्राम 'ठिकिक्टांत्र कांट्स' क। >१। 'नांशवित्र' (मो: পুথি। ১৬। 'অঙ্গুলি মৃড়ি' স্থলে 'অঙ্গুলিতে জুড়ি' প-র-সা। ১৭। 'পিরিভি-বিষে' ইত্যাদি স্থলে 'পিরিতি বিষেরে জারিছে ইহারে' প-র-দা। ১৮। 'পরাণ' ইত্যাদি স্থলে 'পরাণ রহে কি না রর' কঃ পিরাণ রয় কি নারয় প-র-সা। ১৯। 'ভনিয়া' लोः পृथि। २०। 'डेठि' क, थः, 'त्रद्र' भ-त्र-मा।

है का

२>। 'योजाम' क, ४। २२। 'निहत्न' (पी:

निष्मत वनन चूनिया (अष्म) कूँ कूम-मश्युक श्रीत মাটা লেপন করে; আড়ৰরপূর্ণ ভলীতে বসন পরিধান করে (এবং) হাটিয়া (আহ্বান-কারিণীর) मल हरन। ('अक्झिव' मच्छि आह्रवी 'उक्झुक्' ব্যবদ্বত হইয়া থাকে)।

ভথা স্থাপ 15

রসিক নাগর সাজি বাজিকর সঙ্গেত স্থাবল স্থা। मिष् मुड़ा देनका টোলক বাজাইয়া ভামুপুরে দিলা দেখা।

ধুলা মাখি গায় क्र्राभ वृताय নটপটি পাগ শিরে।

ত্ববল স্থার কান্ধে দিয়া ভার नामाहेला शीरत शीरत ॥

কুহক লাগাইয়া युनि (य थुनिश মুকুতা কাহির করে।

উগারে বদনে বহুমূল্য ধনে वार्ष भव थरत थरत ॥ পেটে গুয়া দিয়া বাঁশেতে চড়িয়া

সুরয়ে কভেক পাকে। দড়া বান্ধি তায়ু हैं। ए हैं। ए॰ याग्र স্থতা উগাংয়ে নাকে॥

मव (गांत्रीगरन দেখিতে যতনে সঙ্গে রসবতী রাই।

আমার মহলে আইস আইস বলে সভাই দেখিতে চাই ॥ শুনি বাজিকর চলে ভার ঘর

नरेश जकन जारकः। निद्रत श्रम निश्रा পড়ে উল্টিয়া त्राहिरप्रत याजिना मारवा ।

কতেক কুছক দেখার কৌতুক शिद्र वाषि वाषि करना

धनी शंत्रि मन বিচিত্র বসন বাজিকর-শিরে কেলে ॥

আর ধন চায় বসন না লয় कर्ट श्वमनी-भारम। হেম-ঘট আছে হিয়ার মাঝেদ षिश **পূর অভিলা**সে ॥ বুঝিলা চাতুরী শুনিয়া নাগরী চমকিত হৈল। মনে। না দেখিয়ে আর হেন বাজিকর কত টীটপনা জানে। যমুনার কূলে স্থাবতরু-মূলে সকল সাধিবা তথা। চলিলা ভুরিতে এ উদ্ধৰ সাথে वृक्षिया मह्ह ७-कथा ॥>>॥७४৫॥ ইতি তৃতীয়-পল্লব:। এভানি গীভানি সর্ব্বকালোচি হানি।

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১২২ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝুলুপ'খ। ৩। 'দড়ী' ক। ৪। 'হাটি হাটি' ঘ। ৫। 'সাৰু'খ। ৬। 'মাঝ'খ। ৭। 'হাটি হাটি'খ। ৮। 'মাঝারে' ক।

পাঠান্তর

পুনশ্চ প্রকারান্তরং। দিনান্তে শ্রীকৃষ্ণে চ সঙ্গেতঃ। এবং স্বয়ংদৌত্যং যথা।

हेमनक्नार्थ ।>

মঝু মুখ বিমল-কমল-বর-পরিমণেং
কানেশুঁ তুহুঁ অতিও ভোর।
বামিক নিরড়ে কতহুঁ কর কলরব
না কানি কৈছে দিলং ভোর॥
দুরে রহুং খ্যাম শুমর-বর-রায়।
বামিক সেবন করইতে ঐছন
কানি করহ অস্তরায়॥ এং॥

এতছঁ তিয়াসে হোত ধব আকুল
কী কল মন্দিরে গুঞ্জা।
তাহিঁ চলহ যাহাঁ কুস্থম বিধারল
মঞ্জুল মাধবি-কুঞ্জা ॥
এতছাঁ সঙ্কেত কয়ল বব কামিনি
কান্যু চললাও সোই ঠাম।
গোপ-গোঙার ভ্রমর বলি খোজত
গোবিন্দ দাস রস গান্ত ॥১॥৬৪৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৪|১১২৩ সংখ্যক
পদ। 'ইমন কল্যাণ' হুলে 'কল্যাণী' খ, প-র-সা।
২। 'মুখ-বিমল' ইত্যাদি হুলে 'মুখ-কমল-বিমলরস-পরিমলে' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'নিখি' প-র-সা।
৪। 'দিন' খ, চ, প-র-সা। ৫। 'রহ'ক।
৬। 'হোরত' প-র-সা। ৭। 'কি' ক। ৮। 'খুলে'
খ। ৯। 'কুলে'খ। ১০। 'চলত' প-র-সা।
১১। 'রস গান' হুলে 'পরমাণ'খ।

টীকা।

১—१। "মঝু" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর
লিখিয়াছেন,—'অধ শ্রীমতী বাটানিকটে ভ্রমরধ্বনিনা
কতসক্তের শ্রীকৃঞ্চং প্রতি মঝু মুখ-বিমল-কমল-বরপরিমল ইত্যাদিকং সক্তেমাহ'। অর্থাৎ একদা
শ্রীকৃষ্ণ শ্রীরাধার বাটার নিকটে যাইয়া ভ্রমরের স্তার
শুঞ্জন-শন্দ করিয়া সক্তে জানাইলে শ্রীরাধা 'মঝু
মুখ' ইত্যাদি বাকো ঐ সক্তেরে প্রভ্যান্তরে সক্তে
করিয়াছিলেন। 'মঝু মুখ' ইত্যাদি পংক্তিশুলির
ব্যাধ্যা করিতে জব-পংক্তিশুলির ব্যাধ্যা আগে কয়া
স্থবিধাজনক। শ্রীরাধা ক্রফ-ভ্রমরছলে শ্রীকৃষ্ণকে
সবোধন করিয়া বুলিতেছেন,—'হে শ্রাম ভ্রমর-রাজ।
ভূমি দ্রে থাক; স্বামীর সেবা করিবার কালে এইরূপ প্রভিবন্ধকা করিও না। আমি জানিরাছি বে,
আমার মুধরণ বিমল কমল-বরের সৌরক্তে ভূমি
নিতান্ত মোহিত; (ভাই বলিয়া) স্থানীর নিকটে

কত কলধ্বনি করিতেছ ? না জানি তোমার দিল অর্থাৎ প্রাণের বাসনা কিন্ধপ! (শ্রীকৃষ্ণ সঙ্কেত-ত্তক ক্রমর-গুঞ্জন করার সময়ে শ্রীরাধার পতি ফাগরিত থাকার, শ্রীকৃষ্ণকে কৌশলে সতর্ক করার উদ্দেশ্তে শ্রীরাধা এই সঙ্কেত করিতেছেন)।

৮—১১। "এতছঁ" ইত্যাদি। যদি এতই
ছৃষ্ণায় অর্থাৎ মধুপানের পিপাসায় অস্থির হইয়া
থাক, (তাহা হইলে) মন্দিরে গুঞ্জন করিয়া ফল
কি ? সেই স্থলে যাও—যেথানে স্থলর মাধবীলভার কৃষ্ণ কৃষ্ণম-রাশি বিস্তার করিয়াছে! (এই
বাক্যের ধ্বনি এই বে, তুমি নির্জ্জন মাধবীকৃষ্ণে
অভিদারে গমন কর, আমিও সম্বরেই স্থ্যোগমতে তথার যাইতেছি!)

১২--->৫। "এতহ" ইত্যাদি। নাম্বিকা (শ্রীরাধা) বর্থন এই সঙ্কেত করিলেন, তথন শ্রীকৃষ্ণ সেই স্থলে অর্থাৎ মাধবী-কুঞ্জে চলিলেন: (শ্রীরাধার এই দক্ষেত-বাক্যের তাৎপর্য্য ব্রিতে না পারিয়া, প্রকৃত পক্ষেই একটি ভ্রমর জীরাধার মুখ-কমলের পরিমল দারা আক্রন্ত হইয়া গ্রহে আসিয়া গুঞ্জন করিতেছে, মনে করিয়া ভ্রমর তাড়াইবার জন্ত) মূর্খ গোপ ভ্রমর (কোথায় গেল) বলিয়া খুঁজিতে লাগিল। গোবিন্দ-দাস এই রস গান করিভেছেন। ('বেই গোপ. সেই গোঙার, এইরূপ কর্ম্মধারর সমাস দারা 'গোপ-গোঙার' শব্দটি নিষ্ণন্ন হইয়াছে। 'গোঙার' শব্দের ব্যুৎপত্তিগত অর্থ 'গ্রামবাসী'; 'নাগরিক' বা 'নাগর' লোকের ভুলনার 'গ্রাম্য' বা 'গোঙার' লোক প্রায়শঃ निर्द्शिष इम्र विनम्ना 'र्शिक्षात्र' अरक्त 'मूर्थ' व्यर्थ আসিয়াছে। আধুনিক বাশালায় 'গোঙার' হইতে আত 'গোঁৱার' শক্টি 'একগুঁৱে' অর্থেই ব্যবস্ত र्व।) शाविन्ननारम्य धरे भन्ति "उद्भवमत्मम" কাব্যের নিম্নলিখিত প্লোকের মর্শ্বাসুবাদ; বথা,—

"নবজাভোক্ত-পরিমলোক্সত সেবাস্থ্যদ্ধ পড়াঃ ক্ষাক্রমর কুক্তে কিস্তরামন্তরামন্। ভ্কাভিকাং বদি কলকত ব্যপ্রচিত্তভাগের গলৈঃ গাড়ছবিষ্টিবর্তিশ্রালিক্সন্ ।" "পাণ্ডুচ্ছবিমিতি অস্তাং চক্রিকাবহুলারাং রক্তর্যাং তক্ত জনৈর্জ্বিকাত্ম। অবির্শৈনিবিট্ড্রিতি গ্লা-বেশ্বম্। স্থ্রভিদাং শৃকাবোপ্যোগিত্বং চ।"

—বিখনাপ চক্র বর্ত্তি-ক্বত আনন্দচন্ত্রিকা টীকা।

(क्षांत्र १३

গুরুজন পরিজন সব নি দিং গেলাও।
তৈখনে সবছ সখীগণ মেলাও।
চাল্দনি রজনি হেরি ভেল জীত।
বেশ বনাওল তাহি উচিত।
গোপতে চলল ধনি কোই না জান।
হেরই দশ দিশ চকিত-নয়ান।
গিমকর-কিরণহি জেল বিধার।
মেলি চললি কোই লখই না পার।
কালিন্দি-কুলে যাহাঁ মাধবি-কুঞ্জ।
কুসুম বিধারণ অলিকুঞ্জ গুঞ্জ।
তাহি মিললি ধনি মাধব পাশ।
বৈঠল তুত্ত জন পুরল আশা। খাড৪৭॥

পাঠান্তর

ইহাপ-র-সাপুথির ১১২৪ সংখ্যক পদ।
 শিনদ্ধ ব, চ। ৩। 'গেলি' খ; 'গেলী' ঘ। ৪।
 'মেলি' খ; 'মেলী' ঘ।

নীকা

৩—৪। "চান্দনি" ইত্যাদি। (সধীগণ)
জ্যোৎসাময়ী রজনী দেখিয়া,(জ্যোৎসা রাত্রে কিরুপে
অভিদার করিবে, সেই চিস্তায়) আশস্থিত হইল
(এবং মনে সহুপায় স্থির করিয়া) জ্যোৎসার উপযুক্ত
(শুল্র) বেশ প্রস্তুত করিল।

৭—৮। "হিমকর" ইত্যাদি। চক্রের জ্যোৎকা (দশ দিকে) বিস্তারিত হইল; (শ্রীরাধা ও স্থীগণ) সেই জ্যোৎসার সহিত মিশিয়া চলিলেন,—কেইই (তাঁহাদিগকে) লক্ষ্য করিতে পারিল না। ভুলনা করুন,—

"মল্লিকাচিতধশ্বিল্লাশ্চাক্ষচন্দনচর্চিত্তা:। অবিভাব্যা: স্থুং যান্তি চন্দ্রিকাসভিসারিকা:॥"

—সাহিত্যদর্পণ, ১০ম পরিচ্ছেদ।

তথা রাগ।১

দেখ রাধানাধব-মেলি।
মুক্তি মদন-রস-কেলি॥
ও নব জলধর-অঞা।
ইহ থির-বিজুরি-তরজা॥
ও বর-মরকত ঠান।
ইহ কাঞ্চন দশবান॥
ও মত্ত মধুকর-রাজ।
ইহ নব পছমিনি সাজা॥
ও নব তরুণ-তমাল।
ত মুখ চান্দ উজোর।
ইহ দিঠি লুবধ চকোরং॥
অরুণ নিয়ড়ে পুণ্ণ চন্দ।
গোবিন্দ দাস রহঁণ ধন্ধ ॥৩॥১৪৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুৰির ৩৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ও মুখ' ইত্যাদি লোকটি ক, খ, খ, চ পুথিতে নাই। ৩। 'পূন' ক, খ, খ, চ; 'পূর্ম' প-র-সা। ৪। 'প্রু' প-র-সা।

টাকা

>-- २ । "দেশ" ইত্যাদি। (হে স্থি!) শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণের সন্মিলন দর্শন কর; (উহা) মূর্ডিমান কাম-কেলিম্বরূপ।

e->। "ও বর" ইত্যাদি। উনি (অর্থাৎ গ্রীকৃষ্ণ) উৎকৃষ্ট সরকতের শোভা-বিশিষ্টঃ ইনি (অর্থাৎ শ্রীরাধা) দশবান অর্থাৎ উপর্যুপরি দশবার দাহ ধারা বিশুদ্ধ স্থবর্ণস্বরূপ।

১৩--১৪। "য়রুণ" ইত্যাদি। (পূর্ব পূর্ব শ্লোকের বর্ণিত নব-জ্বলধরের নিকট বিদ্যুৎ-ছটার, মরকত-মণির নিকট নির্ম্মণ অর্ণের, মধুকরের নিকট পদ্মিনীর, তরুণ তমালের নিকট অর্ণ-যুথি-লতার ও চন্দ্রের নিকট স্থা-লূক চকোরের অবস্থান অসম্ভব নহে, কিন্তু) অঙ্গণের নিকটে পূর্ণচক্ত অর্থাৎ শ্রীরাধার স্থ্যিরূপ সিন্দুর্বিন্দুর নিকটে শ্রীক্তন্তের চক্তরুপ খেত-চন্দন-বিন্দুর অব্থান দেখিরা গোবিন্দ-দাস শুরু হুইরা রহিলেন।

মলার ৷১

ভুলে ভুলে রে দোহাঁর রূপে নয়ন ভুলে।
কনক-লতিকা রাই তমালের কোলে ॥
বাজই বনে বনে শুমই ছুছাঁ।
দোহাঁর কালে শোভে দোহাঁর বাছ ॥
দীপ সমীপে যেন ইন্দ্রনীল-মিন।
জলদে জড়ায়ল যেন সৌদামিনী॥
ক্ষিতে ক্ষিল নহে কুন্দন হেম।
ভূলনা দিবারে নাহি দোহাঁকার প্রেম ॥
বদনে বদন দিতে মদন জাগে।
আলিজন দিয়া শ্রাম কিবা ধন মাগে॥
চান্দ উপরে চান্দ পিয়ে রস-স্থধা।
গোবিন্দ দাস কহে না ভাঙ্গিল কুষা ॥৪॥৬৪৯॥

পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১২৫ সংখ্যক পদ। ২। 'তমাল' ক, ঘ। ৩-৪। 'ত্হাঁর' ক। ৫। 'কুন্দল' প-র-সা। ৬। 'দিবারে নাহি' ছলে 'দিবার নাহি' ক, চ; 'দিবারে নাই' খ, ঘ। १। 'ত্হাঁকার' ক; 'দোহাঁর' খ, ঘ; 'রাধাকাছর' প-র-সা।

টাকা

৭—৮। "ক্ষিতে" ইত্যাদি। (প্রীরাধাকৃষ্ণের প্রেমের সহিত তুলনা দিবার গন্ত)
বিশুদ্ধ অর্থ ক্ষ ক্রিতে (যাইয়া) ক্ষ ক্রার
বোগ্য হইল না; উভয়ের প্রেমের তুলনা দিবার
(উপবুক্ত বস্তু) নাই।

এীরাগ।

আজি বড় শোভা রে মধুর রুন্দাবনে।
রাই কান্যু বসিলা রতন সিংহাসনে॥
হেম-নিরমিত বেদা মাণিকের গাঁথনা।
তার মাঝে রাই কান্যু চৌদিগে গোপিনা॥
একেক তরুর মূলে একেক অবলা।
মেঘে বেচুল যেন বিজুরীক মালা॥
নব গোরোচনা গোরী কান্যু ইন্দীবর।
বিনোদিনা বিজুরী বিনোদ জলধর॥
কাঁচ বেড়া কাঞ্চনে কাঞ্চন বেড়া কাঁচে।
রাই কান্যু ছুওঁ তন্যু একই হইয়াছে ॥
রস-ভরে ছুতুঁ জন হইলা বিভোর।
দাস অনস্তে কহে না পাইলুঁ ওর॥৫॥৬৫০॥

পাঠান্তর

১-২। 'বেঢ়া' ঘ। ৩। 'একই হইয়াছে' স্বলে 'এক হৈয়া আছে' ক।

ভৰা রাগ ৷১

কন্দৰ্প তাল।

রাই-অল-ছটার উদিত ভেল দশ দিশ
শ্রাম ভেল গৌর-আকার।
গৌর ভেল সধীগণ গৌর নিকুঞ্জ বন
রাই রূপে চৌদিগে পাধার।

গোর ভেল শুক সারী গৌর ভ্রমর ভ্রমরী গৌর পাখা ডাকে ডালে ডালে। গোর কোকিলগণ গৌর ভেল বুন্দাবন গৌর তরু গৌর ফল-ফুলে॥ গৌর যমুনা-জল গৌর ভেল জলচর গৌর সারস চক্রবাক। গৌর আকাশ দেখি গৌর চান্দ তার সাধী গৌর ভারা বেড়ি লাখে লাখ ॥ গৌর অবনা হৈল গোরময় সব ভেল রাই রূপে চৌদিগ ঝাঁপিত। নরোত্তম দাস কয় অপরপ রূপ নয় ছহু তবু একই মিলিত ॥৬॥৬৫১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সাপুথির ১১২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ছটায়ে' চ। ৩। 'রোপিড' প-র-সা। টীকা

্১—২। "রাই-অঙ্গ" ইত্যাদি। পদক্তা নরোত্তম দাস "রাই-অঙ্গ-ছটার" ইত্যাদি বাক্যের ইঙ্গিত বারা ব্যাইয়াছেন বে, এরাধার ভাব-কাস্তি-সমবিত হইরা প্রীক্ষণ অতঃপর বে প্রীগোরাশ-রূপে প্রাছ্তুত হইবেন, এখানে তাহারই পূর্বাভাস স্থান্ত ইইয়াছে। তুশনা কন্ধন,—

"রাধা-ভাব-ছ্যাতি-স্থবলিতং নৌমি ক্বঞ্চস্বরূপম্।" — প্রীরূপগোস্বামীর কড্চা।

कन्न यहिनी।>

মলয়জ-মিলিত যমুনা-জল শীতলং বংশীবট নিরমাণ। নিকটহি নীপ কদপ্ব-ভক্ত কুত্মমিঙ কোকিলা ভ্রমরাণ করু গান॥ তার তলে তিরিভঙ্গ তরুণ-তমাল-তমুণ
বামে রসবতি রাই।

একে নব জ্বলধর কোনে রতন মিশাই॥

ছুহুঁ তমু এক মন নিবিড় আলিগন

ছুহুঁ জন্ম একই পরাণ।
বিষ্ণু রামানন্দ ভূণে ভূলনা না হুয়ে মনে মনে মন্ত

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুলির ৩২০)১২৭ সংখ্যক ও প-র পুলির ৪২।৪৫ সংখ্যক পদ। 'করুণ হছিনী' শস্ক-দ্ম প-র পুলিতে নাই। ২। 'স্থানীতল' খ, য়, চ, প-র; 'কুলতট' প-র-সা। ৩। 'কোকিলা ভ্রমর' ফ্লে 'কোকিলা ভ্রমর' ক; 'কোকিলা ভ্রমর' হল 'ভ্রমরা ভ্রমরি' প-র। ৪। 'তার' ইত্যাদি হলে 'ভরুতলে ত্রিভলিম' প-র-সা। ৫। 'বেন' প-র-সা। ৮। 'কাঞ্চনে রজন' হলে 'কাঞ্চন বরণে' প-র-সা। ৯-১০। 'দোহ' প-র-সা। ১১। 'ভ্রমু' প-র। ১২। 'না হ্রে' হলে 'নহিল' প-র। ১০। 'বেনে' প-র-সা। ১১৭ পদ)। 'ভ্রমণ' ইত্যাদি হলে 'হেনলার মনে' প-র-সা। ৩২০ পদ)।

টাকা

৯—১২। "ছছঁ" ইত্যাদি। তুইটি দেহ,
(কিন্তু)মন অৰ্থাৎ ইচ্ছা এক; গাঢ় আলিগনে
(আবদ্ধ) উভয়ের একই হাদর; বহু রামানন্দ
কহিতেছেন—উভয়ের তুলনা মনে (উদিত) হর
না; (ভ্ৰন-মোহন) পঞ্চ-বাণ অর্থাৎ কন্দর্প
(উভয়ের) রূপের নিকট তুচ্ছ।

বিহাগড়া।১

রাই-কামু-পিরিতির বালাই লৈয়া মরি। ক্ষণে করে আলিক্সন ক্ষণে মুখ-চুম্বন ক্ষণে রাখে হিয়ার উপরি॥ আউলায়্যা২ চাঁচর কেশ করে বহুবিধ বেশ সিন্দুর চন্দন দেই ভালে। মুখচাঁদে দেখি ঘাম আকুল হইয়া শ্যাম মোছায়ই বসন-অঞ্লে॥ मामीगग-करत्र° रेश्टङ চামর লইয়া হাতে আপনে করয়ে মৃত্র বায়। দেখি রাই-মুখ-শশী স্থা ঝরে রাশি রাশি হেরি নাগর অনিমিখে চায়॥ ঐছন আরতি দেখি রাইথের সজল আঁখি বাহু পদারিয়া করে কোরে। ছুছ হিয়ায় ছুছ রাখি হুহু চুম্বে মুখ-শশী ত্বভূঁ-প্রেমে তুর্ভু ভেল ভোরে। শুতল কুমুম-শেজে নিকুঞ্জ-মন্দির মাঝে দোহেঁ দোহা বান্ধি ভুজ-পাশে। আর যত স্থাগণ সভে করে নিরীক্ষণ দূরে র**হুঁ নরোত্তম দাসে**॥৮॥৬৫**৩॥**

পাঠান্তর

)। ইহা প∶র-সা পুথির ১১২৮ সংখ্যক পদ। ২। 'আ'লুয়া' ক ; 'আ'লুয়া' খ, চ, প-র-সা ; 'আ'আ'ঞা' ঘ। ৩। 'ক'র'ক,খ,প-র-সা।

श्रृहिनो ।>

অধরে অধর ছকু ধরি।
শুভিয়াকে কিশোর কিশোরী॥
শুকে ভুকে দোঁহে দোঁহা বাদি।
পবন পশিতে নাহি সাদিও॥
চিকুরে চিকুরে এক করি।
শুভিয়াকে তাহারি উপরি॥

রাই-কুচ হিয়ার মাঝারে।
পশিয়াছে শ্রাম-কলেবরে॥
হিয়ার মাঝারে বৈল পশি।
নীল-ছেমসিরি মাঝে শশী॥
বলয়া কিন্ধিণী ভাহেড লাগে।
ছুহুঁ তমু এক অমুরাগে ॥
চরণে চরণে একাকারে ।
কেবা ভাহা ছাড়াবারে পাবে ॥
এক তমু ধরি যদি টানে।
ছুহুঁ তমু চলে ও ভার সনে ২ ॥
শ্রীরূপমঞ্জরী দেখি হাসে ২ ।
শ্রীক্রপমঞ্জরী তার পাশে॥
অপরূপ ছুহুঁক বিলাসে।
এ যতুনন্দন রসে ভাসে॥ ১॥৬৫৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪•২।১১২৯ সংখ্যক ও প-র পুথির ৩৯।৪২ সংখ্যক 'কিশোরা' প-র, প-র-সা। ৩। 'সদ্ধি' ক। অতঃপর প-র পুঝিতে 'রাই-কুচ' ইত্যাদি গ্রোক. তৎপরে 'বলমা কিন্ধিণী' ইত্যাদি তৎপরে 'চরণে চরণে' ইত্যাদি শ্লোক দৃষ্ট হয়। श्वात मावादा' ইত্যাদি স্থলে 'বদন ভ্ষণ পড়ে খদি' প-র-দা। ৫। 'নীল-হেমগিরি' স্থলে 'হেম নীলগিরি' প-র-সা (১১২৯ সং পদ)। ৬। 'বলয়া' ইত্যাদি স্থলে 'কুকুম চলদন ছত্" প-র। १। 'ছব্' ইত্যাদি হলে 'ছটি তমু একু' ইভ্যাদি প-র। ৮। 'এক করি' প-র। ৯। 'পারে' হলে 'পারি' প-র। 'কেবা' ইত্যাদি হলে 'ৰূপ কেছ নারে লখিবারে' প-র-সা। ১০। 'ছটী' र्ग-त-र्गा; 'आत' श-त । ১১। 'काहरत' श-त । ১২। অভ:পর প-র প্রিতে নিম্নলিখিত শ্লোক पृष्ठे रमः, स्था,--'व्यव देकटक् कहवि बाहेति। हेश क्रि रात्म मरहत्री ॥' '১०। 'ख्रीक्रणमक्षत्री' हेल्डानि

পংক্তি চারিটির পরিবর্ত্তে প-র পুথিতে নিম্নণিথিত পংক্তি ছইটি দৃষ্ট হয়; যথা,—'ব্রীক্রপমঞ্চরী বৃদি পাশে। এ ষত্নন্দন রুদে ভাগে॥'

निका

৯—১০। °হিয়ার° ইত্যাদি। (প্রীরাধার জন গাঢ় আলিকন হেতু প্রীক্তফের) হৃদয়ের মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া রহিল; (তাহাতে বোধ হইল, বেন) নীলকাস্ত-মণি ও স্থবর্ণের পর্বতের মধ্যদেশে (প্রীরাধার জন-রূপ) চক্ত-মগুল (বিরাজিত রহিয়াছে!)

क्षांत्र 13

দেখ না তুখানি অস জড়া।

নিক্ঞের মাঝে তমালের গাছে

কনক-লতায় বেড়া ॥ গ্রু ॥

আধ কপালে চন্দনের চাঁদ

আধ কপালে ভারু।

আধ নয়ানে কাজরের বেখা

আধ নয়ানে ইন্দ্রধমু ॥১০॥৬৫৫॥

ইতি চতুর্থ-পল্লব:।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১৩০ সংখ্যক পদ। 'কেদার বিহাগড়া' ক, চ, প-র-সা। ২। 'মাঝ' প-র-সা। ৩। 'গাছ' প-র-সা। ৪। 'কপালে শোভে' ক, থ, ঘ, চ। ৫। 'চন্দন' क। । ৬। 'কপালে শোভে' ক, থ, ঘ, চ। १। 'নয়ানে শোভে' ক, থ, ঘ, চ। ৮। 'কাজর' ক, প-র-সা।

টাকা

পদক্ষত থার শেষে "অস্বাদ-প্রকরণে" বৈক্ষব-দাস পল্লব-সমূহের বর্ণনীয় বিষয়ের সংক্ষেপে উল্লেখ ক্রিডে বাইয়া লিখিয়াছেন,—

> "একাদশ পদ তৃতীয়ে চতুৰ্বে সে দশ। স্বয়ংস্তী সম্পন্ন সম্ভোগাধ্যান রস॥"

"সম্পার" শব্দটির সহিত আকার ও অর্থ-গত কিঞিৎ সাদৃষ্ঠ হেতৃই বোধ হয়, নিপিকরগণ প্রায় সর্ক্তিই "সম্পার-সম্ভোগ" শব্দ-মরের পরিবর্ণে ভ্রমবশতঃ "সম্পূর্ণ সম্ভোগ" নিধিয়াছেন; উদ্ধৃত শ্লোকেও সকলগুলি পুথিতেই "সম্পূর্ণ সম্ভোগ" পাঠ দেখা যায়। অন্বিতীয় বৈঞ্চব রস-শাস্ত্রকার শ্রীরূপ গোবামী তাঁহার হুপ্রসিদ্ধ "উজ্জ্ল-নীল-মণি" গ্রন্থের "সম্ভোগ" প্রক্রণে নিধিয়াছেন,—

"দর্শনালিক্সনাদীনামাকুক্ল্যারিবেবরা।

যুনোক্রাস্মারোহন্ ভাব: সম্ভোগ ঈর্ব্যতে॥

মনীষ্টিভররং মুখ্যো গৌণশ্চতি বিধোদিত:।

उव मुथाः।

মুখো। জাগ্রদবস্থায়াং সম্ভোগঃ স চত্রবিধঃ। তান পুৰ্বাগতো মানাৎ প্ৰবাসন্বয়ত: ক্ৰমাৎ। জাতান্ সংক্ষিপ্ত-সংকীর্ণ-সম্পন্নজিমতো বিহু: ॥° অর্থাৎ নায়ক-নায়িকার সন্মিলনাত্মক সজোগ मुका अ (जीन-एक्ट्रन चिविध। जांधनवस्था दय मुका সম্ভোগ হয়, তাহা আবার চতুর্বিধ; উহা যথাক্রমে পুর্ব্বরণা, মান, অদুর প্রবাদ ও অদুর প্রবাদের পরে সজ্বটিত হইয়া থাকে এবং উহাদিগকে যথাক্রমে नःकिश्च, मःकीर्ग, मन्नात्र ও चिक्रमान् किःवा नमृक्ति-मान मरक्षां वना इत्र । यहर-सोरकात व नकन ৩ম শাখার ২ পৃঠার পাদ-টাকার উদ্ধৃত হইয়াছে, ভাষার আলোচনা করিলে বুঝা যাইবে যে, নামক-নায়িকা পরম্পরের অদর্শনে অতিশব্ধ উৎক্ষিত না হইলে স্বাভাবিক লজ্জাসকোচ পরিত্যাগ করিয়া স্বয়ং-দৌত্যে প্রবৃত্ত হয় না। স্তরাং স্বয়ং-দৌত্যের স্থলে বে অদুর-প্রবাদ-জনিত বিরহ বর্তমান রহিয়াছে, ইহা অবশ্রই স্বীকার করিতে হইবে; স্থতরাং স্বরং দৌতোর অত্তে সভাটত নারক-নারিকার স**ভো**গকে রস-শান্তাপুসারে 'সম্পন্ন সম্ভোগ' বলিয়া গণ্য করাই नशोहीन स्हेबाट्ड।

অথ রসালস।

তত্ত্বচিত-শ্রীগোরচন্দ্র।

বিভাষ ৷১

শুভিয়াছে গোরাচাঁদ শয়ন-মন্দিরে।
বিচিত্র পালক্ষণ শেজ অতি মনোহরে ॥
আলগে স্বাশ-তমু গোরা নটরায়।
কি কহব অঙ্গ-শোভা কহনে না যায়॥
মেঘের বিজুরী কিবা ছানিয়া যতনে।
কত রস দিয়া বিদি কৈল নিরমাণে ॥
অতি মনোহর শেজ বিচিত্র বালিশে।
বাস্থাদেব ঘোষে দেখে শনের হরিষে॥১॥৬৫৬

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৩১ সংখ্যক পদ।
২। 'শুতিয়াছে গোরাটাদ' হলে 'শুতিয়া আছেন গোর' ঘ, চ। ৩। 'পালক' প-র-সা। ৪। 'আবেশে' ক, চ; 'অলসে' ঘ। ৫। 'কি কছব অক-শোভা' হলে 'কি কব অক্টের শোভা' প-র-সা। ৬। 'কর' প-র-সা।

ट्छत्रवी ।>

অকরণ পুন বাল অরণ
উদিত মুদিত কুমুদ-বদন
চমকি চুম্বি চঞ্চরি পদ্ধমিনিকং সদন সাজে।
কি জানি সজনি রজনি ভোরণ
যুখ্
ঘন ঘোষে ঘোর
গ্রত্থ ঘন ঘোষে ঘোর
কামিনি-কুল লাজে
দ্ব

শুক-শারিক-পিকুদ •কাকলি নিধুবন ভরু ওয়াজে । . গলিত, ললিত বসন সাজ মণিযুত বেণি-ফণি বিরাজ উচ-কোরক-রুচ-চোরক>ং কুচ-জোরক>৩ মাঝে॥ তড়িত-কড়িত কলদ ভাতি তুহে^{১৪} স্থাখে শুতি^{১৫} রহল মাতি জিনি ভাদর রস-বাদর পরমাদর শেজে। বরজ-কুলজ জলজ-নয়নি>৬ ঘুমল বিমল-কমল-বয়নি কৃত-নালিশ ভুজ বালিশ আলিস নাহিণ তেজে। ট্টল किर्य चून ध्यू छन কিয়ে রভি-রণে ভেল তুণ শুন্দ সমর মাঝ>> পডল লাজ রতি-পতি ভয়ং ভারে। বিপতি পড়ল যুবতি-বুন্দ গুরুগণ-গতি কহই২১ মন্দ জगनानम সরসংং-বিরুস রসবভি রসরাজে॥ ২॥৬৫৭॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৩২ সংখ্যক ও
প-র পুথির ৩৯।৫২ সংখ্যক পদ। ২। 'পদমিনিক'
প-র-সা। ৩। 'থোর' ক, খ, খ, প-র-সা;
'ঘোর' চ। ৪। 'ঘুঘু' ক, চ, প-র সা। ৫।
'ঘোরে ঘোর' ফলে 'ঘোরর ঘোর' ক; 'ঘোরে থোর'
চ; 'গভছ ঘোর' প-র-সা। ৬। 'গভো' প-র-সা।
१। 'কুছরত' ক, খ; 'ফুকরত' প-র।৮। 'পিক'
ক, খ, প-র-সা। ৯। 'ভরি' প-র-সা, প-র।
১০। 'ওলাবে' দ। ১১। 'কলিত' খ, ম, চ,

প-র-সা। ১২। 'উচ-কোরক' ইত্যাদি স্থলে 'উচ
চোরক কুচ কোরক' প-র। ১৩। 'কুচ কোরক'
পর। ১৪। 'দোহে' ক, ধ, দ, চ, প-র-সা।
১৫। 'স্থেও শুডি' স্থলে 'স্থেও' ক; 'শুভি স্থরে'
প-র-সা। ১৬। 'বরজ-কুলজ' ইত্যাদি পংক্তি
চারিটি থ ও প-র-সা পুথিতে নাই। ১৭। 'নাহি
ক্রে' প-র-সা। ১৮। 'কিয়ে রভি-রণে' ইত্যাদি
স্থলে 'রভিরণে প্ন ভই তুণ শুন' প-র। ১৯।
'মাঝে' ধ। ২০। 'ভয়ে' থ, চ। ২১। '৸য়ন্দ গণ' ইত্যাদি স্থলে 'শুরুজনগণ কহব' প-র।
২২। 'হরস' প-র।

টীকা

১—৪। "অককণ" ইত্যাদি। নিষ্ঠুর নবীন অর্থাৎ প্রভাতকালীন স্থা উদিত (হইরাছে); কুমুদের মুদ্রিত অর্থাৎ সন্ধুচিত বদন (প্রেম-জ্ঞাপন জক্ষ) চমকিতভাবে চুম্বন করিয়া, (মধু-লুক) ভ্রমর পদ্মিনীর আলয়ে অর্থাৎ পদ্ম বনে বিরাজ করিতেছে। 'চমকি' শব্দের ধ্বনি ম্বারা পদ্মিনীর নিকট যাওয়ার জন্ম প্রমরের চঞ্চলতা ব্যক্তিত হইতেছে। অথবা মুদ্রিত হওয়ার কালে কুমুদ যদি ভ্রমরকে আটকাইয়া ফেলে, সেই আশক্ষায় ভ্রমর তাড়াতাড়ি প্রস্থান করিতেছে,—ইহাও বুঝা যাইতে পারে।

৫—৮। "কি জানি" ইত্যাদি। হে স্থি!
রক্ষনী ভোর (হইরাছে) জানিয়া কি ঘুলু-পক্ষী
ঘন ঘন গন্তীর ধ্বনি করিতেছে ? যামিনী গত
হইয়াছে; জিত-দামিনী অর্থাৎ অজ-কান্তি দারা
বিহ্যজ্জিয়িনী (অভিসারিকা) রম্নীগণ (লক্ষিত
হওয়ার আশকায়) লজ্জিত হইতেছে।

৯—১২। "কুহকত" ইত্যাদি। (চক্রবাকমিপুন বিধাতৃক্বত নির্মান্থনারে রক্তনীতে পরস্পার
হইতে বিযুক্ত পাকিয়া স্র্রোদেরে পুনরায় সন্মিলিত
হয় বলিয়া) বিগতশোক অর্থাৎ শোক-অবগানে
প্রকৃল চক্রবাক ডাকিতেছে; এখন সকল লোকই
ভাগিৰে; শুক, শারিকা ও কোকিলের ক্লথবনি

ষারা নিধুবন আওয়াক অর্থাৎ নিনাদে পরিপূর্ণ হইতেছে।

১৩—১৬। "গলিত" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা ও শ্রীক্ষের) স্থন্দর বদন অঙ্গ হইতে এই হইয়া (শ্বাার) শোভা পাইতেছে; (শ্রীরাধার) মণি-মুক্ত বেণীরূপ ফণী উন্নত (কমলের) কোরকের কাস্তি-অপহরণ-কারী কুচ-মুগলের মধ্যস্থলে বিরাজিত হইতেছে। 'মণিযুত' ইত্যাদি বাক্যের তাৎপর্য্য এই বে, শ্রীরাধার মণিগ্রাধিত উন্মুক্ত কুষ্ণ-বেণী উহার স্তন্ধরের মধ্যে পতিত হওয়ায় বোধ হই-তেছে যেন, মণিধারী একটি কুষ্ণ-সর্প কমল-কোরক-মন্মের মধ্যে শোভা পাইতেছে। পদ্মবন সর্পের প্রের বাস-স্থল বলিয়া প্রাসিদ্ধ বটে। তুলনা কঞ্চন,—

"উর পর সামরি বেণী।

ক্ষল-কোষ-পর কাবি নগেনী ॥

—বিদ্যাপতি।

১৭—২০। 'বরক্ষ' ইত্যাদি। বজ-কুলজাতা জলজ-নরনা অর্থাৎ নীলোৎপল-নেত্রা পল্নমুথী (শ্রীরাধা) লুমাইরাছেন; (তাঁহার) ক্ত-নালিশ (কৃত হইরাছে নালিশ থৎকর্ত্ক) অর্থাৎ অভিযোগকারী ভূক্ষ বালিশ ও আলম্ভ অর্থাৎ রতি-বিমর্দ-জনিত অবসাদ পরিত্যাগ করিতেছে না। ('কৃত-নালিশ' শব্দের বারা ইহা ব্যক্তিত হইয়া, অবসাদ হেতু আলিজনের অসামর্থ্য প্রকাশ করিয়া শ্রীকৃষ্ণের নির্দ্ধর সম্ভোগের প্রতি দোবারোপ করিতেছে।)

২>--২৪। "টুট্ল" ইত্যাদি। ঘুণ (কীট)
কি (কলপের) ধহন্ত পিকে ছিন্ন করিয়াছে । কিংবা
রতি-বুদ্দে (কলপের) তৃণ শুক্ত হইয়াছে । (প্ররতরূপ)
বুদ্দের মধ্যে রতি-পতি অর্থাৎ কলপ কিংবা প্ররতের
অধিষ্ঠাতৃ-দেবতা (নিরক্ত হওয়ার) লজ্জার পড়িল
এবং (পরাজিত হওয়ার) ভরে পলায়ন করিল।

২৫---২৮। "বিপতি" ইত্যাদি। (অভি-সারিক।) ব্বতী-সমূহ বিপদে পতিত হইল অর্থাৎ বাইবে, কি থাকিবে, ছির করিভে না পারিয়া ষ্টাফরে পড়িল; (তাহারা) গুরু-জনের গমনাগমন সম্বন্ধে চুপে চুপে বলাবলি করিতে লাগিল কিংবা গুরুজনের মন্দ চরিত্র সম্বন্ধে বলাবলি করিতে লাগিল। জগদানন্দ (বলিতেছেন) রসবতী শ্রীরাধা ও রসরাজ শ্রীক্রফা সরস-বিরস মর্থাৎ সানন্দের অবস্থায় নিরানন্দ ইইলেন।

সারীশুকোক্তি যথা।

বিভাগ 13

রাই জাগ রাই জাগ শারী শুকং বলে।
কত নিদ্রা যাও কালামাণিকের কোলে॥
রজনী প্রভাত হৈলত বলিয়ে তোমারে।
অরুণ-কিরণ দেখি প্রাণ কাঁপে ডরে॥
শারী বোলে শুন শুক গগনে উড়ি ডাক।
নব-জলধর আনি অরুণেরে ঢাক॥
শুক বলে শুন শারি আমরা পশু পাখী।।
জাগাইলে না জাগে রাই ধরম' কর সাখী॥
বংশীবদনে বলে চাঁদ গেল নিজ ঠাঞি।
অরুণ-কিরণ হবে উঠি ঘরে যাই॥৩॥৬৫৮॥

পাঠাম্বর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১০০ সংখ্যক পদ।
২। 'শুক শারী' ক, খ। ৩। 'হইলে' ঘ।
৪। 'হেরি' ক, খ। ৫। 'রাই কাছু' প-র-সা।
৬। 'পশু-পাথী' স্থলে 'পোষা-পাথী' প-র-সা।
१। 'ধর্ম' প-র-সা। ৮। 'বংশীবদনে বলে' স্থলে
'বিভাপতি কংহ' ক, খ, ঘ, চ।

ৰগীর বৈক্ষব কবিদিগের সন্থলিত বিদ্যাপতির পদাবলির ভাষা যে কারণেই হউক, অরাধিক পরি-মাণে বলীকৃত হইয়া থাকিলেও প্রায় কোন স্থলেই এরপ থাঁটি বালালার রূপান্তরিত দেখা বার না। বিদ্যাপতি বে খাঁটি বালালার পদ রচনা করিবাছেন, ভাহারও কোন প্রমাণ নাই; সেরপ করিলে অভতঃ বলদেশে ভাঁহার সেই বালালা পদগুলি অধিক পরিমাণে পাওরা বাইবার কথা ছিল; কিন্তু এরূপ পদ ছই চারিটির অধিক পাওরা বার নাই। স্বভরাং প-র-না পুথির প্রমাণ অন্থসারে এই খাঁটি বালালা পদটি বংশীবদনের রচিত বলিয়া গ্রহণ করাই সঙ্গত বিবেচনা হয়। পদ-রদ-সার পুথির সক্ষণিয়িগুলিমানন্দ দাস এই পদটির ভাষা-দর্শনে শুধু অন্থমানের উপর নির্ভ্র করিয়া, ইহা বিদ্যাপতির রচনা নহে বলিয়া স্থির করিয়াছেন, এরূপ বোধ হয় না; কেন না, আমরা পদ-রদ-সার পুথিতে বিদ্যাপতির ভণিতাযুক্ত নিয়লিখিত নূতন খাঁটি বালালা পদটিও পাইয়াছি; যথা,—

শিক্ ধিক্ নিঠুর কালিয়া
শুনবি বচন মোর।
দেহের গঠন মনের মরম
এবে সে জানিলাম তোর ॥
সে রাধা বিহনে শয়নে সপনে
বদনে না ছিল আন।
যাহার চরিত্র পদাবলি করি
বালীতে করিছ গান॥"—ইত্যাদি

প-র-সা, ১০১৩ সংখ্যক পদ।

স্তরাং পদক্ষতকর ক, থ প্রভৃতি পুণিগুলির
"বিদ্যাপতি কংহে" স্থলে নিমানল দাস বে "বংশীবদনে
বলে" পাঠ গ্রহণ করিয়াছেন, উহার মূল অবশ্রই
কোন প্রাচীন হস্তলিখিত পুণি ছিল, এরপ অমুমান
করাই সক্ত বোধ হয়।

তথা রাগ।১

প্রাণনাথ কি আজু হইল।
কেমনে যাইব ঘরে নিশিং পোহাইল॥
মৃগমদ চন্দন বেশ গেল দুর।
নয়ানের কাজর গেল সিঁথার সিন্দুর॥
বতনে পরাহ মোরে নিজ অভরণ।
সল্পে লৈয়া চল মোরে বিজ্ঞান-লোচন॥

ভোমার পীত-বাস আমারে দাও পরি।
উভ করি বান্ধ চূড়া আউলায়া। কবরী ॥
ভোমার গলের বনমালা দাও মোর গলে।
মোব প্রিয় সথা কৈয় স্থাইলে গোকুলে॥
বস্থ রামানন্দ ভণে এমন পিরিতি।
ব্যাস্থ-ইরিণে যেন তোমার বসতি ॥৪॥৮৫৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৩৪ সংখ্যক পদ।
২। 'রজনি'ঘ। ৩। 'দেহ'ক, খ, প-র-সা।
৪। 'এলাঞা' ক; 'এল্যায়া' খ; 'এল্যাইয়া'
য়,চ; 'আউলাই' প-র-সা। ৫। 'গলার' ক,
প-র-সা। ৬। 'দেও' ক, খ, প-র-সা। १।
'কইয়'ক; 'বৈল' প-র-সা। ৮। 'সোধাইলো'
য়,চ। ৯। 'বেন রাই'ক,খ,চ,প-র-সা।

টাকা

>•। "মোর" ইত্যাদি। গোকুলে কেছ (এটিকে ?) জিজ্ঞাদা করিলে, বলিও—(এটি) আমার প্রিয়দগা।

">
-> ২। "বেশ্ব" ইত্যাদি। বন্ধ রামানন্দ
বলেন—এরপ প্রেম (হে শ্রীরাধে!) ব্যান্ত ও হরিদ
বেরপ এক স্থলে বসতি ক্রে—(গুরু জনের সৃহিত)
তোমার বসতিও সেইরূপ! 'ব্যান্ত-হরিবে' শব্দটি
ক্রিয়া-বিশেষণ; ইহা 'অহি-নকুল' ইত্যাদি শব্দের
ভার শ্বন্দ্রমাস শ্বারা নিম্পন্ন হইন্নাছে।

তথা রাশ।>

নেহারিতে তুত্ তুহাঁ কাতর নয়নে উপলল প্রেম-তরক। মুক্তছল রাই মুক়ছি পড় মাধৰ কবে হবে তাকর° সজ॥ ললিতা সুমুখি হুমুখি করি ফুকরভ রাইক কোরে আগোর। কামু করি ফুকরত সহচরি কাস তরকত লোচন> -লোর॥ কতি গেও>• অরুণ-কিরণ-ভয় দাকণ কতি গেও>> লোকক ভাত। অবভূ১২ নাহি সম্বল মাধব ঘোষ

পাঠান্তর

উদভট মুগধ চরীত্যুগ মানা ৬০॥

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৩৫।১৫৩৪ সংখ্যক
পদ। ২। 'মন্দিরে' চ, প-র-সা। ৩। 'ছহঁ
ছইা ৰদন' হলে 'ছহঁ মুখচান্দ' ক; 'দোহেঁ
দোহাঁর বদন' খ। ৪। 'ডোর' ক। ৫। 'নোর'
ক। ৬। 'দোহেঁ দোহাঁ' খ, ঘ, চ; 'ছহু দোহা'
প-র-সা। ৭। 'সোরস' প-র-সা। ৮। 'ফুক-রহ' প-র-সা। ১। 'লোচনে' প-র-সা। ১০-১১। 'গিঙা' প-র-সা। ১২। 'এতহ' ক, খ, ঘ, চ। ১৩। 'চরিড' ক, খ, চ, প-র-সা।

টাকা

৫-- १। "মাধৰ" ইত্যাদি। (খ্রীরাধা কহি-

লেন) হে মাধব। তোমার চরণে আমার বিদার (চাহিতেছি); তোমার প্রেম হইতেই অর্থাৎ তোমার প্রেমের আকর্ষণেই (আমি) পুনরার (তোমার চরণের নিকট) চলিরা আসিব; এখন (তোমার চরণের) দর্শন আমার ভাগ্যে নাই। ১২—১৫। "ললিতা" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণ উভরে মুফ্ডিত হইলেও) ললিতা শ্রীরাধাকে ক্রোড়ে জড়াইরা ধরিরা 'শ্রন্দরি! শ্রন্দরি!' বলিবা ডাকিতে লাগিলেন; (সেইরপ) শ্রীক্তকের সকে সমাগতা দৃতী 'কাম ! কাম !' বলিয়া ডাকিতে লাগিলেন; তাঁহাদিগের নম্মনের অঞ্চ-জন ধারা বহিয়া যাইতে লাগিল।

তথা রাগ ৷১

কত্ত্যতনে দুত্ निक निक मिलिएत বিমনহি করত পয়ান। তুত্ক নয়ন গল প্রেম-বিচেছদ-জল দারুণ দৈব বিহান ॥ দেখ রাধামাধ্ব-প্রেম। এছন ঘটন কতিছাঁ নাহি॰ হেরিয়ে যৈছন লাখবান তেম॥ এ ॥ পদ আধ চলত খলত পুন ফারতং কাতরে নেহারই মুখ। একই পরাণ দেহ পুন ভিন ভিন অত্যে সে মানয়ে**৬ দু**খ ॥ তিল এক বিরহ কলপ করি মানই গায়ই তুহুঁ পরসঞ্। ঐছে গান গুণ ভণ রাধামোহন

পাঠান্তর

যতনহ সো রস-ভঙ্গ ॥৬॥৬৬১॥

১। ইছাপ-র-সাপুণির ১১৩৬ সংখ্যক পদ। ২। 'বিষ্টন'প-র-সা। ৩। 'না' ক,খ,প-র-সা। ৪।ক,খ,খ,চপুথিতে 'শ্র' নাই। ৫। 'সিরভ' ক,খ; 'ফিরত'প-র-সা। ৬। 'মানিরে' খ।

है का

১২—১৫। "তিল" ইত্যাদি। এক তিলের পরিমাণ বিরহকে কর অর্থাৎ রুগ-পরিমিত বলিরা মনে করিতেছেন; উভরে (উভরের) প্রানদ অর্থাৎ কাহিনী কীর্ত্তন করিতেছেন; রাধামোহন কছেন— এক্রণ অণ-কীর্তনে (স্থীবিশের) ব্যেই সেই রুদের ভদ্দ হইল। বিভাব ।১

নিজ নেজি মস্পিতের করল পরান।
শারন করলং পুন কোই না জান।
জাকপট প্রেমকং বন্ধ।
তুরজনে-সকল-নেখনং করু সান্ধ।
প্রাতর-উচিতিং করণ করু রাই।
তেজাল বিপরিতিং বসন তুমু লাইং॥৭॥৬৬২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৩৭ সংখ্যক পদ। ২। 'করল' ক। ৩। 'প্রেমকি' প-র-সা। ৪। 'গ্র-জন-' ইভ্যাদি ক, চ; 'গ্র-জন-নয়ন-সকল' প-র-সা। ৫। 'প্রোভর-উদিত' ক; 'প্রাভ-উচিত' ধ। ৬। 'বিপরীত' ক, ধ। ৭। 'নাই' ক, চ।

ক পুথি ও তদম্বাদী বটতলার মুদ্রিত গ্রন্থে 'নিজ মন্দিরে ধনি' ইত্যাদি পরবর্তী পদটি এই পদের শেষাংশ-রূপে লিখিত হইয়াছে; উহা সঙ্গত বলিয়া বোধ হয় না; কারণ, পদ ছইটির বর্ণনীয় বিষয়ের মধ্যে পার্থক্য আছে; বিশেষতঃ 'নিজ মন্দিরে ধনি' ইত্যাদি পংক্তিগুলৈকে শ্বতন্ত্র পদ গণ্য না করিলে এই প্রবের নির্দিষ্ট পদসংখ্যা হইতে একটি পদ কম পড়ে।

টাকা

৩—৪। "অকপট" ইত্যাদি। অক্তরিম প্রেমের বন্ধন (এই প্রকার) বে, (উহা) ছজ্জন-সমূহের নয়ন আরু করিরা রাথে অধাৎ অহ্বরাসের আজিশব্যে নারক ও নারিকা প্রেমার হইরা ছ্র্জ্জনগণ বে তাঁহা-দিগের গতিবিধি লক্ষ্য করিতেছে, তাহা অগুমারও আছে করে না। (বস্তুতঃ নারক ও নারিকা প্রেমার হইলেও, তাহাতে বথন তাঁহাদিগের অন্ধ্রনার হলৈও, তাহাতে বথন তাঁহাদিগের অন্ধ্রনার করেনা এবং বধন ছ্র্জ্জনেরা চন্দ্র সন্থেও তাঁহাদিগের গমনাগমনের কোন ব্যাঘাত জন্মেনা এবং বধন ছ্র্জ্জনেরা চন্দ্র সন্থেও তাঁহাদিগের গমনাগমনের কোন ব্যাঘাত জন্মাইতে পারে না, তথন প্রেমিক-মুগলকে আরু না বলিরা

ছৰ্জনগণকে প্ৰেমের শক্তি ছারা আৰু বলিরা বর্ণিত করিরা পদকর্তা ঐকান্তিক প্রেমের আচিন্তনীর মহিমাই ব্যক্ত করিয়াছেন)।

e—৬। "প্রাতর-" ইত্যাদি। (তথন) শ্রীরাধা প্রাতঃকালের উচিত কার্য্য সম্পন্ন করিলেন (এবং) অঙ্গে (নিজের) বস্ত্র ধারণ করিয়া, (রক্ষনীতে সম্ভোগ-অন্তে শীক্ত ফের সহিত পরিধের ব**ন্তে**র পরি-বর্ত্তন হওয়ায়) বিপরীত অর্থাৎ পরিবর্ত্তিত (পীত-বর্ণ) বন্ধ পরিত্যাগ করিলেন। 'বসন তন্ধু লাই' বাক্যের ধ্বনি ধারা পদ-কর্ত্তা ইহাও বুঝাইতেছেন যে, ঐ পীত বসন শ্রীরাধার অঙ্গকান্তির সহিত মিশিরা যাওয়ার এতক্ষণ শ্রীরাধার অঙ্গে ঐ বসনের অভিছ বুঝা যায় নাই; এখন তিনি নিজের প্রিয় স্থনীল বসন ধারণ করায় বসনের অভিত পরিক্ট ছইল। ঐ বাক্য ধারা ইহাও ব্যঞ্জিত হইতেছে বে, প্রীরাধা পীত বদনের পরিতাাগ ছারা নারীজাতির প্রধান ভূষণ লজ্জাকে রক্ষা করিয়া ও সুনীল-বসনের ধারণ হারা অপুর্ব কৃষ্ণ-প্রীভির পারচয় দিয়া, তাঁহার ভাষ উত্তমা নায়িকার উপযুক্ত প্রভাত-ক্লভাই সম্পন্ন ক্রিলেন।

धाननी ।>

নিজ মন্দিরে ধনি বৈঠলি স্থি মেলিং।
ক্ষত্তি পিয়া-গুণ রজনিক কেলি॥
ভাবে অবশ ধনি পুলকিত অক।
গদ-গদ কহে কত বচন-বিভক্ত॥
নয়নে বহয়ে জল কাঁপয়ে৽ শরীর।
ঘামে ভিগল সব অরুণিম চীর॥
কত কত ভাব৽ বিথারল রাই।
কহিতে না পারে ধনি প্রেম অবগাই॥
বৈরজ ধরি ধনি কহয়ে বিলাস।
প্রেম-অমুক্রপ কহই কামু দাস॥॥৮॥৬৬৩॥

इंडि शक्तम-शहरः।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৯৮ সংখ্যক পদ।
'ধাননী' হলে 'ঘথা' প-র-সা। ২। 'নিজ মন্দিরে
ধ'ন' ইত্যাদি পংক্তিটিতে ছইটি মাঝার আধিক্য
লক্ষিত হয়; 'নিজ' শক্ষটি পরিত্যাগ করিলে সহজেই
এই মাঝাধিক্য নিবারিত হইতে পারে; কিন্তু
সকলগুলি পুথিতেই 'নিজ মন্দিরে' ইত্যাদি পাঠ
ধাকার আমরা অগত্যা ধ্থাদৃষ্ট পাঠই গ্রহণ করিতে
বাধ্য হইয়াছি। ৩। 'কাঁপে' চ। ৪। 'ভাবে'
ব, ঘ।

টীকা

e— । "নয়নে" ইত্যাদি। (প্রীরাধার)
নয়নে (সাদ্দি-ভারের বিকাশ হেতু) জলধারা
বৃহিত্তেছে, শরার কম্পিত হইতেছে (এবং) দর্শ্বজবে গোহিতাভ বসন সিক্ত হইল। (প্রীরাধার
নীলাভ বসন দর্শ্ব-জলান্ত হইরা অক্ষের সহিত মিলিরা
যাওয়ার তাঁহার ওপ্র-কাঞ্চন-বর্ণের প্রভাবে
লোহিতাভ প্রতীত হইতেছে— বুবিতে হইবে)।

व्यथ तरमानगातः।

তচ্চতি-পূৰ্ববাপর-কীর্ত্তনামুদারেণ শ্রীমদেগারচন্দ্রঃ।

বিভাব।>

মহাভুক নাচত চৈত্ত রায়।

কৈ জানে কত কত ভাব শত শত
সোণার বরণ গোরা-গায় ॥ ধ্র ॥

প্রেমে তর অঙ্গ নিরমল
পুলক-অঙ্কুর-শোভা ।

শার কি কহব অশেব অমুভব ধ্রেইতে জগ-মন-লোভা ॥

শুনিয়া নিজ-গুণ নাম-কীর্ত্তন বিভার নটন-বিভাল ।

নদিয়া-পুর-লোক পাসরিল তুখ শোক
ভাসল ২ প্রেম-ভরঙ্গ ২ ॥

রভন বিতরণ প্রেম-রস বরিখণ ২ অথল ভুবন সিঞ্চিত ১০।

হৈতভাদাস গানে ২ অভুল প্রেম-দানে ২ মুঞি সে২৬ হইলুঁ বঞ্চিত ॥১॥৬৬৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা প্রির ১১০৯ সংখ্যক ও
প-র পুথির ১৩।২০ সংখ্যক পদ। ২। 'মহাপ্রভূ'
প-র-সা। ৩। 'গোরা-গার' হুলে 'গার' প-র।
৪। 'অছুর' হুলে 'অলের' প-র। ৫। 'অশেব
অমুভব' হুলে 'অশেবামুভাব' প-র-সা; 'বিশেষ
অমুভব' প-র। ৬। 'গুনি' ক । ৭। 'সংকীর্জন'
প-র। ৮। 'বিভোর' ইত্যাদি হুলে 'সুটত বিভোর
অলে' প-র। ৯। 'নিদিয়া-পুর-লোক' হুলে 'নিদিয়ার
সব লোক' প-র। ১০। 'ভুবল' প-র। ১১। 'ভাসল'
ইত্যাদি হুলে 'ভাসল প্রেম-ভরকে' প-র। ১২।
'রতন' ইত্যাদি হুলে প-র পুথির পাঠ ঘর্থা,—
'করুণা নিরথনে অমিয়া বরিধনে'। ১৩। 'সঞ্চিত'
প-র-সা। ১৪। 'বামুদেব ঘোর' প-র। ১৫।
'অতুল' ইত্যাদি হুলে 'আওল প্রেমদানে' ক;

তথা স্থাপ ।১

'আতুল' ইত্যাদি চ; 'তুলনা নাহিক আনে' প-র।

১৬। 'মূঞি সে' স্থলে 'মূঞি মাজ' প-র।

অবতার ভাল গোরাস অবতার কৈলাই ভাল।
জগাই মাধাই নাচে বড় ঠাকুরাল।
চাঁদ নাচে স্কুল্ল নাচে আর নাচে ভারা।
পাতালের বাস্থিকি নাচে বলেই গোরা গোরাই।
নাচরে ভক্তগণ হইয়া বিভোরা।
নাচে অকিঞ্কন যত প্রেমে মাতোরারা।

জড় অন্ধ আড়ুর উদ্ধারে পতিত। বাস্থ বোষে কহে মুঞি হইলুঁ বঞ্চিত॥২॥৬৬৫॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১১৪ • সংখ্যক পদ। ২। 'কৈল' ক। ৩। 'বলি' ক; 'বোলে' চ। ৪। 'গোরা গোরা' হুলে 'গোরা' ধ। ৫। 'অভুর' ঘ,চ; 'অভুরাদি' প-র-সা।

ধানশী ৷১

কছ কহ স্থল্দরি রজনি-বিলাস। কৈছনে নাহ পুরল তুয়া আশং॥ কত্ত্ত্যভনে বিভি করি অমুমান। নাগর নাগরি করুত নির্মাণ ॥ অধিল ভূবন মাহা ভুছ বর-নারি। আজুক রজনি কিয়ে কয়ল মুবারি⁸। পিয়াক পিরিতি হাম কহই না পার । লাখ বদন বিহি না দিল হামার ॥ আপনক গজ-মোত্তি-হার উতারি"। যভনে পরায়ল ১০ ককে ভামারি॥ করে ধরি পিয়া বৈসায়ল নিজ কোর । স্থান্ধি চন্দন অকে লেপল মোর॥ ফুয়ল কবরি বান্ধয়ে অমুপাম। ভাহে বেড়ি^{১৩} দেয়ল^{১৪} চম্পক-দাম॥ মধুর মধুর দিঠে হেরই কান। আনন্দ-জলে পরিপুরল নয়ান[ে] ॥ ভণয়ে বিস্থাপতি ভাব-তরঙ্গ' এবে কছি শুন স্থি সোপরসঙ্গণ ॥৩॥৬৬৬॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পৃথির ১১৪ সংখ্যক ও প-র পৃথির ১৩।৪৪ সংখ্যক পদ। 'ধাননী' হলে 'বিভাব' প-র। ২। 'কৈছনে' ইত্যাদি পংক্তির হলে 'কৈছে পুরণি ভূছা নাহক আন' ধ, ব, প-র-সা। 'পিরাক পিরিতি হাম কহই না পার' ইত্যাদি উদ্ভর দর্শনে 'কৈছনে নাহ পুরল' ইত্যাদি প্রশ্নই সসকত হয়; স্তরাং ক, চ ও প-র পুথির পাঠই শুদ্ধ বলিয়া গুহীত হইহাছে। ৩। 'কয়ল' ক, খ, খ, চ। ৪। 'আজুক' ইত্যাদি স্থলে 'প্ৰপুক্ৰ নাহ তোছে মিলল মুরারি' ক, (পাঠান্তর—চ)। 'কতত্ যতনে' ইত্যাদি পংক্তিচতুষ্ট্য পার পুথিতে নাই। ক পুথিতে অতঃপর 'শ্রীরাধিকার উক্তি যথা' লিথিয়া 'পিয়াক পিরিভি' ইত্যাদি বাকি অংশটিকে একটি স্বত্ত্র পদ-রূপে সরিবেশিত করা হইয়াছে; কিন্তু পদাস্ত-সমুদ্রের টাকায় রাধামোহদ ঠাকুর লিথিয়াছেন,— "পুনন্তজ্ৰদকণনাবহিখামবলম্য 'অধিল ভুবন মাহা তৃত্ব বর নারি' ইত্যাদি চরণত্তমেশ পুন: পৃচ্ছতি ততঃ শ্ৰীমতী 'পিয়াক পিরিতি হাম কহই না পারি' ইত্যাদি-না প্রত্যুত্তরং করোতি।" ইহা বারা ও ক পুণি ছাঙা অন্তান্ত পুথির প্রমাণামুদারে 'পিয়াক পিরিডি' ইত্যাদি পংক্তিগুলি এই পদটিরই শেষাংশ বলিয়া काना बाहेरजहा । वा 'कहिरज' क, थ। ।। 'পারি' প-র। १। 'বয়ন' প-র-সা, প-র। ৮। 'হামারি' প-র; 'আমার' ব, চ। । 'আপনক' ইত্যাদি স্থলে পর-দা ও প-র পুথির পাঠ যথা,—'আপন মালতী মালা হিয়াদে উভারি।' ১০। 'পড़াওল' क, थ, প-র। ১১। 'देरनात्रन' ইত্যাদি স্থলে 'মোর বসায়ল কোর' প-র-সা। ১৩। 'বেড়ি' 🕶। ১২। 'লেপই' প-র-সা। > । '(विष् (नम्रन' इटन '(विष्ममन' প-त्र-ना, প-র।১৫। 'আনন্দললে' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা ও প-র পুথির পাঠ ধ্বা,—'দেখিতে দেখিতে মানে 'ভাব-তরল' স্থলে 'ইহ স্পন স্মান'। ১৬। त्रम मक्र' भ-त्र। २१। 'এবে कहि' हेजानि च्रान প-স ও পার পৃথির পাঠ ষ্থা,—'ভূলল ধনি কহইতে নিশি রঙ্গ'।

গান্ধার ।১

চিরুণি করে ধরি কেশ-বেশ করি मिँथारय (ए^डे मिन्द्र। নাস-বেশ করি বসন পরাহই° পায়ে ধরি পরায়ে নুপুর॥ সই পিয়া-গুণ কহনে না যায় । দরিদ্রও হেম যেন তিলেক না ছোডই রভদে রজনি গোঙায়॥ ধ্রু : সে মার প্রমঞ্জল আঁচরে মোছই (पट्टे वमनक वार्वे। চিবুক করে ধরি সঘনে নিরখই মুখ ভরিণ্ণ তান্ত্র খাওয়ায়॥ বৃন্দাবন ভরি রসের বাদর पिन त्रक्रनी[>] नाहि कान। কুপণ ধন সম ভিলেক না ছোড়ই ক্ৰি শেখর ১৪ প্রমাণ ১৪॥ ১৬৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১২২ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩৪৬ সংখ্যক পদ। 'গান্ধার' ফ্লে 'শ্রীগান্ধার' প-র। ২। 'সিথায়ে দেই' ফ্লে 'সিথারে দেই' প-র। ৩। 'পরাইয়া' প-র-সা। ৪। 'সোই' ক, খ, ঘ, চ। ৫। 'কহনে না যায়' ফ্লে 'ক্ছনে যায়' খ। 'সই পিয়া-গুণ' ইত্যাদি প্রকক্ষিটি প-র পুথিতে নাই। ৬। 'দারিজ্ল' খ, চ, প-র-সা। ৭। 'হাড়ই' ক; 'তেজই' প-র-সা। ৮। 'সো' ক, খ, ঘ, চ। ৯। অতঃপর প-র পুথিতে 'চিবুক করে ধরি' ইত্যাদি পংক্তি হয়টির পরিবর্জে পাঠ বথা,—

'মৃণাল চম্পক- দাম সম তমু
হিরা বিহু শেকে না শোরার।

চিবুক করে ধরি মুধ নির্থিতে
বে কিছু কর্বে বধুর।

· ·

নিরদ বন্ধান হৈরি দিব্য দেই বন্ধ মুখ ভরি থাওরারে তাম্প ॥'

ইহার পরে কিছু স্থান ভণিতার জ্ঞার ফাঁকে রাধা হইয়াছে। ১০। 'চিবুক' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ ষথা,—

'অধর নিরস হেরি দিব্য দেই বেরি বেরি'

>>। 'মুথ ভরি' হুলে 'মুথে ভুলি' প-র-সা।

>>। 'বাদর' হুলে 'বাদর করি' প-র-সা। ১৩।

'দিন রজনী' হুলে 'দীন রজনি' ছ। ১৪। 'কবিশেখর' হুলে 'রার শেখর' প-র-সা।

কৌ রাগিণী।>

না পুচ না পুছ সথি পিয়াক পিরিতং।
পরাণ নিছনি দিলে না হয় উচিতং ॥
হিয়ার উপর হৈতে শেজে না ছোয়ায়ং ।
বুকে বুকে মুখে মুখে রজনি গোঙায় ॥
নিঁদের আলসেং যদি পাশ মোড়া দিয়ে ।
কি ভেলং কি ভেলং বলি চমকি উঠয়ে ॥
হিয়ায় হিয়ায় এক বয়ানে বয়ানে ।
নাসিকা নাসিকায়ং এক নয়ানে নয়ানেং ॥
ইপে যদি মুঞি ভেজি দীঘ নিশাসং ।
আকুল হইয়া পিয়া উঠয়ে তরাস ॥
এমতি বঞ্চিয়ে নিশি দোহেঁং এক মেলি।
ভ্ঞানদাস কহে এছে নিহি নিতি কেলি॥৫॥৬৬৮

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৪০ সংখ্যক পদ।
২। 'পিরীড' ক, খ, চ; 'পিরিডি' প-র-সা।
৩। 'উচিডি' প-র-সা। ৪। 'শোরার' ক;
ছুরার' খ। ৫। 'ঝালিসে' ব, চ; 'অলসে'
প-র-সা। ৬-৭। 'হৈল' প-র-সা। ৮। 'বরার'
ক, চ, প-র-সা। ৯। 'নাসিফা' প-র-সা।
১০। 'নরান' ক, চ, প-র-সা। ১১। 'ভেজি

দীঘ নিশাস' ছলে 'তেজিয়ে দীরঘ নিশাস' ক। 'ইথে যদি' ইত্যাদি পংক্রিষর প-র-সা পুথিতে নাই। ১২। 'ছহেঁ' ক; 'ছহু' প-র-সা।

টাকা

৩-৪। "হিয়ার" ইত্যাদি। (আমাকে)
বুকের উপর হইতে (নামাইয়া) শ্ব্যায় স্পর্শ করায়
না; (আমার) বুকে (নিজের) বুক,- (আমার)
মুখে (নিজের) মুখ (রাখিয়া) রজনী বাপন করে।
(নিজেত হইলে সেই সময়টুকু ছাড়াছাড়ি হইবে বলিয়া
জাগিয়া রজনী বাপন করে, ইহাই এই বাক্যের
তাৎপর্যা বটে)। তুলনা করুন,---

"কোরে আগোরি রাথই হিন্না পর
পালকে পাশ না পাই।
ও স্থ্থ-সাগরে মদন-রস-ভরে
ভাগিরা রজনি গোঙাই॥"
— নরোভম দাস; ৬৬৯ সংখ্যক পদ।
"উর বিষ্ণু শেজ পরশ নাহি পাই।
চীবহি বিষ্ণু তাখুল নাহি খাই।"
— কবিরজন; ৬৮০ সংখ্যক পদ।

शवनी ।>

ज्ञानि वज़ हे विष्णध[®] कान। কহিল নহে সে প্রেম-আর্তি ক্ষিল হেম দশবান ॥ গ্ৰু॥ সমূখে রাখিয়াং মুখ আঁচরে মোগ্ই অলকা ভিলকা বনাই । বদন হেরি হেরি মদন-রসভবের व्यथदा व्यथत लोगोरे ॥ কোরে আগোরি রাখই হিয়া পর পালকে পাল না পাই ।। ও স্থ-সাগরে মদন-রসম্ভরে ১২ আগিয়া র**জ**নি গোঙাই #

কেবল রসময় মধুর মূর তি
পিরিতিময় প্রতি অক।
নরোত্তম দাস কহ্ণ যাহার অনুভব
সে জানে ও রসরক্ষণ ॥ ৬ ॥ ৬৬৯॥

পাঠান্তব

)। ইহা প-র-সা পুথির ১১৪৪ সংখ্যক **ও** প-র প্রথির ১ গ৪৮ সংখ্যক পদ। 'ধানদী' কলে 'ऋइटे' প-র। २। 'म**टे গো' প-র।** ৩। 'বিনদিয়া' প-র। ৪। 'কাহিনী' প-র-সা। ে। 'রাখি' প-র। ৬। 'মোছারই' খ। १। 'वनारम' প-त्र-मा : 'वनाम' भ-त्र । 🕨 । 'नागरम' প-द-मा ; 'गागाव' भ-त । २। 'बारगावहे' भ-त-সা: 'আগরিয়া' পরে। ১০। **'পলকে'** সা। ১১। 'পালকে' ইত্যাদি স্থলে 'শরন পাশ नाहि পার' প-র। ১২। 'ও অব-সাগরে' ইত্যাদি স্থলে 'মদন-রসভরে ও অ্থ-সাগরে' প-র-সা; 'নবীন প্রেমভরে ও রদ-সাগরে' প-র। ১৩। 'পোহাই' প-র-সা: 'পোহার' প-র। ১৪। 'নরোত্তম' ইত্যাদি স্থলে 'কহই নরোন্তম' প-র; 'নরোন্তম' প-র-গ।। ১६। '(म कात्न' हैजानि ऋल '(महे भ व्याप ইছ রক' প-র।

বিশ্বড়া ।১

এমন পিরিতি কভু দেখি নাই শুনি²।
নিমিথে মানয়ে যুগ কোরে দূর মানি ॥
সমুথে রাখিয়া করে বসনের বা⁴।
মুখ ফিরাইলে⁸ তার ভরে কাঁপে গা⁴ ॥
একতমু হৈয়া মোরা রজনী গোন্তাই।
স্থথের সাগরে ভূবি অবধি না পাই ॥
রজনী প্রভাত হৈলে কাতর হিয়ায়।
দেহ ছাড়ি যেন মোর প্রাণ চলি যায়॥
সে কথা কহিতে সই⁸ বিদরে পরাণ।
চণ্ডীদাস করে ধনি সব পরমাণ ॥৭॥৬৭০)

পাঠান্তর

১। ইছা প্র-সা পুথির ১১৪৫ সংখ্যক পদ।
২। 'দেখি' ইডাাদি স্থানে 'নাহি দেখি শুনি' খ,
প-র-সা। ৩। 'বাও' প-ব-সা। ৪। 'ফিরাইডে'
খ। ৫। 'গাও' প-র-সা। ৬। 'সোই'খ, চ।

কোরাগিণা ৷১

আমি ষাই ষাই বলিং বলে তিন বোলণ।
কত না চুম্বন দেই কত দেই কোল ॥
পদ-আধ যায় পিয়া চাহে পালটিয়া।
বয়ান নিরখে কত কাতর হইয়া ॥
করে কর ধরি পিয়া শপুপি দেই 'মোরে । ।
পুন দরশন লাগি কত চাটু বোলে'॥
নিগৃত্ পিরিতি পিয়ার আরতি বল্ট ।
চণ্ডীদাস কহে হিয়ার মাঝারে এক লালাভ ৭১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পূথির ১১৪৬ সংখ্যক ও
প-র পূথির ১৩৪৫ সংখ্যক পদ। 'কৌ রাগিণী'
ছলে 'পঠমঞ্জরী' প-র। ২। 'পিরা' প-র-সা।
৩। 'আমি ষাই' ইত্যাদি স্থলে 'যাই ঘাই বলি
পিরা বলে তিন বোল' প-র। ৪। 'পদ আধ'
ইত্যাদি পংক্তিরর প-র পূথিতে 'পুন দরশন লাগি'
ইত্যাদি পংক্তির পরে সরিবেশি ০ ইইয়াছে। ৫।
'করে কর' ইত্যাদি স্থলে 'করে ধরি পিরা
সপতি দেই' প-র। ৬। 'মোর' খ, ঘ। ৭।
'কত চাটু বোলে' স্থলে 'পুন দেই কোরে' প-র।
৮। 'বছক' খ, ঘ। 'নিগুঢ়' ইত্যাদি স্থলে
'নিশুড়েছি পিরা মোরে আর্যতি করে বক্ত' প-র।
১। 'চণ্ডীদাস ক্রেইত্যাদি স্থলে 'চণ্ডীদাস ক্রেই

পিয়া-গুণ যে কহিলুঁ সেই ভাল আর কব না।*
গুণ কহিলে কি জানি হয় তেঞি কহিয়ে না।
ইতাাদি সম্পন্ন-সম্ভোগস্থ রসোদগারঃ।
এতদগীতং সর্ব্ব-কালোচিতং।
পুনশ্চ প্রকারাস্তরেণ যথা।

শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

অথ রদোদগারাত্মরাগঃ।

বিভাষ ৷১

পরশ-মণির সনে কি দিব তুলনা বেং পরণ ভোয়াইলে হয় সোণা। নাচিয়া গাইয়া রে আমার গৌরাঙ্গের গুণে রতন হইল কত জনা ॥ भहीत नन्धन वनमाली । তুলনা দিবার নাই এ তিন ভুবনে যার গোরা মোর পরাণ-পুতলী ॥ধ্রু॥ ७ हाँम कलको ८व॰ (भी श्रांश-ठाँदिन काँदिन এমন করিতে নারে আলো। উদয় निष्ण-পুরে অকলক পূৰ্ণ-চাঁদ মনের আন্ধার দূরে গেলো॥ এফ গুণে স্থরতি স্থর-তরু সম নহে রে মাগিলে দে পায় কোন>> জন। না মাগিতে>২ অখিল ভূবন ভরি জনে জনে যাচিচা দেওল ১০ প্রেম-ধন।

^{*&#}x27;পিয়া-শুল' ইত্যাদি পংক্তিম্বর প-র-সা পুথিতে নাই; এই পদটির অবশিষ্ট অংশ কোন পুথিতেই উদ্ভ হর নাই; স্থতরাং আমরা এ স্থলে উহা সরি-বেশিত ক্রিতে পারিলাম না।

[†] ক, ধ প্রভৃতি সকল পুথিতেই 'সম্পন্ন' ছবে 'সম্পূর্ণ' অশুদ্ধ পাঠ আছে। ৩৫৫ সংখ্যক পদে? টীকা জন্তব্য ।

গোরাচাঁদের ভূলনা গোরাচাঁদে গোসাঞি রে বিচার করিয়া দেখ সভে।

পরমানক্ষের মনে এ বড় আকুভি রে গৌরাজের দয়া হবে কবে শ ॥ ৯॥৬৭২॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সা পুথির ১১৪৭ সংখ্যক ও প-র পুথির ২২।২৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কি দিব' ইত্যাদি স্থলে 'তুলনা কি দিয়ে রে' প-র-স।। ৩। 'ঠেকিলে' প-র। ৪। 'পরশ-মনির সন্নে' ইত্যাদি কলিটির পূর্বে প-র পুথিতে নিম্নলিখিত অতিরিক্ত কলি দৃষ্ট হয়; ষথা—

'কেমনে পাসরিব গৌরাক্সচান্দের লীলা।
আমার গৌরাক্স-শুণে পশু পাথী আদি কান্দে
গলিয়া গলিয়া পড়ে শিলা॥'

e। 'শচীর নন্দন' ইত্যাদি ধুয়ার কলিটি প-র পুৰিতে নাই। ৬। 'ও চাঁদ কলফী রে' স্থলে 'চান্দ কলন্ধিত ভেল' পর। 'গৌরাঙ্গ টাদের ছান্দে' ইত্যাদি পংক্তি-চতুইর পার পুথিতে "বাচিয়া দেওণ প্রেমধন" পংক্তির পরে সলিবেশিত হইরাছে। १। 'আর' ক। 'আল' চ। ৮। 'কলানিধি' প-র। ১। 'গেল' ক, খ, চ, প-র সা, প-র। ১০। 'দে' প-র। 'দে গুণে স্থরভি' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি প-র পুথিতে 'পরশ-মণির সনে' ইত্যাদি কলিটির পরে সন্নিবেশিত হইগাছে। >> 1 'क्लांमा' भन्त्र। ১२। 'না মা:গতে' স্থাল 'অবাচিত্ত' প-র। ১০। 'বাচিয়া দেওল' ফ্লে 'আপনে দিলেন' প-র। ১৪। 'গোরাটাদের তুলনং' ইত্যাদি পংক্তি চারিটির পরিবর্ত্তে প-র পুথির পাঠ यथा :--

'গোরাজ-চান্দের ভাই ভূলনা দিবার নাই
ক্ষরে ভাবিয়া সব দেখ।
নরনানন্দের মনে অধিক আনন্দ রে
পোরা-অব বিচারিয়া লেখ।'

নক।

১—৪। "পরশ-মণির" ইত্যাদি। পদ-কর্ম্বা
বিণিতেছেন,—ক্ষর্প-মণির সহিত শ্রীগোরাঙ্গের কি
তুলনা দিব ? ক্ষর্প-মণি (অন্ত কোন ধাতু পদার্থে)
ক্ষর্প করাইলে (উহা) স্থাপ হয়; (কিন্তু) আমার
শ্রীগোরাজের (অন্তুত) শক্তির প্রস্তাবে নাচিয়া
গাহিয়া কত (শত) নাক্তি রয় হইল। পরে উহা ধাতু
পরশ-পাণর পাওয়াই ছর্মট ; তার পরে উহা ধাতু
দ্রব্যে ক্ষর্প করান আবশ্রুক ; তাহা হইলে ঐ ধাতুদ্রব্য স্থাপ করান আবশ্রুক ; ইয়া যায় ; স্থাপরাং এ স্থান
পরশ-পাণর অপেক্ষা শ্রীগোরাজের উৎকর্ম বর্ণিত
হওয়ার "ব্যতিরেক" অলকার হট্যাছে।)

৮—১১। "পৌরালটাদের" ইত্যাদি। শ্রীগোরালরূপ চন্দ্রের শোভার (আকাশের) সেই চন্দ্র কলছবুক্ত (ইইয়াছে); উহা এরপ আলো করিতে
পারে না; (কেন না, শ্রীগোরাঙ্গের আবির্ভাবে)
নববীপ নগরে কলছ-বিহান পূর্ণচন্দ্র সমুদ্দিত হর্টরাছে;
(উহার প্রভাবে) দর্শকের মনের অন্ধলার বিদ্রিত
হইল। (আকাশের চন্দ্র কলছ-বুক্ত এবং প্রাসবৃদ্ধির অধীন; উহা মেব ইত্যাদির প্রতিবন্ধকতা না
থাকিলে বাহ্ অন্ধকারমাত্র দূর করিতে পারে; কিছ
অকলক পূর্ণচন্দ্র-অরপ শ্রীগোরাক্ষ তাঁহার আবির্ভাব
ধারা দর্শকের মানসিক অন্ধকার পর্যান্ত বিদ্রিত
করিরাছেন; স্কুগ্রাং এ স্থনেও "ব্যতিরেক্স"
অলকার বৃদ্ধিতে হইবে।)

১২—১৫। "এ গুণে" ইত্যাদি। এই গুণের তুগনার স্থান্ধ স্থানত কার পারিকাত (খ্রীগোরাকের) তুগ্য নহে; কোন (পুণ্যবান) ব্যক্তি (স্থার্গ বাইরা সেই করতক পারিকাতের নিকট) গুধু প্রার্থনা করিলেই (ধন ইত্যাদি) প্রাপ্ত হন; (কিন্তু) প্রার্থনা না করিলেও (অপূর্ব দর্মা-গুণ হেতু) সমস্ত জগৎ ভরিরা (উত্তম-অধম না বাছিরা) সকল ব্যক্তিকে (নিজে) বাজ্ঞা করিরা

থেমিরূপ অমৃল্য রত্ন বিভৱণ করিয়াছেন। (এ স্থলেও "ব্যতিরেক" অলফার হইয়াছে।)

১৬—১৭। "গোরাচাঁদের" ইত্যাদি। শ্রীগোরা-ক্ষের তুলনা কেবল শ্রীগোরাক-এই বাক্য ধারা শ্রীগোরাক্ষের বিভায় ভুলনা-গল নাই, ইহা প্রতি-পাদিত হওয়ায় "অন্যয়" অলকার হং য়াছে।

"উপমানোপমেগ্রমকভৈত তুনস্বয়:॥"

---সাহিতাদর্পন, ১০ম পরিছেদ।

आहमी मश्चार्किः । वज्राक्षाः

চলিতে না পার ব্বসের ভরে।
আলসং নয়ানঃ অলপং করেও।
ঘন ঘন তুমি বাহিরে যাও।
আন ছলে কড কথা বুঝাওং॥
না জানিয়ে কিবা অস্তরেশ স্থাক।
আঁচরে কাঞ্চন কলকং মুখে॥
মরমে পিরিতি বেকত অক্ষেং।
ভিলেক সোয়াথ না দেয় অনজেং।
ভাবে বেয়াকুলং ওর না পাও॥
কপোলে পুলক বেকত দেখি।
প্রেম কলেবর ততহিঁং সাখী॥
ভ্যানদাস রসং ভাবিয়াং গায়।
রসের বেভার লুকাংশ না যায়॥১০॥৬৭৩॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৪৮ সংখ্যক ও প-র
পুথির ১৩/১৪ সংখ্যক পদ। ২। 'পারে' ক, খ।
৩। 'আলসে' প-র-সা, প-র। ৪। 'নয়ন'
চ। ৫। 'আলস' ক। ৬। 'ঝোরে' প-র-সা,
প-র। ৭। 'আন ছলে কত কথা বুঝাও' ইত্যাদি
ছয়টি পংক্ষি দ, চ পুথিতে নাই। ৮। 'আরর'

ক, প-র-সা। ১। 'ঝলকে' ক, ৬, প-র-সা।

১০। 'অস' ক, ৬, প-র-সা। ১১। 'অনক' ক,
৬, প-র-সা। ১২। 'কালার' ক, ৬, প-র-সা।

১০। 'বদন' ক। ১৪। 'ভাবে বেয়াক্ল' ছলে 'ভাবের আকল' প-র। ১৫। 'ভাহার' প-র-সা; 'সদত' প-র। ১৬। 'রস' শক্টি ঘ, চ পুথিতে নাই। ১৭। 'রস ভাবিয়া' ছলে 'অমুভবিয়া' প-র। ১৮। 'বুঝা' ৬; 'ছাপা' প-র।

টাকা

৫—৬। "না জানিয়ে" ইত্যাদি। জানি না (তোমার) অন্তরে কি প্রথ (রহিনছে!) অঞ্চলে অন (বাঁধা আছে), (অর্ন-ধারীর) মুথে (উহার) দাপি (দেখা যায়!); অর্থাৎ কেহ যদি আঁচলের গাঁঠিতে অর্ণ লুকাইয়া রাথে, তাহা হলৈও উহার মুখেব প্রফুলতাই দেই শুপু ধনের কথা ব্যক্ত করিয়া দেয়; এ ছলেও তোমার মুখের প্রফুলতাই তোমার অন্তরের শুপু প্রেম প্রকাশ করিয়া দিতেছে! তুলনা করুন,—

"আঁচরে কাঞ্চন ঝলকে দেখি।
প্রেম কলেবর দিয়াছে সাথী॥"
—বিজ্ঞাপতি; প-ক-ত—-২২৬ সংখ্যক পদ।
"এ তুয়াহাস মরম পরকাশই
প্রতি-অক্স-ভলিম সাথী।
গাঁঠিক হেম বদন মাহা ঝলকই
এত দিনে পেখলুঁ জাঁধি॥"
—গেবিন্দাস; প-ক-ত; ২২৭ সংখ্যক পদ।

यहरे ।>

স্থানর ব্ঝিলুঁ তোমার ভাব। প্রেম-রতন গোপতে পাইয়া ভাঁড়িলে কি হবে লাভ ॥ ধ্রু ॥

আনের কথা আন ছলে কহ বেকত পিরিতি-রঙ্গ। অঙ্গ চল চল রসের বিলাদে রঞ্চিত প্রেম-তরক⁹ ॥ চলিতে না পার ভাবের ভরেদ বচন হইলা হারা: । নিকুঞ্জ-বনে কাসুর সনে রঙ্গেত ১১ হৈয়াছ ১২ ভোরা ॥ পুছিলে না কহ मरनेत्र मत्रम^{००} এবে ভেল বিপরীত। কি হ্বার বলিবে বলরাম কতে ভাবেতে মঞ্জিল চীত>* ॥১১॥৬৭৪॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সাপুথির ১১৪৯ সংখ্যক ও
পর পুথির ১০১৫ সংখ্যক পদ। 'হৃছই' ছলে
'ঐরাগ'প-র। ২। 'বৃঝিল'ক। ৩। 'গুপত'
প-র। ৪। ক, ঝ, য়, চ পুথিতে 'ফ্র' নাই।
৫। 'ভক্রে' প-র। ৬। 'চণচল' ছলে 'চরচর'
প-র। ৭। 'প্রেম-ভরঙ্গ' ছলে 'রস-ভরঙ্গে' প-র।
৮। 'ভরেতে' ক, প-র। ৯। 'পারে' প-র।
১০। 'বচন হইলা হারা' খলে 'চরণ হইল হারা'
ক, প-র-সা। ১১। 'রঙ্গেতে' ক, প-র।
১২। 'ইংমাছে' ক, প-র। ১৩। 'পুছিলে
ইড্যাদি ছলে 'পুছিলে মনের মরম না কছ' প-র-সা,
প-র। ১৪। 'চিত'ক, প-র-সা, প-র।

वित्रात ।>

কি পুছহং সথি প্রেমের° কথা।
কহিতে না কানি কহিরে এখা°॥
পিরার পিরিতি কি না জান° তুমি।
এত দিনে তাহে ঠেকিলুঁ আমি॥

যত যত শ্রাম বঁধুর গুণ।
সোঙার পাজরে বিদলে ঘুণ।
দিবস রগনি কিভুনা জানি।
মনে পড়ে চাঁদ-বদন খানি।
চণ্ডাদাস কছে রসের সারু।
পিয়াব পিরিতি অনক্স পাথার ॥১২॥৬৭৫॥

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫ • সংখ্যক পদ।
২। 'পুছ' ক, প-র-সা। ৩। 'ভাবের'
প-র-সা। ৪। 'কহিয়ে এথা' স্থলে 'কি হয়ে
এথা' ঝ, চ; 'কি হয় কথা' প-র-সা। ৫।
'কি না' স্থলে 'কি' প-র-সা। ৬। 'চণ্ডীদাস
কহে' ইত্যাদি পংক্তিরয় ক, ঝ, ঘ ও চ পুথিতে
নাই।

সিকুড়া।১

সইং নিরবধি কত পড়ে মনে। শ্যাম নন্ধু বিপু না রচে মোর ওসু সোয়াপ্ত নাহিক বাহি দিনে এয়া ধরিয়া আমাব করে বৈসায়**৬ আপন কোরে** श्रुन (मरे मिशारा मिन्दूत । তাম্বল সাজাঞা জোলে খাও খাও কত বোলে কত গুণ কহিব বন্ধুর॥ বেঢ়িয়া* মালতা ফুল ঝাড়িয়া বান্ধয়ে চুল বসন পরাই > আমা দেখে। দেখিয়া আমার মুখ না জান কি পায় হুখ রদের আবেশে করে বুকে। কাপে পত্ত পরহরি হিয়ার উপরে ধর্ম मृत्य मूथ पिया यन कार- । বিহি পোহাইলে১১ রাতি মোরেণ্ড ছাড়ি যাবাণ্ড কভি भवनी>॰ श्रीव^{ऽ०} नाहि वाटक ॥>०॥७१७॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৫১ সংখ্যক ও প-র পুথির ১০।৪৭ সংখ্যক পদ। 'দিকুড়া' ছলে 'হুহই' প-র। ২। 'সোই' ঘ,চ। ৩। 'গ্রাম বকু'ছলে 'সে শ্রাম বকুরা' প-র। ৪। 'আমার' প-র। ৫। 'নাহি' প-র-সা। ৬। 'বসার' প-র-সা। ৭। 'দেই সিথারে' ছলে 'দের সিথারে' প-র-সা। ৮। 'সাজাই' প-র-সা। ১। 'বেড়িয়া' ক, প-র-সা। ১০। 'পারার' ধ, ঘ; 'পারাঞা' প-র। ১১। 'পোহারল' প-র-সা। ১২৷ 'আমা' প-র-সা। ১৩। 'য়াবে' প-র। ১৪। 'আত বলি' প-র। ১৫। 'জির' ক, প-র।

ভণা বাগ।>

মরম কহিলুঁ মো পুনং ঠেকিলু সে জনার° পিরিতি-ফান্দে । ন্নাভি দিন চিতে ভাবিতে ভাবিতে তারে সে পরাণ কান্দে⁸ । বুকে বুকে মুখে **८**ोट्थ लागिया थाटक • তমু মোরে সতত হারায় ও° বুক চিরিয়া হিয়ার মাঝারে আমারে রাখিতে চায় দ হার নহোঁ পিয়া গলায় পরয়ে চন্দন নহোঁ । মাখে গায় ১১। অনেক যতনে রতন পাইয়া পুইতে সোয়ান্ত না পায়> । কপূর ভাস্থল আপনি সাজিয়া>৩ মোর মুখ ভরি দেয়। হাসিয়া হাসিয়া চিবুক ধরিয়া मूर्थ मूथ (महे) (नग्र ॥

সাজাঞা কাচাঞা ও বসন পরাঞা ও আনেশে লইয়া কোরে ও ।

দীপ লৈয়া হাতে মুখ নির্বাধিতে ও
ভিতিল নয়ান লোরে ও ॥

চরণে ধরিয়া যাবক রচইং ও আউলায়াং বান্ধয়ে কেশ ।

বলরাম চিতে ভাবিতে ভাবিতে পাঁজর হইল শেষ ॥১৪॥৬৭৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫২ সংখ্যক ও প-র পুৰির ১০। ২ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' স্থলে 'সুহই' ২। 'পুন' স্থলে 'পুনি' খ, প-র-সা। ৩।'সে জনার' স্থলে 'সে স্থাম' প-র-সা। ৪। এ স্থলে পূর পুথিতে 'শ্রু' চিহ্ন আছে। 'মরম কহিলু' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি প-র পুথিতে 'আমারে রাখিতে চায়' পংস্কির পরে সলিবেশিত হইয়াছে। ৫। 'চৌথে लाजिया थारक' ऋरन 'हिर्देश लाजि बारक' क ; 'हिरेदेश লাগিয়া থাকি' খ; 'চৌথে লাগিয়া রহি' প-র-সা। 'বুকে বুকে' ইত্যাদি পংক্তির পরিবর্ত্তে প-র প্রথির পাঠ ষ্পা,—'ৰুকে বুকে মূথে চথ্যে লাগিয়া পাকিয়ে গো'। ৬। 'তমু' ইত্যাদি স্থলে 'তমু পিয়া সদাই হারায়' প-র। ৭। 'এ' ধ, প-র-সা। ৮। 'আমারে রাখিতে চার' হুলে 'সদাই রাখিতে চার' ক; 'आभारत थुहेरक ठांत्र' भ-त्र । २-२०। 'मरह' कः 'ন হঙ' প-র-সা; 'নাহি' প-র। ১১। 'মাঝো' क। ১२। 'थूरेरल' हेज्यानि च्रल 'थूरेरज बेक्नि না পায়' ক**ৃ 'থুইতে অক্ত নাহি পায়' প**-র-সা I 'অনেক বতনে' ইত্যাদি পংক্তিবন্নের পরিবর্ত্তে প-র পুথির পাঠ বথা,—

'অতি অভিগাৰে মতি বেরাকুল
থুইতে থল না পার।'

২০। 'সাঞাইরা' ক, খঃ 'চিবাইরা' পার-সা।
'কপুর ভাশুল' ইজ্যাদি পংক্তি-চ্ছুইর পার পুথিতে

নাই। ১৪। 'দিয়া' ক, প-র-সা। ১৫। 'সাজাঞা কাচাঞা' স্থলে 'সাজাইয়া কাচায়া' চ; 'সাজায়া কাছায়া' প-র-সা। ১৬। 'পরায়া' প-র-সা। ১৭। 'আবেশে' ইত্যাদি স্থলে 'আদরের বসায় কোরে' প-র। ১৮। 'মুথ নির্থিতে' স্থলে 'মুথানি দেথিতে' প-র। ১৯। 'নীরে' প-র-সা, প-র। ২০। 'রচয়ে' প-র-সা। ২১। 'আলায়া' ব; 'এলায়লা' ব; 'এলায়লা' ব; 'এলায়লা' ব; 'এলায়লা' ব; 'আলুই' প-র-সা; 'থসাঞা' প-র। 'চরণে ধরিয়া' ইত্যাদি পংক্তিম্বরের পরিবর্ণ্ডে প-র পৃথির পাঠ যথা,—

'মুখানি মোছাঞা পরায়ে দিকুর খসাঞা বাদ্ধয়ে কেশ।'

টাকা

৯—১২। "হার" ইত্যাদি। (আমি) হার নহি, (তথাপি) প্রিশ্বতম (আমাকে যেন) গলায় পরিধান করে; (অর্থাৎ আমার ভূজ-লতাদ্বর তাঁহার কঠে সংলগ্ন করাইয়া রাথে); আমি চলননহি, (তথাপি) সে আমাকে (যেন) গায় মাথে; (অর্থাৎ স্থান্ট্র আলিঙ্গনে আমার অলের সহিত অল মিশাইয়া রহে); (যেন দরিজ্ঞ) বহু চেষ্টাম্ব রক্ম পাইয়া উহাকে কোন স্থানে রাধিয়া শান্তি পাইতেছে না। ভূলনা করুন,—

"সই কি না সে বন্ধুর প্রেম। আ াথি পালটিতে নহে পরতীত যেন দরিজের হেম॥" —জ্ঞানদাস; প-ক-ত; ৩৭৮ সংখ্যক পদ।

अवात ।>

সইং কি না সে বন্ধুর° প্রেম। আঁখি পালটিতে নছে পরতীত। যেন দ্রিজের° ছেম॥ ঞু•॥

হিয়ায় হিয়ায় লাগিব লাগিয়াণ চন্দন না মাথে অঙ্গে। গায়ের ছায়া বায়ের দোসর সদাই ফিরু**য়ে সক্তে**^১ ॥ তিলে কত বেরিণ মুখানি হেরয়ে ১২ আঁচরে মোছায়ে ও ঘাম। কোরে থাকিতে কভ্ৰু দুর হেন মানয়ে ১৫ তেঞি সদাই লয়ে নাগ্ৰ্ণ ॥ জাগিতে ঘুয়াইতে ১৭ আন নাহি চিত্তে রসের পসার শ কাছে। জ্ঞানদাস কৰে এমন পিরিভি আর কি জগতে আছে ॥১৫।৬৭৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৫০ সংখ্যক ও প র পুৰির ১৩।৫৯ সংখ্যক পদ। 'শ্রীরাগ' ছলে 'তুড়ী' প-র। ২। 'দোই' ব, চ। ৩। 'শাহুর' প-র-সা। ৪। 'নহে পরতীত' হলে 'নহে পরতীতে' ক; 'নহে প্রতিত' ব, চ; 'নাহি भ-ता (। 'मातिरासद' क, थ, भ-ता ७। क, ধ, ছ, চ ও প-র পৃথিতে 'গ্রু' নাই। প-র পৃথিতে 'ভিলে কত বেরি' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি এই পদের প্রথমে সন্ধিবেশিত হইয়াছে। १। 'লাগিব লাগিচা' कुरल 'लांशियां विलया' भ-त्र। ।। 'ठन्सन मा भार्भ' ছলে 'চন্দন মাধ্যে' প-র-সা, 'চন্দন না পরে' প-র। ১। 'বায়ের দোদর' ফ্লে 'রাইছের দোদর' ক, খঃ 'রাষের দোসর' च। ১০। 'সদাই' ইত্যাদি স্থলে 'द्रांष्ठि मिन थांटक मह्म' भ-द्र-मा, भ-द्र। >>। ১২। 'মুখানি হেররে' ছলে 'বার' প-র-সা। 'मूथ (नहांत्रदा' क ; 'मूथ नित्रथरत' श-त-मा ; 'मूर्थ निव्रविद्या' প-द्र। ১৩। 'মৃছ्हे' প-द्र; 'মোছ্द्रে' क। ১৪। 'থাকিতে কত' হলে 'থাকি কত' প-র-সা; 'থাকিতে' চ। ১৫। 'দুর ছেন মানমে' ছলে 'ছুৱে ছেন মানৱে' ক ¸ 'ছুৱ ছেন মানে' চ, প-র-সা ¸

'দুরে হেন বাসরে' প র । ১৬। 'সদাই' ইন্ডাদি স্থলে 'সদাই লই নাম' ক; 'সদাই লইরে নাম' থ, ঘ; 'সদা লয় নাম' গ-র-সা; 'সদাই করি নাম' প-র । ১৭। 'ঘুমাত্যে' প-র । ১৮। 'পসরা' ক।

টাকা

৪—१। "হিয়ায়" ইত্যাদি। (আলিজন-কালে) বক্ষে বক্ষে সংলগ্ধ ছইবে বলিয়া, (প্রিয়তম) আজে চন্দন মাথেনা; (অর্পাৎ বক্ষে চন্দন মাথিলে আলিজন-কালে চন্দন মধ্যে থাকায় বক্ষের সহিত বক্ষ সংলগ্ধ ছইবে না মনে করিয়া বক্ষে চন্দনাম্বলেপন ধারণ করে না)। সে (আমার) গায়ের ছায়া ও (গায়ের) বাতাসের সহচর অর্থাৎ সাথী হইয়া সর্বাদা আমার সঙ্গে ভ্রমণ করে। তুলনা কর্মন,—

শ্ছাঝার ছারার লাগিব লাগিঝ ফিররে কভেক পাকে। আমার অঞ্চের বাতাস যে দিগে সে মুখে সে দিন থাকে।" —রারশেধর; প-ক-ত; ৬৭৯ সংখ্যক পদ।

ভধা রাগ ৷>

সই^২ পিরিতি পিয়া সে^০ জানে। যে দেখি যে শুনি চিতে অমুমানি निक्रनि पिरंग्र भन्नोर्ग ॥ध्या আগিলা বাটে মো° যদি সিনাড शिक्ति चारि (म मात्र¹। পরশ লাগিয়া মোর অকের জল বাহু পসারিয়া রয় ॥ नागिरवंश नागियाः वन्रात वन्न अक्ट त्र**क**रक³² (नग्र। মোর নামের আধ-১৩ আখর পাইলে ছরিব হইরা লের^{১৪} ॥

ছারার ছারার লাগিব লাগির।

ফিরুরে কতেক পাকে।

আমার তথ্য কাজের বাতাস যে দিগে গণ

সে মুখে সে দিন থাকে গণ।

মনের আকুতি বেকভ করিতে

কত না গণ সন্ধান জানে।

পায়ের সেবক রায় শেশর

কিছু বুঝে অনুমানে বংণ ॥ ১ ৮॥ ৮৭৯॥

পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৪ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩।৬১ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' ছলে 'হুহুই' প-র। ু। 'সোই' ব, চ। ৩। 'পিরিডি भिन्ना (म' ऋ एम 'भिन्ना (म भिन्निकि' भ-त-मा, भ-त्र। ৪। 'মু' প-র-সা। ৫। 'আগের' প-র। 🤛 'ঘাটেতে' প-র। ৭। 'পিছিলা' ইত্যাদি স্থতে 'পিছে ঘাটে পিয়া নায়' প-র। ৮। 'অক' প-র। ১। 'বাহু' ইত্যাদি স্থলে 'পাণারে সাতার বায়' প-র-সা ; 'বাহু পসংবিয়া ধায়' প-র । ১০ । 'লাগিব' প-র-সা, প-র। ১১। 'বলিয়া' প-র। ১২। 'একই द्रक्राक' ऋरम 'अक द्रक्राकरद्र' भ-द्र । ३०। 'मारमद्र व्याध कृतन 'नाम व्याधा अ-त । : 8। '(नव अ-त-ना, প-র। :৫। 'লাগিব লাগিয়া' স্থলে 'লাশিবে লাগিয়া' क, চ; 'লাগিবার লাগি' প-র। ১৬। 'আমার'হুলে এ মোর' প-র। ১৭। 'যে দিগে' স্থলে 'লাগিয়া' প-র। ১৮। 'লে মুথে' ইত্যাদি ऋरल 'रम मिर्ल (म मिन थारक' थ, भ-त्र-मा; 'रम দিন সে স্থাৰ থাকে' প-র। ১৯। 'কন্ত না' স্থাল 'কতেক' প-র। ২•। 'পারের সেবক' ইত্যাদি পংক্তিৰর প-র পুথিতে নাই; উহার জম্ভ একটু জায়গা থালি রাথা হইয়াছে।

गिका

>>-->৫। "ছারার" ইত্যাদি। (আবার) ছারা ও (তাহার) ছারা সংলগ্ন হটবে বলিরা, (সে) কড থেকার চেটার খুরে; (অর্থাৎ আবার আল-ম্পর্ল ত দুরের কথা, আমার ছারার সহিত ভারার ছারা মিশ্রিত হইলেও সে আনন্দে অধীর হয় এবং সেই জ্লন্ত ছারার সহিত ছারা মিশাইতে নানা কৌশল অবলম্বন করে); আমার অলসংলগ্ন বায়ু ধে দিক হইতে প্রবাহিত হয়, সে সেই দিবস সেই বায়ুর দিকে মুথ করিয়া থাকে; (অর্থাৎ আমার আলসংলগ্ন বায়ুর স্পর্শেও সে কিয়ৎ পরিমাণে আমার আলিসনের অ্থ অফ্তব করে বলিয়া সেই বায়ুকে সাদরে আলিসন করে)। তুলনা করুন,—

"আলিক্যাস্ত গুণবতি ময়া তে তুষারাদ্রিবা •াঃ পুর্বং স্পৃষ্টং যদি কিল ভবেদক্ষমেভিন্তবেতি।"

--- গেখদত।

"বস্কু মন্থতে নন্থ তে তত্মসঞ্চত-প্রন-চলিতমপি রেণুং " — গীতগোবিন্দ :

ভিরোধা ধানশী।১

কি পুছসি রে সথি কামুক নেহং।
এক জিউ বিহি সে গঢ়লং ভিন দেহং॥
কহিল যে কাহিনিং পুছে কত বেরি।
না জানি কি পায়ই মঝু মুথ হেরি॥
বিনি মঝু দরশ পরশেং নাহি জীব।
মো বিমু পিয়াসে পানি নাহি পীব॥
উর বিমু শেজ পরশ নাহি পাই ।
চীবহিং বিমু তামুল নাহি খাই॥
ম্মকং আলসে যদি পালটিয়ে গণাশ।
মান ভরে মাধবং উঠয়ে তরাস॥
আন সংগ্রেং কাহিনি না সহে পরাণ।
আন সন্তাহণে হররে গণানি।
কেই ক্বিরপ্তন শুন বর-নারি।
তোহারি পরশ্বনেসে গ্লুবধ মুরারি॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ১১৫৫ সংখ্যক ও भ-त পूषित ১৩:8> সংখ্যক পদ। २। '(लह' क. চ, প-র-সা; 'নেহা' প-র। ৩। 'গড়ল'প র-সা। ৪। 'দেহা' প-র: ৫। 'কহিলে' ক,চ। ৬। 'যে কাহিনি' স্থলে 'কাহিনি রে' পার। ৭। 'পুছম্নে' প্-র-সা: 'পুছুই' প্-র। ৮। 'না জানি' ইত্যাদি ত্তলে 'না জানি কত হুথ পার' প-র-সা; 'কত সুখ পাওই' প-র। ৯। 'বিনি মঝু' ইত্যাদি স্থলে 'মঝু বিনে দরশে পরশে' ক, খ, চ; 'মো বিনে দরশে প্রশেষ ; 'বিনি মঝু দরশনে প্রশে প-র। ১০: 'উর বিমু' ইত্যাদি স্থলে 'উরহি বিমু স্থি শেজ না পাই' প-র। 'উর বিহু' ইত্যাদি পংক্তি-ৰ্য প-র পুথিতে 'মানভয়ে মাধ্ব উঠয়ে ভরাস' পংক্তির পরে সন্নিবেশিত হইয়াছে। ১১। 'চিবহি' क. भ त-मा; 'होबहिं' हा ১२। 'यूरमद' क, খ,চ, প-র-সা; 'ঘুমে' च। ১৩। 'পাণটি হঙ' ১৪। 'নাগর' প-র-সা। প-র-সা। ১৬। 'আন' ইত্যাদি স্থলে 'আন मुखारिया इत्रदार का २१। 'श्राम-त्राम' ऋला 'প্রেমধনে' প-র।

निक1

১১—১২। "আন" ইত্যাদি। (আমার) অক্টের
সহিত কথোপকথন (তাঁহার) প্রাণে সহু হয় না;
(আমি) অক্টকে সন্তাষণ করিলে (তাঁহার) জ্ঞান
বিশুপ্ত হয়। শ্রীরাধা ও শ্রীক্তকের পরস্পরের নিকট
হল্লভিতা হেডু অন্ত কার্য্যে ব্যায়ত তিলমাত্র সময়ও
তাঁহারা অসহনীয় জ্ঞান করেন,—ইহাই 'আন সঞ্জে'
ইত্যাদি সোকের ভাবার্থ বটে; অক্সথা নায়কশিরোমণি শ্রীক্তকের কার্য্যে অধম-নায়কোচিত
সল্লেহ-ভনিত জ্বার বর্ণনা রসাভাসের পরিপোষক
হইয়া পড়ে শ্রীরূপ গোস্থামী উজ্জ্লনীলমণি
আছে এক্তকের সহিত ব্রজ-কুল্রীদিগের প্রেম-লীলার
শ্রেণ্ডতা প্রমাণিত করিতে বাইয়া ভরত মুনির নিয়লিখিত বাব্য উচ্ত করিয়াছেন; ব্রথা,—

"বহু বার্যতে ষতঃ ধলু

যত্ত প্রচন্ত্রকামুক্তক।

যাচ মিণো ছল্লিতা

মামলগত প্রমারতিঃ।"

সুহই।১

ञवला कि जानि शुप भरतः। রসিক-মুকুট-মণি নাগর হইয়া গো এত না আদর কেনে করে॥ধ্র॥ মোর অঙ্গ-সঙ্গ আশেও লালগা পাইয়াও বৈংসং রসে পত্ত বোলে জিলু জিলু। গণিয়া রাথিহ মনে নিজ অনুগত জনে এ তমু তোমারে দিলুঁ দিলুঁ॥ আউল্যাঞ্জা কৰ্মী-ভার্১১ বেশ করে বারে বার ২ বসন পরায় কু তুহলে ১৩। বসাঞা> স্থাপন উরে নূপুর পরায় খোরে চরণ পরশে কর-তলে^{১৫}॥ বঁধুয়া বলয়ে ধনি कालिया-कञ्चती थानि ও রাঙ্গা চরণ-তলে>৬ মাখি। সখীর সমাজে ভোর ঘোষণা রহুক মোর নিগৃড় মরম তার>৭ সাখী॥ বিদগধ শ্যাম-রায় বসনে করয়ে বায় আপনে যোগায় গুয়া-পাণ। **ल्याविन्ममारमत** वागी अन ताथा वित्नामिनिश्म তেএিঃ তুমি খ্যামের পরাণ ॥১৮॥৬৮১॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৬ সংখ্যক ও প-র পুথির ১০৫৮ সংখ্যক পদ। 'স্থাই' হলে 'বিভাষ' প-র। ২। 'অবলা' ইত্যাদি হলে 'সই অবলা কি গুণ জানি ধরে' প-র। ৩। 'রসে' থ, প-র। ৪। 'হইনা' প-র-সা। ৫। 'লাশসা' ইত্যাদি হলে 'আনক্ষসাগরে ভাসে' প-র। ৬। 'রসে পহঁ বোলে' ছলে 'বঁধুয়া বলে' ক, প-র-সা; 'হরিবে বোলরে' প-র। ৭। 'বৃঝি' প-র। ৮। 'নিক' ইত্যাদি ছলে 'সধীর মাঝারে তোরে' ঘ। ৯। 'গণিয়া' ইত্যাদি ছলে 'গণিয়া রাথিবে মনে' ক; 'গণিয়া লইবা মোরে' ঘ; 'গণিয়া রাথির মনে' চ; 'গণিয়া লইবা মোরে' ঘ; 'জাবিয়া লইছু মনে' প-র। ১০। 'এ তফু তোমারে' ছলে 'বল্বরে আপনা' প-র। ১১। 'আউলাঞা' ইত্যাদি ছলে 'আবাঞা কুল্বলভার' প-র। ১২। 'বার বার' প-র। ১৩। 'ক্ত বাব' প-র। ১৪। 'বসাইয়া' প-র-সা। ১৫। 'ক্র-তলে' ছলে 'শতবার' প-র। ১৬। 'চরণ-তলে' ছলে 'চরনে ভাল' থ, ছ। ১৭। 'চরম তাব' ছলে 'প্রেমের এই' প-র। ১৮। 'বিনদিনি' ঘ; 'ঠাকুরাণি' প-র।

টীকা

১২--১৫। "বঁধুয়া" ইত্যাদি। বন্ধু বলেন—
ফলরি ! কালো কস্তরীধানা (ধ্বনিগমা অর্থে—
আমার ক্লফ অল্থানা) (তোমার) ঐ আরক্তিম
চরণের ভলে বর্ষণ করিতে চাহি ! তোমার স্থীবর্গের মধ্যে (তোমার সেবক বলিয়া) আমার
খ্যাতি থাকুক; (আমার) গভীর মনোবাসনাই
আমার উক্তির প্রধাণ।

थाननी । ১

রাতি দিনেং চৌথে চৌথে বসিয়া সদাই দেখে ঘন ঘন মুখখানি মাজে।
উলটি পালটি চায় সোয়ান্ত নাহিক পারঃ
কত বাং আরতি হিয়ার মাঝে ॥
সই ও তুখ লাগিয়া আছে মনে ।
বাবে বিদ্যাধ-রায় বদিয়া জগতে গার
মোর আগে কিছুই না জানে ॥ধ্রু॥

জালিয়া উজ্জ্বল বাতি জাগিয়া পোহায়ণ রাতি
নিঁদ নাহি যায় পিয়া ঘূদেই।
ঘন ঘন করে কোলে খেণে করে উত্তরোলেই তিলে শতবার মুখ চুদে॥
খেণে বুকে খেণে পিঠে খেণে রাখে দিঠে দিঠে হিয়া হৈতে শেজে না ছোয়ায়ইই।
দরিদ্রেরইই ধন ছেন রাখিতেইই না পায় স্থানইই
অজে অজে সদাই ফিরায়॥
ধরিয়া ছুখানি হাতে কখন ধরয়েইই মাথে
থেণে ধরেইই হিয়ার উপরে।
খেণে পুল্কিত হয় খেণে আঁখি মুদি রয়
বলরাম কি কহিতে পারে॥১৯॥৬৮২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৭ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩৫৪ সংখ্যক পদ। 'ধানশী' ऋলে 'কামোদ করুণ' প-র। ২। 'রাত্যে দিনে' थ-त्र। ७। '(हारबा (हारबा' ह ; 'हरबा हरबा' প-র। ৪। 'দোয়াগু' ইত্যাদি স্থলে 'তভো স্বাস্ত নাহি পার' প-র। ে। 'না' প-র-সা। ৬। 'সই' ইত্যাদি ফলে 'সোই ও মুথ লাগিয়াছে মনে' চ; 'সই অপরূপ লাগিয়াছে মনে' পার। ৭। 'জগত' প-র-সা। ৮। 'জাগিয়া পোহার' ছলে 'बांगि পোহাইল' क, ब, च, छ। ৯। 'निंम' हेजाानि স্থলে 'ভাত না ধার নিক্ষ না যার ঘুমে' প-র। >। 'থেপে' ইত্যাদি স্থলে 'প্রাণধন কত বলে' श-द्रा >>। '(भाषाव' का :२। 'मातिएकव' ष, हा ५७। 'बृहेरङ' भ-द्रा ४८। 'बान' भ-द्रा >e। 'क्थन धत्रात' ऋता 'क्हे कत्र नत्र' भ-ता ३७। 'ब्रांस' भ-दा

पूढ़ी।

নয়ানে নয়ানে থাকে রাভি দিনেং দেহিতে দেখিতে খাল্ফেণ। চিবুক ধরিয়া মুখানি তুলিয়া (मिश्र) (मिश्र) कार्न्स ॥ সই কি ছার পরাণ ধরি। কি ভার আরভি কিবা সে পিরিভি জীতে কি পাসরিতে পারি ॥ধ্রু॰॥ নিশাস ছাড়িতে গুণে পরমাদে কাত্র হইয়া পুছে। বালাই লইয়া মো মরোঁ বলিয়া আপনা দিয়া কত নিছে॥ না জানি কি স্তুখে দাড়াঞা সমূৰে যোড় হাতে কিবা মাগে। ধে করয়ে চিতে কে যাবে প্রতীতে বলরাম চিতে >> জাগে ॥২০॥৬৮৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১১৫৪ ও প-র পূথির ১৩,৫৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রাত্যে দিনে' প-র। ৩। 'দেখিতে' ইত্যাদি স্থলে 'জাঝি পালটিতে সাধে' প-র। ৪। ক, খ, খ, চ পূথিতে 'শ্রু' নাই। ৫। 'পরমাদ' ঘ, চ, প-র। ৬। 'মো মর' ক; 'মু মরোঁ' ঘ। ৭। 'বালাং' ইত্যাদি স্থলে 'ডোমার বালাই লঞা মরি ঘাই' প-র। ৮। 'জাপনা' ইত্যাদি স্থলে 'বলিয়া আপনা' প-র। ৯। 'দাঙাইয়া' ধ; 'দাঙাঞা' প-র; 'দাঙাইয়া' প-র-সা। ১০। 'বে করমে' ইত্যাদি স্থলে 'তথন যে করে চিত, কে ঘাইবে পরতিত' প-র। ১০। 'বলরাম দাসের চিত্তে' প-র।

বিভাব ৷১

কিবা সে কহিব বিশ্ব পিরিভি

তুলনা দিব বে° কিসে।

সমূপে রাখিয়া মুখ নিরখয়ে

পরাণ অধিক বাসে ॥

পান সাজাইয়া আপনার• হাতে মোর মুখ ভবি ' দেয়। মোর মুখেদ দিয়া আদর করিয়া মুখে মুখ দিয়া । নেয়। মরোঁ মরোঁ ১ সই ১ বঁধুর বালাই লৈয়া। না জানি কেমনে আছুয়ে এখনে১২ মোরে কাছে না দেখিয়া ॥প্রুগ্ন। বদন মাজই করতলে ঘন वनन कत्रदश्र^{३8} पृत । পরশিতে অক সকলি সোঁপিলুঁ ধৈরজ পাওল> চুর>৬॥ নানা স্থপ দিয়া মরম বান্ধল বচন ঠেলিতে ১৭ নারি। করে অনুমতি যখন১৮ যেমতি১৯ তখনং তেমতি করি॥ কথাটি কহিছে ভোর সঞ্জে স্থি সোয়ান্ত ন পাঙ্ং হিয়া। মরি যাই হেন্^{২২} বলরাম কহে পিরিভিং বালাই লৈয়া ॥২১॥৬৮৪॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৫৯ সংখ্যক ও
প-র পুথির ১৩।৫৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কিবা'
ইত্যাদি হলে 'কি জানি কহিতে' প-র। ৩। 'বা'
প-র। ৪। 'নিরধিয়া' ক। ৫। এ হলে ঘ,
চ পুথিতে 'য়' চিক্ত আছে। ৬। 'আপন' থ, ঘ,
চ। ৭। 'মুখ ভরি' হলে 'মুখে তুলি' প-র।
৮। 'হাখে' ধ, প-র। ৯। 'মুখে মুখ দিয়া'
ছলে 'নিজ মুখ তুলি' প-র। ১০। 'মরো মরো'
ক; 'মোরু মোরু' খ। ১১। 'সই' শব্দ প-র
পুথিতে নাই। ১২। 'আছরে এখনে' হলে
'আছরে বছরা' ঘ; 'আছরে এখনে' চ; 'আছে
এউক্লেপ প-র-সা। ১৩। 'না জানি' ইত্যাদি হলে
'মা জানি কি করিছে শ্রাণ বছুরা' প-র। ক,

খ, প-র-সা ও প-র প্থিতে 'শু' নাই; **ए, চ পু**ণিতে পুনরায় 'শু' চিহ্ন আছে। ১৪। 'করই' প-র-সা। ১৫। 'হইল' প-র। ১৬। 'বুর' প-র-সা। ১৭। 'পেলিতে' প-র। ১৮। 'যথনে' ক, খ। ১৯। 'যেমন' প-র। ২০। 'তথনে' ক, খ; 'তথনি' প-র। ২১। 'পাএ'খ। ২২। 'মরি' ইত্যাদি স্থলে 'মরিয়া যাই' প-র। ২০। 'পিরিতির' খ, প-র-সা, প-র।

টীকা

২০—> ০। "ভোর" ইত্যাদি। হে স্থি! ভোর সঙ্গে (ছই একটি) কথা বলিতে ষাইয়াও প্রাণে শাস্তি পাইতেছিনা; অর্থাৎ আমার প্রাণ সর্বনা প্রিয়তমের চিন্তার এরপ বিভোর হইয়া আছে যে, উগাকে ক্ষণকালের জ্বন্ত বলপূর্বক অন্ত কোন প্রীতিকর কর্ত্তব্য কার্য্যে নিয়োজিত করিলেও যেন সে অন্তির হইয়া পড়ে! পদ-কর্ত্তা বলরাম বলিতেছেন,—(শ্রীরাধার) এই প্রকার (অপূর্বা) প্রেমের বালাই লইয়া মরিতে ইচ্ছা হয়! 'ভোর সঞ্জের বালাই লইয়া মরিতে ইচ্ছা হয়! 'ভোর সঞ্জের বালাই লইয়া মরিতে ইচ্ছা হয়! 'ভোর সঞ্জের বালাই লইয়া মরিতে ইচ্ছা হয়! 'ভোর তল্ময়তা ও সর্বা-কর্ম্ম-পরিত্যাগ স্থাচিত ইইয়াছে, প্রোমক ও ভক্তের তাহাই পরম বাঞ্চনীয়,— পদকর্তা বলরাম ইহাই ইলিতে বুঝাইয়াছেন। তুলনা কর্মন,—

"সর্ব্বধর্মান্ পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্রজ । অহং স্বাং সর্ব্বপাপেভ্যো মোক্ষরিষ্যামি মা গুচঃ॥" —গীতার শ্রীভগবদাক্য।

সিমুড়া ।১

নিজ পরসক স্থপনে না করে
আনে না পাতরে কাণ।
দিঠে দিঠে রহে নিমিখ না বংং
নিরখে মঝু বরান ॥

পিরিতি কিরিতি⁸ কি না॰ সে বন্ধুর কহিতে কহিব কী°। কত উঠে চিতে সে সব চরিতে পরাণ নিছনি দী⁹ ॥ পুলকে আকুল খেণে খেণে তমুদ তিলেক না ছাড়ে সঙ্গ। রুসের আলাপ হাসির মিশালে অমিয়া সিনায় অঙ্গ॥ এত করি মোরে কোরে আগোরয়ে রপ্রয়ে বেশ বিশেষ। ধনি ধনি সেহ জ্ঞানদাস কহে যাহে এ পিরিভি-লেশ ॥২২॥৬৮৫॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১১৬ সংখাক পদ।

২। 'রহে' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'কি না সে' ফ্লে
'সই কি না সে' ক, খ; 'সোই কি না সে' ঘ চ;
'কিবা সে' প-র-সা। ৪। 'পিরিভিকি রীভি'
ক, খ। ৫। 'কি' ক, খ, ঘ, প-র-সা। ৮। 'তবু'
ক, খ। ৭। 'দি' ক, খ, ঘ, প-র-সা। ৮। 'তবু'
প-র-সা। ৯। 'আগোরর' ক।

টা কা

> — ৪। "নিজ" ইত্যাদি। (প্রির্তম) সংপ্রেও
নিজের সম্বন্ধে কোন কথা বলেন না; অত্যের
কথারও কাণ দেন না; তিনি (সর্বাদা) আমার
পানে তাকাইরা থাকেন; (তাঁহার) (নেত্রে)
পলক চলে না; (ভর্) আমার মূব নিরীক্ষণ
করেন।

ভাষ্টরারি ৷১

কত নাস-বেশং করি পরায় পাটের শাড়ী সাধে সাধে সমূখে হাটায়। দেখিয়া হাটন মোর হইয়া আননেদ ভোর স্থুই বাহু প্রসামিয়া ধায় ।

সই তেঞি° সে হিয়ার মাঝে জাগে। কত কুলবতা যাবে হেরিয়া ঝুরিয়া মরে সেহা যোড হাথে মোর আগে ॥ এ। কাঁপে পত্ত থরহরি অভিরুদে গরগরি আরতি করিয়া কোলে করে। নিবিড^১ আ**লিজনে** ঘন ঘন চুম্বনে ডুবাইল রসের সাগরে॥ চন্দন মাখায় ১১ গায় দেয়^{১২} বদনের বায় নিজ করে তামুল খাওয়ায়। বিনি কাজে কত পুছে কত না মুখানি মোছে হেন বাসে দেখিতে হারায়॥ তুমি মোর ধন প্রাণ্ণ তোমা বিনে নাহি আন কহে পিয়া গদগদ ভাষে। যতেক পিরিতি তার জগতে কি আছে আর कि विलिद्य वनतीय प्रांटम ॥२०॥७৮७॥

পাঠান্তর

্বা হহাপ-র-সাপুথির ১১৬১ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৩০৫০ সংখ্যক পদ। 'ভাটিগ্নারি' ছলে 'ফুছই' প-র। ২। 'কভ নাস-বেশ' ছলে 'কভ না বেশ' ঘ; 'নাসবেশ' ক, ধ, প-র-সা। ৩। 'পরায়ে' থ, প-র-সা। ৪। 'যার' প-র। ৩। 'তেই' প-র-সা; 'বছু' প-র। ৩। 'ছেরিয়া' ইত্যাদি ছলে 'ধেয়ানে ভাবিয়া মোরে' প-র। । 'দেই' ক, থ, ঘ, চ। ৮। 'হাতে' ক, ধ, প-র-সা। ১০। 'ঘন ঘন' প-র। ১১। 'ঘাগায়' প-র-সা; 'মাধাইয়া' প-র। ১২। 'দেই' প-র। ১৩। 'বা সে' ঘ। ১৪। 'থাশ-ধন' ক; 'জাতিপ্রাণ' প-র। ১৫। 'কি বিসাংব' ছলে 'গুণ গার' প-র।

শিশুকাল হৈতে ৰন্ধুর সহিতে
পরাণে পরাণে নেছাং।
না জানি কি লাগিও কো বিহি গঢ়লঃ
ভিন ভিন করি দেহাং॥
সই কিবা সে পিরিতি তার।

बाननी ।>

আলস করিয়া নারি পাসরিতে । কি দিয়া শেধিব দধার । এদ।

আমার অভের বরণ লাগিয়া পীত বাস পরে শ্রাম।

প্রাণের অধিক করের মুরলী^{*} লইতে আমার নাম॥

আমার অক্সের বরণ সৌরভ যথন যে দিগে পায়।

বাক্ত পসারিয়া বাউল হইয়া ১০

তখন^{১১} সে দিগে ধায়॥
লাখ^{১২} কামিনী^{১৬} ভাবে রাতি দিনি^{১৪}
যে পদ সেবিতে চায়^{১৫}।

জ্ঞানদাস কতে শ আহীর-নাগরী ১৭ পিরিতে বান্ধিলা ১৮ তায় ১১ ॥২৪॥৬৮.৭॥

পাঠান্তর

১। ইক্ প-র-সা পুথির ১:৩২ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৪।০ সংখ্যক পদ। 'ধানশী' হুলে 'ফুছই সিন্ধুড়া' প-র। ২। 'লেছা' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'কি লাগি' হুলে 'কি থেনে' প-র। ৪। 'কো বিহি গঢ়ল' হুলে 'বিধাতা কেমনে' প-র। 'না জানি' ইজ্যাদি হুলে 'না জানি কো বিহি, কি লাগি গঢ়ল' প-র-সা। ৫। 'করি দেহা' হুলে 'কৈল দেহা' প-র-সা, প-র। ৩। 'নারে' ক, চ। ৭। 'পাল দিভে' ক, চ। ৮। 'ফুধিব' ক। ১। 'প্রাণের' ইজ্যাদি হুলে 'পরাণ পুত্রি, অধিক মুরলী' প-র। প-র পুথিতে 'পরাণ পুত্রি' ইজ্যাদি পংক্রিম্বর পুর্কে

সন্ধিবেশিত হইরাছে। ১০। 'বাউল হইরা' হংল 'বাউর হইরা' প-র সা; 'বাছ পদারিরা' ইত্যাদি হলে 'বাউর হইরা, বাছ পদারিরা' প-র-দা। ১১। 'লেশে 'প-র-দা। ১২। 'লাঝ যে' প-র-দা। ১৩। 'লিমে' প-র। ১৪। 'দিনে' ঝ। 'ভাবে রাতি দিনে' বাক্যটি প-র পুঝিতে নাই। ১৫। 'বে পদ' ইত্যাদি হলে 'ভাবিরা না পার বাবে' প-র-সা, প-র। ১৬। 'জ্ঞানদাস কহে' হলে 'কহে চণ্ডীদাদে' পর; 'কবিশেখরে কহে' সা-প, ২০১ সংখ্যক পুঝি। এভব্তির এই পুঝিতে সামান্ত সামান্ত অনেক পাঠ-ভেদ আছে, ভাহা এ হলে বাছল্য-ভরে উদ্ধৃত হইল না। ১৭। 'আহীর' হলে 'আভির' প-র। ১৮। 'বার্ক্ল' ক, চ; 'বার্ক্লি' প-র-সা। ১৯। 'ভারে' প-র।

সিকুড়া।>

পুছদি বে দখিং পিয়ার কথা কি পরাণ নিছনি দিয়ে। গইড়ের° কুটাগাছি শিরে ঠেকাইয়া আলাই বালাই তার নিয়েণ ॥ধ্রু॥ মুখানি মোছাঞা• হাত দিয়া দিয়া मोश निशा निशा गाँ। কতেক যতনে পাইয়া রতনে থুইতে ঠাঞি না' পায় ॥ কভ না আদরে इटमब वामदब निमशन देकल त्मादत । নিমিখ ভেজিলে िटन ना प्रिथित ভাসয়ে নয়ান-লোরে 🛭 সে হেন নাগর রসের সাগর গুপের নাহিক সামা। पान (गावि**टम**) কহল আনন্দে>

जूबि म काम महिमा?? ॥२०॥७৮৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পথির ১১৬০ সংখ্যক পদ।

২। 'পিয়ার' ইত্যাদি স্থলে ক, খ, च, চ পথির
পাঠ যথা—'এমন পিয়ার কথা কি পুছ্দি রে সথি।'

৩। 'নিছিয়া' খ, ঘ। ৪। 'গড়োর' ক; 'গড়ার'
প-র-সা। ৫। 'আলাই' ইত্যাদি পাঠ সকলগুলি
প্থিতে দৃষ্ট হইলেও উহা ছলোভক-দোহ-ছুট বিলয়া
সম্ভবত: 'আলাই বালাই নিয়ে' শুদ্ধ পাঠ হইবে।
৬। 'মুছাইয়া' প-র-সা। ৭। 'লেয়া লৈয়া' প-র-সা।
৮। 'নাহি' খ। ১। 'গোবিন্দ' প-র-সা।
৮। 'নাহি' খ। ১। 'গোবিন্দ' প-র-সা।
৮। 'আনন্দ' প-র-সা। ১১। গোবিন্দাসের এই
পদ্টির প্রথম ছুইটি শ্লোকের সহিত বিভাগতির
'এমন পিয়ার কথা কি পুছ্দি রে স্থি' ইত্যাদি
পদের প্রথম ছুইটি শ্লোক অভিন্ন; বিভাপতির উক্ত
পদ্টি পদক্রতক্ষর চতুর্থ শাথার সপ্রবিংশ প্রবে
উদ্ধুত হইয়াছে।

তথা রাপ ।১

যবে দেখা দেখি হয় ২ হেন তার মনে লয় ও
নয়ানে নয়ানে মোরে পিয়ে।
পিরিতি আরতি দেখি হেন মনে লয় স্থি
আমি তারে চাহিলে সে জিয়ে ॥
আহা মরি মরি মুঞি কি কবং আরতি।
কি দিয়া শোধিবং শ্রাম বঁধুর পিরিতি ॥গ্রা॥
রসিয়া ও নাগর বে নিভূই ছ্য়ারে সে
বিনা কাজে কত আইসে যায়।
ভ্যানদাস তবে কয় তোমার চিতে থবা লয়
ভাহা বা কহিবা ভূমি কায়॥২১॥৬৮৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৬৪ সংখ্যক পদ। ২। 'হরে' ক, খ, চ। ৩। 'ল্রে' ক, খ, চ। ৪। 'ক্রব' ক। ৫। 'ক্ষিব' ক, ঘ, চ। ৬। 'রসিক'ক। ৭। 'চরিভ'ক।

পান্ধার।১

কামুর পিরিভি কাহারে কহিব তুমি সে বেদনা সই। সে রস -ধাধসে ধস-ধস হিয়া তেঞি সে তোমারে কই॥ ও নব নাগর রদের সাগর আগর° সকল গুণে। সে সব চরিতি আদর পিরিভি युतिया भित्रव (भारत) ॥ পিরিতি-বোলে কত নাছলে সে কি না সে আকুতি সাধে। মধুর ভাষিয়া' মান নাশিয়া शिक्षा मत्रम वाँरभ्भ ॥ করিয়া ভরিয়া ১৩ **म भारतभ्य कारलए** क वहरन वहन हिया। বিধু বিড়ম্বিয়া মধুর চুন্বিয়া পরাণ লইল পিয়া॥ কাঁচু'য়া: • ফাঁড়িয়া সে রস লুটিয়া जुलिशं भर्भ जम् । ভরমে ১৬ কি কৈল ১৭ কমল-কোরক গুণেত ঘূণিভাগ তমু ॥ মুখের > মাধুরী ও দিঠি-চাতুরী লহরী কত বাং আর। युद्धि ना महरप्रश्र এ সুখ্য শুনিতে দাস গোবিন্দ ছার ॥২৭॥৬৯০॥

থাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১৬৫ ও ১৪১৯ সংখ্যক পদ। এই পদটি তৃতীর শাথার একাদশ পরবে ১৮৮ সংখ্যক পদরূপে পুনরার উদ্ভ হইরাছে; উহাতে পাঠের কিঞ্জিৎ ব্যতিক্রম স্টুই হর। ২। 'সে রস' হলে 'রসের' ক, খ, ঘ, চ (১৩৮ সংখ্যক পদ); 'সে সজ' প-র-সা (১৪১৯ সংখ্যক পদ)।

৩। 'আগোর' ক (১৯০ সংখ্যক পদ)। ৪। 'সে সব' ইত্যাদি পংক্তি হলে 'সে রস পিরিতি আদর আরিডি' ক, চ (১০৮ সংখ্যক পদ); 'সে স্ব পিরিতি আদর আরতি' ধ, ঘ (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। e। 'বুৰিষে' প-র-সা (১১৯৫ সংখ্যক পদ)। 🖜। 'মরিরে' ক, চ (৬৯০ সংখ্যক পদ)। ৭। "মনে" ক (৬৯০ সংখ্যক পদ), প-র-সা (১১৬৫ मः थाक भन)। ४। 'त्वांन' क, ४, च, ह (२०४ मः थाक श्रेम)। २। 'हन' क, ह, (२०४ সংখ্যক পদ)। ১০। 'ভাখিয়া' ক (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। ১১। 'পিরিতি-বোলে' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি ৬৯০ সংখ্যক পদে কোন পুথিতেই নাই; कि क २० , मःथाक भाग मकन भूषिए उरे मृष्टे रहा। ১২। 'মোর' ক। ১৩। 'ভাবিয়া' ক, চ (৬৯٠ সংখ্যক পদ)। ১৪। 'কাঁচুলী' ক (১০৮ সংখ্যক পদ)। ১৫। 'জুলিয়া' ব, চ; 'অলিমা' ক (৯৬৮ সংখ্যক পদ)। ১৬। 'ভরম' থ (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। ১৭। 'হৈল' ক (৯০৮ সংখ্যক পদ)। ১৮। 'শুণেত ঘূণিত' স্থলে 'গুণিতে ঘূণিত' ক, খ; 'গুণেতে ঘূর্ণিত' প-র-সা। ১৯। 'রদের' প-র-সা (৯৩৮ সংখ্যক পদ)। ২০। 'কত বা' ফ্লে 'বহুদ্নে' ক, ব, ব, চ (৯০৮ সংখ্যক পদ) 'বহিয়া' প-র-সা (>८) नःश्राक भवे)। २>। 'व स्थ' व्राम 'त्र म्नन' श-म-ना (১৪১৯ সংখ্যক शन)। २२। 'यूदि ना मद्रस्त 'ऋरण 'सूद्रिणा मद्रस्त्र' প-द्र-मा; (১১৬৫ সংখ্যক পদ); 'ঝুরিরা মকক' ক, খ, ঘ, চ; (৯৩৮ नरभाक भन); भ-त्र-मा (১৪১৯ नःश्वाक भन)।

जिका

৯—১২। "পিরিভি"- ইত্যাদি। সেই প্রিরতম প্রেমপূর্ণ বাক্যে কত প্রকার কৌশলে (তাঁহার) কোন্ অভিলাব না নিদ্ধ করেন? (তিনি) মধুর সম্ভাবণ করিরা, (আমার) মান বিদ্রিত করিরা, হাজের মোহিনী শক্তি বারা কিংবা অবলীলাক্রমে (আমার) প্রাণকে (প্রেমের বন্ধনে) আবদ্ধ করেন।

১৩-১৬। "লে ৰোৱে" ইভ্যাদি। নেই

প্ৰিৰ্ভম আমাকে ক্ৰোড়ে ব্সাইয়া, নিজের ক্ৰোড় পূর্ণ করিয়া অর্থাৎ আমাকে নিজের বাছ-পাখে पृष्कार अर्घा देशा विका, आमात मूर्य निरस्त पूर অর্পণ করিয়া, চক্রকে অসুকরণ করিয়া মধুর চুম্বন দিয়া, (ঐ সকল কাৰ্য্য দ্বারা) আমার প্রাণ (ভুলাইয়া) লইয়াছেন। (সংস্কৃতে 'বিড়ম্ব' ধাতুর প্রসিদ্ধ অর্থ 'অহকরণ করা'; যথা,—'পুগুরীকাত-পত্ৰতঃ বিকস্থকাশচামরঃ। ঋতুবিভ্রন্মাস্ন পুনঃ প্রাণ তচিছ্যুম্।"—র্ঘুবংশ ৪।১৭; "বিভ্ছামানা नवकन्तरेनरस्य विवाह-ध्याक्रन रनाहन-श्रीः।"--- त्रचूदःम, ১০৷২৯ ; হৃতরাং 'মধুর চুম্বিয়া' ইত্যাদি বাক্যের তাৎপর্য্য এইরূপ হইতে পারে যে, চকোর ধেমন চত্তেরে হ্রধাপান করে, সেইরূপ আমার অধর-হ্রধা পান করিয়া। অথবা যদি 'বিভ্রিয়া' শব্দের আধুনিক 'ক্লেশ দিয়া' অর্থ ধরা যায়, তাখা হইলে উক্ত বাক্যের তাৎপর্য্য এইরূপ হইবে যে, 'ठक्क ইহার নিকট কি ছার! এইরূপ আমার বদনের প্রশংদা বারা চজকে ক্লিষ্ট করিয়া, মধুর চুম্বন দিয়া' ইত্যাদি। প্রথমোক্ত অর্থই পদ-কর্তার অভিপ্রেত ব্লিয়া (वाथ इम्र।)

১৭— ৽ । "কাঁচুয়া" ইত্যাদি। সেই প্রিয়তম (সভোগোৎকঠার আতিশ্যা হেতু) আমার কাঁচুলি ছিল করিয়া, (কমল-কোরকবৎ জনবুগলের) রদ (এক অর্থে— মধু; অপর অর্থে— মুখ) পূঠন অর্থাৎ বলপুর্বাক আত্মসাৎ করিয়া মধু-পান-পুত্র প্রমরের স্থার (অপর অর্থে— মুছপের স্থার) মত্ত হইরা (আমার জন-বুগলকে) কমল-কোরক মনে করিয়া বাহা আচরণ করিলেন, (তাহা কি বলিব ?) তাহার খণে আমার কেহ খুণ-বিদ্ধ অর্থাৎ খুণ-বিদ্ধ বানা ইত্যাদির স্থান করিছে। ('খুণিত' শম্ম তমুর পক্ষে অপ্রথাকা বলিয়া এ হলে লক্ষণা হারা উহার অর্থ কর্মারিত' বুরাইনার উদ্বেশ্রেই 'খুণিত' শম্মের প্রোর্থান করার, এখানে উক্ত বাক্যার্থ-রূপ বন্ধ হারা 'বুণ-বিদ্ধ বংশাদির স্থার ক্রিরাধার তম্ব, প্রস্কুক্তের ওপে

ভক্তরিত হইরাছে'— এই উপনা অণকার ব্যঞ্জিত

হইরা, উত্তম-কাব্যন্থের প্রধান্তক হইরাছে। ইহা

লক্ষণা-মূলক 'অত্যন্ত-ভিরন্ধত-বাচ্য' ব্যক্তোর স্থানর
উদাহরণ। 'ঘূর্ণিত' পাঠ গ্রহণ করিলে, কিংবা
'ঘূর্ণিত' শক্তিকেই 'ঘূর্ণিত' শক্তের অপভ্রংশজাত
করনা করিলে, উহার 'ঘূর্ণিত' অর্থাৎ 'মহ্নির' অর্থ
করিলেও করা ঘাইতে পারে; কিন্তু তাহাতে অর্থের
কোন গুরুত্ব থাকে না। তুলনা করুন,—

"যত রূপ তত বেশ ভাবিতে পাঁজর শেষ"

—জ্ঞানদাদ; প-ক-ত; ২৯২ সংখ্যক পদ।

धानभी ।>

হাসিয়া হাসিয়া মুখ নিরখয়েং মধুর কথাটি কয়। ছায়ার সহিতে ছায়া মিশাইতে পথের নিকটে রয় 🛭 আলো সই সে জন মানুষ নয়। তাহার সঙ্গে যে৽ পিরিতি করয়ে কি জানি কি তার হয়॥ ঞ⁸॥ সহজে রসের আকর পে সে যে ভাবের অঙ্কুর তায়। বাতাসে বসন উড়িতে আপন व्यक्त ८ठेकारेश याग्र ॥ চমক চলনি **७** गीम-रमान्नि त्रमणी-मानम-८ठात । সেদ পিয়া-পিরিতি জ্ঞানদাস কৰে মরমে পশিল তোর ॥২৮॥৬৯১॥ পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপৃথির ১১৬৯ সংখ্যক পদ।

२। 'নিরখিরা' প-র-সা। ৩। 'সজে সে' প-র-সা।

৪। ক, ছ ও প-র সা পৃথিতে 'ঞ্জ' নাই। ৫।
'আকার' চ, প-র-সা। ৬। 'সেই' খ। ৭। 'ঠমক'

য়। ৮। 'সো' ক, খ, চ।

भव्यक्षती ।>

একলা যাইতে যমুনা_হ-খাটে।
পদ-চিক্ত মোর দেখিয়াও বাটে॥
প্রতি পদ-চিক্ত চুম্বয়ে কান।
তা দেখি আকুল বিকল প্রাণ॥
লোকেও দেখিলে কি বলিবেও মোরে।
নাসা পরশিয়া রহিলুঁ দূরে॥
হাসি হাসি পিয়া মিললও পাশ।
তা দেখি কাঁপয়ে গোবিন্দ দাস॥২৯॥৬৯২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৬৭ সংখ্যক ও প-র পুথির ১৪।২ সংখ্যক পদ। 'পঠনঞ্জী' ফ্লে 'ধানত্রী' প-র। ২। 'ঘুম্নার' ক। ৩। 'দেখিক' প-র। ৪। 'লোক' ক; 'লোকেতে' প-র। ৫। 'বিলিব' প-র। ৬। 'মিলিক' প-র-সা।

ভথা রাপ ৷১

দিনান দোপরং সময়েও জানি।
তপ্তঃ পথে পিয়া চালয়ে পানি॥
কি কহিব সধি পিয়ার কথা।
কহিতে হৃদয়ে লাগয়ে বেথা॥ এবং॥
তাসুল ভথিয়াও দাঁড়াইণ পথে।
কেন বেলে পিয়াৎ পাতয়ে হাথেও॥
লাজে হাম যদি মন্দিরে ঘাই।
পদ-চিহ্ন তলে লুঠয়েও পাইলে।
য়ুরি মুরি জমু ভ্রমরা বুলে॥
গোবিন্দদাসের জীবন হেন।
পিরিতি বিষম মানহ কেন॥৩০॥৬৯৩॥

১। ইংগপ-র-সাপুথির ১১৬৮ সংখ্যক পদ। ২। 'বোপোর' খ। ৩। 'সমর' খ,চ। ৪।

পাঠান্তর

'তপক' ক, খ, ঘ, চ। ৫। প-র-সা পুথিতে 'ক' নাই। ৬। 'ভরিয়া' চ; 'ভথি যদি' প-র-সা। ৭। 'দাড়াইয়ে' ঘ; 'দাড়াইয়া' চ। ৮। 'হেন' ইত্যাদি ছলে 'অলথিতে আসি' প-র-সা। ৯। 'হাতে' ক, চ, প-র-সা। ১০। 'লুট্রে' ক; 'লুটাই' প-র-সা।

গুণ কহিলে কি জানি হয়।
ক্ষিতে কহিতে অথির তন্তু
থৈরজ নাহিক রয়॥ ইত্যাদি*
পুনশ্চ প্রকারান্তরং।
অথ স্থপ্রবেশোদগারঃ।

औरगोत्रहऋः।

বিভাব 1>

করিব কি মৃঞি করিব কি।
গোপতং গোরাপের প্রেমে ঠেকিয়াছি ॥ এ৯ ॥
দীঘল দীঘল চাঁচর কেশ রসাল ছটি আঁথি।
রূপে গুণে প্রেমেণ ততু মাখা যেন দেখি ॥
আচন্দ্রতে আসিয়া ধরলণ মোর বুকণ।
স্থপনে দেখিলুঁ হাম গোরাচাঁদের মুখ ॥
বাপের কুলেরদ মৃত্তি কুলের বোহারী ॥
পতিব্রতা মৃঞি সেণ আছিলুঁ পতিরণ কোলে।
সকল ভাসিয়া ২ গেল গোরা-প্রেম-জলেণ ॥
কছরে নয়নানন্দ বুবিলাম ইছা ।।
কোন পর হারে এখন নিবারিবা ছিয়া ॥৩১॥৬৯৪॥

পাঠান্তর

১। हेहा अ-ब्र.मा भूभित ३) ५२ मश्श्रक ६ भ-व পুথির ১০। ১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'গুপত' প-র-সা 'গোপত' ইত্যাদি পংক্তির হলে প-র প্ৰির পা ৰথা---'গোরাঙ্গচান্দের ভাবে পড়িয়াছি।' ৩। ব থ. ঘ. চ পুথিতে '#' নাই। ৪। 'দিবল দিবল य, ह ; 'मोधन मोवल' इंछ्यांनि भः खिख्य भ-त श्रीधरः नाहै। ৫। '(श्रम' घा ७। 'स्त्रिन' ৭। 'আচ্মিতে' ইত্যাদি পংক্তিম্বর প-র পুথিতে ভণিতার পূর্বে সন্নিবেশিত হইশ্বছে। ৮। 'কুলে প-त्र। २। '(वाहाति' हः 'वस्त्राति' भ-त्र। ३० 'যে' প-র-সা। ১১। 'পতি' প-র-সা। 'ভাঙ্গিরা' ক, থ, প-র-সা। ১৩। 'গোরা-প্রেম জলে' হলে 'গো প্রেমজলে' ব; 'নরনের জলে প-র। ১৪। 'কহ নয়নানন্দ' ইত্যাদি ভণিতা পংক্তিদন্ন প-র পুথিতে নাই; উহার জন্ম এক ফাঁক আছে।

> বিভাষ ৷১ নবঘন-কিরণ-বরণ নব নাগর মন্দিরে আওল মোর। লোল নয়ন-কোণে মদন জাগায়লং মৃত্ব মৃত্ব হাসি বিভোর ॥ সজনি কি কহব রঙ্গনি-আনন্দ। স্বপন-বিলোকনত কিয়ে ভেল দর্শন मयू मत्न नागन धन ॥ अ ॥ উর পর কমল- পাণি অবলম্বনে দূরে করল আনোআন। নিবিছক বন্ধ-৮ বিমোচন নাগর कि कत्रण किष्ट्रे ना जान ॥ তৈখনে মদন কুত্ম-শর ছানল जन-जन जीवन भान। গোবিন্দ দাস কহ গৌরি-ভারাধ্য বিকল कि यादेख ভোরান ।৩২।১৯৫।

 ^{&#}x27;ঋণ কহিলে কি কানি হয়' ইত্যাদি পদটির
বাকি অংশ কোন প্রথিতেই উদ্ভ হয় নাই; য়ভয়াং
ভাহা এ ছলে মুক্তিভ কয়া গেল না।

পঠিক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১:৭০ সংখ্যক ও প-র
পুথির .৩,৪১ সংখ্যক পদ। 'বিভাষ' স্থলে 'করুণা'
প-র। ২। 'জাগাওল' ক; 'লাজাওল' প-র।
৩। 'সপন বিলোকনে' ঘ,চ, প-র। ৪। ঘ,চ
পুথিতে 'ঞ্চ' নাই। ৫। 'পাণি' প-র। ৬। 'কয়ল'
প-র। ৭। 'অবলশ্বন' প-র। ৮। 'নিবি নিবয়'
প-র। ৯। 'শবে' প-র। ১০। 'ভোমার' ঘ।
টীকা

৫— १। "স্ক্রি" ইত্যাদি। হে স্থি! বজ্নীর আনন্দ কি কহিব ? (তবে) উহা অপ্ন-দর্শন কিংবা (সাক্ষাৎ) দর্শন হইল—(সে বিষয়ে) আমার মনে ধাধা লাগিল!

দ—১১। "উর" ইতাদি। (কিন্ধ সেই
সন্দেহ অধিক ক্ষণ রহিল না;) নাগর (আমার)
বক্ষের উপর (তাঁধার) পদ্ম-হস্ত অর্পণ করিয়া অন্তভাব অর্থাৎ ইহা অপ্প-দর্শন, কি স্পরীরে মিণন—সেই
সন্দেহ বিদ্যিত করিলেন; নাগর কটির বসন গ্রন্থির
বিমোচন (এবং অক্সান্ত কার্য্য) কি করিলেন,
(আমি) কিছুই টের পাইলাম না অর্থাৎ রসাভিশব্যে
আমি অচেতন হইরা পড়িলাম। (ইহা ঘারা
ভারোধার প্রগল্ভা-নারিকা-ভাব ব্যক্ত হইতেছে;
বর্ধা-—শ্বরাধা গাঢ়তাক্রণ্যা সমস্তরভ্রেবিদা।
ভাবোক্সতা দরব্রীড়া প্রগল্ভাক্রান্তনারকা॥" ইতি
সাহিত্য-দর্শণ)।

ভৰা বাগ।১

পরাণ-বন্ধুকেই স্থপনে দেখিলুঁ
বিসয়া শিয়রই পাশে।
নাসার বেশর পরশ করিয়া
স্বিত মধুরই হাসে॥
পিয়ল বর্ণ বসন খানিতে
মুখানি আমার মোছেই।
শিথান হইতে মাণাটি বাহুতেই
রাধিয়া শুভল কাছেই॥

মুখে মুগ দিয়া সমান হইয়া বধ্য করল কোরে । চরণ পসারি১১ চরণ উপরে পরাণ পাইলুঁ বোলে॥ অঙ্গ-পরিমল গুগন্ধি চন্দ্ৰ কুকুম কন্তুরী পাবা : পরশ করিতে রস উপজিল জাগিয়াং হইলু হারাত ॥ চকিতে> বাঁটল কপোত পাগীরে১৪ বাজিলে যেমন ১৬ হয়। **ह छोलामभ्य कर्ह्य** এমতি হইলে আর কিফ পরান রয়ফ ॥৩৩॥৬৯৬॥

পাঠাশ্বর

্৷ ইহা প-র-সা পুণির ১ ৫৮ সংখ্যক ও প-র পুথিব ১ গ্রহ সংখ্যক পদ। ২। বিশ্ববে প-র-সা। ০।'নিউর' পর-দা। ৪। 'ঈষ্ঠ মধুর' স্থলে 'क्रेयम क्रेयम' প-র-সা; 'ইসত ইসত' প∹র। ৫। 'পিজ্ন' প-র-সা। চণ্ডাদাদের মুদ্রিত **সংস্করণ-**গুলিতে অশুদ্ধ 'পিঞ্চল' পাঠই গৃহাত হইমাছে। প্রীক্ষয়ের বসন পিঙ্গল-বর্ণ নঙ্গে; উহা পীত-বর্ণ। সংস্ত 'পীত' শব্দের অপতংশ হ তে 'পিয়ল' শব্দটি উৎপন্ন হটয়াছে। ৬। 'মৃছে' প-র-দা। ৭। 'শিথান' ইত্যাদি স্থলে প-র-দা পুথির পাঠ ষ্ণা— 'वालिम উপরে মাথাটি পুইয়া'। ৮। 'রাখিয়া' ইত্যাদি স্থলৈ 'ওডল আমার কাছে' প-র-দা। ৯। 'সমুপ' প-त-मा। ১०: 'तबुधा' हे छा मि च्राम 'आयादा न्देश (कांत्न' श-त्र-मा। ১)। 'ध्रम शर्मात्र' স্থলে 'পদারি চরণ' ক, ধ, প-র দ । 😜 । 'জাগিতে' প্-র-সা। ১৩। এ স্থলে প-র-সা পুথিতে 'ఈ' 'পক্ষেরে' প-র। ১৫। চিহ্ন আছে। ⇒৪: 'চক্ষেত্র' প-র। ১৬। 'সেমত' প-র। ১৭। 'ষ্ঠনাথ' পর। পদরত্বাকর গ্রন্থের স্কল্রিডা ক্মলাকাম্ভ এই প্রেসিদ্ধ পদটি যত্নাথ দাসের রচিত ৰলিয়া বিশেষ-ক্লপে জানিয়া শুনিয়াই ভণিতায় তাঁহার

নাম দিয়াছেন কিংবা অসতর্ক লিপিকর কর্তৃক ভূলে ষচ্নাপের নাম লিখিত হই য়াছে, তাহা বুঝা যায় না। আমরা প্রাচানতর পুণিগুলির প্রমাণ গ্রুসারে ইছা চণ্ডীদাদেব রচিত বলিয়াই বিবেচনা করি। ১৮। 'আর কি' স্থলে 'তবে কি' প-র। ১৯। 'কপোত পাৰীরে' ইন্ড্যাদি গংক্তি চারিটির পরিবর্ত্তে প-র-সা প্ৰিতে নিম্লিখিত পাঠ দৃষ্ট ১য় ; যথা,---

> "ठछोनारम (बारम শুন বিনোদিনি ভোৱে কি বলিব আর। মুক্তি অভাগিনী জন্ম-ছথিনী পুন কি দেখিব আর ।"

धाननी ।ऽ

বন্ধুর সক্ষেত্তে আজু যাইতে নারিলুঁ গো পাপ নন দ্নী হেল বাধা। **ছখে**তেং হাপন ঘবে শুভিয়া রহিলুঁগো িহি পূবাইল মন-সাধা ॥ সজনি সেও স্থথ কি কহিব **অনেক**। পিয়া আসি যেন মোরে নিকুঞ্জ-কানন ঘরে সপনে হটল পরতেক॥ নিবিড় মদন-জ্বে বুকে বুকে মুখে মুখে কত না আরতি সে না কথা। ননদী-জনিত চুখ জাগরণে যত ছিল घूमाहेल राम मत (तथा ।। কত না যতন করি বেশ বনাইলঙ গো এ রাস-বিলাস কৈল কত। এক মুখে তোহে হাম তাহা কি কহিব গো রভস কোতুক যত যত॥ হেন কালে নিঁদ টুটি জাগিয়া বসিলুঁ দেগা अथन नातिलूँ वृत्रिवादत्र। সেই হইতে প্রাণ মোব আনছান করে গো বিন্দু পরবোধে বাবে বাবে ॥৩৪॥৬৯৭॥ रेञानि अक्ष-तरमानभातः।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৭১ সংখ্যক পদ। ২। 'ছখিতে' ব, চ। ৩। 'সো' ক । ৪। 'হইকু'ক। ৫। 'গেল সব বেথা' স্থলে 'গেলি गव दवला' थ, श-ब-मा। ७। 'वनाहेनू' थ। ৭। সকলগুলি পুথিতেই 'রাস-বিলাস' পাঠ আছে।৮। 'বসিলাম' প-র-সা। ১। 'আনচান' क।

পুন*চ দিনান্তে প্রকারান্তরং যথা সখ্যাক্তিঃ।

তথা রাগ।১

হেদে লো ভোমাবে ভাল না দেখিয়ে আজি। কালা-মাণিকের বাভাদে এং বুঝি মজিল গোকুল-রাজি ॥ গ্রহণ ॥ ভাবে ভরল সকল অঙ্গ মুখে ত না সরে । আনেশে অবশ অথির চরণ भवरण ना यांग्र शा॥ তর তর রাঙ্গা**ং** নয়ন-যুগল সঘনে নিশ্বাগ ছাড়োও। পীন পয়োধর বসনে ঝাঁপিয়া অঞ্চল কেনে মোড়ো । পুছিলে মনের মরম না কহ মাথা তুলি নাহি চাও। যতুনাপ কহে এ দোষ বড়ই সঙ্গের সঙ্গী ভাঁড়াও ১ ॥ ৩৫ ॥৬৯৮॥

পাঠান্তর

১। ইকাপ-র-সাপুথির ১১৭২ সংখ্যক পদ। ২। 'দে' ক। ৩। ক, খ, চ পুথিতে 'ঞ্' নাই। । 'মুথে ত না সরে' ছলে 'মুথে না নিহরে' প-র-সা। ৫। 'রাভা' প-র-সা। ७। 'ছাড়' ক।

৭। 'বসনে ঝাঁপিয়া' ছলে 'ঝাপিয়া ঝাপহ' প-র-সা। ৮। 'মোড়' ক। ৯। 'পহিলে' প-র-সা। ১০। 'ভাড়াও' ক, ঝ, ব, প-র-সা।

পঠমঞ্জরী।১

শুন শুন আবে সধি আজুক রক্ষ।
রজনি গোঙায়লুং স্পুরুষ সক্ষ॥
মদন-মনোহর স্থান্দর বেশ।
মন্দিরে মোর কয়ল পরবেশ॥
পাণি পাণি গহি বসাওল পাশ।
শশি কুমুদিনি জমু উপজল হাস॥
কাঁচুলি ফাঁড়িং কুচ-কুম্ভ বিদার।
নিবি-বন্ধ ফুগইতে টুটল হার।
করে কর জোরি আলিক্ষন দেল।
হাদয়ক দারিদ তৈথনে গেল॥৩৬॥৬১৯॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাগুথির ১১৭৩ সংখ্যক পদ। ২। 'গোভায়ণ' ক, প-র-সা। ৩। 'ফারি' ₹,চ।

তথা রাগ।১

যব কাতু আওল মন্দির মাঝে।
আঁচরে বদন কাঁপায়লুং লাজে॥
করে কর বারি ফুয়ল চিরু মোর।
পিয়া বড় চিঠ কর রাখল আগোর ॥
কি কহব রে সখি কাতুক নেহা ।।
ও স্থাখে মুগধ মুগধ মঝু দেহ।॥
এম পরশানরস করল অপার।
কত পরধাপল পিরিভি-প্যার॥
চুত্মনে চুয়ল অধ্রক দাগ।
কি কহব সে সব সময় সোহাগ।

নিবিড়-আলিগনে বিগলিত স্বেদ। লুবধ মনোভব নহ° পরিচেছদ ; উপজল• আরতি কহন না যায়। জ্ঞানদাস কহ সাম কে>• পায়॥৩৭॥৭০০॥

পাঠান্তর

১। ইঠা প-র-সা পুথির ১১৭৪ সংখ্যক পদ।

২: 'ঝাপাডলু' ক, খ; 'ঝাপায়ল' প-র-সা। ৩।
'চীর' ক। ৪: 'চাট' খ, চ, প-র-সা; 'টাট' ক।

৫। 'লেহা' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'চুম্বল' ক,
প-র-সা। ৭। 'নংগ' প-র সা। ৮। 'পরিছেদ'
খ। ৯। 'উপঞ্জিল' ক, চ, প-র সা। ১০। 'সীম
কো' চ; 'স্মক' প-র-সা।

विवाश ।>

রুপথ খেরি লোচন ভিরপিত ভেল।
গুণ শুনি শ্রাবণ সফল ৈ গেল।
মনক মনোরথ মনমথ দেল।
চ দন-চাঁদেও চাঁত হবি নেলও।
এ স্থি এ স্থি আজুক রক।
শুধই স্থায় সিঁচিত ভেল অজ।
আরতি গুরুয়া পিরিভি নহ থোরও।
লাধ মুথে কহিতে না পাইয়েও ওর।
পরশা অবশ তরু বেশ নিরঝাস্পাও।
ঘামল সব তরু উপজল কম্প।
সরস সম্ভাধণ হাস গোনপাটা।
গোধুল অধ্রে অধ্রে লেইও বাঁটি।
করে কত ভাতি কয়ল কভ রক।
ভাবন চহে তুর্ত-তনু আধ-আবে অকা।

1100110011

পাঠান্তর

)। इका श-র-বা পুথির ১১৭৫ সংখ্যক প্রদা ২। কিপ' ক, খ, চ, প-র-সা। 'রূপ' পাঠে ছন্দোভদ ঘটে; স্তরাং ঘ পুথির 'রুপ' পাঠই
সমীচীন। ছন্দের অসুরোধে দীর্ঘ স্থরের পরিবর্জে
লঘু স্থরের প্রোগ পদাবলি-সাহিত্যে অনেক দেখা
যায়। ০। 'চন্দনে চান্দে' ঘ; 'চন্দন চন্দ' চ।
৪। 'চৌত হরি নেল' স্থলে 'চিত রহি গেল' ক,
চ, প-র-সা। ৫। 'স্থায়ে সিচত' চ; 'স্থায়ে
শিচত' ঘ; 'স্থায় সচিত' প-র-সা। ৬। 'ঘোর'
প-র-সা। ৭। 'পারিরে' ক, চ; 'পারল' প-র-সা।
৮। 'নিরুঝপ্প' ক। ৯। 'স্ভাবে' ঘ; 'সভাব
নহে' প-র-সা। ১০। 'লই' ক, চ।

বধা রাগ ৷১

পহিলহি পিরিতি নাহি পরকাশ।

দোতি শুতায়ল উনহিক পাশ॥

ননদিনি নিঁদহি আপন ঘরে ভোর।
তৈথনে লেই গেও রসবতি চোর॥

কি কহব রে সথি কেলি-বিলাস।

মদনমণিমন্দিরে কয়লু নিবাস॥

পহিলহি নিবিড় আলিজন দেল।
ছছঁ তমু পুলকিত দিগুণ ছৈ গেল॥

প্রেম কয়ল কত বিদগধ-রাজ।

দশনে দশনে ছছঁ ঘন ঘন বাজ॥
ছছঁ তমু লাগল ভালহি ভাল।

চন্দনে লাগল সিন্দুর-জাল॥

বেশ বসন ছছু আনহি ভেল।

ভ্যানদাস কহ পুন কিয়ে কেলং॥

1150011601

পাঠাশুর

১। এই পদটি ব পুথি ছাড়া মন্তান্ত পুৰিতে
নাই; অক্তান্ত পুথিতে 'সঞ্জনি কি কহব রাইক সোহাপি' ইডাদি ৭১৬ সংখ্যক পদের পরে প্রক:-রাস্তর র্গোদগারের গৌরচন্ত্র স্কর্ম বে—'আরে মোর গৌর কিশোর। ইড্যাদি' লিখিড হইরাছে, উহাকেই একটি পদ গণনা করিয়া ষষ্ঠ পল্লবের পদ-সংখ্যা পুরণ করিয়াছেন। স্ব পুথির উদ্ধৃত এই পদটি পদকলতক-এছের অস্ত কোনও স্থলে দৃষ্ট হয় না; কিন্তু 'আরে মোর গৌরকিশোর' পদটি ংয় শাধার ১৬শ পল্লবের প্রথমে সকল পুথিতেই উদ্ধৃত হইয়াছে; উহা ছাড়িয়া দিলে ১৬শ পল্লবের নির্দিষ্ট পদসংখ্যার পূরণ হয় না; এরূপ অবস্থায় পুর্বোক্ত 'আরে মোর' ইত্যাদি পংক্ষিটিকে একটি স্বতন্ত্র পদ ध्विष्ठा यष्ठे श्रह्मात्व श्रम्भाश्या श्रुवन ना कविष्ठा 'পহিলহি পিরিতি' ইত্যাদি অভিনৰ পদ বারা ষষ্ঠ পলবের সংখ্যা পুরণ করাই সক্ষত ও বৈষ্ণবদানের অভিপ্রেত বলিয়া বোধ হয়। 'আরে মোর গৌর কিশোর' ইত্যাদি পদটি ৬৪ পল্লবে সম্পূর্ণ উদ্ধৃত না হইয়া, ১৬শ পল্লবে উহা সম্পূৰ্ণ উদ্ভ হওয়াও আমাদিগের উক্ত অন্মানের পোষকতা করিতেছে। ২। ঘপুথিতে 'কেল' হুলে 'ভেল' পঠি আছে; উহাতে হীন-মিশন দোষ ঘটে বলিয়া অস্তু একখানা প্রাচান হস্তাল্থিত পুথির 'কেল' পাঠই সমাচীন বলিয়া গ্ৰহণ করা হইয়াছে।

जिका

৩—8। "ননদিনি" ইত্যাদি। ননদী নিজের

বরে নিজায় ভোর ছিল, দেই সময়ে রদিকা (দৃতী)

চোর অর্থাৎ প্রাক্তর-কামুক শ্রীক্ষণকে (আমার

শ্যায়) কইয়া গেল।

৯—: •। "প্রেম" ইত্যাদি। রসিক-শিরোমণি
(শ্রীকৃষ্ণ) কত (প্রকারে) প্রেম-কেলি করিলেন!
(দংশনের প্রতিদন্দিতায়) উভয়ের দক্তে দক্তে খন
ঘন বাজিতে লাগিল অর্থাৎ এক জনের দক্তের সহিত
অক্ত জনের দক্তের সংঘর্ষণে শক্ষ উৎপন্ন হইতে
লাগিল। তুলনা করুন,—

"তলিরিতরোহপি শিহ্বরাকা দশনান্ ঘটরেৎ তালু শিহ্বাং চেতি শিহ্বাবুছম্।"

"এতেন বলাবদনগ্ৰদনগ্ৰহণং দানং চ ব্যাখ্যাতম্।"
— বাৎস্তায়ন-ক্ষত কামস্ত্ৰ।

রসোদগারামুরাগঃ। প্রকারান্তরং। ভত্র গৌরচন্দ্রঃ।

यहरे ।)

কহ না উপায় সখি কহ না উপায়।
নিরবধি হৃদয়ে জাগয়ে গোরা রায় ॥
পাসরা না যায় গোরাচাঁদের পিরিতি।
কি করিবং বিধি সে করিল কুলবজী॥
কিবা সে মধুর বাণী অমিয়ার ধারা।
কিবা সে মোহন° রূপ সভী-মন-চোরা॥
যত্ত্বহে কি কভিব গোরা-গুণ যত।
বিকাইলুঁঁ গোরা-প্রেমে এ জনমের মত॥

পাঠান্তর

100 PH 081

)। ইছা প-র-সা পৃথির ১১৭৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কহিব' খ। ৩। 'মধুর' প-র সা। ৪। 'বিকাইলাম' প-র-সা।

সখ্যক্তিঃ।

श्रामणी ।>

ঘন রসময় তমু অস্তর গছীন ।
নিমগণ কডছ রমণি-মন-মীন ॥
শ্রাবণে মকর গিমে কম্মু বিরাজ ।
হিয় মাণা লখিমি মিলিত মণি-রাজ ॥
এ সখি শ্যাম-সিন্ধু করি চোর ।
কৈছে ধরলি কুচ-কনয়-কটোর ॥ এ ॥
বছু মুখ চাঁদ স্থাময় হাস ।
গরলহি ভরল নয়ন-পরকাশ ॥
অধর পঞ্জার দশন মণিমোতি ।
রোচন-তিলক মৈনাকক জোতি ॥

স্ববতরূ-কুস্থম-স্থান্ধ নিবাস^{১১}। চূড়া জলদ পিঞ্ ধনু-ভাস ॥ গভি গজরাজ চরণ অরবিন্দ। নখমণি-নীছনি^{১২} দাস গোবিন্দ ॥৪১॥৭০৪॥

পাঠান্তর

১! ইহাপর-সাপুথির ১১ এ৭ সংখ্যক ও প-র
পূথির ১ । ৭ সংখ্যক পদ। 'ধাননী' স্থলে 'সুহুই'
প-র। ২। 'গহিন' ঘ! ৩ । 'শ্রবন' ক, খ,
চ. প-র-সা, প-র। ৪ । 'গীম' ক, খ, চ, প-রসা; 'গিম' প-র। ৫ । 'ফ্রিরাজ' ক। 'শ্রবনে
ম কর' ইত্যাদি ক্লিটির পরিবর্জে সা-প ১৮৪ সংখ্যক
পূথির পঠি ধ্রা,—

'মকর হিলোপন শ্রবণক সীম।'
হিয় মাহা লখিমি কল্বর সীম॥'
৬। প-র ও সা-প ২০১ সংখ্যক পুথিতে 'এ
সখি' ইত্যাদি পংক্তিছর এই পদের প্রথমে সলিবেশিত
হইয়াছে । १। 'ধয়ল' খ। ১। 'কুচ-কনয়কটোর' স্থলে 'কুচ কয়ল কঠোর' প-র-সা। ৯। 'গরলছ' ব, চ। ১০। 'পৌঙার' খ; 'পোয়ার' সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ১১। 'বিলাদ' প-র। ২২। 'নিছনি' ক, খ, চ, প-র-সা, প-র।

ते का

১—১৪। সধী রসিকতা করিরা শ্রীরাধাকে বলিতেছেন—"ঘন-রসমর তহু" ইত্যাদি। বোধ-সৌকর্ব্যার্থে আগে "এ স্থি" ইত্যাদি ধ্ব কলিটির ব্যাধ্যা করা বাইতেছে,—হে স্থি। তুমি শ্রামান্তিকে (এক অর্থে শ্রামান্ত্রপ সিন্ধুকে; অপর অর্থে শ্রামান্তা, ছবিগাহতা প্রভৃতি গুণ হেতু সিন্ধু তুল্য শ্রীকৃষ্ণকে) চুরি করিরা কি প্রকারে (ভোমার) কুচ-রূপ স্থা-কটোরার ধারণ করিলে? (শ্রীরাধাবে অন্তান্ত ব্রমানাদিপের প্রভাব হইতে শ্রীকৃষ্ণকে সম্পূর্ণ বিচ্ছিন্ন করিখা, তাঁহাকে নিজের হান্ত্র-সংলগ্ধ করিরা রাথিরাছেন,—উহাই অভিশ্রোক্তি-অলঙ্কারের সাহাব্যে স্থী সোণার কটোরার সমৃদ্ধকে ভরিরা

রাথা বলিয়া বণিত করায়—এ স্থলে অভিশন্ত্রোক্তি-মূলক বিষম অলঙ্কার হইয়াছে। তুলনা করুন,—

°িবপুলেন সাগরশয়স্ত কৃক্ষিণা ভ্ৰনানি ৰক্ত পপিরে যুগক্ষে। মদবিভ্ৰমাসকলয়া পপে পুনঃ স পুরস্থিকতমধৈকয়া দৃশা॥"

— মাৰ, সাহিত্যদৰ্পণ-ধৃত।

ক্ৰিপ্তৰিতে মালা-ক্লপক অলকারের সাহায্যে স্থা এক্সফের সমুদ্রস্ক্রপতা প্রমাণিত क्तिर्ड्राह्म । "चन-त्रमम्ब" हेल्याहि । 🖺 क्रार्क्षत्र स्मृह খন-রদময় (ফ্রঞ্চ-পক্ষে —খনাভূত রদের ধারা গঠিত অর্থাৎ আনন্দময়-বিগ্রহ ; সমুদ্র-পক্ষে —মেঘ-জাত জলের মারা পরিপূর্ণ); (তাঁহার) অন্তর (ক্লফ্র-পক্ষে--হ্বর; সমুদ্র-পক্ষে--গর্ভ) গহান (ক্বফ পক্ষে--গভার অর্থাৎ ছবি গাস্থ; সমুদ্র-পক্ষে—গভার অর্থাৎ অগাধ); (উহাতে) কতই নারী-ছদয়-রূপ মৎস্ত নিমগ্ল হইয়া রহিয়াছে। (কোমল, লিগ্ন ও 'বুক ফাটেত মুধ ফোটে না' প্ৰবাদ হেতু ৰাক্য-শৃঞ্চ বলিয়া নারীর চিত্ত-বৃত্তিগুলির সম্বন্ধে মৎস্ত-কলনা नमीठीन रुरेबारक्)। ''खवरण मकव्र" रेखानि। (ममूर्फ (यमन, मिहेन्न) श्रीकृत्कात कर्ण व्यर्थार কর্ণের কুণ্ডলে মকর, গ্রাবার শব্দ অর্থাৎ শব্দের স্থার বেধাতার ও হানরে লক্ষার সহিত সংযুক্ত মণিশ্রেট (কৌস্তভ) বিরাশ করিতেছে। "বছু" ইত্যাদি। (বাঁহার) মুধ চন্দ্র ও হাজ কুধামর অর্থাৎ অমৃত-স্বরূপ (তাদাস্মো "নষট্" প্রভাষ) এবং (বাঁহার) নয়নের প্রকাশ অর্থাৎ দীপ্তি গরল থারা পরিপূর্ব। "व्यथत" हेड्यामि। (यांशांत्र) व्यथत अयान, पश्च মুক্তা-মাণ এবং গোরোচনা-তিলক (সমুদ্রগর্ভ-স্থিত) মৈনাকের কান্তিবশিষ্ট। "স্থরতক্র" ইত্যাদি। (বাঁহার) বাস-স্থণ (ঐ)-অব্দের সৌরভে) পারিকাত কুল্মের অগৰ্বিশিষ্ট; (বাঁহার) চুড়ারূপে আছিত কেশ-রাজি জলধর ও (উহার) ময়ুর-পুছে (ইজ-) বহুকের কান্তিযুক্ত। "গতি" ইত্যাদি। (বাহার) ঐরাবত-পতি ভুল্য, চরণ কম্প্রক্রণ,---

গোবিন্দদান সেই শ্রীক্তকের নথ-মণির নিছনি হইতে-ছেন। (লন্ধী, মণিশ্রেষ্ঠ কৌন্তভ, চন্দ্র, অমৃত, বিষ, এরাবত ও পারিন্ধাত তরু সমৃত্য-মন্থনে উদ্ভূত ও মৈনাক পর্বত ইল্রের ভরে সমৃত্রের গর্ভে বিলীন বলিরা পৌরাণিক আধ্যায়িকা আছে।)

७वा वान ।>

কুটিল কটাখ-বিশিখ ঘন বরিখনে

ছর করুং বিবিধ তরঙ্গ।

নিজ তমু ঔষধি সরস পরশ-দধিলেশে থকিত ককু অক্স॥

ফুন্দরিঃ পীতাম্বরি তুত্ঁ ভেলিং।

একলিং হিলোলিং শ্রাম-রস-সায়রুদ্দরকুঁ সার হরি লেলিং॥ ধ্রুঃ

ছর-অবগাহং অন্তর মাহা মন্থরং

মদন-কমঠ অবগাহিংং।

উচ-কুচ-মন্দর হার-ভুজগ-বর

মেলি মথন নিরবাহিংও॥

অধর স্থধা পিয়-প্রেম লছ্মি হিয়ংও

বাহিরে নখ পদ চন্দ।

প্রতি-তমু ভাবং রতন পরিপুরলংও

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৭৮ ও প-র পুথির ১৩৮ সংখ্যক পদ। ২। 'ছর করু' ছলে 'দুরে করি' ক, প-র-সা; 'ছর কর' ধ, সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ৩। 'করি' ক, সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ৩। 'করি' ক, খ, খ, চ, প-র-সা; 'এ ধনি' প-র; সা-প ১৮৪ সংখ্যক পুথির 'য়ুন্দরি' অথবা প-র পুথির 'এ ধনি' পাঠই সমীচীন; 'য়ুন্দরি ধনি' পাঠে ছন্দোভদ্দ ঘটে। ৫। 'ভেলি' (সা-প ২০১, ১৮৪ সংখ্যক পুথি) ছলে 'ভেল' ক, খ, খ,

চ্ প র-সা, প-র। ७। 'একদি' (সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি) হলে 'এক' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা, প-র। १। 'হিলোলি' (সা-প ১৮৪ সংখ্যক পুৰি) ন্ত্ৰে 'হিলোকে' ক. থ ইত্যাদি পুথি। ৮। 'দায়রে' क : 'मांगरत्र' थ । ३। 'र्लिन' (मा-भ २०১। ১৮৪ সংখ্যক পুথি) হলে 'লেল' ক. খ ইত্যাদি পুথি। ১০। 'ছর অবগাহি' প-র। ১১। 'মহামন্তর' ৰ; 'মাহা মন্থন' সা প ১৮৪ সংখ্যক পুৰি। ১২। 'অবগাহ' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা, প-র। ১৩। 'নিরবাহ' ক, ধ ইত্যাদি পূথি। ১৪। 'লখিমি হিয়' সা-প ২ • ১ সংখ্যক পুথি: 'ল্থিমা হয়' পর। ১৫। 'প্রতিতমু ভাব' স্থলে 'প্রীতি অমুভাব' ক: 'প্রতি অঙ্গ ভাব' প-র, সা-প ২•১৷১৮৪ সংখ্যক প্রথি। ১৬। 'পরিপুরিত' প-র, সা-প ১৮৪ সংখ্যক পুৰি; 'মৰি পুরল' সা-প ২০১ সংখ্যক পুৰি। টীকা

পুরাকালে দেব ও অসুরগণ >->61 পরস্পর বিবাদ হেতু সমুদ্র-মন্থনে অক্তকার্য্য হইলে, শ্রীকৃষ্ণ কৈটভী অর্থাৎ মোহিনীর ক্লপ ধারণ করিয়া श्रकोन्या (महे कार्यात्र निर्वाह करत्रन। এ श्रुरन শীরাধা বিপরীত সম্ভোগান্তে ভ্রম ও ব্যস্ততাবশত: ৺ফকের পীত বাদ পরিধান করিয়া স্থীদিগের নিকট উপস্থিত হইলে কোনও স্থী রসিক্তা ক্রিয়া পীতাম্বধারিণী শ্রীরাধাকে পুরাণোক্ত মোহিনীরূপে প্রতিপাদিত করিয়া তৎকর্ত্তক ক্লফ্ল-রস-সাগরের মন্থ্র-লীলা বৰিত করিয়াছেন। বোধ-সৌকর্য্যের জন্ত আগে 'অন্দরি' ইত্যাদি গ্রুব-কলিটির ব্যাথ্যা করা যাইতেছে। হে ফুক্সরি! ভূমি পীতাম্বরী (এক অর্থে—পীতবসন-ধারিণী ; অন্ত অর্থে—শ্রীকৃষ্ণ মণিণী) হইরাছ! (ভাই) ভূমি একাকিনী হইলেও শ্রাম-রস-সাগর (এক অর্থে--শ্রীক্বকের প্রেমরূপ শাগর ; অম্ব অর্থে—শ্রামল-কলপূর্ণ সমুদ্র) আন্দোলিত করিয়া (উহার) সকল সার পদার্থ হরণ করিয়া লইশ্বাছ। (শ্রীরাধা কি প্রকারে সমুদ্র-মন্থন করিলেন, উহি দেখাইবার বস বলিতেছেন—"কুটিল"

ইতাদি। শ্রীকৃষ্ণ পূর্ব অবতারে সেডু বন্ধনকালে তীক্ষ বাণ-বর্ধণে সাগরের তরঙ্গ নিবারিত ও সাগরকে নিশ্ল করিয়াছিলেন) তুমিও ঘন ঘন কুটিল কটাক্ষ-রূপ বাণ বর্ষণ ছারা (খ্রাম-রদ-সাগরের) নানা প্রকার তরক্ষ অর্থাৎ চাঞ্চল্য বিদ্রিত করিয়াছ এবং ভোমার নিজ দেহরপ মহৌষ্ধির রুস্বক্ত স্পর্শ-ক্রপ দধি-বিশু ধারা (উহাব) দেহ ভগিত করিয়াছ। (ছগ্ধকে স্তম্ভিত করার পক্ষে দ্ধিবিন্দুই মহৌষ্ধি বটে; এক্স ক্ষীরোদগর্ভে বাদ-কালে নিশ্চিতই দ্ধিবিন্দু-রূপ তাঁহার অঞ্চ-স্পর্শের মাহাত্মো ক্ষীরোদ-সাগবের হল স্তম্ভিত করিখাছিলেন ; প্রীরাধান্ত তাঁহাৰ অঙ্গ স্পৰ্শ হুখের আভিখ্য ছারা শ্রাম-রুদ-সাগরের নিশ্চলতা সম্পাদন করায় তাঁহার ক্লফক্লপতা থম'ণিও হইতেছে)। 'গুর-অবগাহ" ইত্যাদি। (খ্রাম-রদ সাগরের) তুরবগার (ক্লম্ব-পক্ষে---হর্কোধ্য; সাগর-পক্ষে-- হুর্গম) অন্তরের মধ্যে (ক্লম্বঃ-भटक - क्वरबंद भट्या; मार्गद भटक--गर्डद मट्या) স্থির-গতি অর্থাৎ অবিচলিত মদন রূপ কৃষ্ম অবগাহন করিয়াছে; (উহা ' ভোমার কুচ-রূপ মন্দর পর্বত ও হার-ক্রপ দর্প-রাজ অনপ্রের স্হিত মিলিত হুইয়া मञ्चन-कार्गा निकाह कदियादाः "वधव्र" हेलामि । তোমার অধর (সমুদ্র-মন্থনোত্বত) এধা ; প্রিয়তমের প্রেমই ভোমার ক্রন্ত্ত (সমুদ্র মন্থনোডুত) লক্ষ্মী ; (স্থ্যবের) বাহিরে (প্রিয়তমের প্রান্ত) নখ-চিক্ট (সমুদ-মন্থনোডুড) চক্ত; তোমার প্রতিঅঙ্গ (সমুদ-মন্থনোডুত রন্ধ-রাজিশ্বরূপ) পুলক, কম্প প্রভৃতি ভাব-রূপ রত্বাবলি পরিপূর্ণ করিয়াছে; (नवी-वानीय) त्राविनमात्र (এই अपूर्व नौना-मर्नात) खक श्रेषा प्रशितान ।

রাধানোহন ঠাকুর এই পণটির এই সংক্ষিপ্ত ব্যাখ্যা নিধিরাছেন,—"কুটিন কটাথ ইত্যাদিনা হৃদর-রসোদ্যাটনার্বং পৃচ্ছতি। পূর্বং বস্ত্রব্যত্যরং শ্বরস্ত্রী হে পীতাধ্বি ইত্যাক্তঃ। পক্ষে নারারণ-ক্ষপাদি। কুটিন কটাথ ইত্যক্ত নিবিড় শ্রবর্থেণ তর্জন্বীকরণং পুরাণাত্তরনিধিতকর্মভেদ্কতেন সাম্যন্। তথা নিজ তমু ইত্যান্তপি পুরাণাস্তরমতং। সম্বর মাহা অস্তরমধ্যে মছরঃ অতিস্থিতঃ মন্দরৈরচাল্যঃ মদন এব কমঠঃ।"

বিভাৰ ৷ ১

যো গিরি-গোচর বিশিনহিং সঞ্চরুত
কুশ-কটি করু অবগাহ।
চন্দ্রক চারু শটাল-গরিমন্ডিত
অরুণ-কুটিল দিঠিত চাহ॥
সুদ্রর ভালে কুছুঁ হরিণি-নয়ানিং।
সো চঞ্চল হরি হিয়া-পিঞ্জরুদ ভরি
কৈছনে ধয়লি দেয়ানিং॥ দ্রুংং॥
কত বর-দন্তিং করহি কর বারতংং
দশনহি গওং বিদারি।
বল কয়ে শরুর নধর-শিধরং সঞ্জেও
মোতিম বনহি বিথারি॥
অধর-সুধা দেই পুনহি জিয়ায়ইং
পুন নিরমদ করি তেজ।
গোবিন্দ্রদাস ভণ ভাক শয়নংদ পুন
অহনিশি কিশলয় শেজ॥৪০॥৭০২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১১৭৯ ও প-র পুথির ১০০৯ সংখ্যক পদ। 'বিভাষ' হুলে 'ইইরাগ' পর।
২। 'বিপিনছ' প-র-সা। ৩। 'সঞ্চর' সা-প ১৮৪
সংখ্যক পূথি। ৪। 'করু' ক। ৫। 'শটা'
(স্য-প ১৮৩ সংখ্যক পূথি) হুলে 'শঠা' ক, খ প্রভৃতি
পূথি। ৬। 'হিরেণ নরানি' সা-প ১৮১ সংখ্যক পূথি; 'হরিণ নরানি' সা-প ১৮১ সংখ্যক পূথি; 'হরিণ নরানি' সা-প ১৮৪
সংখ্যক পূথি। ৮। 'পঞ্চর' প-র-সা, প-র। ৯। 'সরানী' সা-প ১৮০ সংখ্যক পূথি; 'ধরানি' সা-প ১৮৪
সংখ্যক পূথি। ১০। ক, খ, চ পুথিতে 'ঞ' চিক্ল্

'বারুই' সা-প ১৮ গ্রং ১ সং পুথি। ১৩। 'ধ্রু' প-র-সা। ১৪। 'বল করে' স্থলে 'বল করে' প-র; 'বল কএ' সা-প ১৮৪ সং পুথি। ১৫। 'নিকর' ক; 'সিধর' প-র। ১৬। 'ধরি' সা-প ১৮ গ্রং সং পুথি। ১৭। 'জিয়ার্বত' প-র-সা। ১৮। 'স্বন' সা-প ২০১ সং পুথি।

ोक1

১-- १। "যো গিরি-গোচর-" ইত্যাদি। (স্থী পুনরায় প্রাধাকে রসিকতার সহিত বলিতেছেন) ক্লশ-কটি-বিশিষ্ট যে (প্রাণী) পর্বত, গোচারণ-ভূমি ও কাননে (শিকার প্রত্সন্ধান করিয়া সঞ্জ करत. - हजु क हांक (कुछ-शत्क - हजुक बांबा हांक: সিংহ পক্ষে--চক্তকের ক্সাধ চাক ; চক্তক --ময়ুরপুচ্ছের চন্দ্রাকৃতি চিহ্ন) শটা দারা (কৃষ্ণ-পক্ষে--কৃষ্ণিং কেশ বারা, সিংহ পক্ষে--কেসর বারা) শোভিয (ষে) আরক্তিম বক্র দৃষ্টিতে নিরীক্ষণ করে,—বে সুন্রি ৷ তুমি (অপুর্বা) হরিণ-নয়ন: (এক অংখ मुश-नश्रमा; व्यक्त व्यर्थ हिंदगी ; तरहे; (नकुरा) স্থ্যত্তা ভূমি সেই চঞ্ল হরিকে (এক অর্থে-কুষ্ণকে; অপর অর্থে—সিংহকে) কি প্রকারে ভ্ৰদ্য-পিশ্ৰৱে আৰম্ভ করিয়া রাখিলে ? এ ছলে 'যে গিরি-গোচর' ইত্যাদি বিশেষণ বাক্যের অর্থ ঘার শ্ৰীকৃষ্ণ ও সিংহ উভয়েবই প্ৰতীতি হওগায় পৰ্থ-শ্লেষ এবং জ্ব-কলিতে 'হরিপি-নয়ানি' ও 'হরি'— শ্লিষ্ট শব্দবয়ের প্রায়োগ বারা শব্দ-শ্লেষ ও সেই উভয়বিধ শ্লেষ অলকারের দারা অন্থ্রাণিত বিষ্ণ व्यवकात्र विवादह ।)

৮—>>। "কত ব্রদ্ঝি" ইত্যাদি। কত ব্রদ্ঝী। ক্ষণ পক্ষে—হদ্দানা নাহিকা; সিংহ-পক্ষে—শ্রেষ্ঠ গজ্ঞ) কর দারা (কৃষ্ণ-পক্ষে—হন্ত দারা; সিংহ-পক্ষে শুশু দারা) হন্ত নিবারিত করিলেও (সেই নিবারণ তৃত্য করিয়া) দন্ত দারা (বর্ন দন্তীর) গশু বিদারণ করিয়াছে এবং বলপুর্বাক্ত জিল্প নথাগ্র হন্তে মুক্তা-রাজি বন-ভূমিতে বিকীর্ণ করিয়াছে। (কৃষ্ণ-পক্ষে শ্রদ্ধানা নাধিকার ছিল্ল-

মাণার মুক্তারাজি এবং সিংহ-পক্ষে গজের বিদারিত কুম্ব হইতে পতিত মুক্তারাজি বুরিতে হইবে)।

১২—১৫। "অধ্ব-মুধ্য" ইত্যাদি। সেই ছবি— প্রীকৃষ্ণ ও সিংছ— তোমার নিকট প্রান্ধিত হইরা নিমীলত-নেত্র ও অচেতন হইরাছিল; কিন্তু (তোমার অপূর্ব্ধ মহিমা) তুমি সেই মৃত-প্রার্থ ছবিকে অধ্বামৃত-দানে পুনবার সঞ্জীবিত করিরা, (তাহাকে প্রতিহিংসা-প্রবণ দেখিয়া, তাহার উপযুক্ত দান্তি স্বরূপ) তাহাকে পুনরায় (সম্পূর্ণ) নিস্তেজ করিয়া ছাড়িয়া দিয়াছ! (স্থী-স্থানীয়) গোবিন্দদাস বলিতেছেন—(সেই জ্লুই) সেই হরির এখন দিবারাত্র প্লব-শ্বান হইয়াছে! (প্রীকৃষ্ণ দিবারাত্র মূশীতল প্লব-শ্বান শ্রান হইয়া বিবহ-ক্লিত অক্স-তাপের শান্তি করেন এবং রণ-ক্লিষ্ট সিংছ স্থকোমল প্লব-শ্বনে শ্বান হইয়া রণ-ক্লান্তি নিবারণ করে—উভয় অর্থই ব্যক্তিত হইতেছে)।

নিজেকিঃ।

কৌ রাগিণী ৷১

বেপুক ফুকেং বৃকেও মদনানল
কুল-ইন্ধন মাহা জারি।
দরশা পাণি ছকু পরশো সোহাগল
শ্রাম-জল জোরণ বারি ॥
সজনী কামু সে ছৈল সোণারও।
মকু মন-কাঞ্চন আপন প্রেম-মণি
কোরি পিন্ধায়ল হার ॥ গ্রা
মব অমুরাগ-রক্তে পুন রঞ্জল
মূল না জানই কেই।
শুরুজন-নয়ন-চৌর পরে ছাপিয়েদ
প্রাণ লাখা সম গ্রাই ॥

যো রস-আগরি বিদগধ নাগরি
হেরতক্ত তাকর সাধ।
গোবিন্দদাস কহই খানে হেরিলে

জানি ভোয়ে ২০ প্রমাদ ॥৪৪॥৭০৭॥

পাঠা ছব

১। ইছাপ র-সা পুথিব ১১৮০ ও প-ব পুথির ১৩।০ সংখ্যক পদ। 'কৌ রাগিণী' স্থলে 'ধানত্রী' প-র। ২। 'ফুকে' (ধ পুণি) খলে অন্তান্ত পুণিতে 'ফুকে' গাঠ **আছে। ৩**। 'বৃকে' . ঘ পথি) স্থ**ল** ব্কে' চ; 'বুক' ক, থ, প-র-সা, প-র; 'বুকে' সা-প ১৮৪ সং পুথি। ৪। 'দরশ পাণি' ইত্যাদি স্থলে দিরশন পাণি' ইত্যাদি চ ; 'প্রশ গাণি' ইত্যাদি প-র সা। । । 'সোধাগন' च; 'সোহাগছ' দা-প ১৮৪ নং পুথি। ৬। 'ক্লোরল' ক, খ, ঘ; 'ক্লোবন' প-র-সা। १। 'সন্ধনি' ইত্যাদি পংক্তিজন্ন প-র পুৰিতে সৰ্ব্বাত্তো সন্ধিবেশিত চইন্নাছে। ৮। 'গুৰু-জন-নয়ন' ইত্যাদি স্থলে 'গুরুজন-নয়ন চোর ভয়ে ছাপিষে' প-র; 'শুরুজন চৌর নয়ন ভয়ে ছাপিয়ে' সা-প ২০১ সং পৃথি; 'শুরুজন চৌর নরন পরে চাপিয়ে' সা-প ১৮৪ সং পুথি। ১। 'প্ৰাণ লাখ' ऋरम 'প্রাণনাণ' क, ४, ६, প-র-সা। ১•। 'कहरे' ইত্যাদি স্থলে 'কছত আন ছেরণে' সা-প ২০১ সং পুथि; 'कर कान कन एर्ग्निएन' भ-त । ১১। 'दर्गात्र' (সা-প ১৮৪।২০১ সং পুৰি) স্থলে 'হোয়ত'। টাকা

১—१। "বেণুক ফুকে" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা
শ্রীক্সফের প্রেম-লালাকে ধৃর্ত অর্ণকারের মনিহারগঠনরূপে বর্ণিত করিতেছেন) বেণুর ক্ষয়-পক্ষে—
বংলীর; অর্ণকার-পক্ষে—বাঁশের চোলের) ফুৎকারে
জ্বনরে কুল-ইন্ধনের (এক অর্থে—কুলরপ আলানি
কাঠের; অপর অর্থে—অর্ণকারের ব্যবহার্য্য
কুলগাছের কাঠের) মধ্যে মধনানল প্রেম্বানত
করিল; দৃষ্টি ও হল্প উভরের স্পর্শ হারা নোহাগকুল্প (এক অর্থে—আদ্রহুক্ত; অভ অর্থে—অর্ণ

গালাইবার উপাদান 'সোহাগা' নামক পদার্থ ছারা সংযুক্ত) করিল; (সভ্যোগ-ক্লান্তি-জনিত) ঘর্মাজল সংযোগ-বারি অর্থাৎ পাইনের জ্ল (হটল)।
হে স্থি! সেই শ্রীকৃষ্ণ ধূর্ম অর্থাকার; সে আমার মন-রূপ অর্থাকে (অপ্রত্ন করিয়া) নিজের প্রেমরূপ মণির স্থিত সংযুক্ত করিয়া আমাকে হার পরিধান করাইল!

৮—১১। 'নব' ইত্যাদি। (উছাকে) আবাব সে অহ্বাগ-রূপ বং দিয়া রঞ্জিত কবিল; (ঐ রঞ্জিত জিনিষ্ট দেখিয়া) কেগ (প্রকৃত) মূল্য বুনিতে পারে না; (আমি আমার সেই রূপান্তরিত) হাদয়টিকে গুরুজনের নরন-রূপ চোবের নিক্ট (দ্বিজ্ঞের) শক্ষ মুধার ভাষ গোপন করিধা লুকাইয়া রাখিতেছি।

১০-১৫। "যো" ইতাদি। রসিকা যে নামিকা ব্লস-পরিপূর্ণা, (প্রীক্লফকে) দেখিতে যেন তাহারত বাহা হয়; (ভ্রুক ভোগী) গোবিন্দদাস কহিতে ছেন—(তাঁহাকে) অত্যে দেখিলে প্রমান তইবে, ইহা বেশ জানিতেছি!

শ্ৰীগান্ধার 1>

কাজর ভমরং তিমির রুফু তমু-রুচি
নিবসই কুঞ্জ-কুটীর।
বাঁশি-নিশাসে মধুর বিষণ উগরই
গতি অতি কুটিল স্থান ॥
সজনী কামু সে বরজ-ভুজজ।
সো মঝু হুদয়-চন্দন-রুহে লাগল
ভাগল ধরম-বিহঙ্গ ॥ প্রু ॥
লোচন-কোণে পড়ত যব নাগরি
রহই না পারই থারদ।
কুঞ্জিত অরুণ অধরে ধরি পীবইণ
কুলবতি-বরত-সমীর ॥

এক অপরপ নয়ন-বিষ তাকর
মেটয়ে দশনক দংশে।
ও বিষ-ঔষধ বিষ অবধারল>>
গোবিন্দদাস প্রশংসে॥ ৪৫॥৭০৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৮১ ও প-র পুথির ১৭৭ সংখ্যক পদ। 'শ্রীগান্ধার' স্থলে 'শ্রীরাগ' প-র। 'লমর' ধ. খ. চ: > | প-র। ৩। 'নিমানে' প-র-মা, প-র। 'রস' প-র। ৫। 'সজ্জনি' ক, চ, প-র-সা, প-ব। ১। 'ভাঙ্গল' ঘ। ৭। 'পড়ল' সা-প ২০১ সং পুথি। ৮। 'শ্বির' পর; 'থির' ক, প্রসা। ৯। 'পিবই' ক, পর-সা, প-র। ১०। 'भिष्ठें अं-द्र-माः 'भिष्ठेत्थ्र' श्र-व। ১১। 'अ বিষ'-ইভাদি (প-র-সা পুথি) স্থলে 'বিষ ঔষধ বিষ বিষ অবধারল' থ, ঘ, চ। 'বিষ ঔষধ এক ছছ' অবধারণ' পাঠান্তর --চ; 'বিষ ঔষধ বিষ অবধারল' ক, প-র।

টাকা

এ—৭। "সজনী" ইত্যাদি। ছে স্থি! সেই

নিক্ষা ব্রজের ভূজক (এক অর্থে—সর্প; অপর
অর্থে—লপ্ট); সে আমার হৃদয়-রূপ চন্দনবৃক্ষে
লগ্ন হইল; (তাহাতে) ধর্ম-রূপ বিহল প্লায়ন
করিল। (সাজ্ব-রূপক অল্কার)।

১২ -১৫। "এক অপক্সপ" ইত্যাদি। (কিন্তু)
একটি আশ্চর্যা --তাহার দৃষ্টি-জনিত বিধ তাহার
দস্তের দংশনে বিনষ্ট হয়; ঐ দৃষ্টি)-বিষের ঔষধ
(দস্তাঘাতজ্ঞনিত) বিধ (বিধাতা) বিধান করিয়াছেন;
গোবিন্দদাস (বিধাতার এই বিধান তথা জীরাধার
বৈদধ্যের) প্রশংসা করিতেছেন!

थाननी ।>

পহিলহি ক্লং তুল সম উয়লও

যাকর বেণুক ফুকে।

ধরম-করম-মতি ভরম সরিখা ভেল

নারি গারি সম দুখে ॥

সক্ষনী কিয়ে হাম করব উপায়।

হেরইতে সো কামু আপনি আপন তমু

কাহে করত মন্তরায় ॥ ধ্রু ॥

নয়নহি নিন্দেউ নিন্দ নাহি হেরইও

হানল ফুলশর খাণ।

যতা পরমাদ কহল না পারিয়েও

গোবিন্দদাস পরমাণ ও ॥৪৬॥৭০৯॥

পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১৮২ ও প-র পৃথির ১৩।৭১ সংখ্যক পদ। ১। 'কুল' ক, চ, প-র-সা, প-র। ৩। 'উয়ল' ক, চ, প-র-সা, পর। ৪। 'সরিখ' (প-র পুথি) স্থলে 'সরিক' সা-প ১৮০ সং পুথি; 'সদৃশ' ক, খ, খ, চ, প-র-সা। ৫। 'কি' ক, চ। ৬। 'আপনা' ক, চ। ৭। 'নয়নহি' ইত্যাদি স্থলে 'নয়নহি নিন্দ উ নয়নে না হেরহ' ক। ৮। 'কত' প-র। ১। 'পারহ' প-র-সা, প-র। ১০। 'ভালে জান' সা-প ১৮০ সং পুথি।

টাকা

> — ৪। 'পিছিলহি'' ইত্যাদি। বাঁহার বংশীর ক্লারে প্রথমেই কুল তুলার স্থায় উড়িয়া গেল,—
ধর্ম-কর্ম ভ্রমের স্থায় ও ছংখ হেতু 'নারী' শক্ষটি
গালির তুল্য প্রতাত) হইল। (সংস্কৃত 'সদৃক্ষ' শক্ষ
ইইতে জাত 'সরিখ' শক্ষের অর্থ—সদৃশ, তুল্য)।

ে- १। "সজনী" ইত্যাদি। হে স্থি। আমি কি উপায় করিব । সেই ক্লফকে দেখিবার স্ময়ে নিক্রের দেহ কি জন্ম নিক্রের প্রতিবন্ধকতা করে । তুলনা কক্ষন,—

> "দরশনে লোর নয়নরূপ ঝাঁপি। করইতে কোর **ছর্ছ ভূক কাঁ**পি॥

হর কর এ সথি সো পরসঙ্গ।

নামহিঁ যাক অবশ করু অঙ্গ। গ্রুণ।

চেতন না রহ চ্ছান বেরি।

কো জানে কৈছে রভস-রস-কেলি।।" ইত্যাদি

গোবিন্দদাস; প-ক-ত, ১৫৭ পৃষ্ঠা।

৮--১১। "নয়নহি" ইত্যাদি। নয়নকে
(কুছা-রূপ দেখার জক্তা) নিন্দা করি,—(সেই
অভিমানে আমার নয়ন) নিজাকেও দেখে না
অর্থাৎ নিজাকে পরিত্যাগ করিতাছে; (পুলা-লর
কন্দর্পকে নিন্দা করি—সেই আজোলে) পুলাশর্মারী (পুলা রূপ) বাগ আবাত করিতেছে;

যত প্রমাদ (ঘটিয়াছে) বলিতে পারি না;—

(স্থান্টানীয়) গোবিন্দদাস (উহার) প্রমাণ।

20213

হৃদয়-মন্দিরে মোর কামু ঘুমাওল
প্রেম-প্রহরি রক্ত জাগি।
গুরুজন-গৌরব চৌর-স্কৃশ্ব জেল
দূরহি ছুরে রক্ত জাগি॥
সজনী এত দিনে ভাঙ্গল ধন্দেও।
কামু অনুরাগ-ুজঙ্গে গরাশল
কুল-দাহুরি মতি মন্দ ॥ ধ্রু॥
আপনক চরিত আপে নাহি সমুঝিয়ে
আন করতঃ হোয়ং আন।
ভাবে ভরল মনং পরিজন বাঁচিতেও
গৃহ-পতি শপতিকদ ঠানং॥
নয়নক নার পার নাহি বান্ধইণ
না জানিয়ে কিয়ে জেল আখি।
যত পরমাদ কহই নাহি পারিয়ে
গোবিন্দদাস এক সাখী॥৪৭॥৭১০॥

পাঠান্তর

১। ইহা ৺-র-সা পুথির ১১৮০ ও প-র পুথির ১৩৬৯ সংখ্যক পদ। ২। 'সম্দুশ' খ। ৩। 'ক্ক্' ক; 'দন্দ' চ, প-র-সা। ৪। 'করিভে' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'হয়ে' ক, ধ, ঘ, চ।
৩। '-হু' প-র। १। 'পরিজ্ঞন বাচিতে' ঘ;
'শুক্তন বাঢ়িতে' প-র-সা। ৮। 'শপতিক' গলে
আমাদিগের দৃষ্ট সকল পুথিতেই 'সপতিক' পাঠ
আছে। ১। 'ঠান' (সা-প ১৮০ সং পুথি) হলে
'ঠাম' ক্সান্ত স্থি। ১০। 'নয়নক নীর'
ইত্যাদি (প-র পুথি) হলে 'নিক্ট নিক্দ নয়নে
নাহি হেরিরে' অন্তান্ত পুথি।

টাকা

৮—১১। "আপনক" ইত্যাদি। নিজের আচরণ নিজেই বুঝিতে পারি না;—এক করিতে আর হইরা পড়ে; মন ভাবে পরিপূর্ণ; পরিজনদিগকে বঞ্চনা করিতে গৃহস্বামী শপথের স্থান (হইরাছেন); অর্থাৎ পরিজনদিগকে ভূলাইবার জস্তু গৃহস্বামীর দিব্য করি,—-তাঁহার সহিত অন্ত সংশ্রব নাই!

বিভাব ৷১

রজনী-কাহিনী কহিতে রমণী भूलरक भूतल (मडार। কনক-বরণী কি হৈল না জানি সোঙ্রি সে স্ব লেহা॰॥ অক্সের বসন थमर्य मचन नशास्त्र खत्रश्र दलात । বিষাদে বিকল বিছুরি প্রকল চরণ না চলে৬ থোর u क्षप्र-मन्प्रित পিরিভি-পালক রসের বালিস ভায়। আরতি ভোষণি ভাহাতে অমনি শুতল রসিক রার॥

পিয়ার পিরিতি কহরে যুবতি
ধরিয়া সখীর করে।
শেখর সন্থরে কহুছে রাধারে
দেখিবে নাগর-বরে॥ ৪৮॥৭১১॥

পাঠান্তর

১। देश প-त्र-मा পूषित ১১৪৮ मःशाक भा। २। '(मह' क। ७। '(मह' क; '(नहां घ। ८। 'जतम' थ, প-त्र-मा। ६। 'विছ्ति' घ। ७। 'ना हरम' ऋरम 'नाहरम' थ।

वहरें।)

কহিতে কামুর বিলাস-কথা। ছল-ছল ভেল নয়ান গ্রাতা । गम-गम करें ना मदत वानी। विवत्र एंडल कि रेडल कानि॥ भूलाक भूतल मकल (पर । खत्र बहेरल ना हरल रमह ॥ ঝর-ঝর বাহি॰ পড়য়ে ঘাম। খেণে পর-পর কম্পুমান মুরছি পড়ল স্থীর গায়। হেরি সহচরী চমক পায় ॥ কোরে করিয়া রহল ভাই। খেণেকে চেতন⁹ পাওল রাই ॥ স্থী কহে বিপরীত সে দেখি। কহিতে এমন কোথা না লখি । আমরা পুছিয়েশ হুখের কথা। ইহাতে ভোহার কি ভেল বেখা। রাই কৰে মোর জীবন কামু। সে কথা' কহিতে অবশ তমু। শেশর কংয়ে রহিয়া ভাই। এমন প্রেমের বালাই বাই ॥৪১॥৭১২॥

পাঠান্তর

পুনশ্চ প্রকারান্তরং যথা।

রসোদগারাসুরাগঃ।

यहरू ।>

পিয়ার পিরিভে জাগি স্মায়লুঁ না জানি বিহান নিশি। অঙ্গের° সৌরভ কাসুর সঙ্গের° ননদী পাওল আসি ॥ ননদী বলে গা ভোল বড়ুয়ার ঝি। সে হেন অক্সের এমন বিতথা **ट्रांटक** ना बिलाटव कि ॥ क्ष्य ॥ কেন তোর তমু হেন বিবরণ मिन ठाँदिय कना। मख कत्रिवरत মথিয়া পুইয়াছে শিরীষ-কুত্ম-মালা ॥ **८क मिटन एव (इत्र**भ রক্ষের দৃপুর क पिटन अमन शंत्र। ভড়িভ বিনয়৷ 'বরণ বসন গুপতে আনিলি কার॥ নাছি পরকাশ আপাদমস্তক क भिर्म हन्मन हुना। ञ्जूष अश्दन ্রক ধরাইয়া কে" দিলৈ ভিশ্বিক গুয়া।

নাসার বেশর ভালে সে তিলক
কে দিলে এমন ছালে:

শঞ্জন-নয়ানে জ্ঞান রঞ্জিত

জ্ঞান পড়িল ধাল্দে ॥৫০॥৭১৩॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৮৬ সংখ্যক পদ।
২। 'পিরীতি' খ। ৩। 'অলের' প-র-সা।
৪। 'অল' প-র-সা। ৫। 'বিততা' প-র-সা।
৬। 'পুঞা রে' ক; 'পুরাছে' খ, প-র-সা।
৭। 'হেরো' খ, চ। ৮। 'অলের' খ। ৯। 'জান'
ইত্যাদি হলে 'জানদাস পড়ে খান্দে' প-র-সা।

ভণা রাপ ৷১

ননদিং গো রহিতে নারিশুঁ ঘরে। ना प्रिचि ना क्षिन এমন দেবভা यूवजो प्रिश्रा जूटन ॥ अ ॥ নিশির স্বপনে টাদ-উপরাগ **८** इतिरय मिल्लारत विन । হেনই সময়ে সে বনদেবতা মোরে গরাসল আসি॥ গরাস-ভরাসে আকৃল হইয়া মুরছি পড়িলু ভূমে। কত না ডাকিলু তোর নাম ধরি শুনি না শুনিলি কাণে॥ সে বনদেবতা এ মোর বিতথা अनि চमकरम् विटिं ।° ननहीं চमकि **এ বোল শু**নিয়া ভ্রমিয়া বুলরে ভিতে। গোকুল-পতির মতি ভুলাইলা ঈষত আঁখির ঠারে। मनमी भूमारेए জ্ঞানদাস কৰে किया भन्नभाष जात्म ॥৫১॥१১॥॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৮৭ সংখ্যক পদ।
২। 'ননদিনি' প-র-সা। ৩। 'চমকই' থ।
৪। অতঃপর ক, ব ও চ পুথিতে নিম্নলিবিত
অতিরিক্ত পংক্তিগুলি দৃষ্ট হয়; যথা,—

'যুর্বতি দেখিয়া ফিন্রেয় হেরিয়া

এমতি তাহারি রিতে॥

যে জন হেরেয় সে বনদেবতা

রহমে তাহারি চিতে।'
প্রাচীনতম ও পুথিতে পংক্তিগুলি নাই এবং উহার
সহিত পুর্ববিত্তী উক্তির সামঞ্জ্যন্ত নাই;—স্তরাং

দিনান্তরম্ম বার্তা।

উহা প্রক্রিপ্ত বলিয়াই বোধ হয়।

মলাব।১

এ ঘোর রজনীং মেঘের ঘটা কেমনে আইল বাটে। বন্ধুয়া তিতিছে আজিনার কোণে⁸ দেখিয়া পরাণ ফাটে॥ সই কি আর বলিব তোরে। কোন পুণ্য ফলে সে হেন বন্ধুয়া আসিয়া মিলল মোরে ॥ গ্রন্থ ॥ नननी नाक्र १५ যুৱে গুরুজন विलाख वाहित (श्लू । আহাণ মরি মরি সঙ্কেত করিয়া কত না যন্ত্ৰণা>> দিলুঁ॥ বন্ধুর পিরিভি আরতি দেখিয়া^{১২} মোর মনে ১৫ হেন ১৪ করে। মাথায় করিয়া ৰুলক্ষের ডালি> जानल १० एकाई चरत ॥

আপনার তুখ করি মানে
আমার তুখের তুখী।
চণ্ডীদাস কচে^{১৭} বন্ধুর^{১৮} পিরিতি
শুনিয়া^{১৯} জগত স্থাী ॥৫২॥৭১৫॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১১৮৮ ও প-র পুণির ১ গতি সংখ্যক পদ। 'মল্লার' স্থলে 'বিভাষ' পর। ২। 'যমিনী' প্-র। ৩। 'ঘটা' (প-রপুণি) स्टल 'इंडो निया' क, थ, ठ, भ-द्र-मा; 'बंडे निया' ঘ। 'পিয়া' শক্টি প-র পুথিতে নাই। ৪। 'কোণে' (প-त পूथि) द्राल 'मार्य' क, ब, च, ठ, भ-त-मा। (। 'তিতিছে' (প-র পুণি) স্থলে 'ভিজিছে' क, थ, घ, ठ, भ-तः म। ७। 'बरनक' क, ४, ६, চ, প-র-সা। १। 'আসিয়া মিলল' স্থলে 'আনি মিলাওন' প-র। ৮। 'ঘরে' ইত্যাদি পংক্রির স্থলে -- 'নহি শ্বতম্ভর গুরুজনা ডব' প-র। ১। 'হৈরু' ক। ১০। 'হাহা' প-র। ১১। 'কত না মন্ত্রণা স্থলে 'এতেক যাতনা' প-র। ১>। 'দেখিতে' সা-প २०১ मर পুथि। ১০। 'मन' थ, भ-त्र। ১৪। 'द्यता' প-র। ১৫। 'ডালা' প-র সা। ১৬। 'আবঙনী' मा-भ २०) मर भूषि। ११। 'कब्र' भ-ब ১৮। 'কাহর' প-র। ১৯। 'গুনিতে' শা-গ २०५ मः भूषि।

দিনান্তরে স্থাক্তি:। ক্ষ্টা

সজনী কি কহিব রাইক সোহাগিং।

যাকর দেহলি বদরি-কোরে হরিং
রজনি পোহায়ল জাগি॥ গ্রু॥

কোকিলং সম হরি সক্ষেত রবইতে

ঘার খসাইতে রাধা।

কল্পে ঝাকিতেং গুরুজন জাগল

পড়ি গেও দারুণ বাধা॥

ননদিনি বলেও ধনি কোণ বাহিরারত দ ভীত-পুতলৈ সম দেহা। লোরে মিটারল পীন পরোধর-মৃগমদ-কুকুম-রেহা॥ বিঘটি মনোরথ আন চলল চহিল হৈরি তাহিঁ স্তুহাঁ সক্ষেত্ত রাখি। কুসুম-হার অরু মুকুলিত সরসিঞ্জ সং

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৫৬।১১৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'সজনী' ইত্যাদি মণে 'ধনি ধনি গাইক সোহাগি' প-র-মা। ওঁ। 'ধরি' ক, চ। 'যাকৰ দেহলি' ইত্যাদি পংক্তি স্থলে 'যাকর দেহ নিরববি কোরে ধরি' চ। ৪। 'কোকিন' (ক পুপি) স্বে 'চাতক' থ, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'ছনকিতে' थ। ७। 'ननमी शृह्दम्' भ-त-मा। १। 'दक्' ক. খ. প-র-সা! ৮। 'বাহিরাওড' ক, চ। ৯। 'মেটায়ল' অ, চ; 'পথাডল' প-র-সা ৪৫৬ সং পদ। ১০। 'চললি' ধ; 'চলত' প-র-সা। ১১। 'ভাছে' क; 'ভাহি' घ; 'এ' প-র-সা। ১২। 'কুফুম-ছার' ইত্যাদি (প-র সাপুথি) ফলে 'হার কুমুমিত স্রসিঞ্জুকুলিত' ক; 'মুকুলিত হার কুমুদ সব সর্মিজ' খ, চ। 'কুমুম-হার' ইত্যাদি গংকিটি ঘ পুথিতে লিপিকর-প্রমাদে পরিতাক रुहेश्राट्ड ।

ট কা

১—১১। "সঞ্জনী" ইত্যাদি। ছে স্থি!

বীরাধার সৌভাগ্য কি বলিব ? শ্রীকৃষ্ণ বাঁহার
বহিবাঁটী-স্থিত বদরী-বৃক্ষের ক্রোড়ে (সমস্ত) রজনী
ভাগিয়া পোহাইলেন! গোবিন্দদাস এই পদে
উজ্জলনীলমণি-শ্বত নিম্নলিখিত প্রসিদ্ধ প্রোকের
ভাৎপর্যাক্রবাদ করিয়াছেন; বধা,—

"সঙ্গেতীকৃত-ক্যোকিলাদি-নিনদং কংস্থিবঃ কুর্মতো
ঘারোন্ধোচন লোল-শুষ্ধ-বল্য-কাণ্য মৃতঃ শৃষ্তঃ।

কেয়ং কেয়মিতি প্রগণ্ড-জরতী বাক্যেন দুনামুনো রাণা-প্রাপ্তণ-কোণ-কোলি-বিটপি-ক্রোডে গতা শর্করী॥" শ্রীমহিশনাথ চক্রবর্ত্তী ওঁছোর স্মুপ্রসিদ্ধ "আনন্দ-চক্তিকা" টাকায় এই পদের সমার্থক উদ্ধৃত শ্লোকের রস ভাবের বিশ্লেষণ করিয়া লিখিগছেন—"ভত্ত সঙ্কেতীক্তেতি বারোঝোচনেত্যাভ্যাং বয়োরপাৌং-ক প্রোনোলি দ্রান্ত প্রচল্প কামুকত্ব। প্রথমেন বিশেষণেন জ্রীরাধায়া: হর্ষোদয়: দ্বিতীয়েন শ্ৰীক্ষক্ত। পুনশ্চ কেয়ং কেয়মি তানেন হৰ্ষপ্ৰশ্ম-শঙ্কো-দ্ধৌ দ্যোরের ততশ্চ মিথো চল্লভিতা বছরার্ঘতেতি ভাভাঞি বিষাদৌৎকণ্ঠাচাপল্যাক্তিবৰ্দ্ধিতানি। মুহ-রিতি ক্তিপ্রক্ষণান্তবং পুনর্পি কোকিলাদি-নিনদ-খারোনোচন জরতীয়াক্যানি তথা তথা ভারবর্দ্ধ-কানি জ্জেয়ানি।" অর্থাৎ শ্রীক্লফের সঙ্কেত-স্চক কোকিল-নাদ ও এীরাধার ধারোদ্যাটন, —উভন্ন কার্য্য ছারা উভয়ের উৎকণ্ঠা-জনিত রন্ধনি-জাগরণ ও প্রজন্ম অভিসার ব্যক্তিত হইতেছে। তাগতে আবার প্রাথম কার্য্য বারা প্রধানত: শ্রীরাধার ও বিতীয় কার্য্য দ্বারা শ্রীক্রফের হর্ষোদয়,- · তৎপরে 'কে বাহির হয় ?' 'কে বাহির হয়?' ইত্যাদি কুটিলার বাক্যশ্রবণে উভয়েরই হর্ষ-প্রশম ও শঙ্কার উদয় হেতু (প্রেমোৎ-কর্ষের সারভূত) পরম্পর-এরভিতা ও বছবিম্বতা,— এবং উহার হারা উভয়ের বিষাদ, উৎকণ্ঠা ও চিত্ত-চঞ্চলতার প্রাবল্য ব্যক্তি ১ইতেছে। মোকের) "মৃহঃ" ইত্যাদি বাক্যের **বা**রা স্টিত শ্রীক্ষের এইরূপ সঙ্কেত-শব্দ ও শ্রীরাধার দ্বারোদ্যা-**छेटनत वातरवात विकल ध्यक्षात बाता शूट्यांक त्र**ग-ভাবের পৌনঃপুত্ত ও অতুরক্ত প্রেমিকযুগলের তাদৃশ বঞ্চিয়াপন বাঞ্চিত হইতেছে।

১২—১৫। "বিষ্টি" ইত্যাদি। মনোরথ ব্যর্থ ছইল; হরি তথায় পুস্থার ও মুচ্লিত পদ্ম— ছইটি সঙ্কেত-চিক্ত রাখিয়া অক্তন্ত চলিলেন; গোবিন্দ-দাদ (ইহার) একমান্ত্র সাক্ষী রহিলেন। (পুস্প-হারের পরিত্যাগ শারা উহার সন্তাপ-জনকতা হেডু উহার পরিবর্ধে জীরাধাকে বক্ষে ধারণের বাসনা ও মুকুলিত পদ্ম দারা রজনীতে পরবর্তী রাত্তে পুন: অভিসারের বাসনা ব্যঞ্জিত হইতেছে। এথানে স্ক্র ইঙ্গিত দারা বক্তব্য প্রকাশিত হওরায় "স্ক্র" নামক অবস্থার ঘটরাছে।)

> পুনশ্চ প্রকারান্তরেণ যথা। দিনান্তরে পরস্পরং সপ্যুক্তিঃ।

> > त्रमामभातः।

তছ্চি চ-ঞ্জীগোরচন্দ্রঃ। "আবে মোর গোর কিশোর" ইত্যাদি পদং গেরম্ *।

সিম্বড়া ।১

আবহুঁ রভস-রসং কয়লহিং ধাধস
কামর দৃক্ষরং বেলি।
উলটল কবরি সম্মরি নাহিং অম্মর
কহু কেবা গারি বা দেলি॥
সধি হে কোনা এতহুঁ মুখ দেল।
বিকচ কমল ফুল লোচন ছল-ছলদ্
অব কাহে মৃদিত ভল ॥ গ্রু॥
তাবুল অধরে ।
কুচ-ছিরিকল পর্যুণ বিহ্না কিয়ে বৈঠল ।
তাহে অরুণ-রেখ ভেল॥

কাঞ্চর কপোল লোল অমিয়া-ফল
সিন্দুর স্থন্দর> বয়ানে।
ভাষানদাস কছ চলছ চলছ স্থি
রাইক মিলাহ>৮ সিনানে ॥৫৪॥৭১৭॥

পঠিক্তির

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৯১ ও প-র পুথির ১০১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রছস' প-র-সা। ৩। 'ক্রলছ' ক, খ, খ, চ। ৪। 'ছ্ফ্র' ক, চ, প-র-সা, প-র; 'ছ্ফ্রি' খ। ৫। 'স্ম্বরি নহ' প-র-সা। ৬। 'ক্রলে' প-র-সা। ৭। 'ক্রলে' প-র-সা। ৮। 'ক্রলে' হলে 'ছ্ল্ডুল' প-র। ৯। 'মোদিত' খ, ঘ; 'মুদিত' ক, প-র-সা, প-র। ১০। 'মধ্ব' প-র। ১২। 'বিম্বফলে' ক, খ, প-র-সা, প-র। ১৩। 'পর' শক্ষাটি প-র পুথিতে নাই। ১৪। 'কিরে বৈঠল' স্থলে 'বৈঠল কিবা' প-র। ১৫। 'স্ম্বুর স্ক্রের' ম্বেল 'ব্ল্কর স্ম্বুর' খ, প-র-সা। ১৬। 'চল' ক। ১৭। 'স্ম্বুর' খ, প-র-সা। ১৬। 'চল' ক। ১৭। 'স্ম্বুর' ম্বুরিতে নাই। ১৮। 'স্ম্বুর' চ, সিনাহ' প-র-সা।

है का

১--৪। "অবহঁ" ইত্যাদি। উদ্ভাপ-দথ দিপ্রহর বেলা,—এ সমরেও সম্ভোপ-লীলা বিশ্বর জন্মাইল; (প্রীরাধার) কবরী আপু-আপু,—বল্ল অসংরুড; (স্থি!) বল, কেহ বুঝি (প্রীরাধাকে) গালি দিরাছে?

১২—১৫। "কাজর" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার)
বদনে গণ্ডে কাজল ও উজ্জন সিন্দুর,—(বেন)
চঞ্চল অর্থাৎ বাষ্-চালিত (সিন্দুরিরা) আম-ফল;
জানদান কহিতেছেন—গণি। চল,—(বিলম্ব করিও
না) শ্রীরাধাকে সানে লইরা যাও। ("লোল
অমিরা ফল" বাক্যের হারা পদকর্তা ব্রাইতেছেন
বে, (ভৃতীর কলির বর্ণিত) ভাস্ল-রঞ্জিত অধর-রূপ
বিষক্ষ ওক-পক্ষী দংশন করার ও কুচরুপ বিষ্কৃতে
পক্ষী ব্রিরা, (বাদু, হারা, পাচ্চুট্রা) উত্তুত্ব

 [&]quot;আরে মোর গৌর কিশোর" ইত্যাদি গৌরচন্দ্রপদটি অতঃপর তৃতীর শাধার বোড়শ পরবের প্রথম
ত ,,১০৯২ সংখ্যক প্রক্রপে উভূত ক্রিছে। এ
ক্লে ইহাকে গণনা করিলে ৩ পরবের প্রসংখ্যা
বাদ্ধিরা বার ।

লোহিত-রেধাযুক্ত করার, সিন্দু এরা আম মনে করিরা প্রিরাধার গণ্ডেরও সেইরূপ লাঞ্চনা করার আশকা হইতেছে; অতএব কাজল ও সিন্দুরের চিক্ত্ বিদ্রিত করার জক্ত সম্বর স্নান বিধেয়। (প্রীরাধার নরনের কাজল ও ললাটের সিন্দুর তাঁহার নেও ও ললাটের চূম্বন দারা প্রীক্তফের অধরোঠে সংলগ্ন হইয়া পরে গও-চূম্বন্দারা প্রীরাধার গণ্ডে সংক্রমিত হইয়াছে —"কাজর কপোল"ইত্যাদি বাক্যের ইংই ব্যক্ষ্যার্থ।)

शननी ।>

সধি রাই কলাবতি কানেং।

কি ত্রহঁত মনোভব মনহি বুঝাওল

কিয়ে ত্বহুঁ আপনে হুজানেঃ। গ্রাদ

হুহুঁ দিঠি-অঞ্চলং বচনং সমাপল

চৌদিশে কত আছে আনে।

হুহুঁ জন বুঝল কেহো নাহি সমুঝলং

ঐছন তুহুঁ যে সিয়ানেং।

ভুজে ভুজে বান্ধি উরহি দরশায়ল

রমণী সমুঝল কাজে।

আনন-সরক্রহ করে প্রশায়ল

সময় বুঝায়ল সাঝেং

আন সমুঝায়ল নাহংই।

ভ্রানদান কহ তরুণি ভীন নহ

তৈছে কয়ল নিরবাহ এ৫০॥৭১৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথি : ১১৯২ ও প-র পুথি র ১৩/২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কান' ক। ৩। 'কি ছহ' হলে 'এ ছহ' ক, ধ, ঘ, চ; 'এডহ' প-র-সা। ৪। 'হুজান' ক। ৫। 'চঞ্চশ' ক, থ। ৬। 'বচনে' প-র। ৭। 'চৌদিগো' প-র। ৮। 'কেহ' ক। ৯। 'হুবল' প-র। ১০। 'নিনানে' ক, ধ, প-র-স, প-র। জ্ঞানদাসের পদাবলীর মুদ্রিত 'সিনানে' পাঠ এ হলে **অর্থ-শৃস্ত।** ১১। 'সাঁজে' থ, প-র-সা। ১২। 'আন সমুঝারল নাহ' হলে 'আলস বুঝারল' ব।

টীকা

— । "স্থি" ইত্যাদি। হে স্থি! শ্রীরাধা কলা-নিপুণা; শ্রীক্ষণ্ড (সেইরূপ কলা-নিপুণা); এই ছই জনকে কি মনোভব অর্থাৎ কলপ মন ধারাই ব্যাইল ? কিংবা এই ছই জন আপনা হংতেই স্থবিজ্ঞা? (কলপ সংক্রময় এবং উভ্যের চিত্তেই বিশ্বমান বলিয়া, তাঁহার প্রেরুণা উভ্যের চিত্তেই বিশ্বমান বলিয়া ও শ্রীকৃষ্ণ স্থাত্ত্র বলিয়াই হউক, কিংবা শ্রীরাধা ও শ্রীকৃষ্ণ স্থাত্ত্র বলিয়াই হউক, তাঁহাদিগের উভ্যের মনোভাব উভ্যের অজ্ঞাত নাই—ইহাই 'স্থি" ইত্যাদি ধ্ব-ক্লির তাংপ্র্যা)।

8— १। "গ্রন্থ" ইত্যাদি। উভরের নয়নপ্রান্ত বাক্য সমাধা করিল গ্র্থাৎ নয়নের কটাক্ষ
বাক্যের কার্য্য দিদ্ধ করিল; (কেন না) চতুদ্দিকে
শৈশু কত (বাজি) রহিয়াছে। (ছই জনের
নয়ন-ইলিভ) ছই জনে বুঝিলেন—(অভা) কেহ
বুঝিল না; — ছই জনেই ঐক্সপ চতুর।

৮—১১। "ভূজে" ইত্যাদি। (শ্রীক্রম্ব)
বক্ষ: স্থলে (একটি) ভূজ হারা (অপর) ভূজকে
বন্ধন করিয়া (শ্রীরাধাকে ইশারায়) দেশাইলেন;
নারিকা (শ্রীরাধা) কার্য অর্থাৎ শ্রীক্রফের সেই
কার্য্যের উদ্দেশ্য বুঝিলেন। (শ্রীক্রফ আলিজনের
বাদনা প্রকাশ করিতেছেন—বুঝিতে পারিলেন)।
তৎপরে শ্রীক্রফ কর হারা (নিজের) মুখ-পদ্মকে
(অল্পমাত্র) স্পৃত্ত করিলেন; (তদ্ধারা) সন্ধ্যা-কাল
বুঝাইলেন। (সন্ধ্যা-কালে স্থ্য দিক্তক্রবালের
নিকটবতী হওয়ায় তাঁহার কর পদ্মকে অল্পমাত্র স্পর্শকরিয়া থাকে; স্তলাং শ্রীক্রফ কর হারা মুখ-পদ্মকে
অল্পর্শ করায় ইলিতে সন্ধ্যা-কাল বুঝান হইল।
এই ইলিতের তাৎপর্য্য অধিকতর গুন্ন বিন্না, অর্থপ্রতীতি নাও ইইতে পারে আশ্রাক্ষা করিয়া পদকর্জা

'সময় বুঝারণ সাঁঝে' বাক্যটির প্রয়োগ করিয়া-ছেন)।

ং২---ব। "কং-কমণে" ইত্যাদি। (শ্রীকৃষ্ণ সংস্থাগে। কেন্ঠা হেতু সন্ধ্যা-কালে অভিসারের জন্তু প্রাধাকে হাঙ্গত করিলেও, শ্রীরাধাকে ইঙ্গিতের প্রত্যুক্তরে) নিজের কর-ছিত দীলা-কমলে (লজ্জা প্রকাশের ছল করিয়া) নিজের মুখ-কমল লু চাইলেন; (এবং ভদ্ধারা) নাথকে অক্স ব্রুঝাইলেন অর্থাৎ সন্ধ্যা অভিসারের উপযুক্ত সময় নহে,---বখন পদ্ম নিমালিত হইবে, সেই রজনী অভিসারের উপযুক্ত কাল—ইঠা ব্রুখাইলেন। (এই পদ্ধের ওম্ব ও চর্থ কলিতে "পুন্ধ" নামক অলম্বার হইয়াছে)। তুলনা কন্ধন,—

"সক্ষেত্ত-কাল-মনসং বিটং জ্ঞাত্বা বিদগ্ধয়া। হুদক্ষেত্রাপিতাকুতং লালা-পদাং নিমীলিতম্॥" – -সাহিত্য দুর্পণ, ১০ম পরিছেদ।

বরাড়ী।১

ছলে দ্বশারন উরজক ওর।
আপনি নেহারি হেরল মোহে থোর।
বিহুসি দশন আধ দরশন দেল।
ভুজে ভুজং বাজি অলপ চলি গেল।
কি কহব রে স্থি নারি স্থান।
হরখে বর্সে কভ মন্মথ-বাণ।
হরি কভ দূরসেঁ পালটি নেহারি।
তোড়ল কান্ড কুস্থম উঘারি।
বসনক ওর ঝাঁপল ভবং গোরি।
লীলা-কমলে মুখ রোপলি থোরিও।
বৈদগধি বিবিধ পসারল যেহ।
কোনং মুগধ ভাহে ধরুও নিজ্ঞা দেহ।
ধনি ধনি তাক যাক ইছ নারিও।
ভ্যান্দাস কছ ধনি জনা চারি। ৫৬॥৭১৯॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৯ছ ও প-র পুথির ১৩)২৭ সংখ্যক পদ। ২। 'ভূজে' ক, ধ, প-র-সা। ৩। 'ঝাঁপল তব' হুলে 'উঝারল' প-র। ৪। 'ঘোরি' প-র-সা। ৫। 'কোন' (সা-প ২০১ সং পুথি) হুলে কাহু' ক, ধ, ঘ, চ, প-র; 'কাম' প-র-সা। ৬। 'ধর' প-র। ৭। 'ধনি ধনি' ইত্যাদি পংক্তি হুলে 'ধন্ত সে জনা যাহার বর নারাই' প-র।

টাকা

১১—১২। "বৈদগধি" ইত্যাদি। (জীরাধা) নানাবিধ যে বৈদয়ী বিস্তার করিলেন, (রুসজ্জের ত কথাই নাই) কোন্ মুগ্ধ মধাৎ অর্থাক তাহাতে নিখের শ্রীর ধারণ করিতে পারে ?

১৩--১৪। "ধনি ধনি" ইত্যানি। ইনি বাহার নারী, তাঁহার ধন্ত ধন্ত অধাৎ শত ধন্ত!
জ্ঞানদাদ কহিতেছেন—(কেবল তিনি ধন্ত নহেন;)
জ্না চারি লোক ধন্ত! (অর্থাৎ এই নামিকা-শিরোমণির পিতা, মাতা, স্থামা ও প্রণম-ভাজন—
চারি জনকেই ধক্ত বলিতে ইইবে)।

युष्ट्डे । ১

স্থিং—বড় অপরপ ভোলত।
রাই—যমুনা সিনানে গেলি ॥
কামুণ দরশন ভেল ।
কি তুহুঁ ইপিত কেলং ॥
বুঝিয়া সে সব রীত।
সভে গেল আন ভীতং ॥
যব হোতং নিরক্তনে।
পৈঠলিদ নিকুঞ্জ-বনে ॥
কি তুহুঁ কয়লি নেহ।
ক্কান কি বুঝিব ধেহং ॥ ৫৭॥৭২০॥

পাঠান্তর

১। হহা প-র কুর্নি পুলির ১১৯৪ ও প-র পুথির ১৩।২৯ সংখ্যক পদা ২। 'দেখি' ছ। ১। 'কেলি' প-র। ৪। 'কামুক' থ। ৫। 'কি ছহ' ইত্যাদি (প-র পুথি) স্থলে 'কিষে ইন্দিড ছহুঁ কেল' থ, ছ; 'কিষে ইন্দিত কেল' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'সতে গেল' হত্যাদি স্থলে 'সডে ভেল আন-দিড' প-র। ৭। 'হৈতে' প-র। ৮। 'পেসলি' প-র। ৯। 'জ্ঞান' ইত্যাদি স্থলে 'জ্ঞানদাস কি বুঝিব গেহ' ক, প-র সা; 'জ্ঞান কি বুঝাব থেহ' খ, ছ, চ; 'জ্ঞানদাস তব গেহ' প-র।

বড়ারী।১

নাহি উঠল তিরেং রাই কমল-মুখি
সমুথে হেরল বর-কান।
গুরু-জন সঙ্গেলাজে ধনি নত-মুখি
কৈছনে হেরব বয়ান॥
সথি হেং অপরুপ চাতুরি গোরি।
সব জন তেজি আগুসরি ফুকরই
আড়ে বদন তহিঁ ফেরি॥ গ্রু॥
উহিং পুন মোতি-হার টুটি পেললং
কহত হার টুটি গেল।
সব জন এক এক চুনি সঞ্জুং
শ্রাম দরশং প্রিনি কেল॥
নয়ন-চকোর কামু-মুখ শশি-বরং
কয়ল অমিয়াং রস পান।
স্কুঁ দোহা দরশনে রসক্র প্রারল
বিভাপতি ভালে জান॥৫৮॥৭২১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৯৫ ও প-র পুথির ১৩০০ সংখ্যক পদ। 'বরাড়ী' হুলে 'সিকুড়া' প-র। ২। 'ভীরে' ক। 'ভীরে' পাঠে ছন্দো-ডল ক্ষনিবার্য। ০। 'দেবরে' প-র। ৪।

'লাক' च। ৫। 'এ স্থি'প-র। ৬ 'অপ্রপ' ক, চ, প-র-সা। १। 'আদ' প-র। ৮। 'বদনে' ক, প-র সা। । । 'তহি' च; 'ডাহি' চ। ১•। 'তহি' च; 'ডাহি' চ। ১১। 'ফেলল' ক, প-র-সা; 'ডারল' প-র। ১২। 'সব জন' ইতাাদি স্থলে 'সব জন ক্ষণ্ট বদনে তহিঁ স্ফার্ক' প-র। ১০। 'দর্শন' চ। ১৪। 'শশধ্রে' প-র। ১৫। 'অমৃত' ক।

जुशामी ।)

কি কহব রাইক চরিত অপার।
ঐছনং কভিছাঁ না হেরিয়ে আর ॥
গুরুজন সনে আজুও চলাইতে বাট।
অন্তরে উপজল কামুক নাল॥
পুরকে পুরল তমু ঝর ঝব ঘাম।
অবশ হইয়া কহে কামু কামু নাম॥
ননদি কহয়ে তহিঁ কামু কাহা হেরি।
ভামু ভামু করিয়া কহবে পুন বেরি॥
অভিশয় তাপে তমুতে বহে ঘাম।
তাহে পুন পুন সে কহলুঁ ভাবু নাম॥
গুরুজন শুনি তব নিশ্বদ তেল।
জ্ঞানদাস চাতুরি উপদেশ কেল॥৫৯ঃ৭ং২॥

পাঠাওর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১১৯৬ সংখ্যক পদ। ২। ক্রিছে'ক, চা ৩। 'আজি' ক। ৪। কিয়ল'ণ।

অথ র**দোদ**গারঃ প্রকালান্তরং যথা। শ্রীমহাপ্রভুঃ।

বিভাষ 1১

আজুক প্রেমক নাহিক ওর। স্বপন্ধি শুভূলুঁং গৌরক কোর॥ পত্-মুখ হেরইতে পড়লহি ভোর।

চরকি চরকি বহে লোচনে লোর।

উচ-কুচ কাজেরে হার উজোর।
ভীগল ভিলক বসন রুচি গোর।

মীটল অন্ধ-বেশ রহু° থোর°।
বাস্থদেব ঘোষ কহে প্রেমণ সাগোর॥

115019:01

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১৯৯৭ সংখ্যক পদ। ২। 'শুতক' ক, খ, চ, প-র সা। ৩। 'বহু' ক, খ, খ, প-র-সা। ৪। 'ঘোর' প-র-সা। ৫। 'প্রেমে' প-র-সা।

थाननी ।>

কি কহব রে সখি রজনিক বাত।
শুতিয়া আছিলুঁ হাম গুরুজন সাথ॥
আধ রজনি যব পূরল চন্দাই।
হুমলয় পবন বহয়ে অতি মন্দাই॥
গোরক প্রেম ভরল মঝু দেহা।
আকুল শিবন না বাদ্ধই থেহা॥
গোর গোর করি উঠলুঁ রোই।
ভাগল গুরুজন কহে পুন কোই॥
গোর নাম সভে শূনলং কাণে।
গুরুজন তবহাঁ করল চিতে আনে॥
চৌর চৌর করি উঠায়লুঁ ভাষ।
বাহুদেব ঘোষ কহে ঐছে বিলাস॥৬১॥৭২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৯৮ সংখ্যক পদ। ২। 'চলা'প-র-সা। ৩। 'মলা'প-র-সা। ৪। 'শুনল' ক, খ, চ, প-র-সা। ৫। 'উঠলু' খ, ঘ, 'উঠল' প-র-সা। তেথা বাগ ।১

পালকে শয়নং ঘুমে অচেডন मोचन वश्रु याम । मोभ क**र**त्र करे লুবধ মাধ্য আওল হামারি পাশ। স্থি হে কানু সে এছন টাঠা। অধিক লালসে হরষে পরশে বিষম তাকর দীঠ ॥ প্রদা জাগইবে ডবে লহু লহু করে বসন কয়ল দুর। **কন**ক-**গা**গরিঙ বেক্ত নেহারি নিজ মনোরথ পুর ॥ দাপের ছটায় ঝটিতে জাগলু ভর্মে কহলু চোর। আন্ধারে পশিলু ডরে চোর পাশে সে মোরে করল কোর^দ। বান্ধি ভুজপাশে হাসিয়া রভদে विनाम श्रीव क्ये ।

পাঠাস্তর

टारतद निलंक मूथ ॥७२॥ १२०॥

বেকত কহয়ে

চম্পতি-পতি

১। ইহা প-র সা পুথির ১১৯৯ ও প-র পুথির ১৩০০ সংখ্যক প্র। 'তথা রাগ' ছলে 'বিভাষ' খ; 'স্ক্ই' প-র : ২। 'পালক শরন' খ; 'পালক শরনে' গর। ৩। 'মুগ্ধ' প-র-সা। ৪। 'টাট' ক; 'চিঠ' চ; 'টাট' প-র-সা, প-র। ৫। 'কালইব' প-র । ৬। 'কনরা পুত্রি' প-র । १। 'নিক' ইত্যাদি ছলে 'নরানে ভরুগ প্র' প-র । ৮। 'ডরে' ইত্যাদি পংক্তি-ছরে ছলে প-র পুথির পাঠ ব্ধা,—

'চোরের ডরে পাস আছিয়ারে প্রস্কৃতাকর কোর ॥' ৯। 'হাসিয়া' ইত্যাদি ভণিতার কলি খনে প্ৰব্লপুথির ভণিতা-হীন পাঠ, ৰণা—

'হাসির রভসে বান্ধি ভূজপাশে

(চারের নিগজ মুধ।

নিজ মনোর**ধ**

তা কহিব কত

विनाम व्यक्षिक सूथ ॥

পঠমঞ্জরী।>

এ সিধ রক্ষিণি কি কহব তোয়।
আজুক বকাতুক কহনে না হোয়। এ ।
একলি আছিলুঁ ঘরে হিন-পরিধান।
অলথিতে আয়ল কমল-নয়ান।
এ দিগে ঝাঁপিতে ততু উদিগে উদাস।
ধরণি পশিয়ে যদি পাঙ্ড পরকাশ।
করে কুচ ঝাঁপিতে ঝাঁপন না যায়।
মলয়-শিথর জতু হিমে না লুকায়।
ধিক যাউ জীবন যৌবন লাজ।
আজু মোর অঙ্গ দেখল যুবরাজ।
ভপয়ে বিভাপতি রসবতি রাই।
চতুরক আগে কিয়ে চতুরাই।৬৬॥৭২৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১ং ০০ সংখ্যক পদ।
২। 'আবার এক' ব, প-র-সা। ৩। থ পুথি
ছাড়া আন্তান্ত পুথিতে 'এং' চিক্ল নাই। ৪। 'ও
দিগে'ক, প-র-সা। ৫। 'আবাও' প-র-সা।

৩—8। "একিল" ইত্যাদি। ক্ষুদ্ৰ-বন্ধ-পরিহিতা আমি ঘরে একাকিনী ছিলাম; (এমন সমরে)
পল্লোচন শ্রীকৃষ্ণ অলক্ষিত ভাবে আসিলেন।
হীন (ক্ষুদ্র) পরিধান (পরিহিত-বন্ধ্র) বাহার—
এইরূপ বছরীহি সমাস হারা "হীন-পরিধান" শক্ষটি
সিদ্ধ হইরাছে। কিংবা (আমি) ঘরে একাকিনী
ছিলাম,—(আমার) পরিধান হীন অর্থাৎ ক্ষু

(বক্স)-- এইরূপ সমাসহীন অব্যয়ও করা যাইতে পারে।

ভূথা রাগ ৷১

আর একং লাজ তোহে কি কহব মাই।
জল দেই পোই যদি তবহুঁনা যাই ।
নাহি উঠল হাম কালিদ্দি-তার।
অঙ্গহি লাগল পাতল চার॥
তহি পৈনত ভেল সকল শরীর।
তহি পৈনতি সমুখে যত্নবার॥
বিপুল নিতম্ব অতি বেকত ভেল।
পালটিয়া তাপর কুস্তল দেল॥
উরজ উপর যব দেয়ল দাঠ।
তার মোড়ি বৈঠলুঁ হরি করি পাঠ॥
হাসি মুখ মোড়ই চাঠদ মাধাই।
তামু তামু বাঁপিতে বাঁপন না যাই॥
বিতাপতি কহে তুতুঁ অগেয়ানি।
পুন কাহে পাণ্টি না পৈঠলি পানি॥
॥৮৪॥৭২৭॥

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২০ সংখ্যক পদ।
২। 'আর এক' স্থলে 'আফুক' ক, প-র-সা।
৩। 'তোহে' শব্দ ক, প-র-সা পুথিতে নাই।
৪। 'দিয়া' থ, ঘ। ৫। 'ধোই যদি' ইত্যাদি
স্থলে 'ধুইলে ধোয়ে নাহি জাই' প-র-সা। ৬।
'তাহি' ক; 'তহি' ঘ। ৭। 'তাহি' ক; 'তহি'
ঘ। ৮। 'টাট' ক।

টাকা

৯—১০। "উরজ" ইত্যাদি। (শ্রীহরি) বধন
(আমার) কুচের প্রতি দৃষ্টি অপিত করিলেন,
(তখন) আমি হরিকে পশ্চাতে করিয়া অর্থাৎ
হরির দিকে পাছ দিয়া আমার বক্ষঃস্থল ঘুরাইয়া
বদিলাম!

धाननी ।>

এ ধনি রঞ্চিণি কি কহব ভোয়। আজুক^২ কোতুক কহল° না হোয়॥ ধ্র• ॥ একলি শুভিয়া ছিলুঁ কুস্থম-শয়ান। দোসর মনমথ করে ফুলবাণ ॥ নূপুর রুণু-ঝুমুঙ আয়ল কান। কৌ ভূকে হাম মুদি রহল নয়ান ॥ আয়ল কামু বৈঠল মঝু পাশ। পাশ মোড়ি হাম লুকায়লুঁ হাস। কুন্তল-কুন্তুমদাম হরি নেল। বরিহা-মাল পুনহি মুঝে । দেল ॥ নাসা-মোতিম গীমক হার। যতনে উতারল কত পরকার॥ কঞ্ক ফুগইতে ' পক্ত ভেল ভোর। জাগল মনমথ বান্ধপুঁ১২ চোর॥ ভণয়ে বিছাপতি রসিক স্থলান। তুহু রসবতি ১৩ পত্সব রস

खान^{> 8} ॥७८॥न२৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ১২০২ ও প-র পুণির ১৩০১ সংখ্যক পদ। ২। 'আর এক' খ। ৩। 'কহল' (প-র পুণি) স্থলে 'কহনে' ক, খ, ছ, চ, প-র-সা। ৪। ক, ঘ, চ পুণিতে 'শু' চিল্থ নাই। ৫। 'করে ফুলবাণ' স্থলে 'কোরে গাঁচবাণ' প-র। ৩। 'রুণুরুশু' (য় পুণি) স্থলে 'রুলু রুলু' ক, খ, চ, প-র-সা, প-র। ৭। 'কোজুকে' ইত্যাদি স্থলে 'কৌজুকে' ইত্যাদি স্থলে 'কৌজুকে মুন্দি হাম রহল বরান' প-র। ৮। 'আরল' ইত্যাদি স্থলে 'আরলি বৈঠল কালু' প-র-সা। ৯। 'পাশ মোড়ি' স্থলে 'কৈতব করি' প-র (পাঠান্তর)। ১০। 'তহি' প-র। ১১। 'পরসিতে' প-র। ১১। 'বারলে' প-র-সা, প-র। ১০। 'রসিকা' প-র। ১৪। 'পছ্ সবরস ভাল' (প-র-সা পুণি)

ছেলে 'পুন সৰ রস ভাপ' ক; 'পছঁ সরৰস ভান' খ, চ; 'পছ রস বস ভান' ছ; 'পছ সৰ রস জান' প-র।

ख्या द्रांत्र ।>

শাশ ঘুমায়ত কোবে আগোরি ।
তহিঁ রতি-টাঠ পীঠ রহুঁ চোরি ॥
কিয়ে হাম আখরে কহলুঁ বুঝাই ।
আজুক চাতুরি রহব কি যাই ॥
না করহ আরতি এ অবুধ নাহ ।
অব নাহি হোত বতন-নিরবাহ ॥
পীঠ-আলিগনে কত সুখ পাব ।
পানিক পিয়াস দুধে কিয়ে যাব ॥
কত মুখ মোড়ি অধর-রস নেল ।
কত নিশ্বদ করি কুচে কর দেল ॥
সমুখে না যায় স্বনে নিশ্য়াস ।
কাহে কিরণ ভেল দশন-বিকাশ ॥
জাগল শাশ চলত তব কান ।
না পুরল আশ বিভাপতি ভাগ ॥৬৬॥৭২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১২০০ সংখ্যক পদ।
২। 'আ্বাগোর' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'চোর'
ক, চ; 'মোর' প-র-সা। ৪। 'আ্বধ' প-র-সা।
৫। 'আলিঘনে' ক; 'আলিজন' খ, ঘ। ৬।
'নিলোরান' ফ, খ, প-র-সা। ৭। 'কাছে
কিরণ' (য-পুণি) হলে 'হাস কিরণ' ক, চ, প-র-সা;
'হাসে কিরণ' খ।

जिका

৩—৪। "কিন্নে" ইত্যাদি। (আমি) কি জন্ত আখরে অর্থাৎ সক্ষেত্তে তাঁহাকে বুকাইরা কহিলাম ? (অর্থাৎ আমার পশ্চাতে অবস্থিত প্রীক্ষেত্র অধরোঠে করাঙ্গুলি স্থাপনরূপ সক্ষেত্ত হারা তাঁহাকে নিঃশব্দে অবস্থান করার জন্ত ইলিত করিরা আমি কি জন্ত তাহাকে অবস্থানের অসুমতি দিলাম ?) আজিকার চাত্রী রক্ষা পাইবে, কি ঘুচিবে—বুরিতে পারি না।

— ७। "না করং" ইত্যাদি। (প্রীক্কষ্ণের চাঞ্চন্য দেখিয়া আমি মনে মনে বলিতে লাগিলাম) হে নির্বোধ প্রিয়তম! (এরূপ) উৎকণ্ঠা প্রকাশ করিও না। এখন আমাজিগের বাক্য-নির্বাহ হইতেছে না অর্থাৎ কথাটি বলিবারও উপায় নাই। (আমার) পৃষ্ঠ আলিঞ্জন করিয়া কত সুখ পাইবে ৄ জলের ভৃষ্ণা কি ছথের লারা দূর হইবে ৄ

৯—১০। "কত" ইত্যাদি। (আমি মনে
মনে এরপ চিস্তা করিতেছি,—ইতিমধ্যে) শুরুফ্ট
(আমার) মুথ বক্র করিয়া কত অধরামূত পান
করিতে লাগিলেন! শব্দ না করিয়া কত বক্ষে
ইস্তার্পণ করিতে লাগিলেন।

১৩—১৪। "কাগল" ইত্যাদি। (আমার দশন-ক্যোতি চক্ষে লাগার) খাওড়ী জাগিলেন; তথন ক্ষা (নিক্ষপায় হইয়া) চলিয়া গেলেন; (লালা-দশক) বিদ্যাপতি বলিতেছেন,—(শ্রীক্ষের তথা পদ-কর্ত্তার) বাসনাপুর্ব হইল না।

বিভাষ।১

এ সখি এ সখি কি কহব হাম।
পিয়া মোর বিদগধ বিহি মোরে বাম॥
কত তুখে আয়েল পিয়া মঝু লাগি।
দারুণ শাশ রহল তহিঁ লাগি॥
ঘরে ঘোর আদ্ধিয়ার কি কহব সখি।
পাশে লাগল পিয়া কিছুই না দেখি॥

চিত মোর ধস-ধস কহিতে না পাই।
এ বড় মনের তুখ রহুং চিরথাই॥
বিভাপতি কহ তুহুঁ অগেয়ানি।
শিয়া হিয়ঃ করি শাহে না ফেরি
বয়ানি।ভ ॥৭৩০॥

পাঠান্তর

১। ইংগ প-র-সা পুথির ১২০৪ সংখ্যক পদ। ২। 'রহ'ক,খ, প-র-সা। ৩। 'হিয়া'ক,খ। টীকা

৯—১•। 'বিদ্যাপতি' ইত্যাদি। বিদ্যাপতি কহিতেছেন— শ্রীরাধে! তুমি আন-হীনা; প্রিয়তমকে বক্ষে (ধারণ) করিয়া কেন (খাওড়ীর দিকে) মুখ ফিরাইলে না ? (অথাৎ শ্রীক্ষের দিকে দল্মুখ দিয়া, উাহাকে বাহপাশে গাঢ় আলিক্ষন করিয়া শম্মন করিয়া, কেবল মুখটি খাওড়ীর দিকে ফিরাইয়া রাখিলে খাওড়ীর অক্ষে পূর্মবং শ্রীরাধার নিখাসম্পর্শ হওয়ায়, তাহার মনে কোন সন্দেহ হইতে পারিত না এইং ঐ ভাবে মুখ রাখায় খাওড়ীর অক্ষ-প্রত্যক্ষের গতি-বিধি লক্ষ্য করিয়া প্রয়োজন হইলে সভর্ক হওয়ও চলিত—কবির বাক্যের ইহাই তাৎপর্য্য বটে)।

আড়ানী ৷১

অলখিতে আয়ল অলখিতে গেল।
না পুরল মনরথ' বেকত না ভেল॥
গুরুজন জাগল ভেলও বিহান।
চরণ-লখনঃ হেরি আন বয়ান॥
হরি হরিং কি করব কুলবতি হোই।
অঙ্গনে কামু-চরণ-চিহ্ন সোই॥
গুরুজন-ভয়ে তব লেপইতে চাই।
বিরিভি, বিশেষ লেপই নাহিং পাই॥
সংভ্রম ভেল মন ভ্রমে আনিবারি।
সো ভর ভালল নয়নকদ বারি॥

যে পথে রাতি চলল রতি-চোর।
সে পথে মনরথ গেলহি মোর॥
দেহ রহল জমু সূধ পসারি।
কহ কবিশেথর প্রেম বিচারি॥৬৮॥৭৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুণির ১২০৫ সংখ্যক পদ।
'আড়ানী' হলে 'আড়ানা' ক, খ, প-র-সা। ২।
'মনমথ' প-র-সা। ৩। 'টেভগেল' প-র-সা। ৪।
'চরণ-লখন' (ঘ পুথি) হলে 'চরণ নখর' ক, খ,
চ, প-র-সা। ৫। 'হেরি হেরি' ক, ৫, চ,
প-র-সা। ৬। 'পিরিতি' ক, চ, প-র সা। १।
'না' ক, খ। ৮। 'নয়নিক' ক, চ। ৯। 'হৄধ'
ক প-র-সা।

तिक वि

ত—৪। "শুরুজন" ইত্যাদি। প্রভাত হইল;
শুরুজন জাগিল; (অদনে) শ্রীকুঞ্জের চরণ-লক্ষণ
অর্থাং ক্রফ্চ-চরণের ধ্বজ-বজ্ঞাঙ্কুশ ইত্যাদি চিহ্ন (সিক্ত মৃত্তিকার মৃদ্রিত) দেখিয়া (আমার) বদন
অস্তরূপ অর্থাৎ চিক্তার বিমলিন হইল।

৭ — ৮। "গুরুজন" ইত্যাদি। তথন (আমি)
গুরুজনের ভরে সেই চরণ-চিহ্ন (গোমর-জ্ঞলাদি বারা
অঙ্গন-লেপনের ছল করিয়া) লেপিতে চাহিলাম;
কিন্ত বিশেষ বিরীতি অর্থাৎ অনভ্যাস বলিয়া
লেপিতেও পারিলাম না। (ধ পুথির পত্র-পার্যে হুর্বোধ্য

'বিরিতি' শব্দের অর্থ—'লেপনক্ত রীতং নান্তি' লিখিত আছে)।

৯—১০। "সংশ্রম" ইত্যাদি। (আমার)
ভয় হইল; মন অনবরত ঘুরিতে লাগিল অর্থাৎ
কোন উপায় উদ্ভাবন করিতে পারিল না; (কিন্তু
সোভাগ্য-ক্রমে) আমার নয়নের জল-ধারা সেই
ভয় দ্র করিল অর্থাৎ আমি অনভ্যাদ হেছু লেপন
য়ারা শ্রীক্রফের পদ-চিক্ল বিলুপ্ত করিতে না পারিলেও
আমার অশ্রুজন অবিরলধারে পতিত হইয়া শ্রীক্রফের
চরণ-চিক্তপ্তলি ধুইয়া ফেলিল।

১:—১৪। "যে পথে" ইত্যাদি। রজনীতে রতি-চোর অর্থাৎ প্রচ্ছেরকামুক প্রীক্ষণ যেই পথে গেলেন, সেই পথে (তাঁহার সঙ্গে সজে) প্রীরাধার (সমস্ত) মনোরথও গমন করিল; (কেবল) তাঁহার দেহ যেন সামান্ত চৈত্তত্ত-মাত্র প্রকাশিত করিয়া রহিল; (অর্থাৎ শ্রীরাধার সামান্ত চেতনা-শক্তি থাকিলেও অন্তমনস্কতা হেতু তাঁহার কোন বিষয়েরই বিশেষ অন্তভূতি রহিল না)—কবিশেখর (শ্রীরাধার) প্রেম বিচার করিয়া (এই কথা) কহিতেছেন।

দিনান্তরে।

थानमा ।>

সধিং—সে সব কহিতে লাজ।
যে করে রসিক-রাজ॥
আলিনা আওল সেহ।
হাম চললুঁ গেহ॥
ও ধরু আঁচর ওর।
ফুরল কবরি মোর॥
টীঠ নাগর চোর।
পাওল হেম-কটোর॥
ধরিতে ধরল তার।
ভোড়ল নধের ঘার॥

চকোর ও চপল চাঁদ। পড়ল প্রেমের ফাঁদ॥ কবি বিভাগতি ভাগ। পুরল দুহুঁক কাম॥৬৯॥৭৩২॥

পাঠান্তর

 >। ইছা প-র-সা পুথির >২•৬ সংখ্যক পদ।
 २। 'मथি হে' খ, খ। ৩। 'চকোরে' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'দোহক' খ, খ।

টীকা

৭—৮। "তীঠ" ইত্যাদি। চোর অর্থাৎ পর-ধনের অপহারক ধৃষ্ট নাগর (অঞ্চল অপসারিত করায়) অর্থের কটোরা আধ্যে হইল। (স্তন-ছয়ের উল্লেখ না করিয়া উহা অর্ণ-কটোরারপে বর্ণিত করায় অতিশ্রোক্তি অলকার হইয়াছে)।

১১—১২। "চকোর" ইত্যাদি। চকোর অর্থাৎ শ্রীক্ষণ্ড ও চঞ্চল চাঁদ অর্থাৎ শ্রীরাধার ইতন্ততঃ দঞ্চালত বদন —উভরে প্রেমের ফাঁদে পতিত হইল। (অর্থাৎ চক্র যদিও প্রথমে চকোরের নিকট হইতে নিজের স্থধা-ভাণ্ডারটিকে রক্ষা করার জন্ম কিংবা চকোরকে বঞ্চিত করিয়া কৌতুক দেখার জন্ম ইতন্ততঃ দঞ্চলন খারা চকোর হইতে আয়া-রক্ষা করিতেছিল, কিন্তু শেষে উভরে উভরের অনুস্বাগন্মপ বন্ধনে আবন্ধ হইরা পরস্পারের অনুস্বা কার্যাত বাধ্য হইল।)

তথা রাগ।>

যাইতে যমুনা-সিনানে।
সক্ষহিং কাল সমানে।
অলখিতে আওল কান।
হাম তব বন্ধ বয়ানা।
ননদিনি আগে আগে যায়।
ভিহিঁ কিছু কহিতে না পায়।

ও বর বিদগধ নাহ।
ইথে যে করল নিরবাছ। এছ।
পুন পিছে পিছে গেও সেহ।
উলটি হেরিতেং শ্রাম-দেহ।
অলখিতে চুম্বন কেল।
ভাবে অবশ তমু ভেল।
বিহি দিল কণ্টক হাথেং।
চললিত্ঁ অধমক সাথে।
কয়লত্থ্যমুনা সিনান।
জ্ঞানং কহে সত্থে কি পরাণ॥৭০৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২० । সংখ্যক পদ।
 ২। 'অক্হি' প-র-সা। ৩। 'নয়ান' প-র-সা।
 ৪। 'হেরিয়ে' ক। ৫। 'হাতে' ক। ৬। 'ভানদাস'
 ক, প-র-সা।

मिनाखद्र।

ভূপানী।>
একসরিং যাইতে যামুন° তীর।
অলথিতে আয়ল শ্যাম-শরীর ॥
অসম্বরে° ছিল মোর অক্স উদাস।
কত বেরি হেরি হেরি মৃহ্° হাস॥
এ সথি এ সথি অপরুপ কাজে।
দীঠহি দীঠ পড়ল রহি॰ লাজে॥
আগে আগে অমুসরি ফিরি ফিরি চায়।
বিহসি বয়নে খণে বয়ন লাগায়॥
আন ছলে কত যে করয়ে পরিহাস।
হেন বুঝি কত কুলজা-কুল নাশ॥
ভানইতে মধুর মুরলি-রব থোর।
খসরে কাখের কুক্ত নীবি-নিচোল॥
কি দেখিলুঁ কি শুনিলুঁ কহনে না যায়।

জ্ঞানদাস কৰে পিরিতি যাহার ॥৭১॥৭৩৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২০৮ সংখ্যক পদ।
২। 'এক সরী' ক, প-র-সা; 'এক সরে' ধ।
৩। 'যমুনা' ক, চ; 'যমুনাক' প-র-সা।
৪। 'অছরে' ক, চ, প-র-সা। মুদ্রিত পদাবলীর
'অছরে' পাঠে অর্থ-সক্তি হয় না। ৫। 'মুহ্'
(চপুথি) হলে 'মৃহ্ মৃহ্' ক, ধ, প-র-সা; 'ও
মৃহ্'ব। ৬। 'তহি' প-র-সা।

ভখা রাগ।১

বরুণক দেশ রয়নিং চলি গেল।
অরুণাও অতি স্থরপতিঃ-দিগ ভেল॥
ঐছে সময়ে নিজ কেলি-নিবাসে।
বেশ কয়ল পিয়া বহু প্রতিআশেণ॥
আধাও আধ তাহে না পুরল আশ।
হৈরি বিঘিনি কত ছাড়য়ে নিশাস॥
নাহক চীতহি অতিশয় খেদ।
ভ্রানদাস কহু বিহিক সম্বোদ ॥ ৭২॥৭৩৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-দা পৃথির ১২০৯ সংখ্যক পদ।
২। 'রজনি' ক, থ। ৩। সকলগুলি পুথিতেই
'অরুণা' পাঠ আছে। মুদ্রিত পদাবলির 'অরুণ'
গাঠে ছন্দোভঙ্গ অনিবার্যা ৪। 'শুভপতি' প-র-দা।
৫। 'প্রীতি আশে' ক; 'প্রিতি আসে' চ।
७। 'আধ'ক। १। 'না কহ'ব।

টাকা

>-- ২। "বরুণক" ইত্যাদি। রজনী বরুণের দেশে অর্থাৎ বরুণাধিষ্ঠিত পশ্চিম দিকে চলিয়া গেল; স্বাপতি-দিক্ অর্থাৎ ইক্রাধিষ্ঠিত পূর্বা দিক্ অত্যন্ত অক্লণ-বর্ণ হইল।

তথা রাপ ৷>

বন্ধুর রসের কথা কি কহব ভোর।
মনের উল্লাস যত কহিল না হোর ॥
এক ছুই গণনাতে অন্ত নাহি পাই।
ক্রপে গুণে রসে প্রেমে আরতি বাঢ়াইং॥
দণ্ডে প্রাহরে কিত কলপে না দেখে॥
দেখিলে মানরে যেন কভু দেখি নাই।
পদ্ম শৃষ্ম আদি কত মহানিধি পাই॥
ভ্যানদাস বলে ভাল মনে মনে থাক।
এড়াইতে নারিলা ঠেকিলা বিষ্ম

914 HOBBOR #

শুভলি স্বন্দরিং

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথিব ১২১০ সংখ্যক পদ। ২। 'বাড়াই' ঘ, চ। ৩। 'মাদেকে বরিখে' ছলে 'মাদেক বরিখে' ক, প-র-সা; 'মাদেখে বরিখে' খ; 'নাদেক বরিখে' চ।

দিনান্তরে।

धाननी ।>

একলি মন্দিরে

কোরহি শ্যামর-চন্দ।
তবহুঁ তাকর॰ পরশ না ভেল
এ বড়ি মরমে ধন্দ॥
সজনি পাওলুঁ পিরিতিক ওর।
শ্যাম স্থনাগর রসের সাগর।
কঠিন হৃদয় তোর॥ গ্রুণ॥
কপ্তরী চন্দন আলে বিলেপন
দেখিয়ে শ্রধিক জোর।
বিবিধ কুস্মেম বাদ্ধল কর্রী
শিধিল না ভেল তোরণ॥

অমল কমল- বদন-মাধুরীদ না ভেল মধুপ সাথ। পুছইতে ধনি ধরণী হেরসি হাসি না কহসি বাত॥ কিবা রতি-পতি বসতি বিষয়ে দেখিয়া দেয়লি শ্ভন্দ। জ্ঞানদাস কহে এ দোষ কাহার

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০০০ ও প-র পুথির ১০০০ সংখ্যক পদ। ২। 'শুতলি স্কর্নর' স্থলে 'শুতরা আছিলা' খ, ছ। ৩। 'ভাকর' (প-র-সা পুথি) ছলে 'ভাহার' ক, খ, ছ, চ, প-র। ৪। 'রদের সাগর' (প-র পুথি) ছলে 'শেশব কিবা' ক, খ, ছ, চ, প-র-সা। 'শুম স্থানার' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি থ পুথিতে নাই। ৫। ক, খ, ছ, চ পুথিতে 'শু' নাই। ৬। 'জোর' (প-র-সা পুথি) স্থলে 'উলোর' ক, খ; 'রোর' ঘ, চ; 'কন্দরী চল্লন' ইত্যাদি পংকি চারিটি প-র পুথিতে নাই। ৭। 'ভোড়' প-র-সা। ৮। 'অমল' ইত্যাদি স্থলে 'অমল বদনক্মল-মাধুরী' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৯। 'ধরসি' খ। ১০। 'দেখলি' ক। ১১। 'দেবে দে' (প-র পুথি) স্থলে 'দেবে' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা।

টাকা

--- । "সন্ধান" ইত্যাদি। হে স্থি ! তোমার প্রেমের সামা পাইলাম ন্ধাৎ তোমার প্রেমের দোড় কত দ্র, ব্রিতে পারিলাম ! লারক-শ্রেও ঐ ক্রফ রসের সমূদ্র ; (কিছ) তোমার হালম কঠিল ! (ন্ধাৎ ছ্মি ন্ধ্রেমিকা ও কঠিল-ছাল্যা বলিয়াই ঐ ক্রফকে সজ্যোগ-রদে বঞ্চিত করিয়াছ)। "শ্রাম স্থলাগর শৈশ্ব কিবা" পাঠের ন্ধ্রেশি—"প্রনাগর শ্রাম কি শিশু ন্ধ্রিষ্ঠিক প্রশ্ব করিলে 'সন্ধ্রিল পাঞ্জি পিরিতিক ওর' এই ন্মর্থ করিলে 'সন্ধ্রিল পাঞ্জি পিরিতিক ওর'

বাক্যের বিশেষ সার্থকতা থাকে না এবং 'শ্রাম' শব্দের 'স্থনাগর' বিশেষণটিও সঙ্গত হয় না; স্থতরাং প-র পুথির পাঠই সমীচীন বোধ হয়।

युर्हे ।)

সজনি ও কথা কহিলং নয়। শ্রাম স্থনাগর গুণের সাগর পि ज़ि दिवादि श्राप्त ॥ धा ॥ কত পরকারে চেত্রন করায়ুণ চেতন না ভেল মোর। অভিমান করি পাশ মোডিঃ ফেরিং ছথে ত চলল ভোর॥ উঠিলুঁ জাগিয়া দেখি নাহি পিয়া क्रमर्य वाजिला भाग । আহা মরি মরি মদন-বাণেতে জর জর ভৈ গেল। সে সৰ সোঙ্গি চিত বেয়াকুল কেমনে আছয়ে পথা। এ কথা ১ শুনিতে জ্ঞানদাস কহে বিদরয়ে মোর হিয়া ॥৭৫॥৭৩৮॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সা পুশির ১২১২ ও প-র পুণির ১৩।০৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কথন' প-র। ৩। 'কররে' ক; 'করারে' প-র। ৪। 'মোড়া' ক, চ; 'মুড়ি' প-র। ৫। 'ফরি' ক, ঘ, চ; 'রহি' প-র। ৬। 'হথেতে' ক, খ, চ। ৭। 'বাজ্রে' ক, খ, প-র-সা। ৮। 'হোই' প-র। ৯। 'চিত বেয়াকুল' স্থলে 'বিভবে আকুল' ঘ। ১০। 'কেমনে আছরে' স্থলে 'বেজন করিছে' প-র। ১১। 'কথা' স্থলে 'স্ব' প-র।

দিনান্তরে। তথা রাগ।>

এক দিন যাইতে ননদিনী সনে।
খ্যাম বন্ধুর কথা পড়ি গেল মনে॥
ভাবে ভরল মন চলিতে না পারি।
অবশ হইল তমু কাঁপেং থরহরি॥
কি কহিব সখি সে হইল বড় দায়।
ঠেকিলুঁ বিপাকে আর না দেখি উপায়॥
ননদী বোলয়েহে লোঁ° কি না তোর হৈল।
কহে চণ্ডীদাস উহার কপালে যে

ছিল ॥৭৬॥৭৩৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১ং১৩ সংখ্যক পদ। ২। 'কাঁপি' প-র-সা। ৩। 'হেঁলো' ক; 'হেন' প-র-সা।

> मिनांखद्र । धननो ।>

একলি আছিলুঁ হাম গাঁথইতে হার।
সগরি খসল কুচ-চীর হামার ॥
তৈখনে হাসি হাসি আওল কান্ত।
কুচ কিয়ে ঝাঁপব নিবিহক বন্ধং ॥
হাসি বহুবল্লভ আলিজন দেল।
ধৈরজ লাজ রসাতল গেল ॥
করে কি বুঝায়ব দুরহি দীপ।
লাজে না যাওত এ কঠিন জীব ॥
বিদ্যাপতি কছে মরমক কাজ।
জিবন দোঁপলি যাহে তাহে কিয়ে

পাঠান্তর

नाम ॥११॥१८०॥

गांशांचन

>। हेरा প-न्न-मा भूषित्र ১২১८ मश्लाक श्रम।

र। 'निविरुक नक्ष' ऋल 'किल्ल नीविरक्क' कः

ত। 'কোবে' ক। ৪। 'বুঝাওব' ক। ৫। 'যাওল' ক। ৬। 'জীবন' ক। ৭। 'সোপিবে' প-র-সা।

मनिछ ।>

আজুক শয়নে ননদিনী সনে শুভিয়া আছিলুঁ সই।

যে ছিল করমেং বন্ধুর ভরমে মরম ভোহারে কই॰॥

নিন্দের আলসে বন্ধুর ধাধসে তাহারে করিলুঁ কোরে।

ননদী উঠিয়া রুধিয়া বলিছে বন্ধুয়া পায়লি॰ কারে॥

এত টাঠপনা জানে কোন জনা বুঝিলুঁ তোহারি রীতি। কুলবতি হৈয়া পর-পতি লৈয়া

এমতি করহ নিতি।

त्य रूनि खाँवरण श्राद्ध व प्रतास्त व प्रतास्त व प्रतास्त व प्रतास्त व प्रतास्त व प्रतास व प

দাদা ঘরে আইলে° করিব গোচরে থেণেক বিরাজ্ঞ রাই ॥

নিঠুর বচনে কাঁপিছে পরাণে মরিয়া রহিলুঁ লাজে।

ফিরাইয়া জাঁথি গরবাথাকি^চ স্থানে আমারে ভা**জে** ॥

এক হাতে সখি কচালিয়ে গ্রাধি ময়ানে দেখিয়ে আর ।

চণ্ডীদাসে কয় কিবা কুল-ভয় কান্তুর পিরিতি যার॥ ৭৮॥৭৪১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'মরমে' ক, খ। ৩। 'ভাহারে কই' ক; 'কহিরে ভোই' প-র-সা। ৪। 'পাইলি' ক, খ। (। 'এলে' ক। ৬। 'বিয়াল' (প-র-সা পুথি)
 ছলে 'বিরাল' ঘ, চ। ৭। 'পরাণ' ক, খ।
 ৮। 'গরবথাকি' ঘ। ৯। 'বজে' ক। ১•।
 'কচালিয়া' ক, খ।

ख्यां ज्ञांग ।>

আর এক দিন সধি শুভিয়া আছিলুঁ।
বন্ধুর ভরমে ননদিনী কোলে নিলুঁ॥
বন্ধুর ভরমে ননদিনী কোলে নিলুঁ॥
বন্ধু নাম শুনি সেই উঠিল রুধিয়া।
কহে তোর বন্ধু কোথা গেল পলাইয়া॥
সভী কুলগভী-কুলে স্থালি দিলি আগি।
আছিল আমার ভালে তোর বধ ভাগিই॥
শুনিয়া বচন তার অথির পরাণি।
কাঁপয়ে শরীর দেখি আঁখির ভাজনি॥
কেমত্তেই এড়াব সধি সে পাপিনীরই হাঝে।
বনের হরিণী থাকে কিরাতের সাথে॥
বিজ্ঞ চণ্ডীদাসে বলে পিরিভি এমতি।
যার যত জ্বালা তার ভত্তই

পিরিতি ॥৭৯॥৭৪২ ॥

ইতি সম্ভোগ-স্বপ্ন-রসোদগারঃ। ইতি ষষ্ঠ-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুথির ১২১৬ সংখ্যক পদ।
 বিধ ভাগী' ক; 'বধের ভাগি' প-র-সা।
 া 'কেমনে' ক। ৪। 'ভাপিনীর' ক।

অথাভিদারামুরাগঃ।

শ্রীগৌরচন্দ্র।

কানোখ। ১

গৌরাজ-চরিত কিছু কহনে না যার। পুরব সোঙরিং পত্ত মৃত্ত মৃত্ত ধার॥ নিরজনে কছে চল হ্ররধুনী-তীরে।
পশুপতি পৃজিব বিপদ যাবে দুরে॥
ঐছন বচন সভে রচন করিয়া।
আগোর চন্দন ফুল হস্তেত করিয়া॥
নিজ জন সঙ্গে চলে গোরা বিজ-মণি।
কহে বিশ্বস্তর গোরার যাইয়ে

নিছনি 1১॥৭৪৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৩২ সংখ্যক পদ।
২। 'অঙরি' চ। ৩। 'ঐছে' ক, প-র-সা।
৪। সকল পৃথিতেই 'অগৌর' পাঠ আছে; ইহা 'অঙ্কে' শব্দের পরিবর্তে ব্যবহৃত হইয়াছে।

কামোদ। ১

সবহুঁ বধূজন চলু বুন্দাবন
গোরি আরাধন লাগি।

ঐছন মুগধ বচন রচন করিং
গুরুজন অসুমতি মাগি ॥
হরি হরি কাহাঁ। শিখলি পরকার।
গুরুজনে বাঁচি মিছই বচনামৃতে
দিনহি করলিং অভিসার ॥ ধ্রুং॥
বেশ বনারত ননদি শুনারত ।
গোরিং আরাধি মনোরপ পুরব
পশুপতি-নন্দন হাধ্ ।
বাসিত কুন্ম কপ্রিত ও তাতুল
ভরি লেই ২ চন্দন কটোর।
গোবিন্দদাস পত্ত দরশায়ত
যাহাঁ নাহি কটক-আচোর ২ ॥ ২ ॥ ২ ॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ৪৫•।১২৩০ ও প-র পুৰির ১৫।৩৬ সংখ্যক পদ। ২। 'রচন করি' বলে 'ধনি শুক্ক লে' প-র। ৩। 'তৈ ধনে' প-র।
৪। 'কাহে'ক। ৫। 'চললি' প-র। ৬। 'বনারতি'
প-র-সা ১২৩০ সং পদ। ৭। 'শুনারতি' প-র-সা
১২৩০ সং পদ। ৮। 'আফু গৌরি' প-র-সা ১২৩০
সং পদ। ৯। 'মনমধ' প-র-সা ১২৩০ সং পদ।
১০। 'সাধ'ক, প-র-সা। ১১। 'কর্প্র' প-র-সা।
১২। 'কেটক আঁচোর' ধ; 'কন্টক চোর' প-র-সা;
'কঠ আচোর' প-র।

তথা রাপ ৷১

গৌরি আরাধন ছল করি স্থানরি

মীললিং নাগর সজে।
আগুসরি নাহ রাই-কর ধরি তহিঁ
আনল কৌ ভুক-রজে॥
কুণ্ডক তারে কুঞ্জ অতি শীতল
বহতহি মলয়-সমীর।
কোকিল কুহরত কপোত ফুকারত
চৌদিশে শিখিকুল ফীরং॥
রাধা-মাধব কেলি-বিলাস।
দোহেঁ দোহাঁণ বদন নেহারি ঘন চুম্বয়ে
কতলুঁ হাস পরিহাস॥ গ্রুণ॥
চন্দন কুস্থম-হারণ সব স্থিগণ
দেয়ত কান্তুক অজে।
গ্রুহন সময়ে কবলুঁ রাধামোহন
হেরব সহচরি সজে॥৩॥৭৪৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুখির ১২৩৪ সংখ্যক পদ। ২। 'মিললি' চ। ৩। 'ক্লির' ক, প-র-সা। ৪। 'ফুঁহে ছুঁহা' ক, 'ছছ দোহার' প-র-সা। ৫। 'কুছুমহার' ক। ৰডারী।১

রাই কামু নিকুঞ্জ-মন্দিরে।
বিসিয়াছে বেদীর উপরে ॥
হেমমণি-খচিতং তাহাতে।
বিবিধ কুস্থম চারি ভিতে ॥
সখীগণ চৌদিগে বেড়িয়া।
বসিয়াছে তুহুঁ মুখ চাঞা ॥
কুণ্ডের পুরুবে সেই কুঞ্জ ॥
মলয়-পবন বহে তায়।
তরু পর শারী শুক গায় ॥
রাই কামু সে শোভা দেখয়ে ।
এ যত্নন্দন নিরখয়ে ॥৪॥৭৪৬ ॥
সত্র সম্ভোগ-পদং যথাসন্তবং গেয়ম্ ।
ইতি সপ্তম-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৩৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রচিত' ক । ৩ । 'বেড়ি' ব, চ । ৪ । 'দেখর' প-র-সা। ৫ ৷ 'নিরখর' প-র সা।

অথ আক্ষেপাসুরাগঃ। শ্রীগোরচন্দ্র:।

श्रहें ।)

গোরা-অনুরাগে মোর পরাণ কাতরে।
নিরবধি ছল ছল আঁখি-জল করেই ॥
গোরা গোরা করি মোর কি হৈল বিয়াথি।
নিরবধি পড়ে মনে গোরা গুণনিধি ॥
কি করিব কোথা যাব গোরা-অনুরাগে।
অনুখণত গোরা-প্রেম হিয়ার মাকে জালে॥
গৌরাজ-পিরিতি খানি বড়ই বিষম।
বাস্থ কহে নাহি রহে কুলের ধরম ॥১॥৭৪৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৩৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝুরে' প-র-সা। ৩। 'অফুক্ষণ' ক।

थाननी ।>

রূপ লাগি আঁখি ঝুরে গুণে মন ভোর। প্রতি অঙ্গ লাগি কান্দে প্রতি অঙ্গ মোর ! হিয়ার পরশ লাগি হিয়া মোর কান্দে। পরাণ পিরিতি লাগিং থির নাহি বান্ধে॥ সোই কি আর বলিবও। যে পুনি॰ করিয়াছি মনে॰ সেই সে৬ করিব।এ॥ দেখিতে যে স্থুখ উঠে কি বলিব ত। । দরশ পরশ্বণ লাগি আউলাইছে গাণ্ড হাসিতে খসিয়া পড়ে কত মধুধার। লত্ত লত্ত হাসে পত্ত পিরিতির১৩ সার১৪॥ গুরু গরবিত মাঝে রহি সখী সঙ্গে । পুলকে পুরয়ে ততু শ্যাম-পরসজে। পুলক ঢাকিতে করি কত পরকার। নয়নের ধারা মোর বহে অনিবার ৮ ঘরের যভেক সভে ১ করে কাণাকাণি। জ্ঞান কহে লাজ ঘরে ভেজাইলাম

পাঠাস্তর

পাগুনি ॥২॥৭৪৮॥

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৩৭।১২০৮ ও প-র পুথির ১৪।৩৭ সংখ্যক পদ। 'ধাননা' হলে 'ীরাগ' প-র। ২। 'পরাণ পিরিতি লাগি' হলে 'পরাণ-পুতলী মোর' প-র-সা। ৩। 'সোই' ইত্যাদি পংজ্যির হলে 'কি আর বলিব আমি কি আর বিলব' প-র-সা। 'সোই' ইত্যাদি প্রব-কলিটি প-র পুথিতে লাই। ৪। 'পুনি' হলে 'পণ' ক; 'পোণ' প-র-সা। ৫। 'মনে' হলে 'আমি' প-র-সা। ৬। 'সেই সে' হলে 'লে পোণ' প-র-সা।

'দেখিতে' হলে 'কহিছে' প-র-সা, প-র। ৮। 'উঠে' হলে 'বাড়ে' প-র সা। ৯। 'কি বলিব তা' হলে 'কি কহিব কায়' প-র-সা; 'কি বলিব তার' প-র। ১০। 'দরশ পরশ' হলে 'সে অঙ্গ পরশ' প-র-সা; 'সে রস পরশ' প-র। ১১। 'আউ-লাইছে গা' হলে 'আউলাইছে গায়' প-র-সা; 'দগধে হিয়ার' প-র। ১২। অতঃপর প-র-সাও প-র প্থিতে নিম্লিখিত অতিরিক্ত পংক্তিহর দৃষ্ট হয়; যধা,—

'দেখিতে না দেখে আঁথি স্থাম বিহু আন।
ভরমে আনের কথা নাহি শুনে কাণ।'
প-র পুথিতে 'নাহি শুনে কাণ' হলে 'না কছে
বরান' পাঠ আছে।

অতঃপর প-র পুথিতে নিম্নিথিত ছুইটি কলি বারা পদটি সম্পূর্ণ করা হুইয়াছে, যথা,—

'শুনিতে না শুনে কাণ আন প্রস্থা।
সোঙ্রি স্থনে মোর প্রাক্ত অঞ্চ ।
ক্রানদাস কহে মুঞি কারে কি বলিব।
, বন্ধর লাগিয়া আমি সাগরে পশিব॥'
১৩। 'পিরিতির' স্থলে 'অমিয়ার' প-র-সা। ১৪।
অতঃপর প-র-সা পুথিতে নিম্নলিধিত কলি ধার।
পদটি সম্পূর্ণ করা হইয়াছে, ব্ধা,—

'ষত্নাথ দাস করে শুন গো সকনি।
পিরিতি লাগিয়া দিব যৌবন নিছনি॥'
'শুক গরবিত' ইত্যাদি অবশিষ্ট পংক্তিশুলি প-র-সা
প্রিতে ১২৩৮ সংখ্যক স্বতন্ত্র পদরূপে লিখিত ছইয়াছে। ১৫। 'মাঝে' স্থলে 'সজে' প-র-সা। ১৬।
'স্থী সকে' স্থলে 'নানা রকে' প-র-সা। ১৭। 'ঘরের
মতেক সভে' স্থলে 'ঘরে পরে সব লোক' প্রাঃ হস্তলিখিত পুথি; 'দেখিয়া ঘরের লোক' প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷>

সই এবে বলি কি আর কুল-ধরমে। দীঘল নয়ানেরং বাণ হানিলে মরমে॥ সই এবে বলি না রহে পরাণ।
জাগিতে খুমিতে দেখি বাঁশিয়ার করান।
সই এবে বলি তার কি সন্ধান।
তাকিয়া মার্যাছে বাণ যেখানে পরাণ।
সই এবে বলি কি রূপ দেখিলুঁ।
দেখিয়া মোহন রূপ আপনা নিছিলুঁ।
সই এবে বলি কি রূপ সাজনি ।
বাচিয়া যৌবন দিব শ্যাম-রূপের নিছনি।
সই এবে বলি মনে তাই জাগে।
গোবিন্দ্রদাস কহে নব অফুরাগে। ৩॥৭৪৯॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১২৩৯ সংখ্যক পদ।
 ২। 'ঞাথির' প-র-সা। ৩। 'বিসিয়া' ক; 'বাসি-য়ার' ড়; 'বাসিয়ার' চ। ৪। 'মারিয়াছে' ঝ, ড়, চ।
 ৫। 'আপনে' ক। ৬। 'সই এবে বলি' ইত্যাদি
কলিট ড় পুথিতে নাই। ৭। 'তাহাই' ক, চ।

সখ্যক্তিঃ।

शननी ।>

শুন্দরি ধরবিং বচন হামার।
কাসুক প্রেম-রতন পুন ও গোপবি
বেকত করবি কুলাচার॥
বৈরক্ত লাজ করণ তুরা সমূচিত
শুনবি গুরুজন-ভাষ।
আপনকং মান আপে পুন রাখবি
বৈচে নহত উপহাস॥
তুরা সম কো পুন আছরে ত্রিভুবন
কুলালবতিং গুণবস্ত।
ঐছন সূহুঁ কুল হেরইতে উলোর
ধন-জনং গৌরব-জন্তঃ॥

ভাব অন্তরেদ যব হোরব > অঙ্কুর > ।
আনতহিঁ > > দেরবি চীত > ২।
গোবিন্দদাস কহ ঐছে প্রেম নহ
অনুরাগ-গতি বিপরী হ > ॥ ৪॥ ৭৫ • ॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪০ ও প-র পুথির ১৪।১০ সংখ্যক পদ। ২। 'শুনবি' প-র-সা। ৩। 'ধন' প-র-সা। ৪। 'করবি' প-র। ৫। 'আপক' ক। ৬। 'কুল শীল লাজ' প-র; 'কুলশীল' ক, চ, প-র-সা। १। 'ধন' পর। ৮। 'ভাব অস্তরে' স্থলে 'ভাবাস্তর' প-র। ৯। 'হোরত' ক। ১০। 'হোরব অস্তর' প-র। ১১। 'আনতহি' স্থলে 'আনহি' প-র-সা। ১২। 'চীত' স্থলে 'চীতে' প-র। ১০। 'বিপরীত' প-র।

টাকা

৮—১১। "তুরা" ইত্যাদি। ত্রিভ্বনে তোমার সদৃশ কুলশীলবতী ও গুণবতী আর কে আছে? (তোমার ক্লার) এই প্রকার উভর কুল ক্লাণিং ক্লামি-কুল ও পিতৃ-কুল দেখিতে (কাহার) উজ্জ্বল ? (এবং কাহার এরপ)ধন, জ্বন ও গৌরবের সীমা ক্লাধিং পরাকাঠা ?

১২—১৫। "ভাব" ইত্যাদি। যথন (ভোমার)
ফ্রন্থের অন্ধ্রাপ অন্ধ্রিত হইবে, (তথন) অন্ধ্র বিধ্রে
চিন্ত অর্পণ করিবে। গোবিক্ষদাস কহিতেছেন—
প্রেম ঐক্সণ নহে; অন্ধ্রাগের গতি বিপরীত অর্থাৎ
উহাকে বাধা দিতে চাহিলে উহা আরও প্রবল হইরা
উঠে।

थाननी ।>

সখি হে ফিরিয়াং আপন ঘরে যাও।
জিরত্তে সরিয়াণ যে আপনা খাইয়াছে
তাহেং তুমি কি আর বুরাও ॥ এ ॥

নয়ন-পুতলী করি

হিরার মাঝারে করি প্রাণ।

পিরিতি-আগুনি স্বালি সকলি পোড়াইয়াছি

জাতি কুল শীল অভিমান ॥

নাজানিয়া› মুড় লোকে, কি জানি কি বলে নোকে

না করিয়ে ৷ প্রাত-বিপার জলে এ তমু ভাসাইয়াছি ৷

থাইতে শুইতে রৈতে ৷ প্রান নাহি লয় ৷

মুরারি গুপতে ৷ কহে পিরিতি এমতি ৷ হৈলে

তার গুণ ৷ তিন লোকে ৷ গায় ॥ ৫॥৭৫১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প র-সা পুথির ১২৪১ ও প-র পুথির ১৪।২২ সংখ্যক পদ। 'ধানদী' হলে 'ভাটিরারী' ক, থ, ব, চ। ২। 'ফেরিরা' প-র। ৩। 'মরিল' প-র-সা। ৪। 'থাইল সে' প-র-সা। ৫। 'ভারে' প-র। ৬। 'ফ্ধাণ্ড' প-র-সা। ৭। প-র-সা ছাড়া অক্তাক্ত পুথিতে 'শু' নাই। ৮। 'লইল' ক; 'লইয়াছি' প-র। ৯। 'পোড়াঞাছি' ক, প-র। ১০। 'কারে' থ। ১২। 'ভাসাঞাছি' ক, প-র-সা, প-র। ১০। 'নিতে' প-র-সা; 'পথে' প-র; 'রৈতে' শন্ধ থ ও ব পুথিতে নাই। ১৪। 'নাহি লয়' হলে 'মাহিক' প-র। ১৫। 'মনে' প-র। ১৬। 'গুপত' ক; 'গোপতে' থ। ১৭। 'পিরিভি এমতিং হলে 'এমন পিরিতি' প-র-সা। ১৮। 'মন' প-র-সা। ১৯। 'ভিন লোকে' ছলে 'এজলতে' প-র-সা। ১৯। 'ভিন

शांवणी ।>

কামু-অমুরাগে ঘরে রহিতে না পারি। কেমনে দেখিব তারে কহু না বিচারি। গুরুজন-নয়ন-পাপগণ বারি।
কোনে মিলিব সধী নিশি উজিয়ারিং॥
কামুর পিরিতি হাম ছাড়িতে নারিব।
রহিতে না পারি ঘরে কেমনে যাইব॰॥
শুনি কহে সধী শুন মো সভার বোল॰।
সবহুঁ ঘুমায়ব নহ উতরোল॥
বৈছন॰ যামিনি কোমুদি৬ ঘোর।
তৈছন॰ বেশ বনায়ব৮ তোর॥
এতহুঁ কহই১০ করু বেশ বনান।
ধনি অমুরাগিণি জ্ঞানদাস ভাগ॥৮॥৭৫২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪২ সংখ্যক পদ।
২। 'নিশি উজিয়ারি' স্থলে 'কহ না বিচারি'
প-র-সা। ৩। 'মিলিব' প-র-সা। ৪। 'শুনি'
ইত্যাদি স্থলে 'শুনি কহে সব সধী শুন মোর
বোল' ক, ঘ, চ; 'শুনি কহে স্থীগণ শুন' ইন্ডাদি
প-র-সা। ৫। 'বৈছনে' ক। ৬। 'কামিনি'
ক, ঝ, চ। ৭। 'বৈছনে' ক। ৮। 'বনায়ভ'
ক। ৯। 'এতহি' ক, ঝ। ১০। 'এতহ কহই'
স্থলে 'কহি স্থীগণ' প-র-সা।

एस ब्राम 15

কুন্দ-কুণ্ডমে জন্ত কবরিক ভার
হৃদয়ে বিরাজিত মোতিম-হার ॥
চন্দন-চরচিত ক্রচির কপুর ।
অক্সহি অন্স অনক ভরিপুর ॥
চান্দনি রঞ্জনি উজোরলি গোরি ।
হরি-অভিসার-রভস-রসে ভোরি ॥ ধ্রু ॥
ধ্বল বিভূষণ অস্বর বনই ।
ধ্বলিম কৌমুদি মিলি তমু চলাই ॥
ক্রেইতে পারজন-লোচন ভূপ ।
রক্সপুতলি কিয়ে বস মহা বুর ॥

পূর্বতি মনরথ গতি অনিবার। শুরুকুল-কণ্টক কি করয়ে পার॥ স্থরত-শিঙ্গার-কিরিতি সম ভাস। মিললি নিকুঞ্জে কহ গোবিন্দদাস॥৭॥৭৫৩॥
পাঠান্তর

১। এই পদটি ৩০৫ সংখ্যক পদরূপে ১য় শাখার পল্লবে পূর্বের্ব উদ্ধৃত হইয়াছে; স্থতরাং পাঠান্তর ও টাকা উক্ত পদে দইবা।

कारमाम ।ऽ

আদরে আগুসরি রাই হাদয়ে ধরি জামু উপরে পুন রাখি। নিজ কর-কমলে চরণ-যুগ মোছই হেরই তির থির আঁখি। পিরিতি মুরতি অধিদেবাণ। যাকর দরশনে সব ছখ মীটল সোই আপনে করু সেবা॥ **হিমকর** - শীতল · নীরহি ভাতলা কর-তলেদ মাজই মুখ। मजन निनि-मरन মৃত্ব মৃত্বী জই পুছই পম্বকি ছুখ ॥ অঙ্গুলে চিবুক ধরি বদনে তামুল পুরি মধুর সন্তাবই কান। গোবিন্দ দাস ভণ নিভি নব নৌভুন वाहेक>> व्यभिया-भिनान ॥৮॥१८८॥ পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৪৪ সংখ্যক পদ।
২। 'হেরইভে' প-র-সা। ৩। 'পিরিভি' ইত্যাদি
ছলে 'সন্ধনি পিরিভি' ইত্যাদি প-র-সা। ৪। 'হুরে পেও' প-র-সা। ৫। 'হিম সম' প-র-সা। ৬। 'নির গহি' প-র-সা। ৭। 'ভিতল' চ। ৮। 'নিজ করে' প-র-সা। ১। 'পুছই' ক; 'পুছভ' প-র-সা। > । 'নিতি নব নৌতুন' স্থলে 'নাহ রসিক পণ' প'র-সা। >>। 'রাই করু' প'র-সা।

উভয়োত্তরামুরাগো যথা।

ভোমার প্রেমে বন্দী হৈলাম শুন বিনোদ-রায়।
ভোমা বিনে মোর চিতে কিছুই না ভায় ॥
শয়নে স্বপনে আমি ভোমার রূপ দেখি।
ভরমে ভোমার রূপ ধরণীতে লেখি॥
গুরুজন মাঝে যদি থাকিয়ে বসিয়া।
পরসঙ্গে নাম শুনি দরবয়েং হিয়া॥
পুলকে পূর্য়ে অক্স আঁথে ঝরে জল।
ভাহা নিবারিতে আমি হইয়ে বিকল॥
নিশি দিশি বন্ধু ভোমায় গাশরিতে নারি।
চণ্ডীদাসে কহে হিয়ার রাথ স্থির করি॥৯৯৭৫৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৫ সংথ্যক পদ। ২। 'দরপরে' থ। ৩। 'নেহারিতে' ক।

তিরোধা ধানদী।>

স্থান্দরি আমারে কহিছ কি।

তোমার পিরিতি ভাবিতে ভাবিতে

বিভার ইইরাছি॥

থির নহে মন সদা উচাটন

সোরাথ নাহিক পাই।

গগনে ভুবনে দশ দিগ-গণে

তোমারে দেখিতে পাই॥

তোমার লাগিয়া বেঁড়াই ভ্রমিরা

গিরি নদী বনে বনে।

मनारे कांगरत मत्न।

আন নাহি চিতে

খাইতে শুইতে

শুন বিনোদিনি প্রেমের কাহিনী পরাণ বৈরাছে বান্ধা। একই পরাণ দেহ ভিন ভিন জ্ঞান কহে গেল ধান্ধা^২ ॥১০॥৭৫৬॥

পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ধাৰণ'ৰ, প-র-সা।

बीत्रांश 13

যেমত পিরিতি ভোমাতে আমাতে ভালে সে জানহ তুমি। ভাহ্মর ভাওই লোক-চরচাতে এমতি থাকিব আমি॥ আসিবা যাইবা দূরেতে থাকিবা না চাবে আমার পানে। বড়ই বিষম গুরু তুরজন (मिथिटन मत्ररम् थ्रांटन् ॥ তুমি যদি বল পরাণ-বন্ধু ভবে কুলে বা আমার কি। ইঞ্চিত পাইলে সব সমাধিয়াণ क्रा ७नाश्वान पि ॥ সে ছখ চাহিতে এ হুখ বড়ই কহি কেহো নাহি দেশী। গোপত পিরিভি রাখিতে যুগতি

পাঠান্তর

कटर त्रममग्री पांची ॥১১॥৭৫৭॥

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'ভারই' ক, প-র-সা। ৩। 'সমারিরা' থ।
৪। 'এ ছথ চাহিতে' ইত্যাদি কলির পরিবর্ত্তে—
'এ ছথ কহিতে সে ছথ বড়ই
কলম্ব রহিবে শেষে।
গোপত পিরিতি রাথহ যুবতি
কহরে লোচন দানে।'—ক, চ পুথি।

'সে ছথ চাহিতে এ ছখ বড় ৰে
কহি কোথা নাহি দেশে।
গোপত পিহিতি রাধহ সুবতি
কহে রসমন্ত দাসে ।'—প-র-সা পূথি।

ऋहिनो ।)

দোঁহে কহি দোঁহ অমুরাগ।

ছহুঁ প্রেম ছই হৃদেং জাগ।

দোঁহে দোঁহা করু পরিহার।
ছহুঁ আলিঙ্গই কত বার ॥
ছহুঁ বিষাধ্যে ছহুঁ দংশ।
ছহুঁ গুণ ছহুঁ পরশংস॥
ছহুঁ হেরি দোঁহার বয়ান।
ছহুঁ জন সজল-নয়ান॥
ছহুঁ কহু মধুরিম ভাষ।
নির্থয়ে যজুনাথ দাস "১২॥৭৫৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পৃথির ১২৪৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হিরে' প-র-সা। ৩। 'কহ' ব; 'কহ' প-র-সা।

ভূপালী।১

নব অমুরাগিণি নব অমুরাগং।
নীলল ছুছঁ তমুং গলে গলে লাগং॥
তহিঁ এক রজিণি পরম রসাল।
ছুছাঁ গলে দেওল এক ফুলমাল॥
টুটব ভয়ে ছুছাঁ পড়ু একং বন্ধ।
দৈবে ঘটায়ল প্রেম-আনন্দ॥
স্থি-মুখ হেরইডে উলসিত ভেল।
দৌহে মেলি মালাং সেই স্থি গলে দেল॥
বাছ পসারিয়া দৌহে দৌহা ধরা।
দোঁহ অধ্রামুতে দৌহ মুখ ভরা॥
ছুরে গেও মউর-শিশ্ও পিতবাসং।
ছুছাঁ গুণ গাওত গোবিন্দ্দাস ॥১০॥৭৫৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৯ সংখ্যক পদ।
২। 'অহরাগী' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'জন'
থ। ৪। 'লাগি' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'পড়ু,
এক' হলে 'পড়ি গেও' প-র-সা। ৬। 'মেলি
মালা' হলে 'গলমাল' প-র-সা। ৭। 'গীতবাস' ক।

CI RINF)

পেখলুঁ রে সখি যুগল কিশোর।
কালিদি-ভীর নিকুঞ্জক ওর ॥ এবং ॥
নব নবং রূপ নিরুপম লাবণি
মরকত্ত-কাঞ্চন-কাঁতি।
নারি পুরুখ তুত্ঁ লখই না পারিয়েং
অচু পরিরম্ভণভাতি॥
ঘন ঘন চ্ম্বনে লুবধ বদন তুত্ঁ
বিগলিত স্বেদ-উদ-বিন্দুং।
হেরি হেরি মরমং ভরম পরিপুরলং
কো বিধুমণিং কো ইন্দুং ॥
সিন্দুর অরুণ চন্দনং বিধু-মগুল
সঘনে উদিত অবং মেলি।
গোবিন্দদাস কছই নব অপরুপং
রাধা-মাধ্ব-কেলি ॥ ১৪॥ ৭৬০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৫০ ও প-র পুথির ৪২।২৭ সংখ্যক পদ। 'কেদার' স্থলে 'বড়ারি' প-র। ২। প-র পুথি ছাড়া অল্লাল্ল পুথিতে 'এ' নাই। ৩। 'নব নব' স্থলে 'সমবর' প-র। ৪। 'গোরই' প-র-সা। ৫। 'পারই' প-র-সা, প-র। ৬। 'ঐছে' প-র। ৭। 'ছবি' প-র-। ৮। 'বেল-উদ-বিন্দু' স্থলে 'বেত অরবিন্দ' প-র-সা; 'বেল অরবিন্দ' প-র-মা; 'বেল অরবিন্দ' প-র-সা, প-র। ১০। 'গরিপুরিত' প-র-সা। ১১। 'বিধু থনি' প-র।

১২ 'কো' ইত্যাদি পংক্তি হলে 'কোরছি মণি করু ইন্ধু' থ, ছ। ১৩। 'বদন' ক। ১৪। 'আধ' ক, থ, ছ, চ। ১৫। 'নব অপরূপ' হলে 'অপরূপ নব' ক, থ'; 'ইছ অপরূপ' প-র-সা; 'সব অপরূপ' প-র।

[৩য় শাধা

টীকা

৭—১০। "ধন ঘন" ইত্যাদি। বারশার চ্বনে উভয়ের বদন লুক্ক হইল; থেদজল-কণা বিগলিত হইল; (সেই শোভা) দেখিয়া দেখিয়া (স্থীদিগের) চিত্ত কে চক্রকান্ত-মণি ও কে ইল্, (ইহা ভাবিয়া) ল্রান্তিতে পরিপূর্ণ হইল। (চক্রকাশ্ত-মণি চক্র-কিরণম্পর্শে জল-বিন্দ্-রাজি উল্গীন করে; এ স্থলে প্রীরাধা ও প্রীক্রফ —উভয়ের বদন স্থোদ বিন্দ্-পরিপূর্ণ হওয়ায় উভয়ের মধ্যে কে চক্র ও কে চক্রকান্ত-মণি, তৎসম্বন্ধে স্থীদিগের চিত্তে ল্রান্তি উত্তে হইল। এ স্থলে 'সন্দেহ' নামক অলহার হইয়াছে।)

বিহগড়া ৷১ বিগলিত কুন্তল মণিময় কুণ্ডল রুণুঝুমু অভরণ বাজ। খামহিঁ অলকা তিলক বহি যাওত ঘন দোলত মণিরাজ ॥ (मथ (मथ छ्हाँ जन-(किन । হুছঁ ছুছঁ অধর-স্থারস পিবি পিবি তুহুঁ কিয়ে উনমত ভেলি ॥ প্রু ॥ গীমহি ভুজযুগ উপর° শশোধর কনক-ধরাধর মাঝ। অপরুপ প্রনে স্থন অমু দোলত গগন সহিত বিজয়াজ ॥ **एक हत्र क्रम मिन्नू वृ** मनवार मनन शृद्ध । মনমধ-কোটি মধন করু ঐছন জ্ঞানদাস চিতে ফুর ॥১৫॥৭৬১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৫১ সংখ্যক পদ।
২। প-র-সা পুথি ছাড়া অক্সান্ত পুথিতে 'এ' নাই।
৩। 'উর পর' ক, খ। ৪। 'শশধর' ক, খ,
প-র-সা। 'শশধর' পাঠে ছলোড জ ঘটে। ৫।
'তহু' খ, ঘ,।

টাকা

৮ - ১১। "গীমহি" ইত্যাদি। (উভ্রের)
প্রীবার (উভ্রের) ভূজ-বৃগল, ততুপরি (উভ্রের
বদনরূপ) শশ্বর (শোভা পাইতেছে) এবং
(শ্রীরাধার কুচ্যুগ-রূপ) স্থবর্ণ-গিরির মাঝে গগন
সহ চক্র অর্থাৎ মুক্তাহার সহ হারের মধ্য-মধি
অপুর্বা (নিশ্বাস)-প্রনে স্থনে ত্লিতেছে। ভূলনা
কল্পন,—

"নীল মুকুতা- হার বেকডা
শোভিত দেখিলুঁ ভাল ।
বেন তারাগণ উদিত গগন
চান্দে বেটিয়া জাল ॥"
— প-ক-ড, ১৯৮ সংখ্যক পদ ।
'নীল মুকুতা' ইত্যাদি প্লোকের ব্যাখ্যা ১৯৮ সংখ্যক

ष्ट्रभागो । ३

হছঁ রসে ভোর ছেরি পাঁচবাণ।
কেলি-কলা লিয়ে করত সন্ধান॥
দেখ পুন চেতন হছঁ অবলম্ব।
পুনহি অচেতন যব পুন চুম্ব॥
বিপুল পুলক বর স্বেদ-সাঁচার ।
চির-থির নয়নে নীর অনিবার॥
কাঁপই থরহরি গদ-গদ ভাষ।
হছঁ হুহাঁ পরশনে কতহুঁ উলাস ।
ভান-আন-সন্ধ-রঙ্গে ভরু অক্ব।
কো করু অমুভব প্রেম-তরক্ব॥

নিতি নিতি ঐছন হোয়ত বিলাস। কব° হেরব রাধামোহন দাস° ॥১৬॥৭৬২॥ পাঠান্তর

১। ইহা শ-র-সা পৃথির ১২৫২ ও প-র পৃথির ২৫।২৪ ও ৪২।৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'নিরে' ক, খ, দ, চ, প-র; 'কিয়ে' প-র-সা। ৩। 'ছক্' চ, প-র-সা। ৪। 'সচার' দ; 'সঞ্চার' ক, চ, প-র-সা, প-র। ৫। 'উল্লাস' ক, খ, ঘ, প-র-সা। 'ছক্' ছহাঁ' ইত্যাদি চারিটি পংক্তি প-র পৃথিতে লিপিকর-ত্রমে পরিত্যক্ত হইয়াছে। ৬। 'কবক' খ, প-র-সা। ৭। 'ইহ নরোক্তম দাস' প-র।

টাকা

> — ২। "ছহঁ" ইত্যাদি। পঞ্চবাণ অর্থাৎ কলপ উভয়কে সম্ভোগ-রসে মন্ত দেখিয়া (সেই অবস্থার উপযোগী) কেলিকলা লইয়া সংবোজিত করিতেছেন। (টীকাকার রাধামোহন ঠাকুর লিখি-য়াছেন — এ স্থলে 'পাঁচবাণ' শব্দের অর্থ 'অপ্রাক্কত মদনী' বুঝিতে হইবে)।

রত্যন্তে মুচ্ছা।

বিহাগড়া ৷১

রতি-স্থণ-শয়ন-নিবেশহিং স্থন্দরি
প্রমুদিত-মানস ভেলি।
বিছুরল আন আন কেলি-কোতৃক
অনুগত-নিধুবন-কেলি॥
আনভুত মদন-বিলাস।
রাইক দেহ-দণ্ড পরিশোভিত
শ্রামজল-মুকুতা বিকাশ॥
নিমিলিত নয়ন বয়ন-বয় শোভন
অলখিত সহজহি হাসং।
অনখিন বাহ্ত-বলি অরু সব অলগ
তে উহ রহত উদাস॥

বিগলিত অক্স-রাগ অরু অভরণ বিগলিত কুঞ্চিত্ত কেশ। রাধামোহন চিতে নিতি নিতি ভাবই ঐছন প্রোম-আবেশ ॥১৭॥৭৬৩॥ ইতি অফীম-পল্লবঃ।

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫০ সংখ্যক পদ।
২। 'লয়নে নিবেশহি'ক। ৩। 'অলথিত সহজহি
হাস' প-স স্থলে 'অলথিত সহজই হাস' ড়; 'হেরইতে
সহসহিঁ' ড়, চ; 'হেরইতে এহচরি হাস' ক, থ,
প∴র-সা। ৪। 'অনথিন' ইত্যাদি স্থলে 'অনথীন
বাহ্বল্লরী অরু সব অল' ক, ধ, প-র-সা।

টাক1

১—৪। "রতি"-ইত্যাদি। স্থরত-কেলিতে
স্থাক্তনক শ্যার শ্বনে শ্রীরাধা ছাই-চিন্তা হইলেন
(এবং) স্থরত-লীলার প্রার্ত হইরা অক্রান্ত (আমুসন্ধিক) কেলি-কৌতুক বিশ্বত হইলেন। (ম্থরতপ্রসন্ধে নোহ দারা শ্রীরাধার 'মধ্যা' নারিকার শ্বভাব
স্থানিত হইতেছে)।

৮--> । "নিমিলিত" ইত্যাদি। (ঐরাধার)
নরন (রসাবেশে) মুদ্রিত, ফুলর বদন অধিকতর
শোভিত; আভাবিক হাজ অদুখ্য হইণ; (তাঁহার)
বাহ-লতা ও সর্কাদ অবশ,—স্তরাং (আর্ত করার
অক্ষমতা হেতু) উল্পুক্ত রহিল।

রাধামোহন ঠাকুর তাঁহার স্বক্ত এই পদের ব্যাখ্যা-স্থলে লিখিয়াছেন বে, তিনি এই পদে উজ্জল-নীলমণি-মৃত নিম্নলিখিত প্লোকের মর্লাস্থবাদ করিয়া-ছেন; বথা,—

শ্বন্দলনিবিড়াং নিমীলিভাকীং
লগচিকুরামনধীনবাহ্বলীম্।
মুক্তিবনসমন্তানাভাবাং
নতিলাকনে নিলি রাধিকাং শ্বরামি ॥"
"কিং ধ্যারসীতি ক্সবলেন পৃষ্টা ক্লফ আহ প্রমেতি।
আন প্রমন্তানাং নৈবিড়াং চিকুরালাং লগড়ং বাহ্-

বল্ল্যা দৌর্কাগ্যক স্থরভান্তং ব্যনক্তি । ন স্মৃতোহনাস্য বিষয়াপ্রদৌশীপনাদের্ভাবা ভাবনা বস্তা ইতি রভিন্থিবিশেষাস্থভবো মৃদ্ধ্যায়াপি বর্তমানন্তস্যা মৃধ্যান্তদানীমবগত ইতি জ্বেষ্ম্ । আন মৃদিত্যমনস্মিত্যস্যাগৃষ্টার্থবং বক্তঃ প্রেম্বভান্তশাপবলাং সোচ্ব্যম্ । স চ চিরাম্বিষয়ককামান্তিসস্থানাং সাহ্রতেন মধান্য মৃদিত্যনাং ক্রতা ইত্যতঃ ক্রভার্থেভিন্নাতি স্বাভিপ্রান্থোনায় মৃদিত্যনাং ক্রতা ইত্যতঃ ক্রভার্থেভিন্নাথিক স্বাভিপ্রান্থোনায় মৃদিত্যনাং ক্রতা ইত্যতঃ ক্রভার্থেভিন্নাথিক স্বাভিপ্রান্থোনায় মৃদ্ধিত্য বাজিকা।

অথ প্রেম-বৈচিত্ত্যং শ্রীরাধায়া যথা। তত্ত্বচিত-শ্রীগৌরচন্দ্রঃ।

গান্ধার 1>

व्यत व्यत रंगाजा तकरन कारम । নিজ সংচরগণ পুছই কারণং **टित्रहे** शांत्रांत्रूथ-ठाँदि ॥ अ ॥ প্রেম-ভরে ভেল ছন অরুণিত লোচন कात कात कारत ८ श्रम-वाति । গাঁ**থল**° মোভিফল° रेयइन निश्नि-খসয়েণ উপরি উপরি॥ নিশাসই পুন পুন সোঙ্জি রন্দাবন আপনার অঙ্গ নিরখিয়া। রাই রাইণ করি ছুই হাত বুকে ধরি ধরণি পড়ল মুরছিয়া # ধরিয়া করল কোর তহিঁ প্রিয় গদাধর करुरत्र व्यवर्ग सूच नित्रा। পুন্ত অট্ট অট্ট হাসে জগ-জনত মন ভোবে বাহুখোষে মরয়ে ঝুরিয়া ॥১॥৭৬৪॥ পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৫৪ সংখ্যক পদ। ২। পুছই কারণ ফুলে না বুবিরে কারণ প-র-সা। ৩। 'গাঁথিল' ক, চ; 'গথিত' প-র-সা। ৪।
'মুকুতাকল' প-র-সা। ৫। 'খসতহি' প-র-সা।
৬। 'নিশাসই' ইত্যাদি স্থলে 'নিখাসই পুন' ধ।
৭। 'রাই রাই' হুলে 'গোবি গোবি' প-র-সা। ৮।
'ধরণি পড়ল' স্থলে 'ধরণীতে পড়ে' প-র-সা। ৯।
'বিসিয়া' ক। ১০। 'গৌর' প-র-সা।

(क्लांब्र 15

শ্যামকং কোরে যতনে ধনি শৃতলং মদন-আলসে প্রভ" ভোর। ভূবে ভূজে বন্ধন নিবিড় আলিজন জমুৎ কাঞ্চন মণি জোড়। কোরহি শ্রাম চমকি ধনি বোলতা কবে মোহে মীলব কান। হৃদয়ক ভাপ ভবহিঁ দমঝু মীটব অমিয়া করবং সিনান ॥ সো মুখ-মাধুরি বঙ্ক নেহারই>> সোভরি সোভরিস্মন ঝুর। সো ভবু সরস্ত পরশ যব পাওবত তবহিঁমনোরথ পুর॥ এত কহি সুন্দরি দীঘ নিশাসই মুরছিড> হরল গেয়ান। আকুল রাই শ্যাম প্রবোধই **८गाविम्ममाम भन्नमान ॥२॥१७०॥** পাঠান্তর

>। देश প-त्र-ना পूथित ১২৫৫ ও প-त পूथित ৩২१২ সংখ্যক পদ। 'কেদার' স্থলে 'কামোদ' প-त। २। 'छाम' थ; 'छामत' প-त। ७। 'छालि' প-त्र-ना, প-त। ।। 'मनन-कानरन छ्छ्' यरन 'मनन मनानर्म' প-त्र-ना; 'मननानर्म छ्छ्' প-त। १। 'स्वन' क, थ, घ, ठ, প-त्र-ना। ७। 'त्रात' প-त्र। १। '(त्रात्र्ण' घ; 'পूड्डे' প-त। ৮। 'फुन्ह्' क, थ, घ, ठ। २। 'मय्' মীটব' ছলে 'দ্র যারব' প-র-সা; 'মিটি বারব' প-র।

১০। 'অমিরা করব' হলে 'করবহি অমিরা' প-র।

১১। 'সো মুখ' ইত্যাদি হুলে 'আর কিরে সো
মুখ মাধুরি হেরব' পর। ১২। 'সোঙরি সোঙরি'
হুলে 'গুণ সোঙরিতে' প-র। ১০। 'দরশ' প-র।

১৪। 'হোরব' প-র-সা, প-র। ১৫। 'মুরছই'
প-র। ১৬। 'আকুল' ইত্যাদি হুলে 'হুতনহি
শ্রাম রাই পরবোধই' প-র (পাঠান্তর)।

বিহাগড়া ৷১

রোদতি রাধা শ্রাম করি কোর।
হরি হরি কাহাঁ গেও প্রাণনাথ মোর ॥
জানলুঁ রে সলি প্রেম অগেয়ান।
নাগর কোরে নাগরি নাহি জান ॥
মুরছলি নাগর মুরছলি রাইং।
বিরহে বেয়াকুল কূল না পাই॥
দারুণ বিরহে না হেরই তায়।
সহচরি চিত্র-পুত্লি সম চায়ণ ॥
ঐছন হেরইতে রাইক রীত।
গোবিদ্দদাস-চীত সচকিত ১০॥৭৬৬॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৫৬ ও ১৫৫৯ সং-ধ্যক পদ। ২। 'মুরছলি' ইত্যাদি পংক্তিবর ধ ও ঘ পুথিতে নাই। ৩। 'ব্যাকুল দোহ' প-র-সা। ৪। 'চীতপুঙলি' ধ, প-র-সা। ৫। 'সম চার' ছলে 'সমুঝার' প-র-সা। ৬। 'গোবিন্দদাস প্রহ চিত্ত' প-র-সা।

ख्या जांग ।)

রসবতি বৈঠি রসিকবর পাশ।
রোইং কহই ধনি বিরহ-হুতাশ॥
আর কি মিলব মোহেণ রসময় খ্যাম।
বিরহ-জলধি কত পউরব হাম॥

নিকটিই নাহ না হেরই রাই।
সহচরি কত পরবোধই: তাই ॥
কানু চমকি তব রাই করু কোর।
গোবিন্দ্রাস হেরি ভেল ভোর ॥৪॥৭৬৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১২৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'রাই' ক, খ। ৩। 'মোরে' খ। ৪। 'পরবোধৰ' ক।

धाननी ।>

কত পরকারে তহিঁং পরিচয় দেল।
হেরইতে মুধ-শশি ত্বথ ত্রও গেল॥
সহচরিগণ সব চমকিত ভেল।
সজল-নয়ানে আলিঙ্গন কেল॥
আঁচরে মোছায়তঃ নয়নক লোর।
যতনহি দৃঢ় করি ত্ত করু কোর॥
কোই সঞ্চি দেওত চামরক বায়।
গোবিন্দদাস তৃত্তকঁ গুণ গায়ও॥৫॥৭৬৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৫৮ সংখ্যক পদ।
২। 'তাহি' ক, প-র-সা। ০। 'দুরে' ক, খ,
প-র-সা। ৪। 'মোছারই' ঘ। ৫। 'ছ্ছুঁ' ক,
খ, প-র-সা; 'তবহু' ঘ। ৬। 'গুণ গার' হুলে
'প্রোমকি জয়ং প-র-সা!

অত্র সম্ভোগোচিতপদং যথাসন্তবং গেয়ম্।
জয় জয় রাধা কৃষ্ণের প্রেম অদভুত।
নিভুই নৌতুন প্রেম অসুরাগযুত॥ ইত্যাদি।
ধানী।
আসর-চন্দ গোরি যব বৈঠল
নিধুবনে সধিগণ সজ।
চাতুরি রক্তস কলা কভ কৌশল
কিয়ে কিয়েং মদন-তর্জ॥

সজনী কো পয়েও এছন জান।
পিয় পিয় পিপিয়-নাদ শুনি আকুল
মুরছিও আনতও ভই আন ॥এ॥
চর চর লোরে নয়ন বহি যাওত
কত কত করুণা-কোটি।
দত্তে তুণছাঁ কহি প্রিয় দরশন দেহ
না হেরিয়া হিয়া যাউ কোটিও॥
বছত বিনতিও করে স্থির ক্রেড ধরে
কোরহি শ্রাম না জান্দ।
বিপরিত অচল সচল দেখি এছন
বল্লভাগের রস গান॥৬॥৭৬৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১২৫৯ ও প-র পুথির ৬৬।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'ভেল' প-র। ৩। 'কো পরে' খুলে 'কো পারে' প-র-সা। ৪। 'মুরছিড'ক, চ। ৫। 'আন' ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। 'ফাটি' ক, প-র-সা, প-র। ৭। 'মন্ডি' প-র-সা। ৮। 'চরণে' প-র-সা। ৯। 'মান' ক, চ, প-র-সা।

बैद्धांत्र ।>

সঞ্জনী প্রেমক কো কছং বিশেষ।
কামুক কোরে কলাবতি কাতর
কহত কামু পরদেশ ॥ ধ্রু ॥
চাঁদক হেরি হুরজ করি ভাখয়ে
দিনহি রজনি করি মান।
বিলপই তাপে তাপায়ত অস্তর
বিরহ থিয়ক° করি ভান ॥
কব আওব হরি হরি সঞ্জে পূছই
হসই রোরই খেণে ভোরি।
সো গুণ গাই॰ খাস খেণে কাঢ়ই॰
খণহি খণহি॰ ভক্মু মোড়ি ॥

विश्रम्थि-वहन कांग्र यव शौहला নিজ পরিচয় কত ভাতি। অমুভবি মদন কান্ত কিয়ে কামিনিদ বল্লভদাস স্থােশ মাভি ॥৭॥৭৭০॥

পাঠান্তর

)। हेहा প-त-मा श्रुवित >२६० छ প-त श्रुवित ৩৬।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'প্রেমক কো কহ' ফলে 'প্রেমকি কহবি' ম, প-র-সা। ৩। 'বিরহ পিয়ক' স্থলে 'প্ৰিয়ক বিরহ' ক; 'বিরহক পিয়' প-র। ৪। 'शां अरे' क, ब, श-ब-मा, श-ब। ६। 'वार्रे' क; 'काफ्टे' ह, भन्द-मा। ७। 'चन्हि चन्हि' ऋत्न 'কণহি ডকু' ক, খ, প-র-সা, প-র। १। 'মোছন' প-র-সা ; 'মোছত' প-র । ৮। 'ভাবিনি' প-র-সা ।

বিছপড়া ৷১

নাগরং সজে রজে যব বিলস্ই কুঞ্জে শুভলি ভুজ-পাশে। কামু কামু করি রোরই স্থন্দরি দারুণ বিরহ-হতাশে॥ এ সৰি আরতি কহনে না যাই। আঁচলক হেম আঁচলে রছ যৈছন ৰোজি ফিরত আন ঠাঞি"। এ। কাহাঁ গেও সো মঝু রসিক স্থনাগর মোহে ভেজল কবি লাগি। কাতর হোই মহা-তলে লুঠই मनन-नर्दन तर कारि। রাইক বিরুদ্ধে কামু ভেল সচকিত বয়ালে বাণি নাৰি ফুর। প্রিয় সহচরি লেই করে কর বান্ধই পোবিশ্দদাস রছ দুর ॥৮॥৭৭১॥ পাঠান্তর

)। रेहां ग-त्र-मा भूषित्र ১२५১ मरबाक शह।

২। 'কাফুক' প্র-সা। ৩। 'আঁচণক ছেম' ইত্যাদি স্থল---

১ম আঁচলে রছ বৈছন থোলি ফিরত আনহি ঠাঞি ॥ গ্রু । ক, চ পুৰি। ৪। 'বেদনে' ক, থ, চ, প-র। ৫। 'চমকিডে' क, চ, প-র।

ভথা বাগ ৷১

বহুখণে পরিচয় ভেল। वित्रश्-८वमन छूद्र दशल। দোঁহে হুছ কোরে আগোরি। সহচরি হেরি বিভোরি॥ অদভুত প্রেম-চরাত । হেরইতে চমকিত চাত ॥ কোরহি দেখিতে না পায়। ঐছন না শুনি কোপায়॥ পুন দোঁহে নিবিড় বিল, স। ছুরে গেও বিবহ-হুতাশ। (शाविन्म भागक माम। ইহ গুণ আনন্দে ভাষ ॥৯॥৭৭২॥ ইত্যাদি শ্রীরাধিকায়াঃ প্রেমবৈচিত্তাম।

পাঠান্তর

३। हेहा প-त-ना প्रित ३२७२ मःशाक भए। ২। 'চরিড' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'চিড' क, ब, श-त्र-म।

व्यथ (क्ष्रगरेबिहल्डाः श्रीकृष्कमा यथी। श्रृष्ट्रं ।)

আর কিয়ে কনক-ক্ষিল-ভন্ম স্থন্দরি मत्रम भद्र**म मञ्**र (शांग्र। উর° পর পাণি হানি খিভি শুভল° আকুল-কঠে ঘন রোয়।

সঞ্জনি না বুঝিয়ে প্রেম-তরক্ষ।
রাইক কোরে চমকি হরি বোলত
কবে হবে তাকর সক্ষ । প্রু ॥
আর কিয়ে শ্রাবণে শুনব হাম তাকর
সো প্রিয় মধুরিম ভাষা।
নয়নহি বয়ন-চান্দ কিয়ে হেরব
কোমুদি হাস-বিকাস ॥
রাইক কোরে কামু ঐছে বিলপই
ব্রহ্ম-বনিতাগণ হাস।
প্রেমক রীত বুঝাই সংশ্য ভেল
কহতছি গোবিন্দদাস ॥১০॥৭৭০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৬৩ ও প-র পুথির
৬৬।৫ সংখ্যক পদ। ২। 'হব' প-র। ৩। 'উরু'
দ, চ, প-র-সা। ৪। 'লুইই' প-র। ৫। 'সজনি
লা বুঝিরে' ফলে 'সখি হে কো কছ' প-র। প-র
পুথিতে 'সখি হে' ইত্যাদি কলি দ্বারা পদটি আরম্ভ
করা হইরাছে। ৬। 'চমকি হরি বোলত' ফলে
'বৈঠি হরি কহতহি' প-র। ৭। 'বোল' প-র-সা,
প-র। ৮। 'সো' ইত্যাদি ফলে 'আর তাহে মধুরিম
হাস' প-র। ৯। 'কবে' প-র। ১০। 'ঐছে'
ফলে 'বব' প-র-সা, প-র। ১১। 'প্রেমক' ইত্যাদি
ফলে প-র পুথির পাঠ ষ্থা—'না বুঝল বাত ধ্নদ
বোহে লাগল'।

তথা রাগ ৷>

ধনি-কোরে বিনদং নাগরবর জুললা। ।
রোয়ত নীর বয়ন বহি গেলা॥
কোরে আকুল ভই মুরছিত ভেল।
সহচরিগণ কর বয়নহি দেল॥
খাস-হীন হেরি সবছ বিভোর।
রোয়ত ধনি তব খাম করি কোর॥

এক সৰি যুগতি করল অনুপাম।
আবণে কছই তব রাধা নাম॥
বছখণে আবণে পৈঠল সোই বোল।
রাই রাই করি উঠল তনু মোড়॥
বোই বোই স্থাননি পরিচয় দেল।
কোরে কয়ল সব তুখ হুরেণ গেল॥
বৈঠল নাছ রাই বাম পাশ।
বেরি চমকিত রাধাবল্লভ দাস ॥>>১৭৭৪॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৬৪ সংখ্যক পদ। ২। 'বিনোদ' ক। ৩। 'নাগর' খ, প-র-সা। ৪। 'ভূলিলা' ক। ৫। 'দূরে' ক।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

विरुभड़ा । ১

রাধা মাধব বিলসই কুঞ্জক মাঝ।
তমু তমু সরস পরশ-রদ পীবই
কমলিনি মধুকর-রাজ ॥ ধ্রু ॥
সচকিতেই নাগর কাঁপই পর পর
শিথিল হোয়লই সব অজ ।
গদ গদ কহয়ে রাই ভেল অদরশ
কবে হোয়ব তছু সজ ॥
সো ধনি-চাঁদ-বয়ন কিয়ে ছেরব
শুনব অমিয়াময় বোল।
ইহ মঝু হাদয়, তাপ কিয়ে মেটবই
সোই করব কিয়ে কোল ॥
ঐছন কভছ বিলাপইই মাধব
সহচরি দুরহি হাদ।
অপরপে প্রেমে বিষাদিত অস্তর
কহতহি মাধবিই দার ॥১২৪৭৭৫৪

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১২৬৫ সংখ্যক পদ।
২। 'সচকিত্ত' ক। ৩। 'করল' ক। ৪। 'হৃদ্ধে'
ক। ৫। 'মিটব' ক। ৬। 'বিলপরে' ক;
'বিলপই' প-র-সা। ৭। 'মাধ্ব' ক, প-র-সা।

মঙ্গল ।১

পরশিতে রাই-তকু আপনে ভুলল কামু মুরছি পড়ল ধনি-কোর। ধনি ভেল গদগদ শ্যামকেং হেরইতে তরকি তরকি বহে লোর॥ খাম মুরছিত হেরি চকিতে ললিতা ফেরি রাধা-মন্ত্র শ্রান্তি-মূলে দেল। অন্ন মোড়াইয়া কান্ত্ৰ নিরখই রাই-ডমু হেরি সখী সচকিত ভেল॥ চিত্ৰ-পুঙলি যেন বেঢ়ল স্থিগণ नित्रथरे शाम-मूथ-हन्स । কি ভেল কি ভেল বলি ধাওল বিশাখা আলি नव करन लांगल धन्त ॥ শ্রামর-সুন্দর-বদন-স্থাকর স্মৃষি নেহারই সাধে। উপকল উল্লাস কহই মাধ্বিঃ দাস विषयि माध्य ब्राट्य ॥১०॥१२७॥ ইভ্যাদি শ্রীকৃষ্ণশ্য প্রেম-বৈচিন্ত্যম্। ইতি নবম-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৬৬ সংখ্যক পদ। ২। 'শ্রাম ক্তে' ক; 'শ্রামক' ব, চ; নাগর' প-র-সা। ৩। 'চমক্তি' ক, প-র-সা। ৪। 'মাধবী' ক; 'মাধুবী' ধ।

অথ অমুরাগঃ।

সদাসুভূতমপি ষঃ কুর্যান্নবনবং প্রিরম্। রাগোভবন্নবনবঃ সোহসুরাগ ইতীর্যাতে ॥ অসুরাগো ভবেজ্রিধা রূপাদাক্ষেপতঃ ক্রেমাৎ। অভিসারাসুরাগশ্চ জ্ঞান্নত্তে রসিকৈজনৈঃ॥

আদৌ রূপামুরাগো যথা। তত্র শ্রীমহাপ্রভুঃ।

यहरे ।>

নিরবধি মোর মনে গোরা-রূপ লাগিয়াছে
কহ দখী কি করি উপায়ং।
না দেখিলে গোরা-মুখ° বিদরিয়া যায় বুক পরাণঃ বাহির হৈতে চায়॥

নর্গত বাহির হৈতে চায়॥
কহ সধি কি বুদ্ধি করিব।
গৃহপতি গুরুজন ভয় নাহিং মোর মন
গোরা লাগি পরাণ তেজিব॥
সব স্থুখ তেয়াগিলুঁ কুলে তিলাঞ্চলি দিলুঁ
গোরা বিস্থু আন নাহি ভার।
নিকরে কার্মেণ আঁথি শুন হে মর্মিণ স্থি
বাস্থ্যোষ কি বলিবে তায়॥১॥৭৭৭৪

পঠিকির

১। ইহা প-র-সা পূথির ১২৬৭ ও প-র পূথির
১৪। ১০ সংখ্যক পদ। 'ফ্র্ছই' হলে 'ভুড়ী' প-র।
২। 'কহ' ইত্যাদি হলে 'কি করিব কি হবে উপার'
প-র। ১। 'ক্রপ' ক, খ, খ, চ, প-র-সা। ৪।
'পরাণি' ফ, খ, প-র-সা। ৫। 'ভর নাহি' হলে
'নাহি লরে' প-র। ৬। 'নিবারে বার্রে' হলে
'নিকুরে কুর্রের' প-র-সা। ৭। 'মর্ম' খ, প-র-সা, প-র।

তথা বাগ।>

থার বিজুরি অসু মব-জলধর-তমু পীত বসন বনিং তায়। **हु** जिथि-प्रज বেডিয়া মালতামাল সৌরভে মধুকর ধায়॥ श्रीम-क्रथ जागरम मत्रम । যতনে ভুলিতে নারি পাসরিৰ মনে করি श्रुहारेल कूलित धत्राम ॥ अ ॥ কিবা সেই মুখ-শশী উগারে অমিয়া-রাশি আঁখি মোর মজিল তাহায়। গুরুজন-ভয়ে যদি ধৈরজ ধরিতে চাহি বিগুণ আগুন উপজায় । রস-ত্বধানিধি কভ এ তিন ভুবনে যত শ্যাম আগে নিছিয়া পেলিয়ে । এ দাস অনত্তে কয় হেন রূপ রসময় मा (पश्चिटन भेतान ना खोरम ॥२॥११৮॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৬৪ সংথ্যক পদ। ই। 'বেনে'প-র-সা। ৩।'কেলিয়ে'থ,খ,চ।

তুড়ী।১

হেরি মুখচন্দ্র-স্থারস-লহরাকিরণহি ভুবন উলোর।
ভিরপিত হাহি চকোরিণি-কামিনিলোচন নিশি দিশি ভোর ॥
সজনি অব হাম না বুঝিও বিধান।
অভিশয় আনন্দে বিঘিন ঘটাওল
হেরইভে ঝরয়েও নয়ান ॥ এ৫ ॥
লাকণ দৈব কয়ল ছহুঁ লোচন
ভাহে পলক নিরমাই।
ভাহে অতি হরিষে এ ছহুঁ দিঠি পূরল
কৈছে হেরব মুখ চাই ॥

তাহে গুরু ছুরুজন-লোচন কণ্টক
সক্ষট কত্ত্ বিধার।
কুলবতি-বাদ বিবাদ করত কত্ত
ধৈরজ লাজ বিচার ॥
সবহুঁ উপেধি ষাই বন পৈঠব
কামু গীমে করি হার।
নিরজনে রাতি দিবস হথে হেরবং
এহি দঢ়ায়সুঁ সার॥
কি করব আন ধরম-করম মতং
জাবনহীন জমু দেহ।
গোবিন্দদাস ভণ মনমধ মোহন
মিলনে কিয়ে করু কেই ॥৩॥৭৭৯॥
পাঠাস্কর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৬৯ ও প-র পুথির ১৪।১০ সংখ্যক পদ। ২। 'তির্থিত' প-র। ৩। 'হাম না বুঝি' হুলে 'নাহি বুঝিরে' প-র। ৪। 'ঝুররে' প-র-সা। ৫। 'বঞ্চব' প-র। ৬। 'তন' প-র। 'কি করব' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি ক, ব,চ ও প-র-সা পুথিতে নাই।

ভাটিয়ারি ৷১

যো মুখ দেখিতে हिशा विभन्नदन **क् डांट्बर** भवांग भद्र । पिवन बक्नी ভালে সে কামিনী युतिया युत्रिया मत्त्र ॥ সই সে কালা॰ ক্ৰম্বজনে। ও রূপ দেখিয়া কুলে ভিলাঞ্জল मिनू वभूनात जरन ॥ अ ॥ विक्रम नग्नादन ভজিম চাহনি ভিলে পাসরিতে নারি। এত দিনে স্থি निष्ठात्रः जानिन् মজিল কুলের নারী 🛊

চাঁচর চুলে সে ফুলের কাঁচনি ^৫

সাঞ্জনি ময়ুর-পাথে।

বলরাম বলে কোন বা দারুণী

কুলের ধরম রাখে॥৪॥৭৮•॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৭০ ও প-র পুথির ০।০৮ সংখ্যক পদ। ২। 'তার' প-র। ৩। 'সে কালা' ছলে 'কি জানি' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৪। 'নিশ্চর' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'কাছনি' প-র-সা, প-র।

बैजार्थ ।>

অক না ধরে রসের ভরে হেলিয়া পড়িছে বায়। অঙ্গ মোড়া দিয়া ত্রিভল হইয়া কিরিয়া ফিরিয়া চায়॥ **ट्हित्रा मित्रन्** রসিয়া নাগর কি শেল বাজিলং মোরে। গুরু পরিজন नारग উচাটन তারে সে॰ পরাণ ঝুরে॥ আঁখির ঠারে বুক বিদারে ও বড় বিষম বাণ। পাপিনী যুবতি কুলবভী সভী রাপুক কুলের মান । হিয়া জরজর পরাণ ফাঁকর माऋग मूत्रनी-ऋदत्र । কুটিল° হরিণী **ट्याँगेत्र श्र**ती° कान्मिया मन्द्रय चटन ॥ मध्य (वार्ष পরাণ দোলে ভাহে পরমাদ হাস। বলরাম কছে এবে সে निहरय

शंक्षिमूँ चरतव माण ॥८॥१৮১॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৭১ ও প-র পুথির ৩।৩৯ সংখ্যক পদ। ২। 'রছল' প-র। ৩। 'ভারে সে' ব্বলে 'ভরে সে' চ। ৪। 'কাপর' ক, খ; 'কাফর' প-র-সা। ৫। 'বাশীর' প-র। ৬। 'কুটিল' ক, খ, প-র-সা। ।। 'নিশ্চর' প-র।

यश्रहे ।)

ছই ভুরু কামের কামান।
নঠ কৈল কুল-অভিমান ॥
কত ছাঁদে নয়ান চুলায়।
মন সনে পরাণ দোলায় ॥
সে মোহন নাগর কিশোর।
মরমে পশিয়া রৈল মোর ॥ প্রু ॥
কত ন! নাগরপনা জামে।
নিরখয়ে আধ নরানে ॥
আধ মুচ্কি কথা কয়।
ত কা কৈল মনোহর বেশ।
সেই সে মজাইল সব দেশ॥
ভিরি-বধে ভার নাহি ভরা।
বলরামের মনে হেন লয়॥৬॥৭৮২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৭২ ও প-র পৃথির ৩০৫ সংখ্যক পদ। ২। 'অবলা-পরাণে কি ডা' ফলে 'অবলার প্রাণে কড' প-র।

ধাৰণী ছুড়া ।>
স্টিবত হাসিতে কতং অমিয়া উপলো।
ধরম করম হরে আধ আধ বোলে॥
রূপ দেখি কি না সে করিলুঁ ।
বল করি জাতি প্রোণ পর-হাতে দিলুঁ ॥এ॥

নানা ফুলে চাঁচর চুলে চূড়ার কাঁচনি।
কত না ভঙ্গিমা ছুটি নয়ান-নাচনি।
কিসের লোকের ভয় কিবা গুরু-লাজে ।
মধুর মুরতি সে লাগিল হিয়ার মাঝে।
ফাগু বিন্দু বিন্দু মাঝে চন্দনের চাঁদ।
কতে বলরাম ওই পিরিতের ফাঁদা। ৭৮ ৭৮ ৩।

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ৩৬৮, ১২৭০ ও প-র পুৰির ৩৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'হাসিতে কত' ছলে 'ঞাথির ঠারে' প-র-সা। ৩। 'রূপ দেখি' ইত্যাদি ছলে 'রূপ দেখি সথি মুক্তি অকাজ করিলু' প-র। ৪। 'কিসের' ইত্যাদি ছলে 'কিসের ভর কিবা শুকুজন লাজে' ক; 'কিবা সে লোকের ভর শুকুজনা লাজে' প-র-সা। ৫। 'সে লাগিল' ছলে 'থানি জাগে' প-র। ৬। 'কাঞ্ড' ইত্যাদি ছলে 'চৌদিসে কাঞ্ডর বিন্দু' প-রনা, প-র। ৭। 'ইহা'ক।

बिश्राय 1>

কিবা রাতি কিবা দিন কিছুই না জানি।
জাগিতে অপনে দেখি কালা রূপংখানি।
আপনার নাম মোর নাহি পড়ে মনে।
পরাণ হরিলে রাজা নয়ন-নাচনে।।
কি খেণে দেখিলান সই নাগর-শেখর।
আঁথি করে মন কাঁলে পরাণ ফাঁফর।।
সহকে মুরতি খানি বড়ই মধুর।
মরমে পণিয়া সে ধরম কৈলে চূর।
আার তাহে কত কত ধরে বৈদগধি।
কুলেতে যত্তন করে কোন বা মুগ্ধী।
দেখিতে সে চাঁদমুধ জগ-মন হরে।
আাধ মুচকি হাসে কত অ্থা খরে।।

কাল কপালে শোভে চন্দনের চাঁছে। বলরাম বলে ভেঞি সদাই পরাণ

कारन माधानम्हा

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৭৪ ও প-র পুথির ৩। গাও সংখ্যক পদ। ২। 'বরণ' প-র। ৩। 'বি থেণে দেখিলাম' হলে 'কি রূপ দেখিরু' ক, খ, প র। ৪। 'নরান' ক, খ। ৫। 'হাসি' ক, খ্ খ,চ,প-র-সা।

कड़ो ।>

রূপ দেখিলে এমন হবে জানিব কেমনে।
এত কি সহিতে পারে অবলা পরাণে॥
বিশুণ দহয়ে তথু মুরলীর স্বরে।
কুলিন সাপিনী যেন গরল উগারে॥
আর তাহে তাপ দিল পাপ ননদিনী।
ব্যাধের মন্দিরে যেন কম্পিত হরিণী॥
নিরবধি প্রাণ মোর শ্যাম-অনুরাগী।
যে মোরে ছাড়িতে বোলে হবে বধের ভাগী।
ভ্তান কহে যেই কহ সেই সে করিব।
শ্যাম বন্ধুর লাগি পরাণ হারাইৰ॥৯॥৭৮১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১০৬ ও ১২৭৫ সংখ্য পদ। ২। 'দহরে তমু' ছলে 'দগৰে প্রাণ' প-র সাঃ ৩। 'কুলিনী' প-র-সা। ৪। 'আর ভাষে ইত্যাদি ছলে 'তাহে হুখ দেই মনে' প-র-সা। ৫ 'বঞ্চরে' প-র-সা। ৬। 'নিরব্ধি' ইত্যাদি পংঘি চারিট ক, খ, খ, চ পুৰিছে নাই; প-র-সা পুটি হইতে উদ্বত হইরাছে।

त्रोयस्कृति ।>

মলু মলু ভাষ-অনুরাগে।
মনোহর মধুর মূরতি নব কৈলোন
সদাই হিয়ার মাবে ভাগে। এ এ

জীতে পাসরিতে নারি বল নাং কি বৃদ্ধি করি

কি শেল রহলও মার বৃকে।
বাহির হৈয়া নাহি যায় টানিলে না বাহিরায়
অন্তরে জলয়ে থিকে থিকে ॥
চরণে চরণ পুঞাও অথরে মুরলী লৈয়া
দাঁড়াইয়াও ভেরছও নয়ানে।
অঙ্গলি লোলাইয়াও শ্যাম কি জানি কি দেখাইলও
সে কথা পড়রে সদা মনে॥
কিছু না মোর সহে গায় কেবা পরতীত যায়
ভিলে প্রাণ ভিন ঠাঞি ধরি।
বহু রামানন্দের বাণী দিবানিশি নাহি জানি

পাঠান্তর

গোপতে গুমরি মরি মরি ॥১০॥৭৮৬॥

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৭৬ সংখ্যক পদ।
২। 'সে' ক, খ। ৩। 'পশিল' খ। ৪। 'পৃইরা'
ব, চ। ৫। 'দঙাইরা' খ। ৬। 'তেড্ছ' প-রমা। ৭। 'লোলাহে' ক; 'লোটাইরা' খ। ৮।
'কহিল গো' প-র-সা।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং যথা।

थानमी ।>

গোরাক-লাবণা রূপে কি কহিব এক মুখে আর তাহে ফুলেরং কাঁচনি। চাঁদ-মুখেরত হাসি জীব না গো হেন বাসি ব্দার ভাহে ভাতিয়া চাহনি॥ विशि त्म भएन क्रिश कार्यम । क्मन (कमन करत मन नव नार्ग छेठावेन भवांग-भूखिल (भाव कारक ॥ अ ॥ বিধিয়ে বলিব কি করিলে কুলের ঝি পার তাহে নহি স্বতন্তরি। পেল কুল লাভ ভন্ন পরাণ রহিবার নর मरनत्र जनरमं श्रुर् मित्र ॥

কহিব কাহার আগে কহিলে পিরিতি ভাজে

চিত মোর ধৈরজ না বান্ধে।
নয়নানন্দের বাণী শুন শুন বিনোদিনি

ঠেকিলা গৌরাক্স-প্রেম-ফান্দো।১১॥৭৮৭॥

পাঠান্তৰ

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৭৭ সংখ্যক পদ।
২। 'কুলের' ক, ঝ, ঘ, চ। ৩। 'ও চাদ-মুথের'
প-র-সা। ৪। 'বাহিরাবার' প-র-সা। ৫। 'মনের
অনলে' ছলে 'প্রেম অনলে' প-র-সা। ৬। 'ঠাকুরাণি' ধ।

ভণা রাগ ৷১

তপত-কাঞ্চন-কান্তি কলেবর উন্নত ভাঙ্ব ওজী। করিবর-কর জিনি বাছর স্থবলনি বিহি সে গঢ়ল বছরজী । গোরা রূপ জগ-মনহার।। আপন বৈদগধি বিধাতা প্রকাশিত• विश्व कूमविक नांत्री ॥ अ ॥ আপদ-মস্তক পূৰ্ণ পুলকিত প্রেমে ছল ছল আঁখি। আপন গুণ শুনি আপহিঁ বোরত হেরি কান্দয়ে পশু পাখী। কুমুদ-মলিকা চান্দ-চন্দ্ৰিকা জিনিয়া মধুর মৃত্হাস। মধুর বচনে অমিয়া সিঞ্চনে बिह्न (गाविन्मनाम ॥)२॥**१৮**৮॥

পাঠাক্তৰ

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৭৮ সংখ্যক পদ। 'তথারাগ' ফ্লে 'ভূড়ী' প-র-সা। ২। 'ভাঙর' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'প্রকাশিন' খ। ৪। 'আপুনি' প-র-সা।

পঠবঞ্জী ।১

মরি মরিং না লোও শ্যাম-রূপের বালাই লৈরা। কোন বিধি নিরমিল কত স্থা দিয়া॥ এ ॥ শরদ-বিধুবর ফুল পুদ্ধ ञुम्बद्रानन मश्रद्रण। রত্ব মণিময় রবি সমোদিতঃ গণ্ডে নৃত্যতি কুগুলে॥ চারু-চন্দ্রিমণ চুড়া চিক্কণ চঞ্চরীগণ আব্রতে। চমকিত হিয়া মোর ও রূপ দেখিতে ॥ ভিমির পুঞ্জর• नकन कलभन हेस्तील भरनात्रम । বন্ধরাধর রঙ্গ সিন্দুর নিন্দি বিশ্বক বিশ্ৰমে । (कांडनांकन বিমল চঞ্চলদ विषय - वान-जटकान्द्र । শ্রাম-রূপ নিরখিতে হৃদয় বিদরে॥ निक्स क्रिक्तः প্রবল ভুজবর কশ্বপাঞ্চদ শোভনে। নখর তীখণ রুচি বিলক্ষণ গোপি-চিত্ত-প্রলোভনে ৷ হেম-বিরচিড) ২ মুদ্রিকাযুত পাণিশাথ মনোহরে। ও রূপ দেখিতে প্রাণ কি জানি কি করে। বিপুল বক্ষ 🖻 বৎস-লাঞ্ছন ভার>৩ হার বিলম্বিতে। উরগ বিক্রম> কুশিম মধ্যম পীত অম্বর শোভিতে। চৰণ-পল্লব শরণ বল্লভ মঞ্-মঞ্জির রঞ্জিতে। मधुनामारमन हिट्ड नह व्यविन्द । 17017191

পাঠান্তব

>। इंश প-त्र-मा श्रीव अ: १२ % भ-त श्रीव श्रीव मश्री मश्री भारत भारता भारता भारता भारता श्रीव मश्री मश्री भारता भारता श्रीव मश्री मश्री भारता श्रीव मित्र भारता भा

श्रुहे । >

কুন্দারে কুন্দিলে গো वमन-ठानम (कान क ना कृत्मिल हुई आँचि। দেখিতে দেখিতে মোর পরাণ যেমন করে সেই সে পরাণ তার সাধী। রতন কাডিয়া অভি৽ যভন করিয়া গো क् ना शिष्याः पिन कारन। মনের সহিতে মোর এ পাঁচ পরাণি গো যোগী হবে• উহারি ধেয়ানে ॥ তথা খানি খানি গো অমিয়া মধুর বোল হাতের উপর নাহি⁹ পাত । এমতি করিয়া বদি বিধাতা গঢ়িত গো ভালিয়া ভালিয়া উহা খাঙ । চুড়ার টালনি পোণ यमन-कान्स ४ ना উহা না শিধিয়া আইল কোথা। এ বুক ভরিনা মুঞি • উহা না দেখিলুঁ গো अ विक नजरम त्यांत्र त्यां[>] ॥

নাসিকার আগে দোলে ২ এ গজ-মুকুতা গো সোণার মড়িত^{১০} তার পাশে। বিজ্বী জড়িত ১০ যেন চাঁদের কণিকা ১৫গো মেখের আড়ালে থাকি ১৬ হালে॥ করভের কর জিনি বাছর বলনি১৭ গো হিঙ্গুল-মণ্ডিত তার আগে। বৌবন-বনের পাখী পিয়াসে মরয়ে১৮ গো উহারি পরশ-রস মাগে॥ नाष्ट्रया-ठेमटक यात्र রহিয়া রহিয়া চায় চলে যেন গজরাজ>>মাতা। শ্রীনিবাস দাস কয় লখিলে লখিল নয় রূপসিন্ধু গঢ়ল বিখাতা ॥১৪॥৭৯०॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৮০ ও প-র পুথির ২। গে কার্টিরা ক; 'কড়িরা' দ; 'কাটিরা' চ, প-র। হ। 'কঢ়িরা' ক; 'কড়িরা' দ; 'কাটিরা' চ, প-র। হ। 'কেবা' ক। ৪। 'পরাইরা' প-র-সা। ৫। 'পরাণ' ক, থ, চ। ৬। 'হৈল' প-র। ৭। 'লাগি' ক, থ। ৮। 'ফাল্দরা' ক; 'ফাল্দুরা' চ। ৯। 'সাক্রি' প-র। ১০। 'মদন-কান্দ' ইত্যাদি স্থলে 'মর্ব-পুচ্ছের চাল্দে' ইত্যাদি থ; 'মউরপুচ্ছের চাল্দে' ইত্যাদি থ; 'মউরপুচ্ছের চাল্দে' ইত্যাদি থ। ১১। 'এ বড়ি' ইত্যাদি স্থলে 'মর্মের রহিরা গেল বেখা' প-র। ১২। 'শোভে' প-র। ১৪। 'মছিল' ক; 'মুড়িত' প-র-সা। ১৪। 'সহিড' প-র; 'ডড়িত' খ। ১৫। 'কল্দ্ব' ক। ১৬। 'কিবা' প-র। ১৭। 'বাছর বলনি' স্থলে বাই স্থলনি' প-র। ১৮। 'মরিল' প-র-সা। ১১। 'সক্লপতি' প-র।

ভাটনারি।>
আদে আজে সবি মুক্তা খেচনিং
বিজুরী চমকেও তার।
হি হিও কি অবলা সহজে চপলা
মধন মুরহা পার ॥

মরোঁ মরোঁ পই ও রূপ নিছিয়া লৈয়া। কি জানি কি খেণে কো বিহি গঢ়ল कि ज्ञा भाष्ट्रती निग्ना ॥ अ ॥ চুলু চুলু হুটি নয়ন-নাচনি চাহনি মদন-বাণে। তেরছ বন্ধানে বিষম সন্ধানে यत्रा यत्रा श्राम श्राम চন্দন-ভিলক আধ ঝাঁপিয়া বিনোদ চুড়াটী বাঙ্গে। হিয়ার ভিতরেগ त्नां हो या त्नां हो या। কাতরে পরাণ কান্দে॥ আধ চরণে আধ> চলনি আধ্য মধুর হাস। এই সে লাগিয়া ভালে সে ঝুরিয়া मदत वलताम माम ॥১৫॥१৯১॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৮১ সংখ্যক পদ।
২। 'থেচনি' ক। ৩। 'দমকে' ক, খ, প-রসা। ৪। 'ছি ছি' স্থলে 'এথে' প-র-সা। ৫।
'মরো মরো' স্থলে 'মরো মরো' ক; 'মরঙ মরঙ'
প-র-সা। ৬। 'মাঝারে' প-র-সা। ৭। 'লোটারা।
লোটারাা' স্থলে 'লোটাঞা লোটাঞা' ক, খ;
'লোটারা' প-র-সা। ৮। 'আধ্যা' প-র-সা। ৯।
'আধ্যা' প-র-সা। ১০। 'আধ্যা' প-র-সা।

রামকেলি ৷১

আলো সই করিব কি।
পরাণ পরবশ জীবারে জি॥
কি দিয়া নিরমিল কেমন বিধি।
রূপের নাহি সীমাং গুণের নিধি॥
লখিলা নছে রূপ লখিল নয়।
বে অকে পড়ে দিঠি সে অকে রয়॥

দেখিতে দেখিতে মনে এমনিং লয়।
সকল অক্সেং যদি নয়ান হয় ॥
যখন শ্যামবন্ধু বাঁশীটি পূরে।
বনের পশু কান্দে বিরিখি ঝুরে॥
যখন তক্ততে বাঁশীটি বাজে।
পরাণ বেমনং করে না কহি লাজে॥
নয়ান-কোণে ভারদ আছে কি ধন।
যার লাগিং জাতি কুল করিলুঁ পণ॥

1126119951

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৮২ ও প-র পুথির ১৪।০২ সংখ্যক পদ। 'রামকেণি' স্থলে 'বিভাব' প-র। ২। 'রূপের নাহি সীমা' স্থলে 'শ্রামরূপে সীমা' প-র। ০। 'লখিলে' ক। ৪। 'মনে এমনি' স্থলে 'মোর হেন মনে' প-র। ৫। 'অল' প-র। ৬। 'বখন তরুতলে' স্থলে 'কদম্ভলাতে' প-র। ৭। 'পরাণ বেমন' স্থলে 'পরাণে বে' প-র। ৮। 'নরান-কোণে তার' স্থলে 'নরানের কোণে' প-র। ৯। 'বার লাগি' স্থলে 'বাতে' প-র।

সিমুড়া।১

কি বা সে মোহন-বেশ ভুলাইলে সবং দেশ না রহে সভীর সভীপনা। ভরমে দেখিলে ভারে জনম ভরিয়া গো यूतिया मत्राप्त[े] के कना ॥ नरे सम कि कतिनुं किटन वा त्म वाज़ाहे नुं कि भिन समिन सानि पूरक। ৰাতি কুল শীলে সই বজর পড়িল গো कामाऋश दम्भि दहोट्य दहोट्य ॥ কিবা সে বল্লান-বাণ विश्राय शनिन (गा भन्नम अनिया दिन वृदक । कान वा भामनी नानी जानना बाधरयः (गा আঞ্চন খালিয়া দি ভারণ মুখে।

থাইতে সোয়ান্ত নাই নিন্দ দুরে গেল গো

হিয়া ডহ ডহ >> সন কুরে।

উড়ু উড়ু >> আনহান ধক ধক করে প্রাণ

কি হৈল রহিতে নারি > ত্বরে॥

রসের মূরতি সে দেখিলে না রহে দে

বাতাসে পাষাণ হয় পানী।
বলরাম দাসে বোলে সে অল পরশ হৈলে
প্রাণ লৈয়া কি হয় না জানি॥১৭॥৭১০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৮৩ ও প-র পুথির ১৪।০০ সংখ্যক পদ। 'নিদ্বৃড়া' ছলে 'তুড়া' প-র।
২। 'তুলাইলে দব' ছলে 'নেথিতে মুবছে' প-র।
০। 'মজরে' ক, খ; 'না মরে' প-র। ৪। 'সই'
ইত্যাদি হলে 'দই কি করিলুঁ মেনে' প-র। ৫। 'দেন বাঢ়াইলুঁ' হলে 'চাহিলুঁ পো' প-র। ৬। 'দেন ক, খ, ঘ, চ, প-র। ৭। 'আজি' প-র। ৮। 'কালারপ' ইত্যাদি হলে 'কিনা রূপ দেখিলাম চৌখে' প-র-সা। ৯। 'রাখিবে' প-র। ১০। 'জালিরা দি তার' হলে 'দেরাব তার' প-র। ১০। 'লহ দহ' ক; 'চহ চহ' থ। ১২। 'উড় উড়' হলে উড় পুড়' প-র-সা। ১০। 'নারোঁ প-র।

थाननी ।>

রূপে ভরল দিঠি সোঙরি পরশ মিঠি
পুলক না তেজই অল ।

মধুর মুরলী-রবে শ্রুতি পরিপুরিত
না শুনে আন পরসঙ্গ ॥

সঞ্জনি অব কি করবি উপদেশ ।

কামু-অমুরাগে মোর তমু মন মাতল
না শুণে ধরম লব-লেশণ ॥ গ্রুণ ॥

নাসিকা হো সে অক্সেক সৌরভে উনমত
বদনে না লয়ে আন নাম।
নব নব গুণগণে বাক্ষল মর্ মনে
ধরম রহব কোন ঠাম॥
গৃহপতি-ভরজনে গুরুজন-গরজনে
অন্তরে উপজয়ে হাস।
ভহি এক মনোরথ জনি হয়ে অনর্থ প্রত্

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৪৮ ও প-র পুথির ১৯:৪ সংখ্যক পদ। ২। 'মধুর' (প-র, সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি) ফ্লে 'মোহন'ক, খ, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'আপন'ক; 'আর' সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি। ৪! 'সছে' ক, খ, য়, চ; 'গুনে' প-র। ৫ 'ভয়-লেশ' ক, প-র-সা। ৬। 'নাসিকা হো সে অক্লের' ফ্লে 'নাসিকা সে অক্লের' ক; 'নাসিকা যে সে অক্ল' প-র। ৭। 'কো ফানে' ক, খ, খ, চ, প-র। ৮। 'ভহিঁ এক' ফ্লে 'ভাহে এভ' প-র। ৯। 'বদি' ক, খ, য়, চ, প-র। ১০। 'অফুরভ' ক, খ, য়, চ, প-র-সা।

ভুড়ী।১

কানড়-কুত্বম জিনি কালিয়া বরণ থানি তিলেক নয়নে যদি পাগে। তেজিয়া সকল কাজ জাতি কুল শীল লাজং মরিবে কালিয়া-অমুরাগে॥ সই আমার বচন যদি রাথ। ফিরিয়া নয়ন-কোণে না চাইহ তার পানে কালিয়া বরণ যার দেখ॥ ধ্রু॥ আরতি পিরিতি মনে যে করে কালিয়া সনে কখন ভাহার নহে ভাল। কালিয়া রজসং কালা মনেতে গাঁথিয়া মালা জাগিয়া জিলিয়াং প্রাণ সেল॥ নিশিদিশি অমুখণ প্রাণ করে উচাটন
বিরহ-সনলে ছলে তমু।
হাড়িলে হাড়ন নয় পরিণামে কিবা হয়
কি মোহিনী জানে কালা কামু॥
দারুণ মুরলী-স্বর না মানেশ্ জাপন পর
মরম ভেদিয়া যার থাকে।
বিজ চণ্ডীদাসে কয় তমু মন ভার নয়
বোগিনী হইবে সেইশ্ পাকে ॥১৯॥৭৯৫॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১২৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'তেজিয়া' ইডাাদি স্থলে সা-প ২০১ পুথির
পাঠ বলা,—'ছাড়িএ সকল কাজ ডেজি কুলভর
লাজ'। ৩। 'ভূষণ' সা-প ২০১ পুথি। ৪। 'জালিয়া
জপিয়া' স্থলে 'জালিয়া জালিয়া' ক, খ। ৫। 'মিশি
দিশি' স্থলে 'নিশি দিন' ক, খ। ৬। 'জানে' সা-প
২০১ পুথি। ৭। 'সোই' ড়; 'এই' সা-প ২০১
পুথি।

श्रीबाब 13

কি রূপ দেখিলুঁ সই কদন্তের তলে।
লখিতে নারিলুঁ রূপ নয়নের জলে॥
কি বৃদ্ধি করিব সেই কি বৃদ্ধি করিব।
নিতি নব অসুরাগে পরাণ হারাব॥
কিবা নিশি কিবা দিশি কালা পড়ে মনে।
দেখিলে এমন হবেং জানিব কেমনে॥
গৃহকাজে নাহি মন কর° নাহি সরে।
ভামনাম শুনিতে পুলকে অজ ভরে॥
ভাহেও সে মোহন বাঁণী রাধা রাধা বাজে।
পরাণ কেমন করে মলুঁ লোক-লাজে॥

। ২০॥৭৯৬॥

পাঠান্তর

। ইহা শ-র-সা পুথির ১২৮৮ সংখ্যক পদ।

२। 'हर' थे। ७। 'कांब्र' का ४। 'छांशास्त्र' का

ভাটিয়ারি ৷১

আগো পাছে চলে মোর কত প্রিয় সহচরী বমুনার জলে আজু যাই।

বোক্সট কাড়িতে রূপ নয়ানে লাগিয়া গেল সরম রহিল সেই ঠাঞি॥ আজু দেখিলুঁ রূপ কদম্বের তলে।

হিয়ার মাঝারে মোর নাজানি কি জানি হৈল নিরবধি ধিক ধিক জলে॥ এছ॥

কেন বা চঞ্চল চিত নিবারিতে নারি গো মন মোর থির নাহি বান্ধে।

তিলে তিলে বাবে বাবে মুরুছা পাইয়া পাক চেতন পাইলে প্রাণ কান্দে॥

ধীরে ধীরে পা খানি বাড়াই কত ছল করি তাহে গুরুজনেরে ডরাই।

বংশীবদনে কৰে শুন অসুরাগিণি পিরিতি-অনল না নিভাই ॥২১॥৭৯৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১২৮০ সংখ্যক পদ।
 ২। 'কাছিতে' ক, থ। ৩। 'দেখিল' ক, प;
 'দেখিলাম' ধ। ৪। 'ছইয়া' ক।

एवा जान ।>

নব অনুরাগ-ভরে রহিতে না পারি ঘরে
চলে ধনী সখী একসঙ্গে ।
চলিতে না চলে পা ধরণে না বায় গা
কুঞ্জে মিললঙ হেন রঙ্গে ।
দেখিয়া বিনোদ হরি আনিলেন আগুসরি
বসিলেন রসের আবেশে ।
ধনী অনুরাগিণী কহরে সরস বাণী
শুনি নাগর প্রেম-জনে ভাসে ॥

স্থবদনী কছে কথা বেমন **অন্ত**রে বেখা ছলছল অবক্ষণ নয়ানে।

গৰ্বব হৰ্ষ রসাবেশ দৈন্ত গ্লানি মোহ লেশ গদগদ মলিন বহানে॥

আর কত ভাব ভাছে খাদ-মন মোহেং যাহে ঈষদ বঙ্কিম ভাছে মাধা।

প্রেমদাস করে ধনি সরস বিরস জানি॰ রাখিতে না যায় পুন রাখা ॥২২॥৭৯৮॥

> ইত্যাদি রূপামুরাগঃ। ইতি দশম পল্লবঃ।

> > পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১২৮৮ সংখ্যক পদ।
'তথা রাগ' ফ্লে 'ভূপালী' প-র-সা। ২। 'এক
সঙ্গ'ক, থ, ঘ, চ। ৩। 'মিলন' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৪। 'রঙ্গ'ক, থ, ঘ, চ। ৫। 'মোহ'
ঘ, চ, প-র-সা। ৬। 'বাণী' খ।

অথ আফেপামুরাগঃ।

স এব নানাবিধো ষধা।

কৃষ্ণঞ্চ মুরলীঞৈবং আত্মানক সধীন প্রতি।
দূত্যাং ধাতরি কন্দর্পে তথা গুরুগণাদিরু॥

তত্ত্ব শ্রীকৃষ্ণং প্রতি আক্ষেপো যথা।

তত্রাদো **শ্রীমহাপ্রভুঃ।** বক্টা>

দেখি গোৱা নীলাচল-নাথ।
নিজ পারিষদগণ সাথ ॥
বিভোর হইলা গোপী-ভাবে।
কহে পছ করিয়া আক্ষেপে ॥
আমি ভোমা না দেখিলে মরি।
উলটি নাং চাহ ভূমি কিরিও ॥

করিলা পিরিভিময় ফাঁদ।
হাতে দিলা আকাশের চাঁদ ॥
এবে ভামা দেখিতে সন্দেশ।
কহে গোরা করিয়া আবেশ ॥
হলহল অরুণ নয়ান।
রসরস বিরস বয়ান॥
অপরূপ গৌরাজ-বিলাস।
কহে কিছু নরহরি দাস ॥১॥৭৯৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'উলটি না' ফলে 'উলটিরা' ক। ৩। 'কেরি' ক,খ,ব,চ।

थाननी ।>

কুঞ্চ হি ভেটল নাগর শ্যাম।
ধনি অনুরাগিণি সহলই বাম ॥
গদগদ কহে কথা নাগর পাশ।
ভূতাঁ কাহে মাধব ভেলি উদাস॥
পহিলহি যত ভূতাঁ আরতি কেলং।
সো অব জুরহি দূবে রহি গেলং॥
হাম ভূয়া দরশন লাগি বিভোরং।
ভূতাঁ কাহে বচন না শুনসিং মোর॥
ভূয়া লাগি কুল শিলং ভেজিলুঁ হাম।
না জানি কি অবহাঁ আহুরে পরিণাম॥
ভ্রানদাস কহ নহেও চুরাই।
ধনি অভি সরল কহরে পুন ভাই ঃ২৮৮০০॥

পাঠান্তর 🥕

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯০ সংখ্যক পদ। ২। 'কেলি' ক। ৩। 'গেলি' ক। ৪। 'লাপি বিভার' ছলে 'লাপিরা বিভোর' ক; 'লাপিরা ভোর' চ। ৫। 'শুন্সি' ক, থ, চ, প-র-না। ৬। 'শীল' ক, খ, পর-সা। ৭। 'নছে' ছলে 'নাহ' ক, ঘ, চ।

श्रीकांत्र 15

वक् मकिल आगात लाग। ना जानिया यपि করাছিং পিরিভি কাহারে করিব রোষ ॥ স্থার সমুদ্র नमूर्य (मथिया খাইলু অপন সুখে। কে জানে খাইলে গরল হইবে পাইব এতেক ছখে॥ মো যদি জানিতাঙ অলপ ইন্সিতে তবে কি এমন করি। জাতি কুল শীল মজিল সকল ক্রিয়া কুরিয়া মরি। অনেক আশার ভরসা মক্রক দেখিতে করিয়ে সাধ। প্রথম পিরিভি ভাছার নাহিক ত্রিভাগ° আধের আধ ॥ যাহার লাগিয়া যে জন মরয়ে त्मर यमि करत[®] व्याप्त । **ठ** छीमारम करह এমনি পরিডি क्त्ररत्र ञुक्न मत्न । १०१४ - ১॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৯১ সংখ্যক পদ।
২। 'করেছি' ক; 'করিরাছি' प। ৩। 'থাইল'
प; 'আইলু' ক। ৪। 'মজিল সকল' ছলে 'সকল
মজিল' থ, प; 'মজিল সকলি' চ। ৫। 'য়িভাপের'
চ।৬। 'কররে' থ, प, প-র-লা। ৭। 'এমন' চ।

গান্ধার ।১

অহে খ্যাম তু বড়িং স্থজন জানি°। কি গুণে বাঢ়াইলা° কি দোষে ছাড়াইলা° নৌতুন পিরিতিধানি॥ ভোমার পিরিভি আদর আরতি আর কি এমন হবে। মোর মনে ছিল এ হুখ সম্পদ क्रम ज्याधि यात्र॥ দিলা সমাধান ভान रेहन कान वृश्चिनाम जनभ काटन। পাছু না গণিলাম মুঞি অভাগিনী **जु**वनः जित्रं ना**रज** ॥ ছিল শুভ দিন যখন আমার তখন বাসিতা ভাল। না পাই দেখিতে এখন এ>> সাধে কান্দিতে জনম গেল। বন্ধুর পিরিতি কহয়ে শেখর কহিতে পরাণ ফাটে। করাত যেমন>২ শখ-বণিকের আসিতে যাইতে কাটে ॥৪॥৮•২॥ পাঠান্তর ১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৯২ ও প-র পুথির

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১২৯২ ও প-র পৃথির ১৯।২৭ সংখাক পদ। 'গান্ধার' হলে 'দিক্জা' প-র। ২। 'তু বড়ি' হলে 'তুহুঁ দে' থ। 'অহে' ইত্যাদি পংজি হলে প-র পৃথির পাঠ বথা,—'অহে শ্রাম তুমি বড় হজন তা জানি'। ৩। 'সড়িলে' প-র। ৪। 'হাড়িলা' ক খ, য়, চ। ৫। 'নেবান' হড়েইলা' হলে 'গুলে তালিলে' গ-র। ৬। 'নবীন' ক, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৭। 'এমনি' ক, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৭। 'এমনি' ক, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৮। 'বুনিলাম জলপ' হলে 'বুনিলু ডোমার' প-র। ৯। 'না সণিলাম' হলে 'নাহি গণি' প-র। ১০। 'জগত' প-র। ১১। 'জতি' প-র। ১২। 'করাত বেনন' হলে 'বেনন ধরণ' প-র-সা।

बाननी ।>

বন্ধ কানাইং কছিলে বাসিবা ছুখা। কুলের ধরম রাখে⁸ আর যত কুলবতী সে জনি ভেরত্যে তুরা মুখ ॥ এ ॥ তিমির-কা**জরু ডে**ল সহজে বরণ কাল অন্তর বাহিরে সমতুল। মরুক ভোমার বোলে ্কলসী বান্ধিয়া গলে সে ধনি মজাকু জাতি কুল a পরিচয় নাহি ছিল যথন তোমার সনে আন ছলে দেখিয়া বেড়াও। বারে বারে ডাকি আমি শুনিয়া না শুন ভূমি আঁখি তুলি সরসে না চাও॥ যখন পিরিতি কৈলা আনি চাঁদ হাতে দিলা আপনে বনাইতা সোর বেশ। আঁখি-আড় নাহি কর হাদয় ২০ উপরে ধর এবে তোমা দেখিতে সন্দেশ। একে হাম পরাধিনী তাহে কুল-কামিনা चरत्रभ रेहरक व्यक्तिना विस्तम । যথা তথা থাকি আমি তোমা বহি নাহিজানি जकलि कहिन्ँ २२ जिंदिणव ॥ বড় বৃক্ষ-ছায়া> দেখি ভরদা> করিলুঁ মনে ফুল ফলে ১ একই না গন্ধ। সাধিলা আপন কাজ আমারে সে দিলা লাজ জানদাস পড়ি রছ ধন্দ 🛮 🕻 🕩 🕬

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১২৯০ ও প-র পুথির ১৪।১২৯ সংখ্যক পদ। 'ধানশী' হুলে 'কফ্লা' প-র। ২। 'বদ্ধ কানাই' হুলে 'বদ্ধু হে' ও; 'লহে বদ্ধু' প-র। ৩। 'মনে হুখ' প-র। ৪। 'রাখি' ক, প-র-সা। ৫। 'জানি' ক, ও, চ, প-র-সা। ৬। 'পুঞ' ক, প-র-সা। ৭। 'জফ্ল' প-র। ৮। 'সর্বেশ' ক, খা ৯। 'বনাড্যো' প-র। ১০। 'ছিরার' প-র। ১১। 'ঘর' ক, ঝ, প-র-সা। ১২। 'কহিল' ক; 'জানহ' প-র। ১৩। 'বড় রক্ষ-ছারা' হলে 'রভনের রক্ষ' প-র। ১৪। 'ভরোসা' ধ। ১৫। 'ফল' প-র।

সিমুড়া ।১

অহে কানাইং বুঝিলুঁ তোমার চিত। আগে আহারণ দিয়া মারয়েঃ বান্ধিয়া এমতি তোমার রীত। ধ্রু। যখন আমাকে সদয় আছিল৷ পিরিতি করিলা বড়। এখন কি লাগি इहेला विद्रांशी নিদয় হইলা দড॰॥ বুঝিলু মরমে যে ছিল করমে (मरे (म रहेट) हार । নহিলে কে জানে খলের বচনে পরাণ সোঁপিলুঁ তায় ৷ ভোমার পিরিভি দেখিতে শুনিতে যে ছুখ উঠিছে চিতে। সে নারা মরুক যে করে ভরসা ভোমার পিরিতি-রীতে ॥ দেখিতে শুনিতে মাপুৰ-জাকার আছি নাও আছিয়ে খরে । হিয়ার ভিতরে বেমত পুড়িছে সে তুখ^৮ কহিব কারে । পুরুবে জানিতাম হইবে এমডি পাইব এতেক লাব্দে। छानमात्र कट्ट देशब्रक धवर আপন সুখের কাজে ১৬৯৮ - ৪১ পাঠাতর

>। ইহা প-র-সা পুৰির ১২৯৪ ও প-র পুৰির ১৪।১৩- সংখ্যক পদ। .২। 'আহে কানাই' হলে 'আহে নাথ' প-র। ৩। 'আধার' প-র। ৪। 'মারহ'থ। ৫। 'দঢ়'ক, খ। ৬। 'আছি না' হলে 'আছিলে' প-র-সা। ৭। 'আছি না' ইত্যাদি ছলে 'আছিরে আভির হরে' প-র। ৮। 'সে হুখ' হলে 'ভাছা বা' প-র। ৯। 'জানিতু' প-র।

श्रहरे ।>

কি মোহিনা জান বন্ধু কি মোহিনী জানং।

অবলার প্রাণ নিতে নাহি তোমা হেন ॥

রাতি কৈলুঁ দিবস দিবস কৈলুঁ রাতি।

ব্কিচে নারিলুঁ বন্ধু তোমার পিরিতি॥

ঘর কৈলুঁ বাহির বাহির কৈলুঁ ঘর।

পর কৈলুঁ আপন আপন কৈলুঁ পর॥

কোন বিধি সিরজিলে সোভের শেহলিও।

এমন বেথিত নাই ডাকে রাধা বলি ॥

বন্ধু তুমি যদি মোরে নিদারণ শ্ও।

মারিব ভোমার আগে দাঁড়াইয়া রওে ॥

বাশুলী-আদেশে বিজ চণ্ডীদাসে কয়ং।

পরের লাগিয়া কি আপনা পর হয় ৪৭॥৮০৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯৫ ও প-র পুথির ১০।১৩৭ সংখ্যক পদ। 'স্হই' স্থলে 'সিদ্বুড়া' প-র। ২। 'কি মোহিনী' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ বথা— 'বদ্ধ কি জানি মোহিনী জান'। ৩। 'কোন বিধি' ইত্যাদি কলিট প-র পুথি ব্যতীত জ্ঞান্ত পুথিতে নাই। ৪। 'চাও' ধ, ঘ। ৫। 'বাক্তনী-জাদেশে' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ বথা,—

'চপ্তীদাস কৰে হিয়া গুনিতে বুড়ায়। এমন পিরিভি আর না দেখি কোখায়॥' শীরাগ ৷১

বৈয়া বন্ধ সে কালং গেল (म काल (गल देवग्रा^७।8 আঁখি ঠানাঠারি মুচকি হাসি কত না করিতা রৈয়া^৫ ৷ বেশের লাগিয়া দেশের ফুল না রহিত কিছু বনে। নাগরীর সনেদ নাগর হইলা আর ষে চিনিবা কেনে॥ কুলি > বেড়াইয়া >> নাম লইয়াসং ফিরিতা বংশী বাইয়া। শুনিতেহ্য কত মুখের কথা লোক পাঠাইভা ধাইয়া>৽॥ হাতে করিয়া> মাণায় করিলুঁ ১৬ कनद्वत्रभ छाना । শেখর কহে भटत्रत्र (यहन নাহি জানে ফ কালা ম৮৯৮০৬॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্ৰির ১২৯৬ ও প-র প্ৰির ১৪।১০১ সংখ্যক পদ। 'গ্রীরাগ' হলে 'গ্রীগান্ধার' প-র। ২। 'দিন' প-র। ৩-৪। 'বৈহা' দ, চ; 'বঞা' প-র। হ। 'দিন' প-র। ৩-৪। 'বৈহা' দ, চ; 'বঞা' প-র। হ। 'বং' দ, চ পুথিতে 'কিছু' শব্দ নাই। ৮। 'নাগরীর সনে' হলে 'নগরে আসিরা' প-র। ৯। 'বে' শব্দ ক, থ, দ, চ, প-র পুথিতে নাই। ১০। 'কুলে' ব; 'পবে' প-র। ১১। 'বেডাঞা' ক। ১২। 'কুলি' ইত্যাদি হলে 'পবে বেডাইরা মোর নাম লৈরা' প-র। ১০। 'ভনিতে' ক, খ, দ, চ, প-র। ১৪। 'কত' ইত্যাদি হলে 'আমার বাটে বেড়াইতে থাঞা' প-র। ১৫। 'করি তুলি' প-র। ১৮। 'নাই কানে কালা' হলে 'জুনি নাই কান কালা' প-র।

শ্ৰীকৃষ্ণস্থোক্তিঃ।

স্থানির কাহে করসি তুরুঁ খেদ।
তুয়া বিনা রাতি দিবস হাম না জানিয়ে
কোনে কয়ল তোহেও ভেদ।
তুয়া মুখচাঁদ হেরি মঝু মানস
অহনিশি তহিঁ রহি গেলা।
নয়ন -কমল পর ভাঙ মদন-ধমু
তাহেও উমতি মতি ভেল।
কোটি রমণি তুয়া পদেও নিরমঞ্জিয়ে
তুয়ুঁ মঝু জীবন রাই।
তোহারি নাম গুণ অবিরত জপি হামধ্য
সদয়-হৃদয় তুয়া চাই।
এত কহি মাধব ছল-ছল লোচন
হৃদয় উপরে ধনি রাখি।
চরণ পরশি কহে হাম তুয়া অমুগত
প্রেমদাস তহিও সাখী।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯৭ ও প-র পুথির ১৪।১৩২ সংখ্যক পদ। ২। 'কোন' ক, প-র। ৩। 'তুহঁ' ক। ৪। 'অহনিশি' ইত্যাদি স্থলে 'কৈরৰ বিক্চনা ভেল' প-র। ৫। 'বরান'থ। ৬। 'দেখি' প-র। ৭। 'পারে' ক, চ; 'পার' প-র-সা। ৮। 'ক্লি হান' :স্থলে 'অপতহি' প-র।৯। 'তাহি' ক, খ, প-র-সা; 'তাহে' প-র।

পুনঃ শ্রীমত্যুক্তিঃ।

কি বলিব জার বন্ধু কি বলিব জার।
নরানের লাজে না ছাড়ি লোকাচারং।
গোকুলে গোয়ালাকুলে কেবা কিনা বোলে।
তমু মোর কুরে প্রাণ ডোমা না দেখিলে।

একে মরি মনছথে আবে গুরুর গঞ্চনা ।

ডাকিয়া সোধার হেন নাহি কোন জনা ॥

ডরে ডরাইয়া সে বঞ্চিব কত কাল ।

ভূয়া প্রেম-রতন গাঁথিব কঠমাল ॥

নিশি দিশি অবিরত পোড়ে মোর হিয়া ।

বিবলে বসিয়া কান্দি তোমা সম্ভরিয়া ॥

ভোমা দেখিবারে বন্ধু আসি নানা ছলে ।
লোকভয় লাগিয়া সে ডরে প্রাণ হালে ॥

না দেখিলে মরি যারে ভারে কিবা ভয় ।

যত্নাথ দাসে বলে দড়াইলে হয় ॥১০॥৮০৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১২৯৮ ও প-র পুথির ১৪।১০০ সংখ্যক পদ। ২। 'নয়ানের' ইত্যাদি ছলে প-র পুথির পাঠ ষথা,—'লাজে ছটি নয়ান না ছাছে লোকাচার'। ৩। 'আর' ক; 'তাহে' ও। গা 'অকর গঞ্জনা' থ, প-র-সা। । 'অকর গঞ্জনা' থ, প-র-সা। । 'হধার' ক, প-র-সা। ৬। 'করিয়া' প-র। । 'নাম লৈয়া' ক। ৮। 'তোমা দেগিবারে' ছলে 'তোমারে দেখিতে' প-র। ৯। 'লোকভর' ইত্যাদি ছলে প-র পুথির পাঠ যথা,—'লোকভরে মিলিতে না পারিয়ে বিরলে'।

यहरे ।>

পরাণ কান্দে বন্ধু তোমা না দেখিয়া।
অন্তরে দগধে প্রাণ বিদরয়ে হিয়া॥
বারেক দেখিতে নাহি পাই সব দিনেই।
কেমনে বা রবে প্রাণ দরশন বিনে॥
এ ছুখ কাহারে কব কে আছে এমন।
ভূমি সে পরাণ-বন্ধু জান মোর মন॥ প্রত॥
ইটকট করে প্রাণ রহিতে না পারি।
ব্যেণে খেণে জীয়ে প্রাণ খেণে খেণে মরি॥

কুল গেল শীল গেল না রহিল জাতি। জ্ঞানদাস কহে এই বিষম পিরিতি।
॥১১॥৮০৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প র-সা পুথির ১২৯৯ ও প-র পুথির ১৪।১৯৪ সংখ্যক পদ। 'কুহই' ছলে 'ব্রীরাগ' প-র-সা; 'সিদ্ধুড়া' প-র। ২। 'বাবেক' ইত্যাদি পংক্তির ফলে 'বাবেক দেখা না হইল সকল দিনে' খ; 'বাবেক দেখা নাই সকল দিনে' ঘ, চ; 'বাবেশ দেখাই নাই সকলছ দিনে' প-র-সা। ৩। প-র পৃথি ব্যতীত অভ্যান্ত পৃথিতে 'গ্রু' নাই।

তুড়ী ।১

তোমারে বুঝাই বন্ধু তোমারে বুঝাই।
ডাকিয়া সোধায় মোরে হেন জন নাই।
অনুখন গৃহে মোরে গঞ্জয়ে সকলে।
, নিশ্চয়ে জানিহ মুঞি ভখিমুং গরলে।
এ চার পরাণে আর কিবা আছে হুখ।
মোর আগে দাঁড়াপ চোমার দেখি চাঁদমুখ।
খাইতে গোয়ান্ত নাই নাহি টুটেড ভুক।
কে মোর বেণিত আছে কারে কব হুখ।
চণ্ডাদাসে কহে রাই ইখা না যুয়ায়।
পারের বোলে কেবা প্রাণ ছাড়িবারে চায়।

পঠিস্তির

リングリトン・リ

১। ইহা প-র-সা পুণির ১০ • ও প-র পুৰির ১৪|১৩৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ভক্ষিমৃ' ক; 'ভূঞ্জিব' প-র। ৩। 'ছুটে' প-র।

व्यानावत्री ।>

নিজ পতির বচনং যেমন পোলের যা। ভার আগে দাঁড়াইভে ভয়ে কাঁপে গা॥ তাহে আর° ননদিনী করে অপমান।
তোমার পিরিতি লাগি রাথিয়াছি প্রাণ॥
মোর দিব্য লাগে বন্ধু মোর দিব্য লাগে ।
চাঁদমুখ দেখি মরিং দাড়াও মোর আগে॥
এ তোমার ভুবন দিনাহন রূপ খানি।
ভাবিতে ভাবিতে মোর দগ্যে পরানি॥
ভাক-ভয় লোক-লাজ নাহি পড়ে মনে।
কাঠের পুতলী যেন পাক ংব রাতি দিনে॥
কত পরকারে চিত করি নিবারণ।
তমু সে ভোমার প্রেম নহে বিসর্ব প্রাণ।
তমু সে ভোমার প্রেম নহে বিসর্ব প্রাণ।
কহে বলরাম দাস কেমনে যাবে ছাড়া॥

পাঠান্তর

川ついたとろろれ

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১০০১ ও প-র পুথির ১৪।১৩৬ সংখ্যক পদ। 'আশাবরী' স্থলে 'আদোয়ারি' প-র-সাঃ 'নিজুড়া' প-র। ২। 'কুবচন' প-র। ত। 'বেন' প-র। ৪। 'माखाईर७' थ। ८। 'হালে' প-র। ৬। 'তাহে আর' স্থলে 'তাতে কত'প-র। ৭। 'রহিয়াছে' প-র। ৮। 'মোর मिया' हेकामि भःक्तित श्रम वक्त स्मात निया नाता।' প-র। ৯। 'মরোঁ' প-র। ১৽। 'জীবন' প-র। **>>। '(इन' भ-ब-मा, भ-ब।** >२। 'बादका' थ। ১৩। 'তমু' ইত্যাদি ছলে প-র পুথির পাঠ যথা,--'বে বল সে বল মোরে ভূমি প্রাণধন'। ১৪। অতঃ-পর প-র পুথিতে নিম্নিথিত অতিরিক্ত কলিটি मुद्दे इत्रः, यथा,--'स्मादत प्रथि व्यान नात्री करत ঠারাঠারি। এ বড় দারুণ শেল পাসরিতে নারি॥' ১৫। 'তোমার পিরিডি' ইভ্যাদি ভণিভার ক্রির পরিবর্ত্তে প-র পুথির পাঠ বুণা,—'বুলরাম দানে কহে ভালল বিবাদ। সকল নিছিয়া লৈল তুরা পরিবাদ ॥'

शीकांत्र १३

বিষের অধিক বিষ পাপ ননদিনী।

দারণ শাশুড়ী মোর অলন্ত আগুনি।

শাণানং কুরের ধার স্থানী ছরজন।

পাঁজরে পাঁজরে কুলবধ্র গঞ্জন।

বন্ধু ভোমায় কি বলিব আন।

যে বন্ধু সে বলু লোকে তুমি সে পরাণ। ধেণা
ভোমার কলন্ধ বন্ধু গায় সব লোকে।
লাজে মুখ নাহি ভোলোঁ। সভীর সমূপে।
এ বড় দারণ শেল সহিতে না পারি।

মোরে দেখি আন নারী করে ঠারাঠারি।

বলরাম দাস কহে ভাজিল বিবাদ।
সকল নিছিয়া নিলুঁ ভোমার পরিবাদ॥১৪॥৮১২।

পঠিস্কির

। ইহা প-র-সা পুথির ১৩•২ সংখ্যক পদ।
 । 'সানন' খ; 'সানান' घ; 'সানান্' চ। ৩।
 প-র-সা পুথি ব্যতীত অঞাক্ত পথিতে 'ঞ' নাই।
 ৪। 'তোলো' ক; 'তোল' প-র-সা।

कुड़ो ।>

কান্দিতে না পাই বন্ধু কান্দিতে না পাই।
নিচয়েং মরিব তোমার চাঁদমুখ চাই॥
শাশুড়ী ননদার কথা সহিতেও পারি।
তোমার নিঠুরপনা সোভরিয়া মরি॥
চোরের রমণী যেন ফুকরিতে নারে।
এমতি রহিয়ে পাড়াপড়সীর ভরে॥
ভাহে আর ভুমি সে হইলা নিদারুণ।
ভ্যানদাস কহে ভবে না রহে জীবন॥

পাঠান্তর

12612201

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩০০ সংখ্যক পর।

২। 'নিশ্চয়' ক; 'নিশ্চয়ে' ধ, প-র-সা। ৬। 'না' ক, প-র-সা।

সিকুড়া ।১

যখনং পিরিতি কৈলা আনি চাঁদ হাতে দিলা আপনি করিতা মোর বেশ। আঁৰির আড় নাহি কর হিয়ার উপরে ধর এবে ভোমা দেখিতে সন্দেশ॥ একে হাম পরাধিনী তাহে কুল-কামিনী घटतः देश्ट व्यक्तिना विदन्ता না যায় তমু ত আন এত পরমাদে প্রাণ আর কত কতিব বিশেষ॥ ननमी विषय कैं। हो। বিষমাখা দেয় খোঁটা তাহে তুমি এত নিদারুণ। কবি চণ্ডীদাসে কয় কিবা ভূমি কর ভয় বস্থু তোর নহে অকরণ ॥১৬।৮১৪॥ পাঠাস্তর

>। ইছাপ-র-সাপুথির ১৩∙৪ সংখ্যক পদ। ২। 'বধনে' ক। ৩। 'মোবে' ঘ। ৪। 'ঘর' ▼, প-র-সা। ৫। 'খোটা' ঘ; 'ঘোঁটা' প-র-সা।

यहरे ।)

তেদে হে বিনোদরায়।
ভাল হৈল ঘুচাইলে পিরিতের দায়॥
ভাবিতে গুণিতে তমু হৈল অতি ক্ষাণ।
ভাবিতে গুণিতে তমু হৈল অতি ক্ষাণ।
ভাগ ভরি কলঙ্ক রহিল এই চিন ॥
না জানি অস্তরে মোর হৈল কিনা বেধা।
একে মরি মনতুধে আর নানা কথা॥
ঘারে না মরিয়ে বন্ধু মরি মিছা দায়।
চণ্ডাদাস কছে কাহার কথায়ে কিণ যায়॥

112641161

পঠিবির

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১০০৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ঘুচাইলা' ক। ৩। 'কিবা' প-র-সা। ৪। 'ভাহে' প-র-সা। ৫। 'কথার' ক, থ, প-র-সা। ৬। 'কিবা' ক, প-র-সা।

ভাটিরারি।১

তুমি ত নাগর রসের সাগর যেমত ভ্রমর-রীত। সামি ত চুথিনী कुल-कलक्रिभी হইলুঁ করিয়া প্রীক্ত॥ গুরুজন ঘরে গপ্তয়ে আমারে ভোমারে কাহব কত। বিষম বেদনা কহিলে কি যায় পরাণে সহিছে যত॥ পিরিতি বন্ধু হে অনেক সাধের কি জানি বিচেছদ হয়। বিচ্ছেদ হইলে পরাণে মরিব এমতি মনে সে লয়। পিরিতি বিষম চণ্ডাদাস কৰে **७**नहर वज्र्यात वह । পিরিতি বিছেদ**্** হইলে বিপদ এমত না হউ কেন্তু ॥১৮॥৮১৬॥

পাঠাম্বর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩০৬ সংখ্যক প্রা ২। 'গুন হে' থ, প-র-সা। ৩। 'বিষদ' ক; 'বিচ্ছেদ' চ, প-র-সা।

कूड़ी 13

ছখিনীর বেণিত বন্ধু শুন ছখের ফথা। কাহারে মরম কব কে জানিবে বেণা। কান্দিতে না পাই পাপ ননদীর ভাপে। আঁখির লোর দেখি কহে কান্দে বন্ধুর ভাবে॥

বসনে মৃছিয়ে ধারা ঢাকি বদি গায়।
আন ছলে ধরি গুরুজনেরে দেখায়॥
কালা নাম লৈতে না দেয় দারুণ শাশুড়া।
কাল হার কাড়ি লয় কাল পাটের শাড়া॥
ছথের উপরে বন্ধু অধিক আর ত্বখ।
দেখিতে না পাই বন্ধু তোমার চাঁদমুখ॥
দেখা দিয়া যাইতে বন্ধু কিবা ধন লাগে।
না যায় নিলব্ধ প্রাণ দাঁড়াই তোমার আগে॥
বলরাম দাস বলে হউক খেয়াতে।
জিতে পাসহিতে নারি ভোমার পিরিতি॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১০•৭ সংখ্যক পদ। ২। (হের'খ। ৩। 'ননদিনীর'খ। ৪। 'মুছিরা' ড়,খ,চ,প-র-সা। ৫। 'রাখি' ক,চ,প-র-সা। ७। 'কাঢ়ি'খ।

धाननी ।>

আপন শপতি করি হাত দিয়া মাথে।
স্থ্ধুইং শরীর মোর প্রাণ তোমার হাতেও ॥
বন্ধু হে তোমারে বুঝাই।
সভাই বলে আমি ভোমার তেঞি জীতে
চাই । এ

নিরবধি ভোমা লাগি দগধে পরাণ।
তিলেক দাঁড়াও কাছে জুড়াকু নয়ান।
কি লাগি দারুণ চিত কাঁদে দিন রাতি।
কাহে বলরাম বড় বিষম পিরিতি। ২০।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩০৮ ও প-র পুথির ১৭১৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'স্থই' খ, প-র-সা, পর। ৩। 'সাথে' খ। ৪। 'রে' প-র-সা। ৫। 'আমি তোমার' স্থলে 'শ্রামের রাধা' প-র। ৬। 'দেগধ' প-র-সা। ৭। 'পথে' প-র।

তথা রাগ।১

ভোমার লাগিয়া বন্ধু যত দুখ পাই। তাহা কি কহিতে পারি তোমার যে ঠাঞি। একে প্রেম-জালা তাছে গুরুর গঞ্চন। নিরবধি প্রাণ মোর করে উচাটন 🛭 পতি তুরমতি তাহেং সদা দেয় গালি। ভাবিতে ভাবিতে ততু ক্ষীণ অতি কালী। এ সব হুখেতে^ও আমি হুখ না**হি** গণি। তোম। না দেখিতে পাই বিদরে পরাণি॥ শুনিয়া নাগর কহে করি নিজ কোরে⁶। বৃক্ ভাসিয়া গেল নয়ানের লোরে ॥ গদগদ কহে নাগর কাতর-বয়ানে। পরাণ নিছিলু রাই ভোমার চরণে n তুয়া গুণে বিকাইয়াছি কিনিয়াছ মোরে। व्यथीन करनदत्र (कन कह श्रुनवादत । যে কহ তাহাই করি নাহি কিছু ভয়। यञ् करर এই ভাল আর কিছু नয়॥

পাঠান্তর

157115721

১। ইহা গ-র-সা পুথির ১০০৯ সংখ্যক পদ।
২। 'ভার' খ। ৩। 'ছুখেড' খ। ৪। 'নিজ
কোরে' স্থান 'জোড় করে' প-র-সা। ৫। 'বুক'
ক, খ, চ, প-র-সা। 'বুক' পাঠে ছুজোডক ঘটে।
৬। 'পুনর্কারে' ক।

1129112391

ইভি সাক্ষাৎ অসুরাগঃ।

অত্যান্তরে সম্ভোগপদানি গেয়ানি।

পুনশ্চ দিনাস্তরে।

মুরলীং প্রতি আক্ষেপো যথা।

ভত্র শ্রীগৌরচন্তঃ।

হুহিনা।

রামানক্ষ স্বরূপের সনে ।
বসি গোরা ভাবে মনে মনে ॥
চমকি কছরে আলি আলি ।
ক্ষণেং রহিয়া বাঁশীরে দেয় গালি ॥
পুন কহে ক্ষরূপের পাশে ।
বাঁশী মোর জাতিকুল নাশে ॥
ধ্বনি কাণে পশিয়া রহিল ।
বধির সমান মোরে কৈল ॥
নরহরি মনে মনে গাসে ।
দেখি এই গৌরাক্ষ-বিলাসে ॥২২॥৮২০॥
পাঠান্তর

>। हेहा প-র-সা পুথির ১৩১० সংখ্যক পদ। २। 'करन करन' क।

জীরাধারাঃ মুরলীং প্রতি আক্ষেপ:।
ভবা রাগ।>

সুরলি রে মিনভি করিয়ে বারে বার।
ভাষের অধরে রৈরা রাণা রাণা নাম লৈরা।
ভূমি মেনে না বাজিও আর ॥
খলের বদনে থাক নাম ধরি সদা ভাক
ভক্জনা করে অপবশ।
খল হয় বেই জনা সে কি ছাড়ে খলপন।
ভূমি কেনে ছও ভার বদা ॥

তোমার মধুর স্বরে রহিতে নারিলাম বরে
নিকরে করিয়ে তু নয়ান।
পহিলে বাজিলা যবে কুল শীল গিয়াছে ভবে
অবশেষে আছে মোর প্রাণ ॥
বে বাজিলা সেই ভাল ইপেই সকলি গেল
ভোৱে আমি কহিলু নিশ্চয় ।
এ দাস উদ্ধবে ভণে যে বংশীর গান শুনে
সে জন ভেজই কুল-ভয় ॥২০॥৮২১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩১১ সংখ্যক পদ।
২। 'করবে' ক। ৩। 'রঞা' घ। ৪। 'লঞা'
घ। ৫। 'মেন' খ, घ, চ; 'বেন' প-র-সা। ৬।
'নারিলু' প-র-সা। ৭। 'গেল' ক। ৮। 'ঝব-

बहरें 13

শুন তোরে কি বলিব বাঁশী।
সভীকুল সকলি বিনাশি॥
গোবিন্দ-অধর-স্থারস।
পিয়া পিয়া মাতালি সাহস॥
অগত মোহদি মৃত্ত্বরে।
রমসি শবদেই যারে তারে॥
অথবা কি ভূমি অভি দোষী।
বাঁশিনী-বাঁশের জাতেই বাঁশী॥
দারুতে গঢ়ল ভূয়া দেহ।
কেবল দারুময়াই সেহ॥
এ যতুনন্দন দাস ভণে।
কি করুণা সুক্ঠিন জনে॥২৪॥৮২২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩১২ সংখ্যক পদ।
 ১। 'রমসি শবদে' কলে 'বসসি ববদে' ব। ●।

'ৰাতে' ক; 'ৰাতি' খ। ৪। 'দাকণময়ী' ক, প-র-সা; 'দাকণমই' ম; 'দাকণময়ি' চ।

সূতিন্তে ধনুষশ্চ বংশবরতো বন্দে তয়োরস্তিমং > বিন্ধো যেন জনস্তমুং বিরহয়ন্নান্তশ্চিরং তাম্যতি। বিন্ধানাং ক্রদি মার-পত্তি-বিষটেশপর্যনেষুভিন স্থয়। ক্রুবে বংশি ন জীবনং ন চ মৃতির্ঘোরাবিরাসীদ্দশা॥

112 (115 2 Su

পঠিক্র

>। 'বিদধ-মাধব' নাটক হইতে উদ্ধৃত এই লোকটি প-ন-সা পুথিতে নাই। অভাক্ত পুথিতেও ইহা অভত্ৰ পদক্ষপে গণিত হয় নাই। কিন্তু ইহাকে গণনা না করিলে নিদিষ্ট পদসংখ্যার পূবণ হয় না বশিয়া ইহা অভত্ৰ পদ-ক্ষপে গণিত হইল।

तिका

শহতিবিতি"। হে বংশি। বংশবরতঃ শ্রেষ্ঠ-বংশাৎ তব ধহুষশ্চ স্তিক্রংপজিঃ। 'বংশবরতঃ' ইত্যত্র শ্লেষমহিয়া শ্রেষ্ঠ-কুলাদিতি ধ্বনিঃ। তেন চ শ্রেষ্ঠকুলোজুতেন ন কদাপি পরাপকারঃ কার্যা ইতি বাজ্যতে। ভয়োর্বংশীধকুবোরহিমং শেবোক্তং ধলু-রিতি শেবং বন্দে। বেন বিছো জনঃ তহুং বির-হ্যন্ ত্যজন্ সন্ চিরকাগং নাস্তভাম্যতি। ছয়া হৃদরে বিদ্ধানাং নোহশাকং ন জীবনং ন চ মৃতিঃ। কিছ বোরা দারুলা দশা আবিরাসীৎ জাতা। কৈবিদ্ধানাং—ধ্বানেষ্ডিঃ ধ্বানাং শ্রম এব ইববো বাণাত্তৈঃ। কীদুলৈঃ—মারপত্রিভাঃ কন্দর্পবাণেভ্যো-হৃশি বিষ্ট্রেঃ।

অপুবাদ

হে বংশি ! ভোষার ও ধহুর উভরেরই উৎকৃষ্ট বংশে জন্ম। ভোষাদিগের উভরের মধ্যে
ধছুকেই বন্দনা করি; বেহেডু উহার বারা বিদ্ধ ব্যক্তি দেহ পরিভাগে করার অধিক কাল ক্লেপ ভোগ করে না। কন্দর্পের শর হইভেও দারুপ ভোষার বর-রূপ বাপসমূহ বারা ব্যবে বিদ্ধ ব্যক্তিগণের না ক্রীবন, মা মুড্যু---এক বিব্র দশা ঘটিরা থাকে।

ভাৎপর্য্য

কৰি 'উৎকৃষ্ট বংশে জন্ম' এই দিট বাক্যের ধানি ৰারা বুঝাইতেছেন বে, সৰংশ-জাত ব্যক্তির পদ্দে পরের অপকার করা কথনই সঙ্গত নহে; স্থতরাং স্বংশ-জাত বংশার পক্ষে মৃত্যু অপেক্ষাও স্থানন স্থাবি বাতনা প্রধান করা বার-পর-নাই গহিত বটে।

ৰাড়াৰা ৷১

ছিন্দ্র-জালে পূর্ণাং তৃমি শুনহ মুরলী।
সতি লঘু স্থকঠিন অন্তর তোহারি।
নীরস তোহার ভন্ম গ্রন্থি তাহে হয়।
কৃষ্ণ-করে থাক তুমি কোন শুভোদয় ।
কৃষ্ণের অধরে তুমি রহণ অনুক্ষণ।
তাহাতে পাইলা তারণ নিবিড় চুম্বন ॥
যত্তনাথ দাসে বোলে শুনহ মুরলি ।
নারী-প্রাণ লওয়া হেন কোথায় পাইলি।
॥২৬॥৮২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১০১০ সংখ্যক পদ।

২। 'পূর্ণ' ক্,থ, প-র-সা। ৩। 'ফুক্ঠিনা' খ, চ।

৪। 'কোন শুভোদয়' খলে 'কেমন মভদয়' ফ;
'কোন মডোদয়' খ; 'কোন মডোনয়' য়; 'কোন
প্লোদয়' চ। ৫। 'রহি' প-র-সা। ৬। 'আরো'

ফ; 'জুমি' প-র-সা। ৭। 'বহুনাঝ' ইডাাদি
ভণিতার কলি প-র-সা ব্যতীত অফাফ্র পুলিতে নাই।
এই পদটি নিয়লিঝিত বিদক্ষমাধনীর স্লোকের মন্দ্রায়্রবাদ, বথা—'সঝি মুরলি বিশালচ্ছিক্রমানের পূর্ণা,
লল্পতি কঠিনা খং গ্রহিলা নীরসাসি। ভদপি ভলসি
শক্ষজুম্মানন্দ্রাজং, হরিকরপরিরস্তং কেন প্লোল্বরন।'

वाना शननी ।>

শ্রামের মুরলী क्रमग्रर भूत्रलि করিলি সকলিও নাশ। মোহর মিনতি না শুনি আরতি করহ বাজিতে আশ ॥ শুন শুন রে ধরমনাশা। ও মুখ বান্ধিব দেব আরাধিয়া ঘূচাব তোমার আশা ॥ ধ্রু ॥ আমরা অবলা সহজে অখলা দেখিয়া তোহার লোভ: সকলিও খাইয়া অলপে অলপে জীবনে করহ ক্ষোভ II স্তর হইলুঁ এখনে আমরা ভেক্তত এ সব আশ। যাহার যেমন না ছাড়ে করণ কহে মনোহর দাস ॥২৭॥৮২৫॥ পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩১৪ সংখ্যক পদ।

১। 'হৃদ্র' ফ্লে 'হৃদ্রে' হ। ৩। 'সক্ল' ক,

ব, প-র-সা। ৪। 'মোহোর' ক, চ; 'মোরহ'
প-র-সা। ৫। 'তেমার' প-র-সা। ৬। 'সক্ল'

ক,ব,ব,চ। ৭। 'কারব' ক।

यहरे ।)

শুক্রজনারং স্থালায় প্রাণ কররে বিকলিও।
বিশুণ আগুন দেওও শুটামের মুরলী ॥
উভ হাতে ভোমায় মিনতি করি আমি।
মোর নাম লৈয়া আর না বাজিহ তুমি ॥
ভোর স্বরে গেল মোর জাতি কুল ধন।
কত না সহিব পাপ-লোকের গঞ্জন ॥
ভোরে কহি বাঁশিয়া নাশিয়া সভীকুল।
ভোরে স্বরে মুঞ্জি অভি হৈরাছি আকুল॥

আমার মিনতিং শতং না বাক্সিছ আর।
ভরানদাস কৰে উহার ওইং সে বেভার॥
॥২৮॥৮২৬॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপৃথির > >১৫ সংখ্যক পদ।

২। 'গুরুজন' ক। ৩। 'ব্যাকুলি' প-র-সা।

। 'দিয়া' ক; 'দাও' ঘ; 'তাহে' প-র-সা। ৫।
'সপতি' প-র-মা। ৬। 'সও' (স্তুণু) চ; ডোরে'
প-র-মা। ৭। 'অই' প-র-মা।

ততে। মুরলী-চরিত্রং দখীং প্রতি কথয়তি।

শীরাপ ।১ সঞ্জনি লো সই। খানিক বৈদহ শ্যামের বাঁশীর কথা কইং । ঞ। শ্যামের বাঁশীটী তুপয়াণ ডাকাতি मत्रवम इति देशनः। পরাণ পুড়নিং হিয়া দগদগি কেন বা এমতি কৈল। খাইতে শুইচে আন নাহি চিঙে विधित्र कत्रित्ल वैं। भी। সব পরিহরি করিলে বাউরী मानद्य (यमन मागी ॥ देशब्द भव्रम কুলের করম मत्रम मत्रम क्याँमि। **ठ** धीमांग करव এই সে কারণে काञ्च-भनवतन वींनी ॥२३॥৮२१॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০১৬ সংখ্যক পদ।
২। 'থানিক' ইত্যাদি ছলে প-র-সা পুথির পাঠ
বধা,—'থানিক বৈসহ থানিক স্থানের
বাদীর কথাটি কই॥'

 । 'ছপরে' ক; 'ছফরে' প-র-না। ৪। 'নিল'
 । ৫। 'পোড়নি' ক। ৬। 'কাছর' ক, খ, প-র-না।

টাকা

স-> । "স্ব" ইন্ডাদি। (বানী) সকল কাৰ্য্য
ছাড়াইয়া উন্মন্তা কৰিল; (উছা) বেন (আমাকে)
দাসী ৰলিয়া মনে কয়ে অৰ্থাৎ আমার বারা দাসীবৎ
ইচ্ছামত কাৰ্য্য করায়। তুলনা করুন; ৰথা,—

"বিষম বানীয় কথা কহিলে না হয়।

ডাক দিয়া কুলবতী বাহির করয়॥

কেশে ধরি লৈয়া বার প্রামের নিকটে।

পিয়াসে হরিনী বেন পড়বে সহুটে॥"

—চণ্ডীদাস; প-ক্-ত, ৮০০ সংখ্যক পদ।

याननी ।>

ভাৰে মুঞিং কুলের বৌহারী ।

আর তাহে অবলা

কালা-গরলের জালা

অস্তব্রে মরম-বেথা কাহারে কছিব কথা গোপতে গুমরিং মরি মরি॥ मिं दह वश्नी मः भिटन भारत कारन । ভাকিয়া চেতন হবে পরাণ না রহে খডে ভন্ত মন্ত্ৰ কিছুই না মানে ॥ এ ॥ কালার লাগিয়া হাম হব বনবাসী। कामा निरमः कां कि कम श्राप निरमः रीना । ভরল বাঁলের বাঁশী নামে বেড়াকাল। সভারি>> স্থলভ বাঁশী রাধার হৈল কাল। অশুরে অসার বাঁশী বাহিরে সরল>। পিবয়ে অধর-স্থা উগারে গরল 🛭 বে ঝাড়ের ভরল বাঁশী ঝাড়ের লাগ शिक्ष्य ।

ভালে মূলে উপাড়িয়া সাগরে ভাসাভ>॰॥

বিজ চণ্ডীদাসে কৰে বংশী কি করিবে। সকলের মূল কালা তারে না পারিবে।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩১৭ সংখ্যক পদ।
২। 'আর' খা ৩। 'বৌহরী' ঘা ৪। 'ঋপডে'
ক; 'অক্তরে' প-র-সা। ৫। 'ঋমরে' প-র-সা।
৬। 'দংশিল' ক। ৭। 'ৠামের' প-র-সা। ৮।
'আমি' প-র-সা। ৯-১•। 'নিল' ক, প-র-সা।
১১। 'সবার' ক। ১২। 'রসাল' প-র-সা। ১৩। 'বে ঝাড়ের' ইভ্যাদি স্থলে 'বেনা দেশে বাসির ঘর সেনা দেশে আঙি' ঘ। 'বে ঝাড়ের বাশি তুষি
ভাহার লাগ পাঙি' প-র-দা।

बूढ़ी।>

মুরলীর স্বরে त्रहिटव कि र चटत्र গোকুল-যুবতীগণে। আকুল হইয়া বাহির হইবে না চাবে কুলের পানে कि॰ त्रज-लीला মিলায় শিলা শুনিতে সে ধ্বনিং কাণে। যমুনা-প্ৰন **থকিভ-গমন**• ভূবন মোহিত গানে । व्यानम्य छम्य ত্থ-ত্থাসর **उ**षित्रा व्यख्यत्र होत्त । मद्रायः काला कोरत्र कि व्यवनाः कांनरत्रः भवन-वार्ण ॥ কুলবতী-কুল क्टब नित्रमुग निरंद्य गाहिक मार्ग। চণ্ডীদাস তথে রাখিহ্> মরুমে कि त्यांविमी काला कात्म १७३॥४३।

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুথির ১২৯, ১০১৮ ও প-র পৃথির বাত সংখ্যক পদ। ২। বিছিবে কি' ছলে 'রহিব কে' প-র-সা। ৪। মিশায় যে' প-র-সা। ৫। 'কেবা' প-র-সা। ৪। মিশায় যে' প-র-সা। ৫। 'থেক ত গগন' ক, থ, ঘ, চ, প-র-সা। १। 'হংধু' ক; 'হংধ' চ, প-র-সা। ৮। 'কংছরে' ক, প-র-সা। ১। 'মরমে যে' প-র-সা; 'মরমের' প-র। ১০। 'কি অবলা' ছলে 'কিয়ে বালা' ক। ১১। 'হানিল' প-র-সা, প-র। ১২। 'রাথিয়' ক; 'রাথিও' প-র-সা।

युक्ते ।)

বিষম বাঁশীর কথা কহিলে না হয়ং।
ডাক দিয়া কুলবতা বাহির করয়॥
কেশে ধরি লৈয়া যায় শ্রামের নিকটে।
পিয়াসে হরিণীং যেন পড়ায়ে সক্ষটে।
সভা ভুলে নিজ পতি মুনি ভুলে মনং।
শুনি পুলকিত হয় তরু-লতাগণ॥
কি হবে অবলা জাতি সহজে সরলা।
কহে চণ্ডীদাস সব নাটের গুরু কালা॥
॥৩২॥৮৩০॥

পঠিস্তির

১। ইহা প-র সা পুথির ১৩১৯ সংখ্যক পদ।
২। 'কছিলে না হয়' ছলে 'কহন না য়য়' ক;
'কহন না হয়' চ; 'কহনে না য়য়' প-র-সা। বোধ

য়য় 'কছিল না হয়' ৩জ পাঠ হইবে। ৩। 'হয়িণ'
ক, খ, য়, চ। ৪। 'য়ৌন' ক, খ, চ, প-র-সা।

পঠমঞ্জরী।১

কি কহিব রে সখি ইহ জুখ-ওর। বাঁশি-নিশাস-গরলে তমু ভোর॥ হঠ সঞ্জে পৈঠয়ে শ্রাবণক নাঝ।
তৈখনে বিগলিত তকু মন লাজ ॥
বিপুল পুলক পরিপুরয়েই দেই।
নয়নে না হেরি হেরুয়ে জনি কেই॥
গুরুজন সমুখহি ভাব-তরক্ষ।
যতনহি বসনে ঝাঁপি সব অক্ষ॥
লহু লহু চরণে চলিয়েই গৃহ মাঝ।
দৈবে সে বিহি আজু রাখল লাজ ॥
তকু মন বিবশং খস্যে নিবি-বদ্ধং।
কি কহব বিস্তাপতি রহু ধন্ধ॥৩৩॥৮০১॥

পাঠান্তব

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১০২০ সংখ্যক পদ।

২। 'পরিপুরল' ক। ৩। 'চলয়ে' খ। ৪।
'বিবশ' স্থলে 'বিরস' প-র-সা। ৫। 'নীবিবন্ধ'
ক,খ।

, নিজং প্রতি তাক্টেপো যথা। শ্রীগোরচন্দ্রঃ॥

তুউ। ।
গোরাজ-চান্দের ভাব কহনে না যায়।
বিরলে বসিয়া পক্ত করে হায় হায় ॥
প্রিয় পারিষদগণ পুছুয়ে তাহারে।
কহে মুঞি ঝাঁপ দিব সমুদ্র মাঝারে ॥
করিলুঁ দারুণ প্রেম আপনা আপনি।
তু কুলে কলক হৈল না যায় পরাণি॥
এত কহি গোরাচান্দ ছাড়য়ে নিশাস।
মরম বুঝিয়া কহে নরহরিদাস॥৩৪॥৮৩২॥

পাঠাস্তর

১। ইচাপ-র-সাপ্থির ১৩২১ সংখ্যক পদ।
২। 'সমুজ নাঝারে' ফলে 'বমুনার নীরে' ক;
'বমুনা নাঝারে' চ,প-র-সা।

পাহিড়া।১

ধিক্ রক্ত নারীর যৌগনে।
পিরিতি করয়ে শঠ সনে ॥
যার লাগি প্রাণ সদা ঝুরে।
ফিরিয়া না চাকে সেহং মোরে॥
কি করিব তারে দোষ দিয়া।
না দেখিয়ে ললাট চিরিয়া॥
আপনা আপনিং বাঢ়াইলুঁ।
তুই কুলে কলক রাখিলুঁ।
সকলিং করিলুঁ ভূপুক্থ-সঞ্চ।
সকলিং করিলুঁ ভাম ভঙ্গ॥
ছিয়ে ছিয়ে পাপ পরাণ।
অবস্থু নাহিক বাহিরাণ॥
এ পাপ পিরিতি নাহি আশ।

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০২২ সংখ্যক পদ। ২। 'সেই' ক, ঘ, চ। ৩। 'আপুনি' ঝ, চ; 'জ্ঞাপনা' প-র-মা। ৪। 'স্কল' ক, ঝ, ঘ, চ।

গান্ধার।১

ধিক রহুঁ জীবনে যেং পরাধিনা জীয়ে।
তাহার অধিক ধিক্ পরবশ হয়ে॥
এ পাপ কপালেং বিহিং এমতি লিখিল।
স্থধার সাগরং মোরে গরল হইল॥
অমিয়া বলিয়া যদি ডুব দিলুঁ তায়।
গরল ভরিয়া কেনে উঠিল হিয়ায়॥
শীতল বলিয়া যদি পাষাণ কৈলাম। কোলে।
এ দেহ-অনল-তাপে পাষাণ সে গলে॥
ছায়া দেখি বসি যাইং তরুলতা বনেশ।
ভালায়া উঠয়ে তরুলভাপাতা সনে॥

যমুনার জলে যদি দিয়ে হাম ঝাঁপ।
পরাণ জুড়াবে কি অধিক উঠে তাপ।
অতএ দে এ ছার পরাণ যাবে কিসে।
নিচয়ে ভথিমু মুঞি এ গরল বিষে।
চণ্ডীদাস কহে দৈব-গতি নাহি জান।
দারুণ পরিতি সেই বধয়ে পরাণ।
।৩৬॥৮৩৪।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩২৩ সংখ্যক পদ।
২। 'যে' শক্ষ থ, ব ও চ পুথিতে নাই। ০।
'পাণ কপালে' স্থলে 'পাপ পরাণে' ক; 'পাপক
প্রাণে'থ। ৪। 'বিধি' ক, চ। ৫। 'সাগরে'
ক, থ, প-র-সা। ৬। 'কৈলাঙ' প-র-সা। ৭।
'বিসি ঘাই' স্থলে 'যাই বদি' ক। ৮। 'সনে'
প-র-সা। ৯। 'ধর্ষে' ক, চ; 'বধ্ই' প-র-সা।

ওখা রাগ।১

যত নিবারিয়ে পায়^২ নিবার না যায় রে।
আন পথে যাইতে সে কামু-পথে ধায়রে।
এ ছার রসনা মাের হইল কি বাম রে।
যার নাম নাহি লই লয় তার নাম রে॥
এ ছার নাসিকা মুঞি যত করিং বন্ধ।
ততু ত দারুণ নাসা পায় শ্রাম-গন্ধ॥
সে না কথা না শুনিব করি অমুমান।
পরসঙ্গ শুনিতে আপনি যায় কাণ॥
ধিক্ রক্ত্ এ ছার ইন্দ্রিয় মাের সব।
সদা সে কালিয়া কামু হয় অমুভব॥
কহে চণ্ডীদাস রাই ভাল ভাবে আছে।
মনের মরম কথা কারে জানি পুছ॥

পাঠাস্কর

1100411001

১। ইহা প-র-সা পুলির ১০২৪ সংখ্যক পদ।
 ২। 'তার' ক; 'পদ' প-র-সা। ৩। 'বাই' ক।

8। 'ছইল কি বাম রে' স্থলে 'হৈল কি বাম রে' ক; 'ছইল কিবা মোরে' ঘ। ৫। 'ষত করি' স্থলে 'কত করু' ক, থ, চ, প-র-সা।

হ্যারাপ ।>

কুলের বৌহারাং রাজার ঝিয়ারী স্বামী-সোহাগিনা নারী। পিরিতি লাগিয়া এ ভিন খোয়ালুঁ रहेलूँ कूल-थांभाती ॥ সই কি ছার পরাণ কাজে। স্বপনে শে জন⁸ নাহি দরশন জগত ভরিল লাজে॥ ধ্রু॥ ধরম করম সব তেয়াগিলুঁ যাহার পিরিতি সাধে। জাতি কুল শীল সকল শ্মজিল সে জনার পরিবাদে॥ ভাবিতে চিন্তিতে হিয়াজন-জর না রুচে আহার পানি। ক্রে বলরাম এ তিন• আখর কেবল দুখের খনি ॥ ৩৮॥৮৩৬॥ পাঠান্তর

া ইহা পার-সা পুথির ১৩২৫ ও পার পুথির ১৪৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'কুলের বেইহারী' স্থলে 'কুলের বেইহারি' চ; 'রাজার বছয়ারি' পার। ৩। 'সই' ইত্যাদি স্থলে 'সই ছার পরাণে কি কাজে' পার। ৪। 'সে জান' স্থলে 'বা সনো' পার। ৫। 'সক্লি' ক, খ, পার-সা, পার। ৬। 'এ তিন' স্থলে 'পিরিতি' পার।

তথা রাগ।) ওঁকান বিধি সির্জিল কুলবতী নারী। সদা প্রাধিনী খবে রুছে একেখুরাই॥ ধিক্ রহুঁ হেন জন হৈয়া প্রেম করে।
বুঝা সে জাবন রাখে তখনিও না মরে ॥
বড় ডাকেও কথাটি কহিতে যে না পারে।
পর-পুরুষেতেও রতি ঘটে কেন তারে।
এ ছার জাবনে মুই ঘুচাইলুঁ আশ।
চণ্ডীদাস কহে কেন ভাবহ উদাস॥৩৯॥৮৩৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'একাম্বরী' থ, প-র-সা। ৩। 'এখনি' থ। ৪। 'ডাকি'থ। ৫। 'পুরুষেত' ক, পর-সা; 'পুরুষের' থ।

ত্রা রাগ।১

আন্ধার ঘরের কোণে থাকি একেশ্বরী।
কোন বিহিং সিরজিল ছার কুলনারীও॥
কথার দোসর নাই খারে কহোঁ। তুথ।
দেখিতে না পাও চাঁদ হারুজের মুধ॥
কহ সধিও কি হবে উপায়।
না জানি কি গুণ কৈলে বিদ্যধ রায়॥
ঘরের আন্ধিনা দেখিবারে লাগে সাধও।
ততু ত না গুণে মনে এত প্রমাদ॥
তারপ দেখিয়াও কৈলুঁ মরণ সমাধিও।
রাতি দিনে কাওে প্রাণ বিষমণ বেয়াধি॥
আন কথা কহোঁও যদি গুরুর সমুখে।
ভাবেও বিভার তুমু গদ-গদ বাণী।
ধরিতে ধরনেও না যায়ও ছটি চোধেরও
পানিও।

ব্যান কাপ মজিল চিত গাস্তিল্ও নয়।

সে রূপে মজিল চিত গাসরিল^১• নয়। বলরামদাস বলে না জানি কি হয় ॥৪•॥৮৩৮॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৩২৭ ও প-র পুথির ১৪।৪৬ সংখ্যক পদ। २। 'विधि' क। ७। 'কুলের বছয়ারি' প-র। ৪। 'য়ারে কটো' স্থলে 'যারে কছো' ক, ব, চ ; 'কারে কব' প-র। ৫। 'সই' প-র। ৬। 'ঘরের' ইত্যাদি স্কলে 'ঘরের আজিনা মোর দেখিবারে সাধ' প-র। ৭। 'লাগিয়া' थ। ৮। 'देक मूँ भवन मर्भाध' ऋत्म 'देवल भवम ममाधि' প-त्र। २। 'कि हेंग्ल' প-त्र। २०। 'करहा' क, घ, ह। ১১। 'ভাবিতে' क, ह। ১>। 'श्रवन' ক, প-র-সা। ১০। 'নাযায়' স্কলে 'নচে' প-র। ১৪। 'ছটি চৌথের' স্থলে 'ছটি আঁথের' ক: 'ছচক্ষের' প-র। ১৫। অতঃপর প-র পুথিতে নিয়ালিখিত অভিরিক্ত কলিটি দৃষ্ট হয়; যণা, -'ও চান্দমুখের হাসি আগ আগ বোলে। হিয়ার ভিতরে প্রাণ নিরবধি দোলে॥' >७। 'शांत्रदिल' क, श-त-मा; 'शांत्रवात' थ।

তথা রাগ।১

অমুখণ কোণে থাকি বসনে আপনা ঢাকি ছুয়ারের বাহির পরবাস। আপনা বলিয়া বলে হেন নাহি ক্ষিভিতলেং েন ছারের হেন অভিলায। স্থি হে° তুয়া পায়ে কি বলিব আর। অবিরত যার মনে সে হেন তুলছ জনে নিশ্চয়° মরণ^৬ প্রতিকার ॥ প্রণ ॥ না বুঝে পামর মন বুঝাইলুঁ অমুক্ষণ পিরিতি হইল মোর কাল। শুনিতে মরমে বেগা ভাহে ননদিনী-কথা এ ঘর-বসতি বড় জাল। ষত তত্ত মনে করিদ নিশ্চয় করিতে নারিশ রাতি দিবস নাহি যায়। সব মোর রিপুগণ^১ খনে যত গুরুজন

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পৃথির ২৬১ ও ১৩২৮ ও প-র পৃথির ১৪।৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'আপনা' ইত্যাদি স্থলে প-র পৃথির পাঠ; ষ্থা,—'হেন নাই মোর ক্ষিতিতলে আপনা বলিয়া বলে'। ৩। 'সই' প-র। ৪। 'পায়' ক; 'ঠামে' প-র-সা। ৫। 'কেবল' প-র-সা, প-র। ৬। 'পরম' প-র। ৭। 'বুঝাইলুঁ' ইত্যাদি কলিটি প-র ব্যতীত অস্তান্ত পৃথিতে নাই। ৮। 'ষত' ইত্যাদি স্থলে 'ষত ষত মনে করি' ক, চ; 'কি করিতে কি না করি' প-র-সা; 'কত কত মনে করি' প-র। ৯। 'নিশ্চম' ইত্যাদি স্থলে 'কছু দড়াইতে নারি' প-র-সা; 'চিত নিবারিতে নারি' প-র। ১০। 'করিব' ক, ঝ, প-র-সা, প-র। ১২। অতঃপর প-র পৃথিতে নিম্নলিথত অদ্ধ-কলি দৃষ্ট হয়; যথা,—

'নরোক্তম দাদে কয় স্থাম সে তোমার হয় ইথে দঢ় জানিহ নিশ্চয়।'

> অত্র "ধিক্ রস্ত পরাধিনী নারী" ইঙ্যাদি গেয়ম্।*

অথ সখীং প্রতি আক্রেপো যথা।

जीरगीवठसः।

ব্ৰহ্ ।১

আরে মোর গোর কিশোর। পুরুব প্রেম-রদে ভোর॥ স্বরূপ দামোদর রামরায়। করে ধরি করে হায় হায়॥

রাতি দিবস নাহি যায়।

• 'ধিকু রছ পরাধিনী নারী' ইত্যাদি পদটি
ত শুরুজন

সব মোর রিপুগণ শ্বান পুথিতেই উক্ত হর নাই; স্তরাং আমরা
কি কহিব শবাহি বিধায় শ্বান শ্বান গ্রান ক্ষিতে পারিলাম না।

কহে মৃত্ গদগদ ভাষ।

হন বহে দীঘ নিশাস' ॥

মরম না বুঝে কেহো মোর।

কহে পদ্ত হইয়া বিভোর ॥

কেনে বা এ প্রেম বাঢ়াইলুঁ।

জীয়ন্তে পরাণ খোয়াইলুঁ॥

নিঝরে ঝর্যে তুন্য়ান ।

নরহরি মলিন ব্যান ॥ ৪২ ॥ ৮৪০ ॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১৩২৯ সংখ্যক পদ। ২। 'নিখাস' ঘ, চ। ৩। 'নিকুরে ঝুরুরে' প-র-সা। ৪। 'নয়ান' ক, খ, চ, প-র সা।

তথা রাগ।১

কাহারে কহিব তুগ কে বুঝে সম্ভর।
যাহারে মরমী কহিং সে বাসরে পর ॥
আপনার° বলিতে বুঝি নাহিক সংসারে।
এত দিনে বুঝিলুঁ সে ভাবিয়া অন্তরে॥
মনের মরম কহি জুড়াবার তরে।
বিশুণ আঞ্জন সেই জালি দেয়° মোরে॥
এত দিনে বুঝিলাম মনেত ভাবিয়া।
এ তিন ভুবনে নাই আপনা বলিয়া॥
এ দেশে না রব একা যাব দুরদেশে।
সেই সে যুগতি কহে বিজ চণ্ডাদাসে॥
॥৪৩॥৮৪১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৩ - সংখ্যক পদ। ২। 'বাসি' প-র-সা। ৩। 'আপনা' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'দেই' প-র-সা। ৫। 'মনেতে' ক, পর-সা। ৬। 'নাহি'ক, খ; 'নাঞি'চ।

মুছই (১

কি করিব কোথা যাব কি হবে উপায়।
যাবে না দেখিলে মরি তারে না দেখায়।
যার লাগি সদা প্রাণ আনছান করে।
মোরে উপদেশ কর গাসরিতে তারে।
এত দিন ধরি মুঞি হেন নাহি জানি।
যে মোর তুথের তথা তার হেন বাণী।
আন ছলে রহি কত কবে কাণাকাণি।
প্রেমদাস বলে তুমি বড় অভিমানা।

118846831

পাঠাম্বর

১। তহাপ-র-সাপৃথির ১৩৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'আনন্দান' ক। ৩। 'করে' ক, খ, খ, প-র-সা।

> › পুনশ্চ স্থীং প্রতি আক্ষেপো গথা।

দিশ্বড়া।)

তোমরা মোরে ডাকিয়া সোধাও না প্রাণ আনছান বাসি। কেবা নাহি করে প্রেম আমি হৈলাম (नार्यो ॥ अ ॥ গোকুল নগরে কেবা কি মা করে তাহে কি নিষেধ বাধা। দে সৰ যুৰতী সতী কুলবভা कायु कलिकनो त्रांथा। লোকে চরচার বাহির হইলেং বিষ মিশাইল ঘরে। জগতের বৈরী পিব্লিভি করিয়া আপনা বলিব কারে॥

বেথিত আছিলা তোমরা পরাণের জীবনে মরণে সঙ্গ। দোষিণী হইলে অনেক দোধের কে ছাডে আপন অসং॥ नरमत्र नमन গোকুলের কান সভাই আপনা বলে। মো পুনি ইছিয়া নিছিয়া লইলু অনাদি জনম-ফলে॥ ডাকি না স্থাও রাধা বলি আর এখনি এখানে মৈলে। **हशोगांग** करह সকলি পাইবা বন্ধুয়া আপন হৈলে ॥৪৫॥৮৪৩॥

পাঠাম্বর

 ১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০০২ সংখ্যক পদ।
 ২। 'হইভে' ক, ঝ, ব, চ। ৩। 'চরচায়ে' থ, च,
 চ, প-র-সা। ৪। 'সঙ্গ' ক, থ। ৫। 'গোকুল কান' ক, ঝ, च, চ। ৬। 'সো' ক, ঝ, প-র-সা।
 १। 'পুন' ক, থ।

তথা রাগ ৷১

দেখিলে কলি কিনার । মুখ কলক ইইবে।

এ জনার মুখ আর দেখিতে না হবে॥

ফিরি ঘরে যাও নিজ ধরম লইয়া।

এ দেশে না রব মুঞি যাব বারাইয়া॥
কালা-মাণিকের মালা গাঁথি নিব গলে।
কামু-গুণ্যশ কাণে পরিব কুগুলে॥
কামু অনুরাগ°-রাক্সা বসন পরিয়া।

দেশে দেশে ভরমিব যোগিনী ইইয়া॥

চণ্ডীদানে কহে কেনে ইইলে উদাস।

মরণের সাথী যেই দে কি ছাড়ে পাশ॥

#841F881

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০০০ সংখ্যক পদ। ২। 'কলঙ্কীর' ক, চ। ৩। 'অফুরাগে রাঙ্গ' ঘ,চ।

शाननी ।>

স্থি হে ফিরিয়া স্থাপন ঘরে যাও। জিয়ন্তে মরিয়া যে আপনা খাইয়াছে তাহে তুমি কি আর বুঝাও॥ ধ্রু॥ নয়ন-পুতলী করি লইলুঁমোহন রূপ হিয়ার মাঝারে কবি প্রাণ। পিরিতি-সাগুনি জালি সকলি পোড়াইয়াছি জাতি কুল শীল অভিমান॥ না জানিয়া মৃঢ় লোকে, কি জানি কি বলে মোকে না করিয়ে শ্রবণগোচরে। স্রোত-বিথার *জলে* এ ওমু ভাদাইয়াছি কি করিবে কুলের কুকুরে॥ খাইতে শুইতে রৈতে আন নাহি লয় চিতে বন্ধ বিনে আন নাহি ভায়। মুরারি গুপতে কহে পিরিতি এমতি হৈলে তার গুণ তিন লোকে গায়।।৪৭॥৮৪৫॥ পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০০৪ সংখ্যক পদ। এই পদটি ইতিপূর্বে ৭৫১ সংখ্যক পদরূপে উদ্ভ হইয়াছে; স্নত্যাং পাঠাস্তর উক্ত পদে দ্রন্তব্য।

তুড়ী।১

আর কত বোল সই আর কত বোল।
নিভান অনল আর পুন কেন আলে ।
যে অনলে পোড়ে হিয়া সে অনলে সেকি।
কন্তারী লেপিয়া অসে শ্যাম-নাম লেখি।।

খ্যাম-পরসক্ষ বিনে যদি প্রাণ রয়।
তমু ত' দারুণ লোকে এত কথা কয়।।
জ্ঞান কহে বিনদিনি নিবারহ চিতেও।
কালায় মাতল মন কি করে কথাতে ॥৪৮॥৮৪৬॥
পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা প্ৰির ১০০৫ ও প-র প্ৰির ১৪।২০ সংখ্যক পদ। ২। 'নিজালা' প-র। প্রকৃত পাঠ বোধ হয়, 'নিজাইল' ইইবে। বাঞ্চালা-ক্রদস্ত 'নিজাইল' শব্দের অর্থ 'নির্ব্বাপিত'। 'নিজান' ক্রপটি অপেক্ষাকৃত আধুনিক। ০। 'অনল' ইত্যাদি হলে 'অনল কেন ফুক দিয়া জাল' প-র-সা; 'মনের আঞ্জন পুন' ইত্যাদি প-র। ৪। 'পে অনলে' হলে 'তাহে পুন' প-র। ৫। 'তমু কি' খ, ঘ। ৬: 'জ্ঞান কহে' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি প-র পুৰি ব্যতীত অক্সান্থ পুৰিতে নাই।

সিক্ষ্ডা।১

কি মোর এ ঘর ব্যাবের কাজ
লাজে কহিতে নারি।
তিলেক বিচেছদে লাগে প্রমাদ
হিয়া বিদরিয়া মরি।
আপন ইচ্ছায় বাছিয়া লইলুঁ
থে মোর করমে ছিল।
এ কথা শুনিয়া ধে জন বিমুখ

তারে তিলাঞ্চলি দিল॥ কি আর বুঝাও কুলের ধরমণ মন সভস্তরণ নয়।

কুলবভা হৈয়। রসের পরাণ জনিং কারো গৈছে হয়। ব কামু সে জীবন জাতি প্রাণ ধন এ ছটি নয়ানের তারা। পরাণ-অধিক নয়ান ১১-প্রভাণী

ধিক নয়ান১১-পু্তলী ভিলেকে বালিয়ে১২ ছারা ॥

গঞ্জে গুরুজন

বলু ১৩ কুবচন

সে মোর চন্দন চুয়া।

শ্রাম-অসুরাগে

শঙ্গ বেডিয়াছি

তাল্যু ভুল্সী দিয়া ॥৪৯ ॥৮৪৭॥

পাঠান্তর

১। ইश প त-मा शूणित ১৩৩৬ ও প-র পুणिয়
১৪١>১ সংখ্যক পদ। ২। चत' क, च, घ, घ,
প-র-সা। ৩। 'এয়ারে' ক, च, घ। ৪। 'লাজে
কহিতে' স্থলে 'লাজ কহিতে' ক, প-র-সা; 'লাজ করিবারে' च, च, চ। ৫। 'হিয়া বিদরিয়া' স্থলে
'য়ুরিয়া ঝুরিয়া' ঘ, চ। ৬। 'বোল' च, চ,
শ-র। ৭। 'কুলের ধরম' স্থলে 'ধরম বিচার'
পর। ৮। 'অভয়র' ক, প-র-মা, প-র। ৯।
'জানি' ক, च, প-র-মা, প-র। ১০। 'কার'
ক; 'কারু' ঘ। ১১। 'হিয়ার' প-র। ১২।
'ভিলেকে বাসিয়ে' স্থলে 'ভিলে ভিলে হই' প-র-মা।
১৩। 'বলু কুবচন' স্থলে 'বলে কুবচন' ক, চ,
প-র-য়া; 'ভল' পাঠে ছন্দোভক্ষ ঘটে।

দূতাং প্রতি আক্ষেপো যথা।

মলার ।১

দিবস রজনী গুণ গণি গণি
কি হৈল দারুণ বেথা।
খলের বচনে পাতিয়া প্রাবণে
খাইলুঁ আপন মাথা॥
শুন শুন দৃতি কি কহু মো প্রভিং
বচন না লাগে ভাল।
কি ছার পিরিতি ভাবিতে ভাবিতে
সোণার বরণ কালাঁ॥

সোণার গাগরি

বিষজল ভরিত

কেবা আনি দিল গাগে।

করিলুঁ আহার

না করিণ বিচার

এ वंश कोशंदन मोट्य ॥

নীর লোভে মৃগী

পিয়াসে ধাইতে

ব্যাধ শর দিল বুকে।

অলের সফরী

আহার করিতে

বড়শী লাগিল মুখে॥

নৰ ঘন৬ হেরি

পিয়াদে চাতকাণ

চঞ্ পসারল আশে।

বারিক বারণ

করল প্রন

কুলিশ মিলল শেষে ॥

লাখ হেম পাইয়া

য়ংনে বান্ধিতে

পড়িল অগাধ জলে।

হেন অমুচিত

করে পাপ বিধি

বিজ চণ্ডীদাসে বলে॥৫•॥৮৪৮॥

পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুণির ১০০৭ ও প-র পুণির ১৪।১১২ সংখ্যক পদ। ২। 'শুন শুন' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির স্থলে প-র পুণির পাঠ; যথা,—

'সই কে বলে পিরিভি ভাগ।' ৩। 'সোণার গাগরী' ইভ্যাদি হুলে প-র পূথির পাঠ; ষ্থা,—

'বিষের গাগরী থিরে মূথ পুরি।'
৪। 'না করি' স্থলে 'করহ' প-র। ৫। পিয়াদে
ধাইতে' স্থলে 'আনন্দে ধাওই' প-র। ৬। 'নব ঘন'
স্থলে 'অলধর' প-র। ৭। 'চাতক' প-র। ৮।
অতঃশর পর পুথিতে নিমাল্থিত অভিরিক্ত কলিটি
দুষ্ট হয়; যথা,---

'থির লাড়ুকরি বিষ মাথাইয়া অবলা বালকে দিল। আছু পাইয়া থাইতে থাইতে

নিকট মরণ ভেল ॥

অথ বিধাতারং প্রতি আক্ষেপো যথা।

শ্রীগৌরচন্দ্রঃ।

ष्ट्डे ।)

কনক-চম্পিক গোরাচান্দে।
স্থানতে পড়িয়া কেন কান্দে চ
ক্ষেণে উঠি কহে হরি হরি।
কে করিল আমারে বাউরি ॥
আজানুলান্তিত বাস্ত তুলি।
বিধিরে পাড়য়ে সদা গালি॥
বহে ধিক্ বিধির বিধানে।
এমত যোটনাং করে কেনে॥
কোন ভাবে কহে গোরারায়।
নরহরি সোধিয়া বেড়ায়॥৫১॥৮৪৯॥

পঠিস্তর

১। ইহাপ-র-সাপু(ধর ১০৩৮ সংখ্যক পদ। ২। 'ভোমেতে' ধ, ধ। ৩। 'ঘোটন' क; 'ঘোটনা'খ।

ভেউট বিহাগ ৷>

ধাতা কাতা বিধাতার বিধানে দিলামং ছাই।
জনম হৈতে একা কৈলে দোসর দিলে নাই।
না দিলে রসিক মৃঢ় মুক্তথের স্বনে।
এমতি আছিল তোর এ পাপ বিধানে।
যার লাগি প্রাণ কান্দে তার নাই। দেখা।
এ পাপ করমে মোর এমতি লেখাজোখা।
ঘর-ছ্য়ারে গাগুন দিয়া যাব দূর দেশে।
আরতি পুরিবেণ কহে কবি চণ্ডীদাসে।

পাঠান্তর

10310001

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৩৯ সংখ্যক প^র। 'ডেউট বিহাপ' ফ্লে 'ডেউটা বিহাপ্ডা' প-র-সা। ২। 'দিরাছি' ক; 'দিয়ে' চ, প-র-সা। ৩। 'পুক্ষের' ক; 'মুকুথের' থ, ঘ, প র-সা। ৪। 'নাহি' ক, থ, প-র-সা। ৫। 'পিরিতি' ঘ।

টাকা

৩—৪। "না দিলে" ইত্যাদি। চে মৃচ্
(বিধাতা!) (তুমি) রসিক পুরুষের সঙ্গে (আমাকে)
দিলে না অর্থাৎ আমাকে রসজ্ঞ নায়কের সহিত
সন্মিলিত করিলে না; তোর পাপ-বিধানে এইরূপ
ছিল?

ভণা রাপ ৷>

িধির বিধানে হাম আনল ভেজাই।

যদি সে পরাণ বন্ধুরং তার লাগি পাই॥
গুরু ত্রুজন যত বন্ধুর বেষ করে।

সন্ধ্যাকালে সন্ধ্যামুনিং তার বুকে পড়ে॥
আপন দোষ না দেখিয়া পরের দোষ গায়।
কাল সাপিনী যেন তার বুকেং খায়॥
আমার বন্ধুকে যে করিতে চাহেং পর।
দিবস তুপরে যেন পোড়ে তার ঘর॥
এতেক খুবতি আছে গোকুল নগরে।
কে না বন্ধুরেং দেশি বুক ফাটি মরে॥
বাশুলী আদেশে ঘিজ চণ্ডাদাসে ভণে।
তোমার বন্ধু তোমার আছে গালি পাড়িছ
কেনে॥৫৩।৮৫১॥

পাঠাস্তর

১। ইছাপ-র-সাপৃথির ১০৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'বছ্ব'ক, চ, প-র-সা। ৩। 'সদ্ধামনি' ঘ; 'সদ্ধামনি' প-র-সা। ৪। 'বুক্ব' প-র-সা। ৫। 'চায়' য়, চ। ৬। 'বছুকে' খ। **बी**बांग 13

আপনা আপনি **দিবস রজনী** ভাবিয়েং কতক দুখ।

যদি পাখা পাই পাখা হৈয়া যাই না দেখাই পাপ মুখ॥

সই বিধি দিল মোরেও শোকে।

পিরিতি করিয়া আশ না পুরল

কলক্ষ ঘূষিণ লোকে। গ্রা।
হাম অভাগিনা তাহে একাকিনী
নহিল দোসর জনা।

সভাগিয়া লোকে যত বোলে মোকে ভাগ যেগ না যায় শুনা।

বিধি যদি শুনিত' মুরণ হইত• ঘুচিত সকল ছুখ।

চণ্ডীদাসে কয় এমতি **হইলে** পিরিতির কিবাণ স্থ**ব** ॥৫৪॥৮৫২॥

, পাঠা স্বর

১। হহাপ-র-সাপুথির ১৩৭১ সংখ্যক পদ।
২। 'ভাবিয়া' প-র-সা। দ। 'মোকে' প-র-সা।
৪। 'সে' দ। ৫। 'হৈত' প-র-সা। ৮। 'করত'
প-র-সা। ৭। 'পিরিভির কিবা' স্থলে 'পিরিভি
কিসের' প-র-সা।

কন্দৰ্পং প্ৰতি আক্ষেপো যথা।

শ্রীগোরচন্দ্র:।

षुष्ठो ।>

গৌর হুন্দর মোর।

কি লাগি একলে বসিয়া বিরলে নয়নে গলয়েং লোর॥ ধ্রু॥ হরি-অমুরাগে আকুল অম্বর
গদগদ মৃত্র কহে।
সকল অকাজ করে মনসিজ
এত কি পরাণে সহে॥
অবলা-শরীর করে জরজর
মনের মাঝারে পশি।
কহিতে ঐছন পুরুব-বচন
অবনত মুখ-শশী॥
প্রলাপের পারা .কিবা কহে গোরা

পুরুব-চরিত সদা বিভাবিত দাস নরহরি ভণে ॥৫৫॥৮৫৩॥

পাঠান্তর

মরম কেহো না জানে।

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০⊰২ সংখ্যক পদ। ২। 'নয়নে গলয়ে' স্থলে 'গলয়ে নয়নে' ক, ধ, চ.প-র-সা।

ধানশী।>

পর-মন্দকারী পঞ্চবাণ-ধারী তোরে বাং বলিব कि। তোর আকর্ষণে পিরিতের ফাঁদে আমি সে ঠেকিয়াছি॥ मत्रम वृत्थिलुँ এত দিনে তোর অনক ভোহারি নাম। অঙ্গ বা থাকিলে আর কি হইত কি জানি কি গুণগাম ॥ পশিয়া নারীর মনের মাঝারে সরম করিলিঃ দুর। তার প্রতিফল হইবে তোমার কহিলুঁবচন গুঢ় ॥

কালার পিরিতি

লাগি তোর শরে

কাতর হৈয়াছি আমি।

কহয়ে উদ্ধব

যে জন অপ্তরে

তারে কি ছাড়িবে তুমি ॥৫৬॥৮৫৪।

পাঠাস্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৪৩ সংখ্যক পদ। ২। 'আর' ঘ, চ। ৩। 'মার কি হইড' ফুলে 'আর কি হইডা' ক; 'আব কিবা হৈড' প-র-সা। ৪। 'করিলা' ক।

ভিরোধা ।১

কতরে মদন তমু দহসি হামারি।
হাম নহ শঙ্কর হঙ্ বরনারি ॥
নাহি জটা ইহ বেণি-বিভন্ম।
মালতি-মাল শিরে নহ গঙ্গ ॥
মোতিম-বন্ধ মৌলি নহ ইন্দু।
ভালে নয়ন নহ সিন্দুর-বিন্দু ॥
কঠে গরল নহ মৃগমদ-সরে।
নহ ফণি-রাজ উরে মণিহার ॥
নীল পটাম্বর নহ বাঘছাল।
কেলি-কঙল ফুলা না হয়ে কপাল ॥
বিভাপতি কহ এহেন স্কুলা।
তালে ভসম নহ মলয় প্র-পঙ্ক ॥৫৭॥৮৫৫॥

পাঠাগুর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৬০৫, ১৩৪৪ ও প-র
পুথির ১৪।৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কভিছ' ক, ধ,
ঘ, চ; 'কথিছ' প-র। ৩। 'ভূছ' क; 'রছ' চ।
৪। 'নহি' প-র-সা। ৫। 'শিরে' ঘ। ৬। 'অনল'
প-র-সা, প-র। १। 'মণিরাজ' ক; 'ফণিহার'
ঘ। ৮। 'কেলি-কঙল ফুল' স্থলে 'কেলিকমল ইহ'
ক; 'কেলিক কমল' চ। ১। 'না হুরে' স্থলে 'এ

নং প-র-দা; 'না হোমে' প-র। ১০। 'কছ এ:হন' হলে 'কবি কছই' প-র-দা, প-র।

ভণা রাগ ৷১

মনমথ তোহে কি কহব অনেক।

দিঠি-অপরাধে পরাণ পরিপীড়িসিং

এ তুয়া কোন বিবেক ॥ গ্রু ॥

ডাহিন নয়ন পিশুনগণ বারণ

পরিজ্ঞান বামহি আধ ।

আধ নয়ন-কোণে যব হরি পেখলুঁ ও

তাহে ভেল এত পরমাদ ॥

পুরুষ্ণ বাহির পথ করত গতাগত

কোন না হেরত কান।

ভোহারি কুসুম-শর কপিছে না সঞ্চর

হামারি হৃদ্যে পাঁচবাণ ॥৫৮॥৮৫৬॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৪৫ ও প-র পুথির ১৪। বেশংখাক পদ। ২। 'পরে পাঁড়িসি' ক, চ; 'পর পিড়িসি' প-র-সা। ৩। 'কৌন' প-র-সা। । 'নয়নে' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'য়ব হরি পেথলু' ছলে 'হরি অবলোকনে' প-র। ৬। 'প্রত' প-র-সা। १। 'কোন না' ছলে 'কোনাহি' ক, খ, চ; 'কোনে না' ঘ। ৮। 'কতিছ' ক, খ, য়, চ, প-র-সা।

টাকা

১—৩। "মনমথ" ইত্যাদি। হে মন্মথ! ভোমাকে অধিক কি বলিব? (তুমি) নয়নের দোব হেতু প্রাণকে নিতান্ত পাঁড়া দিতেছ; ইহা ভোমার কি বিবেচনা?

8— १। "ডাহিন" ইত্যাদি । (আমার)
দক্ষিণ নয়ন নিক্কদিগের এবং বাম-নয়নের অর্দ্ধ-ভাগ পরিজনদিগের বারণ-কারী অগাৎ দক্ষিণ নয়নে নিক্কদিগের ও বাম-নয়নের অর্দ্ধভাগে পরিজনদিগের দৃষ্টি বাঁচাইয়া, (অবশিষ্ট) বামনয়নার্দ্ধের প্রাস্কুভাগ থারা বখন ঐক্তিফকে দেখিলাম,
তাহাতেই এত প্রমাদ হইল ৷ (উভয় নয়নে ভাল
করিয়া শ্রিক্ষকে দেখিলে না জানি কি প্রমাদ
হইত !)

জ-১>। শপুব" ইত্যাদি। (প্রীক্ষণ)
গোকুলে ও বাহিরের পথে যাতায়াত করেন;
প্রীকৃষ্ণকৈ কোন বাজিনা দেখে । তোমাব কুমুমশর কোথায়ন। সঞ্চরণ করে। (তবে) আমার
হাদয়েই পঞ্বাণ (স্থায়ী) কেন।

পুনশ্চ কলপরি তং স্থাং প্রতি কথয়তি।

ধানা :>

কুলের বৈরা হইল মুরলা
সকলি করিল নাশে।
মদন-কিরাতা মধুর যুবতা
ধরিতে আইল দেশে॥
সই জাব না এমন বাসি।
পিরিতি আঠা ননদা কাঁটাং
পড়দা হইল ফাঁদাী॥ গুল

স্থানন মাকে বেড়ায় সাজে ধরিতে যুবভা-জনা।

যমুনার কুলে গাছের ভলে আসিয়া° করিল থানা॥ গাছের ভালে বসিয়া ভালে

ভাক করে এক দিঠে।
জ্ঞান আঠা না যায় কাটা
লাগিল পাখার পিঠে॥
প্রিয়া ভূমিতে ধড়ফড়ইতে

পড়িয়া ভূমিতে ধড়ফড়ইতে° কিরাতে ধরিল পাখে। পাখে পাখা দিয়া বান্ধিল টানিয়া

খে পাথা দিয়া সাহ্মল চানিয়া ঝুলিতে ভরিয়া রাখে 🛭 চণ্ডীদাসে কয় মহাজন হয়
কিনিয়া লয় যে পাখী।
ছাড়িয়া দেয় পাখা যে ধোয়ায়
তবে দে এডান দেখি ॥৫৯।৮৫৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১·৪৬ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝোটা' প-র-সা। ৩। 'ব্সিয়া' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'ধড়ফড় হইতে' খ, ঘ।

তথা রাগ।১

আরে মনমথ নাহি ভুৱা ধরম-বিচার। কো করু দোখ রোখ করুং কা সঞ্জে বড় তুহুঁ মুরুখ গোঙার ॥ কলা গুণ-মাধুরি শুনইতে রূপ তেঞি দিঠি হেরল কান। সোই যোধ-পতি তাহে নাাহ পারলি হৃদয়ে হানলি পাঁচ বাল। কিয়ে গুণে রতি তোহে পতি করি মানল নাম কে রাখল কাম⁸। क्लों-भन प्रश्न নাশসি কাম অব তোহে চানলু ॰ হাম॥ দেবীপতি শিব জীব ভুয়া রাখল ছিয়ে ছিয়ে এ বড়ি দুখে। সাধি যৈছে ধাওলি তা সঞ্জে বাদ তৈছে অনল দিল মুখে ॥ অব হাম শস্ত আরাধব তুয়া লাগি পুন ভোহে করব বিনাশ। বিরহিণিগণ যেন किरम चन्न किरम वन যাহাঁ ভাহাঁ স্থা করু বাস॥

ধরণিক বাণি মান শ তুহুঁ স্বন্ধরি
শন্তু আরাধবি কায় শ ।
মনমণ-কোটি মথন করু যোজন
সো তুয়া চরণ ধেয়ায় শ ॥৬০॥৮৫৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'কর' প-র-সা। ৩। 'গুলে রতি' ছলে 'গুণবতী' ক। ৪। 'কান' ক। ৫। 'অব তোহে চীনলুঁ' ছলে 'আর তোহে চিহ্নণ' ক। ৬। 'দেবি-পতি শীব' চ। ৭। 'ছবে' ক, থ, প-র-সা। ৮। 'মুবে' ক, থ, প-র-সা। ১। 'আরাধিব' খ, ঘ। ১০। 'মানি' ব, চ, প-র-সা। ১১। 'আরাধিব কার' ছলে 'পুজবি অব কার' ঘ। ১২। 'ধিরার' খ, 'ধোরার' ঘ।

গুরুগণাদান্ প্রতি আক্ষেপো যথা। শ্রীগোরচন্দ্র।

बद्राड़ी 12

গোরাচাঁদে দেখিয়া কি হৈলুঁ।
গোপত পিরিতি-ফাঁদে মুঞি সে ঠেকিলুঁ।
গরে গুরুজন-জালা সহিতে না পারি।
অবলা করিল বিহি তাহে কুলনারী।
গোরা-রূপ মনে হৈলে হইয়ে পাগলী।
দেখিয়া শাশুড়ী মোর সদাপাড়েই গালি।
রহিতে নারিদুঁ ঘরে কি করি উপায়।
যতু কহে ছাড়িলেই না ছাড়ে

পাঠান্তর

গোরারায় ॥৬১॥৮৫১।

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৪৯ সংখ্যক ^{প্র।} ২। 'দেই' ঘ, প-র-সা। ৩। 'ছাড়িতে' প-র-সা। সিশুড়া।১

ভাগারে বুঝাই সই পাই তার লাগি।
ননদী-বচনে ধেন বুকে উঠে আগি ॥
কাগারে না কহি কথা রহি হুথে ভাসি।
ননদী-বিশুণ বাদা এ পাড়াপড়সীর ॥
কাগারে কহিব ছুগ যাব আমি কোথা।
কার সনে কব আরু কালা কামুর কথা॥
যত দূরে যায় মন তত দূরে গাব।
পিরিতি পরাণ-ভাগাণ যথাৎ গেলে পাব॥
ভাগারে কহিব ছুখ বিনয় করিয়া।
চণ্ডীদাস কহে তবে ফুড়াইবে

হিয়া ॥৬২॥৮৬০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫০ ও প-র পুথির ১৪।৫৯ সংখ্যক পদ। ২। 'পোড়া পড়সী' ক, খ। ৩। 'আমি' প-র। ৪। 'পরাণ-ভাগী' স্থলে 'পরাণ দোসর' খ। ৫। 'কোথা' ব, চ, প-র-সা, প-র।

श्रीवान ।>

ঘুচিবে কখনি পরের রমণীং এমতি করিবে³ ধাতা। প্রতি ঘরে ঘরে গোকুল নগরে মা শুনি পিরিতি কথাং॥ महे (य वल (म वल⁶ (भारत । শপতি করিয়া বলি দড়াইয়া না রব এ পাপ যরে॥ প্রা মেঘের গর্জন গুরুর গঞ্জন্দ কত না সহিবেশ প্রাণে। বর ভেয়াগিয়া যাইব চলিয়া>> রহিব গহন বনে॥

বনে ষে ২ পাকিব শুনিতে না পাব

এ পাপ জনার ২০ কথা।
গপ্তনা ঘুচিবে হিয়া জুড়াইবে ২০
ঘুচিবে ২৫ মনের বেথা॥
চণ্ডীদাস কয় সভগুরী হয় ২০
তবে সে এমন ২০ বটে।
যে সব কহিলে করিতে পারিলে ২৮
ভবে সে এ ভাগ ২০ ছুটে॥ ২০॥ ৮৬১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৫১ ও প-র পুথির ১৪|৬৭ সংখ্যক পদ। २। '**¤**ধौन' প-র। **७।** 'কখন'প-র। ৪। 'এমতি করিবে' **স্থলে 'এমন** কর্মে'প্-র। ৫ । 'না শুনি' ইত্যাদি খলে 'শুনি পিরিতের কথা' প-র। ৬। 'যে বল সে বল' ছলে 'আর যে না বোল' প-র। १। 'বলি দড়াইরা' স্থলে 'দোষ ছাড়াইব' প-র। ৮। 'তর্জন' প-র। ৯। 'সহিব' ক, প-র-দা, পর। ১০। 'বর ভেয়াগিয়া' স্থলে 'বর যে ছাড়িয়া' প-র। ১১। 'ষাইব চলিয়া' ফ্লে 'ষাব বাহিরাঞা' প-র। ১২। 'বনে যে' হলে 'বনেকে' প-র-সা। ১৩। পাপ लाटकत्र' श-ता >8। 'विषा क्ष्मिहेरव' व्राम 'श्वान क्ष्मारव' श-द्र। ১৫। 'साइंटव' श-द्र। ১७। 'সতস্তরীহয়' ৬লে যদি স্বভন্ন হয়' প-র। ১৭। 'এমনি' খ; 'এমভি' প-র। ১৮। 'করিতে পারিলে' স্থলে 'দে সব হয়' প-র। ১৯। 'এ তাপ' স্থলে 'এ পাপ' क, খ, চ, প-র-সা ; 'তাপ যে' প-র।

उषा ब्रोग ।>

ছারং দেশে বসতি ছইল নাহিক দোসর জনা।
মর্মের মর্মী নৈলেও না জানে বেদনা॥
চিত উচাটন সদা কত উঠে মনে।
মন্দিনীরঃ বচনে পাজেরেও বিদ্ধে খুণে॥

শ্বালার উপরে জ্বালা সহিতে না পারি।
বন্ধু হৈল গিরুখ ননদা হৈল বৈরা ॥
শুকুজন শুকুবচন সদা শেলের ঘায়।
কলকে ভরিল দেশ কি ক'র উপায় ॥
বাঁশুলী-আদেশে দ্বিজ চণ্ডীনাসের গীত।
আপনা আপনি চিত করহ স্পিতে ॥৬৪॥৮৬২॥

পাঠান্তব

১। ইছাপ-র-সা পুথির ১৩ ং২ সংখ্যক পদ।
২। 'এ ছার'ক, প-র সা। ৩। 'নহিলে' ক,
খ, প-র-সা; 'নইলে' ঘ। ৪। 'ননদীর' ক,
প-র-সা; 'ননদিনি' ঘ; 'ননদি' চ। ৫। 'পাজর'
প-র-সা। ৬। 'ছেন' প-র-সা। ৭। 'গুকজনের'
প-র-সা। ৮। 'কবি' ক, খ, ঘ, চ। ৯।
'সমীত' ঘ।

পঠমপ্ররী 13

নিখাস ছাড়িতে না দেয় ঘবের গৃহিণী।
বাহিরে বা গাসে ফাঁন পাতেই ননদিনী॥
বিনিই ছলে ছলে সে সদাই ধরে চুরিই।
হেন মন করে জলে প্রবেশিয়া মরি॥
সতী-সাধে দাঁড়াই যদিং সহীগণ সক্ষে।
পুলকে পূর্য়ে তমুই শ্রাম-পরসঙ্গে॥
পুলক ঢাকিতে নানা করিই পরকার।
নয়নের ধারা মোর বহে অনিবার॥
পাড়ারই লোক না জানে পিরিতি বলিই

তুমি যদি বল সমাধান দিয়ে ও ঘরে ও ।
চণ্ডীদাস বলে শুন আমার যুগতি।
অধিক জালা ২ তার যার ২০ অধিক
পিরিতি ॥৬৫॥৮৬৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৫০ ও প-র পুথির
১৪।২৮ সংথাক পদ। 'পঠিমঞ্জরী' স্থলে 'ফরুলা
শ্রীরাগ' প-র। ২। 'পাড়ে' থ। ৩। 'বিনা'
প-র। ৪। 'ধরে চুরি' স্থলে 'ধরি চুলি' ক, চ,
প-র-সা। ৫। 'বিদি' শব্দ ক, থ, প-র-সাও প-র
পুথিতে নাই। ৩। 'অঙ্গ' প-র। ৭। 'নানা করি'
স্থলে 'করি কত' প-র। ৮। 'পোড়া' থ। ৯।
'বলে' ক। ১০। 'সমাধান দিয়ে' স্থলে 'সোই
সমাধিয়ে' থ; 'সেই সমাধিয়ে' ঘ। ১১। 'ভায়ে'
প-র। ১২। 'যাতনা' প-র। ১৩। 'ভার ষার'
স্থলে 'ধার ভার' ক, খ, ঘ, প-র-সা; 'ধার' প-র।

৩—৪। "বিনি" ইত্যাদি। (আমার) ছল বিনা অর্থাৎ ছল-শৃত্য আচরণেও দে ছল পূর্বক দর্বদাই আমার চুরি অর্থাৎ চৌর্য্য-প্রণয় বাহির করে। (তাংগতে) এরূপ ইচ্ছা হয় য়ে, অংল প্রবেশ করিয়া প্রাণত্যাগ করি। 'সদাই ধরি চুলি' পাঠে 'ননদিনী ছল পূর্বকি দর্বদাই চুলে ধরে' এই রূপ অর্থ স্থাকত নহে।

১১—১২। "চণ্ডাদাস" ইত্যাদি। চণ্ডাদাস বলেন—(হে শ্রীরাধে!) আমার বুক্তি শ্রবণ কর; বাহার অধিক প্রেম, তাঁহারই অধিক বাতনা। (কবির সান্ধনার ভাৎপর্য্য এই যে, ত্রিভূবন-সার প্রেম বস্তুটি যথন একাত্তই বাহ্ণনীর, স্থতরাং উহার কল্প অনিবার্য্য আহ্ম্যক্তিক বাতনা সহ্থনা করিয়া উপায় কি?) 'অধিক আলা ধার ভার অধিক পিরিতি' পাঠে সমীচীন অর্থ হয় না।

छथा बाब ।>

গুরুজন-বচনে পাঁজের ধসি গেল। পাড়াপড়সীর জালায় প্রাণ সারা ছৈল। কত না সহিব আর সহিতে না পারি। কহিতে কৃষ্টিতে চুখ কহিতেও নারি। এ দেশ ছাড়িয়া যাব রহিব কাননে। এ পাপ লোকের মুখ না দেখি

যেখানে ॥৬৬॥৮৬৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৫৪ সংখ্যক পদ।

তত্ৰ কুটিলায়াঃ দাক্ষাত্নক্তিঃ। গাৰায়।

এ কি পরমাদ আই।

লোকের বদনে শুনি যেং শ্রাবণে ভাহাই দেখিতে পাই ॥ গুল গোমার আমার বাপের কুলেতে কথনং কথাটি নাই।

ভবে কেন ৩ুমি কাফু কাফু করি সদাই জপহ রাই॥

কামুনাম শুনি চমকি উঠহ পুলক ভাহার সাথী।

কালা-রূপ দেখি ছলছল আঁখি

বেকত এ সবং দেখি॥

আমি ননদিনী সব রস জানি পাশার এ• চৌপিঠ।

কহে শিবরামণ বুঝিলুঁ কথায় তুমি সে বড়ই চীঠ ॥৬৭॥৮৬৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৫৫ ও প-র পুথির
১৪।৫৬ সংখ্যক পদ। 'গান্ধার' হুলে 'দ্রীরাগ'
প-র। ২। 'শুনি বে' হুলে 'শুনিরে' ও; 'শুনিয়া'
ক, চ, প-র-সা; 'শুনিকুঁ' প-র। ৩। 'বথন' থ।
৪। 'কাহ্ নাম শুনি' হুলে 'কাহ্যর নামে' প-র।
৫। 'বেকভ এ সব' হুলে 'এ বড় বেকভ' প-র।
৬। 'পাশার এ' হুলে 'পাসার রে' ক; 'পাশার জেন

এ' প-র-সা; 'পাসাল্লের' প-র। ৭। 'ক্ছে শিবরাম' স্থলে 'শিবানন্দ বলে' প-র।

বরাড়ী।১

ননদিনি লো মিছাই লোকের কথা। যদি কান্ম সঙ্গে পিথিতি করি তং শপতি ভোমার মাথা। ধ্রু॥ নিজ পতি বিনে আন নাহি জানি সেই সে আমার ভাল: কোন গুণে যাই রাখালে ভজিব তাহাতে বরণ কাল। মণি মৃকুতার• অভরণ নাহি সাজনি কনের ফুলে। চূড়ার উপরেণ ভ্ৰমরা গুপ্তরে তাহে কি রমণী ভুলে " त्र∮का टेश्या यादव দেখিতে না পারে মায়ে বোলে ননীচোরা ৷ ক্রে শিবরাম রাধার কলক্ষ• মিছাই করিলি ভোৱা ॥৬৮॥৮৬৬॥

পাঠাস্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১০৫৬ ও প-র পুথির
১৪।৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'পিরিতি করি ত'
ছলে 'ভাব বাড়াই থাকি' প-র-সা। 'যদি' ইত্যাদি
ছলে প-র পুথির পাঠ যথা,—'সে নন্দন-দন যদি
দেখা। থাকি'। ৩। 'বাছার' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা।
৪। 'মাণিকের' প-র। ৫। 'চ্ড়ার উপরে'
ছলে 'চ্ড়াটি বেড়িয়া' প-র। ৬: 'কতে শিবরাম'
ইত্যাদি পংক্তি ত্ইটির ছলে প-র পুথির পাঠ যথা,—
'শিবরাম বলে বসি তক্তমূলে
মিছা রব তোল ভোৱা।'

সিন্ধুড়া।১

সই এত কি সহে পরাণে। (शल ननिमनी কি বোল বলিয়া শুনিলা আপন কাণে॥ ধ্রু॥ পরের কথায় এত কথা কংহ্ ইহাতে করিব কীও। কামু-পরিবাদে ভুবন ভরিলঃ বুথাই পরাণে জী॥ কামুরে পাই ত এ সবুধ কহিত তবে বা সে বোল ভালা। মিছা পরিবাদে বাদিনী হইয়াদ প্রাণ জরজর হৈল ॥ কে আছে বুঝিয়া শ্রামেরে কহিয়া এ ছথে করিনে পার। **ह** छोमारम करश ধৈৰ্ঘ্য করি রহ কে কোথা কি করে ১০ কার ॥৬৯॥৮৬৭॥* পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫৭ ও প-র পুথির ১৪।৫৮ সংখ্যক পদ। ২। 'কয়' প-র। ৩। 'কি' ক, খ, প-র-সা, প-র। ৪। 'ভূবন ভরিল' হলে 'ভূবন ভূলিল' ক, খ; 'জগত ভাদিল' প-র। ৫। 'কেমনে' প-র। ৬। 'এ সব' হলে 'ভবে ষে' প-র। ৭। 'ভবে' ইত্যাদি হলে 'ভবে ভাল বাদে বোল' প-র-সা; 'সে বোল আমার ভাল' প-র। ৮। 'মিছা' ইত্যাদি হলে প-র পুথির পাঠ ষ্থা—'মিছা বাদে পরিবাদিনী ইইয়া'। ৯। 'ব্রাক্রা' ক, খ; 'ব্রাইয়া' য়, চ। ১০। 'কি করে' হলে 'করিল' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা।

धाननी ।>

ভাদরে দেখিলুঁ নঠং চাঁদে।

সেই হৈতে উঠে মোর কামু - পরিবাদে।
এতেক যুবতী আছে গোকুলে ।
কলঙ্ক কেবল লেখা মোর সে কপালে ॥
স্থানী ছায়াতে মারে বাড়ি।
তার আগে কুকথা কয় দারুণ শাশুড়ী ॥
ননদা দেখয়ে চৌখের বালি।
শ্যাম নাগর ভোলাই দ্ সদাই পাড়ে গালি॥
এ ছঃখে স্বাজর হৈল কাল।
ভাবিয়া দেখিলুঁ এবে মরণ সে ভাল ॥
দিজ চণ্ডাদাসে পুন কয় ২।
পরের বচনে কি আপন পর হয় ॥৭০॥৮৬৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৫৯ সংখ্যক পদ।

২। 'নট' ক। ৩। 'সদা' প-র-সা। ৪।
'উঠে' প-র। ৫। 'যুবতীগণ' ক, চ। ৬।
'আছে গোকুলে' ফুলে 'আছের গোকুলে' ক, চ;
'গোকুল নগরে' প-র-সা। ৭। 'কেবল লেখা'
ফুলে 'লেখ্যাছে বিধি' প-র-সা। ৮। অভংগর
প-র-সা পুথিতে নিম্নলিখিত প্রাক্ষিপ্ত কলিটি দৃট
হয়; বধা,—

'কথনো যাহারে মুক্তি না দেখো সপনে। কলম্ব তোলয়ে লোক সে জনার সনে॥' ১। 'চৌথের বালি' স্থলে 'সদা নয়নের বালি' প-র-সা। ১০। 'তোলাইয়া' প-র-সা। ১১। 'বে ছংথে' স্থলে 'বেড ছথে ছথে মোর' প-র-সা। ১২। 'বিজ চণ্ডীদাসে' ইত্যাদি পংক্তি ছইটির স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ বথা,—

> 'কাহারে কহিব সই মরমের কথা। বলরাম দাস বলে কি কৈল বিধাতা।'

ক, এ, ব, চ ও প-র-সা প্রিতে অতঃপর
'তাহারে বুঝাই সই' ইত্যাদি পংক্তি-চতুষ্টর লিথিত
ছইলেও এই পদটি বর্ত্তমান পল্লবের ৬২ সংখ্যক পদস্কাপে ইতিপুর্বে উজ্ত হওয়ায় এ য়লে সলিবেশিত ও
প্রিত হইল না।

তথা রাগ ৷১

ইহ গুরু-গঞ্জন বোল।
শুনইতে জিউ উতরোল।
কত সহ এই পাপ পরাণ।
বুঝি কিয়ে হয় সমাধান।
মিছা • ছলে তোলে পরিবাদ।
কি কার করিলুঁ অপরাধ।
ননদী-নয়ন-জালে বসি।
তাহে কাল এ গাড়াপড়সী।
জ্ঞানদাস কহে ধনি রাই।
পরিবাদে আর ভয় নাই ১৭১৮৮ ৮৯॥

পাঠা হর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৬০ সংখ্যক গদ। ২। 'সহ অ' স্থ্পে 'সহজে' চ। ৩। 'বিনা' খ।

প্রেম প্রতি আক্রেপ যথা।

পঠমঞ্জরী ।১

कि वूटक माराग तथा। সে দেশে যাইব य (मर्म ना श्वन পাপ পিরিতের্থ কথা ॥ ধ্রু ॥ সই কে বলে পিরিতি ভাল। হাসিতে হাসিতে পিরিভি করিয়া कान्मिएड क्रम्म (शल। कूलवजी टेहश কুলে দাঁড়াইয়া ষে ধনি পিরিতি করে। ভূষের আনল যেনঃ সাজাইয়া এমভিং পুড়িয়া মরে॥ राम विरनामिन এ হুখে হুখিনী প্রেমে ছল ছল আঁখি। চণ্ডীদাস কৰে যে গতি হইল **পরাণ-সংশর দেখি ॥৭২॥৮৭०॥**

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সা পৃথির ১০৬১ সংখ্যক পদ।
 ২। 'পিরিতির' ক, খ; 'পিরিতী' প-র-সা। ৩।
'কুলে দাঁড়াইয়া' ছলে 'কুলেতে দাঁড়াঞা' ক, চ;
'কুলে ডাড়াইয়া' ছ। ৪। 'লে জন' প-র-সা।
 ৫। 'আপনি' প-র-সা।

श्रीवात ।)

পিরিভি-মুগতি কভু না হেরিব এ ছুটি নয়ান-কোণে। পিরিতি বলিয়া নাম শুনইতে मुनिश त्रश्वि कारन ॥ সধি আর কি বলিব ভোরে। পিরিতি বলিয়া এ তিন্থ আখর এত হুখ দিল মোরে॥ ধ্রু॥ পিরিভি-আর্ডি কভুনা করিব শয়ন সপন[ু] মনে। বস্তি তেজিয়া পিরিতি-নগরে রহিব গছন বনে॥ পিরিভি-প্রন পরশ লাগিয়া তেজিব নিকুঞ্চবাস। ছাড়িলে না ছাড়ে পিরিতি-বেয়াধি ভালে জানে চণ্ডাদাস ॥৭০॥৮৭১॥ পাঠান্তর

১। ইছাপর-সা পুণির ১০৬২ ও প-র পুণির ১৪/৫২ সংখ্যক পদ। ২। 'অ তিন' ছলে 'দাকণ' প-র। ৩। 'লয়ন সপন' ছলে 'লয়ন অপনে' ক, চ, প-র-সা; 'লয়নে অপনে' খ। ৪। 'ছাড়িতে' প-র-সা। ৫। 'ভাল' ধ।

ভথা রাপ ৷> পিরিতি হুখেরং সায়র° দেখিয়া নাহিতে নামিলামণ তায়। ফিরিয়া চাহিতে নাহিয়া উঠিয়াণ লাগিল ছুখের বায়॥ কেবা নির্মিল প্রেম-সরোবর নিরমল ভার জল। ফিরে নিরস্তর তুখের মকর প্রাণ করে টলমল। ধ্রু। গুরুজন-জালা জলের শিহালাণ পড়দী-জীয়ল-মাছে। কাঁটায় সকণ কুল-পানিফল সলিল বেড়িয়া প্রাছে॥ मना लाटन भार কলক-পানায় हानिया शाहेन्ं १ यपि। কুটু কুটুগ্ণ করে অস্তব্রেণ্ণ বাহিরে इर्थ इथ मिल निधि॥ শুন বিনোদিনি ১৩ কৰে চণ্ডীদাস ত্বখ চুখ চুটি ভাই। স্থার লাগিয়া যে করে পিরিতি

পাঠান্তর

ছুখ যায় ভার ঠাঞি ॥৭৪॥৮৭২॥

'থাইলাম' পার। ১১। 'অন্তর' ক, পার-সা। ১২। 'কুটকুট' ক, পার-সা, সা-প ২০১ পুথি। ১৩। 'কংহ' ইত্যাদি স্থলে পার পুথির পার্চ মধা—'চণ্ডীদাদে বলে শুন গো স্থক্ষরি'।

হুছিনী।১ না কর চাতুরী শুন সহচরি সহজে দেহ উত্তর। কি জাতি মুরতি কামুর পিরিতি কোণাইং ভাহার ঘর॥ চলে কি বাহনে টিকে কোন স্থানে সৈতাগণ কেবা সঙ্গে। পারাপার করে কোন অস্ত্র ধরে (कमरन **अर**ास वरत्र ॥ পাইয়া সন্ধান হব সাবধান না লব ভাষার বা। বচনে তেজিব নয়নে শ্রবণে সোভরি তাহার পা॥ দেখি নৈরাকার স্থী ক্রে সার স্থরূপ কহিবে কে। অথুরাগ-ছুরী বৈদে মনোপরি জাতির বাহিরে সে। त्रक्षक महन মন তার বাহন ভাবগণ তার সঙ্গা । না দেয় ছাড়িয়া সূজন পাইলে পিরিতি অদুত রঙ্গী ।। वाक्नी-व्यादित কতে চণ্ডাদানে ছাড়িতে কি কর সাশ। পিরিভি-নগরে বসতি করাছ পর্যাছ পিরিতি-বাস ॥৭৫॥৮৭৩॥ পাঠাম্বর ১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৩৬৪ সংখ্যক প্র।

२। 'क्लाबात्र' भ-त्र-मा। ७। 'भातावात्र' 🔻

চ, প-র-সা। ৪। 'মান পরি' খ, च; 'মোনাপরি' প-র-সা। ৫। 'সঙ্গে' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'রজে' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাগ ৷১ এ তিন আঁখর পিরিভি বলিয়া ভুবনে আনিল কে। ছানিয়া খাইলুঁ মধর বলিয়া তিভায় তিতিল দে। সই এ কথা কহিল° নহে। বসতি করিয়া হিয়ার ভিডর কখন কি জানি কহে॥ গ্ৰা পিয়ার পিরিভি প্রথম আরতি ভাগার নাহিক শেষ⁸। শমন সমান পুন নিদারুণ দয়ার নাহিক লেশ। কপট পিরিভি আরতি বাঢাঞাণ মিরিতি সাধিলুঁ ও কাজে। কুলের থাঁথার ८नाटक ठत्रहाट्य জগত ভরিল লাজে॥ অধিক হইল হইতে হইতে

পরিণামে কিবা হয়।

সহিতে সহিতে মলুঁ।

পাগলী হইয়া গেলুঁ॥

ভিশু জার **ভার**

না জানি এ রাতি

কহিতে কহিতে

এমতি পিরিতি

শিরিভি পরম হয় তুখনর*

বিজ চণ্ডীদাদে কয় ॥৭৬॥৮৭৪॥

পাঠাস্তর

। ইহা প-র-সা প্ৰির ১৩৬৫ সংখ্যক পদ।
 १। 'ছানিরা খাইসু' হলে 'ছাকিরা খাইতে' সা-প
 २०১ প্ৰি। ৩। 'ক্ষন' প-র-সা। ৪। 'ডাহার'

ইত্যাদি ছলে 'আনল অধিক শেব' च; 'পাওল অবধি শেব' সা-প ২০১ পূথি। ৫। 'বাঢ়াইলুঁ' সা-প ২০১ পূথি। ৬। 'মিরিতি সাধিলু' (সা-প ২০১ পূথি) ছলে 'মরণ অধিক' ক, ধ, ছ, চ, প-র সা। 'মরণ অধিক' পাঠে ভাল অর্থ হর না। । 'না জানি এ' ছলে 'না জানিয়া' সা-প ২০১ পূথি। ৮। 'শিরিতি' ইত্যাদি ছলে সা-প ২০১ পূথির পাঠ যথা—'পিরিতি পরাণ হয় স্থ্বছ্থমর'।

তথা রাগ।১

পিরিতি পিরিতি কি রীভি মুর্বিড क्रमस्य लागन रम। পিরিতি না ছাড়ে পরাণ ছাড়িলে পিরিতি গঢ়ল কে। পিরিভি বলিয়া া ভিন আঁখর না জানি আছিল কোথা। পিরিতি-কণ্টক হিয়ায় ফুটল পরাণ-পুতলী যথা। পিরিতি অনল পিরিভি পিরিভি चिछन क्लिग्रा॰ रान । নিভাইল নহে বিষম অনল हियाय त्रशिल⁸ (भल॥ শুন বিনোদিনি **ह छोमाम** वांगी পিরিতি না কহে কথা। পিরিভি লাগিয়া পরাণ ছাড়িলে পিরিভি মিলয়ে তথা ॥৭৭॥৮৭৫॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৩৬৬ সংখ্যক পদ। ১। 'গড়ল' থ, প-র-সা। ৩। 'আালিয়া' চ, প-র-সা। ৪। 'রহল' ব,চ। श्रीव्राप्त ।>

ভুবন ছানিয়া যতন করিয়া আনিলং প্রেমের বীজ। রোপণ করিতে গাছ যে খইল সাধল**ু মরম নিজ**8 ॥ महे (अभ-७क (कन देश)। হাম অভাগিনী **जियम ब्र**जनी সিঁচিতে জনম গেল। ধ্ৰু। পিরিতি করিয়া স্থুখ যে পাইব छनिनुँ गशीव मूर्य। অমিয়া বলিয়া গরল কিনিয়া খাইলু আপন হুখে॥ স্বাচু লাগিত **অ**মিয়া হইত इहेल भ्रत्न करन। কাসুর পিরিভি শেষে ধেন রীতি कानिन्ँ भूरगुत रल ॥ সকলি পৃরিল যত মনে ছিল আর না চাহিব নেহাও। চণ্ডীদাস কৰে পরশন থিনে **क्रिया स्थित क्रिया अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य अन्यान्य** পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৬৭ সংখ্যক পদ। ২। 'আনিয়্প' ক,চ। ৩। 'সাধিল' খ। ৪। 'নীফ' ঘ,চ। ৫। 'লেখ' প-র-সা। ৬। 'লেখা' ক,খ,চ,প-র-সা।

তথা রাগ ।>

কানুর পিরিতি চন্দনের রীতি
ঘসিতে সৌরভময়।
ঘসিয়া আনিয়া ক্রিয়ায় লইডে
দহন বিশুণ হয়ঃ

সই কে বলে পিরিতি হীরাং। সোণায় জড়িয়া হিয়ায় করিতে তুখ উপজিল ফিরা। গ্রু॥ পরশ-পাথব বড়ই শীতল कर्रा मकल (लांटक। মুই অভাগিনী লাগিল আগুনি পাইলুঁ এতেক শোকে।। সব কুলবতী করয়ে পিরিডি এমত না হয় কাবে। ডাহিনী '-সদৃশী এ পাড়াপড়সী এমত লা খায় তারে 🛭 গুহের গৃহিণী আর ননদিনা বোলয়ে বচন যত। কহিলে কি যায় কি করি উপায় পরাণে সহিবে কভ। नामुद्रत्रत्र मार्कः आत्मत्र इरि বাশুলা সাছয়ে যথা। তাহার আদেশে বং চণ্ডাদাসে

পাঠান্তর

ত্বখ যে পাইবা কোথা ॥৭৯॥৮৭৭॥

১। ইহাপ-র-সাপুশির ১৩৬৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হিরা' অ, চ। ৩। 'লাগুক' ক, খ। ৪। 'ছ্থে' ক, চ। ৫। 'ডাইন' প-র-সা। ৬। 'ঠামে' খ। ৭। 'পাইব' ক; 'পাইবে' প-র-সা।

ভণা রাগ।১

আপনা খাইলুঁ সোণা যে কিনিলুঁ
ভূষণে ভূষিবং দেহ।
সোণা ষে নহিল পিডল হইল
এমতি কামুর লেহং॥

সই মদন-সোণারে না চিনে সোনা। সোণা যে বলিয়া পিতল আনিয়া গড়ি দিল যে গহনা॥ গ্ৰু॥ ঝলকেঃ দেখিতে প্ৰতি গঙ্গলিতে হাসয়ে সকল লোকে। কাজ নাহইল* ধন সেং গেল শেল রহি গেল বুকে ॥ তেম্ভি এ গতি যেন মোর মতি ভাবিয়া দেখিলুঁ চিতে। পাথারে সাঁডারি খলের কথায় উঠিতে নারিশুঁ ভিতে॥ ভাগ্য নাহি জানে অভাগিয়া জনে ना श्रुत्रद्ध मव माध। খাইতে নাহি ঘরে সাধ বহু করে বিহি করে অমুবাদ॥ চণ্ডীদাসে কহে বাশুলী-কুপায়ে আর নিবেদিব কায়। তড় ত পিরিতি নাহি পায় যদি পরাবে মরিয়া যায় ॥৮০॥৮৭৮॥

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৬৯ সংখ্যক পদ।
২। 'ভূবিত' ক। ৩। 'নেহ' ঘ। ৪। 'ঝণক' প-র-সা। ৫। 'থে' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'না ইইল' ফুলে 'নহিল' প-র-সা।

তথা সাগ ৷১

কাতুর পিরিতি মরমে বেয়াধি

হইল এতেক দিনে।

মৈলে কি ছাড়িবে সজে না বাইবেং

কিনা করিবং বিধানে ॥

महे कियरिष्ठ अगम काला। জাতি কুল শীল সকলি ডবিল ছাড়িলে না ছাড়ে কালা॥ এ। শ্য়নে স্বপনে না করিয়ে মনে ধরম গণিয়া থাকি। আসিয়া মদন (पग्न कपर्यन⁸ অন্তরে জালখে উকি॥ সরোবর মাঝে भीन (य शाक्त्य উঠে অগ্নি দেখিবারে। धौनत्र काल शारु नहें जान ভুরিতে ঝাঁপয়ে তারে॥ কামুর পিরিতি কালের বসতি যাহার হিয়ায় পাকে। জারে সেই জনে খলের খলনে কলক ঘোষয়ে লোকে। চ গ্রীদাস-মন वारानी-हत्रन আদেশে রজক্-নারি। কিছু না ভাগিবে সহিতে সহিবেশ রহিবে একান্ত করি ॥৮১॥৮৭৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৭০ সংখ্যক পদ।
২। 'না ষাইবে' স্থলে 'নাছি ষাইবে' প-র-সা।
৩। 'কিনা করিব' স্থলে 'না করিব কি' ক, খ।
৪। 'কদখন'খ। ৫। 'জলরে' খ, দ, প-র-সা।
৬। 'ডাহে' প-র-সা। १। 'জারে সেই জানে'
স্থলে 'বারে সেই জানে' ক; 'জারে সেই জানে' চ,
প-র-সা। ৮। 'এমুক' ক; 'রজুক' চ। ১।
'সহিতে' ক, প-র-সা।

ভণা রাপ ৷১ কি হৈল করমে যাবত জনমে পিরিতি হইল কাল। অন্তরে গহিরে পশিয়া গহিল কেমতে হইবে ভাল। সই বল না উপায় মোরে। গঞ্জনা সহিতে নারি আর চিতে মরম কহিলুঁ তোরে ॥ জ্বলিছে পরাণে ननमो-वहरन আপাদ মস্তক চুল। মাথায় করিয়া কলক্ষের ডালি পাথারে ভাসাব কুল।। ভাগিয়া যায় चूठरत्र पात्र না^২ বোলে⁹ এ ছার লোকে। চণ্ডীদাস কৰে এমতি হইলে মরিবে তাহারা শোকে ।৮২।৮৮ •।। পাঠান্তর ১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৭১ সংখ্যক পদ। २। 'ब' क। ७। 'वान' क; 'वानक्ष' ह। वानगे ।> পিরিতি গরল আমরা সরলং লাগিল অমিগ্রাময়। বিছুরিলুঁ পতি মহানন্দ রীতি কলঙ্ক সভাই কয়॥ महे रिषटव रेडल रहन मिछ। व्यस्त्र क्रिन পরাণ পুড়িল এছন পিরিতি-রীতি। ধ্রু॥ খাল বানাইয়া মাটি খোদাইয়া উপরে দেয়ল° চাপ। আহার দিয়া মারয়ে বান্ধিয়া

এमन कत्राम भाग ।

নৌকাতে চড়াঞা দরিরাতে লৈয়া
ছাড়য়ে অগাধ জলে।
ডুবু ডুবু করি ডুবিরা না মরি
উঠিতে নারিয়ে কূলে॥
এমতি করিয়া পরাণে মারিয়া
চলিল আপন ঘরে।
চণ্ডীদাদে কয়. এমতি সে হয়
ডুমি সে ভাবহ তারে ॥৮০॥৮৮১॥
পাঠাক্তর
১। ইহা প-র-সা প্থির ১৩৭২ সংখ্যক পদ।
২। সিরগা'ব। ৩। ব্যেওক'ক।

ভথা রাপ ৷১ পিরিভি করিলুঁ হুখের লাগিয়া শ্রাম বন্ধুয়ার সনে। পরিণামে এত তুখ হবে বল্যাং কোন অভাগিনী জানে। সই পিরিতি বিষম মানি। এত স্থাে এত ছুখ হবে বল্যা^৩ স্বপনে নাহিক জানি॥ গ্রন্থ 🏻 সে হেন কালিয়া নিঠুর ছইল कि भिन नांशिन (यन। **प्रज्ञान-व्याटन** य जन कित्ररप्र সে এত নিঠুর কেন। वल ना वल ना কি বৃদ্ধি করিব ভাবনা বিষম হৈল। হিয়া দগদিপ পরাণ পোড়নি

कि पिटन बहेरव जान ।

মনে না ভাবিহ আন।

ভাগ সে ভোগার প্রাণ ॥৮৪॥৮৮২॥

भ्वन विरनाषिम

मद्रवम धन

ठ छीमारम करह

ভূমি সে খ্যামের

পাঠান্তৰ

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৭০ সংখ্যক পদ।
২-০। 'ব্বে বল্যা' ছলে 'বে ছইবে' প-র-সা।
৪। 'বল না' ইত্যাদি ছলে 'বল না কি বুজি করিব
এখন' ক; 'বল না কি বুজি করিব সজনি' প-র-সা।

শীৱাগ ৷১

যতনে আনিয়া বিবিধ কুমুম গাঁথিলুঁ পিরিতি-মালা। পরিমল গেল শীতল নহিল जामार्ड क्लिन गना॥ जरे माली (कन (इन रेड्न । বিষ মিশাইয়া মালায় করিয়া হিয়ার মাঝারেং দিল ॥ গ্রন্থ । উঠিল যে হিয়া ভালায় জলিয়া আপাদ মন্তক চুল। না শুনি না দেখি কি কহিব° সখি আগুন হইল ফুল। हम्मन लागल ফুলের উপর সংযোগ হইল ভাল। পোডাইল হিয়া ছই এক হৈয়া পাঁজর ধসিয়া গেল। मकलि धमिल ধসিতে ধসিতে निर्दा ल॰ देश्ल (पर। কহিলে না হয় চণ্ডাদাসে কর ঐছন কামুর লেহে ॥৮৫॥৮৮৩॥ পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১০৭৪ সংখ্যক পদ।
 ২। 'হিয়ার মাঝারে' ছলে 'আমার গলার' প-র-সা।
 ৩। 'করিব' ক। ৪। 'নির্দাণ' ক, খ, চ, প-র-সা। ৫। 'নেহ' ব।

তথা বাগ ৷১ ভূখের লাগিয়া রন্ধন করিলু জালাতে জ্লিলং দে। স্বাতুণ নহিল জাতি সে গেল ব্যপ্তন খাইবে কে ॥ मरे (ভাজন विश्वापः देशन । বামুর পিরিভি হেন রসবভী স্বাদ প্র দুরে গেল। এ। পিরিতি রসের নাগর দেখিয়া আরতি বাঢালুঁ তাতে। তবে সে সঙ্গনি प्तिवन बन्नी অনল উঠিল চিতে 🛚

অনল উঠিল চিতে।
উঠিতে উঠিতে
পিরিতে ড্বিল দেহ।

নিমে স্থা দিয়া একত্র করিয়া ঐছন কাসুর লেহণ ॥

চণ্ডাদাস কয়

' সকলি গরল হৈল।

কিছু কিছু সুধা বিষ-গুণ আধা

চিরঞ্জীবী দেহ কৈল ॥৮৬॥৮৮৪॥

হিয়ায় সহয়

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাগুণির ১১৭৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ভরিল'প-র-সা। ৩। 'বাল' চ, প-র-সা। ৪। 'বিমার' খ, ঘ। ৫। 'বার' খ, চ। ৬। 'সাগর' ঘ। ৭। 'নেহ' ঘ। ৮। 'হিরাবে' ঘ। ৯। 'বিষ্ঞ্পা' ক, ঘ; 'বিষ্শুনি' প-র-সা।

यहरे ।>

পাপ পরাণে কত সহিবেক ঝালা।
শিশুকালে মরি গেলে ছইত যেং ভালা॥
এ ঝালা অঞ্চাল সই তবে পরিহরি।
ছেদন করিয়া দেহ পিরিতের ডুরি॥

তেমতি নহিল যার এমতি বেভার। কলন্ধ-কলসী লৈয়া ভাসিব পাধার॥ চণ্ডাদাসে কহে ইহা বাশুলী-ক্লপায়। পিরিভি লাগিয়া কেন ভাসিবে Ratio III-911-1-01

পাঠান্তর

১। इंश প-त-मा পुषित ১৩१७ मरशाक भागा ২। 'হটত ধে' স্থলে 'তবে হৈত' ঘ; 'হটত দে' 어-경-커 1

ভথা রাগ ৷১

ধরম করম গেল গুরু-গরবিত। অবশ করিল কালা কামুর পিরিত 🏾 ঘরে পরে কি না বলে করিব হাম কিই। কে না করয়ে প্রেম তামি কলকী। বাহির হইতে নারি লোক চরচাতে। তেন মন করে বিধ খাইয়া মরিতে ॥ একে নারী কুলবতী অবলা বলে লোকে। কাম্ব-পরিবাদ হৈল পুড্যা॰ মরি শোকে ॥ খাইতে নারিয়ে কিছু রহিতে নারি ঘরে। ভাবিতে ভাবিতে ব্যাধি সামাইল গ্লন্থরে ৷ জারিল সে তমু মন ব্যাপিল শরীর। চণ্ডীদাস বলে ভাল হইবে

হুস্থির ॥৮৮॥৮৮৬॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-মা পুথির ১৩৭৭ সংখ্যক পদ। २। 'को' हा ७। 'शूष्क्र' का हा 'इहेन' প-র-সা।

शांतनी ।>

এ খর বান্ধিল হুখের লাগিয়া আনলে পুড়িয়া গেল। সিনান করিতে অমিয়া-সাগরেই সকলিও গরল ভেল ॥ স্থি হে॰ কি মোর কর্মেণ লেখি। ও চাঁদ পেবিলু গ শীতল বলিয়া व्यविद्राप्त किंद्रभ (प्रथि॥ अप ॥ **छेह**रल छेत्रिए॰ নিচল ছাডিয়া পড়িলু অগাধ জলে। লছিমী ১০ চাহিতে দারিজ্য বাচল ১১ মাণিক হারালু হেলে॥ खनप (मिविन् পিয়াস লাগিয়া বজর পাডিয়া গেল ১৭। জ্ঞানদাস> কৰে কামুর পিরিভি১ মর্ণ-অধিক শেল> ছাচ্চাচ্চণা

পাঠাম্বর

)। इंडा भ-त-ना পुषित २०१, २৮3 **७** २०१४ এবং প্রব পুথির ১৪।৮০ সংখ্যক পদ। ২। 'হিলোগে' প-র। ৩। 'হুধই' প-র। ৪। 'স্থি হে' ব্লে 'স্ট' প-র-সা প-র। ৫। 'করম' প-র। ৬। 'ও हाँम' करन 'हान्स (य' भ-द्र-मा। १। 'स्मिविटल' প-র। ৮। 'ভাহর' প-র-সা, প-র। ৯। 'উঠিলুঁ' ५. চ. প-র। 'নিচল' ইত্যাদি স্থলে—'উচল বলিয়া অচলে চড়িতে' প-র-সা। ১০। 'লছমি' প-র-সা; 'निधिमि' भ-त । ১১। '(वहन' क, थ, ह, भ-त-मी, প-র। ১২। 'বজর' ইত্যাদি ছলে 'বলর পড়িয়া (शन' क. ब. घ. ठ ; 'भाइन' (भाकांखब--'श्रीफ्न्') 'বন্ধর তাপে' প-র-সা। :৩। 'চঙীদাদে' প-র। ১৪। 'কামুর পিরিতি' খলে 'পিরিতি করিমা' প-র-সা। ১৫। 'মরণ' ইত্যাদি ছলে 'পাছে কর অভুতাণে প্র-সাঃ 'ভ্রম্মে রহিল শেল' প্র।

সিজুড়া।১

এ দেশে না রহিবং সই দূরদেশে যাব।
এ পাপ পিরিতের কথা শুনিতে না পাব॥
না দেখিব নয়নে পিরিভি করে যে।
এমতি বিষম বেথা জানি দিবে সে॥
পিরিভি আঁখর তিন না দেখি নয়ানে।
যে কহে ভাহার আর না দেখি ব্য়ানে॥
পিরিভি বিষম দায়ে ঠেকিয়াছি আমি।
ভিজ চণ্ডীদাসে কহে ইহার শুরু

তুমি ॥৯০।৮৮৮॥

পাঠাস্কর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৭৯ সংখ্যক পদ। ২। 'রব' ক, প-র-সা। ৩। 'ব্যথা' ক, চ; 'ক্থা'থ। ৪। 'আংলি' ক, প-র-সা।

ততঃ প্রকারান্তরং।

वाला धामनी ।> পিরিতি বলিয়া এ তিন আঁখর সিরজিল কোন ধাতা। অবধি জানিতে সোধাই কাহাতে ঘুচাই মনের বেথা। পিরিভি-মুর্রভি পিরিভি-রতন যার চিতে উপজিল। সে ধনি কতেক कन्य कन्य ভাগ্য করিয়াছিল ॥ সই পিরিভি না জানে যারা। এ তিন ভুবনে जनाम जनाम কি সুখ জানয়ে তারা ॥ ধ্রু ॥ যে জন যা বিনে না রহে পরাণে त्म (व देशन कुलनानी। ভবে কেনে তারে कनकिनी रतन গোকুল-নগরে কেবা কি না করে

অবুধ মূড় সেগ লোকে।

চণ্ডীদাসে ভণে মরুক বেং জনে
পর-চরচায় থাকে ॥৯১॥৮৮৯॥

পাঠাক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুধির ১৩৮০ সংখ্যক পদ। 'বালা ধাননী' স্থলে 'ধাননী' ক, খ, প-র-সা। ২। 'হুধাই' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'মুচ সে' স্থলে 'মুচ্সি' ঘ; 'মুড্সি' চ।

এবাগ 13

এই মোর মনে হয় রাতি দিনে ইহা বহি নাহি আর। পিরিভি বলিয়া এ তিন আঁখর এ তিন ভুবন-সার॥ বিহি একচিতে ভাবিতে ভাবিতে नित्रमांग देकल भिरा মন্তন করিতে রুসের সায়র তাতে উপজিল রি॥ অমিয়া হইল পুন যে মথিয়া তাহে ভিয়াইল° ডি। এ ভিন আঁখর সকল স্থাবের তুলনা দিব যে কি॰ ॥ পশিল যতনে যাহার মরমে এ তিন আঁখর সার। সরম ভরম ধরম করম কিবা জাতি কুল তার ॥ এ হেন পিরিভি না জানি কি রীতি পরিণামে কিবা হয়। বড়ই বিষম পিরিভি-বন্ধন विक हशीमारम क्या । २२॥৮३०॥

অবুধ গোকুলবাসী ॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৮১ সংখ্যক পদ। ২। 'পী' ঘ,চ। ৩। 'ভিঞাইণ' খ,চ। ৪। 'কী' চ। ৫। 'এ ছেন' স্থলে 'এই না' ঘ। 'চণ্ডীদাসে কংহ' ইত্যাদি স্থলে 'কংছ নরছরি শুন স্থনায়রি' প-র-সা (পাঠান্তর)। ১। 'জ্বের' প-র-সা (পাঠান্তর)। ১০। 'মরম' প-র-দা (পাঠান্তর)। ১১। 'রসিক নছিলে' স্থলে 'মর্মে নছিল' প-র-সা (পাঠান্তর)।

তথা রাগ।>

পিরিতি বলিয়া একটি কমল রসের সায়রং মাঝে। প্রেম-পরিমল -লুবধ ভ্রমর ধায়ল আপন কাজে 🛭 ক্মল-মাধুরী ভ্ৰমর জানয়ে তেঞি সে তাহারিঃ বশ। রসিক জানয়ে রসের চাতুবী আনে কহে অপ্যশ। সই এ কথা বুঝিনে কে। যে জন কানয়ে সে যদি না কহে क्मारन ध्रिव प्रता क्षा ধরম করম লোক চরচাতে এ কথা বুঝিতে নারে। এ তিন আঁখর যাহার মরুমে সেই সে বুঝিতে পারে শুন ল স্থন্দরিদ চণ্ডাদাসে কৰে পিরিতি রসের» সার। পিরিতি-রসের১• রসিক নহিলে১১ কি ছার পরাণ ভার ॥১ং॥৮৯১॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৬, ৩৬১ ও ১৩৮২ সংখ্যক পদ। ২। 'সাগর' প-র-সা (পাঠান্তর)। ৩। 'পরিমলে' প-র-সা (পাঠান্তর)। ৪। 'তাহার' ক, খ, ঘ, চ। ৫। 'মাধ্রী' প-র-সা। ৬। 'লোকে' প-র-সা। ৭। 'ধরিবে' ক, খ, চ, প-র-সা। ৮।

তথা রাগ ৷১

স্থুখের পিরিতি আনন্দ যে রীতিং দেখিতে স্থলর হয়। মধুর পীযুবে মদন সহিতে माथिटल (भ त्रमसूर ॥ সই কিবা কারিগর সে। এমত সংযোগে করি অমুরাগে কেমতে গড়িল দে॥ ধ্রু। সাগর মাঝারে থাকা য়ং ক্ষয়া কেমনে পাইবে সেহ মূদন মাদন পাইল কোন স্থান রসে নির্মিল দেহ ।। বিন্ধিলেক ঘূণে তিন তিন গুণে পাঁজর ধসিয়া গেল। ষ্ভন করিয়া অবলা বিধিতে আনিলেশ এমতি শেল। এমন অকাজ করে কোন রাজ বুঝিতে নারিলুঁ মোরা। কুলের ধরমে তেজিলুঁ মরমে এমতি হউক তারা॥ চণ্ডাদাসে কয় মিছা গালি হয় ना प्रिथ करनक लाटक। আপনা আপনি বোলহ্য কাহিনী व्यापन मरनद श्रूर्थ ॥ २८॥ ৮ २२॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩৮৩ সংখ্যক পদ।

২। 'যে রাতি' স্থলে 'কিরিতি' খ, ঘ। ৩। 'সে
রসময়' স্থলে সরসময়' প-র-সা। ৪। 'সঞ্জোগ' ক।

৫। 'থাকিয়া' ক, খ, প-র-সা। ৬ 'সে' ক, প-র-সা।

৭। 'দে' ক, প-র-সা। ৮। 'আনিল' ক। ১।
'এমন অকাজ' ইত্যাদি কলিট প-র-সা প্থিতে
নাই। ১০। 'বলহ' ক, খ, প-র-সা।

তথা রাপ ৷১

সই পিরিতি আঁখর তিন। জনম অবধি ভাবি নিরবধি ना कानिएय त्रां कि निन ॥ अ ॥ পিরিভি পিরিভি স্ব জনা ক্ৰে পিরিতি কেমন রাত। রদের স্বরূপ পিরি৷ত-মুর্রাত কেবা করে পরতাত॥ পিরিতি-মন্তর জপে যেই জন নাহিক তাহার মূল। বন্ধুর পিরিতে আপনা বেচিলুঁং নিছি° দিলুঁ জাতি কুল। দে রূপ-সায়রে নয়ন ডুবিল⁸ সে গুণে বান্ধল হিয়া। সে সব চরিতে ছুবিল বে চিতে* নিবারিব কি বা⁹ দিয়া ॥ খাইতে খাইছি भारेत कर्रह আহিতে আহিয়েদ ঘরে। চণ্ডীদাস কছে ইঙ্গিত পাইলে অনল দি বর বারে । ৯৫॥৮৯৩॥ পাঠান্তর

)। देश প-র-সা পুথির ১৩৮৪ পদ। ২। 'নিছিলু' প-র-সা। ৩। 'বিচি' প-র-সা। ৪। 'ড্ৰল' ধ। ৫। 'বাহিল' ক। ৬। 'ৰে চিতে' স্থলে 'সে মন' থ। ৭। 'কি না' ক, ধ। ৮। 'আছি আপন' থ; 'আছিয়ে আপন' ধ। ৯। 'দিয়ে' ক. থ, চ, প-র-সা। ১০। 'ধর বারে' স্থলে 'ছ্য়ারে' ক, চ, প-র-সা।

थररे ।>

এই ভয় উঠে মনে এই ভয় উঠে।
না জানি কামুর প্রেম তিলে জানিং টুটে ।
গড়ন ভাঙ্গিতে সই আছে কত খল ।
ভাঙ্গিয়া গড়িতে পারে সে বড় বিরল ।
যথা তথা যাই আমি যত হুখ পাই।
চাঁদমুখেন মধুর হাসি তিলেক জুড়াই।
সে হেন বন্ধুরে মোর যে জন ভাঙ্গায়।
হাম নারা অবলার বধ লাগে তায়।
চণ্ডাদাস কহে রাই ভাবিছ অনেক।
ভোঁমার পারিতি বিনে না জিয়ে
ভিলেক ॥৯৬॥৮৯৪॥

পাঠা গ্র

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩০৫ সংখ্যক পদ।
২। 'জান' প-র-সা। ৩। 'ছুটে' ঘ। ৪।
'গঢ়ন' থ, ঘ। ৫। 'জন' প-র-সা। ৬। 'গঢ়িতে' থ, ঘ। ৭। 'হুজন' প-র-সা। ৮। 'চাদ মুখে' ক, প-র-সা। ৯। 'দে' क; 'দে না' ঘ, চ, প-র-সা।

ने बाब 15

শ্যানের পিরিতি মুরভি^২ হ**ইলে**তবে কি পরাণে² ফলে।
পরাণে পিরিতে² সমান করিলে
কে তারে জিয়স্ত বলে ॥

যদি হাম শ্যাম বন্ধু লাগি পাড় তবে সে এ হুখ টুটে। আন মত শুনি মনের আগুনি यन द वन द उटि ॥ পরাণ সমানং পিরিভি-রভন্দ क्षिन् कपग्र-जूरन । অধিক>> হইল পিরিভি-রভন>• পরাণ উঠিল চুলেম্ং ॥ জাতি কুল বলি দিলুঁ তিলাঞ্চল আর সতী-চরচাতে। তমু ধন জন>৩ জীবন যৌবন নিছিলুঁ কালা-পিরিতে ॥ श्यािय त्रांचिव কারে না কহিব ১৪ भवारम भवारम[े] कडा। कि कानि कि त्थरन के कि मिया कि देकरल মরিলে " না বায় ছাড়া॥ **िटलटक** भित्रस যদি না দেখিয়ে শয়নে স্বপনে ১৯ বর্জ। ক্ৰে চণ্ডীদাস मत्राम त्रव्भरः পিরিতি অমিরা-সিকু ॥৯৭॥৮৯৫॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৩৮৬ ও প-র পুথির ১৪।৫৫ সংখ্যক পদ। ২: 'কিরিভি' প-র; 'মিরিভি' সা-প ২০১ পুথি। ৩। 'পরাণ' ক, চ, প-র-সা; 'গরণ' প-র। ৪। 'পরাণে নিরিভে' হলে 'পরাণ পিরিভি' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'বিদি' ইত্যাদি পংক্তি হলে প-র পুথিতে 'শ্রাম-ধনের' ইত্যাদি কলিটি ঘারাই এই পদ আরম্ভ করা হই-রাছে। ৩। 'আনমত' হলে 'অনুপার' প-র। ৭। 'রতন' প-র। ৮। 'পরশে' প-র। ৯। 'কুথিলু' ইত্যাদি হলে 'খ্রিকু হৃদরে তুলে' ক। ১০। 'পরশ' প-র। ১১। 'কুলে' প-র।

১০। 'মন ধন' প-র। ১৪। 'হিরার' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথির পাঠ ধথা—'হিরার হিরার লাগির থাকিব'। ১৫। 'পরাণ' প-র। ১৬। 'কি থেণে' স্থলে 'কি থানে' ধ, ঘ, চ; 'কি ক্ষণে' ক। ১৭। 'অস্তরে' প-র। ১৮। 'তিলেক' ক, থ, ঘ, চ। ১৯। 'শরনে স্থপনে' স্থলে 'সপনে সে শ্রাম' প-র। ২০। 'হানিল' প-র।

তথা রাগ।১ কাসু-পরিবাদ মনে ছিল সাধ সফল করিল বিধি। ছাড়িতে নারিব কুজন-বচনে সে হেন গুণের নিধি ॥ বন্ধুর পিরিতি শেলের গ পহিলে সহিলুঁ বুকে। বেখাটি বাঢ়িল দেখিতে দেখিতে এ ছখ কহিব কাকে॥ করে মিরন্তর• হিয়া দগদগ यादा ना प्रिथिटन मति। কি শেল সম্ভাইল হিয়ার ভিতরে वल ना कि वृष्कि कति॥ অস্থ বেথা নয় বোধে সোধে রয় হিয়ার মাঝারে থুইয়া⁸। কোন কুলবভী কুল মজাইয়া কেমনে বৈয়াছে সইয়া ॥ অবলা অখল क्षप्र भवन क्षात्र जूलिया (शन् । পরের কথায় পিরিভি করিয়া अनम कान्द्रिश मन् ॥ मकन कृतन ভ্ৰমরা বুলে কি তার আপনা পর। **हशीमांग** करह কামুর পিরিভি

কেবল ছবের ধর ১৯৮১৮৯৬।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১০৮৭ সংখ্যক পদ।
২। 'সহিলে' ক; 'সহিল' চ, প-র-সা। ৩।
'হিয়া' ইত্যাদি কলিট ক, থ, ব, চ ও প-র-সা
পুথিতে নাই; সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি হইতে
উদ্ভ হইল। ৪। 'খুইঞা' ক, থ; 'থুইয়ে'
প-র-সা। ৫। 'শুইঞা' ক, থ; 'সহিয়া' ব;
'শেঞা' চ; 'সইয়ে' প-র-সা। ৬। 'অবলা'
ইত্যাদি কলিট ক, খ, ব, চ ও প-র-সা পুথিতে
নাই; সা-প ২০১ সংখ্যক পুথি হইতে উদ্ভ হইল।
৭। 'কে' ব। ৮। 'আপন' চ, প-র-সা।

এীরাগ 1>

না বোল না বোল সখি না বোল এমনে।
পরাণ বান্ধিয়া আছি সে বন্ধুর সনে ॥
প্রাণ বান্ধিয়া আছি সে বন্ধুর সনে ॥
প্রাণ বান্ধিয়া আছি সে বন্ধুর সনে ॥
প্রাণ গুরুব কাজ ॥
তেজিয়া সব লেগা পিরিতি কৈলুঁ।
যে ইহায় বিরতি তারে জিয়তে মেলুঁ ।
যে চিতে দড়াঞাছি সেই সে হয়।
প্রেপিল বাণ যেন রাখিল নয়॥
ঠেকিলুঁ প্রেমফানে সকলি নাল।
ভালে সে জ্ঞানদাস না করে আলা॥

1221691

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুধির ১৩৮৮ সংখ্যক পদ।
২। 'ধে' ইত্যাদি পংক্তির ক্লে 'বেই হুরে
বিরতি তারে তেজিয়া মৈলুঁ'ক; 'বে হুয়ে বিরতি
তারে জিয়ুস্তে মলুঁ। প-র-সা। ৩। 'দড়াইয়া'
খ; 'দঢ়ায়াছি' চ।

টাক1

e—৬। "ভেলিয়া" ইত্যাদি। অক্ত সকল মেহ পরিভ্যাগ করিয়া (গ্রীকৃষ্ণের সহিত)প্রেম করিলাম; যে (শ্রীক্বফ) ইহাতে বিরতি অর্থাৎ বিভূক্ষ, জীবিতাবস্থায় ভাহার সহিত সম্মিলিত হই-লাম! (শ্রীরাধার উক্তির ভাংপর্য্য এই যে, এ ভাবে শ্রীক্রফোর সহিত সম্মিলন অপেক্ষা দেহ পরিভ্যাগ করা শ্রেম ছিল)।

৭—৮। "বে" ইত্যাদি। চিত্তে বে (ভাব)
দৃঢ় করিয়াছি, তাহাই কার্য্যে প্রকাশ পাইবে;
বেমন (ধয় হইতে) নিক্ষিপ্ত বাণ রক্ষা করিবার
বোগ্য নহে! (শ্রীরাধার উক্তির তাৎপর্য্য এই বে,
বেমন মুক্ত শরকে ফিরাইয়া আনা বায় মা, তেমন
প্রেম-প্রবণ হাদয়কেও নিরক্ত করা অসম্ভব)।

১০। শভাবেশ ইত্যাদি। অধানদাস বে আশা করে না,—(তাহা) ভালই (বটে)। (আশা করিলেই আশার অপরিরুপ্তি-জনিত নানা ছঃখ নানা সমরে সহু করিতে ১য়; সে জন্ত হচতুর জ্ঞানদাস আশাকে ক্লয়ে পোষণ করেন না)। তুলনা কক্লন,—

"ন তথা স্থয়তাঙ্গ-সংলগ্ধা বন্ধবণিনী।

> যথা স্থয়তি স্বাস্তমিশূ-শীতা নিরাশতা॥"

— বোগবাশিষ্ঠ, ৪০.৭৪।

यहरें।)

জাভি প্রাণ-ধন কান্থ সে জাবন এ ছটি আঁখির তারা। হিয়ার পুতলী পরাণ-অধিক নিমিখে নিমিখে হারা॥ ভজ নিজ পতি ভোৱা কুলবভী यात (यवां भटन लग्न। শ্যামবন্ধু বিস্থ ভাবিয়া দেখিলুঁ আর কেছো মোর নয়। কুলের ধরম^৩ কি আর বুঝাও মন স্বতম্বর নয়। রসের পরাণ कूलवडी रेश्या

জার কার° জনি^৬ হয় ।

যে মোর করমে। লিখন আছিল
বিহি ঘটায়ল মোরে।
ভোমরা কুলবতা দেখিলে কুমতিদ
কুল লৈয়া থাক ঘরে।
ভারু ছুরুজন বলু কুবচন
না যাব সে লোক-পাড়া।
ভারনদাস কয় কামুর পিরিতি
ভাতি কুল শীল ছাড়া॥১০০॥৮৯৮॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২১১, ১০৮৯ ও প-র পুথির ১৪।১০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বাসিরে' প-র-সা; 'নিমিখ' প-র। ৩। 'কুলের ধরম' হুলে 'ধরম বিচার' প-র-সা। ৪। 'আপনার' প-র-সা। ৬। 'আনি' ক। ৭। 'কপালে' প-র-সা। ৮। 'দেখিলে কুমভি' হুলে 'দেখিলে মুকভি' ক; 'দেখিলে মুকভি' প-র-সা; 'দেখিলে মুকভি' চ, প-র। ৯। অভঃপর প-র-সা পুথিতে নিম্নিথিত অভিরক্ত কলিটি দুই হয়; যথা,—

কান্থ বিনে প্রাণ নাহি জানে আন না শুনি আনের কথা। কান্থ বিনে সধ ধে সূথ বৈভব শুনিতে প্রবণে বেধা॥'

অথ অমুরাগঃ প্রকারান্তরং যথা। ভত্ত শ্রীগৌরচন্দ্র।

विज्ञान ।>

গোরা-রূপ লাগিল নহনে।
কিবা নিশি কিবা দিশি শয়নে স্থপনে ।
বে দিগে ফিরাই আঁথিং সেই দিগে দেখি।
পিছলিতে করি সাধ্ধ না পিছলে আঁখি।

কি খেণে দেখিলাম গোরা কি না মোর হৈল।
নিরবধি গোরা-রূপ মরমে লাগিল ॥
চিত নিবারিতে চাহি নহে নিবারণ।
বাস্থ্যোধে বলে গোরা রমণী-মোহন॥
॥১০১॥৮৯৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৯°, ১০৯৮ ও প-র
পুথির ১৪:৭ সংখ্যক পদ। ২। 'ফিরাই আঁথি'
ছলে 'পড়য়ে দিঠি' প-র। ৩। 'করি সাধ' ছলে 'করে মন' প-র-সা; 'করে সাধ' প-র। ৪। 'নয়নে'ক। ৫। 'পশিল' প-র।

कुड़ी ।>

मूि यि वर्ला र পাসব্রো কান° মনে সে না লয় আন। তিল-আধ তার মুখ না হেরিলে' নিঝরে ঝরে নয়ান ॥ পরাণের সই खन खन खन কামুর পিরিতি কাচ্চে। ভেল পরাধীন তমু মন ধন कि आंत्र कतिरव लार्ज ॥ अ ॥ পরাণ উছলে মানের নামে সে क्षेत्र रम् व्यक्ति। यप्ति. श्वित्छ ना চাহোঁ। কামুর বচন कारण एम यूत्रली वारक । যদি, চলিতে না চাহোঁ > কানাইর > পাশে **চর**ণে থির না বান্ধে। গোবিন্দ দাস কহে কামুর লাগিয়া **ভালে সে পরাণ কাম্মে ॥>०२॥৯००॥**

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৭ ও ১৩৯১ এবং প-র পুথির ১৪।৮ সংখ্যক পদ। ২। 'বোলো' ক, ৬; 'বলঙ' প-র-সা। ৩। 'পাসরোঁ কান' হলে 'পাসরো কান' ব; 'পাসরোঁ কাহু' চ, প-র-সা। ৪। 'না হেরিলে' হলে 'নাহি দেখি' ক: 'নাদেখিয়া' ব। ৫। 'নিঝরে ঝরে' হলে 'অমুবে ঝুরে' প-র-সা। ৬। 'বয়ান' থ। ৭। 'জীবন' ক, ব, চ। ৮। 'জৈহন' ইত্যাদি হলে 'জৈহন হয়ে যে কাজে'। ৯-১০। 'চাহো' ব, প-র-সা। ১১। 'কাছ্বর' ক, ব, ব, ব, চ; 'কাছুরের' প-র।

টীকা

৯—১০। "মানের" ইত্যাদি। (মান করা দুরে থাকুক), মানের নামেও আমার প্রাণ অভির হয়,—এইরূপ আমার হুরবন্থা হইরাছে।

वाननी ।>

শুনইতে অমুখণ यह नव खनगगर প্রবণ নয়ন জৈ গেলাও। দরশনে ভাকর এ হেন⁸ লোর ঝর नयन अवग नम (छला ॥ হরি হরি কি ভেল দারুণ কাঞ্চ। না জানিয়ে কো বিহি বিঘন বাঢ়াওল কাসু-সমাগম মাঝ ॥ গ্রু ॥ যা সঞে কেলি-কলা-রস-লালসে लाथ मरनात्रथ (कल। তাকর পাণি-পরশে তমু পরবশ তবহি অচেতন ভেল॥ হিয়া ঘন-সার হার নাহি পহিরলুঁ यांक भंत्रभ-त्रम-१ व्याटम। তাক বিছেদেদ জীউ নাহি নিকসয়ে কহতহিঁ > গোবিন্দদাসে ॥১০৩॥৯০১॥ পাঠান্তর

)। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৬ ও ১৩৯২ এবং প-র পুথির ১৪।১১ সংখ্যক পদ। ২। 'নব ৩৭'

প-র-সা। ৩। 'গেল' ক, প-র-সা। ৪।
'ঐছে' প-র-সা। ৫। 'ভেল' ক, প-র-সা।
৬। 'হরি হরি' ইত্যাদি ধ্রুব-কলিটির স্থলে সা-প
২০১ পুথির পাঠ, যথা—

'হবি ছবি কো বিছি বিধিন বাঢ়াওল
কাহ্ন-সমাগন মাৰো।
জীবন যৌবন ভেল পরাধিন
কি আর করব লাজে॥'

। 'ল্লখ'ল, চ, প-র-সা, পর । ৮। 'বিচ্ছেদে'
ক, চ, প-র-সা, প-র । ১। 'কি কহব' প-র-সা;
'কি করব' প-র ।

টীকা

১-- ৪। "শুনইতে" ইত্যাদি। সর্বাদা বাঁহার অপুর্ব খণ-গ্রাম শুনিতে শুনিতে (আমার) কর্ণ নয়ন হটল অর্থাৎ নয়নের কার্যা কর্ণই সম্পন্ধ করিল,—(অর্থাৎ অফ্রাগোৎপত্তির জক্ত দর্শনের আর অপেক্ষা বহিল না)—ভাঁহার সাক্ষাৎ দর্শনে (প্রেমানন্দ হেডু) নয়নে এরূপ অক্ষাবর্ণ হইতে লাগিল (বে), নয়ন কর্ণের ক্যার (দৃষ্টি-শক্তি-হান) ইইল!

कारमाम ।>

নব নব গুণগণ শ্রবণ-রসায়ন नग्रन्थ - त्रमाग्रन व्यक्त । ক্দয় রসায়ন রভস্ত সম্ভাষণ পরশ-রসায়ন সম। এ স্থি রসময় অস্তর যার। গুণগণ-সাগর খ্যাম স্থনাগর (क) धनि विष्ठुत्र प्राप्त ॥ ध्रम ॥ গৃহপতি-তরজন গুরুত্বন-গঞ্জন কুলবভি-কুবচন ভাষ। मत्रह भून (महेहे যত পরমাদ মধুর-মুরলি-আপোনাস 🛭

मिनम-मी पुल কিয়ে করব কুল প্রেম-প্রনে ঘন ডোল । গোবিন্দ দাস যতন করি রাখত লাকক জালে আগোর ॥১০৪॥৯০২॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৯৭, ১৩৯৩ ও প-র পুबिর ১৪। ১२ সংখ্যক পদ। २। 'পরশ' প-র-সা। ৩। 'সরদ' প-র। ৪। 'রভদ' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির হুলে প-র-সা পুথির পাঠ, যথা---'শুন স্থি রস্ময় শ্রাম স্থনাগর

কো ধনী বিছর অপাল। ে। 'আগর' ক, চ। ৬। 'পুন মেটই' স্থলে 'পুন মেটব' ক; 'পুন মেটয়ে' চ; 'পছ মিটয়ে' প-র-সা। १। '(मान' প-র-সা, প-র।

কৌ ক্লান্সিণী ৷১

অরুণ-উদয়-কালে ব্ৰজ-শিশু আসি মিলে বিপিনেং পয়াণ প্রাণনাথং। এক দিঠি গুরুজনে আর দিঠি পথ পানে চাহিয়ে পরাণ করি হাপঃ সজনি না জানি কি হয়ে° প্রেম লাগি। দারুণ পিরিভি পর-বোধ না মানই কত চিতে নিবারিব আগি ॥ প্রশ ॥ তাহে নব-যৌবনি একে কুল-কামিনি আর তাহে পরের অধীন। রহিতে না পারি খরে পিরিভি বিষম-শরে ভাবিতে ভাবিতে তমু স্ফীণ ॥ নিশি দিশি অবিরত জাগিতে খুমিতে কভ প্রাণনাথ সোত্ররি সদাই । छानमाम (वादन व्यक्त नग्नान - कत्न তিল আধ খির নাছি পাই ১ ৫ ৪৯ ৩ খা

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১০৯৪ ও প-র পুঞ্ ১৪।৩৫ সংখ্যক পদ। 'কৌ রাগিণী' স্থলে 'কোডা রাগ' প-র। ২। 'বিপিন' ক, খ; 'বিপিনছি' প-র-সা। ৩। 'প্রাণনাথে' প-র। ৪। 'হাত' क; 'हा(ब' भ-त। ६। 'हम्र' क, ब, भ-त-म् প-র। ৩। 'দারুণ' ইত্যাদি খলে প-র পুণ্র পাঠ ষ্ণা,—'দাক্ষণ পিরিতি মোর পরবোধ নাহি মানে'। १। 'ঘুমাত্যে' প-র। ৮। 'প্রাণনাথ' ইত্যাদি স্থলে 'প্রাণনাথ সঙ্রিব কত' প-র। ১। 'নয়ানের' ঘ, চ। ১•। 'তিল' ইভ্যাদি স্বলে 'বিষাধিক অধিক পিরিত' প-র।

जुलानी। >

শুন শুন বিনোদিনি রাই। তোহে পুন কহিয়ে বুঝাই॥ কাত্মক ভাব যব হোই। হিয় মাহা রাখবি গোইং ॥ কোই জমুত লখই না পার। বেকত করবি কুলাচার॥ কাম্ব উয়ব হিম্ন মাহা। আন ছলে বিছরবি তাহা॥ গুরু ছুরুজন ভুয়া পাপ। দেখিলে দেওব বহু তাপ ॥ থীর করবি সদা চাত। ঐছন কুলবতি-রীত। পুন জনি ভাবহ আন। ইহ কবিশেধর ভাণ॥১০৬॥৯০৪॥

পাঠান্তর

)। हेहां श-त-मा शूचित ১৩৯৫ मध्याक शरा ২। প-র-সাএ ফুলে 'ইত্যাদি' শব্দ দারা এই পদটি সমাপ্ত করা হইয়াছে। ৩। 'জন' ক। ৪। 'এক इक्कन' एरग 'श्रेक्कन कनि' क, ४।

টাকা

৯—:•। "অংক" ইত্যাদি। তোমার অংকজন চর্মন ও পাপ-স্বরূপ; ভাহারা দেখিলে সনেক যাতনা দিবে ।

ৰরাড়ী।১

পরশ না করি ডরে কানড> কুস্তম করে এ বড মনের মনবেথা⁹। যেখানে সেখানে যাই সকল লোকের ঠাঞি কাণাকাণি শুনি এই কথা॥ मरे ८लाटक वटल काला পরিবাদ। জলদ না হেরি গো কালার ভরমে হাম তেজিয়াছি কাজবের সাধ॥ প্রা যমুনা-সিনানে যাই আঁখি মেলি নাহি চাই ভরুয়া কদমতলা পানে। যথা তথা বসি থাকি বাঁশীটি শুনিয়ে যদি प्रिंग्डिशं किश शिक कारन ॥ চণ্ডীদাস ইথেৎ কৰে সদাই অন্তর দতে পাসরিলে না যায় পাসর।। দেখিতে দেখিতে হরে ততুমন চুরি করে না চিনিয়ে কালা কিবা গোল। 11509112021

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৬৩ সংখ্যক পদ। 'ভনিমে যদি' স্থলে 'ভনিমা গো' থ। ৫। 'চত্তী-मान रेप्प' ऋरम 'वज़ हखीमारम' श-त्र । ७ । 'हिडन' प। १। 'हिनि स' क, ब, श-द्र।

ভণা বাগ ৷১

জীবাবে নগে মুই জী পৰে নহো নহো জাবারে নহেং গোর সাবং। যাগার সনে সইঃ পবিচয় নাহি মোবং তাহা সনে কচেও গাবিবাদ।। কেমন বানাই সেই ে : মন মুব্তি স্ই৮ কেমন বাং তাহার্ফ বেভার। রাধার বন্ধয়া বলৈ সব ভোতে ডাতে তারেস সেই হোর কুলের খাঁখার॥ कोशादत कि । हुन ८०० ८०० ८०० जोटन ८१। ্রাণ চইল সে ফাঁফ ,২২। তাহার সনে যদিত বিভিত্ত গোগ তবে সে কহিত ওলে মোর্ডি॥ 11:06/100:11

পাঠান্তব

 ३। इंश श त श्रीपत > ५ भरवाक भना २। 'नरश' क। ७। 'कावाद' ई ग्रांकि भशेख ছুহটির হুলে দার পুলিব গাঠ, যদা -- নজান আর नाष्ट्र कावस्मव माधार अने 'यानाव' हेलापि স্থলে যার সনে কন্তু মোর' প্র। '। 'গো' প-র। ৬। তিহি। ইত্যাদি হলে দি জনার সনে প্র। ে 'নে' প্র। ৮। 'গো' প-র। ১। '(कमन वा' ছলে 'কেমন' क, চ। ১০। 'কেমন বা ভাগার' স্থলে 'না कानित्य ८ १ भने थे-च । ३३। अंदर्ग ोद्ध व्यव ্বলে গোল্প-র। ১০। প্রাণ্ভগাদি হলে **१। 'কানড়' ছলে 'কাল' ক, খ, চ, প-র। 'প্রাণ মো**র বিশ্রিস যার' পর। তার সনে ে। 'মনব্যথা' क, ह; 'মোর বেথা' প-ব। ৪। যাদ মোর' প-র: ১৪। 'গাকতে' প-ব। ১৫। 'ভবে'হভাগি স্থলে 'এ কপা স্থিত ভবে গায়' পর ।

সিক্কুড়া ।১

বে দিগে কামুর ঘর সে দিগে না বসি।
সজী-সাধে সে দিগের বাউৎ না পরশি ॥
ভমুত দারুণ লোকে নানা কথা কয়।
দুখের উপর তুখ আছুরে হৃদয় ॥
কাহারে কহিব তুখ কে মোর হিতাশী।
পরের কথায় প্রাণ পোড়ে দিবানিশি॥
শিবা কহে স্থাননি বুকে না হানিবে।
কুবাদিনী গোকের কথায় কিবা হবে॥

11906116061

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৩৫ সংখ্যক পদ।

হ। 'বাগু'ক। ৩। 'আছ্রে হৃদ্ধ' স্থল 'ততোথিক হর' প-র। ৪। 'কাহারে কহিব' ইত্যাদি
পংক্তি চারিটিক, খ, ঘ, চ পুথিতে নাই,—পর
পুথি হুইতে উদ্ধৃত হুইল।

चामत्त्र प्रियू नहे हाँदम देखामि रशश्रम्।

यहरे।

যারে মুই না দেথোঁ নয়ানে।
কলক ভোলায় তার সনে।
নগরে আছায়ে কত নারী।
কে না চাহে শ্রাম পানে ফিরি॥
কে না পিরিতি নাছি করে।
গুরুজন নাহি কার ঘরে॥
মোর হৈল সব বিপরাত।
জগতে করিলে বেয়াপিত॥
যাহা নাহি দেখয়ে নয়নে।
তাহা যেন দেখিল এখনে॥
বলরাম কহে পাপ-লোকে।
মিছা কথা করে পরতেকে॥১১০॥১০৮॥

অথ প্রেম-বিচার।

শ্রীগোরচন্দ্র ॥

भाननी ।>

ভাব-ভরে গরগর চিত।
থেনে উঠে থেনে দৈসে না পায় সন্ধিত।
আত রসে নাহি বান্ধে থেহ।
সোটের সোটের কানে পুরুব স্থনেই ॥
নাচে পত্ত গোরা নটরাজ।
কি লাগি গোকুল-পতি সকার্ত্তন মাঝ ॥
র্না পর কিছুই না জানে।
দানহান উত্তম অধম নাহি মানে॥
প্রিয়-গদাধর-কর ধরি।
মরম-কথাটি কহে ফুকরি ফুকরি॥
ভগমগ আনন্দ-হিলোলে।
লোলিয়া লোলিয়া পড়ে পতিতের কোলে।
গোরা-রসে সব রসময়।
না দহবে বলরাম পাষাণ-হদয়॥১১১॥১০১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১১২ সংখ্যক পদ।
এই পদটি ৬৩৫ সংখ্যক পদরপে পদকরতক গ্রাহে
ইতিপুর্বে উক্ত হইয়াছে; স্মৃতরাং পাঠায়র উর্ব পদে মাইবা।

পরস্পার সখ্যাতি প্রেম-বিচার।

एवर् ।>

সো কুল বভি অভি তুল হ গভাগতি
পতিং জুরমতি খুর-ধারণ।
পাপিয় পিরিভি এত হ নাহি সমুক্রেণ
দোসর মদন গোঙার ॥

সজনী রাই সহজে পরতন্ত্র। কবর্তু পুর নহ গ্ৰুন বিৱহ-গৃহ ইথে কি আছুয়ে মণিমন্ত্ৰ ॥ গ্ৰা নয়ন ভরি তিরপিত দরশনে নহত পরশনে না রহে গেয়ান। कोरन जत्र जत ভাহে বিস্তু তত্মন কহত কিয়ে সমাধান॥ মরম মাধা পৈঠত বিছুরত মরমে স্বপনে না হেরুয়ে ' আন। তুল্ভেল সমতুল অমিলন মিলন त्गाविक्तमात्र ভा**टल जा**न ॥>>२॥>> পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পূথির ২০০ সংখ্যক পদ।
২। পর'ক। ৩। থেরধার'ক। ৪। 'সমূঝিরে'ক,
চ। ৫। 'সজনি'ক, থ, প-র-সা। ৬। 'কবছ'
না'ক। ৭। 'ডাহা'ক। ৮। 'মরম' প-র-সা।
১। 'বাহা'প-র। ১০। 'হেরই'ক, চ; 'হেরিরে'
প-র-সা।

बब्राफ़ी ।>

ছত রসময়-ভসুং গুণে নাহি ওর।
লাগল ছত্ত না ভাসেই জোরণ ॥
কে নাহি কয়ল কড়ত্ত পরকার।
ছত্ত জন ভেদ করই নাহি পার॥
খোজলুঁ সকল মহীতল-গেহ।
খীরং নীর সম না হেরলুঁ নেহ॥
যব কোই বেরি আনল-মুধ আনি।
খার দণ্ড দেই নিরস্ত পানি॥
তব্ত জীর উছলি পড়্ তাপে।
বিরহ-বিয়োগণ আগি তহিঁ ১০ দেল।
বিরহ-বিরোগ তবহি ১০ দূরে পেল॥

ভণহঁ বিদ্যাপতি এতেনে স্থরেহ›•। রাধা মাধব ঐছন নেহ ॥১১৩॥ə১১॥

পাঠা গুর

১। ইহা প-র পুণির : ৪।৯৬ সংখ্যক পদ।

'বরাড়ী' হলে 'ধানশী' প-র। ২। 'ছ্ছ' প-য়।

০। 'লাগল' ইডাাদি হলে 'এই দরশনে ছছু পুলকে
অগোর' প-র। ৪। 'বোধল' ক; 'লোধল' ব, চ।

৫। 'ফীর' ক, খ। ৬। 'নিরসল' খ, ঘ, প-য়।

৭। 'উমড়ি' ক। ৮। 'বিরোগে' ক, প-য়।

৯। 'লাগ' ক, চ। ১০। 'দিল' ব। ১১। 'ডাহে'

ক, খ, য়, চ। ১২। 'সবহি' প-য়। ১০। 'এভেনে

হরেছ' হলে 'এ ভিন হরেছ' ক, প-য়; 'এভিনে

হরেছ' চ।

টীকা

৫--৬। "পোজলু" ইত্যাদি। পৃথিবীর সকল
গৃহ অনুস্কান করিণাম; (কিন্তু) ছ্ছা ও জলের
প্রশ্বের) ভার প্রণয় দেখিলাম না।

১০-১ন। "তণত্" ইত্যাদি। বিভাপতি বলিতেছেন — হরেছ অর্থাৎ হলেছ কি না উৎক্ষী প্রথম এই প্রকার। রাধা ও মাধবের প্রণম এই ক্রপ বটে। (নগেজ বারুর সংস্করণে 'এতেনে হ্রেছ' হলে 'এছন হ্রেছ' পাঠ মুল্লি ১ হইমাছে, কিন্তু একেপ পাঠ কোন পুথিতেই দৃষ্ট হইল না। 'র' ও 'ল'বের অকেপ হেডু 'হলেছ'— 'হরেছ' হইতে পারে। 'এতেনে' শক্ষাট ছিন্দী 'এচ্না' শক্ষের ক্রপান্তর বলিরাই বিবেচনা হয়)।

यहरे।

এমন পিরিতি কভু নাহি দেখি শুনি।
পরাণে পরাণে বাদ্ধা আপনা আপনি।
সূত্র কোরে সূত্র কাঁদে বিচ্ছেদ ভাবিরা।
আধ তিল না দেখিলে বাদ্ধ কি মরিয়া।

জল বিজ্ মীন যেন কবছাঁ না জিয়ে।

মাপুষে এমন প্রেম কোগা না শুনিয়ে॥
ভাল কমল বলি সেগো হেন নয়,

হামেই কমল মরে ভামু স্থুখে রয়॥

চাত হ জলদ কহি সে নহে ভুলনা।

সময় নহিলে সে না দেয় এক কগা॥

কুশমে মধুপ কহি সেগো নহে ভুলই।

না আইলে সমব আগনি না যায় ফলই॥

কি ছার চকোব চাল ছক্তাঁ সম নহে।

গ্রিভুশনে হেন নাহি চণ্ডাদাসে কহে॥

॥১১৪॥৯১২॥

পাঠান্তর

১। 'বিনে' থ, ঘ। ২। 'হিমে' ক, থ। 'হিমে' পাঠে ছন্দোভঙ্গ ঘটে। ২। 'তুল' ক, থ। ৪। 'ফুল' ক, থ।

সওয়ারী ।১

निष्ट्रहे त्नोडून পািরতি চুঃন ভিলে তিলে বাঢ়িং যায়। ठेरिक नाव नाय তথাপি বাচয়ু পরিণামে নাহি থায়⁸। স্থি হে গদভূত হকু প্রেম। এত দিন চাই অবধি না পাই ইথে কি ক্ষিল হেম ॥ ধ্ৰু॥ সব কৈল আন উপমার গণ দেখিতে শুনিতে ধন্দ। এ কি অগরূপ তাহার স্বরূপ স্বভাবে করিলে অন্ধ॥ চণ্ডীদাস কৰে (मोर्ड मम रुख এখানে সে বিপরীত। এ তিন ভুবনে হেন কোন জনে छनि ना पद्रत्व होड॰ ॥১১৫॥৯১७॥

পাঠান্তর

১। 'শোষানী' থ। ২। 'বাড়ি' ক, থ, চ।
৩। 'বাড়য়' থ। ৪। 'থার' চ। ৫। 'ঠাঞি'
ক, চ। ৬। 'ধর' থ। ৭। 'সভাবে' ক, খ, চ।
৮। 'ছই' সম হয়ে' ক; 'দোই।' থ; 'দোহ' চ।
১। 'চিড' ক, থ।

यहरे ।ऽ

একে কুলবতা ধনা তাতে সে অবলা।
ঠেকিল বিষম প্রেমে কত সবে স্থালা॥
অকথন বেয়াধি কহনই নাহি যায়।
যে কবে কামুর নাম ধরে তার পায়।
পায়ে ধরি কাঁদে সে চিকুর গড়ি যায়।
সোণার পুতলা যেন ভূমিতে লোটায়॥
পুছুয়ে কামুর কথা ছল ছল আঁথি।
কোণায় দেখিলা শ্রাম কহ দেখি সধি॥
চণ্ডীদাস বলে কাঁদে কিসের লাগিয়া।
সে কালা আছয়ে ভার হৃদ্যে জাগিয়া॥
১১৬%১১৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৩১৬ সংখ্যক পদ। ২। 'এ কহা' ক,চ; 'কহনে'খ; 'এ কহনে' প-রসা।

তথা রাগ।১

সহজেই বুলবতী বালা।
সোণ কি সহই প্রেম-জালা।
তাহে গুরু-গঞ্জন বোল।
অহনিশি অন্তর ডোল ।
তাহে নিতি প্রেম-ভরক।
জোরি কবহুঁ নহু ভক্ষ।

তুরজন সঙ্গ সঞ্চারি।
ব্যাধ-মন্দিরে জন্ম শারী ॥
সকল কহব কামু-ঠাম।
ইথে কি কহয়ে পরিণান ॥
ভ্যানদাস কহ তাব।
পরিণামে বড়ই সে দাব॥১১৭%১১ ॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুণিব ১৩৯৭ সংখ্যক পদ। ১। 'সহজ্বই' ঘ,চ। ৩। 'সে' ক।৪। 'রোল' ক,ধঃ' ঢোল' প-র-সা।

তত্তাতুরাগঃ প্রকারান্তরং যথা। শ্রীগোরচন্ত্রঃ।

क्षेत्रांग ।ऽ

গোরা-রূপ লাগিল নয়নে।
কিবা নিশি কিবা দিশি শয়নে স্বপনে॥
যে দিগে পড়য়ে দিঠি েই দিখে দেখি।
পিছলিতে করি সাধ না পিছে । সাঁখি॥
কি থেণে দেখিলাম গোরা কিনা মোর হৈল।
নিরবধি গোরা-রূপ মরুমে লাগিল॥
চিত নিবারিতে চাহি নহে নিবারণ।
বাস্থাবাধে বলে গোরা রুমনী-মোহন॥

ロンントロッフクロ

পাঠান্তর

)। এই পদটি ৮৯৯ সংখ্যক পদরূপে ইতি-পূর্বে উদ্ধৃত হইয়াছে; স্থুতরাং পাঠান্তর উক্ত পদে অষ্টব্য।

इ हो ।३

ছাড়িয়া' ঘনের আশ করিব দে বনবাস এই চিতে দটাইলুঁ সার। রা। ৩ দিবদোও হাম হিয়ার উপবে পোব না করিব হাব আঁথির আছে। মই তোমারেগ কহিয়েও মরম। জাহি ভাসাইলুঁ বুলে তিলাঞ্জলি দিশু शुक्तां न्त्रुं । भत्रभ- ःत्रभ । अः ॥ भा रु 51- s: नर्भा- फ'.त्र নিধাস না ছাড়ি ঘরে এই দুখে হেন হাধ করে। চাঁদ্দমুখ নির্বিয়া হাপের উপর **অ**জ থুইয়া মনেৰ কুণাটি কৰ ভাৱে ঃ নয়ানে না দেখে আন আন নাহি শুনে কাণ यं इ (प्रिनिश्मित वार्षिण धंग्म । না জানি কি করিলে> বলবাম দাসে বলে (म्र) नागत (भाकु (स्र क क्या । ১১৯॥৯) १॥

পণ্ঠা হয়

১: ইচাপ-র-সাপুথির তেও ওপ-র পুথির ১ বিল সংখাতে পদ। ১. 'ছাড়িব' ক, খ, প-র-সা; (লাঠারর---ঘ, চ)। ৩। 'দিবস' ক, চ। ৪। 'চিচে' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'আর আঁথির' হুলে 'নরনের' প-র। ৬। 'কহিলু' (পাঠান্তর— ঘ, চ), প-র। ৭। 'গাচ্ছু সে' ক। ৮। 'দেখি' খ, ঘ, প-র-সা। ১। 'দেখো' ক, খ, প-র-সা। 'দেখ' প-র। ১০। 'ছইলে' খ; 'হৈল' প-র-সা। 'ও' ক, খ।

সিস্কুড়া।>

এ দেশে বসতি নাই যাব কোন দেশে।

যাব লাগি প্রাণ কান্দে তারে পাব কিনে॥

বোল না উপায় সই বোল না উপার।

জনম অবধি দুখ বহল হিয়ায়॥

ভিত্ত° কৈল দেহ মোর ননদী-বচনে ।
কভ না সহিব জালা এ পাপ পরাণে ॥
বিষ খাইলে দেহ যাবে রব রবে দেশে ।
বাশুলী-আদেশে কহে বিজ চণ্ডীদাসে ॥
॥১২০॥৯১৮॥

পাঠা হর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০০ ও প-র পুথির ১৪।৩০ সংখ্যক পদ। ২। বৈস্তি নাই ছলে 'নহিল বাস' প-র। ৩। 'তিঁতা' ক। ৪। 'ননদীর বোলে' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৫। 'এ পাণ পরাণে' ছলে 'শাশুড়ীর বোলে' প-র। ৬। 'ক্ছে দিল চঞীদাসে' ছলে 'কবি ক্ছে চঞীদাসে' প-র।

थाननी ।>

अनिग्रार (मिश्रन् দেখিয়া ভুলিলু ভুলিয়া পিরিভি কৈলু । পিরিভি-বিচ্ছেদে না রহে পরাণ युविया युविया रेमल्"। সই পিরিতি দোসর ধাতা । विधित्र विधान স্ব করে আন না শুনে ধরম-কথা। এ ॥ তুলে ভোলাইলু পিরিভি মিরিভি পিরিতি গুরুয়া ভার। পিন্ধিভি-বেয়াধি যার উপজয়ে (म दूरवर ना दूरवर जात। সভাই কহুৱে পিরিভি-কাহিনী কে বলে পিরিতি ভাল। কাত্মর পিরিভি ভাবিতে ভাবিতে পাঁজর ধসিয়া গেল । জীবনৈ সরুণে পিরিভি-বেয়াধি হইল বাহার অলু ।। खानगान करह কামুর পিরিভি निकृषे १ भीकृम तक ॥१२१॥३१॥।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪ • ১ ও প-র পুথির
১৪:৪৯ সংখ্যক পদ। ধাননী পুলে 'ফুই' প-র-সা।
২। 'গুলিয়া' প-র। ৩। 'গুলিয়া' প-র। ৪।
'জীবন' প-র। ৫। 'মলু' খ। ৬। 'সই পিরিডি
দোসর ধাতা' ইত্যাদি ক্রাব-কলির পরিবর্ধে ক
পুথিতে নিম্নলিখিত কলি দৃষ্ট হয়; যথা,—
'সই কে বলে পিরিভি ভাল।
শ্রাম বদ্ধ সনে পিরিভি করিয়া
পালর ধসিয়া গেল।'
৭। 'তৌলাইয়া' খ। ৮-৯। 'লানে' প-র-সা। ১০। 'সল্প' প-র। ১১। 'নিভি' ক, খ, ঘ, চ; 'নিভাই' প-র-সা।

সিমুড়া ।>

মুঞি মৈলুঁ মৈলুঁ মরিয়া গেলুঁ

ঠেকিলুঁ পিরিভি-রসে।

এ হর-করণ বিভি নিদারণ

সকলি পরের বশে॥

কালিয়া কালিয়া বলিয়া

জনমে কি স্থ পাইলুঁ।

হিয়া দগদগি প্রাণ পুড়নি

মনের আগুনে মৈলুঁ ॥১২২।৯২০॥

ইভ্যাদি গেয়ম্।

পাঠান্তর।

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০২ সংখ্যক পদ।

তথা রাগ।>

কিবা সে মোহন বেশ দেখিতে মুরুছে দেশ না রহে সভীর সভীপনা। ভরমে দেখিলে যারে জনম ভরিরা সই সুরিরা মরয়ে কভ জনা। कि कतिन कि ना दिन कितन वा रम वांड्रोहेन कि (भन शिनशि (शन वृद्ध। জাতি-কুল-শীল-শিবে বজর পড়িল সই काशूरत प्रथियां किएन किएन নিন্দ গেল দুরে গো খাইতে সোয়ান্তি ৰ নাই হিয়া ডহ ডহ মন ঝুরে। উড়ু পুড়ু আনছান ধক ধক করে প্রাণ কি হৈল ইহিতে নারি ঘরে॥ রসের মুরতি সে (पश्चित ना॰ त्राह (प বাভাদে পাধাণ হয় পানি। বলরাম দাসে বলে সে অজ পরশ হলে প্রাণ লৈয়া কি হয় না জানি ॥১২৩॥৯২১॥ পাঠাম্বর

১। ইহা প⊹র-সা পুশির ১৪∙০ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' খ্লে 'ভূড়ী' থ। ২। 'সোরাস্ত'ক। ৩। 'সে'ক,চ।

कुड़ो ।>

কি ঘর বাহির লোকে বলে একি রীভিং।
জীতে পাসরিলও নহে বন্ধুর পিরিভি॥
দেখিতে না দেখে আঁথি শ্রাম বিনে আন।
ভরমে আনের কথা না কহে বয়ান॥
শুনিতে শুনিয়ে হাম সেইও পরসঙ্গ।
সোজরি সঘনে মোর পুলকিত অঙ্গ॥
হিয়ার আরভি গোও কহিতে নাহি দেশ।
মরমে ধরম কথা না করে প্রবেশ॥
গৃহকাক করিতে আউলায় সব দেহ।
ভ্যানদাস কহে বড় বিষম শ্রাম-লেহ॥

।**ऽ**२८।३२२।

পাঠান্তর

>। ইহা প-র পূথির ১৪।৩৬ সংখ্যক পদ। ২। 'একি রীডি' হলে 'একিরিডি' ব, চ; 'ককি-

রিভি' প-র। ৩। 'পাসরিলে' ক। ৪। 'ক্সাম' প-র। ৫। 'গো' শস্কটি ক, ধ, খ, চ পুণিতে নাই।

मेब्रान ।>

মনেরং মরম-কথা শুন লো সঞ্জনি।
শ্রাম বন্ধু পড়ে মনে দিবস রক্জনা। এই।
চিতের আগুনি কত চিতে নিবারিব।
না যায় কঠিন প্রাণ কারে কি বলিব।
কোন বিধি সিরজিল কুলবতা বালা।
কোন নাহি করে প্রেম কার এত জ্বালা।
কিবা সে মোহন রূপণ মন মোর বাঁধে।
মুখেতে না সরেই বাণী ছুটি জাঁখি কালেবং॥
জ্যানদাস করে সখি এই সে করিব।
কাপুর পিরিতি লাগি যমুনা পশিবং॥
১২৫॥৯২৩॥

পাঠান্ত ব

ু ১। ইহা প-র-সা পুৰির ২১৪, ১৪০৪ ও প-র
পুৰির ১৪।০৮ সংখ্যক পদ। ২। 'মনের' শব্দ ক,
চ ও প-র-সা পুৰিতে নাই। ৩। 'কিবা সে মোহন
ক্লপ' হলে 'কিবা ক্লপে কিবা ওলে' প-র-সা। ৪।
'মুখেতে না সরে' হলে 'মুখে না নিঃসরে' প-র। ৫।
অতঃপর প-র-সা পুৰিতে এই অতিরিক্ত কলিটি
দুই হয়, বধা,—

'দ্রে হৈতে বাধির বাধির হৈতে দর।
দেখিবারে করি সাধ নহি সতত্তর।'
৬। 'কান্থর' ইত্যাদি স্থলে 'কান্থর লাগিয়া আমি
জানলে পশিব।' প-র-সা।

निवात ।>

রাজার বিয়ারী কুলের বৌহারী
স্বামা-সোহাগিনী নারী।
পিরিতি লাগিয়া এ তিন খোরালুঁ
হইমু কুল-খাঁখারী॥

সই কি ছার পরাণ কাজে। নাহি দর্শন স্বপনে তা সনে অগত ভরিলং লাজে । ধ্রু ॥ সব ভেয়াগিলুঁ ধরম করম যাহার পিরিতি-সাধে। সকলি নাশিল ভাতি কুল শীল সে জনার পিরিভি-বাদে॥ ভাবিতে চিন্তিতে হিয়া জর জর না ক্রচে আহার পানি। পিরিতি-আঁখর কতে বলরাম কেবল ছুখের খনি ১১২৬:১২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪০৫ সংখ্যক পদ। ২। ভিরিয়াক। ৩। নিশিল প-র-সা।

कुड़ो ।>

এক স্বালা ঘরং হৈল আর জালা কামু।

দ্বালাতে জ্বলিল প্রাণ্ড সারা হৈল তমু ॥
কোধায় যাইব সই কি হবে উপায়।

গরল সমান লাগে বচন হিয়ায়॥
কাহারে কহিব কেবা যাবে পরতীত।
মরণ-অধিক ভেলঃ কামুর পিরিত॥

দ্বারিলেক তমু মন কি আছে ঔষধে।

দ্বাত ভারিল কালা কামু-পরিবাদে॥

লোক-লাজেণ ঠাঞি নাই অপ্যশ দেশে।
বাশুলী-আদেশে কঠে বিজ চণ্ডাদাসে॥

পাঠান্তর

1122912201

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪০৬ ওপ-র পুথির ১৪।৫০ সংখ্যক পদ। ২। বিরেপ ক, ঝ, য়, চ, প-র-সা। ৩। কেহ'ক, ঝ, য়, চ। ৪। কেল' ফ, চ: 'হৈল'ঝ, প-র-সা। ৫। মাঝোক, ঝ।

कुड़ी ।>

কি হৈল কি হৈল মোরেং কামুর পিরিতি।
আঁথি কুরেণ পুলকিত প্রাণ কাঁদে নিতি।
শুইলে সোয়ান্ত নাই নিন্দ গেল দূরে।
কামু কামু করি প্রাণ নিরবধি কুরে।
নবীন পাউদেরং মান মরণ না জানে।
নব অমুরাণে চিত ধৈরজ না মানে।
এ না রস যে না জানে সে না আছে ভাল।
হৃদয়ে পশিলং মোর কামু-প্রেম-শেল।
নিগৃঢ় পিরিতিখানি আরতির ঘর।
ইথে চঙীদাস বড় হইল ফাঁফের ॥১২৮॥৯২৬॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪•৭ সংখ্যক পদ। ২। 'মোর' ক। ৩। 'ঝরে' ঘ। ৪। 'পাঙ্সের' ক। ৫। 'রহিগ' ক, চ।

ককণ বরাডী।১

বিষম হইল কালার প্রেম লাগে শেলিং।
ঝুরিয়া ঝুরিয়া কালে পরাণ-পুতলী ॥
থা
যত যত পিরিতি করিয়াছে মোরে।
আঁখরে আঁখরে লেখা হিয়ার ভিতরে ॥
হাসিয়া পাঁজরকাটা কইয়াছে কথাখানি।
সোঙ্করিতে চিতে উঠে আগুনের খনি ॥
নিরবধি বুকে থুইয়া চায় চোখে চোখে।
এ বড় দারুণ শেল ফুটি রৈল বুকে ॥
হিয়ায় ধরিয়া কবে দেখিব মুখখানিং।
বলরাম বলে হিয়ায় দারুণ আগুনি ॥
১২৯॥৯২৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০৮ সংখ্যক পদ।
 ২। 'বিবম' ইত্যাদি ছলে 'বড়ি বিষম হৈল কালার
প্রেম এ মর বসতি লাগে পেলি' ক, ধ, ম, চ। ।।

ৰুৰ্চ। ৫। 'হিয়াৰ ধরিষা' ইত্যাদি প-র-সা ক, চ: 'হিলোলে' প-র-সা। ৬। 'চল্ম' ক। পংক্তি হুইটির স্থলে ক, ধ, ঘ, চ পুৰির পাঠ বণা,--'ছিয়ার ধরিয়া নয়ন ভবিয়া

करव मि (मिश्व मुश्थानि । হিয়ার ভিতর অলে বলরাম দাসে বোলে দারণ খেল আগুনি ॥

একটি পদের ভণিতা ত্রিপদী-ছন্দে রচিত হইয়া অবশিষ্ট পদ পয়ার-ছন্দে রচিত হওয়া সম্ভবপর বোধ হর না : স্থতরাং প-র-দা পুথির পাঠই দমীচীন বোধে মূলে গুণীত হইল।

তথা রাপ।১

নয়ান-কোণের বাবে হিয়ায় হানিলে বে সেই হইল পিঠের পার। জালিয়া তিন কোণের খড়, দিলুঁ ও স্থাবের মুখে তবে আমার দুখের নাহি পার॥ রসের আবেশে অঙ্গ মোডা দিয়াং হাসিয়া কথাটি কয়। কত ভক্তিমায় ও ভুরু• নাচায় তাতে কি পরাণ রয় 🛭 বাঁশীর ফুকে বুকের ভিতরে ফুটিয়া আগুন ছলে। মধুর বচলে হিয়ার হিলোলে পরাণ-পুতলী দোলে॥

হিয়া জর জর পরাণ কাঁফর **(मिथिय़ा '७ मूथ ठान्म' ।**

বলরাম-মনে আন নাহি লয় সবে প্রাণ গোকুলচান্দ ॥১৩০।৯২৮॥

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪০৯ সংখ্যক পদ। र। '(बाफ़ा विदा' ऋत्व '(बाफ़ारेद्रा' श-त-ता। ७।

'इडेबाएइ' थं; 'कब' भ-त-मा। ४। 'ठाहिएन' क, 'मिठि' भ-त-मा। ३। 'ठनएन' छ। ६। 'हिनएन'

ভাটিয়ারি ।১

একে কুলবতী করি বিভৃত্বিলং বিধি। আর তাহে দিল কেন পিরিতি-বিয়াধি॥ कि रेश्ल कि रेश्ल महे किया (म क्तिला। গোপতে বাঢ়ায়া। প্রেম আপনা খোয়ালুঁ ।। জাগিতেঃ স্বপনে মনে নাহি জানে আন। (म नव नागत लागि कान्मरम भताव # কত না সহিব আর হিয়াব পোডনি। কহিতে নাহিক ঠাঞি ছার পরাধিনী 🛭 যার লাগি বেবা জন জাতি প্রাণ্ তেজে। বলরাম বলে ভারে কি করিবে লাজে ॥

12021952

পাঠাস্তর

১। ইচা প-র-সা পুথির ১৪১০ ও প-র পুথির >8180 मःशाक अन्। २ । 'निव्रमिटन' सः 'সিরজিল' প-র। ৩। 'ধাইলু' প-র-সা। ৪। 'জাগিলে' ক। ৫। 'নাহিয়ে' ক। ৬। 'মুঞি' প-র। ৭। 'জাতি প্রাণ' কলে 'পরাণ' ক, খ, খ, চ, প-র-সা। ৮। 'আর' ক।

यहरे ।>

ি ভোহে কহিব বাণী শুন অমুরাগিণি সদাই ভাবহ কালা কামু। নিরবধি আঁখি করে পুলকে শরীর ভরে मित्न मित्न कोन कर्न जम् । যদি তৃত্ত শুন মোর কথা। मना इटव मावधारन সে কালা কামুর প্রেমে **उद्धार अ**व दिला अस्ति । अस्ति । अस्ति । अस्ति ।

থকে তুহুঁ কুলবভী তাহে ছুরজন পতি
জানিলে পড়িবে পরমাদ।
এ পাড়াপড়সী ষত বিপক্ষ আছরে কত
জগতে ঘূষিবে পরিবাদ॥

যব তাহে পড়ে মনে চিত দিবে আন কামে
যেন লোকে নহে উপহাস।

যবিবে আমার কথা মনে না ভাবিহ বেথা
যতনে কহয়ে প্রেমদাস ॥১৩২॥৯৩০॥
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪১১ সংখ্যক পদ। ২। 'কত' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'সদা হবে' ছলে 'রবে সদা' ক,খ, প-র-সা।

व्हरे ।>

তোমরা কি আর বুঝাও ধরম।
শায়নে স্থানে বেশনে দেথোঁ কালিয়া-বরণ ।
কো আউলাইয়া বেশ বনাইতে
হাত নাহি সরে বান্ধি।
সে কালার জরমে কেশ কোলে করি
কালা কালা করি কান্দি ॥
কালা সে কেশ কালা সে বেশ
লোটন বান্ধিয়া রাখি।
যখন কালাকে পড়য়ে মনে
আউলাইয়া তাহা দেখি ॥১০০॥৯০১॥
পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৪১২ ও প-র পুৰির ১৪১৭ সংখ্যক পদ। ২। 'দেৰো' ক, ধ; 'দেৰঙ' প-র-সা; 'দেখি' প-র। ৩। 'বেশ' ক, চ; 'বেশে' প-র। ৪। 'কেশ' ক, ধ; 'কেশে' প-র।

সিম্বড়া ।১ কি ঘর-বস্তি ছাড়ে ছাড়ুক পতি কিবা বাংকরিবে বাপ মায়। এ রূপ° যৌবন জাতি জাবন ধন নিছনি ফেলিব⁸ শ্যাম-পায়॥ ক**হিলু** নিদান আর না রহে প্রাণ শ্রাম স্থনাগর বিনে। কুলের ধরম ভরম সরম ভাগিল এতেক দিনে ॥ সমুখে রাখিয়া নয়ানে দেখিমুণ लहेग्रा थाकिम् रहोर्य रहोर्थ। হার করিয়া গলায় গাঁথিয়া लहेशा थाकिम् तुरक ॥ চিতে উঠে যত বেশ করি ডত অঙ্গে অঙ্গে দিয়া হাথ। সাধ পুবাইৰ व्यत्मक पिर्नेत्र কোলে করি প্রাণনাথ। মুখানি মাজিব'ণ (मिश्रा (मिश्रा তাত্মল দিব চাঁদমুখে । বলরামের কথা বন্ধু লৈয়া যাব যথাস রাধা বলি কেহ নাহি ডাকে॥ 1508112051

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪১৩ ও প-র পুথির ১৪।২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'কিবা বা' ছবে 'কি' প-র। ৩। 'নব' প-র। ৪। 'পেলিব' প র-দা। ৫। 'ভালিব' ক, চ। ৬। 'মুখানি' প-র। १। 'দেখিম্ম' ক; 'দেখিমে' প-র-সা। ৮। 'পার্রেমা প-র। ৯। 'লইরা থাকিম্ম' ছবে 'স্লাই রাখিব' প-র। ১০। 'মুখান মাজিব' ছবে 'মুখ নির'বর্গ পর-সা। ১১। 'ভাশুব' ইত্যাদি হবে 'গুরা তুরি দিব মুখে' প-র। ১২। 'ভাশুব' ইত্যাদি হবে 'গুরা তুরি দিব মুখে' প-র। ১২। 'ভাশুব' ইত্যাদি হবে 'গুরা তুরি

ल्या वात्र । >

সই নাকহ ও সব কথা। যাহারে লাগিল কালার পিরিতি জনম হইতে বেথা ॥ নয়ানে না হেরি কালিন্দীর জল বয়ানে না বলি কালা। ভভু ত সে কালা অন্তরে জাগয়ে° काला टेश्ल ख्रान-भाला ॥ (यागिनी इरेव বন্ধুব লাগিয়া কুণ্ডল পরিব কাণে। বিদায় হইয়া সভার আগে याहेव शहन वटन ॥ গুরু প্রিজন বলে কুবচন

পাঠান্তর

জাতি কুল শীল ছাড়া ॥১৩১॥৯৩৩॥

না যাব সে লোক -পাড়া।

চণ্ডীদাসে কহে

কামুর পিরিভি

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪১৪ ও প-র পুথির ১৪১৮ সংখ্যক পদ। ২। 'অবধি' প-র। ৩। 'নাছাড়ে' প-র। ৪। 'বিদিত' প-র। ৫। 'সে নোক' দ্বলে 'লোকের' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা।

সিছুড়া।১

কহিলাম মনের কথা ছাড়িতে নারিব।
ভাদ নাগর বিনেং তিলেক না জীব॥
অনুখণ হিয়া মোর ভাদ-অনুরাগা।
ছাড়িতে কহিবে ধেনে হবেবধের ভাগী॥
ভাদ সজে রস-রজে অজ গেল পাগা।
মজিল আমার মন সোণায় সোহাগা।
শিবরাম দাসে বলে ভাজিল চাতুরী।
মরমে লাগিল ভাদ-ক্ষপের মাধুরী॥

120012081

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪১৫ ও প-র পুথির ১৪।২০ সংখ্যক পদ। ২। 'বিনে আমমি' প-র। ৩। 'ছাড়িতে কহিবে' স্থেল 'ছাড়াইতে চাৰে' প-র। ৪। 'শিবা সহচরী' প-র।

সিকুড়া।১

কি মোর এ ঘর ছুয়ারের কা**জ** লাজে কহিতে নারি। ইত্যাদি॥১৩৭॥৯৩৫॥

পাঠান্তর

১। এই পদটি ৮৪৭ সংখ্যক পদরপে ইতিপূর্ব্বে উদ্ধৃত হইয়াছে বলিয়া এ ফলে পুনরার সম্পূর্ণ
শিধিত হইল না; এই পদের অবশিষ্ঠ অংশ ও
পাঠান্তর উক্ত পদে দ্রন্তব্য।

অনুরাগঃ প্রকারান্তরং যথা।

শ্রীগৌরচন্দ্র। ধানশী।

নিরবধি মোর হেন লয় মনে
থেনে খেলে অনিমিবে।
নয়ন ভরিয়া গোরাজ-বদন
হেরিয়ে মন হরিষে ॥
আই আই কিয়ে সে রূপ-মাধুরী

নিরমিল কোন বিধি। নদীয়া-নাগরী সোহাগ-আ<mark>গরি</mark> পাইল রদের নিধি॥

অপদ্ধণ রূপ কেশর করিয়া ইচ্ছা বেং হিয়ায় লেপি। সোণার বরণ বসন পরিয়া

कोवन योवन (माँ शि

চুলের চাঁপারও ফুল হেন করি
আউলায়্যা করিয়ে দেখা।
লাজ ভয় ছাড়ি কোলেণ্ড উড়ি পড়ি
ছ বান্ত করিয়াণ পাখা॥
পিরিভি-মুরভি চিত্র বনাইয়া
কহিয়েণ মনের কথা।
বুকে বুকে স্থাধ মুধে মুধ ভরিণ
ছুচাই মনের বেপা গ্রাপ্তদান্ত ওচা

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪১৭ সংখ্যক পদ।
২। 'ইচ্ছা ধে' ফলে 'ইচ্ছার' ক; 'ইছারে' ঋ,
শ-র-সা। ৩। 'টাপা' ক, চ। ৪। 'লোকে'
ক, চ, প-র-সা। ৫। 'করিরে' ক, প-র-সা। ৬।
কৈছি ধে' ক; 'কহিএ' ঋ। १। 'বুকে' ইত্যাদি
ছলে 'ৰুকে বুকে মুধে মুধে মুধ ভরি' প-র-সা।

রদোদগারান্তে অমুরাগঃ।

তথা রাপ 1>

স্থি হে^২ কি পুছসি অনুভব মোয়। সোই পিরিতি অমু-রাগ বাখানিয়ে° অমুখণ নৌতুন⁸ হোয় 🕸 🛚 জনম অবধি হৈতে ও রূপ নেহারলুঁ নয়ন না তিরপিত ভেলা। লাখ লাখ যুগ হাম श्रित्र श्रित्र मूर्थ मूर्थ क्षम्य खूज्न नाहि राना ॥ বচন-অমিয়া-রস व्ययूथन भूनमू শ্রুতি-পথে পরশ না ভেলি। ক্ত মধু-বামিনি রভসে গোঙায়লুঁ मा व्यन् देकहम दक्ति ॥

কত বিদগধ জন রস জাপুনোদই
আমুভন কান্ত মা পেখি ।
কহ কবিবল্লভ হানয় জুড়াইতে
মিলয়ে কোটিমে একি ।
॥১৩৯॥৯৩৭

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৪১৬ সংখ্যক পদ।
২। 'সথি হে' হলে 'স্থি' ক, চ। ৩। 'বাধানি
এ' ধ; 'বাধানি' প-র-সা। ৪। 'নব নব' প-র-সা।
৫। 'হইতে' ধ, ঘ, প-র-সা। ৬। 'নেহারিহু'
ক, চ। ৭। 'অফুডব কাহু' হলে 'অফুডব কাহু'
ক, ধ; 'অফুডব কাহে' প-র-সা। ৮। 'পেখ'
ধ। ১। 'মিলারে কোটিমে' হলে 'লাথে না মিলারে'
প-র-সা। ১০ ৷ 'এক' ধ।

<u> টাকা</u>

> — >। "সহি হে" ইত্যাদি। হে স্থি।
আমাকে (প্রেমের) অস্থত্ব কি জিজ্ঞাসা করিতে হ
সেই প্রেমকেই অন্ত্রাগ বলিয়া ব্যাধ্যা করি—
(বাহা) অসুক্ষণ অধাৎ ক্ষণে ক্ষণে নৃত্র (রুণে
প্রতীত) হয়। তুলনা করুন;—

"নদাস্ভূত্মপি যঃ কুর্যার্যনবং প্রিয়ম্। নাগো ভবর্বনবঃ সোহমুরাগ ইতীর্যাতে ॥"

১২—১৫। "কত" ইত্যাদি। কত রসিক বাজি রস অর্থাৎ অস্থ্রাগকে প্রাশংসা করিরা থাকেন; (কিছ্ক) অস্থ্রাগের (প্রাক্ত্রত) অস্থুভব কাহাতেও দেখিতে পাই না। কবিবল্লভ করেন—জ্বদ্ম জুড়াই-বার জন্ত (প্রাণের মাস্ত্র্য) কোটির মধ্যে একটি পাওয়া বার।

मिश्राकात्र ।>

কাহারে কহিব কাসুর পিরিভি
তুমি সে বেদনী সই।
রসের ধাধসে ধসধস হিয়া
তেঞি সে ভোমারে কই॥

রসের সাগর ও ন্ব-নাগর আগর সকল গুণে। দে সৰু পিরিভি আদর আরতি यूतिया मतिव (मटन ॥ কত না ছলে° সে পিরিভি-বোলে কি না সে আকৃতি সাধে। মধুর ভাষিয়া মান নাশিয়া হাসিয়া মরম বাঁধে। করিয়া ভরিয়া সে মোরে কোলেতে वर्षान वर्षन किया। বিধু বিড়ন্বিয়া মধুর চুব্বিয়া পরাণ লইল পিয়া॥ কাঁচুয়া ফাঁড়িয়া সে রস লুটিয়া ভুলিয়া মধুপ জমু। ভর্মে কি কৈল কমল-কোরক গুণেতে ঘুণিত তমু। ও দিঠি-চাতুরী মুখের ১০ মাধুরী লহরী বহুয়ে আর। ঝুরিয়া মরুক এ স্থা শুনিয়া षांत्र Cगाविन्स **ছा**त ॥>৪०॥৯७७॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪১৯ সংখ্যক পদ।
২। 'বস' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'ছল' ক, খ,
চ। ৪। 'ভাথিরা' ক। ৫। 'মোর' ক। ৩।
'কাচুলী' ক; 'কাচুরা' খ, চ। ৭। 'ছটিরা' খ।
৮। 'অলিমা' ক; 'ভূলিরা' খ, চ। ৯। 'ইংল'
ক। ১০। 'রসের' প-র-সা। ১১। 'এ স্থ্

টাকা

১৩-১৬। "সে মোরে" ইত্যাবি। সে আমারে ক্রোড়ে ধারণ ও (আমার বারা) ক্রোড় পূর্ণ করিয়া, '(আমার) মূথে মূথ অর্পণ করিয়া, (আমার মূথে)

মধুব ভাবে চূখন করিয়া ও (চক্ত এই মুখের নিকট কি ছাব!—এই বলিয়া) চক্তকে ভিরস্কার করিয়া, আমার হৃদয় হরণ করিল।

পুনশ্চ প্রকারান্তরং যথা।

তিরোধা। ১

স্থি হে মন্দ প্রেম-পরিণামা। वत्रकर जीवन কয়ল পরাধীন নাহি উপকার এক ঠামা।ধ্রা। লগই নাহি পার**লু** ঝাঁপল**ু** কুপ ষাইতে পড়লছ ধাই। কছু না বিচারপুঁ তখনক লঘু গুরু অব পাছু• তরইতে চাই¹ ॥ প্রেম সম মাসুখ মধু সম বচন পহিল ভানন নাহিণ ভেলা। পর হাতে সোঁপলুঁ আপুন চতুরপন ক্ষদিসে গরব দূরে গেলা॥ ভানে হাম আছিলুঁ এত দিন আন অব বুঝলু অবগাহি। আপহি চাঁছলু ১২ আপন শ্লণ হাম माथ मियन अव कारि॥ শুন বর যুবতি ভণয়ে বিছাপতি চিতে নাহি গুণবি> আনে। की উ উপেখিয়ে প্রেমক কারণ জগ-জন কো নাহি জানে ॥১৪১॥৯৩৯॥ পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পৃথির ১৪২০ সংখ্যক পদ।
২। 'বরাক' প-র-সা। ৩। 'বাঁপরে' ক। ৪।
'না' ক। ৫। 'আইডে' ক, চ। ৬। 'পাছে'
প-র-সা। ৭। 'আই' প-র-সা। ৮। 'পহিল
জানন নাহি' ছলে 'পহিলহি জানস্কা' ক; 'পহি-

লি জানলুনা' च, চ। ৯। 'দিনে' ক, খ, च, চ।
১০। 'ভানে হাম' স্থলে 'ভালে হাম' চ। ১১।
'গুড' খ, প-রুসা। ১২। 'আপহি চাঁচলু' স্থলে
'আপে না চাহিল' প-রু-সা। ১৩। 'গুণবি' ক, খ,
ছ; 'ভাবিহ' প-রু-সা।

थाननी ।>

পিরিতিকি রীত কোন অবগাহইং সহজই বৃদ্ধিন সোই। যো রস ধাধসে धम धम व्यस्त्र व পাঁজরু জর জর হোই॥ সঞ্জনি তোহে কহি° কামুক নেহা। চীতে মঝু ডঠয়ে ষভ যত নীত° ভাবিতে আকুল দেহা ॥ ধ্রু ॥ পরবল হোই যোই ধনি জাবই প্রেম-বিলাসক আখে। দূরে রহুঁ লালস দরশনী তুলহ নিচয়ে মরণ অভিলাষে॥ মরমক বোল কহত হিয়া ডোলত का कर जनि भतिवास। বচনে হাম ভুললু গোবিম্মদাস তে । ভেল এভ পরমাদে। 1128412861

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ২০২ ও ১৪২১ সংখ্যক পদ। ২। 'অবগাহক' ক, খ, খ, চ; 'অবগাহব' সা-প ২০১ পুথি। ৩। 'পঞ্চর' খ, চ। ৪। 'ভোছে কহি' খলে 'ভাছে কি' ক, প-র-সা। ৫। 'নিভি নিভি' প-র-সা। ৬। 'জীবরে' ক, খ, খ, চ। ৭। 'পরিচর' সা-প ২০১ পুথি। ৮। 'কভহি' প-র-সা। ৯। 'ভোলরে' প-র-সা। ১০। 'ভাহে' ক, খ; 'ভেঞি' প-র-সা। कुड़ी १५

একে কুলবভী চিত্রের আর্ডি বিধি-বিভৃষিত কাজে। পিরিতি-কণ্টক শ্রাম স্থনাগর-ফুটিল হিয়ার মাঝে 🛭 छन छन मह মর্ম্ম ভোরেং কই পড়িলুঁ বিষম ফাঁদে। অমূল্য° রতন বেড়ি ফণিগণ पिथिय़ा शंजांग काटना । **अ**। গুরু গরবিত বোলে অবিরভ এ বড়ি বিষম বাধা। এ কুল ও কুল ছু কুল চাহিতে সংশয় পড়ল রাধা॥ ছাড়িলে ছাড়ান না যায় সে লোক পরাণ-অধিক বড়। জ্ঞানদাস কহে কাহার ডরে বা এড় ॥১৪৩॥৯৪১॥ পঠিত্র

ইহা প-র-সা পুলির ১৪২২ সংখ্যক পদ।
 শের্ম তোরে' ফ্লে 'মরম তোমারে' ক, খ, च;
 'মরম তোরে' প-র-সা। ৩। 'অসুগ' ক, च, চ।
 গ্রাড়িলে' ইত্যাদি ফ্লে 'ছাড়িলে ছাড়িল এলোক সে লোক' ক, খ, খ, ছ।

ৰিহগড়া।

কবছঁ রসিক সনে দরশ হোয় জনিং
দরশনে হোয় জনিং নেহ।
নেহ-বিছেদ' জনি কাছঁকে উপজয়ে
বিছেদে ধরয়ে জনি দেহ॥
সজনি সুরে কর ও পরসঙ্গ।
পহিলহি উপজিতে প্রেমক অহুর
দারুণ বিছি দিল ভক্ষ॥

ষবহুঁ দৈব দোষ উপজয়ে প্রেমহি
রিসিক সনে জনিশ হোয়।
কামু সে গোপত দেহ করি অব এক
সবহুঁ শিখায়ল শোয় ॥
হেন ঔখদ সথি কাহা নাহি পাইয়ে
জমু শি হাবন জরি যায়।
অসমপ্রস রস সহিতে না পারিয়ে
ইহু কবি শেখর গায় ॥১৪৪॥৯৪২॥
পাঠাত্ত

>। 'দরশ হোয়' স্থলে 'দরশন হোয়ে' ক।

২। 'ফানি' ক, ধ। ৩। 'ফারু' ক, চ। ৪।
'লেচবিচ্ছেদ' ক, চ। ৫। 'বিচ্ছেদে' ক, চ।

৬। দুরে' ক, ধ। ৭। 'প্রেম' ক। ৮। 'ফারু'
ক, চ। ৯। 'গোপতে' ক। ১•। 'শিধাঙলু'
ধ। ১১। 'জনি' দ।

টাকা

> -- ৪। "কবর্ছ" ইত্যাদি। কথনও বেন রসিক জনের সহিত সাক্ষাৎ হয় না; সাক্ষাৎ হইলেও বেন প্রণায় হয় না; প্রণায় (হইলেও) বেন বিচ্ছেদ মটে না; বিচ্ছেদ মটিলে যেন দেহ ধারণ করে না। ('একাবলী' অলমার)। তুলনা করুন,—

"কুলবতি কোই নয়নে জনি হেরই
হেরত পুন জনি কান।
কাস্থ হেরি জনি প্রেম বাঢ়ারই
প্রেম করই জনি মান॥'
--প্-ক-ত, ১৩৪ সংখ্যক পদ।

वर्रे ।>

একে নব পিরিভি আর্থিত অতিং তুরগম
সোঙ্করি সোঙ্করি থিণ দেহা।
তাহে গুরু-গঞ্জন হৃদয়-বিদারণ
জীবইতে ভেল সন্দেহাণ।

সজনি চুরে কর ও পরথাব। প্রেম-নাম সাহা শুনই না পায়ব সোই নগরে হাম যাব ॥ধ্রু॥ যাহে বিসু সপনে আন নাহি হেরিয়েণ অব গোহে বিহুরল সোই। হাম অতি দুখিনি সহজে একাকিনি আপন বলিতে নাহি কোই॥ তুহুঁ কুল চাহিতে**°** আকুণ অন্তর পাঁতরে পড়ি রহাঁ কেম। **धिक धिक की वरन** জ্ঞানদাস কহে যাকর পরবশ প্রেম ॥১৪৫॥৯৪৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পৃথির ১৪।১১৭ সংখ্যক পদ।

২। 'আর্তি অতি' ফলে 'আর অতি' ক; 'আর্তি'
ঝ, ল, চ। ৩। 'জীবইতে ভেল সন্দেহা' ফলে
'পরিজনক গেছা' প-র; 'পরিজন কণ্টক গেছা'
সা-প ২০১ পৃথি। ৪। 'প্রস্থাব' প-র; 'পরতাব'
সা৯প ২০১ পুথি। ৫। 'জানিলুঁ' প-র। ৬।
'গ্রিনা' ক; 'দোবিনি' চ। ৭। 'হেরইতে' প-র,
সা-প ২০১ পুথি। ৮। 'পাতরে' ক, ঘ; 'পছ্হি'
প-র।

षु हो ।)

ভালই সময় ছিল যখন শিশুমতি।
অন্তর অনল জ্বেং পিরিতি-কিরিতিও॥
বাহিরে অনল নহে জল দিবও তায়।
খ্যাম-প্রেমে ধকধকিও কি বলিব কায়ও॥
প্রাণ্যবিং তোমারে সে বলি।
হিয়ার ভিতরেখ খ্যাম পরাণ-পুতলী॥
ঘর হৈতে বাহির হইয়ে নিরস্তর ।
দেখিবারে সাধ করি নহি সভস্তর ॥
মন ধকধক১৩ করে দিবস রজনী১১।
লোক মাঝে না থাকিয়ে রহি একাকিনী॥

নিখাস ছাড়িতে মোর স্থ নাহি অবসর স্থ । কুষ্ণপরসাদ করে পরমাদ বড় স্থ ॥

128912881

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র পুলির ১৪।১২১ সংখ্যক পদ। 'ভূড়ী' ছলে 'শ্রীরাগ' প-র। ২। 'ইবে' প-র। ৩। 'লিরিভিক রীডি' ক, ৩, প-র। ৪। 'দিরে' প-র। ২। 'কি বলিব কার' ছলে 'কি করি উপায়' প-র। ৭। 'মনের মরম কথা' প-র। ৮। 'মাঝারে' প-র। ৯। 'ঘর হৈতে' ইত্যাদি পংক্তিছ্বের ছলে প-র পুথির পাঠ যথা,---

'দেখিবারে করি সাধ নহি সহস্কর।

হর কৈলুঁ বাহির বাহির কৈলুঁ হর॥'

১০। 'ধকণকি' ক; 'দকদকি' চ। ১১। 'মন'
ইত্যাদি পংক্তিহর প-র পূথিতে নাই। ২। 'মোরে'
প-র। ১০। 'অবসাদ' প-র। ১৪। 'কৃষ্ণ-প্রসাদ' ইত্যাদি হলে প-র পূথির পাঠ, যথা,—

'শিবানল কহে এই পিরিতি প্রমাদ।

পঠমপ্ৰরী।

একে কাল হৈল মোরে নহলি যৌবন।
আর কাল হৈল মোর বাস বৃদ্দাবন ॥
আর কাল হৈল মোরে কদন্তের তল।
আর কাল হৈল মোরে ব্যুনার জল॥
আর কাল হৈল মোরে ব্যুনার জল॥
আর কাল হৈল মোরে গিরি গোবর্দ্ধন॥
এত কাল সনে আমি থাকি একাকিনী।
এমন বেথিত নাহি শুনে যে কাহিনী॥
বিজ্ঞ চণ্ডীদাসে কহে না কহু এমন।
কারু কোন দোৰ নাই স্বেণ্ড এক জন ॥

128912841

পাঠান্তর

>। 'মোর' ক, ধ। ২। 'মোর' ক, ধ। ৩। 'মোর' ক, ধ। ৪। 'মোর' ক, ধ। ৫। 'শুনে বে' স্থলে 'শুনরে' ক, ধ। ৬। 'স্ব' ক, ধ।

ট্যকা

"মোর" ও "মোরে" শব্দের প্রয়োলে চঙীদান বে হন্দ্র পার্থক্য রক্ষা করিয়াছেন, অধিকাংশ লিপি-कत छेश बक्का ना कत्रात्र छ छोनाटनत मकल मश्यदन-গুলিতেই বটতলার মুদ্রিত পুথির অমুকরণে 'মোরে' শব্দের স্থলে সর্বাত্র 'মোর' পাঠ গৃথীত হইয়াছে। 'মোর' শক্টি সম্বন্ধে ষ্ঠী বিভক্তির প্র ; 'মোরে' नक्षि हुव्यी विज्ञालिक त भार ; उदाव वर्थ- 'आमात পক্ষে'। বলা বাহুল্য যে, 'কদ্পের তল', 'ষ্মুনার **জল' ও** 'গিরি-গোবর্দ্ধন' – এই সকল পদার্থে শ্ৰীয়াধার কোন স্বামিত্বসম্বন্ধ নাই: স্কুতরাং দেই দেই ছলে 'মোর কদম্বের তক' ইত্যাদি-রূপ প্রয়োগ সমীচীন ও বৈশিষ্ট্যস্তক হইলাছে। 'নহলি বৌৰন' অর্থাৎ 'নবীন যৌবন' বস্তুটতে শীরাধার স্থামিত্ব-সম্বন্ধ থাকিলেও তাঁধার মনে ধৌবনাভিমান নাই এবং তিনি উহাকে বাঞ্নীয়ও মনে করেন না; স্তরাং দেই স্থলেও 'মোর' অপেকা 'মোরে' প্রয়োগই অসকত হইরাছে। শ্রীরাধার অক-ধৃত দুর্ভমান 'রভন-ভূষণ'ঞ্লি সুধকর না হইলেও উহাদিগের স্থামিত অস্বীকার করার ও শুকুজনের গলনার ভবে উহা পরিত্যাগ করার উপার নাই ৰলিয়াই 'মোর রতন-ভূষণ' বলা হইরাছে।

ভাটিরারী।

একে দেখি অভি চিভের আরভি
পহিলে না ছিল এভ।
ংরে গুরুজন- গঞ্চনা না মানিং
নিভি নিবারিব কভঃ

সই ঠেকিলুঁ বিষম ফাঁদে।

কামুর পিরিতি তিলেক বিঃতিং

হইলেণ পরাণ কাঁদে॥

সহকে মধ্ব শ্যাংমর মুরতি

স্চকে মধুর শূর্টেমর মুর'ও পিরিভি বুঝিনে কে। দেসৰ আফর ভাদর-বাদর•

দে সৰ আমাৰ কেমনে ধ্বিবং দে॥

চিত্তের বিচাব উচিত্ত• কছিত্তে

জগত ভিয়ো লাজ।

জানদাস করে ইহার অধিক রসিক গোশত কা**জ ॥**১৪-॥১৪৮॥

পাঠাসর

১। মানে'ক। ২। 'বিবিভি' ব,চ।৩। 'ডিলেক'ক চ ৪। 'বাদর ভাদর' ব, ব,চ। ৫০ 'ধবিবে'ক,ব। ৬। 'উদিভ'ক,ব।

क्ष है।

ষর হেন নছে মোর ষরের বদতি।
বিষ হেন লাগে মোরে পাতর পিরিতি॥
বিরলে ননদা মোরে যতেক বুঝার।
কামুর বিরিতি বিনে আন নাহি ভার॥
সার মোর নব অমুরাণে।
পারবল জাউ না উবরে> পুণভাগে॥
আঁখেং বৈয়া আঁখেও নতেং সদা রহেং চিতে
সে রস বিরসং নহে ভাজিতে ঘূমিতে॥
এক কথা লাখ হেন মনে বাসি ধান্দি।
ভিলে কভবার দেখোঁ স্পন-সমাধি॥
ভামদাস কহে ভাল ভাবে পাড্যাছ।
মনের মরম কথা কারে জানি পুছ॥

পাঠাতর ১। 'উরবে' ব। ২-০। আবেগ ব, ৪।

188416841

श्वादश क, ह। । श्वादश व। । श्वीद्रश कः ।

তথা বাগ।

कीय ना कीय ना त्राहे की यात्र नहीं मूं (क) এ ছার পরাণ কার তরে। এত পরমাদে ১ই রাধার মনে আন নাই প্রাণ কাঁদে বিচেছদের ভরে ॥ বস্থুবে বিদরে হিয়া এका निभवन बहेशा শুভিয়া রহিলু মুঞি দিনে। স্বপনে বন্ধুব সনে মনের কথাটি কই নন্ধী দাঁডাঞা ভাষা শুনে ॥ ঘুমের আলিসে ৪টি আঁখি মেলিডে নারি কালা-রূপ যাই। ভাহাঁ দেখি। আন বোল বলিতে বালা বন্ধুয়া বলিয়া ডাকিং প্রতি বোলে তারা করে সাখী ॥ কানা গলারণ কাঁঠি কালা বিলাসের হার কালা স্থভায় নিতি নিতি গাঁথি। লোচন বলয়ে অমু-त्रारगत वाला हे या है वक्तत्र शुर्वित लागि दविष ॥১৫०१৯८৮॥

পাঠান্তর

স্থি মোর নব অমুরাণে।

১। 'জীব না' ইত্যাদি পংক্তিছর হলে ক ও
পরবশ জাউ না উবরে> পুণ ভাগে ॥

চ পুথির পাঠ বথা—'জীব না জীব না সই এ ছার
আধিং বৈয়া আঁথেও নহেঃ সদা রহেং চিতে।
পরাণ কার তরে।' ২। 'জান' ইত্যাদি ছলে ক
সে রস বিরস্প নহে ফাজিতে ছুমিতে॥

ওক কথা লাখ বেন মনে বাসি ধানিদ।
বিরা ডাকি'। ৩। 'গুণের' ছ; 'গলের' চ।

ভখা রাপ।

পাসবিতে শরির হোয়ে স্বাধান।
কহিতে না নাগর বুকই স্বধান ।
কহনে না পারিয়ে সহনে না বার।
রচহ স্কনি স্বব কি করি উপার ।

কোন বিহি নিরমিল এই পুন লেই।
কাহে কুলবতি করি গড়ল মোর দেই ॥
কাম করে ধরিয়া সে করায় বাহার।
রাখয়ে মন্দিরে এ কুল-আচার ॥
রহই গনা পারিয়ে চলই না পারি।
ঘন ফিরিদ বৈছে পিঞ্জর মাহা শারি॥
এতত্ত্ব বিপদে কাহে জীবয়ে দেই।
ভেণয়ে বিতাপতি বিষম এ নেই॥১৫১॥১৪৯॥

পাঠাম্বর

>। 'হয়' ক। ২। 'কছিতে' ইত্যাদি পংক্তির
ছলে 'কছিতে না লয় অব বুঝাই অবধান' ক;
'কছিতে না লয়ৰ বুঝাই অবধান' চ। ৩। 'না
পারিয়ে' ছলে 'নারিয়ে' ঘ। ৪। 'বলহ' ক, খ।
৫। 'করয়ে' ক। ৬। 'কুলাচার' ক। ৭।
'সহই' ক, চ। ৮। 'ফিয়ে' ক। ৯। 'বৈছন'
ক, খ।

ততঃ দখ্যক্তিঃ।

শুন শুন স্করি কর অবধান।
নাহ রসিকবর বিদগধ জান ॥
কাহে তুহুঁ হৃদয়ে করসি অমুতাপ।
অবহুঁ মিলব সোই স্পুরুষ আপ ॥
উদভট প্রেম করসি অমুরাগ ।
নিতি নিতি ঐছন ইয়ে মাহা জাগ।
বিভাপতি কহ বান্ধহ পেহ।
স্পুরুষ কবছ না তেজয়ে নেই॥

1100011206011

পাঠান্তর

১। 'অञ्च्छाপ' ক, ধা ২। 'নৌজুন' ধ। ৩। 'বাছই' ক; 'বাছব' ধ। পুনশ্চ আক্ষেপানুরাগঃ।

হার ।

হার শুস্তাহ্য আলো সই ভারার কামুর রাত।

হার্সাইলে সব মোর গুরু গরবিত ॥

স্থার সামিলে পথে আসিয়েং চলিয়া।

বাহু প্রারিয়া রহে পথ আগুলিয়া ॥

যতেক নিষেধি তায় বিগুণ উথলে।

লোকে বলে এমন কেনে সে বোল নহিলে॥
পথে যাইতে লোকণ সব কহে আমার কথা।

সদাই আমার নাম লয় যথা তথা ॥

রসাভাসে বে বোল বোলে শুস্তাও লাজে মরি।
পাপিয়া পাড়ার লোক করে ঠারাঠারি ॥

এত দিন ছিল মোর অবেকত কাজ।

এবে সে বেকত হৈল গোকুল-সমাজ॥

বিরলে পাইয়া তাহা সোঙ্রির কহিয়।

যতুনাথ দাস কহে সময় বুঝাইয়॥১৫৩।৯৫১।

পাঠান্তর

১। 'গুনেছ'ক। ২। 'আসিতে' ক, ধ, চ। ৩। 'লোকে' ক, চ। ৪। 'গুনে' ক। টীকা

৫— । "যতেক" ইত্যাদি । (প্রীক্ষের
ধৃষ্টতা) যত নিষেধ করি, তাহাতে (ক্ষান্ত না হইয়)
দিশুণ বর্দ্ধিত হয়। (তাহা দেখিয়া) লোকে বলে
যে, সেই কথা অর্থাং প্রীক্ষয়ের সহিত প্রীরাধার
শুপ্ত প্রণরের কথা (প্রক্রত) না হইলে—এরণ
হইবে কেন ? (শুপ্ত প্রণর না থাকিলে কোন
কুলালনা নীরবে পর-পুক্ষবের এইরূপ ধৃষ্টতা সম্ব
করে না)।

ভূড়ী ৷> সই কেমনে দেখাব মুধ । গোপত পিরিতি বেকত কংগ্রে এ বড়ি মরুমে মুধ ॥ ঋ ॥

126612601

করে কোন জনা এত টাঠপনা বুঝিলং তাখার মতি। সকলে হাসয়ে মোর অপযশে ইথে কি পাইবে সিধি⁹। সিনানে যাইতে আর এক দিন আঁচবে ধরল মোর। নাগরী আছিল তথা ছুই চারি হাসিয়া⁸ হইল ভোর ৷ অবশ হইলু পরশ পাইয়া ইহাতে করিব কি। শেখর কহে কি করিবে লোকে তোমার নিছনি দি ॥১৫৪॥৯৫২॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পুথির ১৪।৭০ সংখ্যক পদ।
২। 'বুঝিফু' ক, চ। ৩। 'ইথে' ইত্যাদি স্থলে
'ইথে পাবে কোন সিধি' প-র। ৪। 'দেথিয়া'
প-র। ৫। 'তোমার নিছনি' স্থলে 'তোমারে
নিছিয়া' প-র।

সিকুড়া ।>

না জানি তাহার এমত বেভার পিরিতি যাহার সনে। গোপত করিয়া কেনে না রাখিল বেকত করিল কেনে ॥ मत्नद्र भद्रभ क्रानित्व (क । মনের মরম সেই সে জানয়ে u त्राम मिलन (य ॥ क्ष ॥ চোরের মায়েং যেন পোয়ের লাগিয়া ফুকরি কাঁদিতে নারে। পিরিভি করিলে কুলবভী হৈয়া এমতি সঙ্কট তারে 🛚 ক্বে পরতীত**° কে আছে** বেথিত এ ছুখ कहित कारत।

হয় হুখভাগী পাইয়ে তার লাগি
তবে সে কহিয়ে তারে ॥
পরে কি জানয়ে পরের বেদন
সতর গাণন কাজে।
চণ্ডাদাসে কহে বনের ভিতরে
তাহে কি বাদন সাজে॥

পাঠান্তর

১। ইং প-র পুথির ১৪।৭১ সংখ্যক পদ।
২। 'মা'ক, ঝ, চ, প-র। ৩। 'পরহিত'ক,
চ; 'পরতিত' ঘ। ৪। 'পাই' প-র। ৫। 'সছর'
চ। ৬। 'তাহে কি' বলে 'তাহা কি' ঝ; 'তবে
দে' প-র।

श्रीवांत्र ।>

সই কাহারে করিব রোষ। না জানি না দেখি **प्रता दरेलू** সে পুনি আপন দোষ॥ ধ্ৰা॥ পেলাই থুং পা বাভাস বুঝিয়া বাঢ়াই বুঝিয়া থেহ। মানুষ বুঝিয়া কথা যে**° কহিয়ে** त्रिक वृक्षिया त्नर ॥ মড়ক বুঝিয়া ধরিয়ে ডাল ছায়ায় বুঝিয়া মাথা। গুণ প্রকাশিয়ে° গাংক বুঝিয়া বেথিত বুঝিয়া বেখা ॥ করিলুঁ পিরিতি অবিচারে সই (कम देक**नूँ** (श्न कारक । ধীর হ স্থানি প্রেমদাস কছে কহিলে পাইবা লাজে ।১৫৬।৯৫৪। পাঠান্তর ১। ইহা প-র পুৰির ১৪।৭২ সংখ্যক পদ। २। 'लनारे थू' चरन 'स्नारेजू' ४; 'स्नारे थू'

চ , কেলাইড' প-র। ৩। সে'ক, খ, ব, চ। ৪। ছোর সে'খ। ৫। পিরকাশিক। ৬। কাজ' ক, চ, প-র। ৭। লোজ'ক, চ, প-র।

৪—१। "বাতাস" ইত্যাদি। (আমরা)
বাতাস ব্ৰিয়া অর্থাৎ কোন্ দিক্ হইতে বায়ু
প্রবাহিত হইতেছে, তাহা হির করিয়া পুপু ফেলি;
(.লডুবা নিজের পুপু নিজের গায়ে উড়িয়া পড়িতে
পারে)। সেই প্রকার (পাদ-বিক্লেপ-স্থলের)
হিরতা ব্রিয়া পা বাড়াই; (নডুবা পা থাদে পড়িয়া
ভর্ম হইতে পারে)। (সেইরূপ) মায়ুর ব্রিয়া
অর্থাৎ ম্বজন কি কুজন, তাহা হির করিয়া কথা
বলি; (নডুবা সেই কথার বিপদ্ ঘটিতে পারে)।
(সেইরূপ) রসিক ব্রিয়া প্রণম্ব করি, (কেন না,
আরসিকের সঙ্গে প্রণম্ব করিলে সায়া জীবন ক্লেশ
পাইতে হয়)।

ছক্ল ২১। "মড়ক" ইত্যাদি। মড়ক অর্থাৎ
কীটাদি-ক্ষনিত জীণতা বুঝিরা (পাছে চড়িতে
হইলে) ডাল অবলম্বন করি; ছারা দেখিরা মাধা
রাখি; (অংশের উপযুক্ত) গ্রাহক বুঝিরা গুল প্রকাশ
করি (নজুবা বেরার বনে সুক্তা ছড়ান হর); এবং
(ব্যধার) ব্যধী বুঝিরা (তাঁহার নিকট) ব্যধা
প্রকাশ করি (নজুবা অরণ্যে রোনন করা হর)।

তথা নাগ।

বালার উপর বালা সই

বালার উপর বালা ।

কলকে বাই পথ না পাই

বসন টানে কালা ॥

সরম কর্যা ভরম কর্যা

বসন দিলাম মাথে।

সকল স্থীর মাঝে কালা

ধরে আমার হাতে ॥

রস ক্রিতে জানে যদি

ভবে সে মনের স্থা
।

গোপত কথা নেকত করেং

এই সে বড় ছ্খ।
চলমল্যাকে চতুব গলি

হেটমুড়াকে জপু।
রস জানিলেং রসিক বলি
নৈলে বলিং ভেপু।
লোচন বলে আলো দিদি
ইঙা বল্লিং কেনে।
কালার সমানং রসিক নাই
এ ভিন ভূবনে ১১৫৭॥১৫৫।
পাঠাক্সব

১। 'জ্বানার' ইত্যাদি স্থলে 'কি হৈল কি হৈল সই' ক, চ। ২। 'জ্লকে' ইত্যাদি স্থলে 'পথে যাইতে দেখা চইলে' ক, চ। ৩। 'সহম করা' ইত্যাদি স্থলে 'ভ্রম কৈরা সংম কৈরা' ক। ৪। রিস করিতে' ইত্যাদি স্থলে 'কালার সনে বলের কথার মনে পাইমু স্থা' ক, চ। ৫। 'হৈল' ক। ৬। 'বুকিলে' ক, চ। ৭। 'নৈলে বলি' স্থলে 'না বুকিলে' ক, চ। ৮। 'হলা বল্লি' স্থলে 'গালি দিলা' ক। ৯। 'কালার সমান' স্থলে 'কালা বই'ক।

নিকা

১০—১৪। "চলমল্যাকে" ইত্যানি। (মানরা)
চলমল্যা অর্থাৎ ক্ষিপ্রকারী লোককে চতুর ও অবনতমত্তক ব্যক্তিকে জ্বলীল বলিরা থাকি; সেইরুণ
(প্রেম)-রুদ জানিলে রুদিক বলিরা থাকি; বি
(প্রেম)-রুদ না জানে, তাহা হইলে তাহাকে তেপু
অর্থাৎ শক্তকারী ব্রমাত্র বলিরা থাকি।

नजाडी १५

কেনে কৈলুঁ পিরিভিন সাধ। পিরিভি-অঙ্ক হৈতে বভ ছখ পাইলুঁ চিডে শুনিলে গণিবে প্রমান । প্রা মুঞি যদি জানিছুঁ ও এড তবে কেন হব রড
না করিছুঁ হন সব কাজ।
ভূলিলুঁ পরের বোলে কুলটা হইলুঁ কুলে
ভগত ভরিয়া রৈল লাজ ॥
বখন পিরিভি কৈল আনি চাঁদ হাতে দিল
পুন ভাবে না পাই দেখিতে।
কি করিতে কি না করি কুরিয়া কুরিয়া মরি
ভ্রমণেষে প্রাণ চাহে নিতে॥
পিরিভি জাঁখন তিন যাহার হৃদয়ে চিন
কিবা ভার লাজ কুল ভয়।
বহে ঘিজ চণ্ডীদাস যে করে পিরিভি-আশ
ভার বুঝি এই দশা হয় ৪১৫৮।৯:৬॥

পাঠাস্তর

১। ইছা পার পুথির ১৪। ৭৭ সংখ্যক পদ। ২-৩। 'আ'নেডু' ক, চ। ৪। 'বা' খ। ৫। 'স্ব' ক, খ, ঘ, চ।

পুন•চ শ্রীকৃষ্ণং প্রতি আক্রেপঃ।

थानक ।>

সৰি আর কি কহিতে ভবং। সব েয়াগিলু যাহার লাগিয়া **(म ८क्टन शंमध्य भव ॥** বে জন না জানে স্থান কুজন ভাহারে কৃথিব কি। অন্তর বাহির त्व कन कान्द्र তাহারে পরাণ দি ॥ কহিতে শুনিডে কামুর পিরিভি পরাণ কাটিয়া উঠে। मध-विश्वत করাত বেমন আগিতে॰ বাইতে কাটে।

126919671

পঠিক্র

্ ১। ইহা পার পুথির ১৪:৭৭ সংখ্যক পদ।
২। 'আর কি' ইত্যাদি ছলে 'কহিতে বাসিরে ডর'
পার। ৩। 'বুরো' পার। ৪। 'আহর বাহির'
ছলে মনের বেদন' পার। ৫। 'আসিতে' ছলে
'আইতে' পার।

বিশ্বড়া।

স্বামি-তরজন গুহে গুরুজন या लागि ना मिन् कारन। সে জন আমারে এখন কি লাগি না চাহে নয়ান-কোণে। भड़े भविषे वृत्रम् कारण। माधित्व वार विनि चलद्रांट्य হুগত ভরিল লাজে। গ্রু ॥ অাদর আরভি সে সৰু পিৰিছি भारे পড়িছে মনে। এমন কানিয়া 6প্রম-পরাভ **।** এখন যায় পরাণে আগু অমুসরে महरक व्यवता ना नि कि रय शहर । সময় বুঝিতে छाननात्र (वार्वर (क कन এमन আছে ॥> ७०॥२६४॥ পাঠান্তর ১। 'भवरव' क, छ। २। 'कर्ल्' क।

अवात ।>

বাহার লাগিয়া কৈলুঁ কুলের লাঞ্না।
কত না সহিবে দেহে গুরুর পঞ্চনা।
বার লাগি ছাড়িলুঁ গৃহের যত স্থান।
না জানি কি লাগি এবে সে জনা বিমুখ।
সঞ্জনি নিবেদলুঁ তারে।
কলম্ব রহল সব গোকুল নগরে। এদ।

ভিলেকে সে ভেয়াগিলুঁ পতি থুর-ধার। প্রবেশ না শুনলুঁ ধরম-বিচার। অবলা অথল-জাতি ভুলে পর বোলে। অনেক সাধের দীপ নিভাইলং

मार्थक ट्यल

ছুখের উপরে ছুখ পরিজন-বোল।
সতীর সমাজে দাঁড়াইতে হৈলুঁ তোর॥
জ্ঞানদাস করে ইপে কেমন উপায়।
প্রেম-পরাভব ছুখ সহনে না যায়॥

まならば ない こうしょう

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৮০ সংখ্যক পদ।

২। 'গৃহের বত সুথ' ফ্লে 'সকল গৃহ্মথ' প-র।

৩। 'সক্ষনি নিবেদিলু' ফ্লে 'আলো সই নিবেদিরে'
প-র। ৪। 'তানিলাম' প-র। ৫। 'নিডে' চ;
'নিভাল্য' প-র। ৬। 'সাঁঝ' চ; 'সাঁফ' ক।

৭। 'হইলে' প-র।

यहरे ।)

ভালই আছিলুঁ আন-মনে।
প্রমাদ পড়িলং সেই খণে ।
কেনে শুনাইলা তার গুণ।
উপলিল আগুনের খুন ॥
নিশি দিশি যার গুণ গাই।
তারণ কেনে এতং নিঠুরাই॥
যার লাগি তেয়াগিলুঁ যর।
সে কেনে ভাবয়ে ভিন পর॥
যার লাগি কুলে দিলুঁ ছাই।
তারে কেনে দেখিতে না পাই॥
সভীর সমাজে হৈলুঁ মন্দ।
ভানদাস শুনি রছ শন্দ ॥১৬২॥১৬০॥
গাঠাতঃ
১। ইহা পান পুথির ১০৮১ সংখ্যক পদ।

২। 'পাড়িলে' প-র। ৩। 'সে' ক, ধ, ব, চ। ৪। 'এডেক' ক, ধ, ব, চ।

विद्यांत्र ।

বন্ধুর লাগিয়া সব তেরাগিলুঁ
লোকে অপ্যশ কয়।
এ ধন আমার লয় অত্য জন
ইহা কি পরাণে সয়॥
সই কত না রাখিব হিয়া।

আমার বন্ধুয়া আমন বাড়ী যায় আমারি স্বাক্তিনা দিয়া॥

বে দিন দেখিব আপন নয়ানে আন জন সঞ্জে কথা।

কেশ ছিঁড়ি গেলিং বেশ দূর করি ভাঞিব আপন মাধা।

বন্ধুর হিয়া এমন করিলে নাজানি সেজন কে।

আমার পরাণ করিছে যেমন এমনি° হউক সে॥

জ্ঞানদাস কছে শুনহ শুন্দরি মনে না ভাবিহ আন।

তুহঁ সে খ্যামের সরবস ধন খ্যাম সে ভোহারি প্রাণ ।

1/961109/1

পাঠান্তর

> । 'আমার'ক,চ,। ২। 'ফেণি'ক,চ। ৩। 'এমন'ক,চ।ঃ। 'গুন হে'ক।

थानश्च ।

এ শধি হাম সে কুলবভি রামা। জনেক বতন করি প্রেম হাপারপূর্ব

বেৰত করল ওই খানা ৷ এ ॥

বিহি কৈল কিবা বিভিগ আছিলু মালভি ভৈ গেল কেড কি ফুলেই। ভ্ৰমর নাহি আওত কণ্টক লাগি ছুবে° রহি ছুছ মন ঝুরে॰ ॥ যব তুত্ঁ দরশন रिनरव मिलाग्रल কোন না কহে কত বোল। অন্তবে বৈদগধি-মাণিক ছাপায়ল ছুত্ ভেল পস্ক চোর॥ দখিণ নয়ন করি রঞ্জব কিয়েও ছরি বাম নয়ন করি আধা। গোপত পিরিতি খানি ८कान हेटोयल मञ् मत्न लागल थाना । কাঁদি গোঙায়ব কান্দিব রে কভ কাহারে করিব বিশোয়াস। धिक त्रष्टे कीवरन জ্ঞানদাস কছ যো করে পর-পতিআশ> ॥ 1156818651

পঠিস্কির

১। 'কিবারিভি' ছলে 'বিপরীতি' ক; 'বিপ-রিভ' চ। ২। 'ফুলে' ক, খ। ৩। 'দুরে' ক, খ। ৪। 'ঝুরে' ক, খ। ৫। 'বব ছহু' ছলে 'ববহু' খ। ৬। 'কি' খ। ৭। 'কাফু' ক, খ। ৮। 'ধারা' খ। ৯। 'রহ' ক, চ। ১০। 'প্রভিমাশ' ক।

তিরোধা ধানশী।>

প্রেমক গুণ্ কহই সব কোই।
বা প্রেমে কুলবতি কুলটা হোই॥
হাম বদি জানিয়ে পিরিতি জুরস্ত।
তব কিয়ে বায়ব পাপক অস্ত॥
তব সব বিষসম লাগয়ে মোই।
হরি হরি পিরিতি কর্ইণ জনি কোই॥

বিভাপতি কহ শুন বরনারি। পানি পিয়ে পিছে॰ জাতি বিচারি॥

1766112601

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৪।৮৩ সংখ্যক পদ।

২। 'গুণ' ক, খ, চ, প-র। ৩। 'কহব' ক,
খ, ঘ, চ। ৪। 'বো' ইডাদি ছলে 'বাহে কুলবভি
জন' প-র। ৫। 'বিষমর' ক, খ; 'বিষম' প-র।
৬। 'না করে' ক, খ, ঘ, চ। ৭। 'পাছে' ক।

সিশ্বড়া ।১

পুরুখ-রতন হেরি মন ভেল ভোর।
তিল-আধা স্থ লাগি সুধ নাহি ওর ॥
বড় অভিলাবে ভজিলুঁ বর নাই।
দৈবে বিমুখ ভেল কি কহব কাই ॥
দরশন তুলহ তুলহ নব নেই।
বিরহ-বিকল মন জিবন সম্দেই ॥
অপরুপ রূপ মধুর রস-লালা।
সকল নাগরিগণ-ক্ষণক শিলা ॥
অস্তিত কাজ সহজে মঝু ভেলা।
সোজরি সো তুমু নব বোবন গেলা॥
মরমক দুখ কহিতে হয় লাজ।
দারুণ দৈব কয়ল কোন কাজ॥
রসিক-শিরোমণি নাগর কান।
রস স্কিতে কবিরঞ্জন ভাগ॥১৬৬১৯৬৪॥

পাঠাস্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪৯৬ ও প-র পুথির ১৪।৮৪ সংখ্যক পদ। ২। 'এক' প-র-সা, প-র। ৩। 'নাহি' ক। ৪। 'সকল' ইত্যাদি স্থলে প-র-সা পুথির পাঠ বথা—'নাগরি নাগর ঋণ নিক্বণ শিলা'। ৫। 'নহ' শব্দ ক, খ পুথিতে নাই। ৬। 'হুগ' ক, খ, চ, গ-র-সা, প-র। ৭। 'ইক্তি' ক; 'সলীত' চ; 'প্রসংস্কিত' প-র। छवा जान ।>

কত গুরু-গঞ্চন ত্রজন-বোল।
মনে কছুং না গণল ও° বলে ভোলে।
কুলজা-রাত ছোড়লুঁ যছ লাগি।
সো অব বিছুলে হামা'র অভাগি।
সোজর সোও র স্থি কহবি মুবারি।
ফুপুরুষ পরিহরে কি তুষণ বিচারি এজা।
বো পুন সহচরি হোয় মহিমান।
কর্মে পিশুন-বচনে অধান।
নারি অবলা হাম কি বোলব মান।
তুকুঁ রসনান্দ-গুলক নিধানণ।
মধুর বচন কহি কামুকেণ বুরাই।
এই কর দোখ রোখ অবলাই।
ভুলুঁ বর চতু'র হাম কিয়ে জান।
ভুলুয়ে বিভাপতি ইহ রস গান।

126912541

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুৰির ১৪।৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'কিছু' ক; 'কছু' প-র। ৩। 'পিরা' প-র।
৪। 'ভোর' খ। ৫। 'কি ছখ' হলে 'ছখ' ক;
'রুখ' খ, খ, চ। সাহিত্য-পরিবদের সংখ্রপে 'দোখ'
পাঠ গুহীত হইরাছে; কিব ঐ পাঠ কোন হত্তশিখিক পুৰিতে হুট হইল না। প্রশ্নিনার দোব
ক্ষমা করাই অপুক্ষের কর্ত্বব্য; স্মৃত্যাং 'অপুক্ষধ
পরিহরে দোখ বিচারি' এইরপ বাক্য নারিকার
মুখে তেমন সক্ষত বোধ হর না। ৩। 'রগনানন্ম'
ইত্যাদি হলে 'রস আনন স্ব ভ্রথান' প-র। ৭।
'পিরাকে' প-র।

ी का

৫—৬। "নোঙরি" ইত্যাদি। হে সবি । জুবি
শ্বরণ করিবা ঐককদে কহিবে—জুপুক্র কি ছংধ
ভাবিরা (প্রণত্তিনীকে) পরিভ্যাপ করে । (পর্বাৎ
বৃদ্ধি প্রণত্তিনীর রূপ-গুণ না থাকার, ভারার সহিভ

সন্ধিনন স্থ-জনক না হইরা ছঃথের কারণ হইরা থাকে, তথাপি শ্রেট নারকের এরপ ধর্ম নহে বে, সেই চঃশ মনে করিরা পদান্রিতা নারিকাকে পরি-ভাগে করেন।)

*—৮। "বো" ইত্যাদি। কে সহংবি। ধে বাক্তি বুজিমান্ হন, (তিনি) খলের বাক্যে অবধান করেন অথাৎ ঐ বাকা সভা, কি মিপ্যা, ভাষা বিহার করিয়া দেখেন। (পুত্রাং খল বাক্তি আঘার কোন গুণাম করিয়া খাকেলে, সেক্ত্রেও আঘি অবিহারে পরিত্যালা। নহি)।

৯--> । "নাবি" ইত্যাদি। আমি অবলা নারী আবার কি বলেব পু (থামার প্রাণেশর) ভূমি রদনার আনন্দ-জনক গুণের আকর । (অর্থাং ভূমি নিজ শুণে আমার সকল অপতাধ মার্জনা করিবে)।

১১—১২। "মধুব" ইতাদি। (ছে স্থি!)
তুমি মধুব বাগ বাগর। একজনকে ব্রাইনে বে, তুমি
(প্রীরাধাব) দোব ও তোমার কোপের স্পতিঅস্পতিব বিচার করিয়া, (বদি কর্ত্তব্য হয়), এইক্লা (আচরণ) কর।

वानने ।>

গুরুত্বন পরিজন Cकर नाहि गक्षरय (क॰ नाहि कद्राय विशान। আপন অপ্যণ ষণ করি মানলু श्राप्त्र ना खारलू व जान । স্থি হে কামুকে কহবি সন্থাদ। এত দিন প্রেম গোণত করি রাধলু व्यव एकत मूर्वा भव्याम । अ। 1919 লাগি প্রাণ তৃণহঁ করি মানলুঁ কি করব কুলবভি-মাভি। कर कविएमध्य অমুভাবে জানপু পিরিভিক বৈছন্দ ভাতি !

120012001

পাঠান্তর

১। ইছা প-র পুথির ১৪।৮৬ সংখ্যক পদ।
২-০। 'কো' প-র। ৪। 'জব্যশ' খ, ঘ। ৫।
'ভাবই' খ, ঘ, চ। ৬। 'অব' ইত্যাদি হলে 'অব্ছ'
ভেল' খ, ঘ। ৭। 'কোম' প-র। ৮। 'কছন'
প-র।

यहरे ।)

কোতৃকে ছত্ত কুল- কমল তেয়াগ**লু** বো পদ-পক্ত আশ।

পাছক মীন দীন জমু লাগল
না গুণল মরণ-তরাস ॥
সক্ষনী নিকরণ-হাদয় মুরারি।
অব ঘর ঘাইতে ঠাম না পাইয়ে

পরিজন দেওই গারি॥

গগনক চাল্দ পাণিতলে বারলুঁ সাগবে নগর-বেভার।

অমিয়া-ঘট বলি হাথ পসার**লুঁ** পায়লুঁ গরলক ধার ॥১৬৯॥৯৬৭॥

পাঠান্তর

>। এই পদটি ক, ৰ ও চ পুৰিতে নাই; ঘ পুৰি হইতে পদ-সংখ্যার পুরণার্থ উদ্ধৃত হইল।

वैदान 15

সঞ্চনিং কাসুকে কহবি বুঝায়।
বাণিয়া° প্রেম-বিজঃ অঙ্কুরে মোড়লিং
বাড়বং কোন উপায়ং॥
তৈল-বিন্দু বৈছে পানি প্রসারলণ
তৈছন ভুয়া অসুরাগে।
সিকভা জল বৈছে খণহি শুখারল
এইন ভোহারি সোহাগে॥
কুল-কামিনি ছিলুঁ কুলটা ভৈ গেলুঁও

আপন করে হাম
কানুসেং প্রেম বাঢ়াই০০॥

চোর-রমণি জনুফ মনে মনে রোয়ই
অধরে বদন ছাপাই০০।

দৌপক লোভে শলভ জনু ধায়ল০০

সো ফল ভুজইতে চাই॥
ভণয়ে বিছাপতি ইহ কলিযুগ-রিভি

চিন্তা না কর কোই।
আপন করম-দোষ আপহি ভুঞ্জই

যো জন পরবশ হোই ১০০॥৯৬৮॥

পাঠাস্তর

১। ইছা প-র পুথির ১৪।৮৮ ও ৪•।৯১ সংখ্যক পদ। প-র পুথিতে নিম্নালিখিত অভিরিক্ত কলিছারা এই পদটি আরম্ভ করা হইয়াছে; যথা,—

অগোর চন্দন তহু অহুলেপন
কো কছে শীতল চন্দা।
পিশ্প বিনে সোপুন আনল বরিধারে
বিপদে চিনিয়ে ভাল মন্দা॥

২। 'গুন সজনি' প-র। ৩. 'রোনি' প-র। ৪।
'প্রেমের বাজ' ক, চ; 'প্রেমবাজ' ৭, প-র। ৫।
'ভাললি' ধ। ৬। 'বাচব' ক, প-র; 'বাড়ব'
ঘ। ৭। 'বাঢ়ব' ইত্যাদি স্থলে 'এ অভি কোন
বড়াই' প-র। ৮। 'তৈলবিন্দু' ইত্যাদি ক্লিটি
প-র পূথিতে নাই। ৯। 'কুলকামিনি' ইত্যাদি
স্থলে প-র পূথির পাঠ বথা—

'কুলৰতি হোই কুলটা-পদ পাওপু'

১০। 'তাকর' ইত্যাদি দ্বলে 'কাম্থ সঞ্জে লেহ
ৰাড়াই' প-র। ১১। 'আপন করে' ইত্যাদি
পংক্তিবর প-র পুথিতে নাই। ১২। 'কাম্থক'
ব, দা। ১৩। 'বড়াই' ঘ; 'বাড়াই' চ। ১৪।
'চোর-রমণি জম্ম' হলে 'চোরজন-প্রিয়া বৈসে' প-র।
১৫। 'বাপাই' প-র। ১৬। 'ধারই' প-র।
প-র পুথির ৪০।৯১ সংখ্যক পদে 'দীপক লোভে

ইড্যাদি পংক্তি ছয়ট নাই ; উহার হুলে নিয়নিথিত পংক্তিগুলি দৃষ্ট হয় ; যথা,— 'এখন তখন করি দিবদ গোঙায়লুঁ দিবদ দিবদ করি মাদ। মাদ মাদ করি বরিথ গোঙায়লুঁ ছোড়লুঁ জিবনক আলা॥ বরিথ বরিথ করি জনম গোঙায়লুঁ জরা জারত তমু পাশে। হিম গরল জমু হিম গিরি বরিথয়ে কি করবি মাধবি-মাদে॥'

शंकांत्र ।>

মনে ছিল না টুট্ব নেহা।
হুজনক পিরিতি প্যাণকং রেহা।
তাহে ভেল অতি বিপরীত।
না জানিয়ে এছন দৈব-গঠীত ।
এ স্থি কহবি বন্ধুরে কর যোড়ি।
কী ফল ওপ্রেমক অঙ্কুর মোড়ি।
যদি কহ তুর্ত অগেয়ানা।
হাম সোঁপল হিয় নিজ করি জানি।
বিভাপতি কহে লাগল ধন্দা।
যাকর পিরিতি সো জন অস্কা॥

পঠিক্র

১। ইকা প-র প্থির ১৪৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'পাবাণ সম' ক। ৩। 'দৈবগঠিত' ক, ए; 'দৈব করিত' প-র। ৪। 'কি ফল' ক, খ। ৫। 'জাঁকুর'খ। ৩। 'হিরা'ক।

वानने ।>

পৰিলে পিয়া মোর মুখে মুখে হেরলও ভিল এক না ছোড়ল অজ। অপক্লপ প্রেম- পাশেও তমু গাঁথল অব ভেজল মোর সক্ষঃ সঞ্চিনিং হাম ব্রিয়ব কপি লাগি।

যা বিনে তিল এক রহই না পারিয়ে

সো ভেল পর-অসুরাগী ॥ গ্রু ॥

অঙ্গুলক আঙ্গুটিও সো ভেল বান্ত্রি

হার ভেল অতিং ভার।

মনমথ বাণহি সমস্তর জর জর

সহই না পারিয়ে আর ॥১৭২॥৯৭০।
পাঠান্কর

১। ইছাপ-র পুথির ১ গান । সংগ্রুক পদ।
২। 'মুখ'ক, প-র। ৩। 'হেরি রহে' প-র।
৪। 'আনশে'ক; 'ফাঁদে' চ। ৫। 'স্থি'ক,
থ,চ। ৬। 'অক্সবি'প-র। ৭। 'অক্স'প-র।

পুনশ্চ সখ্যক্তিঃ তথা মিলনম্।

পঠ্যক্ষর ।>

এ সথি কাহে করসি অসুবোগে।
কানুসে অবহি করবি প্রেম ভোগে।
কোনেব লেয়ব সথি তুক্ত কি পিয়া।
হাম চললু তহিঁ থির কর হিয়া।
কানু সমিণে যাই মিলল সবিং।
প্রেমক রাভ কহল সব ছ্খিও।
শুন ভহিঁ কানু মিলল ধনি-পাশ।
বিভাপতি কহে অধিক উলাস। ১৭০॥১৭১।

পাঠান্তর

১। ইছা প-র পুথির ১৪।৯৫ সংখ্যক পদ।

২। 'কোলে' ক, খ। ৩। 'কোনে' ইত্যাদি
ছলে প-র পুথির পাঠ বথা—'কোন লওব ধনি
ডোহারি পিরা'! ৪। 'তাই' ক। ৫। 'কার্
সমিপে' ইত্যাদি ছলে ক, খ, খ, চ পুথির পাঠ বধা,
'এত কহি কান্থ পালে মিলল সোই সধী।'
'এত কহি' ইত্যাদি পাঠ ছলোভল-হুই; বোধ হুর,
'কহি কান্থ পালে' ইত্যাদি প্রকৃত পাঠ ছিল। ৬।

'ছ্ৰি' পাঠ সকল পুথিতেই দৃষ্ট হয়; স্থতরাং 'দৃ্ধি' বা 'দোৰি' পাঠ সমীচীন হইলেও প্রেমাণাভাবে উহা গুহাত হইল না।

বিহগড়া।

নব অনুরাগে মিলল ছত্ত কুঞে।
আবেশে কহয়ে ধনি রস পরিপুঞ্জে।
বন্ধু হে কি বলিব ভোরে।
ভোমা বিনে দেখোঁ মুঞি সব লান্ধিয়ারে ॥ধ্রু॥
পাইয়াছি ভোমারে বন্ধু না ছাড়িব আর।
যে বলুং সে বলুং মোরে লোকে ছ্রাচার॥
এক ভিল ভোমা বন্ধু না দেখিলে মরি।
ছাড়িয়া কেমনে যাব পরাধান নারী॥
হিয়ার মাঝাবে খোব বসনে ঝাঁপিয়া।
প্রেমদাস কহে রাই দড়ং কর হিয়া॥

115981129211

ইতি আক্ষেপানুরাগঃ সম্পূর্ণ:। ইতি একাদশপল্লবঃ।

পাঠান্তর

>। 'দেৰো' ক, ঘ। ২-৩। 'বলু' চ। ^{৪। 'দ}ঢ়'চ।

> ততঃ পুনশ্চ অভিসারামুরাগঃ রাত্রো যথা।

> > **बि**रगीत्रहकः।

यहरे ।>

চল দেখি গিয়া গোরা অতি মনোহরে। অপরূপ রূপ গোরা নদীয়া নগরে॥ চল চল কবিল কাঞ্চন জিনি অক। কে দেখি ধৈরজ ধরে নরান-ভরক॥ আজামূলস্থিত ভুজ কনকের স্তম্ভ।
অরুণ বসন কটি বিপুল নিতম্ব॥
মালতীর মালা গলে আপাদ দোলনি।
বাস্থ কহে চল দিব পরাণ নিছনি॥১॥৯৭৩॥
পাঠান্তর

ইহা প-র-সাপুর্বির ১৪২৩ সংখ্যক পদ।

उषा वात्र 15

চলু নব নাগরি-মালা।
গোরা-রূপ হিয়ে উজিয়ালাং॥
গুরুজন-ভয় নাহি মান।
হেরইতে কয়ল পয়ান॥
অপরূপ স্থরধুনি-তার।
বহতহি মলয়-সমার॥
সকল ভকতগণ মাঝ।
নাচত গোরা বিজরাজ
.
হেরি সভে চমকিত ভেল।
নয়ন নিমিষ হরি গেলাং॥২॥৯৭৪॥
পাঠাধর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪২৪ সংখ্যক পদ। ২। 'উজিয়ারা' খ, প-র-সা। ৩। 'লেল' প-র-সা।

> তত্ত্ৰ শ্ৰীমত্যা যথা। ধাৰী।>

কান্যু-অনুরাগে

হৃদয় ভেল কান্তর

त्रहरू ना भावरे श्राट्र ।

গুরু-সুরুজন-ভয় কছু নাছি মানয়ে

চির° নাহি সম্বরু দেছে। দেখ দেখ নবং অমুরাগক রীত°।

খন আদিয়াৰ ভুজগ-ভন্ন কভ শভ

তৃণত্ব না॰ মানরে ভীত ॥ এ ॥

স্থিগণ সঞ

তেজি চলু একদরিশ

হেরি সহচরিগণ যায়।

অদভুত প্রেম-

তরকে তরঞ্জিত

তবছ সঙ্গ নহি পায়॥

চললি কলাবতি

অতিশয় রস-ভরে

পন্থ বিপথ নাহি মান।

জ্ঞানদাস কহ

এহ অপরুপ নহ

মনহি উজোরল কান ॥৩॥৯৭৫॥

পাঠাস্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪২৫ সংখ্যক পদ।
২। 'বেছ' ক, প-র-সা। ৩। 'চীর' ক, ধ,
প-র-সা। ৪। 'বেছ' ক, প-র-সা। ৫। 'নব'
খব্দ ক, ব, চ ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৬। 'অফ্য়াগ রীড' ক, ব। १। 'ভ্লছ না' ফ্লে ভ্লছ'
ক; 'ভ্লছ' না' ব; 'ভ্লছ' প-র সা। ৮। 'স্বিগ্ল' ইত্যাদি ফ্লে ক পুথির পাঠ ঘ্লা,—'স্থীগ্ল
ভেজি চন্তু এক শ্রী'।

(क्रांत्र 1)

নব অমুরাগিণি রাধা।
কছু নাহি মানয়ে বাধা।
একলি কয়লি পয়ান।
পশ্ব বিপথ নাহি মান॥
তেজল মণিময় হার।
উচ কুচ মানয়ে ভার॥
কর সঞ্জে কঙ্কণ মুদরি।
পশ্বহিঁ তেজলি সগরিং॥
মণিময় মঞ্জিরং পায়।
হরহিঁ ভেজি চলি যায়॥
যামিনি ঘন-আজিয়ার।
মনমথ হিয়ে উজিয়ার॥
বিভিনি বিথারিত বাট।
বেশ্রমক জায়ুধে কাট॥

বিভাপতি মতি জান। ঐছে না হেরিয়ে আন ॥৪॥৯৭১॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুণির ১৪২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'সারি' থ। ৩। 'মঞ্জীর' ক, থ। ৪। 'দুরহি' ক, থ। ৫। 'হেরি' ক, প-র-সা।

তত্র সঙ্কেতকুঞ্জে শ্রীকৃষ্ণোৎকণ্ঠা।

স্থানী ৷>

রয়নিং ছোটি অতি ভারু রমণী।
কতি খনে লাওব কুঞ্জর-গমনী॥
ভীমণ ভুজজমণ সরণাণ।
কত সক্ষট তাৎেণ কোমল-চরণাণ॥
বিহি পায়ে করেঁশ পরিহার।
অবিবিনেণ স্থানর করু অভিসার॥ধ্রা॥
গগনে সঘন মহি পক্ষা।
বিঘিনি বিধারিতংগ উপজ্বে শক্ষা॥
দশ দিশ ঘন-আজিয়ারংগ।
চলইতে খলই লখই নাহি পারংগ॥
সব জনিংশ পালটি ভুললিংগ।
আওত মানবি ভাল তংগ লোলি॥
বিভাপতি কবি কহই।
প্রেমছি কুলবতিংশ পরাভব সহই॥ধা৯৭৭।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূথির ১৪২৭ ও প-র প্ৰির ১৫।২৪ সংখ্যক পদ। ২। 'রাভি' প-র; 'বরাবহি' প-র-সা। ৩। 'রীম' ধ; 'ভিত' প-র। ৪। 'ফুফফিম' ধ, ঘ। ৫। 'লবণা' ধ, চ। ৬। 'কত' ইত্যাদি ফলে 'বাটহি শক্ষট' প-র। ৭। 'বচনা' ধ। ৮। 'করি' ক, প-র-সা। ৯। 'আবিঘনে' ক, চ। ১০। 'বিধারভ' ক। ১১। 'আবিঘনে' ক, ধ, ঘ, চ, প-র। ১২। 'পার' ফ্লে 'পারা' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা। ১০। 'সব জনি' ছলে
'সব জন' প-র-সা; 'সজনি' সা-প ২০১ গুপি। ১৪।
'সব জনি' ইত্যাদি পংক্তিদ্ব প-র পুথিতে নাই।
১৪। 'জাওত মানবি ভানত' হলে 'আওত মানবি ভাসত' প-র-সা; 'আওত য়ান বিভানত' সা-প ২০১ পুথি। ১৬। 'কুলবভি' হলে 'কুলবধু' ধ, ঘ।

<u>টাকা</u>

১১-১২। "সৰ জনি" ইত্যাদি। এই পংক্তি ছুইটির অর্থ লইয়া বিশেষ গোলযোগ আছে; বিভা-পতির পদাবলীর সম্পাদকগণ নানা জনে নানারূপ অর্থ করিয়াছেন; কিন্তু নিরপেক্ষ ভাবে বিচার করিলে সেই স্কল অথের কোনটিই স্মীচীন বলিয়া বোধ হয় না। আমাণিগের বিখাদ যে, মুদ্রিত পাঠে লিপিকর-প্রমাদ আছে। গুরাচান পুথির 'ন' ও 'ন' অক্রের প্রভেদ অতি সামান্ত; অনভিজ্ঞ লিপি-করের হাতে পড়িয়া সেই প্রভেদ লুপ্ত হওয়া ও 'ভাৰ ত' পাঠ 'ভাৰত' পাঠে পরিণত হওয়া কিছুই বিচিত্র নহে। 'ভাল ড' পাঠ স্বীকার করিলে এরপ অর্থ হইবে বে,—'শ্রীরাধা (ভয় হেতু) প্রত্যাবৃত্ত হইয়া (সঙ্কেত-কুঞ্জে আমার সোৎকণ্ঠ-ভাবে অবস্থান ইত্যাদি) সকল বিষয় পাছে ভূলিয়া গেল! (এরূপ इक्ति) व्यातित्व मत्न कतित. त्र विवक्षण हक्ष्मा वर्षार छरक्रा-भानिनी वटि।'

সা-প ২০১ সংখ্যক পুথির পাঠ গ্রহণ করিলেও প্রার এইরূপ অর্থ ই ছইবে। 'তানত' বা 'বিতানত' শক্ষের অর্থ 'বিস্তার করে' বা 'প্রকাশ করে'; রতরাং 'আঞ্চত রান বিতানত লোলি' পাঠের 'রান' শক্ষ লাইতঃ 'জান' কিংবা 'জান' শক্ষের মূলে লিপিকর-প্রমাদ গণ্য করিলে যথাক্রমে অর্থ হইবে—(শ্রীরাধা) আদিলে অপূর্ব লোলতা প্রকাশ করিবে, (ভবিষ্যৎ-সামীপ্যে বর্জমান প্রয়োগ) ফিংবা 'শ্রীরাধা আদিলে জানিব (সে) লোলতা প্রকাশ করিতেছে।' 'আঙত জানবি তানত লোলি' পাঠ করনা করিলেও ঠিক এইরূপ অর্থ ই হইবে। এই সকল পাঠের মধ্যে আমরা 'আঙত মানবি

ভাৰ ত শোলি।' পাঠই সমীচীন বৰিয়া বিবেচনা করি।

শ্রীরাগ 1১

একলি কুঞ্জহি কান।
পথ গেরি আকুল পরাণ॥
মনমথে জর জর ভেল।
তৈখনে ফুন্দরি গেল॥
বেরই নাগর কান।
কোর অমিয়া-সিনান॥
নব অমুরাগিনি নারি।
কি কহব কহই না পারি॥
নাহ-দরশেং ভেল ভোর।
কো কহ আবহি-ওর॥
সহচরিগন পিছে গেল।
হেরি হুকু আনন্দ ভেল॥
পূরল মন-অভিলায।
জ্ঞান কহই সথি পাশ॥৮॥৯৭৮॥

হ:ঠাস্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪২৮ সংখ্যক পদ। ২। 'দরশনে'ক,চ।

याननी ।>

মাধব কি কহব দৈব-বিপাক²।
পথ-আগমন কথা কত না কহিব হে°
বিদ হয় মুখ লাখে লাখ ॥ ঞ ॥
মিন্দির তেজি যব পদ চারি॰ আওলুঁ
নিশি হেরি কম্পিত অফ।
ভিমির ত্রন্ত পথ হেরই না পারিয়েণ
পদমুগে বেড্ল ভুজক ॥
একে কুল-কামিনি ভাহে কুল-বামিনি
সোর গহন অভি দুর।

আর তাহে জলধর বরিখয়ে ঝর ঝর

হাম যাওব° কোন পূর ॥

একে পদ-পক্ষ পদে বিভূষিত

কণ্টকে জরজর ভেল।
ভূয়া দরশন-আশে কছু নাহি জানলুঁ°
চির ভূখ অবং তুর গেল॥
ভোহারি মুরলি যব শ্রাবণে প্রবেশল
ভোড়ালুঁ গৃহ-স্থে আশ।
পাছক দুখ১১ তৃণ- হুঁ করি না গণলুঁ১২
কহন্ডহি গোবিন্দ দাস ॥৭॥৯৭৯॥
গাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৪২৯ ও প-র পুৰির ১৫২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'দৈবক পাক' প-র-সা। ৩। 'পথ' ইত্যাদি হুলে প-র পুৰির পাঠ,— 'পথে যত অন্তর্ম তাহা বা কহিব কত'। ৪। 'ছই' প-র। ৫। 'হেরই' ইত্যাদি হুলে 'লখই না পারই' প-র। ৬। 'ধরতর' প-র। ৭। 'রহব' প-র-সা, প-র। ৮। 'পুর' ক, খ, প-র-সা, প-র। ৯। 'ছ্রা' ইত্যাদি হুলে প-র পুৰির পাঠ— 'ভুরা মুখ দরশনে সব হুখ পাওব।' ১০। 'দেব' প-র। ১১। 'ছেপ' ক, খ, প-র-সা, প-র। ১২। 'পছক' ইত্যাদি হুলে প-র পুৰির পাঠ— 'বৈছনে আওলু' তৈছনে দেখিলু'।

ততঃ সম্ভোগঃ।

বিহাগড়।)

কিবা সে দোঁহার রূপ।

কিশোর-কিশোরী- রূপ গসারই

সরস রসের কৃপ॥ গুল॥

অরুণ-কিরণেং মলিন ইন্দু

কুমুদ মুদিত লাজে।

চান্দের ভরমে চকোর মাতল

ইন্দীবর হাসে মাবেল।

চান্দের উপরে চান্দ পেখল हेन्द्रूत्र छेभद्र भंगी। প্রেমের হ্যাবেশে পিয়ে রস-স্থা খঞ্জন-যুগল পশি॥ যমুনা-ভরক্তে व्यक्तम उपय তারার পদার তথা। অরুণ ঝাঁপিয়া তিমির রহল কিয়ে অদভুত কথা। স্থমেরু-শিখর কনক-গতায় ঘনের জনম তায়। মুকুতা ফলিল ঘনের লাংায় কেবা পরতীত যায়॥ ८म द्राधामाध्य-রসের বৈভব কহিতে শক্তি কায়। না জানে সাঁতার রসের পাথারে ডুবল শেখর রায় ॥৮॥৯৮०।

পাঠাস্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'কিরণ'ক। ৩। 'ইন্দু'থ, ব, প-র-সা। ৪। 'উদয়ে'ক। ৫। 'রস'ক।

টাকা

৪—१। 'অরূণ' ইত্যাদি। অরুণ অর্থাৎ
প্রীরাধার ললাটাইত সিন্দুর-বিন্দুর জ্যোতির ধারা
ইন্দু অর্থাৎ তৎসংলগ্ধ শ্রীক্লফের ললাট-স্থিত চন্দনবিন্দু নিপ্রভ হইল। (ইন্দুর নিপ্রভাতা দর্শনে)
কুমুদ অর্থাৎ প্রীরাধার নেত্র লজার মুদিত
হইল। (এ স্থলে অতিশরোক্তি অলঙ্কারের ধারা
প্রীরাধার সম্ভোগ-স্থ-জনিত নেত্র-নিমালন ব্যঞ্জিত
হইতেছে)। চকোর অর্থাৎ প্রীরাধার মুখচজের
স্থাপারী শ্রীক্লফের বদন চক্র-প্রমে অর্থাৎ
শ্রীরাধার বদনের সহিত চজের সামৃষ্ঠ দর্শনে
ক্রাভ হইরা (অধর-স্থাপানে) মন্ত হইল;

'(ইছা দেথিয়া) ইন্দীবর অর্থাৎ শ্রীরাধার নয়ন মধ্যে । থাকিয়া (কৌতুক হেতু) ছাসিতে লাগিল।

১২-১৫। "यमूना" ইত্যাদি। यমুনা-তরকে

অগং স্থনীল শ্রীক্লফের দেহের উপরে শ্রীরাধার দোহ্ল্যমান হারের মধ্য-মণিক্রপ স্থা্যর উদয় হইল এবং দেই স্থলে হারের মুক্তা-রাজি-ক্রপ ভারাগণের বিস্তার হইল। (শ্রীরাধার উল্লুক্ত বেশ-শাশ-রূপ) ভিমির (আন্দোলন-বশতঃ) তাঁহার (হার-মধ্য-মণি-রূপ) স্থাকে আচ্ছাদন করিল—কিক্রপ অন্তত কথা! ১৬—১২। "কনক-লভায়" ইভ্যাদি। (শ্রীরাধার কুশ দেহ-রূপ) স্থাত্তার (স্তান-রূপ) প্রমের-শিধর,—ভাহাতে (কেশ-পাশ-রূপ) মেম্বের উদ্ভব; দেই মেন্থ-লভায় অর্থাং বিকাণ কেশ-কলাপে (শিরো-ভূষণ) মুক্তা-জালের উৎপত্তি হইল; (এইরূপ অন্ত কথা) কে বিখাস পাইবে?

(क्षांत्र 1>

ভূমি বৃন্দাবন র্তি র**ণ-রঞ্চ** রণ-বাজন পিকু-রাব। দোসর মনমথে চঢ়লং মনোরথে পরিমলে অলিকুল ধাব॥ দেখা রাধামাধ্য মেলি। চরিত নাহি সম্ঝিয়ে ছুত্কর চপল किए व कन्ड किए व किला धा ক্ৰবি কুচ-ক্ঞুক জরজর চন্দন বিপুল পুলক ফ্ল-বাণ। তুত্ত মণি-কিঙ্কিণি ছ্ছ নৃপুর-ধনি কঙ্কণ-বলয়া-নিসান॥ হ্ছ ভুজ-পাশ পরি তুত্জন বন্ধন অধর-ভূধা করু পান। চিকুর শিখি-চন্দ্রক আকুল বস্ন (गाविम्ममाम त्रम गान ॥२॥२४)।

পাঠান্তর

১। ইছাপার পুথির ১২।০ সংখ্যক পদ। ২।
'গ্রহুঁচ চূল' ক, গ। ৩। 'দেখ স্থি' প-র। ৪।
'ক বিরি কচ-ক ঞূক' স্থলে 'কর কুচক ঞূক' ক;
'ক বচহি ব ঞূক' থ, ঘ। ৫। 'চিকুর শিধি-চ ক্লক'
স্থলে 'র ভনময় অভরং' প-র।

নব অমুরাগী নব অমুরাগ। মীলল তুর্ভু তমু গলে গলে লাগ॥ ইত্যাদি পূর্বেবাক্তপদানি গেয়ানি।

ভথা রাপ।
রাধামধিব রতি-বণ বিরমে।
বৈঠল মাধব রাধা বামে॥
হেরি সহচরি কোই চামর বিজই।
বয়ান পাখালি বসনে কোই মোছই॥
কোই সখি দেয়ল ভামুল বয়নে।
আনন্দে হেরই চরচর নয়নে॥
কোই সখি দেয়ত গন্ধ স্থবাসে।
চরণ সেবন করু বলরাম দাসে॥>०॥৯৮২॥
ইতি অভিসারাকুরাগান্তে মিলনম্।
ইতি ভাদশপল্লবঃ।

ত্তথ অভিসারোৎকণ্ঠা। শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

মলার 13

বিরলে বসিয়া গোরা রায়।
আপাদ মস্তক পুলকে পুরিভ
পুলকে পুরিভ
প্রেম-ধারা বহি যায়॥ গ্রু॥
সহচরগণে কছুয়ে বচনে
রহিতে নারিয়ে ঘরে।
নদ্দের নন্দন পাই দ্রশন

ত্রেং সে পরাণ ধরে॥

কস্তবী চন্দন অকে বিলেপন गत्न नीनमिन-माना। এ সাজ সাজায়েণ হ্ণতের ছটায়ে ভুবন করিলে আলা॥ দেখিয়া গৌর ভাবিয়া অন্তর বসনে ঝাঁপয়ে তমু। চাঁচর চিকুর বেড়িঃ নানা ফুল जलाप विक्रो जमू গোরাঙ্গ স্থন্দর সঙ্গে সংচর ञ्जधूनो-ोटज ५८ल । ভাবাবেশং মন আকুল বচন এ দাস মোহন বলে ৷ ১১৯৮৩৷ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'সবে' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'সাজ্বে' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'বেড়ি' ক। ৫। 'ভাবা-বেশে' ক, প-র-সা।

अववद्यो ।>

গগনে অব ঘন মেহ দারুণ সঘনে দামিনি ঝলকই। কুলিশ-পাতন-भवन यन यन প্রন খরতর বলগই ॥ সজনি আজু গুরদিন ভেলং। হ্মারি কান্ত নি-তান্ত আগুসরি मद्भाव-कूक्षरि (भन । धा তরল জলধর वित्रिक्ष यात्र यात्र গরজে ঘন ঘন ঘোর। শ্রাম নাগর এकिंग देक्ड्रान পশ্ব হেরই মোর 🛭 সঙ্গি মসু তপু অবশ ভেল জমু जवित्र धत्रधत्र काँश।

এ মর্ গুরুজনবোর ভিমিরহি ঝাঁপ।

তুরিতে চল অব কিয়ে বিচারহ
জিবন মরু আগুসার।
বায় শেখর - বচনে অভিসর
কিয়ে সে বিঘিনি বিধার ॥২॥৯৮৪॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৩২ সংখ্যক পদ।

২। 'সজনি আজু ত্রদিন ভেল' হইতে 'গরজে ঘন

খন ঘোর' পর্যান্ত পাঁচটি পংক্তি ও পুথিতে নাই;
উহার হলে ও পুথির পাঠ, যথা—'সব্জনি আজু ত্র
দিন ঘোর।' ৩। 'জীবন' ক, চ, প-র-সা।

এই পদটি বিষম-মাত্রিক ত্রিপদী-ছন্দে রচিত;

শব বাতীত ইহার প্রত্যেক চরপ-ছরে নিম্ন-লিখিতরপ
মাত্রা-বিভাগ দৃষ্ট হয়; যথা,—

0+8 0+8 0+8+81

স্থতরাং 'জিবন' স্থলে 'জীবন' পাঠ গ্রহণ করিলে ছন্দোভঙ্গ হয়। ৪। শ্রীমৃক্ত নগেক্ত বাবু 'রায়-শেষর' স্থলে 'কবিশেষর' পাঠ ধরিয়া এই পদটি বিভাপতির রচনা বলিয়া স্থির করিয়াছেন; কিন্তু এখানে ছন্দ-অনুসারে যে 'কবিশেষর' পাঠ হইতে পারে না—তাহা লক্ষ্য করেন নাই।

তিরোধা ধানশী।>

বারবার বরিথে স্থানে জল-ধারা।

দশ দিশ সবছঁ ভেল আজিয়ারা॥

এ স্থি কীয়ে করব পরকার।

অব জান বাধয়ে ছরি-অভিসার॥ গ্রু॥

অন্তরে শ্রাম-চন্দ পরকাশ।

মনহি মনোভাব লেই নিজ পাশ॥

কৈছনে সক্ষেতে বঞ্চয়ে কান।

সোঙারিতে জর জর অধির পরাণ॥

ঝলকই দামিনি দহন সমান।

ঝনঝন শবদং কুলিশ ঝনঝান ॥

ঘর মাহা রহইতে রহই না পার।

কি করব এ সব বিঘিনি বিধার ॥

চচ্বং মনোরপে সারথি কাম।

তুরিতে মিলায়ব নাগর ঠাম ॥

মন মাহা সাথি দেয়ত পুন্বার।

কহ শেখর ধনি কর অভিসার ॥০॥৯৮৫॥

পাঠান্তৰ

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৪০০ সংখ্যক পদ। ২। 'শক্ষ'ক। ৩। 'চঢ়ল'প-র-সা।

कारमार । कानड़ा ।>

কথরে ডম্বর ভরু নব মেহ।
বাহিরে তিমিরে না হেরি নিজ দেহ॥
অন্তরে উয়ল শ্রামর-ইন্দু।
উছলল মনহিঁ মনোভব-সিকু॥
অব জনি সজনী করহ বিচার।
শুভখণ ভেল পহিল অভিসার।
ফুল্ডখণ ভেল পহিল অভিসার।
ফুল্ডখণ ভেল পহিল অভিসার।
ফুল্ডখণ ভেল পহিল অভিসার।
ফুল্ডখণ ভেল কর্মুলপহ মোর।
তহিঁ পহিরায়হ নীল নিচোল॥
কী ফল উচ-কুচ-কঞ্ক ভার।
ফুর কর সৌতিনি মোতিম-হার॥
ডুল্ড স্থা দেখহ দেহলি লাগি।
গুরুজন অবর্ত খুমল কিয়ে জাগি॥
চলইতে দীগ-ভরম জনি হোয়।
গোবিন্দলাস সঙ্গে চলু গোয়॥৪॥৯৮৬॥

পাঠান্তর

)। এই পদটি ৩৪২ সংখ্যক পদ-রূপে ইতি-পুর্ম্পে উদ্ভ হইরাছে; স্থতরাং পাঠান্তর ও টাকা উক্ত পদে জইবা।

তথা রাগ ৷>

মন্দির-বাহিরং কঠিন কপাট।
চলইতে শঙ্কিল পঞ্চিল বাট॥
তহিঁ অভি তুরতর বাদর দোলণ।
বারি কি বারইং নাল নিচোল॥
ফুন্দরি কৈছে করবি অভিসার।
হরি রহ মানস-স্থুরধূনি পার॥
ঘন-ঘন ঝন-ঝন বজর নিপাত।
ভূনইতে প্রবণ মরমং জরি যাত॥
দশ দিশ দামিনি দহনং বিথার।
হেরইতে উচকইং লোচন-ভার॥
ইথে যবং স্থুন্দরি তেজবি গেহ।
প্রেমক লাগি উপেখবি দেহ॥
গোবিন্দদাস কহ ইথে কি বিচার।
ছুট্দ বাগ কিয়ে যতনেং নিবার॥৫৮৯৮৭॥

পাঠান্তর

৯। ইহা প-র-সা পুথির ২২৭,৪১৫ ও প-র পুথির ১৫।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'বাহিরে' খ, চ। ৩। 'তহিঁ' ইত্যাদি স্থলে 'তাহে ম্মতি বাদর দরদর বোল' প-র-সা; 'তাহে অতি বাদর ছরছর বোল' প-র। ৪। 'থারি কি বারই' স্থলে 'বারি কি বারবি' খ; 'বারিক বারণ' প-র। ৫। 'শ্রবণ মরম' স্থলে 'শ্রবণে মরমে' ক। ৬। 'দহই' ক, প-র-সা। ৭। 'চমক্ট' প-র। ৮। 'বদি' ক, খ; 'জনি' প-র। ৯। 'ব্ডল' ক, চ, প-র-সা, প-র।

शननी ।>

কুল-মরিযাদ্য- কপাট উদঘাটলুঁ
তাহে কি কাঠকি বাধা।
নিল মরিযাদ- সিন্ধু সঞ্জে পঙরলু
তাহে কি তটিনি অগাধা।
সহচরিদ মঝু পরিধণ কর দুর।

ষৈছে ক্রম্ব করি পত্ব হেরত হরি সোঙরি সোঙরি মন ঝুর॥ ধ্র॥ কোটি কুম্বম-শর বরিখয়ে দ যতু পর তাহে কি জলদ-জল লাগি। যাক হৃদ্যু ২ সহ প্রেম-দহন -দহ তাহে কি বজরক্ত আগি 🛭 জীবন সোঁপলুঁ यङ् भन्डत्न निज তাহে কি তমু অনুরোধ। कर्डे धनि ७. जिमत्रे সৌবিন্দদাস সহচরি পাওল বোধ॥ ৬॥ ৯৮৮॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ২২৮, ৪:৬ ও প-র পুথির ১৫।৪ সংখ্যক পদ। 'ধানশী' হলে 'কেদার' প-র। ২। 'কুল-মরিয়ান' (প-স) হলে 'কুলবতি কঠিন' ক, খ, घ, চ, প-র। ৩। 'কপাটকি' প-র-সা; 'কপাটক' প-র। ৪। 'কুল' প-র-সা। ৫। 'ধর' প-র-সা। ৬। 'পউরয়্' ক; 'পওরিল্' প-র-সা; 'টেপরল্' প-র। ৭। 'ধয়না' প-র-সা। ৮। 'সজনি' ক। ৯। 'কৈছে' ক; 'উছে' প-র-সা। ১০। 'পরিথয়ে' থ; 'বরিথত' প-র-সা। ১১। 'দহনে' ক, ঘ। ১২। 'য়েদয়ে' ঘ, প-র। ১৩। 'বয়য়কি' চ। ১৪। 'অবসর' প-র-সা; 'আভেসর' খনা।

गिका

১—৪। "কুল-মরিষাদ' ইত্যাদি। কুল-মর্থাদা-ক্লপ কঠিন কপাট উদ্ঘাটন করিয়াছি,—তাহাতে কাঠের অর্থাৎ কাঠ-কপাটের বাধা কোন ছার ? নিজের মর্থ্যাদা-রূপ সিদ্ধ হইতে উত্তীর্ণ হইয়াছি,— ভাহাতে অ্পাধ নদী কোন ছার ?

ততাভিগারঃ। কাষোগ। নীলিম মৃগমদে তুমু অমুলেপন নীলিম হার উজোর।

ভুজযুগ মণ্ডিড नील यलग्रगरन পহিরণ নীল নিচোল॥ স্থান্দরি হরি-অভিসারক লাগি। নব অমুরাগে গোরি ভেল শ্যামরি কুত্ যামিনি ভয় ভাগি॥ অলিকে হিলোলতং নাল অলকাকুল নাল তিমিরে চলু গোই। नोल नलिनि जय শ্যামর-সায়রেণ লখই না পার্ই কোই । नील खमद्रगन পরিমলে ধাবই চৌদিকে করত ঝকার। অঙ্গুে অমুমানল গোবিন্দ দাস রাই চললি অভিসার 🛚 ৭॥৯৮৯॥ পাঠান্তব

১। 'অগলক' ক। ২। 'হিলোলিত' ক। ৩। 'শ্রামর-সায়রে' স্থলে 'শ্রাম-সিল্কু-রসে' ক,চ। টীকা

১২—১৫। "নীল ভ্রমরগণ" ইত্যাদি। ক্বঞ্চৰণ ভ্রমরগণ সৌরভ জ্ঞে চৌদিগে ধাবিত হইতেছে (এবং) ঝক্কার করিতেছে; অতএব (সহচরীস্থানীয়) গোবিশ-দাস অসুমান করিলেন বে, জীরাধা অভিসারে চলিয়াছেন। (এ স্থলে 'মীণিত' নামক অলকার হইয়াছে)।

কেদার ৷১

গুরুজন-নয়ন বিখুস্তাদ মনদ।
নাল নিচোলে কাঁপিং মুখ-চনদ ॥
কুহুং-যামিনি ঘন তিমির ছুরন্ত।
মদন-দীপ দরশায়ল পছ ॥
চললি নিতদ্বিনি হরি অভিসার।
গতি অভি মন্তর আরতি বিধার ॥ ধ্রু ॥
রস-ধাধসে চলু পদ ছুই চারি।
লীলাকমলং ভেজল বরনারি॥

পরিহরি মৌলিক মালতি-মাল। তেজল•মণিময় গীমক হার॥ নৰ অমুৱাগ-ভরম ভরে ভোরি। নিন্দয়ে পীন পয়োধর জোরি^৮॥ বেশ-শেষ রহু নীলিম বাদ। মিললি নিকুঞ্জে কছ গোবিন্দদাস ৷৮॥১৯০॥

পাঠাহর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৪৮ ও প-র পুথির ১ । ३२ ७ ১८। ३६ मध्यक अम। २। 'वां १० नि' ক; 'ঝাঁপিলুঁ' থ। ৩। 'দহ' ক। ৪। 'চললি निज्यिनि' ऋल 'हनू अञ्जशिमिन' भ-द्र। <। 'नौन-কমল'থ, প-র। ৬। ভোড়ল' প-র-সা, প-র। ৭। 'ভরম ভরে' স্থলে 'ভরমে ভেল' ক। ৮। 'গোরি' প-র (১০।১২ সংখ্যক পদ)। ৯। 'মিললি' ইত্যাদি স্থলে 'অভরণ সম্বন্ধু প-র (১১।১৫ পদ)।

অথ শ্রীকুফোক্তিঃ।

পঠমপ্রবী 1>

অম্বর ভরি নব নীরদ ঝাঁপং। কত শত কোটি শবদে॰ জিউ কাঁপ॰॥ তহিঁ দিঠি জারত বিজুরিক জালা। ই**থে জনি**° ছোড়বি মন্দির° বালা॥ এছন কুঞ্জে একলি বনমালি। অন্তর জর জর পস্থ নেহারি॥ ভ্ৰমই¹ ভুজঞ্চম নিশি আন্ধিয়ার। তহিঁ বরিখত অবিরত জলধার॥ পাঁতর মাদ ভেল আঁতর বারি। কৈছে পঙারব>• সো স্থকুমারি॥ ত্তি তিও সাকুল চলল মুরারি। भौललभ्र जांश भएन वजनाजि ॥ भावित्र मात्र कहरे शून १० थला। প্রেম পরীখন্ত মনমর্থ মন্দ ॥৯॥৯৯১॥

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুথিতে 'গগনহি নিমগন দিন-মণি-কাঁতি' ইত্যাদি ৯৯৪ সংখ্যক পদের শেষাংশ এবং প-র পুণির ১৫,৬ সংখ্যক পদ। 'পঠমঞ্জরী' ऋर्ण 'दिमात्र' भ-त। २। 'संभि' भ-त्र-मा, भ-त्र। ৩। 'শবদ' ক। ৪। 'কাপি' প-র-সা, প-র। ৫। 'জানি' ক। ৬। 'ছোড়বি মন্দির' হলে 'মন্দির ছোড়হ'প-র। ৭। 'ভ্রমর' ক, ধ, ঘ, চ, প-র-সা। ৮। 'না' ক, প-র। ৯। 'আতর' ঘ, প-র-দা, প-র। ১•। 'পোয়ায়ব' ক; 'গোঙায়ব' ঝ, প-র। ১১। 'शिंगिशिं' के, थे, शे-ज्र-मा। ১२। 'विनन' क, ४, १५ ब-मा, १५ व । २०। 'मर' १४- ब-मा।

তুহুঁ জন আওল কুঞ্চ মাহ। অপরুপ কো বিহিও রস নিরবাহ॥ बात-बात वर्तिरथ भगता बना-धार। দ্বামিনি দহই ঝা কে অনিবার 🛭 ঐছে সময়ে বর রাধা কান। কুঞ্চক মাঝে বৈঠি এক ঠাম। হুহুঁ তমু মালল মনমধে মাতি। ছুহু পরিরম্ভন সমরক ভাতি। অপরুপ' ছহু জন নিধুবন-কেলি । গোবিন্দদাস হেরই স্থি মেলি ॥১০॥৯৯২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৩৪ সংখ্যক পদ। २। 'व्यवज्ञव' क, थ, वन्त्र-मा। ७। 'का विक्रि' স্থলে 'ছত্জন' প-র-সা। ৪। 'মিলল' কু খ, পার-সা। ৫। 'অপক্রপ' ক, খ, প-র-সা।

এতদ্দিনান্তরং সম্ভোগপদং গেয়ম। **मिनाखद**त । वरवर्षी ।>

মেঘ-যামিনি भिहित्रं नील निर्ह्मल (त्र^२।

চললি কামিনি

কুস্থম-শায়ক সঙ্গে নায়ক ছোড়ি মঞ্জির° লোল রে ॥ **ठल** छेलछे-প्रद⁵ গুরুয়া কুচ-ভরে পীন জঘনক ভার রে। হেরিং দামিনিং ফটিক-ভক্ত জানি চমকি ধরু নিরধার⁹ রে॥ भीभ जन् जानि प्तिथ क्रिन-मिन वाम कब्ने प्लरे वालि दत। জানি যুবতী' এহি ফণি-পতি১১ সন্থনে ভমু উঠে কাঁপি রে॥ ভেটল ফুল্ল ভি১২ প্রাণ-বল্লভ পুরল মনমথ । ঐছন পাই গেহ১ সফল করু দেহ বদত ২৬ গোবিন্দ দাস রে ॥১১॥১৯৩॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১ং।২১ সংখ্যক পদ। এই পদের প্রত্যেক অব্থা ও ব্থা চরণে নিয়লিথিত রূপ নালা দৃষ্ট হয়; বথা,—

৩+8 ৩+8 (অব্গা-চরণ)
৩+8+৩+২ (ব্গা-চরণ)

২। প-র পূথিতে যুগ্ন-চরপগুলির শেবে 'রে' নাই;
হুতরাং উহার যুগ্ন-চরপগুলিতে হুইটি মাত্রা কম
আছে। ৩। 'মজীর ক, ४; 'মন্দির' প-র। ৩।
'চল উলট-পদ' হুলে 'চলিতে পদ টলে' প-র। ৫।
'ছেরিয়া' ক। ৬। 'বামিনী' ক। १। 'বহু নিরধার' হুলে 'ধর নীরধার' ক। ৮। 'বহু' ক, ধ,
প-র। ৯। 'করে' ক। ১০। 'বানি যুবতী'
হুলে 'কানল যুবতী' ক; 'কানল যুবতি' ঘ, চ।
১১। 'এহি ফ্লিপতি' হুলে 'বিষম অহিপতি' প-র।
১২। 'ভেটল হুলভি' হুলে 'ভেট বহিঁ হুছ্' প-র।
১০। 'পুরল মনমধ' হুলে 'ছুছু পুরল মন' ক;
'পুরব মনোরধ' প-র। ১৪। 'অছন' ইত্যাদি হুলে
'এছন বছু লেহ' প-র। ১৫। 'কক্ক দেহ' হুলে
ভিত্ন বহু বেহ' প-র। ১৬। 'ভক্ত' প-র।

অত্ত সম্ভোগপদানি গেয়ানি। অথ বর্ষাকালোচিত-দিবাভিসারঃ। সিদ্ধান

গগনহি নিমগন দিনমণি-কাঁতি।
লখই না পারিয়ে কিয়ে দিন রাতি॥
ঐছন জ্বলদ ও কয়ল আধ্রিয়ার।
নিয়ড়হি কোই লখই নাহি পার॥
চল্গু গল্প-গামিনি হরি-অভিসার।
গমন নিরকুশ আরতি বিধার॥
চৌদিশে অথির পবন করু দোল।
জগ ভরি শীকরনিকর হিলোল॥
চলইতে গোরি নগর পুর বাট।
মন্দিরে মন্দিরে লাগল কগাট ॥
যব ধনি কুঞ্জে মিলল হরি পাশ ।
ছরহি ছরে রহু গোবিন্দদাস ॥২২।৯১৪।
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ৪৫০ ও প-র পুথির ১৫।৩২ সংখ্যক পদ। 'সিক্স্ড়া' ফ্লে 'ধান এ' প-র। ২। 'বুঝিয়ে' প-র। ৩। 'ঘোর' প-র-সা। ৪। 'মদন' প-র। ৫। 'চৌদিসে' ক। ৬। 'ভরু' ক, ঝ, য়, চ। ৭। 'পুট' ঝ। ৮। 'হেরি হেরি' প-র। ৯। অভংশর প-র-সাও প-র পুথিতে নিম্নিধিত অভিরিক্ত কলিট দেখাবার, যথা,—

'জানসু গুণবৃতি পূণকণ সোই।
হ্বাদন কাহুক গুড দিন হোই।'

১০। 'ষব ধনি' ইত্যাদি কলির পরিবর্ত্তে প-র-সা
পূথিতে 'অম্বর ভবি নব নীরদ বাঁপি' ইত্যাদি ৯৯১
পদটি লিখিত হইয়াছে।

অস্তোচিত-সম্ভোগঃ।
নগড়া।
ব্যাপ্তান দিনমণি প্রাতহিং নীর।
তহিঁ অতি দর দর বহুত সমীর।

রাধা মাধব রভি-রণ-ধীর।

তুত্তঁ পরবেশল কুঞ্জ-কুটীর ॥

নিধুবন-কেলি মিলিত এক সান।
পরাভব পাওল কিয়ে পাঁচবাণ॥

রাধা মাধব° তুত্তঁ ক বিলাস।
ভাহি রসিক্সণ অধিক⁸ উলাস॥১০॥৯৯৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০৫ সংখ্যক পদ।
২। 'পরতহি' খ, ছ। ৩। 'রাধা মাধ্ব' হলে
'রাধামোহন' ক, খ, ছ, চ। ৪। 'তাহি' ইত্যাদি
ছলে 'তাহা হেরি পোবিন্দ দাস' প-র-সা।

অথ শীতকালোচিত-দিবাভিসারঃ। **जू**शाली ।> হরি রন্ত কাননে কামিনি লাগি। জাগরে জর-জর মনসিজ-আগি॥ দারুণ গুরুজন-নয়ন নিপাত। না মিলল স্থাদরি ভৈ গেল পরাতং। আজি ভেল ভালে কুঝটি-আন্ধিয়ার। ঐছে সময়ে ধনি চলু অভিসার[°]। বিঘটি মনোরথ অবইতে⁸ কান। ধনি চলু আন ছলে মাঘ-সিনান। यव फूट्यानन वनवन शह। **पत्रभटन मीडेल वित्रह छुत्रछ ।** যব চুছ হরখে ভরখে করু কোর। विष्ठि कि घटेन करकात्रक दकात्र॥ গোবিন্দদাস তলহ রস গাব। পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ৪০০ ও প-র পুৰির ১০০০ সংখ্যক পদ। ২। 'প্রভাত' ক, প-র-সা, প-র। ৩। 'ঐতহ' ইজ্যাদি স্থল 'অবভনে রাই

নির্ভই অভিসার' প-র-সা; 'কয়লিছ রাই দিনছি অভিসার' প-র। ৪। 'অব ইথে' ঘ, চ। ৫। 'আন মান' ক, ৬, প-র-সা; 'আন মান' ঘ; 'আন-য়ন' চ। ৬। 'বিঘটি' ইত্যাদি ছলে 'বিঘটি বিঘটল' ঘ; 'বিঘটিছ ঘটল' প-র। १। 'ভাগল' ক, প-র। ৮। 'ঘটিছি' প-র।

টীকা

৫—৬। "আবি" ইত্যাদি। আবদ (প্রাতে) ভাগর অক্সই কুআ্টিকার অক্কার হইল; (স্থামর ব্রিয়া) ঐ সময়ে শ্রীরাধা অভিসারে চলিলেন।

ং—৮। "বিঘটি" ইত্যাদি। মনোবাছা ব্যর্থ হইরা শ্রীক্লফ (সংক্ষত-কুঞ্চ) ইইতে আদিবার কালে শ্রীরাধা (গৃহ ইইতে) অক্সছলে মাঘ-মানে চলিলেন।

৯—১০। 'বৰ' ইত্যাদি। বধন উভ্রে (দৈবাৎ) পরম্পারের পথে (ঘাইতে বাইতে) সন্মিলিভ হইলেন, (তথন) পরম্পারের দর্শনে দারুণ বিরহ বিদ্রিত কইল।

>>>
>>>
>> শৰ্ব" ইত্যাদি। বধন (দর্শনজনিত) আনন্দেও (অপরে দেখিবে বলিরা) ভরে
উভরে উভরকে ক্রোড়ে ধারণ করিলেন,—(তধন
মনে হইল) চক্রবাক-যুগল (রজনীতে) বিচ্ছির
ছইরা কি (দিবসে) সন্মিলিত হইল ?

দিনান্তরে।

थाननी ।>

সহজই শীত সময় অতি হীমং।
তাহাধিক পবন বাঢ়ায়ত সীম।
কুষটি ভেল তহি দশ দিশ ব্যাপি।
দিনমণি-কিরণ সবহ রভ ছাপিঃ।
রাই করল স্থে হরি-অভিসারং।
স্সময় জানি অব তাক সঞ্চার। ধা।
কছু নাহি দীশইং গতিং অনিবার।
স্পূপ্ধ দেখায়ল মদন্দ দিশার।

কুসুম-পরশে যোই বরণিত শহোই।
এতত্ত্বিনে পদ নিরাপদ সোই॥
ঐছে মিলল বর যুগল কিশোর।
রাধামোহন শত্ত আনন্দে ভোর॥১৫॥৯৯৭॥
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-দা পুথির ১৪০৬ ও প-র পুথির ১৫।০৪ সংখ্যক পদ। ২। 'হিম'ক, থ, প-র-দা, প-র। ০। 'তাহে ধিক' থ, ঘ, প-র। ৪। 'ঝাপি'প-র। ৫। 'রাই করল' ইত্যাদি স্থলে 'রাই কমলমুখী স্থথে অভিসার' প-র। ৬। 'দিশই' ক, চ, প-র; 'দীশহ' থ; 'দিবসই' প-র-দা। ৭। 'রাভি'প-র। ৮। 'প্রেম' প-র। ৯। 'তরলীত' প-র। ১০। 'গোবিল্দ দাদ' প-র।

১—২। "সংক্ষই" ইত্যাদি। শীত-কাল অভাৰতই অভি শীতল, তাহাতে (হিমালয়ের) বায়ু (শৈত্যের)সীমা আরও বৃদ্ধিত করিতেছে।

টাকা

৭—৮। "কছু" ইত্যাদি। কিছুই দৃশ্য হই-তেছে না; (অপচ) শ্রীরাধার গতি ফাল্ত হইতেছে না; (কেন না, দিগ্দশক কলপ স্থাপ দেখাইলেন)।

৯--> । "কুন্থম" ইত্যাদি। (শ্রীরাধার) বেই চরণ কুন্থমের স্পর্শে ব্রণিত অর্থাৎ ব্রণবৃক্ত হর, সেই চরণ (প্রেমোৎকণ্ঠার প্রাবন্যে) এরপ হিমের মধ্যেও নিরাপদ অর্থাৎ অবিচলিত রহিয়াছে।

ত্বা রাগ।
রাধামাধ্য করু রস-পুঞে।
হিম-ঋতু-দিনহিঁ মিলল তুহুঁ কুঞ্জে।
নিবিড় আলিজনে শাত নিবারণ।
এক মুখে ঘাম আরেং শিতকার॥
ঐছনে কতহুঁ করত সঞ্চার।
হ্বেড-পরোনিধি তুহুঁ তেল পার।
চুহুঁকর গুণাও তুহুঁ করুও পরশংস।
রাধামোহন-পহু তুহুঁ অবতংস ॥১৬॥৯৯৮॥

পঠিক্তির

১। 'অনিবার' ক, খা ২। 'আবার' ক। ৩। 'গণ' কা ৪। 'জন' ক, চ।

অথ বর্ষা কালোচিতে। যথা।

ত্পালী।>

চলু গজ-গামিনি হরি-অভিসার।

গমন নিরকুশ আরতিং বিধার॥ গ্রুমা
পক-পিছল পথ গুরুয়া নিভস্ব।
পড়ুকত বেরি নাহি অবলন্ধ॥
বিজুরি-জোতি দরশায়ল দেহে ।
উঠইতে চাহে জলধারক থেহা ॥
গৈচনে মীলল নাগর পাশ।
গোবিন্দদাস কহ পুরল আশা॥১৭॥৯৯৯॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ৪৬৬ ও প-র পুথির ১ং।২২ সংখ্যক পদ। প-র-সা পুথিতে এই পদের প্রারজ্ঞে নিম্নলিখিত চারিটি অভিরিক্ত পংক্তি দৃষ্ট হর; যথা,—

'মন্দির বাহির পদ ছই চারি।
বারি ঘনাঘন মেহ ভক্র বারি॥
এক গুণ তিমির লাপ গুণ ভেল।
উতর দ্বিন ভান দুরহি গেল॥'
২। 'মদন' পার। ৩। 'এহ' পার-সা। ৪। 'এহ'
ক, খ, ঘ, চ।

টীকা

৫—৬। "বিজুরি" ইত্যাদি। বিহাতের হাতি (অন্ধকারের মধ্যে) শ্রীরাধার দেহকে দৃষ্টিগোচর করাইল। (ভূপতিতা মুগ্ধা শ্রীরাধা) বৃষ্টি-জলের ধারা অবলম্বন করিরা উঠিতে চাহিতেছেন।

হংই।>
আজু কৈছে তেজলি গেছং।
কে জানে কৈছন ভোছারি সিনেছ°॥

শুরুজন-ভয়ে কি না কাঁপণ।

ঘন-আন্থিয়েরে সবহুঁ দিঠি ঝাঁপ ॥

কুহুঁ কৈছে হেরলি রাতি।

মরমছি উয়ল মনমধ-বাতি॥

দূতরু পস্থ সঞ্চার।

চচ্ল মনোরপে ইথে কি বিচার॥

একলি আগুলি এত দূর।

আগেরি আগে কুস্থম-শর শুর॥

আপে করই হুহুঁ কোর।

মীলল হুহুঁ জনা তুমু তুমু জোর॥

রাধামাধব-ভাষ।

না বুঝলদ মুগধল গোবিন্দদাস॥১৮॥১০০০॥

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪২২ ও প-র পুথির ১-1২৪ সংখ্যক পদ। ২। 'আল্ল' ইত্যাদি (প-র-সা) স্থলে 'আল্লু কৈছে স্থলরি তেজলি গেহ'ক, খ, ঘ, চ; 'আল্লু কৈছে ধনি' ইত্যাদি প-র। প-র-সা পুথি ব্যতীত অভাভ পুথির পাঠে ছন্দোভঙ্গ ঘটে। পদামূহ-সমুদ্রের পাঠ পদরসসারের অফ্রপ। ৩। 'স্থনেহ' ক, খ, চ। ৪। 'কাঁপি' খ, প-র-সা, প-র। ৫। 'ঝাঁপি' খ, প-র-সা, প-র। ৬। 'ছতর' ক। ৭। 'ছহু' ক। ৮। 'না বুঝা' ছতের' ক হব' প-র।

পাঠান্তর

শীকৃষ্ণং প্রতি দখ্যক্তিঃ।

কেনার।

কন্টক গাড়ি কমল সম পদতল

মঞ্জিরং চারহি কাঁপি।

গাগরি-বারি ঢারি করু পীছল

চলতহি অঙ্গুলি চাপিঃ॥

মাধব তুয়া অভিসারক লাগি।

দূতর পন্থ-গমন ধনি সাধরে

মন্দিরে যামিনি কাগি॥

করযুগে নয়ন মুন্দি চলু ভাবিনি
তিমির-পয়ানক আশে।
কর-কঙ্কণ পণ ফণি-মুখ-বন্ধন
শিথই ভুজগ-শুরু পাশে॥
শুরুজন-বচন বধির সম মানই
আন শুনই কহ' আন।
পরিজন-বচন' মুগ্ধি সম হাসই ২২
গোবিন্দদাস পর্যাণ॥১৯॥১০০১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৬২ ও প-র পুথির ১০।২০ সংখ্যক পদ। 'কেদার' ছলে 'শ্রীরাগ' প-র। ২। 'ন্প্র' প-র-সা, প-র। ৩। 'করু পীছল' ছলে 'করি পিছল' ক, চ। ৪। 'ঝাঁপি' ক। ৫। 'কর-ভলে' প-র-সা, প-র। ৬। 'ভামিনি' প-র-সা, প-র। ৭। 'পয়ান গতি' প-র। ৮। 'পশে' প-র-সা। ১। 'ভাষয়' প-র-সা; 'ভাস-য়' প-র। ১০। 'শুয়ই কহ' ছলে 'শুনত কহে' প-র-সা; 'শুনত কহ' প-র। ১১। 'বচনে' খ, ঘ: ১২। 'পরিজনে' ইত্যাদি ছলে প-র-সাও প-র পুথির পাঠ, যথা— 'পরিজন-হাসে মুধ্য জন্ত হাস্মে'।

निका

১—৪। "কণ্টক" ইত্যাদি। (স্কুমারী প্রীরাধা
অক্ষলারার্ত, সর্পসন্থল, কণ্টকাকীর্ণ, পিচ্ছিল বনপথে
অভিসার অভ্যাস করার উদ্দেশ্তে কি কি কার্য্য
করিয়াছেন, স্থা তাহা বর্ণন করিতেছেন) প্রীরাধা
(গৃহালনে) কণ্টক রোপণ করিয়া (শক্ষ নিবারণ
জক্ত) নুপুর বসনাঞ্গলে আচ্ছাদন অর্থাৎ বন্ধন করিয়া
কলসীর জল ঢালিয়া পিছল করেন এবং পল্মের স্থায়
(স্কোমল) পদতণে আস্কুল চাপিয়া চলেন।

৮—১১। "করবুগে" ইত্যাদি। (প্রীরাধা)

অক্ষকারে গমনের আশার করবুগল ছারা নিজের

চক্ষু মুদ্রিত করিরা চলেন এবং নিজের করের (স্থবণমর) কল্প মূল্য দিয়া সর্প-গুরু সাপুড়িরাছিগের

নিকট (মন্ত্রোষধি বারা) সর্পদিগের মুখ-বন্ধন শিবিতেছেন।

১২ — ১৫। "গুরুজন" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা)
গুরুজনের বাক্য বধিরের স্থায় গ্রহণ করিতেছেন,—
এক শুনিরা অক্স উত্তর দিতেছেন; নিজের স্থাদিগের
(উপদেশ) বাক্যে মুগ্ধার হার হাসিতেছেন
অর্থাৎ সেই বাক্য হাসিয়া উড়াইয়া দিতেছেন; (এ
বিষরে) গোবিন্দদাস প্রমাণ! (গোবিন্দ দাস
প্রমাণ বাক্যের সহজ অর্থ স্থীস্থানীর গোবিন্দ দাস
শ্রীরাধার এই অপুর্ব অভিসার-দীলা প্রত্যক্ষ করিয়া
এই পদে উহা বাক্ত করিতেছেন)।

তথা রাগ ৷>

ভীতক চীতং ভুজগণ হেরি যো ধনি চমকি চনকি ঘন কাঁপ। **অব** অক্ষিয়ারে আপন তমু ছাপই**ং** কর দেই ফণি-মণি ঝাঁপ ॥ মাধব কি কহব তুয়া অমুরাগং। তুয়া শভিসারে অবশ নব নাগরি• জीवहे वह भूगजांगा ॥ अ ॥ যো পদতল থল-কমল-স্থকোমল ধরণি-পরশে উপচন্ধ। অব কণ্টকময় সঙ্কট বাটছি আয়ত বায়ত্ত নিশক। মন্দির মাঝ সাজ্ঞ নাহি ভেজভ (पर्वा मान्द्रा पृत्र। অব কুন্ত-যামিনি চলয়ে একাকিনি (गाविन्मनाम कर कृ ब्र॰ ॥२०॥> • २॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ৪২৫, ৪৬৪ ও প-র পুৰির ১০।১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'চিত' ক, প-র-সা, প-র। ৩। 'জুলগ' ছলে পদামৃতসমূজ গ্রাছে 'পুতলি' পাঠ গৃহীত ও ব্যাখ্যাত হইরাছে। 'পুতলি' পাঠ গ্রহণ করিলেও বধন উহার অর্থ 'কুজলের মৃষ্ঠি' না করিলে অসকতি হইরা পড়ে, তথন পদকরতক, পদরসমার ও পদরত্বাকর অফুদারে 'কুজগ' পাঠই সমীচীন বোধ হয়। ৪। 'আপন তমু ছাপই' ফ্লে 'আপন তমু রাপই' ক, চ; 'বসনে তমু ছাপিরে' প-র-সা। ৫। 'তুরা অমুরাগ' হুলে 'ধনী অমুরাগি' প-র-সা। ৬। 'তুরা' ইত্যাদি হুলে 'তুরা অমুরাগ রভদে নব নাগরি' প-র। ৭। 'জীবই' ইত্যাদি হুলে 'জিবইতে বছু পুণভাগি' প-র-সা। ৮। 'বাত' চ, প-র-সা, প-র। ৯। 'সাঁজ' ধ, চ, প-র-সা (পাঠান্তর); 'সাঁবে' প-র। ১০। 'ফুর' ক, চ, প-র-সা, প-র।

विका।

১—৪। "ভীতক" ইত্যাদি। বে স্থন্দরী ভিছি
অর্থাৎ গৃহের প্রাচীরের চিত্রিত জুজলন দেখিরা
চমকিরা চমকিরা পুনঃ পুনঃ কম্পিত হয়,—(সে)
এখন অস্ককারে নিজের দেহ লুকাইরা হাত দিরা
বিষধর সর্পের মস্তকস্থিত মণি চাপা দিতেছে।
(মণির আলোকে পাছে শ্রীবাধাকে কেহ দেখিতে
পার, দেই আশহার তিনি উহা আচ্ছাদিত করিতেছেন)।

গান্ধার।১

যব ধনি বর সঞ্জে ভেল বাহার।
ঝর ঝর বরিখে জলদ অনিবার ॥
কর ঠেলনং নছে ঘন আহ্মিয়ার।
দিশ দরশায়ল মদন দিশার ॥
কি কহব মাধব পুণ-ফল ভোরি।
এতহুঁ দূর তরিং তোহে মিলু গোরি॥
খালকত বিজুরি নরন ভরুচয়।
চলইতে খলইং সঘনে মহি পছ।
উঠইতেং ফণি-মণি উজরং ছেরি।
কনক-দণ্ড বলি ধরু কত বেরি॥

ঐছনে সৌপলুঁ তোহে নিজ দেই।
অপরুপ ঐছন তোহারি স্থনেই ॥
এত দিনে প্রেমক পরিচয় ভেল।
গোবিন্দদাস ভরম হুরে গেল॥
হে১॥১০০০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সা পুথির ৪৫২ সংখ্যক পদ।
২। 'ঠেরল' দ। ৩। 'দুর তরি' হলে 'ত্রতরা'
প-র-সা। ৪। 'খলমে' ক; 'খলত' প-র-সা।
৫। 'উঠই' খ। ৬। 'উজোর' ক, খ; 'উজর' চ।
৭। 'হলেহ' ক, খ, চ, প-র-সা, পর।৮।
'দুরে' ক, খ, প-র-সা, প-র।

অত্র সম্ভোগপদানি গেয়ানি।

অথ গ্রীষ্মকালোচিত-দিবাভিদারঃ। ৰরাড়ী।১ মাথহি তপন তপত পথ-বালুক আতপ দহন বিথার। ননিকং পুতলি তমু চরণ কমল জমু দিনহি° কয়ল° অভিসার॥ হরি হরি প্রেমক গতি অনিবার। কামু-পরশ রদে পরবশ রসবতি বিছুরল সবহুঁ বিচার ॥ গ্রা ওঁকু**জন-**নয়ন-পাশগণৎ-বারণ মারুত-মণ্ডল-ধূলি। ^{©।} পয়ে**॰ মে**नि চলनि বর রজিণি পদ্বহি গেও সবং ভূলি॥ যত যতদ বিঘনি জিতলি অমুরাগিণি गांधिम मन्जिल-मलः। गांविन्मनाम कहरे अव ममूबि

হরি সত্তে রসময় তম্ম ।২২।১০০৪।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৪৯ ও প-র পুথির ১৫।৩ সংথাক পদ। ২। 'স্নীক' থ, প-র; 'নোনীক' ক; 'নোনিক' চ। ৩। 'তবহি' দ, প-র-সা, প-র। ৪। 'চললি' প-র-সা, প-র। ৪। 'চললি' প-র-সা, প-র। ৫। 'পাপগণ' ক, চ। ৬। 'তা পরে' ছলে 'তাহিক' থ; 'তোহা পর' প-র-সা; 'তা সঞে' প-র। ৭। 'পথছথ গেলহি ভূলী' প-র। ৮। 'য়ত কত' প-র। ৯। 'তের' প-স।

ীক।

১—৪। "মাধহি" ইত্যাদি। মন্তকোপরি স্থ্য; পথের বালুকা উত্তপ্ত; স্থ্য-কর অধি বিস্তার করিতেছে; (প্রীরাধার) দেহ নবনীতের পুত্তলিকা, — চরণ পদ্মের ভার (স্ক্রেমন),—(এ অবস্থারও তিনি) দিবাভাগে অভিসার করিলেন!

৮—১১। "গুরুজন" ইত্যাদি। বাতাবর্ত্ত অথাৎ
ঘূর্ণা বৃায়ুর ধূলি গুরুজনদিগের নম্বন-রূপ দাঁদগুলির
নিবারক (হইল); জভিদারানন্দযুক্তা এরাধা সেই
ধূলিমন্ন বাতাবর্তের সহিত মিশিয়া অভিসারে গমন
করিলেন এবং পথেই সকল (প্রতিবন্ধকতার কথা)
ভূলিয়া গেণেন !

১২—১ঃ। "যত যত'' ইত্যাদি। অমুরাগবতী শ্রীরাধা যত কিছু বিদ্ধ, সব ক্ষম করিলেন ও কল্পের (বশীকরণ)-মন্ত্র সাধন করিলেন; গোবিন্দাস ক্হিতেছেন- এখন (শ্রীরাধা) হরির সহিত রসমর তন্ত্র অর্থাৎ আনন্দ-জনক কাম-তত্ত্বের অমুশীসন ক্ষন!

তথা রাগ।>

রাধামাধব মালন ভেগ। নিদাঘক দুখং সবস্ত ত্বেও গেল॥ উহি পুন সবোবর-মন্দির মাঝ। জল-কণ-শীকরণ-নিকর বিরাজ॥ সৌরভ মেলিত গন্ধবহ মন্দ। কি করব দিনমণি-কিরণক বন্ধ॥ তহিঁবর স্থ্রত বাপিশ অবগাহ। রাধামোহন পহুঁ রসিক স্থনাহণ॥

120120001

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪০৭ সংখ্যক পদ।
২। 'ছংখ' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'দূরে' ক,
প-র-সা। ৪। 'জল' ইত্যাদি হলে 'জল কলসী
কর' চ। ৫। 'সৌরডে' ক, খ, প-র-সা। ৬।
'বারি' ক, চ, প-র-সা। ৭। 'সুলেছ' প-র-সা।

অথ উৎকণ্ঠায়াং ভ্রমাভিসার:।

দুত্যুক্তিঃ।

তথা রাগ ৷১

স্থান কৈছন আরতি তোর।
বিঘটিত ঘটিত সাজ নাহি জানল
ভূলল শাধব মোর॥
বিপরিত চীর পহিরি হরি সাজল
হল্ত অন্ধদ হল্ত কাণে।
সীথি বলয় করি হাথে সাজাওল
কুণ্ডল মুদরিক ভানে॥
কিছিণি-জাল মাল করি পহিরল
হার সাজাওল হাতে।
চূড়ক সাজ করি চরণহি পহিরল
মঞ্জির পহিরল মাথে॥
পুরুষ উত্তর নাহি দীগ দিগান্তরণ
নব অনুরাগক লাগি।
বল্লভদাস কহ চঢ়ল মনোরধে
সৃত্তি দুরহি ভাগি ॥২৪॥১০০৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৩৮ সংখ্যক পদ।
২। 'ভুলল' ক, প-র-সা। ৩। 'বাহে' ক, চ,
প-র-সা। ৪। 'করি' শস্কৃতি ক, খ, চ ও প-র-সা
প্থিতে নাই। উহা ব্যতীত ছন্দোভঙ্গ ঘটে। ৫।
দিগ দিগন্তর' ক, প-র-সা; 'দিগ দীগান্তর' খ;
'দীগ দীগান্তর' চ।

शानशी ।>

কামুক ইহ উত্তক্তিত জানি।
বিভূবল স্থানরি আপনার বাণী ॥
কি কহিতেং কি কহয়েও নাহিক পেছ।
বিভূবল অভরণ আপনক দেহ ॥
কামুক নেহ হদয় মাহা জাগ।
সো রূপ নিরুপম নয়নহি লাগ॥
কহইতে চল চল রহ রহ গোল।
লেহ লেহ কহইতে ডাঞ্জহণ ভাষ।
আনহণ বাণি জানা পরকাশ॥
এছন ভ্রমময় শুনইতে হাস।
কি কহব সহচরি বল্লভ দাগ॥

120120091

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪০৯ সংখ্যক পদ।
২। 'করিতে' খা ৩। 'হয়' ক। ৪। 'সাল'

प; 'সাজ সাল' প-র-সা। ৫। 'ভালই' ক;
'ভাজ ভাল' প-র-সা। ৬। 'আনহি' ক, খা ^{গা}
'বাণি জান' হলে 'বাণী জাল' ক, খ; 'বাণী জান' প-র-সা।

ফোর।> মণিষয়ং মঞ্জির ষতনে আনি ধনি দো পহিরল° জুই হাত । কিছিণি গীম-হার বলি পহিরল
হার সাঞ্চাওল মাথং॥
স্থানির অপক্ষণ পেথলু আজ।
হারি-অভিসার-ভরম-ভরে স্থানির
বিভুরল সাজ বিসাজ॥ ধ্রা॥
খন আহ্মিয়ার রক্ষনি জনিং কাজর
গরজত বরিধত মেহ।
বিষধর ভরল সূত্র পথা পাঁতর
একলি চললি তেজি গেহ॥
চচ্লি মনোরপে দোসর মনমপ্ণ
পাস্থ বিপথ নাহি মান।
গোবিন্দদাস কইই ব্রজ-নাগরিং
ব্রহনে ভেঠলি কান॥২৬॥১০০৮॥
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৪০ সংখ্যক পদ।

২। 'মণি' ক, চ। ০। 'পহিরম্থ' ক। ৪।
'হাডে' প-র-সা। ৫। 'মাখে' প-র-সা। ७।
'ঘন' ধ, ছ; 'জিনি' প-র-সা। ৭। 'হরড' ধ,

য়, প-র-সা; 'হরডর' চ। ৮। 'পয়' ধ, ছ।
১। 'মনমখে' ক, খ, প-র-সা। ১০। 'ধনি এছন'
প-র-সা।

এীরাপ 15

রাই সাজে বাঁশী বাজে পড়ি গেওই উলও।

কি করিতে কিবাও করে সব হৈল ভূল ॥

মুকুরে আচরিও রাই বাজে কেশ-ভার।

পায়ের বাজে ফুলের মালা না করে বিচার॥

করেতে নুপুর পরে জড়েবও পরে ভাড়।

গলাতে কিছিনী পরে কটিতটে হার॥

চরণে কাজর পরে নয়নে আলতা।

হিয়ার উপরে পরে বছরাজ-পাতা॥

শ্রাবণে করয়ে রাই বেশর সাজনা।

মাসার উপরে করে বেশীর রচনা॥

বংশীবদনে কহে যাঙ্ড° বলিহারি। শ্রাম-অসুরাগের বালাই লৈয়া মরি ॥ ॥২৭॥১০•১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৪১ সংখ্যক পদ।
২। 'পড়ি গেও' ফ্লে 'না পড়িল' ক, ঝ, য়, চ।
'না পড়িল' পাঠে অর্থ-সঙ্গতি ঘটে না। এই বাঙ্গালা
পদে হিন্দী 'গেও' শন্দের ব্যবহারও চিন্ধনীর বটে।
সম্ভবতঃ 'পড়ি গেল' প্রকৃত পাঠ হইবে। ৩। 'গুল'
প-র-সা। ৪। 'কিনা' ক, প-র-সা। ৫। 'ফাচারে'
ক, প-র-সা। ৬। 'কডে' প-র-সা। १। 'যাই' ক।

বেলাবলী 13

বিপরিত বেশে মিলল ধনি মাধব
মাধব বিপরিত বেশ।
ভূলল সরস সম্ভাষ হাসময়
জমু নহ আরতি লেশ।
সজনীং অপরুপণ প্রেম বিচারি।
দোঁহ দোঁহা হেরি শুস্ত ভেল কলেবর
চাত-পুতর্নি সম থারি। গ্রুণ।
বহুখণে সহচরি-বচনহি তুহুঁ জন
ধাই কয়ল তুহুঁ কোর।
ভৈছন তুমু তুমু লাগি রহল তুহুঁ
তুহুঁ দোহাঁ ভাবে বিভোর।
বিছুরণ কেলি-বিলাস রস-লালসং
রহলহি কোরে আগোরি।
গ্রুহন সহচরি শেজে শুভারল
বল্লভ হেরি বিভোরি।২৮॥১০১০॥

পাঠান্তর

)। हेहा প-त-मा পूथित > 88२ मःशाक शव। २। 'मजनि' क, थ, ठ, श-त-मा। ७। 'जशका' क, थ, ठ, श-त-मा। ४। 'टिडहरन' क, (বিছুরল' ইত্যাদি পংক্তি চারিটি চ ও প-র-সা প্রথিতে নাই।

কেদার 1১

কত হুঁ যতনে তুহুঁ তুহুঁ তুমু তেজ।
বৈঠল সবস কুসুমময় শেজ ॥
বিপরিত চরিত হেরি সখি হাস।
তুমু তুমু তেজি অতুমু পরকাশ ॥
সহচরিগণ কহ তুহুঁজন-রাজ।
শুনইতে তুহুঁজন চমকিত-চাজ ॥
লাজহিঁ সুন্দরি না কহয়ে বাণি।
তেজল ভূষণ বিপরিত জানি ॥
উপজল কতহুঁ হাস পরিহাস।
কত কত কোতুক মদন-বিলাস॥
রাধামাধবং প্রেম-তরক্ষ।
বেরই বল্লভং সহচরি সক্ষ ॥২৯॥১০১১॥

ইতি ভ্রমাভিসারঃ।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৪০ সংখ্যক পদ। ২। 'রাধানাধ্য ছক্' প-র-সা। ৩। 'বল্লভদাস' প-র-সা।

> অথ জ্যোৎস্নাভিদারঃ। প্রকারান্তরং যথা।

> > তথা রাগ। ১

আবছং রাজপথে পুরজন জাগি।

চাঁদ-কিরণ জগমগুল গাগি॥
রহিতে সোয়াথ নাহি নৌতুন নেহং।

হেরি হেরি স্ফারি পড়ল সন্দেহ ॥ এছ॥
কামিনি কয়ল কভয়ে পরকার ।

পুরুষক বেশে কয়ল অভিসার।

ধামিলি ' লোল ঝুট করি বন্ধ।
পৰিরল ' বদন আন করি ছম্প॥
অন্ধরে কুচ নাহি সম্বন্ধ গেল '।
বাজন-যন্ত্র হৃদয়ে করি নেল॥
ঐছনে মালল কুঞ্জক মাঝ।
বেরি না চিহ্নই ' নাগর-রাজ॥
বেরইতে মাধব পড়লহি ধম্দ।
পরশিতে ভাঙ্গল হৃদয়ক দন্দ ' ।
বিত্যাপতি কহ তব কিয়ে ভেলি।
উপজল কত কত মনম্থ কেলি।

1500130321

পাঠান্তর

পুনশ্চ দিনাস্তরে।

ত্বং কুচ-বল্লিত-মোজ্জিক-মালা।
শ্মিত-সাক্রীকৃত-শালি-কর-জালা॥
ছরিমভিসর স্থ-দরি সিত-বেশা।
রাকা-রজনিরজনি গুরুরেবা॥ ধ্রু॥
পরিছিত-মাহিষ-দধি-ক্লচি-সিচয়া।
বপুর্বিভিত-মাহিষ-দদন-মিচয়া॥

কর্ণ-করম্বিভ-কৈরব-হাসা।
কলিত-সনাতন-সঞ্জ-বিলাসা ॥৩১৫১০১৩॥
পাঠাম্বর
১। ইছা প-র পুথির ১৫।২০ সংখ্যক পদ।
টীকা

১-৮। 'অমিতি"। (হে রাধে।) তং কুচয়ো: বলিতা (গতিবেগেন উল্লেফ্টিডা) মৌক্তিক্ষালা যন্তা তাদুনী। পুন: कोषृशी १— श्विर्डन (श्रेयकारस्थन) সাক্রীকৃতঃ (নিবিড়ীকৃতঃ) চল্লকরাণাং জালঃ (সমূহঃ) यक्ष छातृमी। (रु स्टब्स्ति ! निटर्दमा (७५८८म-ধারিণী) তাং গ্রীক্লকাং অভিদর (তদস্তিকং গচ্ছ) এষা রাকা-রন্ধনিঃ (পূর্ণিমা-নিশা) গুরুঃ (উপদেষ্টা) অঞ্নি (কাতঃ । বাকারজন্তাঃ ভ্রুত্বেন ভ্রুতি-সারোপযোগাৎ অভিসাঝেপদেষ্টুত্বং বোধ্যম্। ত্বং পুন: কীদৃশী ?—পরিছিডং মাহিষ-দধি-ক্লচি দিচয়ং (বসনং) যয়াসা। পুনশচ বগৃষি (দেহে) অপিতঃ ঘনঃ চন্দন-সমূহো যয়া সা। পুনশ্চ কর্ণয়োঃ কর-ষিতাভ্যাং (সংযুক্তাভ্যাং) কৈরবাভ্যাং হাস:(প্রকাশ:) ষস্তা: সা। পুন্দচ কলিত: (জনিত:) স্নাত্নস্ত (ঐক্কভ) সঙ্গে বিলাদো यद्या সা। পক্ষে কলিত: সনাতনক্ত (ভব্নামকগোকামিন:) সঙ্গঃ (স্থীভাবেন সাহচর্যাং) তত্র বিলাসে। যরা সা।

অমুবাদ

১—৮। (গতি-বেগে) তোমার কুচবুগে মুক্তাহার বল্লিত হইতেছে; তোমার ঈবৎ-হাস্তে চন্দ্রকিরণ আরও ঘনীভূত হইতেছে; হে শুল্ল-বেশধারিণী স্থলরি! তুমি (এখন) শ্রীক্ষের নিকটে
অভিসার কর; এই পূর্ণিমা রজনী (ভোমার অভিসার-কার্য্যের) উপদেষ্টা হইরাছে! তোমার পরিধের
বসন মাহিষ দ্ধির স্থায় শুল্ল-কাস্থি; দেহে ঘনচন্দনাস্থলেপন অপিত হইরাছে; তোমার কর্ণ-শ্বত
কুমুদের খেত-শোভা প্রকাশিত হইরাছে এবং তুমি
সনাতন-সঙ্গ-বিলাস্ক বর্দ্ধিত করিরাছ।

'সনাতনসগ-বিবাস' পদটি শ্লিট। ইহার
 এক অর্থ 'সনাতন অর্থাৎ আদি পুরুষ ঐীকক্ষের

তথা রাগ।

কুণ কুস্থমে ভরু কবৰিক ভার॥ ইত্যাদি পূর্বেবাক্তং গেয়ম্ ।

ज़्रानी ।>

গুরু হুকং বঞ্চ ওজোরলা চন্দ।

হুরজনং নায়ন পদহি পান ফন্দ॥
ভাবে হাত হুরতর পান্ত সঞ্চারা।
ভাতে হাত হুরতর পান্ত সঞ্চারা।
কি কহব মাধ্য প্রেমক রীত।
ভুয়া কামুরাগিণি ক্রিভুবন জীতা ॥ ধ্রা॥
ঘাহাঁ ধনি শাধ্যে ভাঙ ধনান।
সাধ্যে ধাওয়ে কাতা পাঁচবাণ॥
সো ভোহে কুঞ্ছে মিলল নিরবাধ।
সোবিন্দদাস কহ পুরুল সাধ ॥৩২॥১০১৪॥

গাঠান্তর

১। ইচাপ-র-সাপুথির ৪৬১ ও প-র পুথির
১০।২২ সংখ্যক পদ। ২। 'হর' চ। ৩। 'বঞ্চন'
প-র-সা। ৪। 'উজোর বর' প-র-সা, প-র।
৫। 'গুরুজন'ক,ঝা ৬। 'ডাংহ অতি' ইত্যাদি
পংক্তি হুইটি প-র পুণিতে নাই। ৭। 'শুত'ক, ঝ, প-র-সা, প-র। অতঃপর প-র সা ও প-র
পুথিতে নিম্নলিখিত অতিরিক্ত কণি ছুইটি দৃত্ত হয়,
যথা—

'পতিভূজ ভূজগবদ্ধ করে তোড়ি।
চরণক বাতে কুলাচল ডারি॥
তাহে কি কহব লঘু মন্দির-কপাট।
তব্নে মরিযাদে সিদ্ধু দেই বাট ॥'

সহিত সংস্থাগ-বিগাদ'। অপর অর্থ-সনাতন-নামক গোস্বামীর সাহচর্য্য-জনিত বিশাস।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

শীরাগ।>

চিকুর-তরক্ষক-ফেন-পটলমিব

কুহুমং দধতী কামম্থ।

নটদপসব্যদৃশা দিশতীৰ চ

নৰ্ত্তিত্বতত্মবামন্ ॥

রাধা মধুর-বিহারা।

হরিমুপগচ্ছতি মন্থর-পদ-গতি-

লঘু-লঘু-তর্মিত-হারা ॥ধ্র•॥

শঙ্কিত-লজ্জিত-রস-ভর-চঞ্চল-

मध्र-पृशंख-लर्वन ।

মধু-মথনং প্রতি সমুপহরস্তী

क्वलग्र-माम तरमन ॥

গত্রপতি-ক্লজ্র-নরাধিপমধুনাতন-

मननः मधुरत्र ।

রামানন্দ-রায়-কবি-ভণিতং

ত্বখয়তু রস-বিসরেণ ।

11 b C 0 C 11 2 C |

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ৪৪৮ সংখ্যক পদ। ২। দৈশতী কামং' (জ: ব:) ছলে 'দশতি সকামং' ক, ধ, ধ, চ, প-র-সা। ৩। 'নটদপস্বা' ইত্যাদি (ম, জ: ব:) সংক্রিম্বরের পাঠ জ্ঞান্ত পুথিতে নিতান্ত বিক্রত। ৪। 'নরাধিপ' ইত্যাদি (জ: ব:) হলে 'নরাধিপমধুনা তহুমধুরং' ক, ধ, ব, চ, প-র-সা।

गिका

১—> ৫। "চিকুরে"ত্যাদি। মধুর-বিহারা
মধুরসভোগৰতী গ্রীরাধা মহর-পদগত্যা অরারং
ফাল্পতঃ হারো বস্তাঃ তাদৃশী হরিষুপগছ্ছতি গ্রীকৃষ্ণাস্কিবং গতা। কীদৃশী গ্রীরাধা ? চিকুরাণাং (কেশানাং)
তর্গকেব্ (কুজনীচিবু) তরগারমানকেশেরু ইত্যর্থঃ
ক্রেন্টেলমিব (ফেনপ্রমিব) কামং অত্যর্থং
কুরুমং গুরুপুলারাজিং দ্বতী (ধাররতী) তথা কুরু-

হামনেত্রেণ বামা-রহিতং কলপং নর্তিতুং আদিশতীব উপদিশস্তীব। পুন: কীদৃশী ? শহিত: লব্জিতত্তবা রসভবেণ চঞ্চলঃ যো মধুরো দৃগন্তলবঃ কটাক্লেশ-ত্তেন (করণে ভূতীয়া) মধুরাপাকদৃষ্ট্যেতি ভাব: মধুস্দনং প্রতি রসেন (অমুরাগেন হেতুনা) কুবলয়-माम (नीरलांद्रभल मानाः) अमूभश्वको (जेभरोक-য়ন্তী)। অত্র শ্রীরাধায়া নীলনলিনাভকটাক-পরম্পবৈব কবিনা কুবলম্নাম-রপেণ বর্ণিতেতি বোধ্যম্। রামানন্দরায়াধ্যকবের্ভণিতং গীতং মধু-**रत्र** त्र त्र-विश्वरत्र (त्र प्र-विद्धारत्र) व्यसूनां उन्यमनः (ইদানীস্তনকন্দর্প: কন্দর্পস্থাভিনবাবতার্মিতার্থ:) 'গলপতি'রিভি গজপতি-ক্ল-নরাধিপং স্থমতু। বিশেষণেনান্ধিতঃ বো ক্ষত্রনরাধিপঃ প্রতাপক্ষ্যনর-নামৈকদেশগ্ৰহণে নামমাত্রগ্রহণ্য পতিস্তম। সিদ্ধত্বাৎ ক্ষত্র-শব্দেন প্রতাপক্রাে গম্যতে।

অহ্বাদ

১—১৫। শ্রীরাধা তরক্বারমান কেশ-কলাপে ফেনরাজির প্রার্থ (খেড) কুসুমসমূহ ধারণ করিরাছেন এবং নিজের স্পান্দমান বাম নেত্র ছারা ঘেন রতি-বির্হিত কন্দর্পকে নর্তনের জক্ত উপদেশ করিতেছেন। স্থমধুর-সম্ভোগ-শালিনী শ্রীরাধা মন্থর-পদ-সঞ্চারে মুক্তাহার জবং দোলাইয়া শ্রীক্রয়ের নিকট উপনাত হইতেছেন। তিনি কিঞ্চিং শজিত ও লজ্জিত রস চঞ্চল স্থমধুর কটাক্ষ-রাজি ছারা প্রীতিবশতঃ শ্রীকৃক্ষকে বেন নীলোৎপল-মাল্য উপহার অর্পন করিতেছেন। রামানন্দ রার কবির রচিত এই সকীত স্থমধুর রস-বিত্তার ছারা কন্দর্পের অভিনব ক্ষরতার গর্কপতি প্রতাপ্রস্কল্ব নৃপত্তিকে স্থাধান কর্মক্ষ।

(क्षांत्र ।>

কলয়তি নয়নং দিশিং দিশি বলিতম্। পদ্ধক্ষমিব মৃত্যু-মারুত-চলিতম্ ॥ কেলী-বিশিনং প্রবিশতি রাধা । প্রতিপদ-সমুদ্ধিত-মনসিজ-বাধা ॥ अ ॥ বিনিদধতীত মৃত্-মন্থর-পাদম্। রচরতি কুঞ্জর-গতিমনুবাদম্॥ জনয়তুত রুদ্র-গজাধিপ-মৃদিতম্। রামাননদ-রায়-কবি-গদিতম্॥৩৪॥১০১৬॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সাপুথির ১৪৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'নিশি'প র-র-সা। ৩। 'বিনিদধতী' (জঃ বঃ) ছলে 'বিনিদধতি' ক, থ, ব, চ, প-র-সা। ৪। 'জনম্তি' ক।

টীকা

১—৮। "কলয়তী"ভাদি। প্রতিপদং (প্রতিপদ-ভাদে) সম্বিতঃ সমৃত্তো মনসিজস্ত কন্দর্পন্ত বাধা (পীড়া) ৰস্তাঃ সা রাধা কেনীবিপিনং (কেনিন্তু রুং) প্রবিশতি। পুনঃ কিং করোতি ?—মৃত্নারুতচালিতং মৃত্-পবন-চঞ্চলং প্রজ্ঞানিব নিলোং-পলমিব দিশি দিশি বলিতং চতুর্দিক্ প্রেরিতং নয়নং কলয়তি (ধারমতি) নিকুঞ্জে শ্রীক্রফাঃ ক্র তিষ্ঠতী-ভালানতী বলবছৎকঠয়া দিশঃ পশ্রতীতি ভাবঃ। পুনঃ কিং করোতি ? মৃত্-মন্তর-পাদং (মন্দমন্দরবাং) বিনিদধতী (বিশ্বস্তম্ভী) ক্রেরগতিং অমু ক্রেরগমনং লক্ষাক্রত্য বাদং (বিবাদং) রচয়তি (গলগতিং অমু-তাতি ভাবঃ)। রামানন্দরায়কবেরিদং বাক্যং ক্রেপ্পাকাধিপশ্র মুদ্ভিং (হ্র্বং) জনয়তু।

অমুবাদ

১—৮। শ্রীরাধা মৃত্পবন-চালিত নীলোৎপলের প্রায় নিজের নরন চারি দিকে প্রেরণ করিতেছেন। প্রতিপদ-বিক্ষেপে তাঁহার কন্দর্প-পীড়া উদ্ভূত হই-তেছে; তিনি কেলিকুল্লে প্রবেশ করিতেছেন। তিনি বৃহমন্থরভাবে চরণ নিক্ষেপ করিরা কুঞ্জর-গতিকে পরাজিত করিতেছেন। রামানন্দ রায় কবির এই বাক্য গজপতি প্রতাপক্ষত্তের আনন্দ উৎপাদন ককক।

মায়ুর।১ সম-বয় বেশ-ভুষণ্-ভৃষিত-ভন্ম স্থিগণ সঞ্চ মেলি। গজ-গতি^ও নিন্দি[®] গমন অতি স্থান্দর[©] কিয়ে জিত-খঞ্জন-কেলি ॥ দেখ রাই করল অভিসার। শিরিষ-কুত্ম জিনি কোমল পদতল বিপথে পড়ত অনিবার ॥ধ্রু॥ যো থল কমল পরশে অতি কোমল ঝামর ভই উপ5 क। সো অব যাই। তাই। কঠিন ধরণি মাহা ডারত বড়ই নিশক। ঐছন ভাতি মিলল কুঞ্জ মাহা দুভিক যাহাঁ উপদেশ। ভণ রাধামোহন তঁহি যো আচরণ হাম কিয়ে পায়ব উদেশ।

19611703911

১। 'মায়ুবী' ক। ২। 'ভূষণ' ক, খ।
'ভূষণ' পাঠে ছলোডক ঘঠে। ৩। 'গলপতি' খ।
৪। 'নিন্দিত' (পাঠান্তর—ক, খ, খ, চ, ১০৫৬
সং পদ)। ৫। 'গমন' ইত্যাদি 'গমন স্থমছর'
(পাঠান্তর—ক, খ, খ, চ, ১০৫৬ সং পদ)। ৬।
'অতি কোমণ' হলে 'হ্লোমণ' (পাঠান্তর—ক,
খ, খ, চ, ১০৫৬ সং পদ)।

পাঠান্তর

অত্ত সম্ভোগপদানি গেয়ানি।
পুনশ্চ দিনাস্তরে।
তিসিরাভিসারে দৃত্যুক্তিঃ।
বনাড়া।>
রতি-স্থধ-সারে গভমভিসারে
মদন-মনোহর-বেশম্।

ন কুরু নিভম্বিনি গমন-বিলম্বনমন্ত্রুসর তং হৃদয়েশম্॥
ধীর-সমীবে যমুন্ধ-তীরে

বৃদ্ধতি বনে বনমালী। ধ্রুণ বিষয় সংখ্যান

নাম-সমেতং কৃত সঙ্কেতং

বাদয়তে মৃহ বেণুম্।

বহুমমুতে নমু তে তমু-সঞ্চ-

পবন-চলিতমণি রেণুম্॥

পত্তি পত্ত্তে বিচলতি পত্তে

শক্ষিত-ভবত্রপ্যান্ম।

রচয়তি শয়নং সচকিত-নয়নং

পশ্যতি তব পত্থানম্॥

मूथतमधीतः छाज मञ्जोतः

রিপুমিব কেলিষু লোলম্।

চল সখি কুঞ্জং সতিমিরপুঞ্জং

শীশয় নীল-নিচোলম্॥

উরসি মুরারেরুগহিত-হারে

ঘন ইণ তরল-বলাকে।

তড়িদিব পীতে রতি-বিপরীতে

রাজনি প্রকৃত-বিপাকে॥

বিগলিত-বসনং পরিক্ত-রসনং

ঘটয় জঘনমপিধানম্।

किम्लग्र-मग्रत्न शक्क-नग्रत्न

নিধিমিব হর্ষ-নিধানম্।

হরিরভিমানী রজনিরিদানী-

মিয়মপি যাতি বিরামম্।

কুরু মম বচনং সত্তর-রচনং

প্রয় মধুরিপু-কামম্॥

শ্রীজয়দেবে কৃত-হরি-সেবে

ভণতি পরম-রম্পীয়ম।

প্রমূদিত-হৃদয়ং হরিমতি-সদয়ং

नम् रङ्ग - कमनी व्रम् ॥ ७५॥ > ० ১৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৫।১**০ সংখ্য**ক গ_{ই।} 'ৰয়াড়ী' স্থলে 'পঠমঞ্জরী' প-র।

টাকা

জয়দেবের শ্রীগীতগোবিন্দ সর্ব্বত্ত ব্রহন্ত ব্লিয়া এ স্থলে টীকা ও অমুবাদ দেওয়া হইল না।

ভূপালী।১

স্থিগণ-বচনে বনায়ল বেশ।
বিরচিল কবরি আঁচরি নিজ কেশ।
ভালহি দেয়ল সিন্দুর-বিন্দু।
চন্দন-রেখ শোভয়ে আধ ইন্দু॥
কত কত অভরণ সাজায়ল অবে।
হেরইতে মুর্ছয়েং কতক্ত অনক্ষে॥
নীল-বসনে তমু ঝাঁগলি গোরি।
চললি নিকুঞ্জে শ্রাম-রনে ভোরি॥
মদনমোহন মনমোহিনি নারি।
ভ্রামদাস কহ যাভ বলিহারি॥৩৭॥১০১২॥

পাঠান্তর

३। देश প-র-সাপুথির ১৪৪৮ সংখ্যক পদ।
 २। 'য়ৢয়ড়য়ে' ক; 'য়ৢয়ড়য়' প-য়-য়া।

বেলোরার।১

সাজলি রসবতি রঞ্জিণি রামাং।

মন্দ মন্দ গতি নৃপুর-কলরবলক্জিত-রাজহংসকুল বামাণ ॥ধ্রু॥

চম্পক কনক কেশর-কুস্থ্যাবলি
ক্রুচি জিনি স্থাদর অপায়ন সাজে।

অলিকুল অঞ্জন জলদ নীলমণি
ছবিচন্ত্র-নিন্দিত বসন বিরাজে॥

অমল ইন্দিবর- দল লোচন্ত্র্প
কত কত শশি জিনি ক্যল-ব্রানী।

অরুণ-ছবি নিন্দই সিন্দুর-বিন্দু व्यक्ट-त्रभगी किंग (विन विभी ॥ মধুর মৃতু হাসনি বিক্রেগ-অধরে म्भन श्रुमामिनि ममन करत्। তার⁸-হার মণি-কুণ্ডল লম্বিত কত মণি দরপই দরপবরে॥ क्षिंद्रभ महहित যন্ত্ৰ বাজায়ত ধিরে ধিরে॰ রসবতি চলত সমাজে। বল্লভ ভণভ প্রবেশলি নিধুবনে হেরি কত রতিপতি ভাজল লাজে 🛭 106130201

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪৪৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বামা' খ, চ। ৩। 'রামা' ক, খ, চ। ৪। 'ভার' ঘ, প-র-সা। ৫। 'ধীরে ধীরে' ক, খ, প-র-সা।

यहरे ।>

মিললি নিকুঞ্জে রাই কমলিনী।
দোহে দোহাঁং পায়ল পরশ-মণি॥
দরশনে হছ মুখ হছ প্রেমে ভোর।
নয়নে ঝরয়ে দোহাঁর আনন্দ লোর॥
সরস-সম্ভাষণে উপজ্ঞল রক্ষ।
উপললঃ হছ মন মদন-তরক্ষ॥
সহচরিগণ সব আনন্দে ভাস।
হছ মুখ হেরই নেরোভ্য দাস॥৩৯॥১০২১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৫০ সংখ্যক পদ। ২। 'দৌহে' ক, চ। ৩। 'ছুইার' ক, চ। ৪। 'উহ্লণ' প-র-সা। ৫। 'নেহারই' প-র-সা।

মঙ্গল ।১

ও মুখ শরদ-স্থাকর-সুন্দর है निमिन-मन गर्छ। ও ততু নবঘন-স্থাদর রঞ্জিত ইহ থির দামিনি পুঞে॥ (मर्भ त्रांधांभाधव (कांत्र। তুত্ত পরশ-রসে ড়্ছ পুলকাইডং ত্ত দোহাঁ রহল আগোরি ।ধ্রা। ও নব নাগর भव शहन व्यागत ইং সে কলাবতি-সীম। ও অতি চতুর-শিরোমণি বিদগধ এ সব গুণহি গরীম ॥ भधुत्र तुम्मोवतन শ্যাম-গোরি-ভন্ম ত্বহু নৰ কিশোরি কিশোর। নৱোত্তম দাস আশ চরণে রন্ত শ্রীবল্লভ-মন ভোর ॥৪০॥১০২২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৪৫১ সংখ্যক পদ। ২। 'পুলকায়িত' ক। ৩। 'গরিম' ক, খ, প-র-সা।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

कनामी।

বয়স সমান সজে নব রজিণি
সাজলি শ্রাম-দরশ-রস লোভে।
কোই রবাব মুরজ সরমগুলং
বীণণ উপাক্ত হাত পর শোভে।
ভালে বনি আওয়ে ব্যভামু-ভনি।
চরণ-কমল-ভলে অরুণ বিরাজিভ
মঞ্জির-রঞ্জিভ মধুর-ধনিণ মুঞ্জা

গতি অতি মন্থর নব যৌবন-ভর
নীলং বসন মণি-কিঙ্কিণি বোলে।
গজ-অরি মাঝরিং উপরে কনয়া-গিরি
বীচহি সুরধুনি মুকুতা-হিলোলে॥
রবি-মণ্ডল-ছবি জিনি মণি-কুণ্ডলং
স্থানর সিন্দুর ভালিরে ভালে।
গোবিন্দদাস কহ ভূললং অলিকুল
বেড্ল কবরিক মালতী-মালে॥
॥৪১॥১০২৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৪৫৭ সংখ্যক পদ।

হ। 'হ্বরমণ্ডল' ক। ৩। 'বীণা' হ। ৪। 'ধ্বনি'
ক, খ। ৫। 'অসিড' প-র-সা। ৬। 'নাঝারি'
ক, খ, প-র-সা। ৭। 'রবি-মণ্ডল' ইত্যাদি হলে
'রবি-মণ্ডল' চবি জিনি মণি-মণ্ডল' ক; 'রবিমণ্ডল
জিনি ছবি কুণ্ডল' ঘ; 'রবিমণ্ডল ছবি কুণ্ডল ঝলমল' প-র-সা। ৮। 'হ্মম্বর' ইত্যাদি হলে 'সিন্দুর
বিশুর ভালি রে ভালে' ধ, ঘ; 'হ্মম্বর সিন্দুর বিশু
ভালিই ভালে' ক। ১। 'ভ্লল' ক, ধ, প-র-সা।

विश्वांश ।

রাই কনক-মুকুর-কাঁতি। শ্যাম বিলাসিতে স্থাপর তমু সাজয়ে কতেক ভাতি। नौल रमन রতন ভূষণ जनरम मामिनी मारज। বিচিত্ৰ বেণী চাঁচর কেশেরং ছলিছে হিয়ার মাবে। রসের আবেশে গমন মৃত্যু হেলি ছুলিও চলি যায়। আধ ওচুনি **ঈষত হাসিয়া**• विक्रम-मञ्जूदन ठाव ।

সি থায়ে সিন্দুর নয়ানে কাজর
তাহে চন্দনের রেখা।
নব জলধরে অরুণ-কোরে
নবীন চাঁদের দেখা॥
শ্যামানন্দ ভণে নিকুঞ্জ-ভবনে
কলপ-তরুর মূলে।
রসের আবেশে বৈসে বিনোদিনী
শ্যাম নাগরের কোরেদ ॥৪২৮১০২৪।

পাঠান্তর

১। 'দরশনে' খং প্রাঃ পুথি। ২। 'কেদর'
খ; 'কেশেতে' খং প্রাঃ পুথি। ৩। 'হেলি ছলি'
হলে 'হেলি দোলি' খ, ছ; 'ভাবে ঢুলি' খং প্রাঃ
পুথি। ৪। 'হাসিনী' খং প্রাঃ পুথি। ৫। 'নব
জলধরে' ইত্যাদি ছলে—'অরুণের কোরে নব জলধর' খং প্রাঃ পুথি। ৬। 'রদের আবেশে' হলে
'হাসিতে হাসিতে' ছ। ৭। 'বসিলা' খ, ছ। ৮।
'কোলে' খং প্রাঃ পুথি।

জ্ঞ সম্ভোগপদানি গেয়ানি। পুনশ্চ জ্যোসাভিদারো যথা।

বেলোরার 15

সখি মাধব নিকট গমন করিং
তুরিতহিঁ এমতি করবি চতুরাইণ।

যদবধি গগনে উদিত নহেণ হত-বিধু
হরি অভিসারবি সময় জানাই ॥

মদন-দহনে তমু অবিরত দাহই
পরাণক ছখ তুহুঁ জানসি চীতণ।

ইং তাহে নাহি জানাওবি অস্তর
হাম বাহে কুলবতি-পথে উপনীত ॥

এত শুনি দুতি চলল অবিলখনে
জাসি ভেল উপনিতণ কামুক পাশ।

নরন-ভরক্তে সকল সমুঝারল
পুন হেরি কুম্দ কহে পরকাশ ॥
কুম্দিনি গুণ পরি- মলে জগ জীতল
কাছে বিলমায়ঙ শামল ভূল।
দৃতিক বচনে চলল বরনাগর
ভূরতহি গৌর হুদের পরসয় ॥৪৩॥১০২৫॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৫২ সংখ্যক পদ।
২। সকল পুথিতে 'স্থি' ইত্যাদি পাঠ দৃষ্ট হইলেও
সন্তবতঃ 'এ স্থি' ইত্যাদি প্রক্রুত পাঠ হইবে; কেন
না, 'স্থি' ইত্যাদি পাঠে প্রথম চরণে তুইটি মান্তা ক্ম
হর। ৩। 'তুরিতহিঁ' ইত্যাদি স্থলে 'তুমি তহিঁ'
ইত্যাদি ক, খ, ম। ৪। 'উদিত নহে' স্থলে 'উদিত নয়' ক; 'উদয় নহে' ম, চ। ৫। 'চিত'
ক, খ, প-র-সা। ৬। 'উপনীত' ক। १। 'গ্রপ'ম। ৮। 'বিফ্লার্যত'ক, খ, ম, চ।

जिक1

৯—১৬। "এত" ইত্যাদি। দৃতী ঐ কথা তিনিয়া অবিণৰে চলিলেন এবং প্রীক্লফের নিকট আসিরা উপস্থিত হইলেন; (তিনি) নমনের চঞ্চল ইলিত বারা তাঁহার সকল অভিপ্রার প্রীক্লফকে অবগত করাইলেন; প্নশ্চ কুমুদের দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া স্পষ্টভাবে বলিলেন —'কুমুদিনী তাহার গুণ ও সৌরভ বারা জগৎ জর করিয়াছে,—(এ অবস্থায়) স্থামবর্ণ ভূল কেন বিলম্ব করিতেছে?' দৃতীর এই বাক্যে নাগর-শিরোমনি সম্বর (প্রীরাধার সংকতক্ষে) গমন করিলেন; (ইহাতে স্থী-স্থানীর পদক্ষী) গৌরের জ্বন্ধ আনন্দিত হইল।

उक्त ।

ত্বদরি মাধব তুরা পথ হেরই
তুরিতে করহ অভিসার।
গশন উপরে উরল বিধু-মণ্ডল
বিষদ কিরণ পরচার॥

সমূচিত বেশ করহ বর চন্দ্রন কপুর-খচিত করি অঙ্গ। ছ্গ্ৰ-ফেন-সিভ অম্বর পহির্ছ কুঞ্জহি চলহ নিশক। **ठत्रग-कमाल** नृ-পুর তেজি স্থন্দরি চল তাহে শবদ-রহিত। এতহিঁ বচনে চললি গজ-গামিনি মনসিজ-মদে উলসিত ৷ নয়ন কমল-মুগ-খঞ্জন-গঞ্জন সচকিত হেরত গোরি। গৌরমোহন অন্ত-মানই আনবি শ্রাম-নয়ন চিত চোরি ॥৪৪॥১•২৬॥

(क्षांत्र १५

কুন্দ কুমুদ গজ-মোতিম হার।
পহিংল হৃদয়ে ঝাঁপি কুচ-ভার॥
থোরহিং শশধর-কিরণ বিধার।
বৈহন সময়ে কয়ল অভিসার॥
চৌদিকে সচকিত-নয়নে নেহার।
মদন-মদালসে চলই না পার॥
মিললি নিকুঞ্জে কুঞ্জ-নৃপ পাশ।
কহ কবিশেখর কেলি-বিলাস॥৪৫॥১০২৭॥
পাঠান্তর
১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৫৪ সংখ্যক পদ।

১। হহাপ-র-সাপুথির ১৪৫৪ সংখ্যক পদ ২। 'থোরই' ক ; থোরহি' চ।

ভতঃ সম্ভোগপদানি গেয়ানি।
পুনশ্চ দিনান্তরে।
শংৰাভ্যা।
ধনি ধনি বনি অভিসারে।
সন্মিন রকিণি : শ্রেম-ভরন্ধিণি
সাক্ষলি শ্রাম-বিধারে ॥ প্রশ্ন ॥

চলইভে চরণ मर्च हलू मधुकत মকরন্দ-পানকি লোভে। সোরভে উনমত ধরণি চুম্বয়ে কত যাহাঁ যাহাঁ পদচিক শোভে। কনক-লভা জিনি জিনি সৌদামিনি বিধির অবধি রুপং সাজে। किकिनि जनजनि বঙ্করাজ-ধনি চলইতে স্থমধুর বাজে। হংসরাজ জিনি গমন স্থলাবণি অবলম্বন স্থি-কান্ধে। মিললি নিকুঞ্জ-বনে व्यवस्थात ७८१ পুরাইতে শ্রাম-মন সাধে 18 ৮ ১০২৮ ॥ অত্র সম্ভোগপদং সম্ভবপরং গেয়ম। ইতি তৃতীয়শাখায়াং ত্রয়োদশপল্লবঃ। পাঠাশ্বর ১। 'কনক-লভা' ইভ্যাদি আটটি পংক্তির इरम थ পुषित्र शार्ठ, यथा--'লোচনে অম্বন **খ্যন-গ**ঞ্জন রঞ্জন বসন বিহাজে। किकिनि त्रनत्रनि বঙ্করাজধনি চলইতে সুমধুর বাজে॥ কনক-লতা জিনি জিনি সৌদামিনি विधित्र व्यविध क्रम त्राट्य। অনস্ত দাস ভণে গমন নিকুঞ্জ বনে পুরাইতে স্থাম-মন-সাধে ।'

অথ রূপোলাসঃ।

শ্রীমদেগারচন্দ্রঃ।
ধানদী।>
গোরাটাদ কিবা ভোমার বদন-মগুল।
কমক-কমল কিয়ে শরদ-পূর্ণিমা-শ্রদী
নিশি দিশি করে ঝলমজু ॥ ঞা॥

২। 'কুপ' স্থলে 'কুপ' ক, চ।

ভোমার বরণখানি জমু হরিতাল জিনি किए प्र थित्र विक्री किनिया। কিয়ে নব গোরোচনা কিয়ে দশবান সোণা মনমথ-মন-মোহনিয়া ৷৷ অমিয়া-মধুর ভাষা খগপতি জিনি নাসা তুলনা না হয় ত্রিভুকনে। আকৰ্ণ নয়ান-বাণ ভুক্ত-ধন্ম-সন্ধান किंगिक श्रान्य नाती-मदन । আগামুলম্বিত ভুঙ্গ বিলেপিত মলয়জ অঙ্গুরী বলয়া তাহে সাজে। সিংহ জিনি মধ্য সরু হেম-রম্ভা জিনি উরু চরণে নৃপুর বঙ্করাজে॥ জিনি ময়মত্তঃ হাতী হংসরাজ জিনিং গতি দেখিয়ে এ হেন রূপ-রাশ। কহুয়ে গোবিন্দ ঘোষ মোর মনে সম্ভোষ নিছনি যাইয়ে হেন বাসি ॥১॥১০২৯॥ পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৫৫ সংখ্যক পদ। ২। 'তহু'প-র-সা। ৩। 'নারীর মনে' ধ, प, প-র-সা। ৪। 'মদমন্ত' ক, খ। ৫। 'হংসরাজ জিনি' ফলে 'হংস জিনিয়া' ক, খ। ৬। 'দেখিয়া' ক, খ, খ, চ।

यहरें।

আহা মরি গোরা-রূপে কি দিব তুলনা।
তুলনা নহিল যে ক্ষিল বান সোণা॥
মেঘের বিজুরী নহে রূপের উপাম।
তুলনা নহিল রূপে চম্পকের দাম ॥
তুলনা নহিল স্বর্ণ-কেডকীর দল।
তুলনা নহিল গোরোচনা নিরমলা॥
কুকুম জিনিয়া অজ-গন্ধ মনোহরা।
বাহে কহে কি দিয়া গঢ়িল বিধি গোরা॥
॥২৪১০৩০॥

ভাটিরারী।১

ওহে গৌর বসিয়া থাকহ নিজ ঘরে। দেখিয়াও রূপ ঠাম মোহে কত শত কাম युवि देशत्रक किरम धरत ॥ धर । হেরিয়া বদন-ছাঁদং उपय ना करत हान्य লাজে যায় মেঘের ভিতরে। সোদামিনী চমকিল চম্পক শুখাঞাত গেল ' লাজে কেহ সোণা নাহি পরে॥ ভাঙ্ গ-ধতু ভ ক্সমায় ইন্দ্ৰ-ধনু লাজ পায় দশনে মুকুতা নাহি গণে। দেখিয়া চাঁচর কেশ চামরী হাড়িল দেশ চঞ্চল জলদ আন ভাবে॥ मृगान राभाग्र नाटक দেখিয়া যুগল ভুজে রজ-ভূমি জিনিল হিয়ায়। হরি হেরি মধ্যদেশে কন্দরাতে পরবেশে উরুতে কি রাম-রম্ভা ভায়। স্থল-পক্ষ আদি বহ তরুতে শুখায় কত না ভোলয়ে হেরি পদপাণি। শুন গৌরস্থন্দর এই ভোমার কলেবর ভুবন-বিজই অনুমানি ।৩॥১০৩১॥ পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৫৭ সংখ্যক পদ।

২। 'চাদ'চ। ৩। 'গুথাইরা' ব, চ, 'গুথাই'
প-র-সা। ৪। 'ভাঙ' ক, প-র-সা। ৫। 'চমরী'
ক, খাঙা 'ডোলার' প-র-সা। ৭। 'বিজ্ঞাই' ক।

ভৰা মাৰ ৷১

দামিনি-দাম-দমনং-ক্লচি দরশনে
সূত্রে গও দরপক দাপ।
সোন কুমুদ তাহে কোন গণিয়ে বের
প্রান্তর-অক্লণ-সন্তাপ ।

গোরা-রূপে যান্ত বলিহারি।
হৈরি স্থাকর মুরছি চরণ-তলে
পড়ি দশ-নখ-রুপ-ধারী ॥ গ্রুণ ॥
স্থবরণ-বরণ কেরি নিজ কুবরণ
মানি আপন মনতাপে ।
নিজ-তমু জারি ওসম সম করইতে
পৈঠল অনল-সন্থাপে ॥
যা সম বিধিক অধিক নহেশ অমুভবি
তুলনা দিবার নাহি ঠোর।
জগদানন্দ কহুঁ পহুঁক বুলনা পহুঁ
নিরুপম গোরকিশোর ॥৪।১০০২॥

পাঠাস্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৪৫৮ সংখ্যক পদ। ২। 'মদন'খ। ৩। 'দ্রে'ক; 'দ্র'খ, ছ। ৪। 'শোণ'ক; 'সৌন' প-র-সা। ৫। 'গণিরা' চ। ৬। 'মনস্তাপে' ক। ৭। 'জারস' খ। ৮। 'নাহি'ক, প-র-সা।

টীকা

১—৪। "দামিনি" ইত্যাদি। (শ্রীগোগাদের) বিদ্যুৎপুঞ্জন্তরী কান্তি দ'ন করিয়া (সৌন্দর্য্যের) গর্ম্ম কারীর দর্প বিদ্যুতিত হইল; সেই কান্তির নিকট শন-পূলা কিংবা প্রস্তাতের অন্ধ্য-কিরণ কে গণনা করে?

उषा त्रांग ।)

গৌর কলেবর

চিকুর ঐছে নেহারি।
(জমু) হেম মহিধর-^২

শেই উর পর ডারি⁸ ॥
শীন উর উপ
বীত-শীভিম রক্ত^e।
(জমু) কনর-ভূধর

হ্র-ভর্জিনি গল ॥

আধ অম্বর

আধ সম্বরণ

আধ অন্ধ হংগোর।
(জমু) জলদ সঞ্জে অভি বাল রবি-ছবি
নিক্সে অধিক উলোর ॥
অগত-আনন্দ পত্ক পদ-নথ
লখই > এছন ছন্দ।
(জমু) মীন-কেতন করু নিমঞ্ক

পাঠান্তর

Бत्रा (परे प्रभ हम्म ॥८॥) ०७०॥

১। ইছা প-র-সা পুথির ১০৫> সংথ্যক পদ।

এই পদের প্রত্যেক অবুগা ও বুগা চরণে ব্ধাক্রমে

নিম্লিখিত মাতা আছে; ব্ধা.—

৩+৪ ৩+৪ (অবুণাচরণ)
৩+৪+৩ (বুণাচরণ)
২। 'মহীধর' ক, খা ৩। 'শেধকে' চ। ৪।
'কেই' ইত্যাদি ফলে 'দেই উক' ইত্যাদি ক, ধ, খ;

'কেই' ইত্যাদি হলে 'দেই উক' ইত্যাদি ক, খ, च; 'দেলি মনমণ ঢাৱি' প-র-সা। ৫। 'নীতিম রক' হলে 'নিতিম রক' ক, প-র-সা; 'নীতমতক' থ, च। ৬। 'অম্বরে' প-র-সা। १। 'সহক' প-র-সা। ৮। 'তমু' প-র-সা। ১। 'কগদানন্দ' খ, চ। 'কগদানন্দ' পাঠে যতি-ভক্ত ঘটে। ১০। 'হেরি' প-র-সা। ১১। 'নিরম্ভন' ক, খ।

টাকা

>--৪। "পৌর" ইত্যাদি। (ঐগোরান্দের)
দেহ পৌর-বর্ণ; মস্তক ও কেশ এরপ মনোহর দেখিভেছি, খেন স্থবর্ণ-গিরির শিখরে (কেছ) চামর
(সেই গিরির) বক্ষ পর্যান্ত ঝুলাইরা দিয়াছে।

৫—৮। "পীন" ইত্যাদি। (তাঁহার) বিশাল
বক্ষে উপবীতের খেত-শোভা প্রাপিত হইরাছে; বেন
স্থব-গিরিকে বেষ্টন করিরা স্থর-নদী গলা শোভা
পাইতেছে।

অথ শ্রীরাধিকায়াঃ সপ্থ্যক্তিঃ।

কাষোদ কলৰ্প i>

ধনি ধনি কো বিহিং বৈদগধি-সাধে।
মদন স্থা-রসে যো নিরমাওল
তুরা মুখ-মগুল রাধে ॥ গ্রু ॥
ভাল° আধ-ইন্দু-অমিয়া আগোরল
ভাঙ, তিমির ঘন ঘোর ।
কিরণ-বিকাশিত শ্রুতি-কুবলয় পরি
ধাবই নয়ন-চকোর ॥
নাসা-শিখর সমুখে উদিত পুন
দিন্দুর-ভামু উলোর ।
অহনিশি বদন-কমল তহি বিক্সিত
শ্রাম ভ্রমর নাহি হোড় ॥
অরুণ-কিরণ পুন অধরে হেরি হেরি
হার-ভরপিণি-তারে ।
কুচযুগ-কোক শোক নাহি জানত
গোবিন্দদাস কহ ধীরে" ॥৬॥১০৩৪॥

পাঠান্তর

)। देहा श-त शूचित्र १७७ श्रःश्चक शम।
'कारमाम कम्मर्भ' खरण 'काम कम्मर्भ' क। २।
'विभि' थ। ७। 'छारण' थ, थ, श-त्र। ६।
'क्र्रि' क।

गिका।

১—৩। "ধনি ধনি" ইত্যাদি। হে শ্রীরাবে! বৈদ্য্যীর আকাজ্জার বে কল্প স্থা-রস বারা তোরার মুখ-মণ্ডল নির্মাণ করিল, (তাহার তুলনার) বিধাতা অর্থাৎ ব্রন্ধা কে? (এইরপ অম্বৃত্তমর নির্মাণ কোনল কেবল স্থরদিক কলপের পক্ষেই সম্ভবপর, অরদিক শ্রোচীন ব্রন্ধার পক্ষেইহা নিতান্তই অসম্ভব)। তুলনা ক্রন,—

'ৰডা: নৰ্গবিধৌ প্ৰকাণতিরভূচজো স্থ কাবিপ্ৰথ: পুৰাবৈক্যন: খবং স্থ মননো বানো স্থ পুলাকয়!

বেদাভ্যাসজড়ঃ কথং সু বিষয়ব্যার্ডকৌতৃহলো নিৰ্মাতং প্ৰভবেষনোহ্যমিদং ক্লপং পুৱাণো মুনি:॥ ৪—১৫। "ভাল" ইত্যাদি। (ব্রহার স্টিতে চক্র ও ক্র্যের, জ্যোৎসা ও অন্ধকারের যুগপং উमग्र এवः চকোর ও চক্রবাকের যুগপৎ খানন্দ সম্ভবপর নহে; এ স্থলে তাহাও দুষ্ট হইতেছে.— মুতরাং এরাধার রূপ ব্রহ্মার স্ট নহে—ইহা ৰেধাইবার জন্ত সধী বলিতেছেন) ভোমার ললাট অর্দ্ধ-ইন্যুর অর্থাৎ অইমীর চত্তের অমৃত এবং তোমার ভ্রমুগল (অষ্টমী-রব্দনীর) খোর অবকার সঞ্চিত করিয়া রাখিয়াছে; তোমার (ললাট-রূপ চন্দ্রের) কিরণে প্রক্ষৃতিত কর্ণের নীলোংপলের উপরে (ভোষার) নেত্র-ক্লপ চকোর ধাবিত হই-ভেছে। (নয়ন আকর্ণ-বিস্তৃত বলিয়া কবি লুপ্তোৎ-প্রেকা অনুকারের সাহায্যে চকোর নীলোৎপলের मधुनात्नत बन्न शांविक स्टेरक्ट विन्ना छे ९८ ११ का করিতেছেন)। (তোমার) নাদিকা-রূপ স্বর্ণ-গিরি-শৃংকর সমুখে আবার সিন্দুর-বিন্দুরূপ সূর্য্য উদিত হইয়াছে ও সেধানে দিবারাত্রে (সম-ভাবে) ভোমার ষ্থ-রূপ পদ্ম প্রক্ষুটিত ব্রিরাছে ; (স্তরাং) রুফবর্ণ ভ্ৰমর (অপর অর্থে-- শ্রীকৃষ্ণরপ ভ্রমর) উহাকে পরিত্যাপ করে না। (তোমার) মুক্তা-হার-রূপ ভটিনীর কুলে (ভোমার) কুচৰব্রপ চক্রবাক-ব্গল (ডোমার) অধ্যের (আরক্তিমতা-রূপ) অরুণ-কির্ণ দেখিয়া দেখিয়া (তৃপ্ত হওয়ায়) শোক জানে না ;— গোবিশ্ব-দাস ধীর-ভাবে এই কথা বলিতেছেন।

विहात ।

এ ধনি না করু পসাহন সানং।
এতত ও নহারি মুগধ মধুসুদন
দিন রজনীণ নাহি জান। প্রা
সিন্দুর-ভরুণ-অরুণ-ক্রচি-রঞ্জিত
ভাগ স্থাকর-কাঁতি।

সো ঘন চিকুর-ভিমির-ঘন-হুদ্বিভ
ইহ অতি অপরুপ ভাতি ॥
লোচন-যুগল কমল কিয়ে কুবলয়
শপ্তন চারু চকোর।
কাজরুণ-জালে পড়ত কিয়ে সংশ্যুণ
ততহিঁ ভ্রমই অলি-জোর॥
তবহু বেদ হাসি অধর দরশায়সি
অরুণিম কোমুদি-কাঁতি।
মোহিত জনকে কি ফল পুন মোহন
গোবিন্দদাস নাহি ভাতি॥৭॥১০০৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ১৬৮ সংখ্যক পদ। ২।

'এ ধনি' ইত্যাদি (প-র) স্থলে 'এ ধনি না কক্ষ
পসাহ নয়ান' ক, ঝ, ঘ, চ। সংস্কৃত 'প্রসাধন'

শব্দের অপভ্রংশ হইতে 'পসাহন' শক্ষ ও উহার অস্ত্য
ন-কারের লোপ দারা 'পসাহ' শক্ষ সিদ্ধ হইলেও
এ স্থলে সাধারণতঃ প্রসাধনের কথা না বলিয়া নয়নপ্রসাধনের উল্লেখ করার সঙ্গতি দেখা বায় না;
স্থতরাং প-র পুথির পাঠই সমীচীন বটে। ৩।
'স্ক্রের' প-য়; ৪। 'দিন রক্ষনী' স্থলে 'দীন
রক্ষনি' ঘ। ৫। 'চয়' প-র। ৬। 'কাকর' ঘ।
৭। 'পড়ত' ইত্যাদি স্থলে 'গড়ব যব আকুল' প-র।
৮। 'তবছ বে' স্থলে 'তবহি বো' ক, প-র;
'তবহি বে' খ।

টাক 1

১—৩। "এ ধনি" ইত্যাদি। হে ছব্দরি!
অন্ত সাৰ-সজ্জা করিও না; ইহা অর্থাৎ তোমার
আভাবিক রূপ দেখিরাই শ্রীক্ষফ মোহিত হইরাছেন,
—দিবা কি রাজি জানেন না! (অর্থাৎ তিনি এরপ
সুধ্ধ হইরাছেন বে, তাঁহার অতি স্থল জ্ঞানও বিল্প্থ
হইরাছে!)

ততো রূপোল্লাদেন অভি**নারোপ-**যুক্তং বেশং রচয়তি।

ष्ट्रज़े।

সিচয়মুদ্ধ্য হৃ বয়াদপ্লম্।
বিলিখান্য ভূ হ-মকরাক্সম্ ॥
ইহ নহি সঙ্কুচ পক্ষ-নয়নে ।
বেশং তব করবৈ রতি-শয়নে ॥
রাধে দোলয় ন কিল কপোলম্।
চিত্রং রচয়ান্যহমবিলোলম্ ॥
তব বপুর্য সনাত্ন-শোভম্ ।
জনরতি হৃদি মম কঞ্চন লোভম্ ॥৮॥১০৩৬॥

টাকা

১-৮। "সিচয়"মিত্যাদি। (হে রাধে!) খং ভব হাদয়াৎ (বফোদেশাৎ) দিচয়ং (বসনং) অরং ৰথা ভাৎ তথা উদঞ্জ (অপদারয়); কন্মাৎ 🕈 -- অহং তত্ত্র অন্ততং (বিচিত্রং) মকরাকরং মকরা-कांत्र-िक विनिधामि (घनठन्मनत्रामन त्रहश्चामि)। (इ श्रा-तिर्छ। हेर (अब ध्रमांश्त) निरं मङ्ग्र ন সন্ধৃতিতা ভব; কম্মাং ? তব রতি-শয়নে (রতি-শ্ব্যাবিষয়ে) বেশং কর্মটব (রতি-শ্ব্যোচিতং) বেশং রচরামীতি ভাব:। হে রাধে। দং কপোগং (গগুং) न किन (मानव (न भक्षानव) अहः अविरनानः काइकानः वर्षा छा ९ छथा हिन्दः ब्रह्मिम । कर्णान-দোলনে চন্দন-চিত্রজালম ফুলরং আদিতি ভাব:। অন্ত সনাতনশোভং স্থচিরস্থারি-মণ্ডনং সনাতনাৎ শ্রীকৃষ্ণাৎ শোভা যক্ত তৎ শ্রীকৃষ্ণেন কৃত-শোভং ইতি ভাব: তব বপু: (অঙ্গং) মম হৃদি ক্ষন লোভং (কামপ্যনিক্তিনীয়াং লালসাং) জনয়তি (উৎপাদরতি)। পকে সনাতনেন কবিনা (স্থী-স্থানীয়েন) রচিতা শোভা যত্র তং তাদৃশং বপুঃ।

অমুবাদ

>--। হে শ্রীরাধে। তুনি বক্ষঃস্থল হইতে
বসন কিঞ্চিৎ অপসারিত কর; আমি (সেখানে)

বিচিত্র মকর-চিত্র অন্ধিত করিব। হে ক্ষন-লোচনে। ইহাতে সন্ধুচিত হইও না; আমি ভোষার রতি-শ্যোচিত বেশ রচনা করিতে চাহি। ভোষার কণোল সঞ্চালিত করিও না, আমি উহাতে দ্বি-ভাবে চিত্র রচনা করিব। অন্ধ ভোমার স্থিব-শোভা যুক্ত দেহ আমার ক্ষরে কি এক লোভ জ্লাইতেছে।

এই পদটি বে শ্রীক্বফের উক্তি, তাহা একটু প্রাণধান করিলেই প্রভীত হইবে; স্বতরাং পদের টাকা তদমুসারেই করা হইরাছে। বৈফ্বদান বে কি অর ইহা স্থীর উক্তিরপে সন্নিবেশিত করিয়াছেন, তাহা বুঝা যার না।

কঞ্জ-চরণযুগ যাবক-রঞ্জন

খঞ্জন-গঞ্জন মঞ্জির বাজে।
নাল বসন মণি-কিক্ষিণি-রগরণি

কুঞ্জর-গমন- দমন খিনং মাঝে॥

সাজলি শুমি বিনোদিনি রাখে।

সক্ষরি রক্ত-তর্মিণি রক্তিণি

মদন-মোহন-মন-মোহন-ছাঁদে॥

কনক-কটোর চোর কুচ-কোরক

জোরে উজোরল মোভিম-দাম।

ভুজযুগ খীর বিজুরি পরি মণিময়

কঙ্কণ ঝনকিতে চমকিত কাম।

মধুরিম হাস স্থারস-নিরসন।

দশন-জোভি জিভি মোভিম-কাঁভি।

স্ভগ কপোল লোল মণি-কুণ্ডল

দশ দিশ ভরল নয়ন"-শর-পাঁতি I

কাঁপলং কবরি ভালে অলকাবলি
ভাঙু-ধসুয়া জসু মনমথ সেবি।
গোবিন্দদাস হৃদয়ে অবধারলং
মুরতি শিলার-দেবং-অধিদেবি॥

1 FO - (16)

পাঠান্তর

১। 'কুজার-দমন-গমন' ক, খ। ২। 'ক্ষীণ' ক; 'ক্ষিণ' ঘ। ৩। 'মনমোহিনী' খ; 'মনমোহিনি' ঘ; 'মন' চ। ৪। 'কুসুম' ঘ। ৫। 'ঝাঁপলি' ক, চ। ৬। 'অবধারলি' ক। ৭। 'দেবী' খ।

বিহার্গড়া ৷১

এ ধনি আঁচরে বদন ঝাঁপাউং। न्वथन मधून हरकात विधुक्तम অনত অনত চলি যাউ॰॥ মুখ-মগুল কিয়ে শরদ-সরোরুহ ভালহি অটমিক চন্দ। মধুরিপু-মরমেং ভরম যাহাঁ প্রেছন তাহে কি গণিয়ে মতি-মন্দ। জনি কহ গরবে পাণিতলে বারব ও থল-কমল-উল্লোর। তহিঁ নখ-চাঁদ-ভরম ভরে ঐছন• ততহিঁ পড়ত জনিণ ভোর॥ ভাঙু-ধনুয়া কিয়ে হৃতনু ধুনায়সি यह भरत गितिथत कैं। । সো কিয়ে অতমু-পতগ-শিরে ডারসি গোবিন্দদাস-হিয়ে তাপ ॥১•॥১•৩৮॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পূথির ১৬।৭ সংখ্যক পদ। ২। 'বাণাঙ' ক; 'বাণাঙ' চ। ০। 'বাঙ' ক। ৪। 'বর্ষ' ক। ৫। -'বাহা' প-র। ৬। 'বাকুল' প-র। ৭। 'বানি' ক।

ोक।

>-- ০। শা ধনি ইতাদি। হে অস্বরি! তুমি অঞ্চ দাবা বদন আবৃত কর; সূত্ত শ্রমর, চকোর ও রাজ্ অভাক্ত হানে চলিয়া যাউক!

৪—१। "মুখ-মগুল" ইত্যাদি। (ইছা)
মুখ-মগুল, কি শরং-কালের পলা । ললাট, কি আইমীর চন্দ্র দু বেধানে (চতুর-চূড়ামনি) প্রীক্ষকের
মনেই এইরূপ ভ্রম হয়, তাহাতে বৃদ্ধিনকে
(অর্থাং ভ্রমর, চকোর ও রাহকে) কি গ্রানা
করিব । অর্থাং ভ্রমর ইত্যাদির বে ভ্রম অব্যাহে,
তাহাতে কি সন্দেহ আছে।

৮—>>। "জনি" ইত্যাদি। গর্ম হেতু বলিও
না বে, (উহাদিগকে) কর-তল দারা বারণ করিব;
(তাহাতেও অনর্থ ঘটিবে; কেন না,) তোমার সেই
কর-তল স্থল-পদ্মের হার উজ্জন (কান্তিবিশিষ্ট);
তাহাতে নথ-চক্র শোভা পাইতেছে। স্থভরাং ঐরপ
লম-বশতঃ মৃশ্র হইরা পাছে তাহারা বাইরা পড়ে।

১২—১ং। "ভাঙ্" ইত্যাদি। (শ্রীরাধা স্থীর পরিহাস-বাক্য শুনিরা জা কুঞ্চিত করার, স্থী প্নরার পরিহাস করিয়া বলিতেছেন) হে স্থানরি! ভোমার জা-রূপ ধ্যু কি জ্যু কম্পিত করিতেছ। বে ধ্যুর শর-বর্বনে (অর্থাৎ কটাক্ষ-বালে) স্বরং গিরি-ধারী অর্থাৎ বীরশ্রেষ্ঠ শ্রীকৃষ্ণ কম্পিত হন, তুমি (মশা মারিতে কামান দাগার স্থার) সেই শর কি জ্ঞু কন্দর্প-রূপ পতকের মন্তকে নিক্ষেপ করিতেছ। (ইহাতে) গোবিন্দদানের সদরে ক্লেশ হুইতেছে।

यहरे ।)

হন্ত ন কিমৃং মন্থরয়সি সন্ততমভিজন্নম্।
দন্ত-বোচিরন্তরয়ভি॰ সন্তম্মননাম্॥
রাধে পথি মৃঞ্ ভূরি সন্তম্মভিদারে।
চারয় চরণাস্কুহেং ধীরং॰ প্রকুমারে॥ এছ ॥
সন্তমু ঘন-বর্ণমতুল-কুন্তল-নিচয়ান্তম্।
ধ্বান্তং তব জীবজু নথ-কান্তিভিরভিদান্তম্॥

সসনাতন-মানসাত • যান্তী গত-শঙ্কম্। অতীকুরু মঞ্-কুঞ্জ-বসতেরলমক্ষম্॥১১॥১০৩৯॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পূথির ১৪৬১ ও প-র পূথির ১৫।১৭ সংথ্যক পদ। 'স্ছই' স্থলে 'স্হিনী' দ, চ; 'আশাবরী' প-র। এই সংস্কৃত পদের প্রত্যেক চরণে নিম্নলিথিত রূপ মাজা-বিভাগ দৃষ্ট হয়, যথা,—৩+৩+৩+৩+৩+৪=২২ মাজা। ২। 'কিং' ক, চ; 'কিল' প-র-সা। ৩। 'রোচিরস্করয়ভি' স্ক্রেণিরস্করয়ভি' ক, চ, প-র সা, প-র; 'ফ্রিন্রস্করয়ি' খ। 'ফ্রিণ পাঠে ছলোভঙ্গ ঘটে। ৪। 'ধীরে' ক, ধ, প-র-সা। ৫। 'সসনাতনমানসাঞ্জ' (প-র) স্থলে 'সা সনাতনমানসাঞ' ক, ধ, দ, চ,

हो का

>-- b । "रुख" ामि । (रह द्रार्थ !) रुख हेकि খেদে। সম্ভং (সভতং) অভিজ্ঞাং (অভিভাষিতং) किम् (क्षः) न महत्रप्रति (न निवर्तप्रति) छत কিং দুৰণমিতি চেত্তজাহ—তব দস্ত-রোচিঃ (দুশন-ছাতি:) चनद्रः (वहनः) मखमनः (चक्कातः) অস্তরণতি (বিদ্রম্বতি)। (দশন-কাশ্ব্যা) বিদু-রিভাক্ষকারে ব্যুনি ত্বাভিদার: সুলভপ্রচারো ভবিষ্ট ঠাতি ভাব:। হে রাধে। তং পথি (বন্ধ নি) **অভিসা**র-বিবরে ভূরি (প্রভূতং) সম্ভ্রমং (ভরং) মুঞ্চ (ভাজ) কিঞ্চ তব স্থাকুমারে (স্থামলে) চরণাস্ক্রে (পাদাস্তোকে) পদ্মবৎ স্কোষলং পদ-ৰন্দমিত্যৰ্ব: ধীরং যথা ভাৎ তথা চারম্ব (সঞ্চাল্য)। নমু দক্তকান্তিৰ্মরা পিছিতা নথকান্তিপিধানে কোহভূা-भात रेखि टिखवार-छव चनवर्गः ((मच-क्रिहे) অতুল-কুন্তল-নিচয়ান্তং (অতুপম-কেশ-সমূহ-প্রান্তং) সম্ভন্ন (বিস্তারর) নখোপরীতি ভাবঃ। তেন কিং ভাদিত্যতাহ—তব নথ-কাম্বিভি: অভিশাহং मिर्वात्रिष्टः श्वीखः (छिमितः) कौरकु कथिकः সর্বং সভতান। অভ সর্কনাশোন কার্য্য: স্বীরা-

ভিদারামূক্দথাদিতি ভাব:। সসনাতনং (সনাতনবুক্তং) মানসং (চিন্তং) বড়া: সা ছং অভ গতনহং
(বিগত-ভরং) বথা ভাৎ তথা বাস্তী (অভিসরতী)
মজ্-কুঞ্জ-বসতে: (ফুল্র-কুঞ্জ-গৃহক্ত) অবং (কোড়ং
মধামিতি ভাব:) অসীকুক্ল (খাকুক্র)।

অমুবাদ

১-৮। হে প্রীরাধে! হার! তুমি কেন
অনর্গন আলাপ একটু বন্ধ কর না? ভোমার
দশন-কান্তি প্রভূত অন্ধকার বিদ্রিত করিতেছে!
তুমি পথে অভিসারের প্রবন্ধ আশ্বা পরিত্যাগ কর
ও ভোমার স্কোমল পদ-পঙ্ক ধীর-ভাবে চালনা
কর। ভোমার মেঘ-বর্ণ অতুলনীয় কুন্তলের
প্রান্ত নথ-রাজির উপর প্রেমারিত কর,—ভোমার
নথ-কান্তির ঘারা নিবারিত অন্ধকার জীবিত থাকুক।
সনাতন-গত-চিন্তা তুমি অন্ত নিঃশন্ধ-ভাবে অভিদার
করিয়া মনোহর কুঞ্জ-গৃহের জোড়কে অন্ধৃত কর।

(क्स्रांड 15

কলয়তি নয়নং দিশি দিশি বলিতম্।
পক্ষমিব মৃত্ব-মারুত-চলিতম্ ।
কেলী-বিপিনং প্রবিশতি রাধা।
প্রতিপদ-সমুদিত-মনসিজ-বাধা ॥ এ ॥
বিনিদ্ধতী মৃত্ব-মন্থর-পাদম্।
রচয়তি কুঞ্জর-গতিমনুবাদম্ ॥
জনয়তু রুজগজাধিপ-মুদিতম্।
রামানন্দ-রায়-কবি-গদিতম্ ॥১২॥১০৪০।

পাঠাক্তর

>। এই পদটি ১০১৬ সংখ্যক পদ-ব্লপে ইতি-পূৰ্বে উদ্ভ হইরাছে; স্ভরাং পাঠান্তর, টাকা ও অন্তব্য উক্ত পদে এইবা।

পূর্ব্বরাগাভিদার:।

শহরাত্রণ।>
এ ধনি পত্নিনি পড়ল অকাজ।
জানি ভেটহং হরি কুঞ্জকরাজেও॥ গ্রন্থ॥
তুহুঁ গজ-গামিনি মতি অতি ভোর।
উচ কুচ-কুস্ত-গরবে নাহি ওর॥
বোবন-গরবে নাও হেরসি পত্থ।
পরিমলে বাসিত করসি দিগন্ত॥
যব ভোহে করব অরুণ দিঠি-ভক্ত।
নিরড়ে না হেরবি সহচরি সক্ত॥
বো গ্রন্থল না রাথবা মোভি॥
গণ্ডে করব যব দশনক ঘাত।
মুরছি পড়বি তহিঁত ধরনি নিপাত॥
বোবিন্দদাস যবহুঁত সোভ্রাব।

17017 - 871

পাঠান্তর

অধর-স্থা দেই তবহি জিয়াব॥

১। ইহা প-র পুথির ১৬।১০ সংখ্যক পদ।
'শহরাতরণ' হবল 'ধানশ্রী' প-র। ২। 'ভেটত'
ক, খ। ৩। 'কুশ্লক রাজ' হবল 'কুশ্লক মার' ক,
চ। ৪। 'গ্লবে না' হবল 'মদে নাহি' প-র। ৫। 'রাথবি' ক, খ। ৩। 'তহিঁ' শস্ল ক, খ পুথিতে নাই। ৭। 'তবহুঁ' প-র। ৮। 'দেই তবহিঁ' হলে 'রসে পুনহি' প-র।

পশু মিলনম্ ।

থাননা ।

নৃপুর-কলরব শুনইতে মাধবং
কুঞ্জক হোই বাহার ।

চলইতে থলই বলইণ সব স্থাভরণ

অধ্য নহত সম্ভারণ ॥

সজনি অদভূত কামুক নেছ।
আগুসরি আদর ভাবহি বাদর
কি করব না পায়ই থেছ। এ ।
কর গহি সঙ্কেত লেই॰ পরবেশই
করু নিরজন নিজ হাত।
শীকরযুত সর-সিজ-দলে বাজইদ
মলয়ল লেপই গাত।
রাই পুন দরশ-পরশ রসে নিমগন
লাজহি অবনত মুখা।
হেরি রাধামোহন সোই স্প্শোভনা

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৬২ ও প-র পুথির ১৫।০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'চমকই' প-র-সা; 'চমকিত' প-র। ৩। 'কুঞ্জনে' প-র। ৪। 'পড়ই' ক। ৫। 'সাজার' থ, 'সজাল' প-র। ৬) 'পুন' প-র। ৭। 'করু নিরজন' বংল 'করু নীরাজন' ক, চ; 'করই বিজন' প-র। ৮। 'শীকর-মৃত' ইত্যাদি স্থলে 'শীকরমৃত সরসীদলে বীজই' ক, চ, প-র-সা। ৯। 'মৃথ' ক, খ, প-র-সা, প-র। ১০। 'হেরি' ইত্যাদি স্থলে প-র পুথিব পাঠ ম্থা— 'পোবিন্দ দাস হেরি সোই শোকন'। ১১। 'হুখ' ক, খ, প-র-সা, প-র।

শ্রীকৃষ্ণদ্যোক্তিঃ রূপোল্লাদঃ।

छथा द्रांत्र ।>

তুরা মুখ চাঁদ কমল আদি কবলই
নিবিড় চামর জিভি কেশ।
কনক কমল অলি জিনিং অলকাবলি
শ্রুতি অছু গিধিনি বিশেষ ।
তক্ষণি-মুকুট-মণি গোরি।

জ্মপুগ নরতনে° কাম-ধমু[®] কম্পিত পরাণ-পুতলি তুহু মোরি॥ ধ্রু॥ **ठक्क नग्नन इन्होत्त निक्र इ** গণ্ডহি জিতল মুকুর। নাসা ভিলফুল° অধর পভারকুল শ্বিত জিতি^{*} অমিয়া কপুর^{*}। কুন্দ করগ-বিজ জিতি ছিজ-লাবণি কণ্ঠহি কন্থক শোভা। বাহু মুণাল করযুগ পক্ষজ मयू मन-मधुकत-(लांडा ॥ কুচযুগ কোক লোম ভুঞ্জিনি ত্রিবলি ত্রিবেণী-বিলাস। মাঝ বর সিংহ নিতম্ব করি-কুস্ত উরু রম্ভা করু উপহাস 🛚 পদ থল-কমল নথ জিত' চাঁদ কত লাবণি অমিয়া-ভরক। রাধামোহন পত্ত কহইতে ঐছন ভাবে অবশ ভেল অন্স ॥১৫॥১০৪৩॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৩০ সংখ্যক পদ।

২। 'জিভি' প-র-সা। ৩। 'জেবুগ নরতনে'
হলে 'জেবুগল রাডনে' ক; 'জেবুগল রডনে' ও; 'জবুগল নবডেনে' চ। ৪। 'কাম-ধহ' হলে 'ভহ
আভি' ক। ৫। 'ভিলক ছ্ল' ও। ৬। 'জিভ'
অ, চ। ৭। কিপুরি' ক। ৮। 'বীজ' ক, ও।

>। 'জিভি' ক, ধ।

शमनी ।)

নির্মিল কো বিধি কেলি-কলানিধি
নওল কিশোর কিশোরী।
ছুহঁ লোহাঁং নির্ধি পুলককুলে আকুল
হাসি কহই গিরিধারী।

শুন শুন ফুন্দরি রাধে। তুয়া মুখ-মাধুরি লেশ নাহি হেরি কমল মুকুরবর চাঁদে। গ্রা যো বিধু শোভিত সোই কলঙ্কিত বিরহি-বিদারণ-শূল। নিরখি বদন তব সোই জুড়ায়ত ইপে শশি না ভেল তুল । मद्राप्त मिलन भद्राम यमि कल-कन মাৰ্জ্জন-বিহিন গ্ৰামার। তুয়া মুখ মলিন কবছাঁ নহে স্থলারি नोद्रत निह्य উक्तियात्र॥ নিতি নিতি নলিন মলিন জল মাঝহিং **८७** जरे जिल मधुभान। তুয়া মুখ-কমল বিমল নব পরিমল মঝু মন মধুপ সমান # শুনি ধনি বাণি অলস দিঠি-পঙ্কজ প্রিয় সহত্রি হেরি হাস। নির্বিতে শ্রাম প্রসারসে মাতল কহতহিঁ নম্পন দাস ॥১৬॥১•৪৪॥ পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৬৪ সংখ্যক পদ।
২। 'ছ্ইঁ।' ক্, চ। ৩। 'তুল' ক, থ, প-র-সা।
৪। 'বিনহি' প-র-সা। ৫। 'মলিন' ইত্যাদি হলে 'মলিনী হল মাজহি' প-র-সা।

পানায়।
তান শুন নাগর সকল কহিতে পার
কে বুঝিবে বচন-তরক্ষ।
একে তুহুঁ বিদগধ ভাহে প্রিয়ম্বদং
তাহে কভ রসবভি সক্ষ ॥
মাধব রসিক রসায়ন-বাণী।
অঞ্চবধু-বদন , বিমল বর রাজীবিশ
ভাহে ভামর ভূহুঁ জানি ॥ ধা ॥

জাড় নয়ন করি অলক তিলক হৈরি
মুচ্কি মুচ্কি করু হাস।
সো হসনায়ত অধরে মিলায়ত
তঁহি মধু-মঞ্ল ভাষ ॥
তাপনি-তীর তার নিতি ধায়সি
তাহে এত শীতল দেখি।
স্বরধুনি দেবি সেবি কিয়ে স্থমধুর
পুছহ নন্দ⁸ এক সাথি॥১৭৮১০৪৫॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৬€ সংখ্যক পদ।
২। 'প্রিয় সম্বদ' ব। ৩। 'বিমলবর রাজীব' স্থেলে 'বিমল প্রাজিভ' চ; 'বিমল রাজিভ' প-র-সা। ৪। 'নন্দন' প-র-সা।

পুনশ্চ শ্রীকৃষ্ণস্থোক্তিঃ। বালা ধানশী।>

ফুলরি, আন-গুণে নহেই মোর বচন মধুর।
তুরা পরসাদে সাধ সব পুর॥
গান-সঙ্গ কভুই না,কছবি মোর।
চাদ না তেজই কবহু চকোর ॥
তুরা গুণ-গারন বয়নই হামার।
তুরা হৃদি শীতল পঙ্কজ-হার॥
তুহু দরপণ বিমু সব আদ্মিয়ার।
মিছ্ নহ নন্দই কহয়েই কত বার॥
॥১৮॥১০৪১॥

পাঠাম্বর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৬৬ সংখ্যক পদ। ২। 'নহ'ক,চ, প-র-সা। ৩। 'কব'প-র-সা। ৪। 'বরান'চ। ৫। 'দরশন'ক,খ, প-র-সা। ৬। 'নক্ষন'প-র-সা। ৭। 'কহত'প-র-সা।

कृषानी ।>

ছহঁ রসে ভোর হেরি পাঁচ-বাণ।
কেলি-কলা লিয়ে করত সন্ধান।
দেখ পুন চেতন ছহুঁ অবলম্ব।
পুনহি অচেতন যব পুন চুম্ব॥
বিপুল পুলক বর স্বেদ-সঁচার।
চির থির নয়নে নার অনিবার॥
কাঁপই থরহরি গদ-গদ ভাষ।
ছহুঁ ছুহাঁ পরশনে কডছুঁ উলাস॥
আন-আন-সন্ধ-রন্ধে জরু অন্ধ।
কো করু অমুজব প্রোম-তরক্ব॥
নিতি নিতি ঐছন হোয়ত বিলাস।
কব হেরব রাধানোহন দাস ॥১৯১১০৪৭॥

পাঠান্তর

১। এই পদটি ইতিপুর্বে ৭৬২ সংখ্যক পদ-ক্লপে উদ্ধৃত হইয়াছে; প্রতরাং পাঠান্তর ও টীকা উক্লপদে এইবা।

বিহাগড়া ৷১

রভি-ত্থ-শয়ন-নিবেশহি হুলারি
প্রমুদিত-মানস ভেলি।
বিছুরল আন আন কেলি-কৌতুক
অনুগত নিধুবন কেলি॥
অদভূত মদন-বিলাস।
রাইক দেহ-দণ্ড পরিশোভিত
শ্রমজল-মুকুতা বিকাশ॥
নিমিলিত নয়ন বয়ন-বর শোভন
অলখিত সহজহি হাস।
অনধিন বাহ্-বল্লি অরু সব অঞ্জ
তে উহু রহত উদাস॥

বিগলিত অঙ্গ-রাগ অক্স অভরণ বিগলিত কুঞ্চিত-কেশ। রাধামোহন চিতে নিতি নিতি ভাবই শ্রুছন প্রোম-আবেশ ॥২০॥১০৪৮॥

ইতি রূপোল্লাসঃ।

পঠিবির

১। এই পদটি ইতিপূর্বে ৭৮০ সংখ্যক পদ-ক্লপে উচ্ছত হইয়াছে; স্থতরাং পাঠান্তর ও টাকা উক্ত পদে এইবা।

অথ রূপোলাদঃ প্রকারান্তরং যথা।

अभएको ब्रह्मः।

बबाड़ी ।३

নিরুপম স্থন্দর গোর-কলেবর মুধ জিভি^২ শারদ-চন্দ।

কুন্দ-করগ-বিজ° নিন্দি হুশোভিত অভিশয় দন্ত হুছন্দ॥ বুঝলুঁ° কাম পুন সাধে।

অমিয়াক সার ছানি নির্মায়ল বিহি-সির্জন ভেল বাধে ॥ গ্রু ॥ অকলক চান্দ ভানে বিধুস্কুদ ধাবই প্রশক লাগি।

নিকটহি বাই হেরি তছু মাধুরি তছু কর-ভয়ে পুন ভাগি ।

প্ৰতিবোগি॰ আদি নাম-দোৰ শত গুণ ভেল° যাক ধেয়াল।

সেই চরণ-গুণ কলিযুগ-পাবন করু রাধামোহন গানে ॥২১॥১০৪৯॥

পাঠান্তর

)। देश श-व्र-मा शूचित २१७० मरश्यक शहा २। 'क्टिं' या २। 'तीक' कृष्, श-व-मा। श 'বুঝল' ক, প-র-সা। ৫। 'ধাওই' ধ, চ।
 ৬। 'প্রতিবোগী' ক, ধ। १। 'ভেলহি' ক, চ।
 টীকা

৫—१। "বুঝলুঁ" ইত্যাদি। বুঝিলান, খরং কন্দর্প সাধ করিয়া অমৃতের সারাংশ ছানিয়া লইয় (তন্থারা শ্রীগৌরান্থের রূপ) নির্দ্মাণ করিল,— ব্রহ্মার ক্ষষ্টি ব্যর্থ হইল। (অর্থাৎ কন্মর্প ই কেবল এইরূপ অমৃতময় রূপ নির্দ্মাণ করিতে পারেন; ব্রহ্মার এরূপ সাধ্য নাই। ১০৩৪ সংখ্যক পদের ১—০ পংক্তির টীকা তাইব্য)। তুলনা কন্মন,—

'ধনি ধনি কো বিছি বৈদগধি-সাধে। মদন অংধা-রসে ঘো নিরমাওল

जुवा भूथ-मखन बार्य ॥ अन ॥

- १-क-छ, ১००८ मःश्राक भर।

১২—১৩। "প্রতিবোগি" ইত্যাদি। রাধা-মোহন ঠাকুর লিখিয়াছেন,—'প্রতিবোগ্যপ্রসিদ্ধানরে দোষা কবিতারাং সন্তি তথাপি ভচ্চরণগুণবর্ণনাৎ সর্ব্বে নিরস্তা ইত্যর্থ:।' অর্থাৎ কবিতার 'প্রতি-বোগী', 'অপ্রসিদ্ধ' প্রভৃতি দোষ বাঁহার চরণ-খণ-বর্ণন ধারা নিরস্ত হইরাছে।

শ্রীকৃষণ্ড রূপম্।

वैद्यान 13

স্ব-পতি-ধমু কি শিখণ্ডক চূড়ে।
মালতি-ঝুরি কি বলাকিনি উড়েং॥
ভাল কি ঝাপল বিধু আধ-খণ্ড।
করিবর-কর কিয়ে ও ভূজ-দণ্ড॥
ও কি শুমাম নট-রাজ।
জলদ কলপ-তরু ভরুণি-সমাজ॥ ধা॥
কর-কিসলয় কিয়ে অরুণ-বিকাশ।
সুদ্দি-ধুর্লি কিয়ে চাতক-ভাব॥

হাদ কি কারয়ে অমিয়া মকরন্দ।

হার কি তারক-দোতিক ছন্দ ।

পদ-তলে কি থল-কমল ঘন-রাগ।

তাহে কলহংস কি নুপুর জাগ॥

গোবিন্দদাস কহয়ে মতিমন্ত।

ভূলল যাহে বিজ রায়ঃ বসন্ত ॥২২॥১০৫০॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র পুথির হাংহ সংখ্যক পদ। ২। 'উড়ে' ক, থ, চ, প-র। ৩। 'দ্যোতিক' ক, থ; 'মোতিম' প-র। ৪। 'রাজ' ক, থ, চ, প-র।

শ্রীকৃষ্ণস্থ অভিগারঃ।

তথা রাগ।>

কাননে সবছ কু কুম পরকাশং।
শারি শুক পিককুল-মধুরিম-ভাষ ॥
মউর মউরিগণ ঘন দেই নাদং।
শুনইতে কাতর ভেল উনমাদ ॥
দেখ দেখ নাগর-রাজ।
চললহি সঙ্কেত-কুঞ্জক মাঝ ॥ গুল ॥
কিশলয়-পুঞ্জহি শেক্ষবর কেল।
তঁহি পরং বৈঠি পুন তর্মিত ভেল ॥
পথ হেরি আকুল বিকল পরাণ।
অবহু মান ক্মল পরকাশ।
চৌদিশে হেরই গোবিন্দদাস ॥২০॥১০৫১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৭০ সংখ্যক পদ।

१। 'কাননে' ইত্যাদি হলে 'কাননে ভেল সব কুত্রম

বিকাস' প-র-সা। ৩। 'মউর' ইত্যাদি ছয়টি পংক্তি

ইলে প-র-সা পুথির পাঠ, বথা—

'শুক্কত প্ৰদর প্ৰদরি উত্তরোগ। মধু-লোভে মাতি রন্থ দালভি-কোগ। তাহি গমন করু বিদগধ-রাজ। ক্রুক্তু নূপ্র অধিরত বাজ। অমি অমি বৈঠলি নিবিড় নিকুঞ্জ। শেজ বিছারল কিসলর-পঞ্জে।

শ্রীমত্যাঃ আপুদুত্যাঃ উক্তিঃ।

গান্ধর ৷১

কালিয়-দমন জগতে ভুয়া ঘোষই সহচরি শুনইতে কাণে। ভুয়া সঞেং বাদ করিয়া ধনিং আওত মনমণ **ह** ह दें भिटिन ॥ মাধব অতয়ে কহিয়ে তুয়া লাগি। ত্রিবলিক মাঝে লোম-ভুজ্ঞিনি হেরইতে তুর্ কনিং ভাগি ॥ ধ্র ॥ নয়ন-কমল পর যুগল-ভুজগবর কাঞ্চর-গরল উগারি। মদন-ধনন্তরি আপে যব আওব সো বিশ্ব তবহি না সারি॥ বেণি-ভুঞ্জগবর পিঠ পর দোলত हित्रिन अधिल शिशारम । শুনইতে নাগ-দুমন-ভমু কম্পিত কহত্হিঁ গোবিন্দদাসে ॥২৪॥১০৫২॥ পাঠান্তর

)। इंहा প-द-मः পृथित ১৬৭১ मःशाक शहा २। 'मत्न' क। ७। 'मत्छ' व, च। ८। 'क्रांनि' क। ६। 'महन' व, ह।

নকা

>—8। "কালিয়" ইত্যাদি। প্রোচীন সমরে
সাপ্ডিয়াদিগের মধ্যে মাঝে মাঝে প্রতিথশিক।
হইত; তাহাতে এক পক্ষ অপর পক্ষকে পরাজিত
করার জন্ত অনেক ভর-মন্ত্র প্রয়োগ করিত ও ৩৭
দেখাইবার জন্ত উত্তর পক্ষকে উভয় পক্ষের প্রদত্ত

ভন্ধানক ভন্নানক বিষধর সর্পের সহিত জীড়া করিতে হইত। এই 'বাদ' বা প্রতিধন্দিতার নাম 'ঝাঁপান'। উভন্ন পক্ষ মাঁচার উপর চড়িয়া এই জীড়া করিত বলিয়া ইহাকে 'ঝাঁপান চড়া' বলা হইত। প্রীরাধার আপ্রদৃতী প্রীরাধার সহিত প্রীক্ষকের সম্ভোগক্ষীড়াকে পরিহাস করিয়া 'ঝাঁপান চড়া'-রূপে বর্ণন করিয়া বলিতেছেন) হে প্রীক্ষক । তোমাকে জগতে (সর্পশ্রেষ্ঠ) কালিয়-নাগের দমন-কারী বলিয়া ঘোষণা করে—(আমাদিগের) স্ববী (প্রীরাধা) (এই কথা) কাণে শুনিবা মাত্র ভোমার সঙ্গে প্রতিধন্দিতা করিয়া, কন্দর্পের ঝাঁপানে চড়িয়া (এখানে) আসিতেছেন।

— > । এই পংক্তিগুলিতে স্থী প্রীরাধার
সর্প-বাছল্য বর্ণন করিতেছেন। 'গুনইতে নাগদমন তমুক স্পিত' এই কৌশলময় বাক্যের এক
অর্থ এই বে, প্রীকৃষ্ণ শ্রীরাধার স্পাগণের পরাক্রমশ্রবণে ভীত হইয়া কম্পিতক্সেবর হইলেন। ইহার
ব্যল্যার্থ— শ্রীকৃষ্ণের সাত্তিক-ভাব হেতু কম্পা হইতে
লাগিল।

🕶 বা বাগ।১

রাইক আগমন-বাত।
শুনইতে উলসিত গাত।
তাহে কহই নব-কাম।
নাগ-দমন মঝুনাম।
খগ পতি রহু মঝুপাশ।
সবহুঁ সে করব গরাস।
বিকট মকর পুন হোয়।
এক না রাধব সোয়।
দৈব করয়ে যব আন।
দংশয়ে হামারি বয়ান।
রসনা-ধনস্তরি আগে;
ভহিঁ পুন অমিয়া লাগাবে।

নিরবিষ হোয়ব ভায়। জীতব এহিত উপায়॥ এত শুনি সহচরি গেল। গোবিন্দ অমুমতিং দেগ ॥২৫॥১০৫৩। পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৭২ সংখ্যক পদ। ২। 'নব-কাম' স্থলে 'নব কান' চ, প-র-সা। ৩। 'গোবিন্দু অনুমতি' স্থলে 'গোবিন্দুদাস মতি' ক।

শ্রীমভ্যাঃ অভিসারঃ। बीदांग 13 নিরুপম কাঞ্চন-রুচির কলেবর लाविन वत्रिन ना ८ शहर। নিরমল বদন হাস-রস-পরিমলে মলিন স্থাকর অন্বরে রোই॰॥ আজু বনি নব রঙ্গিণি রাই। স্ঞিনি সকল শিক্ষারিণি সাই ॥ লোলঃ অলক তিলকাবলি বঞ্জিত সীথহি° কাঞ্চন-কমল উজোর। লোচন-মধুকরি চলত ফেরি ফেরি শ্রুতি-কুবলয়-পরিমলে কিয়ে ভোরঃ শ্রামর-চীত-চোর কুচ-কোরক नौल निरुशल-रकारत कक्नु वाम। যাবক-রঞ্জিত অরুণ চরণ-তলে कि नितमक्षव Cगाविन्मनाम ॥२७॥১०४॥

১। ইছা প-র পৃথির থাৎ সংখ্যক পদ।

২। 'হোর' প-র। ৩। 'মলিন' ইত্যাদি হলে
'অম্বরে হুধাকর রোর' প-র। ৪। 'লোলত' পর।

৫। 'সিল্বহি' প-র। ৬। 'অক্লণ' ইত্যাদি
হুলে চরণ-সরোক্ষ্র' প-র। ৭। 'নিরম্প্র' ব্রে 'নিরম্প্রণ' প-র।

পাঠান্তর

সিমুড়া ।> শরদ-স্থাকর-মগুল-মগুন थ धन वहन-विकाभर। অধবে মিলায়ত শ্যাম-মনোহর চীত চোরায়নিও হাস॥ আজু নব খ্যাম বিনোদিনি রাই। তমু তমু অতমু-যুথ-শত-সেবিত नावित वज्रित ना यारे ॥ ध्रम ॥ কবরি-বকুল ফুলে আকুল অলিকুল মধু পিবি পিবি উত্তরোল। সকল অলঙ্কতি কঙ্কণঃ ঝক্কতি किकिनि तनत्रि दर्गन ॥ পদ-পক্ষ পর মণিময় নৃপুর পুরিত ংখঞ্চন-ভাষ। মদন-মুকুর জমু নখ-মণি-দরপণ नीक्नि ' त्राविन्ममात्र ॥२१॥>० ५०॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ৬০ সংখ্যক পদ। ২।
'মগুল-মগুন' ইত্যাদি কলে 'বদনমগুল থগুন'
ইত্যাদি ক; 'মগুল-মগুন বদন চাঁদ বিকাশ' প-র-সা।
ত। 'চোরায়লি' থ। ৪। 'করুণ' ক, থ। 'কনক'
ক, (পাঠান্তর)। ৫। 'রণঝণ' ক, থ (পাঠান্তর)
'বনঝন' প-র-সা। ৬। 'ফ্রিনী' প-র-সা। १।
'নিছনি' ক, খ, প-র-সা।

মার্ব।>
সম-বয় বেশ-ভূষণ-ভূষিত-তমু
সখিগণ সঙ্গহি মেলি।
গব্দ-গতি নিন্দি গমন অতি স্কুন্দর
কিয়ে জিড-খঞ্জন-কেলি॥
দেখ রাই করল অভিসার।
শিরিব কুস্থম জিনি কোমল পদতল
বিপ্রেণ পড়ত জনিবার এশঃ

বো থল-কমল-পরশে অতি কোমল
কামর ভই উপচন্ধ।
সো অব যাহাঁ তাহাঁ কঠিন ধরণি মাহা
ভারত বড়ই নিশঙ্ক॥
ঐছন ভাতি মিলল কুঞ্চ মাহা
দৃতিক যাহাঁ উপদেশ।
ভণ রাধামোহন তহিঁ যো আচরণ
হাম কিয়ে পায়ব উদেশ ॥২৮॥১০৫৬॥

১। এই পদটি ইতিপূর্ব্বে ১০১৭ সংখ্যক পদ-ক্লপে উদ্ধৃত হইরাছে; স্থতরাং পাঠান্তর উক্ত পদে মুষ্টব্য।

(करांत्र ।

ছহ দোহাঁ দরশনে উলসিভ ভেল। আকুল অমিয়া-সাগরে ডুবি গেল ॥ এ হহু দিঠি হহু মুখে অবধি নাহিক স্থাৰ পুলকে পুরল ছহু তত্ত। বেঢ়ল স্থার ঠাট रेयहन ठाटमन हाउ ভার মাঝে সাজে রাধা কামু॥ দোহার রুপের ছান্দে মদন পড়িয়া কান্দে স্থাকর কিরণ লুকায়। দোহাঁর সুখের বাণী অমিয়া-অধিক শুনি मधोगन व्यवन खूड़ांग्र ॥ দোহাঁর মাধুরী-গুণে উলসিভ স্থীগণে নানা ফুলে দোঁহারে সাজায়। ञ्चगिक हम्मन मिश কর্পুর তাম্ম লৈয়া विभाशिका (मैंशिद्र (यागांग्र । मानिनो चारेन धाका ললিতা-ইন্সিত পাঞা বিনি স্থতে গাঁপি ফুলহার। হিয়ার উপরে দোলে **(मश्रम (मैशित गरम** দেখি জাখি শীড়ল সভার ৷২৯৷১০৫৭৷

পাঠান্তর

১। 'হুহু''ক, চ। ২-৩-৪। 'দোইবি' ছলে 'হুইবি' ক, চ।

তথা রাগ।

রাধামাধব স্থমধুর-কেলা।

তুহুঁ রূপে তুহুঁ জন দিনগন ভেলা।
উলসিত বিনদং নাগরবর কান।
কহই অমিয়া-বাণি হসিত-বয়ান॥
অলপে জিতলি তুহুঁ ইহ পাঁচ-বাণ॥
ভুরুয়া॰ কামান নয়ান-কোণে এক।
আর এক ইষত হাস পরতেক॥
করহি স্থকুস্থমণ ভাহে এক হোয়।
কুঞ্জিত কেশ দরশে এক সোয়॥
অঙ্গহি অঞ্চ কিরণ কত ভেল।
হেরি পরাভব ভই৬ চলি গেলা।
কহ কবিশেখর কি কহব কান।
লাখ বয়ানে নহত পরিমাণণ ৪০০॥১০৫৮॥

পাঠান্তর

১। 'গণ' च। ২। 'বিনোদ' ক। ৩। 'खक्या' क। ৪। 'কুম্ম' ধ। ৫। 'কিরণে' ধ, च। ৬। 'হোই' প-র-সা। ৭। 'পরিণাম' ক, ধ, চ।

পুনশ্চ।
কীরাগ।>
তথামূখি কো বিহি নিরমিল বালা।
অপারূপ রূপ মনোভব-মক্ষল
ত্রিভূবন-বীক্ষইং মালা॥ধ্রু॥
স্থান্দর বদন চারু অরু লোচন
কাজারে রঞ্জিত ভেলা।

কনক-কমল মাঝে কাল-ভুজজিনি

ক্রীযুত-খঞ্জন-খেলা ॥

নাজি-বিবর সঞ্জে লোম-লতাবলি
ভুজগি নিখাস পিয়াসা ।

নাসা-খগপতি-চঞ্-ভরম-ভয়ে
কুচ-গিরি সান্ধি নিবাসা ।

তিন বাণে মদন জিতল তিন ভুবনে
অবধি রহল দউ বাণে ।

বিধি বড় দারুণ বধিতে রসিক জন
সোঁপল ভোহারি নয়ানে ॥
ভণয়ে বিভাগতি শুন বর যুবতি
ইহ রস কো প্রে জান ।

রাজা শিবসিংহ রূপনারায়ণ
লছিমা দেবি প্রমাণ ১০১৪১০৫৯।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সা পুথির ১৪৭৬ এবং প-র পুথির
১৬।২ সংখ্যক পদ। ২। 'বিজয়ী' ক ; 'বিজই' চ,
প-র-সা, প-র। ৩। 'দে' প-র-সা। ৪। 'বিয়মা'
খ, ঘ। ৫। 'সাধি' প-র। ৬। 'তিজল' ক। १।
'দৈ' ক ; 'দোউ' খ। ৮। 'কহ' প-র। ৯।
'যুব্তি' ক, খ, প-র-সা, প-র।

বিহাগড়া 15

শুনহ স্থাবি কি রূপ তোর।
হৈরিতে হরল মরম মোর।
মদন-সদন বদন-চান্দ।

স্থার সে মুরতি স্থরত ফান্দ।

স্পান তরুণ অধ্য-কাঁতি।

নিন্দিত-মোতিম দশন-পাঁতি।

তীলং-কুস্থম-স্থম নাসা।

গ্রাম চাঁচর চিকুর-পাশা।

ভামল কমল লোচন জোর।
তরল করল হাদয় নোর ॥
কাচির চিবুক মধুর গাম।
বিধিক শিলপও-শক্তি-দীম ॥
কানক-দাড়িম কুচক জোর ।
মূনিক মানস-চতুর-চোর ॥
ভণয়ে বল্লভ না লভং বাক।
মদন দেয়ল জয়-পভাক ॥৩২॥১০৬০॥

পাঠান্তর

১। ইকা প-র-সা পূথির ১৪৭৭ সংখ্যক পদ।
২। 'তিল' ক, খ, প-র-সা। এই পদের প্রত্যেক
চরণে ত্রিমাত্রিক চারিটি গণ আছে; স্থতরাং 'তিল'
পাঠে ছব্দোভল ঘটে। ৩। 'নিলিপ' ঘ, চ। ৪। 'ওর' ঘ; 'রোর' চ। ৫। 'না লভ' ছবে 'না লব বাক' ক; 'নাল' ঘ।

তিরোপা ।>

আঁচরে বদন ঝাঁপায়হং গোরি।
বালা শুনইছে চান্দকি চোরি ॥এ॥
ঘরে ঘরে পহরি ছোড়ি গেল জোর।
অবহি দেখব ধনি নাগরি তোয় ॥
হাসি স্থামুখি না কর বিজোরি।
বাণিক ধনি ধনি বোলবি মোরি।
অধর সমীপ দশন করু জোতি।
সিন্দুর সমিপ বসায়লি মোতি ॥
শুন শুন স্থন্দরি হিত উপদেশ।
অপনে হোয়ে জনি । বিপদক লেশ।
চান্দক আহয়ে ভেদ কলছ।
ও যে কলছিড । ভূতুঁ নিকল্ছঃ॥
বালা শিবসিংহ লছিমা দেবি সল্পং।
ভপরে ব্রিভাপতি মন্ত নিশ্ব ॥৩০॥) ৬১॥

পাঠারত্ব

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৪৭৮ ও প-র পুলির ১৬৪ সংখ্যক পদ। ২। 'র্রাপহ' ক; 'হাপারহ' ধ। ৩; 'কুনইতে' ক; 'শুনিয়াছে' প-র; 'শুনল' প-র-সা। ৪। 'পহরি' ইত্যাদি হলে 'পহর গেলছি জোর' প-র। ৫। 'দেধব ধান' হলে 'না দেখিল' প-র। ৬। 'কর বিজোরি' হলে 'করবি জোরি' ঘ; 'করবি য়োরি' চ। 'হাদি' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির হলে প-র পুলির পাঠ, যধা—

'হাসি হাসি স্থামুখি না করবি আন। সাথি দেওব ইথে তোহারি বয়ান॥'

৭। 'মোরি' গুলে বিজ্ঞাপতির অধিকাংশ মুদ্রিত সংস্করণে 'গোরি' পাঠ দৃষ্ট হয়, কিন্তু আমরা 'থোরি' পাঠ কোন পুলিতেই প্রাপ্ত হই নাই। ৮। 'দশন কর্ম' স্থানে 'দশনক' ব। ৯। 'সমিপ বসায়লি' স্থানে 'সামে পসারল' প-র। ১০। 'ঝানি' প-র-সা। ১১। 'কলকী' ক; 'কলকি' ম, চ; 'কলকিনি' প-র-সা। ১২। 'দেবি সঙ্গ' স্থানে 'কঞ্চ' প-র। টিকা

১--- ২। "আঁচরে" ইত্যাদি। ছে গৌরাদি!
তুমি অঞ্চল ধারা বদন আফোদিত কর; (কেন না)
রাজা চালের চুরি শুনিতেছেন, অর্থাৎ চালের চুরি
শুনিয়া উহার বিচার করিতেছেন!

৩—৪। "বরে" ইত্যাদি। (চান্দের চোর কোথার আছে,—তাহা অন্থসন্ধান করার উদ্দেক্তে) প্রহৃত্তী প্রতি বর দেখিয়া (চান্দের চোর না পাইরা) ছাড়িরা গেল; হে স্থানরি নাগরি! (সে) এখনই তোমাকে দেখিতে পাইবে।

e-- । "হাসি" ইত্যাদি। হে স্থামূপি!
(তুমি) হাসিয়া বিছাৎ (প্রকাশ) করিও না;
(আমার কথার উপকারিতা বুঝিতে পারিয়া) আমার
কণার হস্ত হস্ত করিবে!

ততঃ সম্ভোগঃ।

(क्शंत्र 1)

স্থদ বৃশ্ববিন স্থময় শ্রাম। স্থময়ি রাধা ভহিঁ ব অমুপাম। छुएँ भिल (कलि-विलाम कक्र । ছুত্ অধরামতে ছুত্ মুখ ভরু । ছহু অঙ্গ পুলকিত বিলাসে বিভোর। विनिष्नि द्रांश विनिष्धा-टकांत्र॥ प्रहाँ (किन-পिঙিত রূপে গুণে সম। বিলাস রভস্ত-রসে কেহ নহ° কম । হ্মরত মুরত হু ত্ব কর পরকাশ। রতিপতি-হৃদয়েত• লাগত। তরাস 🛭 অদভুত পরিরম্বণে ধনি লাজ। मृशूत ऋणू ऋणू किकिनि वांक ॥ এক-ভমু এক-মন একহি পরাণ। ছুত্ত তমু এক ভেল বিহি-নিরমাণ ॥ শ্রম-জলে ভীগল ছত্ জন-গায়। ছুত্ত রতি-সায়রে ওর না পায় ॥ क्ट लाइँ। पृषि नमाधन । किन। ष्ट्रहें कन-रितरन (भवत रिश्न ॥**७८॥**১०७२॥

ইভ্যাদি রূপোল্লাস:। ইভি তৃতীয়-শাখায়াং চতুর্দ্দশপল্লব:।

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৪৭৯ সংখ্যক পদ।

২। 'অতি' প-র-সা। ৩। 'রভসে' च; 'বিক্রম'
প-র-সা। ৪। 'নহে' ক। ৫। 'রুকত' চ;
'বুরতি' প-র-সা। ৬। 'রুদরত' খ, চ; 'রুদর' च।
१। 'লাগল' च, প-র-সা। ৮। 'রুপু রুপু' ছলে
'ক্ছবুহু' ক; 'বহু বহু' খ। ৯। 'ভিগল' ক, খ,
প-র-সা। ১০। 'হুইা' ক। ১১। 'চুছি সমাধ্ন'
ছলে 'চুছন সমাধ্নি' প-র-সা।

অথ নিত্যরাদঃ দর্বকালোচিতঃ।
তছচিতঞ্জীগোরচন্দ্রঃ।

ছুড়া।>
দেখত বেকত গোর-চন্দ
বেঢ়ল ভকত^২-নখত-র্নদ
অধিল-ভূবন উঙ্গরকারি
কুন্দ^৩-কনক-কাঁতিয়া।

অগতি-পতিত-কুমদ-বকু হেরি উছল রসক সিন্ধুণ হৃদয়-কুহর-তিমির-হারিণ

উদিত দিনহিঁ রাতিয়া।
সহজে স্থানন্দে মধুর দেহ
আনন্দে আনন্দে না বান্ধে থেহ
চুলি চুলি চুলিও চলত খলত

মন্ত-করিবর-ভাতিয়া।
নটন ঘটন ভৈ গেল ভোর
মুকুন্দ মাধব গোবিন্দ বোল
রোয়ত হসত ধরণি থসত

শোহত পুলক-পাঁতিয়া।
অসম-মহিমা কো কহঁ ওর
নিজ পর ধরি করই ১০ কোর
প্রেম-অমিয়া হরধি বরধি

তরখিত মহি মাতিয়া।
বো^{১১} রসে উত্তম অধম ভাস
বঞ্চিত একলি গোবিন্দদাস
কো ভানে কি^{১২} খেনে ভোন গঢ়ল^{১৩}
কাঠ-কঠিন ছাতিয়া ॥১॥১০৬৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুথির ৩/৪২ ও ১৫।১ সংখ্যক পদ। ২। 'বেকড' প-র, ১৫।১। ৩। 'রুক' প-র, ১৫।১। ৪। 'হেরি উত্তল রসক সিপ্প' ব্লে 'হেরি উছল রসিক্সিপ্প' ক, ধ; 'হেরি উছল রসিক্সিপ্প' ষ; 'হেরতউ ঐছন' ইত্যাদি প-র। ৫। 'হৃদর' ইত্যাদি স্বলে 'তিমিরহারি উজরকারি' প-র ১৫।১। ৬। 'চূলি চূলি চলি' স্বলে 'চূলি চূলি' ক, ধ। ৭। 'শেভত' ক। ৮। 'মহিম' ক, ঘ; 'মহিমা' ধ, চ; 'মহি' প-র ৬।৪২; 'অসিম' প-র ১৫।১। ৯। 'করু' প-র ১৫।১। ১০। 'করত' থ, প-র। ১১। 'করত' থ, প-র। ১১। 'কেরত' মংল' ক, ধ। ১০। 'কোন গঢ়ল' স্বলে 'কোন পড়ল' প-র ১৫।১।

শীরাপ 1>

মুরলি বোলায়ত পরম মধুর মৃত্ व्यथन-द्रशंभदत्र धतिया । ধ্বনি শুনি ধ্রণি **धत्रल**२ कूल-कांभिनि চোঙক পড়ল জগ ভরিয়া॥ नीथ निकटि नव ब्रिक्सा। পদের উপরে পদ তরুমূলে শ্রামচাঁদ লীলা-ললিত তিরিভঙ্গিয়া° ॥ধ্যা পঞ্চানন চতু-রানন নারদ ধ্বনি° শুনি স্থরপতি ধন্দে। ধল ফুলে মগন मकल वृन्तावन **उक्न मध्य वे**द्र मकत्रस्म । গুনিয়া বংশীর গান মুনিজন ভুলে ধ্যান (यांगीख मूनीख मूक़्हांग्र। রায়শেখর বোলে বাঁশী শুনি কে না ভুলে কুলবতী কি বাঁচিবে তায় ॥২॥১०৬৪॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৮১ সংখ্যক পদ।
২। 'ধরল' ক। ৩। 'ভিডলিরা' ক, ধ, ব,
গ-র-সা। ৪। 'ধনি' ব, চ। ৫। 'ফুলফলে' ধ।
১। 'ভান' ব। ৭। 'বানী ভানি' বলে 'ধ্বনি
ছনি' প-র-সা।

মাযুদ্ধ।১ नव-योवनि धनि क्या किनि लोवनि মোহিনিই বেশ বনায়লিও তাই। মনমথ চীত ভাত নাহি মানত কুঞ্চরাজ পর সাজলি রাই॥ চললि° निक्छ क्श्वत-वत्र-गमनो। যুবভিযুপ মেলি° গাওত বাওত চলত চিত্র-পদ বিদগধ রমণী ॥ধ্রু॥ হেরই শাদ হ্রত-রণ-পণ্ডিত शिंत भाग भाग भाग मार्थ के बार्ग । রতি-রণ-বীর ধীর সহচরি মেলি বরিখয়ে নয়নে কুত্রম-শর-জালা ॥ নয়নে নয়নে বাণ ভুজে ভুজে সন্ধান তমু তমু পরশে নাহিণ জন্ন ভন্ন। গোবিন্দদাস চিতে > অব নাহি সমুঝল বাজত কি কিণি কে ন ১২ ভরজ ॥ 110112 . 961

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্থির ৪৫৮ ও প-র প্রথির ৪২০৫ সংখ্যক পদ। ২। 'মোহন' ক; 'মোহনী' চ; 'মোহনী' প-র-সা। ৩। 'বনারই' প-র-সা। ৪। 'মিললি' প-র-সা, প-র। ৫। 'য়্বভির্থ মেলি' ফলে 'য়্বভির্ত মেলি' ক, খ; 'য়্বভির্থ মেলি' ফলে 'য়্বভির্ত মেলি' ক, খ; 'য়্বভির্থ শভ' প-র-সা, প-র। ৬। 'হেরইডে' প-র। ৭। 'মাভল' ক। ৮। 'মালা' প-র। ৯। 'বছনে' প-র। ১০। 'পরশে নাহি' ফলে 'পরশনে হেরি' প-র। ১১। 'কেহ' প-র। ১২। 'কোন' ক।

विश्वकृत ।>

দেখ রিং স্থি শ্রাম-চন্দ ইন্দু-বদনি রাধিকা। বিবিধ ষম্ভ মুব্ডি-রুন্দ গাওল্লে রাগ-মালিকা। মন্দ-প্ৰন

কুঞ্চ-ভবন

কুস্থম-গন্ধ-মাধুরী।

মদন-রাজ নব সমাজ ু

ভ্রমরা-ভ্রমরিণ-চাতুরী॥

ভরল তাল গতি তুলাল

নাচে নটিনি নটন-শুর।

প্রাণ-নাথ করত হাত

রাই তাহে অধিক পুর॥

অফে অফে পরশে ভোর

কেন্তু রহত কান্ত্র কোরণ।

জ্ঞানদাস কহত রাস

বৈছন জলদে বিজুরি জোর ॥ ॥৪॥১০৬৬॥

পঠিস্কির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৮২ ও প-র পুথির ৩৮/১২ সংখ্যক পদ। ২। 'দেখ রি' ফ্লে 'দেখবি' ক; 'দেখ রী' খ, ঘ; 'দেখ দেখ' প-র। ৩। 'নব সমাল' ফ্লে 'রন্তস মাঝ' খ, ঘ। ৪। 'লেমরা ক্রমরি' ফ্লে 'ল্মর ল্রমণ' ক, চ। ৫। 'কেছ্' ইত্যাদি ফ্লে 'দোহাঁর আনন্দে নাহিক ওর' প-র।

টাকা।

৫ — ৮। "মন্দ" ইত্যাদি। কুঞ্জ-গৃহ মন্দ-প্ৰন-বুত্ত, — উহাতে কুস্থম-গদ্ধের মাধুর্য্য (রহিরাছে); মদন-রাজ অর্থাৎ মদনের অধীখর শ্রীক্কঞ্চ ও নব-বুব্তিগদের সমাজ অমর-অমরীর চাতুর্য্য-শালী।

৯—১২। "তরগ" ইত্যাদি। চঞ্চল তাল ;—
মোহন গতি,—নটন-নিপুণা (ব্রজালনা) ও নটনবীর (প্রীকৃষ্ণ) নাচিতেছেন; তাহাতে প্রাণনাধ
(প্রীকৃষ্ণকে) (অনক্তরাধারণ) রূপ-শুপের ছারা
হত্তে করিরা অর্থাং বশীকরণ পূর্বকে প্রীরাধা (সেই
রাস-লীলার) শ্রেষ্ঠ (স্থান) পূর্ব করিতেছেন।

তথা দ্বাগ ৷১

মত্ত মধুকর বিবিধ শুঞ্জর

কোকিলা পঞ্চম গায়।

নানা তরুকুল বিক্সিত ফূল

খসিং পড়ু শ্ঠাম **গায়**॥

শ্রাম গোরি প্রাম

निष्टत हक्ष्म भगि।

কনক-লভায় বেতৃল যৈছে

रेख नीलम् ।।

কবহুঁ গোরি ভোরি চলড

কবহুঁ চলত কান।

রসের আবেশে অবশ অক

ওর নাহিক পান ॥৫॥১০৬৭॥

পঠিস্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৮০ সংখ্যক পদ। ২। 'স্থি'থ।

তথা রাগ ৷১

নব নায়রি

নব নায়র

নৌ সুন নব নেহা।

জাঁখে জাঁখে নিমিখে নিমিখে

विष्रवन निक (परा ।

নোজুন গণ নোজুন বন

নৌভূন সখি গানে।

ण निग निग ण निग निग प्यो निग निगर प्यो निग निग

তাল ফুকারই বাদে।

নৌতুন রস কেলি-রঙগ

নৌতুন গতি ভালে।

জিমি ধো জিমি পো জিমি জিমি^{*}

বাৰত স্থি তালে ৷

हक्ष्म मनि-

কুণ্ডল চল

ठकम १छे-वाम ।

দোহঁ দোহাঁ-কর ধরিয়া নাচত

ছেরত অনন্তদাস ॥৬॥১০৬৮।

পাঠান্তর

১। প-র-সা পুথিতে এই পদটি ১০৬৭ সংখ্যক পদের শেষাংশক্ষপে লিখিত হইরাছে। ২। 'তা দিগ দিগ'ইত্যাদি হলে 'তা দিগ দিগ থো দিগ দিগ'ক, প-র-সা। ক ও প-র-সা পুথির তালের বোল অপেকা ধ, ব ও চ পুথির বোল বিগুল আছে; হতরাং উহা 'চতুরক' গীতের বোলের ভার 'হন্' লমে অর্থাং বিগুল ক্রন্ত-ভাবে উপ্পারিত হইবে। ৩। 'ফুকরই' ক, ধ, প-র-সা। ৪। 'তালে' ব, চ। ৫। 'জিমি' ইত্যাদি হলে 'জিমি ধো জিমি জিমি, থো জিমি থো দুমি' থ, ব। এই পদটির প্রত্যেক অর্থা চরলে চারিটি তিমাত্রিক গণ আছে; হতরাং ধ ও ব পুথির চতুর্থাত্রিক বোলে ছলোভন্স বটে। ৬। 'বাওল' ক, ধ, ব, চ। ৭। 'ভালে' ব, চ। ৮। 'দোই দোই।' হলে 'হহে ছহা' ক। ২। 'নাচরে' ক, চ।

মলার শক্রাভরণ ৷১

ৰাজত তাল ব্লবাৰ পাথোয়াঞ্জ নাচত যুগল কিশোর।

অফ হেলাহেলি নয়ন ঢুলাঢ়ুলি ছ**হ**ঁদোহাঁং মুখ হেরি ভোর ॥

क्ष्य देनारा चून देन एवा मा । क्षित्र अश्वि भिनि । शांखक वांखक

করহি করহি কর জোর।

নবঘন পরে জন্ম ভড়িত লতাবলি

ত্ত রুপণ অধিকঃ উলোর॥

বীণ উপাল মুরল সর-মণ্ডল

বাজত থোরহি থোর।

শনন্তদাস-পাহ বাই-মুখ নিরখই যৈছন চান্দ চকোর মুণা১০৬৯ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৮৪ সংখ্যক পদ। ২। 'ছই' ক। ৩। 'রপ' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'অভি' ক, খ; 'আভি' ঘ, চ। ৫। 'বীণা' খ, ঘ, প-র সা।

মলার।১

শ্রাম রাম-রস-রক্সিয়াং।

নব যুবরাজ যুবতি সঙ্গিয়া ॥ঞ্চ॥

চঞ্চল-গতি চরণে চলত

সঞ্চিত হ্ররন্দিয়া।

নাচে মনোহর-গতি॰ অঙ্গ-ভবিয়া॥

বাণ অধিক বিধি যন্ত্ৰ

বাওয়ে উপানিয়া।

মধুর তাতা থৈ থৈ থৈ

বোলতঃ মুদলিয়া।।

কামু লপত স্থরণ মোহন

লাল মঞ্জির মান রি॰।

রুচির তাতা থৈয়া থৈয়া

গাওত হুর তানণ রিদ॥

ব্যভামু-নন্দিনি কিশোরি গোরি

গাওত অমুপাম রি ।

শিবরাম আনদেদ নাহিক ওর

হেরত রাস-ধাম রিণ ॥৮॥১০৭০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৮৫ সংখ্যক পদ।
২। 'রাস-রন্ধিয়া' ক, চ, প-র-সা; 'সারন্ধিয়া' থ।
৩। পর-সাপুথিতে 'গোরি' শব্দ দৃষ্ট হয়। ৪।
'বলে' থ। ৫। 'স্র' ঘ, চ। ৬। 'রে' ক।
৭। 'স্তান' ক, চ। ৮-৯-১•। 'রে' ক।

বিহাগড়া।১

বাজে গিড়ি গিড়িং দিং দ্রাম্° দ্রাম্ দ্রিমি দ্রিমি কটু দিদি দ্রাম্ উঘটতঃ পটভাল মুদক

রজ রভস-মূল ॥ধ্রা॥

তা তা খোলিং খোলি খোলি ননন ঝিঝিং ননন কাঙ্কত নন ঝননং ননন

मनमथ-मन ज्ला ।

ছরৰ পরশ সরস হাস নয়ন ছয়ল> রতি-বিলাস> চঞ্চল পট-অঞ্চল মণি-

কুণ্ডলতেঁঃ> ফুল> ১

ভারক্যত-মণিহারক্য শশি ঝিলমিলি দ্পিদার্থ কলসিঞ পুঞ্জ পুঞ্জ মঞ্জুল অতি

গুঞ্চতি অলিকূল ১৭।

তাতা থৈথৈ শাদ নপুর ১৯ গান মান তানং মধুর

ধ্বনি শুনি শিবরাম-অন্তরে

আনন্দেতে১ ভূল ॥৯॥১ • ৭১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৪৮৬ সংখ্যক পদ।
২। 'পিড়ি গিড়ি' ফলে 'গুড়ি গুড়ি' च, চ। ৩।
'দিং জাম' ফলে 'দাং' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪।
'ও ঘটড' প-র-সা। ৫। 'ভোল' ক, চ; 'ভোলি'
খ, প-র-সা। ৬। 'ঝিঝি' ক; 'ঝিঝি' च; 'ফি
কি' চ। ৭। 'নন ঝনন' ফলে 'নানাঝন' প-র-সা।
৮। 'ড়েল' ক, খ, চ, প-র-সা। ৯। 'ছেলর' ক;
'ছেল' চ। ১٠। 'য়ভি' চ। ১১। 'ফুখলাভে'
ক, চ, প-র-সা; 'ফুখলভে' ঘ। ১২। 'ফুল' ক,
খ, চ, প-র-সা। ১৩। 'ভাকর' ক। ১৪।

'মিশিহার' ক, খ, চ, প-র-সা। ১৫। 'হাপ' প-র-সা। ১৬। 'কলসী' ক, খ, 'কলসি' চ। ১ং। 'অলিকুল' ক, খ, চ, প-র-সা। ১৮। 'থৈ' খ। ১৯। 'নুপুর' ক; 'স্পুর' খ, প-র-সা। ২০। 'তাল' প-র-সা। ২১। 'আনন্দিত' প-র-সা।

(क्षांत्र ।)

বাজে ধ্ংনিং ধ্ংনিং বাজে ংনিং ধ্ংনিং
থটতাং তাগর্ধো নাগর্ধো
নাগর্ধোণ ধুকা ধুয়া বেণ ॥ঞা
বীণ উপাক্ত তক্ত রবাব যে।
বাজে থো দ্রিমি দ্রিমিধো তথৈ তথৈ তথ তা
থো পো বোল মুদল যে॥
কনক-কঙ্কণ কিজিণি কিনিকিনি
ঝননন মঞ্জির-রাব যে।

নাচত কহই প্রবন্ধ ধে।

ক্ৰম্ভ তাল ক্ষ্ট নট-শেধ্য

কবৰু চন্দ্ৰমূখি গাওই বে।

व्यानन्त-मागटत मगटन स्थाक्त

শিবরামদাস মনং ভাওই• যে ৷

1200110921

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৪৮৭ সংখ্যক পদ। ২। 'ধটা' ক, ধ, খ, চ। ৩। 'নাগর্ধো' শব্দ ক ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৪। 'ব্লে' ধ, খ, চ, প-র-সা। ৫। 'মনে' ক, ধ, প-র-সা। ৬। 'ভাও' ক, খ, খ, চ।

সিমুড়া ।১

জলদহি জলদ বিজুরি দিঠি-ভাপক মরকত কনয় কঠোর। এ দুহুঁং তমু মন-নয়ন-রসায়ন নিরুপম নওল কিশোর ॥ দেখ সখি রাধামাধব-ভাতি। কো বিহি নিরমিল কোন ঘটাওল শ্যামর-গোরি-সন্মাতি⁸। यर्गे पूछ् पूछ् ८१ति नग्नन- व्यक्षाल ভति। আন-আন পিবইতে চাহ। ভমু ভমু পৈঠত সঘন আলিঙ্গনে কৈছে হোয়বদ নিরবাহ। আরতি অধর-স্থারস পিবি পিবি দুছঁক পিরিতি - উনমাদ। (गाविन्मनाम कर्श्य अधिक त्रम-आदिर्भः) কিয়ে না করু পরমাদ্যবাধ্য

পাঠান্তর

১। ইहा প-র-সা পুথির ১৪৮৮ ও প-র পুথির ১২।৬ সংখ্যক পদ। ২। 'এ ছহ' স্থলে 'এডহ' ক। ৩। 'দেশ স্থি' ক, ধ, খ, চ ও প-র পুথিতে নাই। ৪। 'সাজ্যাতি' চ; 'সাঙ্গাতি' প-র। ৫। 'প্রি'প-র-সা। ৬। 'হছ দোহা'ব ; 'হহঁরপ' প-র। १। 'স্থন আলিঙ্গনে' স্থলে 'স্থনে আলি-পিত'ক, খ, च, চ, প-র-সা। ৮। 'কৈছে হোরব' ম্বলে 'কৈছে হোগত' ক, ধ, চ, প-র-সা; 'পুন देकरह रहांख ' भ-त्र । २०। 'मनन' भ-त्र । ১०। 'ভণ' প-র। ১১। 'অধিক' ইত্যাদি স্থলে 'হেন লর মঝুমন' প-র। ১২। 'কিরে' ইত্যাদি হলে 'অতি রদে অতি পরমাদ' প-র।

টাকা

b-81 "अनम्हि" हेलामि। जनम जनमहे (স্বাৎ স্থামবর্ণ হইলেও জলদের ভারই নিক্ট); বিচ্যুৎ (উজ্জল হইলেও) দৃষ্টির পীড়াজনক ; মরকত (ও) বর্ণ (বর্ণাক্রমে এক্কাড ও প্রীরাধার অঙ্গকান্তির ज्ननाष्ट्रण क्टेरम् ९) कठिन ; (किस्) धट उछात्रत দেহ — নয়ন ও মনের আনন্ত্রনক; (প্রত্রাং) নবীন কিশোর ও কিশোরী উপমা-রহিত।

कारमाम 15

একতাল ধরা।

কদম্ব-ভরুর ডাল ভূমে নামিয়াছে ভাল ফুল ফুটিগ়াছে সারি সারি। পরিমলে ভরল मकल वृद्धावन কেলি করে ভ্রমরা ভ্রমরা॥ রাই কামু বিলসই রঙ্গে। কিয়ে হুন্তু লাবণি रेनमगिंध धनि धनि॰ মণিময় অভরণ অসে ॥ ध्रः॥ ধরি প্রিয়ণ গিরিধর রাইর দক্ষিণ কর मधूत मधूत छिल याग्र। আগে পাছে সখীগণ করে ফুলং বরিষণ **दकान भश्री ठामत छ्लाग्र ॥** চন্দ্ৰ-কৰে স্থলীতল পরাগে ধুসর স্থল मिश्य (विषोत्र উপরে। রাই কামু-কর ধরিও নৃত্য করেণ ফিরি ফিরি পরশে পুলক অক্স ভরে'॥ করে করি স্থীগণ मुगमा ठन्न বরিধয়ে ফুল গন্ধরাকে। खाम-क्रल निन्तू निन्तू (माएड जारं) ग्रथ-इन्तू व्यस्त्र भूत्रलो नाहि नार ।।। কুমুমিত বৃন্দাবন 401-12, 114 পরাগে ভরল>> অগ্রিতুল। মন্দির স্থন্দর যেন রতনে খচিত গেম न(द्रांडम-म(नांत्रथ शृंत्रभ्य ॥) २॥) ० ५८॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র সা পুথির ১৪৮৯ ও প-র পুথির

২০।১৮ সংখ্যক পদ। ২। 'কিন্তে ছক্ট' ছলে 'কিবা দ্বপ' প-র-সা। ৩। 'কিন্তে ছক্ট' ইত্যাদি পংক্তিবয় দলে প্ৰ-র পুথির পাঠ ঘণা,—

'ন্ত্যাবেশে বৈদগধি ধনি ধনি অ্বদনি
অভরণ বাজে আজে আলে । জুলা'

8। 'পছ' প-র-সা। ৫। 'পুলা' প-র-সা। ৬।
'জোড়ি' প-র-সা; 'জুড়ি' প-র। ৭। 'নৃত্য করে'
হলে 'গতি চিত্র' প-র। ৮। 'তহু' প র-সা, প-র।

>। 'ধরে' প-র। ১০। 'করে' প-র-সা, প-র।

>১। 'ভরল' ক, ধ, চ। ১০। 'কুঅ্মিড'
ইত্যাদি কলিটির হলে প-র পুণির পাঠ, ব্থা,---

'হাস বিলাস রস কলা স্থমধুর ভাষ লোচনে মোহন লীলা ধরু। ছহুঁ রূপ লাবনি হেম মরকত জিনি নরোভ্য মনোর্থ ভক্ত ।'

C#813 13

কানন-ভ্ৰমণ নটন ছহু মেলি।
অভিশয় প্ৰমযুত ছহু হৈ গেলি।
ছহু জন বৈঠল মণিময় কুঞা।
কুসুম-শেজ পরে আনন্দ-পুঞা।
চামর বীজাইং কেহ ছহু অকে।
কোই তামুল দেই প্ৰেম-ভরকে।
কত কভ কোতুক হাস পরিহাস।
নিরথই আনন্দে উদ্ধব দাস।১০॥১০৭১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৯• সংখ্যক পদ। ২। 'বীজয়ে' খ, ঘ, চ।

অথ বিপরীত-রতি।

গাননী।

মর্ পদং দংশল মদন-ভ্রম ।
গরনাহি ভরল অবশ ভেল অম্ব ।

তুহঁ বদি স্থলারি করসি উপায়।
মুধ্যলাণ জ্বন তব জীবন পায়। থা।
পহিলাহি বাঁরেবি দীঠি পসারিণ।
করে কর পঞ্জনে ভাব সম্ভারিণ।
শ্রেম-জ্বল অঙ্গহি করবি বিথার।
কুচ্মুগ-কলসে করবি পানি-সার॥
খর নখ-রঞ্জনি তুয়া নখ মানি।
ঝারবি নিরবিষ উর পর হানি॥
যতনে অধর ধরি অধর-রস দেবি।
অধরক দংশো অধর-বিষ নেবি॥
রক্জনি উজাগরি রহবি অগোরি।
গোবিশ্দদাস গুণ গাওব ভোরি॥

#38#3 - 96#

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২৮৪, ১৪৯১ ও প-র পুথির ২৪।৮ সংখ্যক পদ। ২। 'পদে' ঘ; 'মন' প-র-সা; 'মনে' প-র। ৩। 'গরলে' প-র। ৪। 'দগধল' পর। ৫। 'ঝারবি' ইত্যাদি ছলে 'ঝাপবি দিঠে পসারি' ক, চ; 'হেরি ঝাড়বি দিঠি সারি' প-র-সা, প-র। ৬। 'করে' ইত্যাদি ছলে 'করে কর পঞ্জনে ভার সম্ভারি' ক; 'করে কর মঞ্জনে ভার সম্ভারি' ক, ব, ব; 'দংশনে' ক, ব; 'দংশন' ঘ, চ।

TICHT I

রভি-রগ-উচিত শরনহি নাগর
বাচত বিপরিত কেলি।
অনুনর কতহুঁ করয়ে জনি হসি হসি
মুখহি মুখহি করি মেলি ॥
তানি হসি শশি-মুখি লাজহি কুঞ্চিত
অবনত করত বয়ান।
জিয়ইতে উপবাসি দারিদ বৈহন
মাগ্যে ভোজন পান ॥

(एथ (एथ देवनगर्ध-त्रव्य ।

কামকলা-গুরু রসিক-শিরোমণি না ছোড়ই সো রস চক্ষ^২। গাদ পরশি পুন রাই মানায়ল

নিজম্বখ বহুত জানাই।

ভণ রাধামোহন তছু স্থা সুখি উহ অভয়ে সে হোত বাধাই ॥১৫॥১•৭৭॥

পাঠান্তর

১। 'कोউইডে' कः, 'किউইডে' চ। २। 'त्रम एक' ऋग 'नक' चे।

টাকা

১৪—১ং। "ভ্ৰ" ইত্যাদি। রাধামোহন কহিতেছেন,—উনি (অর্থাৎ শ্রীরাধা) তাঁহার (অর্থাৎ
শ্রীক্ষের) স্থাধ স্থা, অত এব সেই (প্রীক্ষের
প্রির) বাধাই অর্থাৎ আনন্দ-উৎসব (উত্তুত) হইল।
বাধাই আনন্দবিশেষ:"—পদামুভসমূল-টীকা।

श्रिक्ते ।

উদসল কুন্তল-ভারা।
মুরতি শিপার-লখিমিং অবভারা॥
অভিশয় প্রেম-বিকারা।
কামিনি করত পুরুখ°-বিহারা৽॥
ডোলভ॰ মোভিম-হারা।
যামুন-জলে যৈছে দুধক৽ ধারা॥
কুচ-কুস্ত পালটল৽ বয়নাদ।
রস-অমিয়া জকু ঢারল ময়না৽॥
প্রিয়তম কর›
তহিঁ দেবা।
সরসিজ মাহে জকু য়হল›
চকেবা॥
কঙ্কণ কিঞ্কিনি বাজে।
জয় জয় ভিণ্ডিম মদন সমাজে॥
রসিক-শিরোমনি কান।
ক্বির্ক্তন রস ভাব॥১১॥১০৭৮॥

পঠিক্তির

১। ইহা প-র পুথির ২৫।১০ সংখ্যক পদ।
'গুর্জ্জরী' হলে 'বেলোরার' প-র। ২। 'মুর্জ্জিরী' হলে 'বেলোরার' প-র। ২। 'মুর্জ্জির' হলে 'বেলোরার' প-র। ২। 'মুর্ক্জ্জির' ক, ঝ, চ, প-র। 'পুরুশ' পাঠে ছলোভঙ্গ ঘটে। ৪। 'বেবহারা' প-র। ৫। 'দোলত' ঝ; 'ভোড়ল' পর। ৬। 'ফুর্ক্জ্জুর্ক্তরাদি পংক্তিচ্ডুইর পদাম্ভসমুদ্রের টীকার ব্যাখ্যাত হইলেও লিপিকর-ভ্রমে উহার মূলে পরিভাক্ত হইনাছে রাছে; ভজ্জাপ সাহিত্য-পরিবদের বিস্থাপভির পদাবলীতে এই পদটি পদক্রতক্ত হইতে উদ্ধৃত হইনাছে বিল্যা উল্লেখ থাকিলেও ভ্রম-ক্রমে উক্ত পংক্তিচ্ডুইর পরিভাক্ত হইনাছে। ৯। 'নরনা' ক। ১০। 'প্রির্ভ্রম কর' হলে 'প্রিয় মরক্ত' প-র। ১১। 'কনক' প-র।

बिका

১—২। "উদস্ব" ইত্যাদি। 'উদস্ব কুন্তব-ভারা ইত্যাদিনা বিগণিতক্ষরী। শৃশারণক্ষীঃ মুঠ্জিমতী স্থগনপৌণ' বাধামোহন ঠাকুরের টাকা।

৭-৮। "কুচকুন্ত" ইত্যাদি। কুচকুন্ত ও বদন বিবর্ত্তিত হইল। 'মন্তনা মদন: অমৃতরসং কলস-ধারমা দদাতীব' রাধানোহনের টাকা;—অর্থাৎ মদন কুচ-রূপ কুন্ত ধারা অমৃত-রস ঢালিল—এইরূপ বোধ হইতেছে। (সুপ্রোংপ্রেকা অলকার)।

৯—> । "প্রিরতম" ইত্যাদি : প্রিরতমের
(গুগল) কর তাহাতে প্রদের হইরাছে; বেন সরদিজ-বুগণের মাঝে (জারক্রিম) চক্রবাক বুগল
রহিয়াছে। পদামূত-সমুদ্র-কার রাধানোংন ঠাকুর
'দেবা' শক্ষাটকে সংস্কৃত জীড়ার্থক 'দিব' ধারু হইতে
নিশার বিশেশ্য-পদ মনে করিয়া উহার অর্থ 'জৌজন'
লিখিয়াছেন। এরপ প্রারোগ মৈথিল-ভাষার দেখা
বার না।

जूलांजो ।ऽ

বিগলিত-চিকু মিলিত মুখ-মগুল চাঁদে বেচ্ল ঘনমালা। মণিময়-কুণ্ডল শ্রাবণে চুলিত ভেল ঘামে তিলক বহি গেলা 🛚 স্থা মুখ মঞ্গদাতা। রতি-বিপরীত-সময়ে যদি রাখবি কি করব হরি হর ধাতা ।ধ্রা। কিন্ধিণি কিনি কিনি কল্প কণ কণ कल-तव नृश्रुत वांद्य । निজ-माप माप्त भारा विकास **अग्र अग्र फिलिम** वार्ज ॥ তলে একু জঘন সঘন-রব করইতেং হোয়ল সৈনক ভঙ্গ। বিষ্ণাপতি-পতি ও রস-গাহক যামুনে মীলল গল-তরজ ॥১৭॥১০৭৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পুৰির ২৫।১১ সংখ্যক পদ। ২। 'क्रहेर्ड' क। 'उत्न अकू' हेन्डामि कनि हिन्न ऋत्न প-র পুৰির পাঠ বলা,---

'ভড়িত শতাতলে জনদ সাতাওল আতরে বহু জলধারা। তরল তিমির শশি হবে গরাসল চৌদিগে খদি পড় তারা॥ অহর ধ্সল ধরাধর উল্টল ধরণী ডগমগ ছোলে। পরতর প্রন স্মার বহে বহুবেগে চঞ্চরগণ করু রোলে॥ প্রশারপয়োধি অবধি জলে ভাগল ব্দৰ নাহি যুগ অবসান। রতি বিপরীত কৰা কো পাতিয়াওব কবি বিভাপতি ভাণ॥'

প-র পুৰির উদ্ভ কণি ভিনটি পদকরভক্ষর ১০৯৬

সংখ্যক পদে ২ৱ, ৩ৱ ও চতুর্ব কলিব্রণে উদ্ভ হইয়াছে।

টাক।

<-- १। "স্করি" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুরের ব্যাধ্যা—'রতি বিপরীত সমরে ধদি রাখি অর্থাৎ তক্তসং যদি স্থগন্সসি তদা হরিহ্রাদন্ধ: কিং করিয়ান্তি কিমৃত ত্বাধীনোধ্ছং।' রাধামোহন ঠাকুরের প্রতিপাদিত 'রাথবি' শব্দের 'স্থপিত করিবে' অৰ্থ এ স্থলে সংলগ্ন হয় না। এ স্থলে 'রাথবি' শব্দের অর্থ 'রক্ষা করিবে' বা 'পালন করিবে'। তুলনা কন্ধন,---'আলোশামলকাবলিং বিলুলিভাং বিভ্রুচ্চলংকুগুলং কিঞ্মুষ্ট-বিশেষকং ভস্তরৈঃ স্বেদান্তসাং শীকরৈ:। ওঝা যৎ শ্বরতাম্ভ-তাম্ভ-নয়নং বব্দুং রতি-ব্যতায়ে তৎ খাং পাতু চিরায় কিং হরি-হর-ব্রহ্মাদিভিটেপ্বতৈঃ'।

বিহাপড়া ৷১

গোর দেহ স্থ-চারু স্থবদনিং শ্যামস্থার নাহ রে। क्वनम উপরে ভড়িত সঞ্চ সরূপ° ঐছন আহ রে ॥ পীঠ পর ঘন শ্রাম বেণী নিরখি⁸ ঐছন ভানরে। (জমু) উজর হাটক-পাট• কর গহি लिथन (लक्ष्) शांह-वान (त ॥ খণ ন' থির রছ সন্থন সঞ্চর मिक (मथल-त्रांव (त्र।

ময়ন রায় ছু-হাই কছ কহ' कचन यभ द्रम शांव (द्र ॥

त्रग्ननि वक्नभ् व्यव-সান মানিয়ে (कनिभ्भ नह अवजान द्वा রসিক যতুপতি রমণি রাধা

সিংহভূপতি ভাণ রে ॥১৮॥১ ০৮ ০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পুথির ২৫।৯ সংখ্যক পদ। ২।
'শ্রুচারু স্থবদনি' স্থলে 'শ্রুধার স্থবদনি' ক, ৬।
'শ্রুধার স্থবদনি' ম, চ। ৩। 'শ্রুরপ' ক, ৬।
৪। 'দেখিরে' প-র। ৫। 'অজর' ক, ৬, ছ, চ।
৬। 'পাঁতি' ক, ৬, ছ, চ। ৭। 'লিখন লেখু' স্থলে
'লিখন লিখু' ৬; 'লিখন লিখ' প-র। ৮। 'খণ ন'
স্থলে 'খলন' ক, চ; 'খনন' খ, ছ। ৯। 'কহ
কহ' স্থলে 'দেই দেই' ৬, ছ। ১০। 'অক্র' ক;
'বর' প-র। ১১। 'রস্ত্রস' প-র।

টীকা

৭—৮। "জমু" ইত্যাদি। 'অজর হাটক পাঁতি কর গহি অনখর-অর্পতাং করে গৃহীতা লিখনং নিজ-পরাজরস্কত বং ব্যলিখত পঞ্চবাণঃ'—রাধানোহন ঠাকু-রের টীকা। অর্থাৎ বোধ হয়, যেন (পৃষ্ঠরূপ) অনখর অর্পতা করে গ্রহণ করিয়া কন্দর্প (বেণীরপ) নিজের পরাজরস্কতক লিপি লিখিয়াছে। পদ্বয়াকর পৃথির 'উজর' ও 'পাট' পাঠ উৎক্রইতর বলিয়া মূলে গৃহীত হইয়াছে। 'উজর হাটক-পাট' অর্থাৎ উজ্জন অর্ণের প্রক্রন।

याननी ।

বদন সোহায়ল গ শ্রামজল-বিন্দু।
মদন মোতি দেই পূঞ্জ ইন্দু ॥
প্রিয়-মুখ সমুখহি হুন্থন ওজ।
চাঁদ অধােমুখে পিবই সরােজ ॥
রতি-বিপরীত বিলম্বিত হার।
কনক-লতা পরি দুধক গার॥
কিছিণি-শবদ নিভত্মহি সাজ।
মদন-বিজই গণ-বাজন বাজ॥
বিগণিত চিকুর মাল ধরু অজ।
জমু যামুন জলে গজ-তর্জ ॥
স্কবি বিভাগতি এছ গ্রস জান।
জলদে বাঁপল জমু চপল মুঠান ॥১৯॥১০৮১॥

পঠিক্তির

া 'সেহাগণ'ক, থ, খা ২। 'সমুধ'ক;
'অমুধহি' চা ৩। 'ছধক'ক, খা ৪। 'বিজ্ঞী' কা ৫। 'ছধতরল' ক; 'দুধ ভরল' চ। ৬। 'ইহ'ক, খ, চ।

মলার।

রতি-অবসানে বৈঠি শ্যামস্থন্দর
পৌছরে নিজ করে ঘাম।

জমু ঘিজ-রাজ পুজই বর কোকনদে
পরাভব পাইয়া কাম॥
অপরূপ নাগর-প্রেম।
না জানিয়ে কি করব থৈছন দারিদ
পাইয়া ঘট ভরি ছেম॥ঞ্জঃ
বীজনে মৃত্তর পবন করই পুন
চন্দন গাভ লাগায়।

খপুর কপুরযুত পর্ণ স্থানেতি ছ

মুখ ভরি প্রচুর যোগায়॥
ঐছন বহুবিধ করিয়া স্থানেন
পুন লই দ্রল শয়ন।
কহ রাধামোহন কব হব শুভ দিন
যবহিঁ পায়ব দরশন ॥২০॥১০৮২॥

পাঠান্তর

১। 'পুজই' ক, খা ২। 'জণক্লণ' ক। ৩। 'পূৰ্ব' ক, খ; 'প্ল' ঘা ৪। 'পূন লই' (প-স) হলে 'পুনহি' ক, খ, ছ, চ। 'পুনহি' পাঠ ছন্দোভঙ্গ-ছই।

त्रमालमः ।

(क्षांत्र 1)

রাস-জাগরণে

নিকৃঞ্জ-ভবনে

আলুর্যা আল্স-জরে।

শুতলি কিশোরী আপনা পাসরি शर्ताननार्**षत्र ८०१८त** । স্থি হের দেখসিয়া বা। निमा यात्र धनाः **ठाँप-वन्नी** শ্যাম-অকে দিয়া পা॥ ধ্ৰু॥ করিয়া শিপান নাগরেৰ বাহু বিথান° বসন ভূষা। নিখাসে তুলিছে রতন•-বেশর° হাসিখানি তাহে মিশা^৮ n নিতে চাহে হরি ১٠ পরিহাস করি সাহস না হয় মনে। भीति कतिभ्भ वान না করিছ রোল माम खगताय^{३२} ७८० ॥२५॥১०৮०॥

পাঠান্তর

)। हेहा श्र.ब-मा श्रूबित ১৫०० मःश्राक श्रम। '(कनात' ऋरण '(होड़ि' भ-त-मा। २। 'बाल्का' कः 'बाडेनारे' भ-त-मा। ७। 'धाननात्वत्र' कः খ. ঘ. চ। ৪। 'নিন্দ' ইত্যাদি স্থলে 'নিন্দ আলি ञ्चलदि भ-त्र-मा। ६। 'विश्रात क, ४। ७। 'নাশার' থ। ৭। 'নিখাসে' ইত্যাদি ছলে প-র সা পুৰির পাঠ যথা---'নাকের নিখাসে বেশর ছলিছে'। ৮। 'হাসি' ইত্যাদি স্থলে 'মুথে হাসি আছে মিশা' ধ, ঘ; 'মুৰে আবে হাসি মিশা' প-র সা। ১। 'অত্যান' প-র-সা। ১০। 'চুরি' প-র-সা। ১১। 'शीरत शीरत' প-त ना। ১२। 'लान व्यवज्ञाव' ऋल 'कानमान बन' क ; 'बिक ह छोमारम' भ-ब-मा । हछी-দাসের মুদ্রিত সংস্করণগুলিতে এই পদটি চণ্ডীধাসের বলিরা গৃহীত হইয়াছে। প্রাচীনতর খ, খ ও চ পুৰিত্ব প্ৰমাণাত্মসারে ইহা জগল্পাণ দাসের রচিত विशिष्टे अञ्चयान द्व ।

(क्शंत्र ।

कालरमः रूखन र्पाटर महत-भन्नारमः। উরে উর দোহেঁ দোহার॰ বরানে বয়ানে। ছুহুঁক উপরে দোহেঁ ছুহুঁ শির রাখি।
কনয়া-জড়িত যেন মরকত কাঁতি ।
রতি-রসে পণ্ডিত নাগর কান।
রতি-রশে পরাভব ভেল পাঁচ-বাণ।
স্বেদ-মকরনদ বিন্দু বিন্দু গায়।
নরোত্তম দাস করু চামরের বায়।

184061551

পাঠান্তর

১। 'অলসে' च। ২।'শরনে' **ব।** ৩।'গ্রু দোহা' च। ৪। 'রসে' ক, ব।

> রসালসোপযুক্তরূপং যথা। শ্রীগোরচন্দ্র:।

> > टिक्टवरी ।ऽ

সোঙ্জো নব গৌরচন্দ্র*
নাগর বনয়ারি*।

नागम पनमामि

নবদ্বীপ-ইন্দু করুণা-সিদ্ধু ভক্ত-বংসলকারী । এ ॥

> বদন-চন্দ অধর রক্ষ নয়নে গলত প্রেম-তরক্ষ চন্দ্র কোটি ভাসু কোটি

শোভা[©] নিছয়ারি[©]। কুস্থম-শোভিত চাঁচর চিকুর ললাটে ভিলক নাসিকা উ**জো**র

দশন মোভিম আমিয়া হাস ভামিনি ঘনয়ারি^৮ ∎

মকর-কুণ্ডল ঝলকে গণ্ড মণি-কোস্তভ-দীপ্ত কণ্ঠ অরুণ বসন করুণ বচন

শোভা অভি ভারি। মাধ্য-চন্দন-চক্তিভি অঞ্চ। লাকে লজ্জিত কোটি অনন্ত। অঞ্চদশ বলয়া রতন>•-নৃপুব যজ্জ-সূত্রধারি॥

ছত্র ধরত ধরণিধরেন্দ্র
গাপ্ত যশ ভকতবৃন্দ
কমলা-সেবিত পাদ্বন্দ্ব
বলিয়ে ১ বলিহারি।
কহত দান কৃষ্ণদাস
গৌর-চরণে করত আশ।
পতিত-পাবন নিভাই চান্দ
প্রেম দানকারী ॥২৩॥১০৮৫॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপ্থির ১৪৯৪ সংখ্যক পদ।

২। 'সোঙর' ক, খ, প-র-সা। ৩। 'গৌরচক্র'
(প-র-সা) হুলে 'গৌরহ্মন্দর' ক, খ, ঘ, চ। ৪।
'বনগারি' খ, ঘ, প-র-সা; 'বনগুরারি' চ। ৫।
'বচ্ছলকারী' প-র-সা। ৬। 'মুখশোভা' ক, খ।
१। 'নিছগুরারি' খ, চ, প-র-সা। ৮। 'ঘনগুরারি'
খ, চ, প-র-সা। ৯। 'চল্লন' ক, খ, ঘ, চ। ১০।
'তরল' খ। ১১। 'বলিরা' ক, খ, ঘ, চ।

ख्या होत्र ।>

গোবিন্দ-মুখারবিন্দ
নিরখি মন বিচারোঁই।
চন্দ্র কোটি ভামু কোটি
মদন কোটি ওয়ারোঁ ॥
মুন্দর কপোল লোল
প্রজন্দল-নয়না।
স্থারবিশ্ব মধুর হাস
কুন্দকলিক-ম্পানা ॥

মণি-কুণ্ডল মকরাকৃত

অলক-ভৃত্বপুঞ্চা।
কেশরকোণ তিলক বৈনো
সোণে মড়িং গুঞ্চা॥
নব জলধর তড়িদম্বর
গলে বনমালা শোহে।
লীলা-নট সূরকে প্রভৃ
রূপে জগ-মন-মোতে ॥২৪॥১০৮৬॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৪৯৫ সংখ্যক পদ।
২। 'বিচারো' ক! ৩। 'মদন কোটি' ফ্লে
'মদনকো' প-র-সা। ৪। 'আবো' ক। ৫।
'কেশরকোহ' প-র-সা। ৬। 'সোণে মড়ি' ফ্লে
'সোণে মঢ়ি' ক; 'সোণায়ে মড়ি' প-র-সা।

তথা রাগ।

রাধা-মুখ কঙল বিমল
নিরখি চিত রিঝাওয়েই।
কোটি চন্দ্র কোটি ভাশু
মদন ছবি নিছাওয়েই॥
ভাল স্থানর অভি মনোহর
কুবলয়দল-নয়নী।
অধর অরুণ মুকুতা দশন
হাল অমিয়াবয়নী॥
ভাবণ-ভূখণ জিনি রবি-ছবি
বেশরযুত্ই নালা।

ঘন মৃগমদ-তিলক অলক
খলিত চাঁচর কেশা।
জিনি নবঘন নীল বসন
গলে গজমোতি-হার।
ত্রিভুবন-মন-মোহিনি রূপ
উদ্ধব বলি হার ॥২৫॥১০৮৭॥

পাঠান্তর

১। 'রিঝাঙে' ক, ধ। ২। 'নিছাঙে' ক, ধ। ৩। 'ফুক্রি' চ। ৪। 'কেশরযুক্ত' প-র-সা।

ভৰা রাগ ৷১

দেখ রি সখি কঙ্কল-নয়ন
কুঞ্চমে বিরাজ হেঁং ॥ গ্রু ॥
বামেতে কিশোরি গোরি
অলস-অক অতি বিভোরি
হেরি শ্রাম-বয়ন-চম্দ

মন্দ মন্দ হাস হেঁ। অক্সে অজে বাহে॰ ভ্রীড় পুছত বাত অতি নিবীড়ঃ প্রেম-ভরকে চরকি পড়ত

কঙল মধুপ সন্ত হোঁ॥
শারি শুক পিকু করত গান
ভ্রমরা ভ্রমরি ংধরত ভান
শুনি ধনি ধনি উঠি বৈঠত
চোর চপল যাত হোঁ।

শ্রীগোপাল ভট্ট-আন বৃন্দাবন কুঞ্চে বাস শয়ন সপন নয়ন হেরি

ভূলল মন আপ হেঁ॥২৬॥১০৮৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৪৯৬ সংখ্যক পদ।
২। 'হে' ক, ব, প-র-সা। ৩। 'বাহেঁ' ধ।
৪। 'নিবিড়' ক, ব, প-র-সা। 'নিবিড়' পাঠে
ছকোভদ ঘটে। ৫। 'ভঙরা ভঙরী' প-র-সা।
৬। 'ধ্বনি' ক, ধ; 'গুনি' ব। ৭। 'নরনে' প-র-সা। ৮। 'ভূলপ' ক, ব, প-র-সা।

বিভাষ ৷১

হেরি হত নিশি অবসান
তৈখনে তেজল শ্যান।
সব সহচরিগণ মেলি
করি কত কোতুক কেলি॥
মন্দিরে করন্ত প্যান
করে কর ধরিং ধনি কান।
হেরি যতু তুত ক ব্যান
কি করব তাক বাধান ॥২৭॥১০৮৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১০৯৭ সংখ্যক পদ। ২। 'কর ধরি' স্থলে 'কত ধনি' ক।

टेडबरी।ऽ

ব্যধিকা-মুখারবিন্দ
কোটি ইন্দু লাজে।
নয়ন-যুগল অতি রসাল
বিবিধ রত্ন কণ্ঠমাল
উমগতি অতিং প্রেম-বিবশ
থোবন-মদ• গাজে।
মণি দামিনি নছতঃ দশন
পহিরিং গোরি নীল বসন

মধুর মধুর বাজে। নিরথি মুকুন্দ ছবিকে রঙ্গণ লাজে লজিড়া কোটি অনক তাহে কনয়ণ-মুকুর অঙ্গ

কঙ্কণ কিঙ্কিণি মুপুর আদি

দামিনি খন সাজে ৷ ৷ ২৮॥১ ০৯০॥ পাঠাকুর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৪৯৮ সংখ্যক পদ। ২। 'উনপতি অতি' হলে 'উনতি পতি' প-র-সা। ৩। 'নদে' প-র-সা। ৪। 'নসভ' ক, খ, 'নহড' প্র-সা। ৫। 'পহিরে' ক, চ, প্-র-সা। ৬।
'য়ুপুর আদি' ছলে 'নুপুর' থ, ছ; 'নুপুরাদি' চ। ৭।
'ছবিকে রল' ছলে 'ছবিতরক্ষ' ক, প্-র-সা। ৮।
'লজ্জিত' ক, থ, চ, প্-র-সা। ৯। 'কনক' ক;
'করল' প্-র-সা। ১০। 'দামিনি' ইত্যাদি হলে
'বিবিধ মঞ্জির বাজে' ক, চ, প্-র-সা।

তথা রাগ।১

চললহি মন্দিরে নওল কিশোরি। হেরইতে হরি-মুখ অলস বিলোচন চেতন-রতন চোরায়লিং গোরি ॥ ঝামর বদন শ্যাম-ঘন-চুম্বনে প্রাতর-ধুসর-শশধর-কাঁতি। চম্পক-মাল ললিভ-করে বারই পরিমলে শুবধল মধুকর-পাঁতি ৷ বিগলিত কেশ বেশ সব খণ্ডিত নখ-পদ-মণ্ডিত হৃদয় নেহারি। পীত বদনে চমকি ভমু ঝাঁপই রস-আবেশে চলু চলই নাও পারি ॥ নত লত হাসি সম্ভাষই সহচরি সচকিত-লোচনে দশ দিশ চাই। গোবিন্দদাস কহই क्ति शुक्रकन⁸ জাগৰ চলহণ ভুরিতে ঘর বাই ॥ 129170971

ইভি তৃতীয়-শাখায়াং পঞ্চদশপল্লবঃ। পাঠান্তর

১। ইহা প-র পৃথির ৩৯।১৭ সংখ্যক পদ। ২।
'চোরাওলি' খ, চ। ৩। 'চলু চলই না' হলে
'চলই নাহি' প-র। ৪। 'গোবিক্ক দান' ইড্যাদি
হলে 'গোবিক্ক দান কহ কানৰ 'অক্কন' ক, খ, চ।
'। 'কাপৰ চলহ' হলে 'চলহ' ক, খ, চ; 'কানই বৈঠে' হ। অস্টেচিত-রসোদগারঃ। শ্রীগোরচন্দ্র।

বিভাৰ ৷১

আরে মোর গোর কিশোর।
রজনী-বিলাস-রস-ভাবে বিভার ॥

কংইতে গদগদ কংই না পার।

নিরক্তনে বসিয়া নয়নে ক্সলধার ॥

প্রেমালসেও চুলু চুলু অরুণ নয়ান।

কংইতে রসরসং বিরস বয়ান॥

চকিত্ত-নয়নে পহুণ চৌদিশে নেহারে।

চতুর ভক্তগণ পুছে বারে বারে ॥

কি আছে মনের কথা কংনেও না যায়।

এ রাধামোহন পহু গোরা-ক্তুণ গায়ে।

॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯ • সংখ্যক পা ২। প-র-সা ব্যতীত অক্সান্ত পুথিতে 'গু' নাই। এ 'রসালদে' প-র-সা। ৪। 'কছইতে রসরদ' হা 'কছই সরদ রদ' ক; 'কছইতে সরদ' চ। ৫ 'প্রেক্' ক, খ, খ, চ। ৬। 'বুঝন' প-র-সা। ৭ 'গোরা-শুণ গার' হুলে 'চকিত হুদুর' প-র-সা।

আদে সখ্যক্তি:।

विष्ठाव ।>

কহ কহ স্থি নিকুঞ্জ-মন্দিরে
আজু কি হোয়লং ধন্দ ।

চপলে ব'পিল জমু জলধর
নাল উতপল চন্দ ॥

ফ্লী মণিবর উগরেণ নির্বিধ
শিখিনী আনত গেল।

হুমেকু উপরেণ হুর-ভর্নিণী

কেবল ভরল ভেল ॥

কিছিণী কছণ করু কলরব
নুপুর অধিক তাহে।
স্কাম-নটনে তুরিজভিকর্ত
ঐছন সকল শোহে ।
না করণ গোপন নিজ পরিজন
ইহ বুঝি অমুমানণ।
বিভাপতি-কৃত কুপায়ে তাহারি
কোন জন ইহা গান্দ ১২॥১০৯৩॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৫৯১ সংখ্যক পদ।
'২। 'ছইল' ক, প-র-সা। ৩। 'উরগে' ঘ় ৪।
'শিখরে' প-র-সা। ৫। 'তুরিজ্ঞতিক্ত' ঘ। ৬।
'নাকর' হলে 'নায়ক' ক। ৭। 'অফুনায়' প-র-সা। ৮। 'গায়' প-র-সা।

টাকা

৩—৪। "চপলে" ইত্যাদি। বেন চণলায় জল-ধরকে (এবং) চন্দ্র নীলোৎপলকে আর্ত করিল। (এ স্থলে শ্রীরাধা চপলা ও চন্দ্ররূপে এবং শ্রীক্লফ জলধর ও নীলোৎপল-ক্লপে বর্ণিত হইয়াছেন)।

e—৮। "কণী" ইত্যাদি। ফণী অর্থাৎ শ্রীরাধার উন্মক্ত বেণী মুক্তা-কাল কিংবা পুষ্ণ-সমূহরূপ মণি উদ্গীরণ করিতেছে,—দৃষ্টি করিয়া শিথিনী অর্থাৎ শ্রীক্ষেত্র ময়ুর-পুদ্ধ-শোভিত কেশ-কলাপ অক্তা গেল অর্থাৎ বিশ্রস্ত হইরা পড়িল এবং শ্রমেক অর্থাৎ কুচের উপরে স্বর-তর্গিণী অর্থাৎ মুক্তাহার শুধু চঞ্চল হইল।

৯—১২। "কিঞ্চিণী" ইত্যাদি। তাহাতে কিঞ্চিণী, কন্ধণ ও নৃপুর অধিক কল-ধ্বনি করিতেছে; কন্দর্পের স্থল্পর নৃত্যে (বেরূপ) তৌর্যাঞ্জিক অর্থাৎ নৃত্যা-গীত ও বান্ধ, ঐক্বপ সকল শোভা পাইতেছে!

১০—১৬। "না কর" ইত্যাদি। গোপন করিও না; (ভোমার) নিক পরিজন (আমরা) এই সভোগ-লীলা অসমানে বুরিতেছি। (এই গীড) বিভাগতির রচিত; তাঁধারই কুপাডে (নাম-প্রকাশে

ন্দনিচ্ছুক ?) কোন ব্যক্তি (ভাষান্তরে ?) ইছা গান করিতেছেন।

বিভাগতির পদাবলীর সম্পাদক শ্রীর্ক্ত নগেন্ত্রনাথ গুপ্ত মহাশর শেব পংক্তিটির 'কে ন জান ইছ
গান' পাঠ গ্রহণ করিয়া ঐ পাঠে লিপিকর-প্রমাদ
থাকা অহমান করিয়াছেন। বস্ততঃ এই পদটি জবিকল বিভাগতির রচিত হইলে 'কুপায়ে তাহারি কে ন
জান ইহ গান' বাক্যাংশের কোন সার্থকতা থাকে
না; স্থতরাং এই পদটিতে কোন অজ্ঞাতনামা কবি
কর্ত্ত্বক বিভাগতির মৈথিল পদের ভাব তাবান্তরিত
হইরাছে, এইরূপ অহ্মান অধিকত্র সন্সত নহে কি প্

বিভাষ ৷১

আজুক রজনীং নিধুবনে খানি कदल वित्नाम द्राम। রসের সাগরে ডুবায়ল পোরে ভুললঃ আগন বাস॥ শুনহ মর্মিণ সোই। তুহুঁ সে আমার প্রাণের দাসর তেঞি সে তোমারে কই ॥ ध তাহার সাধন-বচন যতেক তাহা কি কহনে যায়। রতি বিপরীত লাগিয়া নাগর ধ্যুল° হামারি পায় ॥ বশ যে হইয়া ভাহারি পিরিভে করিলু ভাহারি মত। না জানিলুঁ মুঞি তাহার স্থাই আপনি হইলু রভ 🛚 इट्यां । विकन মোর শ্রমজন মোছয়ে আপন করে। আপনি বীজয়ে বীজন লইয়া

আমার ছরম-ডরে॥

সে সব কাহিনী কহিতে আপনি
অবশ হইল^{১১} অক ।
এ রাধামোহন-দাস কি শুনব^{১২}
এ সব প্রেমক রক্ত ॥৩॥১০৯৪॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রির ১৫৯২ ও প-র প্রির ১০১০ সংখ্যক পদ। ২। 'রজনি' খ, চ; 'জামিনি' প-র। ৩। 'ড্বাইয়া' প-র। ৪। 'জুলনু' চ; 'চলল' প-র। ৫। 'সরস' প-র। ৬। 'পরালের' ক, খ। ৭। 'ধরল' ক। ৮। 'পিরিভি' খ। ৯। 'র্থেভে' প-র। ১০। 'দেখিয়া' প-র-সা। ১১। 'হইছে' প-র। ১২। 'এ রাধামোহন' ইত্যাদি পংক্তি ছইটির স্থলে প-র প্রথির পাঠ, যথা—

'গোবিল্লদাস কি কছব সব এ হেল প্রেমক রক ॥'

यहरे ।>

কি কহব রে সখি কেলি-বিলাস।
বিপরিত হারত নারর-অভিলাষ ॥ধ্য।
মাতল নারর চুরে রহু॰ লাজ।
অবিরত কিন্ধিনি কন্ধণ বাজ ॥
শুনইতে ঐছন লহু লহু ভাষ।
হহু মুখ হেরইতে উপজল হাস ॥
শুন-জল-বিন্দু মুখে ফুন্দর জোভি॰।
কনক-কমলে বৈছে ফুটি বহু মোভি॥
কুচ্মুগ কনক-ধরাধর জানি।
ভাজি পড়য়ে জমু পহুঁ দিল পানি॥
ভণহুঁ ৷ বিজ্ঞাপতি শুন বরনারি।
নহিলে ব্সিক্> কৈছে তোহারি মুরারি॥

পাঠান্তর

11862021

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৩ ও প-র পুথির ^{১০)৬৮} সংথাক পদ। ২। প-র ব্যতীত অভাত श्रीट (अ' नार्हे। ७। 'मानज' क, थ, य, हा कोन कान मध्यत्रवाद 'मानावज' भांठ व्याधान मानिक ७ हत्सा वन न्हें। ४। 'इदा वह' श्राम विद्या तर' क, था था। 'प्राम के क, था था। 'प्राम के क, था। था। 'प्राम के का था। 'प्राम के का था। था। 'प्राम के था। था। 'प्राम के का था। था। 'प्राम के था। था। 'प्राम के था। था। 'प्राम के था। 'प्र

ভাটিরারি ৷১

স্থি হে কি কৃহৰ নাহিক ওর। স্বপন কি পরতেক কহইং না পারিয়ে किरय़° व्यक्ति निकृष्टे कि॰ मृत्र ॥ध्या ভড়িত-লভাতলে তিমির সাস্তায়লং তাঁতরে হুরধুনি-ধারা। তরলু ' তিমির শশি সূর গরাসল চৌদিগে খদি পড়ু দ তারা ॥ অম্বর খদল ধরাধর উলটল ধরণি ডগমগ ডোলে। খরতর-বেগ স-भोत्रग मक्षक চঞ্চরিগণ করু রোলে॥ প্রলয়-পয়োধ জলে জমু বা পিল ইহ নহ যুগ-অবসানে। কথা পতিয়ায়ব্যু

কো বিপরীত^৯ কথা পভিয়ায়ব^১ কবি বিভাপতি ভাগে ICII১ • ৯৬॥ পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৪ সংখ্যক পদ।
২। 'লথই' প-র-সা। ৩। 'কি' ক, খ, খ, চ।
৪। 'কি' ফ্লে 'হি' প-র-সা। ৫। 'ডিমির
সাস্তারল' ফ্লে 'অলন সন্তোজল' প-র-সা। ৬।
'আতরে' খ, চ। ৭। 'তক্লণ' প-র-সা। ৮। 'খিদ

পড়ু'ছলে 'সঞ্জ' প-র-সা। ১। 'পরতীত' ছ। ১০। 'পাতিয়ারব' ক, খ, চ, প-র-সা।

টীকা

৪—১১। "তড়িড" ইত্যাদি পংক্তিশুলিতে প্রীরাধার ক্লশ-তম্ তড়িৎ-লতা, প্রীক্লম্ভ তিমির, প্রীরাধার মুক্তা-হার স্থরধুনী-প্রবাহ, শ্রীরাধার উল্পুক্ত কেশপাশ তরল তিমির, প্রীরাধার ললাটের চন্দন-বিন্দু শনী, নিন্দুর-বিন্দু শ্র অর্থাৎ পূর্ব্য, পূল্প-মাল্যচ্যুত কুস্থমাবলি তারা, অখর (বস্ত্র) অখর (আকাশ), কুচমুগ ধরাধর অর্থাৎ পর্বত, নিতম্ব মেদিনী, নিখাস-বায়ু ধরতর পবন ও ভ্রণ-শিঞ্জিত ভ্রমর-ধ্বনির্দ্ধেণ 'অতিশরোক্তি' অলকারের সাহাধ্যে বর্ণিত হইরাছে।

১২—১৫। "প্রানর" ইত্যাদি। ইহা বুণের অবসান নহে,—(তথাপি) বেন (ব্যেদ-প্রবাহরূপ) প্রান্ত-কালীন সমুদ্ধ-জ্বলে আচ্ছাদন করিল। কবি বিভাগতি কহিতেছেন, (এই) বিপরীত (এক অর্থে বিক্রম, অস্তু অর্থে বিপরীত-সম্ভোগের) কথা কে প্রত্যর করিবে ? [ইহার তাৎপর্য্য এই বে, কেবল প্রান্ত-কালেই পূর্ব্ব-বর্ণিত নানা বিক্রম ঘটনা দৃষ্ট হর, কিন্তু এ হলে যুগান্ত ব্যতীতও প্রানরের বিক্রম কার্যাগুলি দৃষ্ট হইতেছে, স্মৃতরাং ইহা কে বিশাস করিবে ?]

শ্ৰীৰ্ক্ত নগেল বাৰুর গৃহীত "প্ৰণয়-পদ্মেধি-জলে" পাঠ কোন পুথিতেই দৃষ্ট হয় না এবং উহার অৰ্থও এ ছলে ভাদৃশ স্থানত নহে।

वैशांश ।>

আমার পিয়ার কথা কি কহিব সই।

যে ভার চিতে তাহাই করি স্বতস্তরী নইং॥

তাহার গলার ফুলের মালা

আমার গলায় দিল।

ভাহার মত মোরে করি

সে মোর মত হৈল॥

ভূমি সে আমার প্রাণের অধিক,
তেঞি সে তোমার° কহি।
এই° যে কাজ কহিভে° লাজ
আপন মনেই রহি।
তাহার প্রেমের বশ হইয়া
ধে কহে তাহাই করি।
চণ্ডীদাস কহয়ে ভাষ
বালাই লইয়া মরি॥৬॥১০৯৭॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৫ সংখ্যক পদ।
২। বৈ ভার' ইত্যাদি ছলে বৈ হন্ন ভাহার চিতে
স্বভন্তরী নই।' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'সাপনার'
প-র-সা। ৪। 'ভোমারি' ক, খ। ৫। 'এ' দ, চ,
প-র-সা। ৬। 'কহইতে' ক, খ।

পুনবর্যক্তরূপেণ সখীং প্রতি কথয়তি।

এ কথা করিবে সই এ কথা কহিবে।
অবলা এতেক তপ করিয়াছে কবে॥
পুরুষ পরশং হৈয়া নন্দের কুমার।
কি ধন লাগিয়া ধরে চরণে আমার॥
কাহারে কহিব স্থিপ মরমের কথা।
নাগর হইয়া দেয় মোরণ চরণে আলতা।
আপন চূড়ার বৈশ বনার আমারেণ।
রমণী হইয়া বেনণ রহে মোর কোরে।
কহিতে সরম সই কহিতেণ সরম।
আমারে আচরেশ সই পুরুষ-ধরম।
আমারে আচরেশ সই পুরুষ-ধরম।
আনারে কি পাসরাশ বার কামু গুণমণি।
জিতে কি পাসরাশ বার কামু গুণমণি।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৫৯৬ ও প-র পুৰির ১৯৫০ সংখ্যক পদ। ২। 'পরেস' প-র-সা, প-র। । 'সুঞি' পর। ৪। 'দের মোর' হলে 'মোরে দের' প-র-সা। ৫। 'বনার আমারে' হলে 'বনারে আমারে' ক, চ; 'দের মোর শিরে' প-র। ৩। 'রননী' ইভ্যাদি হলে 'আপনি রমনী হৈরা' প-র। ।। 'বলিভে' প-র। ৮। 'আমারে আচরে' হলে 'মোরে আচরিভে বোলে' প-র-সা। ৯। 'জিভে শিসরা' হলে, 'জিভে পাসরা না' ধ।

शर्वमञ्जूषे ।>

কুচযুগ চার ধরাধর জানি।
হাদি পৈঠব জনিং পছঁ দিল পাণি ।

ঘামবিন্দু মুখ হেরয়ে নাহ।

চুখরে হরবেং সরস অবগাহ।

বুঝই না পারিয়ে পিয়া-মুখ-ভাষ।
বদন নেহারিতে উপজয়ে হাস।
আপন-ভাব মোহে অমুভাবি।
না বুঝিয়ে ঐছনেং কিয়ে হুখ পাবি॥

তাকর বচনে কয়লুঁ সব কাজ।

কি কহব সো সব কছইতে লাজ॥

এ বিপরীত 'বিভাপতি ভাগ।

নাগরি রমইতে 'ভর নাহি মান॥৮॥১০৯৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ১৫৯৭ সংথ্যক পর।
'পঠনজরী' হলে 'বিভার' প-র-সা। ২। 'জানি'
পাঠ সকলগুলি পুরিতে হুই হইলেও উহা ছলোভলছুই বলিরা 'জনি' পাঠই সবীচীন বোধ হর। ৩।
'হরবে সরস' হলে 'হরব সরস' ক। ৪। 'ঐছন'
ক, ধ, ঘ, চ,। ৫। 'বিপরীত পহ' প-র-সা।
৬। 'বরইভে' ধ।

बीतांत्र 12

আজু মরু সরম ভরম রহু দুর। আপন মনোরও সো পরিপুর॥ কি কহব রে সখি কহইতে হাস। সব বিপরিত ভেল আজুক বিনাস।ধ্রা জলধর উলটি পডল মহি মাঝ। উষ্টল চাক ধ্বাধ্ব-বাক ॥ মরুক্ত-দর্পণ হেরুইতে হাম। উচ নিচ° না বুঝি পড়লুঁ সোই ঠাম । भून व्ययमानित्य नागत कान। তাকর বচনে ভেল সমাধান॥ নি-বাদে বাস পুন দেয়ল সোই। लांदक ब्रह्मूँ हिए यानन त्राहि । সোই রসিকবর কোরে আগোরি। আঁচরে শ্রম-জল মোছল মোরি॥ मुक् मुक् विकरेख घूमल शम। ভণয়ে বিভাপতি রস অমুপাম ॥৯।১১••॥*

ইত্যাদি বিপর্বাত-রসোদগার।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৮ সংখ্যক পদ।
২। 'উন্নল' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'নীচ' ক,
খ। ৪। 'মুছ্ মুহু' ক্লে 'মুছু' ক। ৫। 'ঘুন্ল'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। অতঃপর ক, চ পুথিতে
নিন্নলিখিত প্রাকিপ্ত পংক্তিগুলি মুন্ত হর, ন্ধা—

তথা বাগ।

'নিল্লে কৃছিত্ব স্থি রাখিং হিরার। জীবন নিছিরে বাহে ইছ কি তাহার॥' টাকা

१-৮। "মরকত" ইত্যাদি। আমি (अङ्गरकत रकः इनक्रभ) মরকত-দর্শণ দৃষ্টি করিরা, উচা-নীচা বুরিতে না পারিরা দেই হলে পতিত হইনার! (দর্শণহ প্রতিবিদ্ধ উণ্টা-ভাবে দৃত্ত হর বণিরা প্রতি- বিখে শয়ান ঐক্তিক্সকে উপবিষ্টবৎ ও উপবিষ্ট আপনাকে শয়ানবৎ ক্সান করিয়া পতিত হইলাম!) তুলনা করুন,—

"প্রতিবিশ্বত-প্রিয়া-তন্ত্ব সকৌস্করং জয়তি মুরভিলো বক্ষ:। পুক্ষায়িতমভ্যক্তি লক্ষীর্যবীক্ষা মুকুরমিব॥"—আর্য্যা-সপ্তশতী। ১—১০৷ "পুন" ইত্যাদি। (কিন্তু স্পর্শবারা) অন্থমান করিতেছি, (নিম্ন-শ্বিত ব্যক্তি) নাগর শ্রীকৃষ্ণ! (ইহাতে আমি লজ্জাতুরা হইলেও) ভাঁহার (অন্থনয়)-বাক্যে (কার্য্যের) সমাপ্তি

১১—১২। "নি-বংশে" ইত্যাদি। তিনি (আমার)
বল্পথীন (অন্দে) বল্প দিলেন; (কেন না) আমি
লজ্জার তাঁছার বকে (আমার) মূখ ঢাকিয়া রহিয়াছিলাম। ['লাজে রহলুঁ' ইত্যাদি বাক্যে অতি
স্থল্পর 'শ্বভাবোজি' শুল্কার রহিয়াছে]।

অথ ঐ্রিকৃষ্ণস্ত রসোদগারো যথা। তত্নচিত-শ্রীগোরচন্দ্র:।

বিভাষ ৷১

অপরূপ গোরাচান্দে।

বিভার হইয়া রাধার প্রেমে তার গুণ কহি কান্দে ॥ধ্য॥ ।

নয়নে গলয়ে প্রেমের ধারা

পুলকে পুরল অন্স।

থেনে গরজয়ে খেনে সে কাঁপরের
উথলে ভংব-ভরক্ত ॥

পারিষদগণে কছন্মে যভনে রাধার প্রেমের কণা।

জ্ঞানদাস কৰে গৌরাক নাগর° যে লাগি আইলা এথা ॥১০॥১১০১॥ পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুথির ১৫৯৯ সংব্যক পদ।
 ৪। প-র-সা ব্যতীত অক্তাঞ্চ পুথিতে 'ঞ' নাই।
 । 'চাক্ষ' প-র-সা।

শিক্ষ্ড়া ছুটা ।১

আজুকার নিশি নিকুঞ্জেত বসিং
করল° বিবিধ রাস।
রসের সাগরে ডুবাইয়া⁸ মোরে
বিহানে চলিলা বাস॥
শুন হৈ স্থবল স্থা।

সে হেন স্থান কী গাইব দেখা ।

মদনে আগলি গলে গলে মিলিট্

কেশ বেশ আদি বিধার ছইল তাহা বা কহিব কত॥

অশেষ বিশেষে বচন কহিয়া আবেশে কাবে ।

অঙ্গের>২ পরশে হিন্না জুড়াইল১০ কেমনে বিসরি১০ তারে ॥

চণ্ডীদাসে কছে^১ শুন হে নাগর এ বড় লাগল ধনদ।

সে রাধা রমণী রস-শিরোমণি^{১৬} ভোমারে করিল বন্ধ ৪১১॥১১০২॥ পাঠাকর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬০০ ও প-র পুথির ১০া৭০ সংখ্যক পদ। ২। 'নিকুল্লেড বিসি' ফ্লে 'নিকুলে আসি' ক; 'নিকুলেড আসি' চ; 'নিকুলেডে বিসি' প-র। ৩। 'করল' প-র। ৪। 'ভুবাইল' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'নাগরী' প-র-সা। ৩। 'আপোরি' খ, প-র-সা। १। 'হইব' প-র। ৮। 'নাদ্দেশ' ইত্যাদি স্থলে 'মদন আনলে লাগে গলে গলে' প-র।
১। 'কররে' প-র। ১০। 'বচন কহিয়া' স্থলে
'বচন কহিয়ে' প-র-সা; 'বে কিছু কহল' প-র।
১১। 'আমারে' প-র। ১২। 'সে অফ' প-র।
১০। 'ডুবাইল' ক, চ, প-র-সা। ১৪। 'পাসরিব'
প-র। ১৫। 'চগুীদাস কহে' স্থলে 'কহে বিজ্ঞাপতি'
প-র। ১৬। 'সে রাধা' ইত্যাদি স্থলে 'রাধা
বিনোদিনি রসিক রমণি' প-র।

व्यक्ति। ।

ত্বলের সনে বসিয়া শ্রাম।
কহরে রজনি-বিলাস কাম।
সে যে স্থানি স্থানির রাই।
আবেশে হিয়ার মাঝারে লাই।
চুম্বন করলং কতন্ত ছন্দ।
রভসে বিহসি মন্দ মন্দ ।
বছবিধ কেলি করল সোই।
সে সব সপন হোয়ল মোই।
কোবা সে বচন অমিয়া-মীঠও।
ভাঙ্গুর ভিজ্মি কুটিল দীঠ॥
সে ধনিং হিয়ার মাঝারে জাগে।
বিজ্ঞাপতি কহে নবিনং রাগো॥১২॥১১০৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬•১ সংখ্যক পদ। ২। 'ক্রপু'প-র-সা। ৩। 'মিঠ'ক, থ। ৪। 'ভাল বিভলিম' থ। ৫। 'সে ধনি' ফ্লে 'ধনী' ক; 'ধনি' চ। ৬। 'নবীন'ক।

> গঠমঞ্জনী।> কি কৰ রাইয়ের গুণের কথা। সৰ গুণে ভাৱে গড়িলে ধাডা॥ এ রাম-বিলাস করিল যত। এক মুখে ুভাষা কহিব কভ॥

কিবা সে মধুর নটন গান।
অমিয়া-অধিক করিলু পান।
সে সব কহিতে হিয়া না বান্দে।
দরশন লাগি পরাণ কান্দে।
শুন হে পরাণ-বল্লভ স্থা।
সে ধনা পুন কি পাইব দেখা।
নয়ন-বাণে সে হানল যবে।
বিভোৱ হইথা রহিলু হবে।
চুম্বন করল যখন ধনা।
অথির ওবহু কছু না কানি।
দৃঢ় আলিজনে হরল জ্ঞান।
বিপরীত কবিরঞ্জন ভাগ ১০০০১০৪।

পাঠ 'স

১। ইহাপ-র-সাপুঝির ১৯০২ সংখ্যক পদ। ২। নিয়ন বাণ ক, ধ, চ, প র-সা।

মুহই 🏗

রাধার প্রেমের ভরেই বিনোদ নাগর।
ধরি স্থবলের করেই কতের-অন্তর ॥
দৌহে চলি আয়লঃ নিকুপ্তকং মাঝ।
রাইকুণ্ড-ভারে সেই বিসানা রস-রাজ ॥
বুন্দা দেবি তহি মালদং ঘাই।
তাহে মিনতি বহু করক কানাই॥
শুনিদ আওল সোই রাইক পাশ।
উদ্ধব দাস কহ মধুরিম ভাষ ॥১৪॥১১০৫॥

প্রাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯০০ সংখ্যক পদ।
২। 'তবে'ক। ৩। 'কর'প-র-সা। ৪। 'আওক'
চা ৫। 'নিকুল' ক, থ, প-র-সা। ৬। 'সে'
শস্টি ঘ পুথিতে নাই। ৭। 'মিলল' ক। ৮।
'ভুনিরা'ক, ধ, ব, চ।

कांटबाब ।>

স্কারি ভূরিভাইঁ করহ পরান।
সবছঁ তিরিপ-ফল খামি-স্মঙ্গল
ভামুক কুণ্ডে, সিনান এপা

গ্রুক্তনে অমুমতি মাগি।
বহু উপহার স্থকপুর্ব চন্দন
লেওল ভামুক লাগি॥
সবহুঁ সধী মেলি দেই হুলাহুলি
চলতহিঁ পত্থক মাঝ।
সো বর-স্কারি করি পথ চাকুরি
মিলায়ল নাগর-রাজ॥
রাইক বদন-চান্দ হেরি মাধব
পূরল সব অভিলাষ।
ছুহুঁ দরশনে চুহুঁ আরতি নব নব
কহতহিঁ গোবিন্দদাস॥১৫॥১১০৬॥

পাঠান্তর

>। ইহা প∙র-সা পুথির ১৬∙৪ সংখ্যক পদ। 'কামোদ' ছলে 'তথা রাগ' ক; 'পঠমঞ্জরী' প-র-সা। ২। 'কুগু' প-র-সা।

कुभागो ।>

দোহার ছলহ ছহঁ দরশন ভেল।
বিরহ-জনিত ছুখ সব ছরেখ গেল।
করে ধরি বৈসায়ল বিচিত্র জাসনে।
রমরে রতন-ভাম রমণি-রতনে।
বছবিধ বিলস্যে বছবিধ রজ।
কমলে মধুপ যেন পাওল সজ।
নয়ানে নরান ছুহাঁর বয়ানে বয়ান।
ছুহাঁ গুণে ছুহাঁ গুণ ছুহাঁ জবে গান।
ভুগরে বিভাগতি নাগর ভোর।
বিভাগতি নাগরি ঠোরণ ৪১৬৪১১০৭৪

পাঠাকর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৬০৫ সংখ্যক পদ।

২। 'লুরে' ক। ৩। 'বৈসারলি' ক, থ। ৪।
'বিজয়ী' ক; 'বিজই' প-র-সা। ৫। 'নাগরি ঠোর'
ছলে 'নাগর চোর' ক; 'নাগরি চোর' ব। প্রাচীন
পৃথিতে জনেক ছলেই 'ঠ' জকরাটর শিরংহিত বক্র
রেখা দৃষ্ট হয় না; স্নতরাং ঐ সকল ছলে উহা 'চ'
জকর বিলয়া সহজেই ভ্রম হইতে পারে। এইরুপ
ভ্রম হইতেই 'ঠোর' হলে ক, ব পৃথি ও বিভাগতির
মুক্তিত সংক্রমণের হাস্ত-ফনক 'চোর' পাঠের উৎপত্তি
হইরাচে।

है का

তত্ৰ জল-ক্ৰীড়া।

তছ্চিত-শ্রীগোরচন্দ্র:।

गांत्रक । >

জলকেলি গোরাচান্দের মনেতং পড়িল। পারিবদগণ সঞ্চেশ্চ জলেতে নামিল॥ কারোণ অঞ্চে কেছো কেছোণ জল পেলিণ মারে।

গৌরাজ পেলিয়া⁹ জল মারে প্রথাধরে । জল-ক্রীড়া করে পোরা হরবিভ-মনে। হলাহুলি বোলাবুলি করে জনে জনে । গৌরাজচান্দের লীলা কহনে না যার। বাস্থাদেব বোবে ভহিঁ পোরা-শুণ গার । ৪১৭৪১১০৮৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সাপুথির ১৬০৬ সংখ্যক পদ। ২। 'মনেতে'ক, থ। ৩। 'স্কে'ক, প-র-সা। ৪। 'কার'ক। ৫। 'কেহ কেহ'ক, চ। ৬। 'ফ্লে'ক, চ। ৭। 'ফেলিয়া'ক, চ।

व्यागावही ।>

রাধা সখি জল-কেলিয় নিপুণাং।
ধেলতি নিজকুতে মধুরিপুণা ॥ধ্র॥
কুচ-পট-লুঠনা-নির্ম্মিত-কলিনা।
আয়ুধ-পদবা-বোজিত-নলিনা॥
দৃঢ়-পরিরস্করণ-চুম্বন-হঠিনা।
হিমাণ-জল-সেচনা-কর্মাণ কঠিনা॥
স্থা-ভরা-শিথিল-সনাতন-মহসা।
দয়িত-পরাজয়-লক্ষণ-সহসা॥১৮॥১১০৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬০৭ ও প-র পুথির ৩২।২ সংখ্যক পদ। ২। 'জলকেলি হুনিপুণা' ঘ। ৩। 'লুট্টিড' প-র। ৪। 'শ্রম' প-র। ৫। 'দিঞ্চন' প-র-সা। ৬। 'ভব'প-র-সা, প-র।

টাকা

১—৮। শ্রীরাধামোহন ঠাকুরের টাকা বথা— 'তত উভয়োর্জনযুদ্ধং দর্শরতি 'রাধে'ত্যাদি। হে সধি! জলকেনিরু নিপুণা শ্রীরাধা শ্রীক্রফেন সহ নিজকুতে থেলতি পরস্পারং নানাভল্যা জলমুং-কিপতি। কীলুদেন ?—কুচয়োঃ পটলুঠনেন কঞু-নিকাকর্ষণেন নির্দ্ধিতঃ কলিঃ কলহো বেন। সা চ কীলুশী ?—আর্থস্থাত্ত জলরপাত্রত পদব্যাং পথি বোজিতং ভরিবারক্ত্বেন নির্দ্ধিতং নিলনং বরা। ইচপরিরজ্ঞপূচ্বনরোর্হঠোহস্রান্তীতি তথা তেন। অত্র নিমিন্ত-সপ্তমী। শীতলকলসেককর্ম্বনি দৃঢ়া। স্থাতি-শ্রেন শিখিলং স্নাভনং নিত্যং মহত্তেলো বস্তু তেন। 'মহত্ত ৎস্বভেজ্যোরিভাষরঃ। পক্ষে ভরারা গোত্থামিনা সংহতি শ্লেষার্থঃ। দ্বিত্ত প্রাত্ত্ব-চিক্নে সহাত্য। ।"

অমুবাদ

১--৮। ছে স্থি! বিবিধ জ্বল-কেলিতে নিপুণা এীরাধা নিজ-কুণ্ডে এীক্কফের সহিত ক্রীড়া করিতেছেন। প্রিয়ত্ম জাঁহার কুচ-বদন অপদ্রণ করিতে উন্মত হইলে, তিনি তাঁহার সহিত (কুত্রিম) কলহ করিয়া কমল-সমুচত্রপ অস্ত্র বর্ষণ করিয়া নিবারণ করিতে চেষ্টা করিতেছেন। প্রিয়তম গাঢ় চুম্বৰ ও আলিখনের নিমিত্ত বল-প্রয়োগ করিলে. তিনি (তাঁহার প্রতি) সবেগে শীতল জল সেচন করিতেছেন। স্থাতিশযা হেতু প্রিয়ত্তমের ক্রীড়া-বেগ শিথিল হইলে তিনি তাঁহার পরাক্ষরে লক্ষ্ণ দর্শনে হাজমুঝী হইতেছেন! (অপর পক্ষে অর্থ--প্রিয়তমের পরাজয়-লক্ষণ দর্শনে তিনি আনন্দ-ভর-মছর স্নাত্তন গোঝামীর স্হিত হাস্ত করিতেছেন!)

महिन्न 15

রাধে নিজ-কৃণ্ড-পর্মাস তুলাকুরু রজং।
কিঞ্চ সিঞ্চ পিঞ্ছ-মুকুটমঙ্গাকৃত্য-ভঙ্গং।
অস্ত পশ্য কুল্ল-কুত্মম-রচিতোলত-চৃড়া।
ভীতিভিরতি-নাল-নিবিড়-কুস্তলমমুগুঢ়া॥
ধা তু-রচিত-চিত্র-বীথিরস্তাস পরিলানা।
মালাপ্যতি শিথিল-বৃত্তিরজনি ভূজ-হানা॥
ভীসনাতন-মণিরত্বমংশুভিরতিচ গুং।
ভেজে প্রতিবিশ্ব-জাব-দ্যাত্তব গণ্ডং॥
১৯৯১১১০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-দা পুথির ১৬০৮ সংধ্যক পদ। ২। 'মুক্টমলাকড' (প-স) ছলে 'মুক্টমলাকুক' ক, ঝ, চ, প-র-না; 'মুক্ট ভলীকুক' ঘ। টীকা

১-৮। শ্রীরাধামোহন ঠাকুরের টীকা, বথা-'তত: কাচিৎ সৰী ত্ৰীকৃষ্ণত পরাক্ষঃ স্চয়স্তী প্ৰীমতীং প্ৰতি পুনৰ্জলদেকাৰ্বং 'রাধে নিজ কুণ্ডে'-ত্যাদিকমাহ। হে রাধে। নিজকুগুপর্সি রঙ্গং चनरमकरकोमनः जुन्नोकुक वर्षम्। शिक्षमुकृष्ठेः জীকৃষ্ণ সিঞ্চ। কীদৃশং १—অম্বীকৃত-ভঙ্গং স্বীকৃত-পরাকরং। ভঙ্গ-চিকান্তাহ। অস্ত একুফক্ত কল্ল-কুম্মেন রচিতা উন্নতচ্ডা অতিনীশনিবিডক্ষলময় শক্ষীকৃত্য ভীতিভিগু ঢ়া সংশ্বপ্তা পুকায়িতা ইতাৰ্থ:। তথা ধাতুভিবৈরিকৈ রচিতা চিত্রপঙ্ ক্রিবস্তুসি পরিশীনা নিমগ্রা ভীতিভিরিতি সর্বত্ত যোঞ্চাম। 'বীৰি: পঙ্কৌ গৃহাঙ্গে চ ক্লপ-কাস্তারবল্ম নো'রিভি বিখ:। মালাপি ভূপবিহীনা সভী শিধিল বৃত্তিরঞ্জন স্লানবদনা জাতা। 'ভৃদ্বিহীনে'ত্যনেন ভূজানাং প্রায়নং স্চিতং তেন সর্ক্সহায়ানাং পরাক্ষয়ো বৃত্ত:। বৎ শ্রীসনাতনক্ত শ্রীকৃষ্ণক্ত মণিরত্বং মণিশ্রেষ্ঠং কৌশ্বভং অংশুভিশ্চঙাং পঞ্চসি তদপি তব গঙাং প্রতিবিশ্বভাব-কপটাৎ ভেজে ত্বাং শরণং গতমিতি পশ্র। 'কণটোহন্ত্রী ব্যাক্তদন্ত্রোপধয়' ইত্যমর:। পক্ষে শ্রীসনাত্তনগোস্বামিনো মণিঃ শিরোমণিঃ শ্রীকৃষ্ণঃ তত্ত রত্ম।

অসুবাদ

১—৮। হে প্রীরাধে! তুমি নিজ-কুণ্ডের জলে
ক্রীড়া-কৌশল বিন্তার এবং স্বীক্তত-পরাজর শিথিপুদ্ধারী প্রীক্তকের অবল জল-সেচন কর। দেথ,
ক্ল-কুস্ম-রচিত ইহাঁর উন্নত চূড়া ভরের জক্তই
স্থনীল নিবিড় কুস্তলের মধ্যে লুকারিত হইরাছে!
ইহাঁর গৈরিক-রচিত চিত্ররাজি (ভরের জক্তই)
জলের মধ্যে বিলীন এবং মালা শিথিল-গ্রন্থি ও
ক্রমর-রহিত হইরাছে! প্রভাজান্মর প্রীক্তকের মণিশ্রেষ্ঠ (কৌজভ,—অপর পক্ষে—সনাতন গোস্থানীর
শিরোমণি প্রীক্তকের রত্ব) প্রতিবিশ্বছলে ভোমার
গঞ্চের শরণ লইরাছে!

शननी ।ऽ

নাহি উঠিল দোঁহে কুণ্ডক তীর। তকু তকু লাগল পাতল চীর॥ তাজে বনায়ল নব নৰ বেশঃ কুঞ্চক মাঝে করল পরবেশ ॥ বিবিধ মিঠাই কতত উপহার। ভোজন করু তঁহিং কত পরকার 🛚 রাইক যতনে সোই শ্রামরায়। বত্বিধ ভূজলও হরিষ-হিংার 🛭 যো কছু শেষ রহল পুন থারি। স্থি স্থেও ভোজন করল বহনারি। তামুল খাই শয়ন চুত্ত কেল। আলসে আকুল দোঁহে নিন্দ গেল 🛭 স্থিগণ তাহিঁ শ্যুন করু কুঞ্চে। কুস্ম-শেজ রচিত রসপুঞ্চে॥ নিতি নিতি ঐছন ছুহুঁ ক বিলাস। বীজন করতহিঁ গোবিন্দদাস ॥২০॥১১১১॥ ইতি তৃতীয়-শাখায়াং ষোড়শপল্লবঃ।

পাঠা শ্বর

১। ইহাপ র-সাপুথির ১৬০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'কক তহিঁ' ফলে 'করতহিঁ' খ। ৩। 'জুলন' ক; 'ডোজন কক' খ, অ, 'ভোজন' প-র-সা। ৪। 'তহিঁ' ক, খ, চ।

অথ জন্ম-লালা।
আনে শ্রীঅবৈতচন্দ্রত্য যথা।
শিষ্ডা।>
এ তিন ভুবন মাঝে অবনী-মণ্ডল সাজে
তাহে পুন অভি অনুপাম।
শোক মুখ অপত্রয় বার নামে শাস্ত ইর
বেন সেই শান্তিপুর গ্রাম।

কুবের পণ্ডিভ তার শুদ্ধ-সত্ব বিজ্ঞরায় নাভাব দেবী ভাষার গৃহিণী। শান্তিপুরে করিণ স্বিভি কৃষ্ণ-পূজা করে নিডি ভক্তি-হান দেখিয়া অবনী॥ কলি-হত জীব দেখি মনে তুখ পায় অতি ভক্তো আরাধয়ে ভগবান। সেই আরাধন-কাজে নাভা পেবী-গর্ভ মাঝে মহাবিষ্ণু হৈলা অধিষ্ঠান ॥ শুক্লা সপ্তমী দিনে মাথ মাস শুভক্তণে অবতীৰ্ণ হৈলা মহাশয়। হৈলা হর্ষত-মতিং দেখিয়া পণ্ডিত অতি নয়নে আনন্দ-ধারা বয়॥ আনন্দ পাইল মনে আচন্বিতে জগ-জনে কি লাগিয়া কেহো নাহি জানে। এ বৈক্ষবদাসে বলে উদ্ধার হইবে হেলে পতিত পাষ্ণী দীন হানে ॥১॥১১১২॥ পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৬১০ সংখ্যক পদ। ২। 'লাভা' ক। ৩। 'করে' ক। ৪। 'লাভা' ক। ৫। 'হরিষ মতি' খ, ঘ। ৬। 'এ বৈষ্ণব-দাসে' ছলে 'বৈষ্ণবের দাসে' খ, ঘ।

क्नानि ।)

কুবের পণ্ডিত প্রতি হর্ষত দেখিয়া পুক্রের মুখ।
করি জাতকর্ম যে আছিলং ধর্ম বাঢ়য়ে মনের স্থখ॥
সব ক্ষকণ বন্ধন-কমল-শোভা।
ভালামূলস্বিত বাস্ক স্বালিত বাস্ক স্বালিত

নাভি স্থগভার পরম সুন্দর नग्रन कमल जिनि। অরুণ চরণ নখ-দরপণ জিভি কত বিধুমণি॥ মহাপুরুষের চিহ্ন মনোহর দেখিয়া বিশ্বয় সভে। বুঝি ইহা হৈতে জগত ভরিবে এই করে অমুভবে 🛭 যত পুরনারী শিশু-মুখ হেরি* व्यानन्म-माग्रददः ভाদে। না ধরুয়ে হিয়া পুন পুন গিয়া नित्रश्राय अनिभिर्य ॥ করে পরিহারে তাহার মাতারে কহে হেন স্থত যার। ভার ভাগ্য-সামা কি দিব উপমা ভূবনে কে সম তার। স্ব' নারাগণ এতেক বচন करर शप शप ভाষा। বুঝল কারণ জগত-ভারণ माम देवखरवत्र व्यामा^२ ॥२॥১১**५७॥** পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬১১ সংখ্যক পদ।
২। 'বে আছিল' ফ্লে 'বেবা বিখি' খ; 'বেবা ছিল'
প-র-সা। ৩। 'বত পুরনারী' ইত্যাদি পংক্তি
চারিটি খ পুথিতে নাই। ৪। 'সাগরে' ক, প-র-সা।
৫। 'ক্রি' খ, প-র-সা। ৬। 'তাহার' ইত্যাদি
ফ্লে 'তাহার মাতার করি পরিহার' প-র-সা। १।
'ক্রে' প-র-সা। ৮। 'ভাব' প-র-সা। ৯।
'বুঝিল' ঘ। ১০। 'আনা' প-র-সা।

यहरै ।)

নাহি কুষ্ণ-নাম-ভয় বিষয়ে সকলং মন্ত खिलम्य इरेन खरनो । কলিকাল-সর্প-বিষে দগ্ধ জীব মিথারিসে না জানয়ে কেবা⁸ সে আপনি ॥ নিজ কন্যা-পুজোৎসবে ধন-ব্যয় করে সভে নাহি অন্য শুভ কর্মলেশ। যক্ষণ পুজে মন্ত মাংসে নানা মতে জীব হিংসে এই মত হৈল সর্বব দেশ। দেখিয়া করুণা করি কমলাক্ষ নাম ধরি व्यवजीर्ग देशा (गीज प्रतम। সাক্ষোপাজে অবতার ব্ৰহ্মবাজ-কুমার করাইব এই অভিলাবে ॥ সর্ব্ব-আগে আগুয়ান জীবের করিতে ত্রাণ শান্তিপুরে করিলা প্রকাশ। সকল তুক্কুতি যাবে সভে কুষ্ণ-এেম পাবে कटर मीन देवखदवत्र माम ॥७॥১১১৪॥ পাঠান্তর

তথা রাগ ৷>

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬১২ সংখ্যক পদ।

१। 'त्रकरन' क; 'त्रकनि' थ। ७। 'सिनिनै'

প-র-সা। ৪। 'কিবা' থ। ৫। 'একা' প-র-সা।

জয় জয় অবৈত আচার্য্য দরাময়।
অবতীর্ণ হৈলা জীবে হইয়া সদয়॥
মাধ মাস শুক্লপক্ষে সপ্তমী দিবসে।
শান্তিপুরে আসি প্রভু হইলা প্রকাশে॥
সকল মহান্ত মাঝে আগে আগুয়ান।
শিশুকালে পুইলা পিতা কমলাক্ষ নাম॥
কলি-কাল-সাপে জীবে করিল গরাস।
দেখিয়া করুণা করি হইলা প্রকাশ॥

118117774

रेजापि श्रम्।

পাঠক্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১৩ সংখ্যক পদ। 'তথা রাপ' ছলে 'শ্রী' খ।

ততঃ জ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রাবির্ভাবঃ।

শীরাগ।>
বাঢ়দেশে নাম একচক্রা গ্রাম
হাড়াই পণ্ডিত-ঘর।
শুক্ত মাঘ-মালি জনমিলা হলধর॥
হাড়াই পণ্ডিত অতি হর্মিত
পুক্ত-মহোৎসব করে।
ধরণী-মগুল করে টলমল
আনন্দ নাহিক ধরে॥
শাস্তিপুর-নাথ মনে হর্মিত

করি কিছু অমুমান।
অন্তরে জানিলা বুঝি জনমিলা
কৃষ্ণের অগ্রন্ধ রাম॥

এ দীন পামর হইবে উদ্ধার কহে তুখী কৃষ্ণদাসে 1৫1>১১৬॥

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুণির ১৬১৪ সংখ্যক ^{পদ।} ২। 'রাঢ়দেশ'ক, প-র-সা।

হুই।) ভুবন-আনন্দ-কন্দ বলরাম নিভ্যা^{রন্দ} অবভীর্ণ হৈলা কলি-কালে। ঘুচিল সকল দুখ দেখিয়া ও চান্দাসু^র

ভাসে লোক আনন্দ-ছিলোলে #

क्य क्य निज्ञानम त्राप्त । অঙ্গুলে চান্দের পাঁতি তনক-চম্পক-কাঁতি রূপে জিতল কোটি কাম ॥ গ্রু। शृर्ग-ठन्म किएम त्निथ ७ गुथ-मधन (मि **पिचल नग्रान ভाঙ, धरू**। আগাসুলম্বিত ভুজ তল থল-পক্ষ কটি খীণ করি-অরি° জমু॥ ভকত-ভ্ৰমর বুলে চরণ-কমল-ভলে আধ বাণী অমিয়া প্রকাশ। इंड कलियुग-कौरव উদ্ধার হইবেণ এবে करह मीन छूथी कृष्णमांत्र ॥७॥১১১१॥

পঠিক্সির

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৬১৫ সংখ্যক পদ। 'পুঠ্ই' ক্লে 'শ্রীরাগ' প-র-সা। ২। 'হৈন' ক, ধ। ৩। 'সাপরে' প-র-সা। ৪।প-র-সাব্যতীত ষম্ভান্ত পুথিতে 'ঞ্চ' নাই। ৫। 'ঐরি' ক; 'দৈরি' চ। ७। 'कानिवा' थ। १। 'इटेल' क; 'इटेव' প-র-সা।

थामणी ।>

আগে জনমিলা নিভাইচান্দ। পাতিলা অমিয়া করুণা ফাব্দ 🛭 নারীগণ সভে দেখিতে যায়। मভাৱে করুণা-নয়ানে চায়॥ দেখিয়া সে ঘরে আসিতে নারে। রূপ ছেরি ভার নরান বুরে^২। (मिथ मार्क मान विठांत कात । **এই कान महाश्रुतम्य-वरत्र ॥** দেখিতে দেখিতে বাঢ়য়ে সাধ। ষরে আসিবারে পড়য়ে বাদ। মনে করি ইহার হিয়ার ভরি। ময়ানে কাজর করিয়া পরি #

কত পুণ্য কৈল ইহার মাতা। এ হেন বালক দিলা বিধাতা ॥ এত কহি কারু নয়ান দিয়া। আনন্দের ধারা পতে বাহিয়া॥ কারু স্থন বাহি ছুগধ ঝরে। কেহো যায় ভারে করিভে কোরে॥ এ সব বিকার রমণীগণে। निवर्ताम जाना कत्राय मत्न ॥२॥>>>>॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১৬ সংখ্যক পদ। २। 'वादा' क, ह।

পাঠান্তর

তথাহি ঐীচৈত্য-ভাগবতে যথা'। রাত মাঝে একচাকা নামে গাছে গ্রাম। ভ্ৰত্ত অবভার্ণ নিত্যানন্দ বলরাম°॥ হাড়াই পণ্ডিত নাম শুদ্ধ বিপ্ররাজ। মূলে সর্বব পিতা তানে কৈল পিতা-ব্যাজ ॥ মহাজয়জয়-ধ্বনি পুজ্প-বরিষণ। সকোপে দেবতা : । করিলা তখন ॥ কুপা-সিদ্ধু ভক্তিদাতা শ্রীবৈষ্ণব-ধাম। অবভার্ণ হৈলা রাঢ়ে নিড্যানন্দ রাম। त्मरे पिन देश्टा ताए-मधन मकन⁸। পুন পুন বাঢ়িতে লাগিল স্বমঙ্গল ॥ レトリンンンショ

পাঠান্তর

)। हेहा श-त-मा श्रृणित ১७১१ मःश्राक भना। ২। 'মধ্যে' यः, 'দেলে' প-র-না। ৩। 'তহি' हेजानि श्रम 'ठार्ह' हेजानि क, थ ; 'ठाहा व्यवजैर्ग হৈলা নিত্যানন্দ রাম' প-র-সা। ৪। 'সকলে' ক, ৰ। ৫। 'পুনঃ পুনঃ' ক। ৬। 'পুনদ্বে' ক,

অথ জ্রীচৈত শচন্দ্রস্থ জন্মলীলা। ভাটগরি।>

ফাল্পন পূর্ণিমা তিথি হন্তগ সকলি।

জনম লভিবে গোরা পড়ে হুলাহুলিই।

অম্বরে অমর সভে ভেল উনমুখ।

লভিবে জনম গোরা যাবে সব তুথ।

শক্ষ তুন্দুভি বাজে পরম হরিষে।

জয়-ধ্বনি হুরকুল কুহুম বরিষে।

জগাভবি হরিধ্বনি উঠে ঘন ঘন।

আবালবনিতা আদি নরনারীগণ।

শুভক্ষণ জানি গোরা জনম লভিলও।

পূর্ণিমার চন্দ্র যেন উদয় করিলও।

হরি হরি ধ্বনি উঠে ভরিয়া ভুবন।

দীন হীন উদ্ধার হইবে ভেলও আন।

দেখিয়া আনন্দে ভাগে জগরাথ দাসও।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'হড়াহড়ি' প-র-সা। ৩। 'লভিলা' ক,
প-র-সা। ৪। 'করিল' ক, প-র-সা। ৫। 'হেন'
ছ। ৬। 'দেখিরা' ইত্যাদি স্থলে 'আনন্দে ভাসে
প্র জ্পরাধ দাস' প-র-সা।

कुड़ी 13

জয় জয় কলরব নদিয়া নগরে।
জনম লভিলা গোরা শচীর উদরে।
ফাল্কন-পূর্ণিমা ভিথি নক্ষত্র ফাল্কনি।
শুভক্ষণে জনমিলা গোরা বিজমণি।
পূর্ণিমার চম্র জিনি কিরণ প্রকাশ।
দূরে গেল অক্কার পাইয়া নৈরাশ।

ষাপরে নন্দের ঘরে কৃষ্ণ অবভার।
যশোদা-উদরে জন্ম বিদিত সংসার॥
শচীর উদরে এবে জন্ম নদীয়াতে।
কলিযুগের জীব সব নিস্তার করিতে॥
বাহুদেব ঘোষ কহে মনে করি আশা।
গৌর-পদ-ঘক্ষ মনে করিয়া ভরোসাং॥

120422521

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'ভরদা'ক, খ,প-র-সা।

क्लानि ।>

পূর্ণ-চন্দ্র গৌরহরি নদিয়া-উদয়-গিরি কুপা করি করিলা উদয়। পাপ-তম হৈল নাশ ত্রিজগতে উল্লাস জগ ভরি হরি-ধ্বনি হয়॥ হেন কালেং নিজালয়ে উঠিয়া অহৈত রারে নৃত্য করে আনন্দিত মনে। रुविमान देलग्रा नदन ভঙ্কার গর্জন রবে কেনে নাচে কেহো॰ নাহি জানে। দেখি উপরাগ-রাশি শীত্ৰ গন্ধাঘাটে আগি আনন্দে করিল গলামান। পাঞা উপরাগ-ছলে আপনার মনোবলে ত্রাক্সণেরে করে নানা দান ॥ दिश्य मदन विश्वव জগত আৰন্দময় ঠারে-ঠোরে কছে হরিদাস। भारत मन शर्मा তোমার ঐছন রক্ত বুঝি কিছু কাজে আছে ভাষ॥ আচাৰ্য্য-রত্ন শ্রীবাস হৈল মনে সুখোরাগ যাই স্থান করেশ গলাজলে। देकन इति-मङ्गीर्धन जानरम विश्वल-मन नामा मान देवन मदनाबदन ॥

এই মত জক্ত তথি যার যেই দেশে স্থিতি
তাহাঁ তাহাঁ পাই মনোবলে।
নাচে করে সন্ধীর্ত্তন আনন্দে বিভোল ১১ মন
দান করে প্রাহণের ছলে ॥১১॥১১২২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬২০ সংখ্যক পদ।
২। 'হেন কালে' হলে 'সেই কালে' প-র-সা। ৩।
'নিজালয়' প-র-সা। ৪। 'রায়' প-র-সা। ৫।
'কেহ' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'দেখি' ইত্যাদি
অবশিষ্ট কলিগুলি প-র-সাপুথিতে নাই। १। 'মনবলে' থ। ৮। 'কৈল' থ। ৯। 'ভিডি' ঘ;
'তিথি' চ। ১০। 'তাহা তাহা' ক। ১১।
'বিহ্বল' ক, চ।

দিনান্তরে। বিভাব বা তুড়ী।১

বিভাগ বা ভুড়ী।১

হের দেখসিয়া নয়ান ভরিয়া

কি আর পুছসি আনে।

নিদয়া নগরে শচার মন্দিরে

চান্দের উদয় দিনে॥

কিয়ে লাখবান ক্ষিল কাঞ্চন

রূপের নিছনি গোরা।

শচীর উদর- জলদে নিকসিল

থীরং বিজুরি পারা॥

কত বিধুবর বদন উজোর

ন্যান-ভ্ৰমর শ্রুতি-স্বোরুহে ধায় মকরন্দ-সোতে ॥

পাজামুলস্থিত ভুক্ক সুৰ্বলিত নাভি হেম-সরোবর।

কটি করি-অরি॰ উরু হেম-গিরি এ লোচন-মনোহর° ॥১২॥১১২৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬২১ সংখ্যক পদ। ২। 'স্থির' ক, চ। ৩। 'ঐ'র' প-র-সা। ৪। 'উক' ক, থ, খ, প-র-সা। ৫। 'মনহর' ঘ।

কুহিলা চ

প্রকাশ হইলা গৌরচন্দ।
দশ দিশেং বাড়িলং আনন্দ॥
রূপ কোটি মদন জিনিয়া।
হাসে নিজ-কার্তন করিয়া॥
অভি প্রমধুর মুখ জাঁাখ।
মহারাজ-চিহ্ন সব দেখি॥
শ্রীচরণে ব্রজ বন্ধ শোহে।
সব অক্তে জগ-মন মোহে॥
দূরে গেলং সকল আপদ।
ব্যক্ত হইল সকল অপদ।
শ্রীচিত্ত নিত্যানন্দ জান।

রন্দাবন তছু পদে। গান॥১৩॥১১২৪॥
 পাঠাস্কর

)। देश প-র-সাপুণির ১৯২০ সংখ্যক পদ।

। 'দিগে' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'বাঢ়িল'

थ; 'বাঢ়ল' প-র-সা। ৪। 'গেও' প-র-সা। ৫।
'পদ' ঘ।

अद्रवस्था । >

শ্রী হৈতত অথবার শুনি লোক নদিয়ার
উঠিল পরম মঞ্চল রে।
সকল-ভাপ-হর শ্রীমুখ স্থন্দর
দেখিয়া হুচল বিভোর রে।
অনস্ত ব্রেলা শিব আদিং বত দেব
সন্তাই নর-ক্রপ-ধারী রে।
গারেন হরি হরি গ্রহণ ছল করি
লখিতে কেহোও নাহি পারি রে।

কেহো করে স্তুতি কারো॰ হাতে ছাতি কেহো চামর চুলায় রে। কেহো পুষ্প বরিষে পরম হরিষে কেহো নাচে কেহো গায় বায় রে । **म**ण मिट्रा थाय লোক নদিয়ায় করিয়া উচ্চ হরি-ধ্বনি রে। এক ঠাঞি বরে কেলি মানুষ দেবে মেলি व्यानरम नवशीभभूतो (त । শচীর অঙ্গনে मकल (नवश्रत প্রণত হইয়া পড়িল রে। লখিতে কেহো নারে গ্রহণ-অন্ধ কারে पुरुष रे दे दिन्द राजिय र अला दिन । আইলা গোরাঙ্গ সকল শক্তি সক পাষ্ডী কেহো নাহি জানে রে। রান্ত ধরল ইন্দু প্রকাশেদ নাম-সিফু कलि-मर्फन वादक्ष वाना (त्र 1>81)>२०।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬২০ সংথ্যক পদ।
২। 'আদি করি' প-র সা। ৩। 'গ্রহণের'
প-র-সা। ৪। 'কোই' থ, ঘ, চ। ৫। 'কার'
ক। ৬। 'এক ঠাঞি' হলে 'একঅ' প-র-সা।
৭। 'চৈতভ্য' ক, থ, প-র-সা। ৮। 'প্রকাশ'
ক। ৯। খপুথি ছাড়া অক্সান্ত পুথিতে 'বাজে'
শব্দ নাই।

তথা বাগ ৷১

তুন্দুভি ভিণ্ডিমিং মন্ত্রী জয়-ধ্বনি
গাওয়ে মধুর বিধান রে।
বেদের অগোচর ভেটিব গৌরবর
বিলম্মে নাহি আর কাল বে।

আনন্দে ইন্দ্রপুর মলল-কোলারন সাজ সাজ বলি সাজ রে। বহু পুণ্যভাগে চৈত্তত্য প্ৰকাশে পাওল নবদ্বীপ মাঝ রে॥ অভোগ্যেদ আলিগন - চুম্বন ঘনে ঘন লাজ কেহো নাহি মানে রে। निष्या-পুরবাসী আপন পর নাহি জানে রে॥ ঐছন কোতুকে দেবতা নৰবীপে আওল শুনি হরি-নাম রে। পাইয়া গৌর-রদে বিভোর পরবংশ তৈতত্ত জয় জয় গান রে । দেখিলা শচী-গৃহে গোরাক পরকাশে একত্রে কত কোটি চান্দ রে ।। মাসুষ-ক্লপ ধরি গ্রহণ-ছল করি বোলয়ে উচ্চ হরি-নাম রে॥ সকল শক্তি সঙ্গে আইলা গৌরাগে পাষণ্ডী কেহে। নাহি জানে রে। শ্রীতৈত্য নিত্যানন্দ অবৈত আদি ভক্ত-বুন্দ वृन्तविन्ताम खण गान दत्र ॥১৫॥১১२७॥ ইত্যাদি শ্রীষ্ণবৈত-নিত্যানন্দ-(गोत्रहळ्य जग्र-लोग। ইতি তৃতীয়-শাখায়াং সপ্তদশপল্লবঃ। পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৬২৪ সংখ্যক পদ।
২। 'ডিভিম'ক, ম, চ। ৩। 'মহরি' প-র-সা।
৪। 'মধু' খ। ৫। 'বিশাল' প-র-সা। ৬।
'আনন্দ' প-র-সা। ৬। 'পুণ্য ভাগ্যে' ক; 'পুণ্য ভাবে' প-র-সা। ৮। 'পুন্য ভাগ্যে' ক; 'পুণ্য ভাবে' প-র-সা। ৮। 'অন্তে' প-র-সা। ৯। 'কৌভুক' ক। ১০। 'এক্তে' ইত্যাদি হলে 'এক্তে বৈছে ক্ড কোটি চান্দ রে' ক; 'এক্ত ঐছে কোটি চান্দ রে' চ।

অথ এ কুষ্ণ স্থ জন্ম-লীলা।

नटन्मां ९ मवः।

অস্তোচিত-শ্রীগৌরচন্দ্র:।

কল্যাণী।১

পুরুব জনম-**मियम (मिश्रा** আবেশে গৌর রায়। নিজগণ্ লৈয়া হর্ষিত হৈয়া নন্দ-মহেগৎসব গায় ॥ বাজয়ে রসাল খোল করতাল कीर्खन जनम-लीला। গোগান্ধ-স্থন্দর আবেশে আমার গোপ-বেশ নির্মিলা॥ মুত ঘোল দধি গো-রস হলদি अवनी मांसादव छालि। কান্ধে ভার করি তাহার উপরি নাচে গোরা বনমালী # নিতাই স্থন্দর করে**তু লগু**ড় আনন্দ-আবেশে নাচে। রাম গোরীদাস রামাই মহেশ নাচে তার পাছে পাছে[।] ॥ হেরিয়া যতেক नोलाहल -- (ला क প্রেমের পাথারে ভাসে। দেখিয়া বিভোর আনন্দ-সাগর

পাঠান্তর

এ জগমোহন দাসে ।১॥১১২৭॥

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৬২৫ সংখ্যক পদ।
২। 'ছিলপণ' ক, ধ, ঘ, চ। ৩। 'করেতে'
প-র-সা। ৪। 'পিছে পিছে' প-র-সা। ৫।
'নীলাচল' প-র-সা। ৬। 'এ জগমোহন দাসে'
ছলে 'গার বৃন্ধাবন হাসে' প-র-সা।

বিভাগ 15

নিশি-অবশেষে জাগি বরজেশবি
হেরই বালক-মুখ চান্দে।
কভন্ত উল্লাস কহই না পারিয়েং
উপলই হিয়া নাহি বান্ধে ॥
আনন্দ কো করু ওর।
শুনি ধনিই নন্দ গোপেশব আয়ল
নিশু-মুখ হেরিয়া বিভোর ॥
দুলা
চলতহি খলত উঠত খেনে গারতং
কহি সব গোকুল-লোকে।
আয়ল বন্দিগন বোগন সভ্জন
করতহি জাত বৈদিকে॥
দুধি স্বত নবনি হরিন্তা হৈয়ক্লব
ঢালত অফন মাঝে।
কহং শিবরাম দাস জ্ঞানন্দে নাচত
গাওত ব্লবর-রাজে ॥২॥১১২৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৬২৬ সংখ্যক পদ।
২। 'পারই' প-র-সা। ৩। 'ধ্বনি' ক। ৪।
'গিরত' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'কহ' ইত্যাদি
স্থলে—'কহ শিবরাম দাস অব আানন্দে নাচত গাওত
ব্রহ্মবর-রাজে॥' ক, খ, ঘ, চ।

ধাননা।

নন্দ স্থনন্দ যশোমতি রোহিণি
আনন্দ করত বাধাই।

গোকুল নগর-লোক সব হর্ষিত
নন্দ-মহলং চলু ধাই॥
গোরোচনা জিনি গোরি স্থনাগরি
নব নব রুজিণি সাঞ্চ।

নন্দ-সূন্ত সবে হের্ইতে আনন্দে
লোক চলত প্রথ মারা॥

আনন্দে কো করু ওর।
পত্তহি গান ওনে কত করতহিঁ
মন-স্থে সব জন ভোব ॥ ধ্রু ॥
আওল নন্দ-মহল মহা আনন্দে
অজনে ভেল উপনীত।
বশোমতি রোহিণি লেই সব গোপিনি
করতহি সব জনে প্রাত্ত ॥
বশোমতি-বয়ন হেরি সভে পৃহত্ত
কৈছন বালক দেখি ।।
জনম সফল ভুয়া আনন্দ ধন জন
পুণ্য ভ্বনে কত লেখি ।।
গোপ গোপিগণ দধি ঘুত মাধন
ঢালত ভারহি ভার।
কহ শিবরাম সকল ভুখ মীটল ২
আনন্দে কো করু পার॥৩:১১২১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬২৭ সংখ্যক পদ।

২। 'মহলে' ধ, প-র-সা। ৩। 'সাত' হা

৪। 'য়ন' ক, থ, চ; 'ভন' প-র-সা। ৫। 'আনশ্দ'

ক, ধ। ৬। 'গমনে' ধ। ৭। 'ভাল' প-র-সা।

৮। 'জন' ক, চ। ৯। 'গুছত' ক, চ, প-র-সা।

১০। 'ভোর' প-র-সা। ১১। 'দেখি' ক, থ, চ!

জনম সকল' ইত্যাদি পংক্তিব্রের স্থলে—'ভনি

কসোম্ভি আনন্দে অতি দেখহ বালক মোর ॥'
প-র-সা। ১২। 'মিটব' ক; 'মিটল' চ।

टिश्रवी।>

পুত্রমুদারমস্ভ যশোদা।
সমজনি বল্লব-ভতিরভিমোদাং ॥

গ্রাহিন্দ্র বল্লব-ভতিরভিমোদাং ॥

বিবিধমুপহারম্।

নৃভ্যতি কোহণি জনো বছবারম্ ॥

কোহপি মধুরমুপগায়তি গীতম।
বিকিরতি কোহপি সদধি-নবনীতম্ ॥
কোহপি তনোতি মনোরথ-পূর্ত্তিম্।
পশ্যতি বোহপি সনাতন-মূর্ত্তিম্ ॥৪॥১১৩०॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ১ ২৮ সংখ্যক পদ।
১১৩০।১১৩১ সংখ্যক পদৰর নরহরি চক্রবর্তীর 'ভব্জিরন্ধাকর' গ্রন্থে (রামনারায়ণ বিভারত্বের সংস্করণ)
২৭৮ পৃঠার উদ্ধৃত হইরাছে! ২। ভ-র গ্রন্থ ব্যতীত
অহাত্য প্রবিতে 'গ্রু' নাই। ৩। 'কাপ্যুপনরতি'
ক; 'কোপ্যুপনরতি' প-র-সা।

निका

> — ৮। "পূল্র"মিত্যাদি। বশোদা উদারং
মহাস্তং পূল্ধ অসত প্রস্তবতী। বল্লব হতিঃ গোণসমাজঃ অতিমোদা প্রকৃষ্টহর্ষঃ সমজনি জাতঃ।
কোহপি বিবিধমুপহারং উপনন্ধতি সমাগতিবিজাদিতাঃ
বিতরতি। কোহপি জনো বহুবারং হর্ষাতিরেকাং
বারং বারং নৃত্যাত। কোহপি মধুরং গীতং উপগান্ধতি কোহপি দল্লা সহ নবনীতং বিকিরতি দদিনবনীতাদিকং ভূমৌ বিকীধ্য মঙ্গলমাচরতীতি ভাবঃ।
কোহপি মনোরপপূর্তিং বাঞ্ছিতপুরণং বাচকানামিতি
শেষঃ তনোতি বিদধাতি কোহপি সনাতনমূর্তিং
শিক্ষণ্ড।

অহ্বাদ

১—৮। বশোদা পুত্র-রত্ন প্রস্ব করিলেন;
গোপগণ আনন্দোৎফুল হইলেন। কেহ বিবিধ
উপহার আনয়ন ও কেহ বারখার নৃত্য করিতেছেন।
কেহ মধুর স্বরে গান করিতেছেন ও কেহ দধির
সহিত নবনীত ছড়াইতেছেন। কেহ (বাচকদিগের)
বাহ্নিত-পুরণ করিতেছেন; কেহ বা সনাতন-মূর্জিকে
দেখিতেছেন।

1 3 1

101125021

আশাৰরী।১

বিপ্র-বৃন্দমভূদলক্ক তিং-গোধনৈরপি পূর্ণন্। গায়নানপি মবিধান্ ব্রজনাথ তোষয় ভূর্ণন্॥ সূমুরস্কুত•-স্থন্দরোহজনি• নন্দরাজ ওবায়ন্। দেহি গোষ্ঠ-জনায় বাঞ্জিতমুৎসবোচিত-দায়ন্

তাবকাত্মজ-বীক্ষণ-ক্ষণ-মন্দি মবিধ-চিত্তম্। যন্ন কৈরপি লব্ধমর্থিভিরেতদিচ্ছতি বিত্তম্ ॥ শ্রীসনাতন-চিত্ত-মানস-কেলি-নাল-মরালে। মাদৃশাং• রতিরত্র তিষ্ঠতু সর্ববদা তব বালে॥

পাঠাস্তর

১ : ইহা প-র-সা পুথির ১৬২৯ সংখ্যক পদ।

২। 'র্ন্সমভ্দলক্কতি' (ভ-র) হলে 'র্ন্সমভ্দলক্ক গ ক, ব, চ; 'র্ন্সমভ্দলক্কতং' প-র-সা। ৩।
'হনরন্তত' (१) ঘ। ৪। 'হ্ন্সরো জানে' ব।

৫। ভ-র ব্যতীত অভাক্ত পুথিতে 'এ' নাই। ৩।
'মাদৃশাং' হলে 'মাদৃশং' ব, চ।

টাকা

১—৮। "বিপ্রবৃক্ষ"মিত্যাদি। হে ব্রজনাথ বজেখন নকা। বিপ্রবৃক্ষং ব্রাক্ষণসমূহঃ অদমার-গোধনৈঃ পূর্ণং পুরিতাভিলায়ঃ অভুৎ জাতঃ মধিধান্ মংসদৃশান্ গারনান্ গারকান্ অপি তুর্ণং সম্বরং তোবয় রয়াদিদানেন প্রীণয়। হে নক্ষরাজ। তব অয়ং ফয়ঃ ক্ষারঃ অভুতস্করঃ অপুর্বস্থাকঃ অজনি লাতবান্। অতঃ গোর্চজনায় গোণজনায় বাঞ্ছিত-মভীষ্টং উৎসবোচিত-ধনং দেহি। তাবকস্থ স্বংসদ্ধিনঃ আস্থান্ত বীক্ষণ-ক্ষণেন দর্শনানক্ষেন নক্ষতে মোদতে ইতি তথা মহিধানাং জনানাং চিন্তং বং কৈরপি আর্থিভি-বাচিকৈঃ ন লক্ষং প্রাপ্রথং এতং এতাবং বিত্তং ধনং ইচ্ছতি অভিলব্যতি অঞ্জনগ্রন্তিং ধনং কাজ্কতাতি ভাবঃ। প্রীঃ স্বাতনী ষ্তা স্থাক্তক্ষপ্রাদ্ধি চিন্তং বেষাং অর্থাৎ তন্তজানাং মানসং এব মানস্বরঃ তন্মিন্ কেলিবিবরে বো নীল্মরালঃ নীল্মরালবং প্রীকৃক্ষঃ ভদ্মিন্। পক্ষে শ্রীসনাতনক্ত গোলামিনঃ চিন্ধমেৰ মানসংমানসসরক্তম্মিলিভাদি শেবং পূর্ববং। তব অত্র বালকে মাদৃশাং ত্রিভাপকাভরালাং ইতি ভাবঃ রতিরহুরাগঃ সর্বাদ তিওঁতু স্থিরীভবতু।

অহবাদ

—৮। হে ব্রজেখর! বিপ্র-রুক্ত অলভার ও গোধনে হ বারা পরিত্থ হ ইয়াছেন; (এখন) মাদৃশ গায়কদিগকেও সভর সহট ককন। হে নক্তরাক্ত! আপনার এই পুত্র অতি অপুর্ব্ধ দৌক্ষ্যাশালী জ্বাল্লান হেন; আপনি গোপগণকে উৎসবোচিত অভীত ধন দান করন। আপনার পুত্র-দর্শনানক্ষোৎফুল্ল মাদৃশ জনের চিত্ত, যাহা অত্যে পার নাই, এইক্রপ বিভ্ত কামনা করিভেছে। ক্রফগত-চিত্ত ব্যক্তিগণের চিভ্ত-ক্রপ মানস-সরোবরের ক্রনীল মরাল (অপর পক্তে— সনাতন নামক গোস্বামার চিত্তক্রপ মানসের শ্রনীল মরাল) আপনার এই বালকের প্রতি মাদৃশ জনের অনুরাগ সর্ব্বাল অবিচলভাবে অবস্থান কক্তা।

कुड़ो ।>

🕨 জয় জয় ধ্বনি ব্রক্ত ভরিয়া রে। উপনন্দ **অভিনন্দ अनम नमन नमा** পঞ্চ ভাই বাচে বাহু তুলিয়া রে ॥ ধ্রু॥ ञ्चलवानि त्रांश नव যশোধর যশোদেব নাচে নাচে আনন্দে ভুলিয়া রে। नाटि दत्र नाटि दत्र नन्म मटक देवश दर्शान-इन्स হাতে লাঠি কাম্দে ভার করিয়া রে॥ সূতিকা-গৃহেতে ধায় ८थरन नाटि ८थरन शांग्र गित्रदम् वालक-मूथ द्हित्रम् द्व। দধি হ্রথা ভারে ভারে जनएत्र व्यवनो भएत्र কেহ শিরে ঢালে দধি ভুলিয়া রে॥ व्याख्य भीदन भीदन লগুড় লইয়া করে नत्मत कननो नाट वत्रोग्रमाः वृष्गिः (त । অজকার•-ধ্বনি করি যত বৃদ্ধ গোপ নারী আশাধ করয়ে শিশু বেঢ়িরা রে।

নাচে গায় শত শত
ধেনু ধায় উচ্চ পুচ্ছ করিয়া রে।
ভোর হৈল গোপ সব অপরূপ নন্দেৎসব
এ দাস শিবাই নাচে ফিরিয়া রে॥

1161177051

1191121001

পাঠাস্কর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৩ গংখ্যক পদ।

হ। 'পঞ্চ ভাই' ফলে 'সবে মেলি'ক, এ, চ; 'পাঁচ
ভাই' হ। ৩। 'ফিরফে' ক, ও। ৪। 'বরিমিনি'
ক, ব, চ, প-র-সা; 'বরীমিনি' হ। ৫। 'বুড়িমা'
হা ৬। 'জয়কার' ক, চ। १। 'বেড়িমা' ক।

स्भन्न 1>

স্বর্গে ছুন্দু ভি বাজে নাচে দেবগণ।

হরি হরি হরি ধ্বনি ভরিল ভুবন ॥

ব্রহ্মা নাচে শিব নাচে আর নাচে ইন্দ্র।

গোকুলে গোয়ালা নাচে পাইয়া গোবিন্দ ॥

নন্দের মন্দিরে গোয়ালা আইল ধাইএগ।

হাতে লড়িং কান্ধেভার নাচে থৈয়া থৈয়াও ॥

দিখি ছুগ্ধ স্থাত ঘোল অঙ্গনে ঢালিয়া।

নাচে রে নাচে রে নন্দ গোবিন্দ পাইয়া॥

আনন্দ হইল বড় আনন্দ হইল।

এ দাস শিবাইর মন ভুলিয়া রহিল॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬০১ সংথ্যক পদ। 'ঝুমর' ছলে 'তুড়ী' প-র-সা। ২। 'লাঠি' ক, থ, ছ,চ। ৩। 'থেইয়াথেইয়া' ছ,চ।

क्लानी।>

যশোদা-নন্দন দেখি আনন্দে পূর্ণিত জাঁখি কোকুকে নাচয়ে গোপ-রাণী। তৈল হরিদ্রা পায় সভে সভার অলে দেয় হলাহুলি দিয়া জর-ধ্বনি॥ কেহো নাচে কেহো গায় কেহো নানা বাত বায়
নদ্দের আনন্দের নাহি সীমা।
উৎসব করয়ে রোলে ঘন ঘন হরি বোলে
কি কহিব যশোদার মহিমা॥
অধিল-ভূবন-পতি অনাথ জনার গতি॰
সকল দেবের শিরোমণি।
আজু শুভ দিন মোরে হৈলা প্রভু নন্দ-ঘরে
বড় ভাগ্যবতী নন্দ-রাণী ॥৮॥১১৩৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুশির ১৬৩২ সংখ্যক পদ। ২। 'নাচে'ক। ৩। 'অখিল-ভূবন-পতি' ইত্যাদি কলিটি প-র-সা বাতীত অক্সাক্ত পুথিতে নাই, তং-ক্ষুলে 'ইত্যাদি' শব্দ আছে।

वृध्व मस्या ।>

যোগমায়া ভগবতা দেবী পৌর্ণমাসী।
দেখিয়া যশোদা-পুক্ত নন্দ-গৃহে আসি।
সভে সাবধান করি যশোদারে কহে।
বহু পুণ্যে এ হেন বালক মিলেং ভোহে।
বহু আশার্বাদ কৈলা হর্মিত হৈয়া।
রূপ নির্পয়ে স্থাথ এক-দিঠে চাইয়া।
এ দাস শিবাই বলে অপরূপ হেরিং।
দেখিয়া বালক-ঠাম যাত্ত বলিহারি।

পাঠান্তর

19066161

১। ইহা প-র-দা পূথির ১৬৩৩ সংখ্যক পদ।
২। 'মেন' প-র-দা। ৩। 'এ দাদ শিবাই' ইত্যাদি
ভণিতার কলি প-র-দা ব্যতীত অক্তার প্রিডে
নাই।

আশোরারী।১

ব্রজনাল-কোডর।
গোকুল-উদয়গিরি-চাঁদ উজোর ॥ এবং ॥
কোটি ইন্দু জিনি মুখ তন্ম জলধর।
একত্র উদয়ে আলো° করিয়াছে ঘর॥
মুখ নীল-সরোক্রহ বিন্ধু অধর।
অরুণ-কমল শ্রুতি নয়ান শুমর॥
করন্ড জিনিয়া কর রক্তপক্ষবর।
নীল ধরাধর উর্গ নাভি সরোবর ॥
সিংহের শাবক কটি অতি মনোহর।
উলটি কদলা উরু দেখিতে স্থানর ॥
ও প্লা -কমল জিনি চরণ রাতুল।
হেরিয়া উদ্ধব প্রু চিত মন ভুল ॥

পাঠান্তর

1100122001

11006611661

১। ইহাপ-র সা পুথির ১৬৩3 সংখ্যক পদ।
২। প-র-সা ব্যক্তীত অভ্যাক্ত পুথিতে 'ঞ' নাই।
৩। 'আলক' ক, থ, খ, প-র-সা। ৪। 'উক্ল'
ক, থ, ঘ, প-র-সা। ৫। 'ও থল' হলে 'উথল'
প-র-সা।

অথ শ্রীরাধিকায়া জন্মোৎসবঃ। তত্ত্ব শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

গোরা-রূপে কি দিব তুলনা ।
তুলনা নহিল যে কবিল বান পোণা ॥
মেদের বিজুরা নহে রূপের উপাম।
তুলনা নহিল রূপে চম্পকের দাম ॥
তুলনা নহিল স্বর্ণ-কেডকার দল।
তুলনা নহিল পোরোচনা নির্মল ॥
কুকুম জিনিয়া অল-গন্ধ মনোহরা।
বাহু কহে কি দিয়া গঢ়িল বিধি গোরা॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পৃথির ৩৭। ও ১৬৪১ ও প-র পৃথির ২।১ সংখ্যক পদ। ২। 'উপমা' ক, ধ, ব, চ। ৩। 'ক্ষিন বান' ফ্লে 'ক্মিদ কাঁচা' প-র। ৪। 'ক্লেপর' প-র-সা, 'ক্লেপ' প-র। ৫। 'অ্ল-গ্রু' ফ্লে 'ক্লেপ অ্কডি' প-র-সা, প-র।

> "গাও রে গৌবাস-গুণ গাও। গাইয়া দেখ কেমন জুড়াও ॥" ইত্যাদি পুর্বাপরং গীয়তে।

कमानि ।>

ভাদ্র-শুক্রাষ্ট্রমী তিথি বিশাখা নক্ষত্ৰ ভথি শ্রীমতার জনম সেই কালে। মধ্যদিন-গত রবি দেখিয়া বালিকা-ছবি **जग्न जग्न (पटे क्**पृट्टल ॥ প্রতি ঘরে প্রতি ঘরে° বৃষভাগু-রাজপুরে क्य ब्राट्स जीबाट्स ब्राट्स ट्वाटन । वाका देशा महास्थी কল্যার শ্রী-মুখ দেখি দান দেই ব্ৰাহ্মণ সকলে। নগরের যত নারী নানা দ্রব্য হস্তে করি আইলা সভে কীর্ত্তিদা'-মন্দিরে। दिनव देशना अमुकृतन व्यत्नक श्रुत्गात करन এ হেন বালিকা মিলেও ভোরে॥ এহোত শমুৰ নয় भारमञ्ज्य मत्न दश्न लग्न कान इरल क्वा अनमिला। না করিছ সংশয় খনখাম দাস কয় कुछ-श्रिया मनय रहेना ॥>२॥>>७৮॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৬৪০ সংখ্যক পদ।
২। 'পুরে' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'প্রতি ঘরে' ছলে
'ব্রে' ক, খ, ঘ, চ। ৪। 'চাক্দ-মুখ' ক, খ, ঘ,
চ। ৫। 'কৃত্তিকা' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'বেল্ল'

প-র-সা। ৭। 'এহড'প-র-সা। ৮। 'বনরাম' প-র-সা।

व्यादभावाती ।>

জয় জয় ব্যভামু-তনি।

অবনী উয়ল খির বিজুরী জিনি॥

অরণ অধর মুখ চক্র জিনি।

উগারে অমিয়া তাহে ঈষত হাসনি॥

নয়নয়ুগল শ্রুতি অতি মনলোভা।

কর-পদতল এই অই পালু-শোভা॥

মুখ-ইন্দু গগুরুগ ভালে অর্ক চান্দে।

কর-পদ-নথে কত বিধু পড়ি কান্দে॥

কনক-মুণাল ভুজ নাভি সরোবর।

এ দাস উদ্ধব হেরি চিত্ত মনোহর॥

1120117021

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'জয় জয়'হলে 'জয়' ক, খ, ঘ, চ। ৩। 'হেরি চিড' হলে 'কহে বিচিঅ' খ।

सूमन 12

বৃষভাপু-পূরে আজুং আনন্দ বাধাই।
রত্মভাপু স্ভাপু নাচয়ে ভিন ভাই॥
দধি প্মত নবনীত গো-রস হলদি।
আনন্দে অঙ্গনে ঢালে নাহিক অবধি॥
গোপ গোপী নাচে গায় যায় গড়াগড়ি।
মুখরা নাচয়ে বুড়ী হাতে লৈয়া নড়ি॥
বৃষভাপু রাজা নাচে অস্তর°-উল্লাসে।
আনন্দ বাধাই গীভ গায় চারি পালে॥
লক্ষ লক্ষ গাবী বৎস অলম্ক্ত করি।
আক্ষেপে করমে দান আপনা পাসরি॥

গায়ক নর্ত্তন ভাট করে উতরোল।
দেহ দেহ লেহ লেহ শুনি এহি বোল।
কন্মার বদন দেখি কীর্ত্তিদা জননা।
আনদ্দে অবশ দেহ আপনা না জানি।
কত কত পূর্ব-চন্দ্র জিনিয়া উদয়।
এ দাস উদ্ধব হেরি আনন্দ হৃদয়।

#>812280H

ইভি জন্মলীলা।

তৃভীয়-শাখায়াং অফীদশ-পল্লব:।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৪৬ সংখ্যক পদ। ২। 'আব্দি'ক, প-র-সা। ৩। 'আনন্দ'প-র-সা। ৪। 'ক্সভিকা'ক, চ, প-র-সা।

অথ বাৎদল্যং কৌমারকালোচিতং যথা।

बिरगीत्रहसः।

पृद्धी ।३

এক মুখে কি কহব গোরাচান্দের লীলা।
হামাগুড়ি যায় নানা রজে শচীর বালা^২।
লালে° মুখ ঝর ঝর দেখিতে স্থন্দর।
পাকা বিষুফল জিনি স্থরজণ অধর।
অজদ বলয়া শোভে স্থান্ত-যুগলে।
চরণে মগরা খাড়ু বাঘনধ গলে।
বাহনেব ঘোৰ কহে নিছনি আপনা।

পাঠান্তর

12825821

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৪৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হামাগুড়ি' ইত্যাদি পংক্তির স্থলে 'হামাগুড়ি দিরা নানা রকে করে থেলা॥' প-র-সা। ৩। 'মালে' ক, চ। ৪। 'সুক্তর' ক, খ, খ, চ। নাটকা বেলোয়ার ।১

নাচত মোহন নন্দ-ছলাল মেরো কান। নাগা-বিরাঞ্জিত মোতিম-ভূষণ किं मार्क चूत्रूक तमाल । युन्मत्र छेत्र भन्न वन्न त्रम्त्र-नथ-भन সরক্তর রতন-মঞ্চীর। নব নব বচছঃ-পুচছ ধরি ধায়ত পতन व्यक्ति धृति • धृत्र व भदोत ॥ মরকত চান্দ মুক্রণ মুখ-মগুল পরিসর কুঞ্চিত অলক-হিলোল। ত্রজ-রমণী পরবেধধ করায়ত নয়ন ফিরায়ত আধ আধ বোল n অভিনৰ নীল জলদ জিনি তমুক্তচি কহিল নহিল রুপ্দ কিয়ে নিরুমাণ। কত কত ভকত যতন করি ধাতিত সবে চুড়ামণি দাসের এই নিবেদন 🛭

পাঠান্তর

1121122851

)। देहां भ-त-मा পूचित्र ১৬৪৯ मश्चा्रक भन्। ২। 'মোর' প-র-সা। ৩। 'যুকুরক সান' প-র-সা। 'হলাল' শব্দের মিলে 'রসাল' শব্দ ঘারা কলিটি শেষ করার বুঝা বাইতেছে বে, প্রথম পংক্তির 'মেরো কান' অংশটি গীতের আধর-রূপে প্রবৃক্ত হইরাছে। খাধুনিক রীতি অমুসারে উহা বন্ধনী-চিক্রে মধ্যে बोबांद्र (यात्रा। ४। 'वर्त्र' क, ब, च, ठ। ८। 'অৰ্ল' প-র-সা। 'অঙ্গুলি' পাঠে ভাল অর্থ হয় না; বোধ হয়, 'অঙ্গনে' শুদ্ধ পাঠ হইবে। ৬। 'ধূলি' শব্দ ধ পুথিতে নাই। १। 'সুথর' ধ। ^{७।} 'क्रभ' च, ठ, भ-त-मा; 'क्रभ' क। अ। 'बाबक' क ।

বিভাব ৷১

বাল গোপাল রক্তে मम-वय मधार मटक হামাগুড়ি আঞ্চিনায় ধেলায়। ভেজিয়া মাধন সরে তুলিয়া কমলঃ-করে মৃত্তিকা মনের স্থােখায়॥ বলরাম তা দেখিয়া यत्भाना निकटि याग्राव किंदिना छोडेरग्रेय वाडे कथा। শুনি তবে যশোমতী আইলা তুরিত গভি भागान चारेष्ट्र मारि यथा॥ মায় দেখি মাটি ফেলে না খাই না খাই বোলে আধ আধ বদন চুলায়। मुथ नित्रथरग्र जानी ধরিয়া যুগল পাণি मन-कृत्थ करत्र शंग्र शंग्र ॥ এ খির নবনী সর কিবা নাহি মোর ঘর মৃত্তিকা খাইছ কিবা হুখে। পিতা যার ত্রপ্প-রাজ কি তার এমন কাজ रुनित्न बहर्त मत्न क्रत्थ ॥ এতেঁক বলিয়া রাণী কোলে করি নালমণি ছল-ছল ভেল তু নয়ান। এ উদ্ধব দাস গাঁতে যশোমতা হরষিতে অনিমিখে নেহারে বয়ান ১৩১১:৪৩১ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৬৫ - সংখ্যক পদ। २। '(वम' क। ७। 'व्यक्तिन' क, ह। 8। '(कामन' क। १। 'वाका' क। ७। 'निवर्षिश'

তথা রাগ।>

वनन त्मलिया जाशाल तानी शातन हाय। मूच मात्य व्यवज्ञा प्रचितादा भाग्र॥ এ ভূমি আৰাশ আদি চৌদ্দ ভূবন। श्वताक नागलाक नजरमाकश्व ।

অনস্ত ত্রক্ষাণ্ড গোলোক আদিং যত ধাম।
মুখের ভিতর সব দেখে নিরমাণ॥
শেষ মহেশ ত্রক্ষা আদি স্তুতি করে।
নন্দ যশোমতী আর মুখের ভিতরে॥
দেখি নন্দ ত্রজেখরী বচন না ক্ষুরে।
স্থপ্রপ্রায় কি দেখিলুঁ হেন মনে করে॥
নিজ-প্রেমে পরিপূর্ণ কিছুই না মানে।
আপন তনয় কৃষ্ণ প্রাণ মাত্র জানে॥
ডাকিয়া কহয়ে নন্দে আশ্চর্য্য বিধান।
পুত্রের মঙ্গল লাগি বিপ্রে করং দান॥
এ দাস উদ্ধবে কহে ত্রজেখরীর প্রেম।
কিছু না মিশায় প্রেন জাসুনদ হেম॥

1188224811

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫১ সংখ্যক পদ।
২। 'বোলোকাদি' ঘ। ৩। 'ব্রফ্রেমীর' খ,
প-র-সা। ৪। 'করে' ক, খ, চ। ৫। 'ব্রফ্রে
৬ক্র' ক, খ, ঘ, চ। ৬। 'না মিশার' স্থলে 'নাহি
সীমা' ক: 'না মিসরে' প-র-সা।

निका

১৫—১৬। "এ দাস" ইত্যাদি। উদ্ধব দাস কহিতেছেন বে, ব্রজেশরী বশোদার প্রেম বেন (নির্মাণ) জাধুনদ-খর্ন,—উহাতে কিছুই মিশ্রিত হর না; অর্থাৎ আধুনদ-খর্ন বেমন মলিনতা মিলিতে পারে না, সেইরূপ বশোদার এই বাৎসল্য-প্রেমেও ঐশ্বর্য্য প্রভৃতি অন্ত কোন ভাব মিশ্রিত হইতে পারে না; ওজ্জ্মতই নিজ পুত্রের ঐশ্ব্য-দর্শন তাঁহার চিত্তে কণিক বিশ্বর ব্যতীত অন্ত কোন ভাব উৎপাদন করিতে পারে নাই।

বিভাৰ ৷১

কোলেভেং করিয়া রাণী নিরপয়ে মুখ। স্থানের সায়রে ভূবে পাসরে সব ছখ। মায়ের কোলেতে গোপাল মুখ পসারিল।

এ ভব-সংসার সব তাহাতে দেখিল।

ই কি ই কি বলি রাণী হিয়ায় লইল।

স্থপন দেখিল কিবা ব্ঝিতে নারিল।

থুতু সুতু দেয় রাণী বসনের দশি।

দেখিয়া মায়ের রীত ও না মুখে হাসি।

ঘনশ্যাম দাস আশা করে এই মনে।

কবে বা সেবিব আমি যশোদা-চরণে।

1011 >> 801

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬:২ সংখ্যক পদ। ২। 'কোলে' ক, খ, খ, চ। ৩। 'দেখিয়' ক, চ। ৪। 'ঘনরাম' খ, প-র-সা। ৫। 'য়ই' প-র-সা।

कलकरमा यथा।

ভাটিগারি ৷১ এক দিন মথুরা হৈতে ফল লৈয়া আচম্বিতে व्याहेला (म कल द्विविद्या । ডাকে পুন পুন সেং कल (लंश कलर (लंश नामारेला नटमन क्रुग्रादन ॥ ব্ৰজ-শিশু শুনি তায় ফল কিনিবারে ধায় বেতন লইয়া পরতেকে। কিনি কিনি ফল খায় আনন্দিত হিয়ার প্সারি বেডিয়া একে একে ॥ ধাম্য লইয়া একাঞ্চলি শুনি কৃষ্ণ কুতৃহলী কর হৈতে পড়িতে পড়িতে। ফল দেও বলে হাসি পসারিত নিকটে আসি

ধান্ত লৈয়া ফলাহারী পুন পুন মুধ ছেরি নিমিষ তেজিল পসারিণী।

খাত্ত দিল ফলাহারী° হাতে॥

এ দান উদ্ধব কয় কহিলে কহিল নয়
ভূবনমোহন স্নপথানি ছঙা>১৪৬া

পাঠকৈর

১। ইহাপ-র-সা পুণির ১৬৫৩ সংখ্যক পদ। ১। 'লেহ' ক। ৩। 'পদার' ব। ৪। 'ফলহারী' প র-সা।

छथा व्रोत्र ।>

ফল লেহ ফল লেহ ডাকে ফলাহারীং। চাত ধান্য শুধা করে আইলা ঐহরি। পদারে পেলিয়া॰ ধান্য ফল দেহ বোলে। অনিমিখে পদারিণী সে মুখ নেহালে॥ नग्रत्न गलार्य थांत्रा एति युग्यानि । কার ঘরের শিশু তুমিং যাইয়ে নিছনি 🛚 কোন পুণ্যবতী ভোমা করিলেক কোলে। কাহারে বলিয়া মা স্তন পান কৈলে ॥ ঘনরাম দাসে বোলে শুন পসারিণ। ফলের সঞ্চিত কর জীবন নিছনি ৭॥১১৪৭॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫৪ সংখ্যক পদ। १। 'ফলহারী' প-র-সা। ৩। 'শুধ' ক; 'সুধা' ឋ। ৪। 'ফেলিরা' ক, ধ, ঘ, চ। ৫। 'তোমার' প-র-সা। ৩। 'ভোমার' প-র-সা। १। 'धन-अभि शास्त्र' क. घ. छ।

युर्वे ।>

ও মোর সোণার চাঁদ কি ভোর মায়ের নাম কার ঘরে হৈশ উতপতি। বছ কাল তপ করি **८क शृक्रिल रत्रशो**त्रो কোন পুণ্য কৈল সেই সতী। ভোমারে করিয়া কোলে কত শত চুম্ব দিলে নয়ানের জলে গেল ভাসি। পাইয়া মনের স্থাধ স্তন দিল চান্দমুখে মুঞি ষাই হব তার দাসী।

এত কহি ফলাহারী ফল দিল কর ভবি প্রেম-ভরে গরগর চীত। কৃষ্ণচন্দ্র ফল হাতে খাইতে খাইতে পৰে আসি নিজ-গুহেৎ উপনীত। ফল দেখি যশোমতা আনন্দে না জানে কভি পাওয়াইয়া প্রেম-স্থথে ভাসে। ধত্য সেই ফলাহারী ভ ফলে পাইল নম্মছরি ক্তে কিছু ঘনরাম দাসে 🖂 ነ ১১৪৮॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সাপ্তিণ ১৬৫৫ সংখ্যক পদ। ২। 'পুজিল' ক। গ৷ 'ফলছারী' প-র-সা। ৪। 'দেন' ক, চ। १! 'আদি নিজ-গৃছে' স্থলে 'নিজ-श्राह देश्या श्र व-मा। ७। 'फलहावी' श-ब-मा। १। 'कन' क, अ, अ-ज्ञा। ७। 'बाइन' अ-ब-मा।

ট্টকা

১৫—১७। "ध्य" हेडााम। विद्याले विश्व : (किन ना) क्ष्यात व, मानम-नमन শ্রীকৃষ্ণকে প্রাপ্ত হইণেন। (শ্রীকৃষ্ণের দীলা व्यभात वांग्या) चनतांग नांग (यथा-माधा) किकिर বর্ণনা করিতেছেন।

कृष्टिनी 13

ডালা হৈল ব্লন্তনে পূরিত। ফলাহারীং স্বিশ্ময়-চিত্ত ॥ আপনা আপনি করে খেদ। মনে মনে ভাবে নিংবেদ ।৯॥১১৪৯॥

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-দা পুথির ১৬১৬ সংখ্যক পদ। २। 'कनश्ती' भ-ब-मा।

৩---৪। "আপনা আপনি" ইত্যাদি। ডালা র্ত্বপূর্ণ দেখিরা ফলবিক্তেত্রী আনন্দ প্রকাশ না

করিরা খেদ করার তাৎপর্য্য এই যে, তাঁহার তথন
মনে হইল—আমি কি হতভাগিনী! স্বয়ং ভগবান্কে
পাইরাও পাইলাম না; যদি তাঁহাকে চিনিতে
পারিতাম, তাহা হইলে ছার ধন-রক্ন না চাহিয়া
তাঁহার পদ-সেবা মাগিয়া লইতাম। উহা না করিতে
পারার তাঁহার মনে নির্কেদ-ভাব আসিল।

অথ কোমার-পোগণ্ড-কালোচিত-বাৎসল্যং যথা।

শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

মায়ুর।১

কিয়ে হাম পেখলুঁ কনক-পুতলিয়া।
শচার আফিনায় নাচে ধৃলি-ধৃসরিয়া॥
চৌদিকে দিগন্থর বালকে বেঢ়িয়াই।
ভার মাঝে গোরাই নাচে হরি হরি বলিয়া॥
রাতৃল কমল-পদে ধায় বিজমণিয়া।
জননী শুনয়ে ভাল নুপুরের ধ্বনিয়াই।
বাহুদেব ঘোষে কহে শিশু-রস জানিয়া।
ধত্য নদিয়ার লোক নবদ্বীপ ধ্নিয়া॥

পাঠান্তর

11006611061

১। 'মাউর' ঘ, চ। ২। 'বেড়িয়া' ঘ, চ। ৩। 'গৌর' ঘ। ৪। 'নুপ্রের ধ্বনিয়া' স্থলে 'নুপ্র-স্থধ্বনিয়া' ক।

তথা রাগ।১

শচীর আজিনায় নাচে বিশ্বস্তর রায়।
হাসি হাসি ফিরি ফিরি মায়েরে সুকায়।
বয়ানেং বসন দিয়া বোলে লুঁকাইলুঁ।
শচী বোলে বিশ্বস্তর আমি না দেখিলুঁ।

মাথের অঞ্চল ধরি চঞ্চল-চরণে।
নাচিয়া নাচিয়া যায় খঞ্জন-গমনে।
বাস্থদেব ঘোষে কছে অপরূপ শোভা।
শিশু-রূপ দেখি হয় জগ-মন-লোভা।
। ১১॥১১৫১॥

পাঠাস্কর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫৭ সংখ্যক পদ। ২। 'বদনে'প-র-সা।

মায়ুৰ (১

পঞ্চ-বরিখ-বয়সাকুত-মোহন ধাবমান পর-অঞ্চনা। পায়দ পাণি উর্থলে মাখন খায়ত মিটায়ত বয়না ॥ দোলে দোলে মোহন গোপাল। প্রখরত চরণ-গতি মুখর কিন্ধিণি কটি (लाउँ न दलालाय वनमाल ॥ अ ॥ সোণায় বাদ্ধিলা ভাল রুক্ত-নথ উরে মাল পিঠে দোলে পাটকি থোপ। খেনে আলগছি দেই খেনে ভূমে গড়ি যাই থেনে পরসর খেনে কোপ। নন্দ স্থনন্দ যশোমতি রোহিণি আনন্দে স্থত-মুখ চায়। নয়ন-দৃগঞ্চল কাজরে রঞ্জিত হাসি হাসি বদন দেখায়। কুস্তলে রভন মণি ঝলমল⁸ দেখি। কুণ্ডলে উচ্ছল গণ্ড কালর আঁখি। ঘনরাম দাসে বোলে শুন নন্দরাণি। ত্রিজগত-নাথ নাচাও করে দিয়া ননী # 11202015

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুলির ১৬৫৮ সংখ্যক পদ।
 এই পদটি লিপিকর-ল্রমে শ পুলিতে বর্জিত ইইরাছে।

২। 'আরড' ক। ৩। 'নধর' প-র-সা। ৪। 'वागमिन' भ-त-मा। १। 'कांकरत्रर' भ-त-मा।

বাটকা।১

চপলাই নন্দ-নন্দন মতি ভাওয়ে। বহুবিধ বালক সঙ্গহি রঙ্গহি অঙ্গ দোলাইয়া আওয়ে ॥ ধ্রু॥ হেরি হর্ষিত অতি রাণি যশোমতি বাহ্য পসারিয়া ধাওয়ে। কটি-ভটে কিন্ধিণ স্থুসুর-রণরণি অরুণিত-চরণ নাচাওয়ে॥ এক করে লবনি আর করে পায়স **८थलन मिश्रा याता ७८ग्नः।** গারতং আধ আধ কর বদনহি রহি রহি আধ আধ খাওয়ে ১১৩॥১১৫৩॥ পাঠাস্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৫৯ সংখ্যক পদ। २। 'नन्तन' क, थ, भ-द-मा। ७। 'छद्रभ्' क, । ৪। 'বাচরে' ক; 'বাচওরে' থ। ৫। 'গিরত' ক, প র-সা।

মাযুর।১

ধাতু প্রবাল-দল নব গুঞ্জাফল ব্ৰজ-বালক সজে সাজে। কৃটিল কুম্বল বেঢ়ি মণি মুকুতা ঝুরি কটিভটে ঘুঙ্গুর বাজে 🛭 নাচত মোহন বাল গোপাল। বরজ-বধু মেলি দেওই° করতালি বোলই ভালি রে ভাল। নন্দ স্থনন্দ যশোমতি রোহিণি আনক্ষে হ্ত-মুখ চায়। কাজৰে বঞ্চিত वक्रण मृत्रक्रम হাসি হাসি দশন দেখায়।

বংশি কহই সব ব্ৰজ-রমণীগণ আনন্দ-সায়ুরে ভাগ। হেরইতে পরশিতে লান্ন করইতে छन-थित्र छोगल राम ॥>॥>>৫॥

পাঠাম্বর

ইহা প-র-সাপুথির ১৬৬০ সংব্যক পদ। २। 'पूर्खत्र'⊲। ०। '(।।हे' क, প-র-সা। ७। 'मनम' थ।

বিভাব ৷১

হোর দেখ বাছার ক্রচর করতল আঁথি বিধির করণ এক ঠাম। বুঝিয়া সে মুনিরাজ আমার মনের সাধ গোপাল বলিয়া থুইল নাম। অতিশয় শিশু-মতি মন্দ মন্দং গভি কটি-ভটে কিঙ্কিণী বাজে। কম্ব-কণ্ঠ পরি মোতি°-মালবর লব্ভি রুকু-নথ সাজে॥ অনেক সাধ করি করে নবনিত ভরি (प्रश्नू (डाजन मागि। খিতিতলে ডারত সো নাহি খাওত ইহ মোর করম অভাগি। ব লি কহয়ে শুন মাত যশোমতি (धार्शात्र हत्राण करवाण मित्रा। এ তুয়া নন্দন ভুবন-বিমোহন পুণ-ফলে পাওই কেবা ॥১৫॥১১৫৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৬১ সংখ্যক পদ। ২ ' শুল মলন' স্থলে 'চলে মলন মলন' প-র-সা। ৩। 'মোতিম' ক, চ; 'মোতি' প-র-সা। ৪। 'মাতা' क। १। 'वर्शन' देखानि भरक्तित्र परन 'वरनीवनन ক্ষাহে শুন ওহে যশোষতি' প-র-সা। ভ। 'ক্রঙ' প-র-সা।

ভাটিরারি 15

खांन नार्ट (त नार्ट (तर नम-छुनान। চৌদিগে বেচুল ব্রজ্ব-রমণাগণ যশোমতি দেই করতাল।। রুতুর ঝুতুর ধ্বনি ঘাঁঘর কিকিণী গতি নট খঞ্জন-ভাতি⁸। হেরইতে অখিল-নয়ন মন ভূলয়ে ইহ নব-নীরদ-কাঁতি॥ করে করি মাখন দেই রম্পাগণ খাওই নাচই রঙ্গে। ধ্বজ-বজ্ঞাকুশ-পক্ষজ-সুল্লিভ চরণ চালই কত ভঙ্গে। কুঞ্চিত কেশ **दिश मिशञ्च**त्र* কটি-তটে ঘুঙ্গুর সাঞ্চ। यः नि करहे किए জগ-জন-মঞ্চল শ্রবণে স্থধা সমণ বাজ ॥১৬॥১১৫৬॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৬২ সংখ্যক পদ।
২। 'নাচে রে নাচে রে' ফ্লে 'নাচ রে নাচ রে'
ক। ৩। 'ঘাঘর' ঘ, চ। ৪। 'ভাঁভি' ক, চ।
৫। 'জুলয়ে' ক, খ; 'ভূলভ' প-র-সা। ৬।
'দিগাঘর' ঘ, চ। ৭। 'অধা সম' ছলে 'অধামর'
প-র-সা।

পুনশ্চ দিনান্তরে।

মায়ুর ।১

দধি-মন্থ-ধ্বনি শুনইতে নীলমণি আওল সজে বলরাম। বশোমতী হৈরি মুখ পাওল মরমে তুখ চুম্বয়ে চান্দ-বয়ান। কহে শুন যাত্ৰমণিং ट्यादित क्षित क्योद ननो খাইয়া নাচহ মোর আগে। নবনী-লোভিত হরি মায়ের বদন হেরি কর পাতি নবনীত মাগে॥ রাণা দিল পুরি কর খাইতে রঞ্জিমাধরু অতি সুশোভিত ভেল তায়[°]। খাইতে খাইতে নাচে কটিতে কিঙ্কিণী বাৰে হেরি হর্ষিত ভেল মায়॥ नम्म- जूलांग नात् जांग । উপলিল মহানন্দ ছাড়িল মন্থন^{*}-দণ্ড সঘনে দেই করতালি। ধ্রা। গদ গদ কহে রাণী দেখ দেখ রোহিণি याद्या नाहिष्ड एम्थ भाता। রোহিণী আনন্দময় ঘনরাম দাসে কয় রুহু ভেল প্রেমে বিভোর ॥১৭॥১১৫৭॥ পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপৃথির ১৬৬০ সংখ্যক পদ।
২। 'যহমণি' ক। ৩। 'বিভিমাধর' প-র-সা।
৪। 'রার' ক, খ। ৫। 'মথন' প-র-সা।
৬। 'সেনেহ' প-র-সা। ৭। 'বাণী' প-র-সা।
৮। 'প্রেমেতে' প-র-সা।

পঠমঞ্জী ৷১

নাচে রে নাচে কে মোর রাম দামোদর।
যত নাচ তত দিব ক্ষীর ননী সর ॥
আমি নাহি দেখি বাছা নাচ আর বার^২।
গলায় গাঁথিয়া দিব মণিময়° হার ॥
তাতা থৈয়া থৈ° বোলয়ে নন্দ-রাণী।
করতালি দিরা নাচে রাম যতুমণি ॥
রাম কামু রে মোর রাম° কামু।
মণিময় ঝুরি॰ মাথে ঝলমল তমু

ADPAD SON

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬১৪ সংখ্যক পদ। ২। 'নাচ আর বার' ছলে 'নাচন তোমার' প-র-সা। ৩। 'গল্পমতি' প-র-সা। ৪। 'তাতা বৈয়া বৈ' ন্থলে 'ভাতা থৈয়া ভাতা থৈয়া' প-র-দা। ৫। '७रव वाम' भ-व-मा। ७। 'सूनि' भ-व-मा।

व्यक्ति।

नव-नीव्रष-नील स्रुठान ७५। यतमल ७ मूथ ठांग्म जम् ॥ শিরে কুঞ্চিত কুম্বল-বন্ধ ঝুটা। ভালে শোভিত গোময়-চিত্ৰ ফোঁটা ॥ অধরোজ্জল রঙ্গিম বিস্থু জিনি°। গলে শোভিত মোতিম-হার মণি 🛙 ভুজ-লম্বিত অঙ্গদ মণ্ডনয়া⁸। नथ · हट्यक ॰ गर्यत - विश्व धनग्रा । হিয়ে হার রুরু-নথ রত্ন জড়। কটি কি কি পি ঘাঁঘর তাহে মড়া ॥ পদ - নৃপুর বঙ্করাজ ফুলোভে । থল-পঞ্চজ-বিভ্রমে ভুক্স লোভে ॥ ব্ৰজ-বালক মাখন লেই করে। সভে**> খায়ত** দেয়ত শ্যাম-করে ॥ विश्रात नम्म-नम्मन এ छवरन। **भम-भ्यक स्मर्य नृजिश्ह छट्ट ॥১৯॥১১৫৯॥** পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৬৫ সংখ্যক পদ। ২। 'হুঠাম' ঘ, চ, ৩। 'জনি' ক, ধ, প-র-সা। 8। 'मधनवा' क, थ, ह, श-व-मा। १। 'हन्स' 🖣। ৬। 'রদ্ধে' ক, ধ, ঘ, চ। ৭। 'মোড়া' कः 'स्कृ' भ-द्र-मा। ৮। 'भरक' च, ठ। २। 'मदब' क ।

ভটিরারী ৷১

নাচত মোহন নন্দ-ছুলাল। রক্ষিম চরণে মঞ্জির ঘন বাজ্ত কিঙ্কিণি তাহিঁ রদাল ॥ স্থল-পক্ষদণ জিনিয়া চরণতল অরুণ-কিরণ কিয়ে আভা। তাহার উপরে নথ-চান্দ স্থশোভিত্ত হেরইতে জগ-মন-লোভা মণি-অভরণ কভ অঙ্গহি ঝলকভ নাসায় মুকুতা কিবা' নোলে। মামামাবলি ठान्म-तमन जुलि नवोन (कांकिला (यन (वांदल ॥२०॥) ১৬०॥ ইতি তৃতায়-শাখায়াং উনবিংশতি-পল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১১৬৬ সংখ্যক পদ। રા 'ભાં ভિড দেখি' લા ગા 'વઠ' পর-সা। 8। '(कांकिन' क, थ, प, ह।

व्यथ तां रमनात्रमः अकातां खतः यथा। श्रीशोबहसः।

ভাটিয়ার 1>

গোরা নাচে শচীর ছলালিয়া। সতে দেই করতালি চৌদিকে বালক মেলি क्रितिवाल क्रितिवाल विलया ॥ ध्यः॥ স্থবন্ধ চতুনাং মাথে গলায় সোণার কাঁঠি। সাধ করিয়া মায় পরাইছে ধড়া গাছি আঁটি। স্থানার চাঁচর কেশ প্রালভ তমু। ভূবন-মোহন বেশ ভুরু কাম-ধ্যু॥ নানা অভরণ রজত কাঞ্চন অঙ্গে মনোহর সাজে। চরণ-যুগল রাভা-উতপল

তুলিতে নূপুর বালে।

শচীর অক্সনে

নাচয়ে সম্বনে

বোলে আধ আধ বাণী। বাস্থদেব ঘোষে বোলে ধর ধর কর কোলে গোরা মোরঃ পরাণের পরাণি॥ ॥১॥১১৬১॥

পঠিক্স

১। ইহাপ⊹র-সাপুৰির ১৬৮০ সংখ্যক পদ। ২। 'চতুকা' চ। ৩। 'পরাঞাছে' ক। ৪। 'গোরা' ক।

ভথা রাগ।>

যমুনার জলে গেলা যশোদা রোছিণী।
শৃষ্ঠ ঘর পাঞা লুটে এ ক্ষার নবনী ।
পিঁ ড়ির উপর পিঁ ড়ি উদ্বর্গ দিয়া।
তমু ত শিকার ভাগু লাগি না পাইয়া॥
নড়িতে ছেদিয়া ভাগু হেটে পাতে মুখ।
হেনই সময় দেখে জননী সন্মুখ।
মায়ের শবদ শুনি যাহু ধন নাচে।
ধড়ার অঞ্চল দিয়া চাঁদ-মুখ মোছে।
এমনে কেমনে গোপাল লুকাইবা আর।
তোমার বুক বাহিয়া পড়ে গো-রসের ধার॥
ঘনরামদাসে বোলে শুন যশোমতি।
মায়ারূপে তোমার ঘরে অধিলের পতি॥

পাঠান্তর

12122621

১। ইহাপ-র-সাপুশির ১৬৮২ সংখ্যক পদ।
২। 'এ ক্ষীর নবনী' হলে 'ক্ষীর সর লনী' প-র-সা।
৩। 'তলে' প-র-সা। ৪। 'হেনই সমর দেখে'
হলে 'হেনই সমর হইলাগোপাল' ব। ৫। 'পিত
ধ্জার' ব।

यहरे।

অরণ অধর উরে নবনী লাগিয়াছে রে
মরি মরি বাছনি কানাই।
হেরি যশোমতা প্রেমেতে পূরিত আঁখি
আয় কোলে বলিহারি যাই।
করেণ মোছে অধর মিঠাইং।
আয়ুণ মোর বাছনি কানাই ॥ এ১১৬৩।

পাঠান্তর

১। 'কর'ক, চ, প-র-সা। ২। 'মোছাই' ক; 'মোছই' ধ। ও। 'আবে' ব,চ।

শ্রীরাপ 1>

ত্ব বাহ্য পদারি আগে যায় নন্দরাণী। ধরিতে ধরিতে ধরা না দেয় নীলমণি । গুহে পড়ি গড়ি যায় দধি নবনীত। কোপ-নয়নে রাণী চাহে চারি ভীত॥ ट्रिक्ट देव नवनी-८ठावा विल शास्त्र धार । এ ঘর ও ঘর করি গোপাল লুকায়॥ নজি হাতে নন্দরাণী যায় খেদাজিয়া। অখিল-ভুবন-পতি যায় পালাইয়া। এ তিন ভুবনে যারে ভয় দিতে নারে। (म इति भागाका याग्र जननोत्र एति ॥ ৱাণীর কোল হইতে গোপাল গেলা পলাইয়া। আকুল হইলা রাণী গোপাল না দেখিয়া। घद्म घद्म উक्षिन मक्न शाकून। ভোমা না দেখিয়া প্রাণ হইল আকুল ॥ कांत्र घरत्र चाह रंगाशांन र्यान धाक पिथा। ভোমার মায়ের প্রাণ যায় বিদরিয়া 🛭 শ্রীদাম ডাকিয়া বোলে কানাই আমাদের• ঘরে। সভাকার প্রাণ গোপাল সুকাইল সায়ের ডরে।

118122581

ঘনরাম দাসে কহে পির কর মনঃ। প্রেমের অধীন গোপাল পাবে দরশন॥

পাঠান্তর

১। ইছা পার-সা পুথির ১৬৮৭ সংখ্যক পদ। পার-সা পুথিতে নিয়লিথিত কলি বারা পদটি আরম্ভ করা হইয়াছে। যথা,—

"ৰদ্ধন ছাড়িয়া দিয়া গোপাল নিল কোলে।
কোল হৈতে নামি গোপাল ধাইয়া চলিলে॥"
পদকল্পতক্ষ-গ্রন্থে বৈষ্ণবদাল শ্রীক্ষেত্র বন্ধনলীলার
পদ সন্ধিবেশিত করেন নাই; বোধ হয়, সেই
জন্তই অসঙ্গতি-ভয়ে এই পদটির প্রথম ছই পংক্তি
পরিত্যাগ করিয়াছেন। পদাংশ-বর্জনের এইরূপ
দৃষ্টান্ত একান্ত বিরল নহে। ২। 'বোলে' ক, চ;
'বল' ব। ৩। 'আমার' ক, প-র সা। ৪। 'বনরাম দাসে' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি কেবল ব
পুথিতেই দৃষ্ট হয়।

সিদ্ধৃড়া।

আমি কিছু নাহি জানি ভাপিয়াছে ক্ষীর ননী
তোমারে সোধাই ইহার কথা।
না দেখি গোকুলচান্দ কেমন করয়ে প্রাণ
বোল না গোপাল পাব কোথা॥
আমি কি এমন জানি কোলে লৈয়া যাত্মণি
বাছারে করাইছি স্তন পান।
মোরে বিধি বিভৃষিল উথলি গো-রস গেল
ভা দেখি ধরিতে নারি প্রাণ॥
ভূলিলাম রোহিণীর বোলে

গোপাল নামাঞা কোলে
সে কোপে কোপিত যাতুমণি।
কোপিত নয়ান-কোণে চাইয়াছিল আমা পানে
আমি কি এমন হবে জানি ।

ভোমরা করিছ খেলা

গোপাল আমার কোথা গেলা দঢ় করি বোল এক বোল । ঘনরাম দাসে কহে আকুল হুইলা সভে রাখালের মাঝে উত্রোল ॥१॥১১৬৫॥

शनभो ।>

कि विलिशा नम्बर्शि হারাইয়াড় নীলম্পি কানাই বিনা না রাখিব হিয়া। कुषा बला। ভाইয়াर राजा সেই হৈতে বৈয়াছে খেলা আম্বা বৈয়াছি মুখ চাঞা ॥ হেদে শ্রীদামের মা ক্ষন গো রোহিণি বা এ পথে দেখাছ গোপাল মোর। আর এক বিপরীত यहिए ना प्रिश भव কাল হৈল • য়ানের তে ব ॥ শ্নর্মিয়া শোক-নদী जाङ किलाईमा निधि বিধি ভাহে না দিলা সাঁভার। স্তন ফাটেও ক্ষীর-ভরে এ ত্ৰখ কহিব কাবে চलिया याहेट जनाति व्यात ॥७॥১১८७॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৬৯০ সংখ্যক পদ। ২। 'ভাই'ক, চ; 'ভাষা'প-র-সা। ৩। 'ছটি' ক, খ,[ব, চ, প-র-সা।

बाननी ।>

যরে ঘরে উকটিতে পদ্চিত্র দেখি পথে সক্রেণ-নয়ানে নেধারে। আহা মরি হায় হায় মুঞ্ছিয়া পড়ে তায় কান্দে পদ্চিত্র গৈয়া কোনে॥

সলিযার কিবা দোষ মায়েরে করাছ রোধ কোথা আছ বোল ডাক দিয়া। ক্ষেম ভাই সব দোষ यि शिक मान (त्रीय যশোদা মায়ের মুখ চায়া।। শুনিয়া শ্রীদামের কথা মরমে পাইয়া বেথা তুরিতে আইলা নীলমণি। মরণ-শরীরে যেন পাইল পরাণ দান শুনিতেইং নুপুরের ধ্বনি॥ বসিলাও মায়ের কোলে गमगम वांगी त्वारम অনেক সাধের যাত্রমণি। সব ধন সম্পদ সকল তোমার আগে চল যাই করিগা⁸ নিছনি ॥ ধরিয়া বলাইর হাতে - দাডাঞা মায়ের আগে নচিতে লাগিলা তুই ভাই। ঘনরাম দাসে কয় হইলা আনন্দময় গোপালের বলিছারি যাই ॥৭॥১১৬৭॥

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৯১ সংখ্যক পদ।
এই পদটি ক পুথি ও তদ্যুবাদী বটতলার মুদ্রিত
গ্রন্থে পূর্ব্ব-পদের শেষাংশরূপে লিখিত হইয়াছে।
অক্সাঞ্চ সকল পুথিতেই ইহা অতন্ত্র পদ। ২।
ভিনিয়া ক,খ, ঘ,চ। ৩। 'বসিয়া ক, খ।
৪। 'করিয়ে' ক, প-র-সা।

পাঠান্তব

शाननी ।>

কত ভল্পী জান গোপাল নাচিতে নাচিতে।
অরুণ-কিরণ দেখিং চরণ তুলিতে॥
বাঘণ-নথ মণিহার হিয়ার মাঝে দোলে।
চরণে নৃপুর কিবা রুণু বুনু বোলেও॥
গোপাল নাচিছে তুড়ি দিয়াও।
কোথা গোলা নন্দরার আনন্দ বহিয়া যার
দেখনিয়া নয়ান ভরিয়া॥

চিত্র বিচিত্র নাট চরণে চাঁদের হাট চলে যেন খঞ্জনিয়া পাখী। সাধ করিয়া মায় নৃপুর দিয়াছে পায় পা ধানি তুলিয়া নাচ দেখিণ॥৮॥১১৬৮।

তাত। থৈ থৈ তাতা থৈ থৈ বোলে নন্দরাণী।
করতালি দিয়া নাচে রাম যাত্মশি॥
ইত্যাদি গেয়ম।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৬৯৬ সংখ্যক পদ।
২। 'দিছে' ক, খ, খ, চ। ৩। 'ব্যাছ' ক, খ,
খ, চ। ৪। অতঃপর প-র-সা পুথিতে নির্দিধিত
কলিশুলির ঘারা এই পদটি সমাপ্ত করা হইরাছে
যধা—

'হেন কালে নন্দরায় আইল বাধান হৈতে। কেমন নাচিলি বাপ নাচ আমার সাক্ষাতে। গোঠে মাঠে বাইতে তোরে সঙ্গে করি নিব। ফিঠ লনী হুংশ্বের সর নিতি খাইতে দিব॥ কেমনে নাচিলি বাছা নাচ আর বার। তবে দে গঠিয়া দিব গজমতি হার॥'

া 'কোপাল' ইত্যাদি ছলে প-র-সা পুৰির
পাঠ বৰ্বা—'দেখসিরা রামের মা গোপাল' ইত্যাদি;
প-র-সা পুৰিতে 'দেখ সিরা' ইত্যাদি পরবর্ত্তী
কলিগুলি খতন্ত্র (১৬৯৫ সংখ্যক) পদরপে লিখিত
হইরাছে। ৬। অতঃপর প-র-সা পুৰিতে নিরলিখিত ভণিতার কলিটি দৃই হর, বধা—
'বাহু-পদ-চিক্ত তার পৃথক পড়িরা বার

ধ্বৰ-বজাত্বশ তাহে সাজে।
বাদবেজ দাসে কর নাটুরা গোবিক রার
প্রেমভরে অধিক বিরাজে ।

व्यथ (गार्काक मी-यांवा।

विमरनगीत्रहकः।

जूशानी ।>

গোরাজ-চান্দের মনে কি ভাব উঠিল।
পুরুব-চরিত্র বুঝি মনেতে পড়িল ।
গোরীদাস-মুখ হেরি উলসিত হিরাং।
আনহ ছান্দন ভুরি বোলে ডাক দিয়া ।
আজি শুভ দিন চল গোঠেরে যাইব।
আজি হৈতে গো-দোহন আরম্ভ করিব ।
ধবলী সাঙলী কোথা শ্রীদাম স্থদাম।
দোহনের ভাগু মোর হাতে দেহ রাম ॥
ভাবাবেশে বেরাকুল শচীর নন্দন।
নিত্যানন্দ আসি কোলে করে সেই ক্ষণ ॥
তৈতশ্রদাসেতে বলে ছান্দনের দড়িং।
হারাইল গোরীদাস গোপী কৈল চুরি ॥

1696616

পাঠাক্ত

)। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০০ সংখ্যক পদ। ২। (হয়া'খ। ৩। (ডুরি'প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷১

নন্দের মন্দিরে আজু বড়ই আনন্দ।
রাম-কৃষ্ণ-হাতে দিব গোদোহন-ভাও।
প্রভাতে উঠিয়া নন্দ লৈয়া গোপগণ।
পাত্র মিত্র সহিতে বসিলা সভা-জন।
বড় করি বড়েক আন্ধান মুনিগণে।
আনাইলা নন্দ্রোর করি নিমন্ত্রণে।
বাম কৃষ্ণ বন্দ্রিকান মুনির চরণে।
মুনিগণে করে শুন নন্দ মহামতি।
আজি শুভ দির হন্ধ শুক্লাকীনী তিপি।

পুত্র-হত্তে দেব গোলোহন-ভাও আৰা।
গোঠপুত্রা মহোৎসব কর মহারাজ।
পাইয়া মুনির আজ্ঞা নক্ষ মহালার।
মহামহোৎসবে করে আনক্ষ অদর।
ভৈতগুলাসের মনে পরম উলান।
দেখিব নয়নে গাবীং-দোহন বিলান॥

100122901

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭•১ সংখ্যক পদ। ২। 'গাজী'প-র-সা।

जबक्रवरी ।>

ভাকিয়া ভখন নিজ প্রজাগণ
আজা দিল ব্রজ-রাজ।
বন্ত্র অলঙ্কার নানা উপকার
করহ গোষ্ঠের সাজ ॥
শুনি গোপী বভ আনন্দিভ-চিভ

হরিলো কুরুম গন্ধ উপর্তন দিলা রাম-কুফ্ড-অলে।

স্বাসিত জলে ধাত দুৰ্বাদলে সান সমাপন করি। পরিয়া বসন মনি-জভরণ

গোঠেতে চলিলা হরি ।

নন্দ মহাষতি মুনির সংহতি

সভাসদ⊷গণে লৈরা ।

নানা বাত্ত বাজে সঞ্চল সুসাজে গোঠে প্রবেশিলা বাঞা ॥

1175117741

যশোদা রোহিণী (गांशिनी मिनी মঙ্গল-দ্রব্য সহিতে। নানা উপহারে বস্ত্র অলহারে গোষ্ঠে হৈলা উপনীতে मिरा वालिशत **অ**গোর⁸ চন্দনে স্থান কৈলা পরিকার। দিব্য চন্দ্রাতপ নিবারি আতপ উপরে বান্ধিল তার॥ शांभिल कमली জল ঘট ভরি সহিত হাজের দল। রত্ন-পীঠোপরি বৈলে রাম হরি হৈল মহা কোলাহল ॥ স্বর্ণ-সূত্রেণ করি ছান্দনের ভুরি রত্নের দোহন-ভাগ্ত। মুনি-আজামতে রাম-কৃষ্ণ-হাতে वानत्म पिटलन नम ॥ বেদ পাঠ করি ব্ৰাহ্মণ সকলি करत्र व्यागीर्वराप्त-भवि। নৰ্ত্তক গায়ক **छो**षि याठक শব্দ চতুর্দ্দিকে শুনি 🛦 স্বর্গে স্থরগণ পুষ্প বরিষণ করিয়া হুখেতে ভাসে। ত্রিভুবন ভরি আনন্দ সভারি करात्र टेव्डिग्रमात्म ॥>>॥>>१>॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০২ সংখ্যক পদ।
'অরজয়তী' ফলে 'আহিরী' প-র-সা।২। 'কিলঘাদি'
প-র-সা। ৩। 'সভাসভগণে' ব, চ।৪। 'আন্তর্গ ঘ। ৫। 'গিড়ি পরি' প-র-সা। ৬। 'হালে' প-র-সা। क्यां जात्र ।>

তবে নন্দ শীত্র আমাইলা দুই গাই।
ধবলা সাঞ্জলা বংসং সহিত তথাই ॥
স্বরজি-সন্ততি সেই মহা দুগ্ধবতী।
স্বর্গযুক্ত শৃক্ষণ খুর নবীন যুবতী ॥
দুই গাই দুই ভাই ছান্দনে ছান্দিয়া।
দোহন করিলা গাবী আনন্দিত হৈয়া॥
দোহনকরিলা গাবী আনন্দিত হৈয়া॥
দোহনকরিলা গুই ভাও ক্ষণেকে পুরিল।
প্রথম দোহন দুগ্ধ আক্ষণেরে দিল॥
তৈভজ্যদাসেতে কহে গাবীর দোহন।
দেখি অল-বাদিগণের জুড়াইল মন॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০০ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' স্থলে 'আহিরী' প-র-সা। ২। 'বছ' প-র-সা। ৩। 'ছই' প-র-সা। ৪। 'ক্ষেণেকে' ব।

छथा द्रांग ।>

আইলা সকলে নদের মহলে नम जानमि छ-मन। প্রথমে পূজিল ভ্ৰাহ্মণ সকল **मिर्मिन व्यानक थन ॥** হ্বৰ্ণ র**জ**ত গাৰী ৰৎস কড नकाधिक পরিমাণ। मिक्ना महिं অলম্বার বড बाचारण कत्ररय मान ॥ खद्वीमि बानक নৰ্ত্তক গায়ক গোধনে ভূষিল সভে। করাইং জোজন নানা মিফ্ট-অন विषात्र कत्रिमा छट्य । স্থাগণ বাস কুক্ত বলরাম

করিল ভোজন-কেলি।

নন্দ যশোষতী করিল আর্ডি
গোপ-গোপীগণ মেলি ॥
খন্য ব্রেক জ্বন খন্য সে ব্রাক্ষণ
খন্য সে গোকুলপুর ।
খন্য গাবীগণ যমুনী-পুলিন
এ দাস হৈতক্য ফুর ॥১৩॥১১৭৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০৪ সংখ্যক পদ। 'ডথারাগ' হুলে 'আহিরী' প-র-সা। ২। 'করাইল' ক। ৩। 'সাথ' খ'; 'রাম' প-র-সা।

অথ বৎসচারণানি। ভত্তচিত-শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

ভাটিরারী ৷১

ভালিরে নাচে বে^২ মোর শচার তুলাল।

চঞ্চল বালক মেলি সুরধুনা-তারে কেলি

হরিবোল দিয়া কর-তাল।

কুটিল কুন্তল শিরে বদনে অমিয়া করে

রূপ জিনি সোণা শতবান।

বতন করিয়া মায় ধড়া পরাইছে ভায়

কাজরে উজোর তুনরান।

ভূজে শোভে ভাড় বালা গলে মুকুভার মালা

কর-পদ কোকনদ জিনি।

সভে কহে মরি মরি সাগরে কামনা করি

বেন স্ভুভ পাইল শচী রাণী ১১৪।১১৭৪।

পাঠান্তর

)। देहा भन्त-जा शूबित २१०८ मश्याक भव। १। 'मारह (ब' क, थ, ह, भन्त-जा। शनन ।>

ও গোই মা আজি আমি চরাব বাছর। পরাইয়া দেহ ধড়া মন্ত্ৰ পড়ি বান্ধ চূড়া চরণেতে পরাহ নুপুর॥ অলকা ভিলক ভালে বন-মালা দেহ গলে শিক্ষা বেত্র শেণু দেহ হাতে। ञीनांग इनांग नांग 🕶 স্থবলাদি বলরাম সভাই দাঁড়াইয়া রাজপণে॥ বিশাল অৰ্জ্জুন জান কিন্ধিণী অংশুমান मानिया मजारे गार्ठ यात्र। গোপালের কথা শুনি সজল-নয়নে রাণী অচেতনে ধরণী লোটায়॥ চঞ্চল বাছুরি সনে (कमरन धारेबा बरन কোমল হুখানি রাজা পায়। विश्रमाम रचार्य वर्ण এ वग्रम गार्क रगरन প্রাণ কি ধরিতে পারে মায় ॥১৫॥১১৭৫॥ পাঠান্তর

ী । ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০৬ সংখ্যক পদ ২। 'আবো'ক। ৩। 'কমল' ধ, ব, প-র-সা।

क्र । हे ब्र

গোপাল নাকি যাবে দুর-বনে।
তবে আমি না জাব পরাণে ॥ এল ই
দ্বি-মন্থন-কালে সন্মুখে বসিয়া খেলে
আজিনার বাহির হৈয়া
যদি গোপাল খেলে গিয়া
তবে প্রাণ ধরিতে না পারি ॥
গোপাল যাবে বাখানে কি শুনিলাম এবণে
যাত্ব মোর নয়ানের তারা।
কোবে থাকিতে কত চমকি চমকি উঠি

গোপাল আমার পরাণ-পুতলী। ভোমারে সোঁপিয়া রাম কিছুই সন্দেহ নাইদ তমু প্রাণ করয়ে ব্যাকুলিশ ॥১৬॥১১৭৬॥ পাঠাকর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭০৭ সংখ্যক পদ।

২। প-র-সা ব্যতীত অস্তান্ত পুথিতে 'এ' নাই।

৩। 'নাই' চ। ৪। 'রাঞা' ক; 'বাইরা' চ,

প-র-সা। ৫। 'বাবে বাথানে' হুলে 'বাইবে বনে'

প-র-সা। ৬। 'ভনি রে' প-র-সা। ৭। 'উঠে'

ব। ৮। 'কিছুই সন্দেহ নাই' হুলে 'কিছু ভর

নাহি চিতে' প-র-সা। ৯। 'বিকুলি' ক, খ,
প-র-সা।

ভাটিমারি ৷১

বলরাম ভুমি নাকি আমার প্রাণ লৈয়া বনে বাইছ। বারে চিয়াইয়া ত্ত্ব পিয়াইতে নারি তারে তুমি গোঠেরে সাজাইছ ॥ বসন ধরিয়া হাতে ফিরে গোপাল সাথে সাথে पट्छ पट्छ प्रम वात्र थात् । এ হেন ছুধের ছাওয়াল वटनदत्र विकाय किया रिएटव मजिरव वृक्षि मांत्र ॥ কড জন্ম ভাগা করি व्यात्राधियां इत्रदर्शाती তাহে পাইলাম এ ছঃখ-পাসরা। **क्यारन देश्यक श**रत মায় কি বলিতে পারে বলে বাউক এ ত্রহা - কোভরা।

হাওরালে হাওরালে খেলে

বরে বাইতে পথ ভূলে ।

ছটি হাত মূখে দিরা কান্দে।

আউলাইরা কটি-থড়া ছচরণে লাগে বেড়া

আপনা আপনি পড়ে কালে ।

শ্রীদাম স্থদাম দাম স্থবল আদি বলরা।
শুন তোমার যতেক রাখাল।
বংশীবদনের বাণী কান্দি কছে নন্দরা।
আছু রাখি যাও বে গোপাল ॥১৭॥১১৭॥

পাঠকৈর

১। ইছাপ-র-সা পুথির ১৭০৮ সংখ্যক গ্রন্থ ২। বিলরাম রে' প-র-সা। ৩। পরাপ'ক, চ 'গোপাল' প-র-সা। ৪। 'গোঠে' প-র-সা। ৫ 'হঞ্জ' প-র-সা। ৬। 'বনে' ক। ৭। 'ঝুরি প-র-সা। ৮। 'কত জন্ম' ছলে 'জনম' ক, ধ, ব চ। ৯। 'হুধ' ক, চ। ১০। 'ছাওয়ালে ইত্যাদি অভি হুন্দর কলি ছুইটি কেবল প-র-সা পুথিতেই দুই হয়। উহাদিগের পরিবর্জে ব পুথিতে নিম্নলিখিত প্রক্রিপ্ত-লক্ষণাক্রান্ত কলিটি দুই হয়, ব্যা—

জন থাইতে গিয়াছিল আনলে বেটিয়াছিল ছই হাতে আনল ধরি পিরে। নন্দের ভাগাবলে যদোদার পুণাফলে ভেঞি দে গোপাল মোর দ্বিষে॥'

७वां मात्र ।>

নন্দরাণি গো মনে না ভাবিছ কিছু ভয়ং।
বেলি-অবসান কালে গোপাল আনিয়া দিব
ভোর আগে কহিলুঁ নিশ্চর ॥এ॥
সোঁপি দেহ মোর হাতে আমি লৈয়া যাব গাপে
যাচিয়া॰ খাওয়াব খীর ননী।
আমরাণ জীবন হৈতে অধিক জানিয়ে গো
জীবনের জীবন নীলমণি ॥
সকালে আনিব ধেন্মু বাজাইব॰ শিলা বেণু
গোচারণ শিখাইব ভাইরেরেণ।
গোপ-কুলে উতপতি গোধন-চারণণ বৃধি
বিষয়া খাকিতে নাইণ্ড খরে ॥

শুনিরা বলাইর কথা মরমে পাইরা বেথা ধারা বহে জারুণ নয়ানে। এ দাস শিবাই বোলে রাণী ভাসে প্রেম-জলে হেরইতে কানাইর বয়ানে ॥১৮॥১১৭৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭০৯ সংখ্যক পদ।
। 'না ভাবিহ' ইত্যাদি স্থলে 'কিছু না ভাবিহ ভর'ক। ৩। কেবল প-র-সা পুৰিতে 'শু' আছে। ৪। 'বাচার্যা' স, চ। ৫। 'আমার' ক। ৬। 'বাজাইরা' ক, খ,। १। 'ভাইরারে' প-র-সা। ৮। 'চরশে' প-র-সা। ৯। 'নাহি' ক, খ।

মারুর ।>

কান্দিয়া সাজায় নন্দরাণী।
হৈরি হলধর পানে ধারা বহে তুনয়নে
মুখে না নিঃসরে কিছু বাণী ॥ প্রাং ॥
অলকা ভিলক দিতে মুখ ঘামে আচ্থিতে
দেখিয়া বিভোর যশোমতী।
নারিলেণ পাঠাইতে বনে দেখিয়া সে মুখ পানে
শিশুগণে করয়ে মিনভি ॥
তান-কীরে আঁখি-নীরে বসন ভিজিয়া পড়ে
বেশ বনাইতেং কাঁপে কর।
কান্দি গদগদ কহে আজি রাখি যাহ সভে
শৃশ্য না করিছ মোর ঘর ॥১৯॥১১৭৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭১০ সংখ্যক পদ। ই। কেবল প্র-সা পুরিতে 'এ' আছে। ৩। 'নারিব' প-র-সা। ৪। 'বানাইতে' প-র-সা।

नामान ।>

ব্যতরণ পরাইতে ব্যতরণের শোভা। প্রতি-বস্থ চুম্বইতে বনেং হয় লোভা। বান্ধিতে বিনোদ চূড়া নির্ম্বিতে কেল।
আঁথিযুগ ঝরঝর না হইল বেল।
পরাইতে নারে রাণী রক্ত পীত ধড়া।
ক্ষীণ মাজাও দেখি ভয়ে ভালি পড়ে পারা।
পরাইতে নূপুর কমল সে চরণ।
নারিলুঁ বিদায় দিতে কহে ঘন ঘন।
স্থন-ক্ষীরে ভিজিল রাণীর সব বাস।
নিছনি লইয়া মরু ঘনরামদাস॥২০॥১১৮০॥

পাঠান্তর

)। ইको প-র-সাপুথির ১৭১১ সংখ্যক প্র। २। 'सन' प्रहा ७। 'साथ' प्रा

Sats 15

গোপালেই সাজাইতে নক্ষরাণী না পারিল।

যতনে কানাই-চূড়া বলাই বান্ধিল।

অলদ বলয়া হার শোভিয়াছে ভাল।

শ্রবণে কুগুল দোলে গলে গুঞ্জাহারই।
পীত ধড়া আঁটিয়া পরায় কটি-ভটে।
বেক্র মুরলা হাতে শিলা দোলে পিঠে।
ললাটে ভিলক দিল শ্রীদাম আসিয়া।
নুপুর পরায় রালা চরণ ধরিয়াই।
ঘনরাম দাসে বোলে কান্দিতে কান্দিতে।

অমনি রহিল রাণী বদন হেরিতে।

পাঠান্তর

142122621

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭১২ সংখ্যক প্র। ২। 'গোপাসকে' প-র-সা। ৩। 'গুলহার' ক, ধা ৪। 'ধরিরা' প-র-সা।

19R 15

বিশিনং গমন দেখি হৈয়া সকরুণ আঁথি কান্দিতে কান্দিতে নন্দরাণী।

গোপালেরে কোলে লৈয়া প্রতি-অঞ্চে হাত দিয়া রক্ষা-মন্ত্র পড়য়ে° আপনি ॥ এ ছখানি রাজা পায় ত্রক্ষা রাখিবেন তায় জাতু রকা করু দেবগণ। কটিভট স্থল্ঠর রকা করু যভেরগর कपग्र त्रार्थन नाताग्रण ॥ ভুজযুগ নথাঙ্গুলি রক্ষা করু বনমালী क्री' मूथ ब्राथ् किनमि। - মস্তক রাথুন শিব পৃষ্ঠদেশ হয়গ্রীব অধ উর্জ রাখু চক্রপাণি॥ कलि प्रति गिति वतन রাখিবেন জনাদ্দনে मण मिट्रा मण मिकशाल। খত শত্ৰু হউ শিত্ৰ রক্ষা করু সর্ববত্র নহে ভূমি হও তার কাল। এই সব মন্ত্ৰ পড়ি প্রতি-অক্টে হস্ত ধরি शामरप्रत्र रकाँ है। खाल मिन। मन्द्रशेषी (श्रमग्र এ দাস মাধ্ব কয় বলরামের ১০ হাতে সমর্পিল ॥ 11 そくり フトイリ

পাঠাত্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭১০ সংখ্যক প্র। ২। 'বিপিনে' প-র-সা। ৩। 'পঢ়রে' খ। ৪। 'আপুনি' থ, চ। ৫। 'কণ্ঠ' ক, থ। ৬। 'রাথ' ড়; 'রাথুক' প-র-সা। ৭। 'রাথুন' ক। ৮। 'ক্রপ' ক। ৯। 'হঙ্গ' প-র-সা। ১০। 'ব্লরামে' ফ, খ, খ, চ।

তথাহি শ্লোক:।

শৃণু বল মম বাক্যং বালকানাং বলী ছং গৈরি-বন-জল-মধ্যে রক্ষ কৃষ্ণং মদীরং।
ইতি বল-জর-যুগো কৃষ্ণ-পাণিং নিধার
নিম্ন-প্রতিভ-ধারা নক্ষ-জারা প্রতাত ঃ

कारमाप 13

প্রণতি করিয়া মায় 'চলিলা যাদব রায় আগে পাছে ধায় শিশুগণ। घन वांद्य भिष्मा दव्य गंगरन दंशा-भूत-दिव् শুনি সভার হর্ষিত মন॥ আগে আগে বৎসপাল পাছে ধায় ত্রজ-বাল रि रेट भवन घन द्वाल। মধ্যে নাচি যায় স্থাম मक्किए। दन वनद्रोम ব্রজ-বাসা হেরিয়া বিভোর ॥ নবীন রাখাল সব আবা আবা কলরব শিরে চূড়া নটবর-বেশ। আসিয়া যমুনা-ভারে নানা রক্তে খেলা করে কত কত কোতুক বিশেষ॥ (करश यांग्र व्रय-ছाटम কেহো কারো চড়ে কান্ধে কেছো নাচে কেছো গান গায়। এ দাস মাধব বলে কি শোভা যমুনা-কুলে

রাম কানাই আনদেদ খেলায়। ॥২৩॥১১৮৩॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭১৫ সংখ্যক পদ।
প-র-সা পুথিতে 'শুণু' ইত্যাদি সংস্কৃত শ্লোকটিকে
স্বতম্র (১৭১৪ সংখ্যক) পদরশে গণনা করা হইরাছে। ২। 'শুনি সভার' হলে 'ক্রনর' ক, খ;
'ক্রলের প-র-সা। ৩। 'বোল' খ। ৪। বিভোল'
খ, চ; 'বিহোল' প-র-সা। ৫। 'কার' ক।

ভাটিয়ারি ৷>

সকল রাধান মেলি ধেলা আরম্ভিন। রাম কানাই ছুই-ভাই তু দিলে দাঁড়াইলং। শ্রীদানে কানাইরে ধেলা বলাইরেণ ক্রলে। এই মত আর সব শিশুসনে ক্ষেত্র ঃ কানাই হারিয়া কাক্ষে করয়ে জ্রীদামে ।
স্বল হারিয়া কাক্ষে করে বলরামে ।
বংশীবটের তলে রাখিবারে যায় ।
হেরি সব শিশুগণে শিলা বেণু বায় ।
জ্রীদাম কানাইর কাক্ষে হইতে নামিল ।
আবা আবা রব দিয়া নাচিতে লাগিল ॥
এ দাস মাধব বলে অপরূপ নহে ।
প্রেমের অধীন কানাই সাধু লোকে কহে ॥

15811727811

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭১৬ সংখ্যক পদ।
২। 'হৃদিগে দাঁড়াইল' হুলে 'হৃই দিগে হুইল'
প-র-সা। ৩। 'বলাই' ক, চ,প-র-সা। ৪। 'শ্রীদাম' ছ। ৫। 'বলরাম' ছ। ৬। 'কানাই'
ক,খ,ছ,চ।

महिल 12

নিরমল যমুনা-জল মাহা খেরই আপন আপন তমু-ছাহ^২। নয়ন করি বঙ্কিম দশনহি অধর কোপ করয়ে পুন ভাহ॰॥ রলঃ করি রহতহিঁ খেণে ভিরিভঙ্গ (थरन (थरन (वनू वाकांग्र। होलन (परे उपरि থেণে ভক্লবর ब्रिक्टिक हर्न दर्भागाय ॥ विष्यंदे नम-जूनान । গলে গুঞ্চাবলি শৃক মুরলি করে **(होमिट्श विक्र अक्ष वाम ॥२०॥>>৮०॥** ইভি তৃতীয়-শাধায়াং বিংশভিপন্নব:।

পাঠান্তর

>। देश भ-त-ना श्रीवत ১৭১৭ मध्याक भर। २। 'हाह्य' क, ब, ह, भ-त-ना। ७। 'कार' क, খ, চ, প-র-সা। ৪ । রিজি'ক, খ। ৫। কির-ডিচি'ক। ৬। বিজিম'প-র-সা। ৭। বিহরজে ক, খ।

অথ সখ্যরদঃ গোঠ-গমনং যথা।
শ্রীগোঞ্চন্তঃ।

(बाजावान))

আজু রে গৌরাসের মনে কি ভাব উঠিল।
ধবলী সাঙ্কলী বলি সঘনে ডাকিলং ॥
শিক্ষা বেণু মুরলা করিয়া জয়-দ্বনি।
হৈ হৈ বলিয়া গোরা ফিরায় পাঁচনা ।
রামাই ফুন্দরানন্দ সঙ্গে নিত্যানন্দ।
গৌরীদাস অভিরাম সভার° আনন্দ ।
বাহদেব ঘোষ কহে মনের হরিষেং।
গোষ্ঠলীলা গোরাচাঁদেং করিলা প্রকাশেণ ॥
॥১৯১১৮৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ১৭১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'হাকিল' প-র-সা। ৩। 'অভিরাম সভার'
স্থলে 'অভিরামের বাঢ়িল' ছ। ৪। 'মনের হরিবে'
স্থলে 'মনে করি আন্ন' প-র-সা। ৫। 'মহাপ্রাফু'
প-র-সা। ৬। 'প্রকাশ' প-র-সা।

कृषानी ।>

নাল পীত ধড়া নন্দ পরায় আপনি।
চন্দন-তিলক দেই যশোদা রোহণী।
চূড়ায় ময়ুর-পুচহু গলে গুঞ্জা-হার।
চরণে নূপুর রাণী দেই দোগকার ।
বোপালে সালাঞা রাণী দোলমাল হিয়া।
একবার কোলে আয়ে রে মা মা বলিয়া।
।২১১৮৭।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুণির ১৭১৯ সংখ্যক পছ। ২। 'ৰউরের পাখা' প-র-সা। ৩। 'লোহার' খ,চ।

यहरे ।

বের আর রে বলরাম হাত দে মোরং মাথে।

বড় রাধিয়া প্রাণ দিয়েও তোর হাতে।

আর এক কথা কহি শুন হলধর।

বশোদার বালক বলি না ভাবিহ পর।

বাচিরা নবনী দিহ নিকটে রাধিবেং।

বেলি অবসান হৈলে সকালে আসিবেং॥

10177551

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭২০ সংখ্যক পদ। ২। 'বারের'ক,চ। ৩। 'দিসু'প-র-সা। ৪। 'বাথিহ'প-র-সা। ৫। 'আসিহ'প-র-সা।

विवास 13

আমার শপতি লাগে না ধাইহ ধেনুর আগে
পরাণের পরাণ নীলমণি।

নিকটে রাখিছ ধেনু প্রিছ মোহন বেণু
ঘরে বসি আমি যেন তনি ॥
বলাই ধাইবে আগে আর শিশু বাম ভাগে
শ্রীদাম ফ্লাম সবং পাছে।
ভূমি ভার মাঝে ধাইর॰ সঙ্গ ছাড়া না হইর॰
মাঠে বড় রিপু-ভর আছে।
ধুমাণ হৈলে লইরাণ ধাইরণ

পথ পানে চাহিদ বাইরু শভিশর ভূণাকুর পথে। কাঙ্ল বোলে বড় খেলু কিরাইডে না বাইর কালু হাড ভূলি বেহু বোরুণ নামে। থাকিবে ভরুর ছার বিনতি করিছে নার রবি বেন না লাগরে গায়। যাদবেকে সজে লইর ১২

> বাধা পানই>• হাতে থুইয়>• বুঝিয়া যোগাবে রাজা পায় ॥৪॥১১৮৯॥

পাঠান্তৰ

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২১ সংখ্যক পদ।
২। 'ভার' প-র-সা। ৩। 'ধাইরো' চ; 'রইও'
প-র-সা। ৪। 'হইও' প-র-সা। ৫। 'কুধা'
ক, খ। ৬। 'চাহি' ক, খ; 'চাহিরা' প-র-সা।
१। 'আইর' ए। ৮। 'চাহিরা' ए। ৯। 'বাইও'
প-র-সা। ১০। 'বেহু মোর' হলে 'বেরে মারের'
প-র-সা। ১১। 'থাকিও' ক; 'থাকিহ' চ;
'বিসহ' প-র-সা। ১২। 'লেহ' প-র-সা। ১০।
'নুপুর' প-র-সা। ১৪। 'বেহু' প-র-সা।

ভাটিয়ারি ৷১

নাজ নাজ বলিয়া পড়িয়া গেল নাড়া।
বলরামের শিক্ষাতে সাজিল গোয়াল-পাড়া।
হাস্বা হাস্বাং রব বে উঠিল ঘরে ঘরে।
সাজিয়া কাচিয়া॰ সভে ছইলা বাহিরে।
আজি বড় গোকুলের রজ রাজপথে।
গোধন চালাঞা সভে চলিলা এক॰ সাথে।
কাচনী পাঁচনী কারুণ হাতে শিক্ষা বেপু।
কাচনী পাঁচনী কারুণ হাতে শিক্ষা বেপু।
সভার সমান বেশ বয়্মস এক ছাক্ষ।
ভারাগণ বেড়িয়া॰ চলিলা ভামচাক্ষ।
ধাইয়া বাইয়া কেছ ধেমু বাহুড়ায়।
ভ্রানদাস এক ভিতে দাঁড়াইয়া চায় ॥৫॥১১৯০॥

পাঠান্তর

)। देश शन्त-मा शूबित २१२२ मरबाक शह। २। 'हाना रामा' मा ७। 'कांबिक्क' ना

हा 'बक्टे' था था 'कांत्र' का छ। 'विहि (वन, च।

নাচত গায়ত

বেণু বাজায়ত

ধেমু চালায়ত রজে। ভোজন-সন্থার

লৈয়া আঞ্চসার

योगरवन्त्र हलू मरक ॥१॥> > ३३॥

পাঠান্তর

)। ইহা প-त-मा পুषित्र ১৭২৪ সংখ্যক পদ। 'ভেৰট' হলে 'ভেউট' চ ; 'ভেউড়ি' প-র-সা । ২ । 'গোঠে রে' স্থলে 'আজু গোঠে' ব। ৩। 'সৰ' শব্দ ঘ, চ পুথিতে নাই। ৪। 'মাৰে' প-র-সা। ে। 'গুলাগাঁথা' ব। ৬। 'ভাই' ক. চ।

ভাটিয়ারি ৷১

ভালি রে গোপাল চূড়ামণি। वः भीवरहेत्र मार्क रगर्कत नाक्षम ॥ अ ॥ বান্ধিয়া মোহন° চুড়া গুঞ্জার আটনি। वित्रश वकुलमारल श्रेयः होनिनि॥ গলায় ফুলের দাম গো-ধূলি সব গায়। ੈ নাচিয়া ঘাইতে সে॰ মঞ্জীর বাব্দে পার। মণিময় অভরণ শ্রাম কলেবর। ভড়িতে অড়িত যেন নগ **জল**ধর। সভার সমান বেশ নাটুয়া-কাচনি^৫। সঘনে প্রন-বেগে ফিরার পাচনি ' खक-वालक्त्र॰ मर्क ब्रत्क हिल याग्र। নবচন্দ্র দাস পায় পড়িয়া লোটার ॥ 106くくまる

পাঠান্তর

)। रेहा भ-द-मा भूषित >१२८ मरपाक भए। ২। কেবল প-র-সা পুথিতে 'শ্রু' আছে। ৩। 'वित्नान' भ-द-मा । । । 'त्म' मक्षि भ-द्र-मा भूषिए नारे। १। 'काइनि' क। ७। 'बागक' क, ब, 4, 51

छवा तात्र ।>

আজু বন বিজই রাম কামু। আগে পাছে শিশু ধায় লাখে লাখে ধেকু॥ সমান বয়েস বেশ সমান রাখাল। সমান হৈ হৈ ববে চালাইছে পাল # কারু নীল কারু পীত কারু রাক্সা ধড়িং। ফুরজ চতুনাত মাথে বিনোদ পাগড়ি৽ ॥ কারু গলে গুঞ্জাগাভাৎ কারু বনমালা। রাখালের মাবে• নাচিছে চিকণ কালা। नुशूरत्रत स्विन छनि मूनि -मन छूल। वार्शित द्वित देश (गा-शूरदे पूर्व १५०) ১১)।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৩ সংখ্যক পদ। २। 'इड़ि' थ। ७। 'हजूना' ह। ४। 'शाश्वड़ि' ष। ৫। 'হার'ষ। ७। 'নাঝে রে' প-র-সা। १। 'मूनिब' श-ब-मा।

ভাটিরারি। ভেরট।১

(गार्ट्यदेश माजन (गार्थाम । ४विन माङ्गलि পিউলি বলিয়া हैं।कार्त्व अव॰ त्रांशांग ॥ अ ॥ কাক্ল কান্ধে তেলি বিনোদ পাগড়ি কাক্ল গলে গুঞাগাভা । কাৰু নীল পীত খেত লোহিত ৰটি-ভটে ভাল শোভা। পুরিছে বিষাণ ভাইয়া॰ বলরাম कानारे भृतिष्ठ (वर् । শ্রবণ ভূলিয়া উচ্চ পুচছ করি আগে চলে সব ধেয় ।

भारत्म । ३

ও রাম কানাই কালিন্দীরং তীরে। শ্বেত শ্রাম প্রই ভাই চান্দে মেঘে এক ঠাঞি শিশুগণ তারা যেন ফিরে: এ॰ ॥ অঞ্চলি পুরিয়া খায় কেছো জলপানে ধায় (कर्दा (प्रथ निक अञ्च-हाग्रा : তরক উঠিছে ঘন ব্যুনা আনন্দ-মন **प्रिंश खज-वांस (क्य भागा ॥** ভুলিল কানাইর বানা ঠাত্রি ঠাত্রি রাখালের থানা স্থবলের থানা সভার আগে। ভার বাদে বলরাম মাৰো রাজা শ্যাম-ধাম রাখাল বেড়িল লাখে লাখে। কেছো হাতী ঘোড়া হয় রাখাল রাখালে বয় কেহে। নাচে কেহে। গায় গীত। কেহো বায় শিকা বেণু বনে বাজা হৈল কামু বলাই হইলা তার মাত ॥ বসিলা রাখাল-রাজ কেছো বলে সাজ সাজ অহুর উপরে দেও° হানা। দধি ত্রগ্ধ কাঢ়ি খায় वश्नी वहरन शांत्र কংসের যোগান দিতে মানা ॥ 18666161

পাঠান্তর

- ১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৬ সংখ্যক পদ।
২। 'কালিন্দি' ব। ৩। 'চাঁদ মেব' ক। ৪।
কেবল প-র-সা পুথিতে 'ঐ' আছে। ৫। 'উঠিছে
ন' ছলে 'উঠে বন বন' প-র-সা। ৬। 'বংগ'
ক, ধ; 'বোনে' ব, চ। ৭। 'দেহ' প-র-সা।

शांवनी ।)

বসুনাক জীর তক্ষডল স্থাীডল আসিয়া মিলল হোনং ভাই।

मटि वान खान कि (थना (थनादि (alm আজু খেলিব এই ঠাঞি ॥ কারু কোচডেডে ভেটা কডি রামচাকি দাড়াগুলি কেহো কেগে পাচনি ফিরায়। রাম কানাই কুতৃহলে ছুই ভাই ছুই দলে শিশুগণ করে ধাত্রা ধার ॥ को कुरक रहे नारहे नि নিজ অন্ন হেলাহেলি Cकर Cकर लाष्ट्रिश श्रुकांत्र। গেঁড়ুয়া বলাই করে সব শিশু খরে খবে লোফে গেঁড়ু মত্ত বলাই ॥ সাতলি ভাকলু বলি ভাকে মহামন্ত বলী टोमिश्न পড़ে धाख्या धाँदे । এক শিশু কহে শুন সাতলি পা গাছি পুন মার যদি কানাইর দোহাই ॥১০॥১১৯৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৭ সংখ্যক পদ।

২। 'হুই' প-র-সা। ৩। 'থেলাবি' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৪। 'কাক' ইত্যাদি হলে 'কাক কাছরেত' ইত্যাদি ক; 'কাক কাছড়েড' ইত্যাদি ধ,
চ; 'কাক কোছে' ইত্যাদি প-র-সা। ৫। 'দিপে'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'নাটুয়া' প-র-সা। ৭।
'সব শিশু' হলে 'শিশুগণ' ব। ৮। 'সাঞ্জি' ক।
৯। 'সাত্তি' ইত্যাদি পংক্তিবর ক, চ পুথিতে নাই।
অতঃপর খ, য পুথিতে নিয়লিখিত অতিরিক্ত পংক্তিবর দৃষ্ট হর, বথা—
'কেহো ধার ছরাছরি কেহো তক্ত লক্ত করি
পাছে পাছে মন্ত বলাই।'
প-র-সা পুথিতে উত্ত পংক্তিবরের পরিবর্ত্তে পুনরার
'সব শিশু' ইত্যাদি পংক্তিবর লিখিত হইরাছে।

ভাটিয়ারি ৷১

আরে মোর রাম কানাই। যম্না-ভীরের ছায় খেলে দোন ভাই॥ সভাই সমান খেলু বাটিয়া লইল। হারিলে চড়িব কাল্কে এই পণ কৈল ॥ य कन शदिर छाटे कारक कवि लाव°। বংশীবটের তলে বাথিয়া আসিবে ॥ চুই দিগে চুই ভাই আসি দাঁড়াইলা। যার যেই খেলু• সৰ বাঁটিয়া লইলা॥ श्रीनाम श्रुनाम चानि कानाहेत्र निट्र देश । স্তবল বলাইর দিগে নাচিতে লাগিল। শ্রীদাম ক**হে আ**মরা কানাইর দিগে হব। কানাই হারিলে উহার কান্ধে না চডিব ॥ এমতে বাঁটিয়া খেলু খেলা আরম্ভিলা। मध्य गञ्जीत नाम (थिनश हिनला ॥ घनत्राम मान करह दम्बिश वलारे। আপনি সাতলি ভালি হারিলা কানাই।

122122861

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭২৮ সংখ্যক পদ।
২। 'ভক্লর' অ, চ, প-র-সা। ৩। 'থেড়ু' প-র-সা।
৪। 'নিবে' ক, খ। ৫। 'ভলে নিরা' ক, খ।
৬। 'থেড়ু' প-র-সা। ৭। 'আর' ক, খ, চ,
শ-র-সা। ৮। 'থেড়ু' প-র-সা। ৯। 'সাওলি'
ক, খ, সাঁতেলি' খ, 'সাঙ্গি' চ; 'সাঁওলি' প-র-সা।

dente.

আজি খেলার হারিলা কানাই। ইবলে করিয়া কাজে বসন আঁটিয়া বাজে বংশীবটের ভলে বাই॥ গ্রা শ্রীদাম বলাই লৈয়া চলিতে না পারে ধাইয়া
শ্রম-জল-ধারা পড়ে অজে।
এখন থেলিব যবে হইব বলাইর দিগে
আর না থেলিব কানাইর॰ সজে॥
কানাই না জিতে কভু জিতিলে হারয়ে ভঙু
হারিলে জিতয়ে বলরাম।
বেলিয়া বলাইর সজে চড়িব কানাইর কাজে
নহে কাজে নিব ঘন-শ্রাম॥
মন্ত বলাই-চান্দে কে করিতে পারে কাজে
থেলিতে ঘাইতে লাগে ভয়।
গেড়য়া লইয়া করে হারিলে সভারে মারে
ঘনরাম দাস দেখি কয়॥১২॥১১৯৭॥

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭২৯ সংখ্যক পদ।
২। কেবল প-র-সা পুথিতে 'ঞ' আছে। ৩। 'থেলিব কানাইর' হলে 'থেলাব কারু' প-র-সা।

मोबन ।>

ভাগ্যবতী ষমুনা মাই।

যার এ কুলে ও কুলে ধাওয়া ধাই॥

শ্বেত শাঙল দোন ভাই।

যার কলে দেখে আপন ছাই॥

যমুনার জলে কিবা শোভাই।

এ ধতুনক্ষন-মনলোভা॥১০॥১১৯৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৭০০ সংখ্যক পথ।
২। 'বার' শব্দ ব পূথিতে নাই। ৩। 'নিক আক'
ব; 'আপনার' চ। ৪। 'বমুনার' ইত্যাবি
কলিটি কেবল প-র-সা পূথিতে আছে। অতঃপর
উহাতে নিয়লিখিত প্রক্রিপ্ত কলিটি দৃত্ত হয়, বথা—
'নিয়ানক দাসের হয় তথি।
ক্লে কেথি ক্তেক সুরতি য়'

नियानम पान देवकवर्गात्मत्र शत्रवर्शी नगरतत्र वाकि; স্থভরাং বৈঞ্বদাদের 'পদকরতক্র' গ্রাছে নিষানন্দ দাসের ভণিতাবক রচনা সন্নিবেশিত হওয়া অসম্ভব। প-র-সা পুথিতে এই পদে বছনন্দন দাসের ভণিতা আছে: তৎপরে আবার নিমানৰ দাসের ভণিতার কোন সাৰ্থকতা দেখা যায় না। নিমানন্দ দাস এই পদের পুথ-আর ভণিতাটির উদ্ধার করিয়াছেন বলিয়া এই পদের শেষে নিজ-নামান্বিত অপর ভণিতা সংবোজিত করিরাছেন কি ?

অথ বনভোজন।

খেলা সমাধিয়া শ্ৰমযুত হৈয়া नशांगन देलगा नदन । ভোজন-সন্তার ছিল ভাবে ভার Cकांकरन विश्वा द्रावा । ষমুনা-পুলিনে বেড়ি স্থাগণে মাবে করি বৈসে কামু। পাড়ি বনপাভ তাহে নিল ভাত कल खित्र भिका (वर्ष । गव गथा त्यनि করিয়া মণ্ডলী ভোজন করয়ে হুখে। ভাল ভাল কৈয়া मूथ टेहर टेनग्रा সভে দেই কামু মুখে। সভৈ কৰে ভাই আমার কানাই মোরে বড় ভাল বালে। বামার সমূৰে বসি খায় হুখে नमा ब्रट्ड ट्यांब शाट्य । এহি করি মনে क्रवरत्र (अंबरन আনন্দ-সাগরে ভাসে। বিশ্বস্তর দাস করি মনে আশ ब्रट्ट ख्वरणब शीरण ॥>८॥> >>>।

শহরাভরণ। সম ভাল।১

ভোর আইঠাং বড় মিঠা লাগে কানাই রে। খাইতে বড় স্থখ পাই তেঞি তোর আইঠা খাই খেত্যে খেতো বেঁতে হৈতে দিতে হৈল

ভা**ই রে**° ॥ধু॥

ও রাকা অধর মাকো ना जानि कि मधु बाह আমরা তোরঃ চান্দ-মুখের বালাই যাই রে। এই উপহার নেওং अष्टेश जामानिरग । ८ । এ দাস উদ্ধবে কিছু দিতে চাই রে ॥

100261951

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৩১ সংখ্যক পদ। २। 'व्याहेर्व' च; 'व्याका' ह; 'बार्का' भ-त-मा। ৩। 'বেত্যে' ইত্যাদি ছলে 'ধাইতে বেঁতে হৈতে मिल्ड' हेजामि क; '(थल दौट हहेल मिड' ইত্যাদি ৰ; 'বেত্যে বেঁতে হৈতে দিতে' চ; 'ধাইতে দিতে' প-র-সা। ৪। 'ভোমার' ক। ং। 'কাও' খ; 'নাও' च; 'কেও' ক। ৬। 'আমার দিগে' ।।

ख्यां त्रात्र ।> ভোকন সমাপি সবছঁ ব্ৰজ-বালক देवर्वन नीशक हान्। कालिन्मि-नीत-मभीत वश्रे मुक् শীতল করু সব গার # স্কর ভাগ-শরীর। শ্ৰীদামক কোরে অলসে ভহি শৃভলং ত্বল-কোরে বলবীর ॥এ॥ নব নব পল্লব লেই স্থাগণ वीकरे वृद्धं कन-करक। (क्षिन खमत कांगू-मूच (द्रि (द्रि * शिवरे भवग-खबरक ।

আলস তেজি বৈঠল নন্দ-মন্দন
দূরহিঁ গেও সব ধেতু।
হেরইতে যতনে একযোগ কারণে
বারই মোহন বেণু ॥১৬॥১২০১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৩২ সংখ্যক পদ। ২। 'শুভ্তল' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'কাননে' প-র-সা।

वर्षा जोत्र ।>

সৰ সহচর সনে বেণু বাজাওরে।
প্রেমহি কোই কাসু-গুণ গাওরে ॥
কোই কোই নিরখয়ে কাসুক মুখ।
খেলই কোই ভত্ত মন স্থ ॥
কোই চক্রাবতং লগুড় ফিরায়।
কাহুক কান্ধে কোই° চড়ি যায়॥
থৈছে সখা সহ খেলয়ে কান।
মোহন রাম-কাসুক গুণ গান॥১৭॥১২•২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৩০ সংখ্যক পদ।

২। 'চক্রবর্ণ' ক, খ, খ; 'চক্রবর্ত' চ। 'চক্রবর্ণ'
ও 'চক্রবর্ত' পাঠে ছম্মোভল ঘটে। 'চক্রবর্ত' শব্দ সংস্কৃত 'চক্রবর্ত্ত' শব্দের অপ্রংশ। ৩। 'কোই চড়ি' হলে 'চড়ি কোই' ক, খ, খ, চ।

কলৰ ভাটনারি।১

আছু বনে আনন্দ বাধাই। গাতিয়া বিলোদ খেলা আনন্দেং হইলা ভোলা ছুর বলে গেল সব গাই॥# ধেমু না দেখিয়া বনে স্থকিত রাধালগণে শ্ৰীদাম স্থাম আদি সভে। কানাই বলিছে ভাই খেলা ভালা যাবে° নাই व्यानिव त्याधन त्वनु-ब्राह्य ॥ भव ८४मू नाम टेकग्राः अधरत मूत्रली टेलग्रा ডাকিয়া পুরিল উচ্চম্বরে। শুনিয়া বেণুর রবণ ধায় ধেমু বৎস সব পুচ্ছ ফেলি পিঠের উপরে॥ ধেতু সব পারি সারি হাস্বা হাস্বা রব করি माँ एविन कृष्यत्र निक्रि। इक्ष व्यवि भएए वैं। एके ८ श्रामत खत्रक छोट्ठे স্নেহে গাবী শ্রাম-ব্রুস চাটে॥ দেখি সব স্থাগণ আবা আবা ঘনে ঘন কাসুরে করিল আলিঙ্গন। প্রেমদাস কছে বাণী কানাইর মুরলা শুনি পশু পাখী পাইল চেডন ।১৮।১২•৩।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৩৪ সংখ্যক পদ। ২। 'সভাই' থ, প-র-সা। ৩। 'হবে' ক, থ, প-র-সা। ৪। 'কহিরা' ঘ; 'কয়্যা' চ। ৫। 'রবে' ঘ। ৬। 'সবে' ঘ। ৭। 'ধ্বনি' প-র-সা।

সিশ্বড়া ।>

শ্রুতি-অবতংস অংস পরি কবিত

মুরলা অধর স্থরজ।

চরণে লম্বিত পিতং ধটিকর অঞ্চল

গো-ধূলি-ধূসর শ্রাম-অজ ।

থেমু চরাওত বেগু বাজাওত

কানাই কালিন্দি-তারে।

ধবলি সাঙলি বলি দীগণ নেছারই
সরকাই মন্দ পতীরে।

ভূমে আয়োগিত করপুত-লগুড় কটি-অবলম্বন-কারী। বাম-চরণ পর मिथ्य ह्या श्रीन अज-अज जग-मन-हाती ॥ ব্ৰজ-বালক সঙ্গে রক্ষে কত ধাওত मख जिश्ह-गिष्डि गम्दन। চান্দ-মুখের ঘাম বামকরে বারই त्रहरे लश्च हिलाति ॥ উচ্চ পুচ্ছ করি ধেমুগণ ধাওত **চাহত अवयव मोर्टिंग**। অনম্ভ দাস কহ কামু-মুখ হেরি হেরি পুচ্ছ নাচাওত পীঠে ॥১৯॥১২০৪॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পূৰির ১৭০৫ সংখ্যক পদ।
২। 'পীত' ক, চ। ৩। 'ধাটকর' হুলে 'ধরি
কর' ক; 'ধরি করু' থ, প-র-সা; 'ধাটর' ছ।
ধাটকর = ধাটর। ৪। 'দিঘ' ক; 'দিঘ' চ, প-র-সা।
। 'ডোনে' ঘ, চ। ৬। 'জিনিয়া' ক, খ।
१। 'হিলোনে' চ; 'হিলনে' প-র-সা। ৮। 'দিঠে'
ক, চ, প-র-সা। ১। 'পিঠে' ক, প-র-সা।

वरवस्थी ।>

স্থাগণ সঙ্গে রজে এজ-নন্দনং
থেসু চরাওত কালিন্দি-তীরে।
সম-বয়-বেশ কেশ পরি চন্দ্রক
গজবর-গমনে চলই ধিরেণ ধীরে।
লাম শ্রীলাম মহাবল কোকিল
সবহুঁ স্থা সঞ্জে বছবিধ খেল।
কর চরণে মহিণ ধরই ধবলি সম
কোই বৎস কোই বুব সম ভেল।
কোই কোকিল সম গরজই কুছ কুছ
কোই ময়ুর সম নৃত্যু রসাল।

ঐছন ক্রীড়নে নিমগন সব জন

দূর কানন মাহা চলু সব পাল ॥

যমুনা-ভরক রক হেরি কোই কোই

কল মাহা পৈঠি ক্রয়ে জল-খেলা।

ঐছে আনন্দে বিহরে জল-বালক
দাস অনস্ত-চীত হরি নেলা ॥২০॥১২০৫॥

পাঠাকব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৪৬ সংখ্যক পদ।
২। 'বছনক্ষন' ক; 'কত ধারত' প-র-সা। ৩।
'থীরে' ক, ধ, প-র-সা। ৪। 'মহী' ক। ৫।
'ক্রীড়ন' ব। ৬। 'মহা' ব। ৭। 'করল' ক,
ধ; 'করত' প-র-সা। ৮। 'থেলত' প-র-সা।
৯। 'অনস্তক চীত' চ; 'অনস্ত চিত' ব; 'অনস্তক
চিত' ক।

वित्रांग 15

যমুনার তীরে কানাই শ্রীদামেরেই লৈয়া।
মাধামাথি রণ করেই শ্রামযুত হৈয়া॥
প্রথম রবির তাপে শুখাইল মুখ।
দেখি সব স্থাগণের মনে হইল দুখ॥
আর না খেলিব ভাই চল বাই ঘরে।
স্কালে বাইতে মা কহিয়াছেই সভারে॥
মলিন হইল কানাই মুখানিই ভোমার।
দেখিয়া বিদরে হিয়া আমা সভাকার॥
বেলি অবসান হৈল চল খরে বাই।
কহে বলরাম দূর বনে গেল গাই॥

123132061

পাঠান্তর

) देश श-त-ना श्रीवत ১१७१ ज्रश्याक शह। २। 'श्रीवादम' ष; 'श्रिवाम' श-त-ना। ७। 'क्ति' ष,ष। ४। 'क्हेबाट्ट' श-त्र-ना। ८। 'त्रूकानि' ष।

অথ উত্তর গোষ্ঠ ৮

তথা বাপ ৷১

পাল জড় কর জ্রীদাম সান দেওং শিক্সায়।
স্বনে বিষম খাইও নাম করে মায় ।
আজি মাঠে আমাদের বিলম্ব দেখিয়া।
হেন বুঝি কান্দে মায়ও পথ পানে চাইয়াও ।
বেলি অবসান হৈল চল যাই ঘরে।
মায়ে না দেখিয়া প্রাণ কেমন জানি করে ॥
বলরাম দাস কহে শুনি কানাইর বোল।
সকল রাখাল মাঝে পড়ে উত্রোল ।

পাঠান্তর

1221122091

১। ইহাপ র-সাপুণির ১৭৩৮ সংখ্যক পদ। ২। 'দাও' অ,চ। ৩। 'লাগে' অ। ৪ 'মাতা' ক; 'মা'চ। ৫। 'চাঞা' ক।

টাকা

২। "স্বনে" ইত্যাদি। আমি বার্থার বিষম থাইতেছি,—(তাহাতে অন্থমান হইতেছে বে) মাতা আমার নাম অরণ করিতেছেন। (কেহ একাগ্র-মনে দ্রন্থিত প্রির জনকে অরণ করিলে, তাহার বিষম গাগে— এইক্লপ প্রচলিত সংস্কার আছে।)

कांद्रिशति ।>

চাঁদ-মুখে বেণু দিয়া সব ধেন্থ নাম লইয়া
ভাকিতে লাগিলা উচ্চস্বরে।
শুনিয়া কানাইর বেণু উদ্ধান্থ ধায় ধেন্থ
পুচ্ছ ফেলি পিঠের উপরে ॥
শবসান বেণু-রব বুবিয়া রাখাল সব
ভাসিয়া মিলিল নিজ-স্থা ।
বে বনে বে ধেন্থ ছিল ফিরিয়া একত্র কৈল
ভালাইলা গোকুলের মুখে ॥

খেত-কান্তি অমুপাম আগে ধার বলরাম
আর শিশু চলে ডাহিন বাম।
শ্রীদাম স্থান পাছে ভাল শোভা করিয়াছে
ডার মাঝে নবঘন-শ্যাম॥
ঘন বাজে শিলা বেণু গগনে গো-কুর-রেণু
পপে চলে করি কত ভঙ্গেং।
যতেক রাখালগণ আবা সাবা ঘনে ঘন
বলরাম দাস চলু সঙ্গেণ ॥২৩॥১২০৮॥

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭০৯ সংখ্যক পদ। ২। 'ভলি'প-র-সা। ৩। 'সলি'প-র-সা।

পৌরী।>

বন সঞ্জে আওত নন্দ-তুলাল। গো-ধূলি-ধূসর শ্রাম কলেবর আজামুলন্বিত বন-মাল ॥ধ্রু॥ খন খন শৃঙ্গ বেণু-রব শুনইডে वत्रकर-वानिशन थाय । मोभ करत वधुगन॰ মঙ্গল পারি मन्दित नाइत माज्य ॥ मूथ किनि विश्ववन পীতাম্বর-ধর नव-मञ्जूति व्यवज्ञः । শিখণ্ডক-মণ্ডিভ চ্ডা ময়ুর-বায়ই মোহন বংশ। বাল বুদ্ধ জন বরজং -বাসিগণ অনিমিখে মুখ-শশি হেরি। চান্দ অনু পাওল ভূথিল চকোর मिम्दित ना हलार्य कि वि ८गार्ठ भन्नदबन्न গোগণ সবছ मिमरत हन् नमनान। যশোষতি আওল আকুল পত্তে মোহন-ভণিত রসাল ॥২৪।১২০৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৭৪০ সংখ্যক পদ। ২। বৈজ'ক, খ, খ, চ। ৩। বৈধ্পণ'ক, খ। ৪। কিভি'খ। ৫। বৈজ'ক, খ, খ, চ। ৬। নোচ্যরে'ফ্লে নিচরে'ক।

(भोत्री ।)

নক্ষ-ছলাল বাছা যশোদা-ছলাল।

এত ক্ষণ মাঠে থাকে কাহার ছাওয়ালং॥
রতন-প্রদীপ লৈয়া আইলা নক্ষরাণী।
এক দিঠে দেখে রাজা চরণ ছখানিও॥
নেতের আঁচলে রাণী মোছে হাত পা।
তোমার মুখের নিছনি লৈয়া মরিও যাউক মা॥
কহে বলরাম নক্ষরাণী কুত্হলে।
কত লক্ষ চুত্ব দেই বদন-কমলে॥২৫॥১২১০॥

পঠিক্তির

 ১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৪১ সংখ্যক পদ।
 ২। 'ছালাল' ছ। ৩। 'এক দিঠে' ইত্যাদি ছলে 'গদগদ কঠ নানিকসরে বাণী॥' (পাঠান্তর—ক)।
 ৪। 'মরে' ক; 'মর্যা' খ, চ।

টাকা

৪। "এক দিঠে" ইত্যাদি। বশোদা এক দৃষ্টে

ীক্ষকের আরক্তিম চরণ বুগল দেখিতে লাগিলেন—

পাছে বন-অন্ধ-কালে উহাতে কণ্টকাদি বিশ্ব হইরা

থাকে । ভুলনা করুন,—

"নব তৃণাত্মর কত তৃকিল চরণে। এক-দিঠি হৈয়া রাণী চাহে চরণ পানে।" —পাক-ত, ১২১২ সংখ্যক পদ।

क्लांने ।>

পঞ্চীপে নিরম্ভন কেল। কড শভ চুত্ব বরন পর দেল। কোরে আগোরি স্থত মন্দিরে গেল।
বহু উপহার থারিং পর দেল।
রাম কানাই অজ-বালক সজেও।
ভোজন কয়ল কতহুঁও রসরজেও।
কাতরে তবহিও পুছুরে নন্দরাণী।
গদগদ কণ্ঠ না নিকস্বরেং বাণী।
স্তন-খিরেং ভীগলও পহিরণ-চীর।
করকার নয়নে গলয়ে ঘনওং নীর।
আকুল ভই১১ তব পুছুত্যং বাত।
মোহন নির্থই রোহিণি সাধ্যত।

126122221

পঠিকির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৪২ সংখ্যক পদ।
২। 'থার' ক, চ। ৩। 'সপ' च। ৪। 'বহুত'
ক, খ। ৫। 'রসরল' च। ৬। 'ভবহু' ক, খ।
৭। 'সররে' च। ৮। 'ক্ষীরে' ক, চ। ১।
'ভিগল' ক, প-র-সা। ১০। 'বহু' প-র-সা। ১১।
'হোই' প-র-সা। ১২। 'পুছত' ক, চ, প-র-সা।
১৩। 'সাত' খ, চ।

পৌরী।১

কোন বনে গিয়াছিলা ওরে রাম কামু।
আজি কেন চান্দ-মুখের শুনি নাই বেণু।
ক্ষীর সর ননী দিলাম আঁচলে বাদ্ধিরা।
বুকি কিছু খাও নাই শুখাঞাছে ছিয়া।
মলিন হৈয়াছে মুখ রবির কিরণে।
না জানি কিরিলা কোন গহন কাননে।
নব ভূগাস্কুর কড ভূকিলং চরণে।
এক-দিঠিং-হৈরা রাণী চাহে চরণ পানে।
না বুকি ধাইয়াছ কড ধেমুর পাছে।
এ দাস বলাই কেনে এ ছখ দেখাছেং।

এ দাস বলাই কেনে এ ছখ দেখাছেং।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৭৪৩ সংখ্যক পদ। ২। 'জুঁকিল' ক। ৩। 'এক্দিঠ' ক, খ, চ, প-র সা। ৪। 'দিরাছে' ব।

शननी ।>

ওগো মা ভোমার গোপাল কিবা জানয়ে মোহিনী। আমরা সক্রের ভাইত তমুত নামন পাই ভোমারে ভুলাবে কত খানি॥ তৃণ খাইতে ধেমুগণ যদি যায় দুর বন কেহ ত না যায় ফিরাইতে। পুরয়ে মোহন বেণু তোমার ছুলাল কামু ফিরে ধেন্ম মুরলীর গীতে 🛭 আমরা ফিরাইতে ধেমু ভাহা নাহি দেয় কামু मन किर्त्र छ्वल्ब भाष्ट्। ञ्चल कतिया (कारल (श्राम गमगम र्वाल না জানি মরম কিবা আছে । কিবা লীলা করে এহ বুঝিতে না পারে কেহ অপরূপ চরিড বিহরে । वनताम मात्र ७८०० वनाई माना नाहि जातन আনে কিবা বুকিবে অস্তরে॥ 124122201

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৭৪৪ সংখ্যক পদ।
 ২। 'বিহারে' খ, চ, প-র-সা। ৩। 'বোলে' ক,
 চ, প-র-সা।

ইমন কলাণী।>
রাণী ভালে আনন্দ-সাগরে।
বামে বসাইরা স্থাম ধান্দিণে বসাইরা রামং
ভূম হেই মুখ-প্রথাকরে ॥ এ ॥

ক্ষীর ননী ছেনা সর আনিয়া সে থবে থর
আগে দেই রামের বদনে।
পাছে কানাইর মুখে দের রাণী মন-স্থাপে
নিরথয়ে চাঁদ-মুখ পানে।
গোপের রমণী যত চৌদিগে শত শত
মুখ হেরি লগু লগু বোলে।
মাতা যশোমতী মেলি মলল হলাছলি
আরতি করয়ে কুতৃহলে॥
ব্যালিয়া রতন-বাতি করে সবে আরতি
হরষিত যশোমতী মাই।
কহে বলরাম দাসে আনন্দ-সাগরে ভালে
দোই৽রপের বলিহারি বাই ১২৯০১২১৪৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১২১৪ সংখ্যক পদ। 'ইমনকল্যানী' স্থনে 'ইহমন কল্যানী' চ। ২। 'ক্লিনে বসাইয়া রাম' স্থলে 'ক্লিনেডে বলরাম' প-র-সা। ৩। 'মহাস্থ্যে' ক, ধ। ৪। 'র্ছ' ক,'প-র-সা।

(कवल मधावां मना-त्रम यथा।

क्लावि।>

জয় জয় রাম কানাই ছই ভাই।
কলিতে হইলা দোহেঁ চৈততা নিভাই।
পঞ্চ রসে মাতাইলা অধিল জুবন।
সে কুপা নহিলে ইহা জানিবে কোন জন।

100-122288

ইতি তৃতীয়-শাধায়াং একবিংশতিপক্লবঃ। পাঠাবৰ

)। देश न-क्रमा नृथित १९८७ मरवाक नव।

ष्यथं नथा-वां भना-तम श्रकातां खत्र यथा।

গোঠৰিহারাদি। व्याप्ति मश्र अपु। ভাটিরারি ৷১ গোর কিশোর পুরুব-রসে গর গর मत्न (जन (गार्ठ-विशंद्र। माम औमाम खुरम रान छाकरे नग्रद्ध गलद्य कलश्रंत ॥ বেত্র বিষাণ বেণু । লেই সাজহ যায়ৰ ভাঞি⁸ সমীপ। গৌরীদাদ সাজ করি তৈখনে গৌর নিকটে উপনীত ৷ ভেষ্যা অভিয়াম বদন ঘন বাওই নূপুর চরণহি দেল। নিত্যানন্দ-চন্দ্র পর্ট আগুসরি थविल थविल थिने (कल II নদিয়া-নগর-লোক সব ধাওত (रब्रहेट (गोतक त्रथ । माम कंगबाथ हान्म (मारुनि लिहे যাওব সব অমুসঙ্গ ॥১॥১২১৬)

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৭৪৯ সংখ্যক পছ।
২। 'বিশান' খ, ছ, চ; 'বিশাল' ক, প-র-সা।
७। 'সাজ্ঞ' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'ভাতীর'
ক, খ; 'ভাভির' চ। ৫। 'ভাই' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৩। 'বদনে' ক। १। 'নুপুর' ইভাদি
হলে 'চরণে ছপুর জানি' ছ। ৮। 'ধ্বনি' ক, থ,
প-র-সা।

च्या जात्र ।>

বোঠে আমি বাব মা গো গোঠে আমি বাব। জীবাৰ স্থদাম সলে বাছুরি চরাব ॥ চ্ড়া বান্ধিং দে গো মা মুরলা দে মোরং হাতে।
আমার লাগিয়া শ্রীদাম দাড়াইয়া॰ রাজপথে।
পীতধড়া দে গো মা গলায় দেহং মালা।
মনে পড়ি গেল মোর কদন্দের তলা ॥
শুনিয়া গোপালের কথা মাতা যশোমতী।
সাজায় বিবিধ বেশে মনের আরতি ॥
অলে বিভূষিত কৈল রতন-ভূষণ।
কটিতে কিন্ধিণী ধটী পীতং বসন॥
কিবা সাজাইল রূপ ত্রিভূবন জিনি।
পূষ্প গুল্পা শিশি-পুচ্ছ চূড়ার টালনি॥
চরণে নূপুর দিলা তিলক কণালে।
চন্দনে চর্চিত অল রত্ম-হার গলে।
বলরাম দাসে কয় সাজাইয়া রাণী।
নেহারে গোপালেরণ মুখ কাতর পরাণি।

12132391

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৫০ সংখ্যক পদ।
২। বৈস্থাপের, চ। ৩। বেগাপের। ৪। কাড়াঞাপ
ক। ৫। বেল পোপ ইত্যাদি ফলে পেরার মাথে।
গলার দার ব; বল গো মা মোর গলার দেই
প-র-না। ৬। নীলাপ-র-না। ৭। গোগালপ
ক, চ, প-র-না।

সিমুড়া 13

শ্রীদান হুদান দানং শুন ওরে বলরান
দিনতি করিয়ে তো সভারে।
বন কভ॰ অভি দূর নব তৃণ কুশাঙ্করণ
গোপাল লৈয়া না ঘাইহ দূরে ॥
স্থাগণণ আগে পাছে গোপাল করিয়াণ মারে
ধীরে ধীরে করিহণ গমন।
নব ভূণাঙ্কুর আগে রালা পার জানি লাগে
প্রধ্রোধ না মানে মোরণ মন ॥

নিকটে গোধন রাখ্য

মা বল্যা শিক্ষায় শতাক্য শ ঘরে থাকি শুনি যেন রব। বিহি কৈলে শতাপ-জাতি, গোধন-পালন বৃত্তি তেঞি বনে পাঠাই যাদব শ ॥ বলরাম দাসের শ বাণী শুন ওগো শ নন্দরাণী মনে কিছু না ভাবিহ ভয়। চরণের বাধা লৈয়া দিব আমরা যোগাইয়া তোমার আগে ক্ছিল শ নিশ্চয়॥

101175724

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৫১ সংথাক পদ।

২। 'দাস' শদ থ পুথিতে নাই। ৩। 'কতি' च।

৪। 'কুশ ভূণাস্থ্র' च। ৫। 'সথা সব' च।

৬। 'কইরা' প-র-সা। ৭। 'করির' খ, চ। ৮।
'মারের' ক, খ, চ, প-র-সা। ৯। 'রেখ' च;
'রাইথো' প-র-সা। ১০। 'বলে' ক; 'বৈল্যা' চ।

১১। 'শিকাতে' ক, খ, চ, প-র-সা। ১২।
'ডেকো' ক; 'ডেক' च; 'ভাইকো' প-র-সা।

১৩। 'কৈলা' ক; 'কৈল' চ। ১৪। 'পাঠাই বাদব'
খলে 'পাঠাইরা দিব' ক। ১৫। 'বলরাম দাসের'
খলে 'এ দাস বলাইর' ঘ। ১৬। 'শুন' ঘ। ১৭।
'কিছিম্ল' ক।

ধানশী ৷১

গালল রাধালগণ নিতি নব নৃত্নং
নদের অলনে সভে ধার।
কানাই কানাই বলি করে অল হেলাহেলিও
আনন্দে ললিওও গীত গার।
গোপালেরে সালাইরা চাঁদ-মুধ মোছাইরা
ভালে দিল চন্দনের বিন্দু।
দব জলবর বেন চলিয়া বাইতে হেনও
উদয় হইল মুগ ইন্দু।

তুই ভাই সাজিয়া ওায় হাসিয়া হাসিয়া বার
করে কর করি একবন্ধ।
দেখিয়া বালক সব শুনি শিলা বেণু-রব
সরপুরে লাগে বহু ধন্দ।
ব্রজ্ঞ-নারীগণ সব যার বেই বালক
সভাকার বিয়াকুল চিত।
ঘনরাম দাস ভণে হৈয়া আনন্দিত মনে দ

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুৰির ১৭৫২ সংখ্যক পদ।
২। 'নৌতুন' ক, চ। ৩। কানাই' ইডাাদি
স্থলে 'অল হেলাহেলি কানাই কানাই বলি' ব।
৪। 'আনন্দে ললিড' স্থলে 'রাধাল আনন্দে'
প-র-সা। ৫। 'বাইডে হেন' স্থলে 'বাইছে হেন'
ক, প-র-সা; 'বাইছেন' ঝ, চ। ৬। 'সাজি'
ক, ঝ, প-র-সা। ৭। 'ফ্রি' ক, প-র-সা।
৮। 'হৈরা আনন্দিত মনে' স্থলে 'আনন্দ হইরা
মনে' ধ। ১। 'ছ্হাকার' ক, চ।

ভাটিয়ারি ৷১

সকালে আসিহং গোপাল ধেমুগণ লৈয়া।
আভাগিনী বৈল ভোষারং চাঁদ-মুখ চাইয়া।
খাকিহ শ্রীদামের সজে চরাইহ বাছুরী।
জোরে শিলা রব দিহ পরাণে না মরি।
এ খার নবনী এইং খাইবারেং দিলুঁ।
ভূমি যাবে দূর বনে আমি ভাবি মর্লু।
॥৫॥১২২০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৫০ সংখ্যক পথ। ২। 'আনিহ'প-র-সা। ৩। 'তোর' খ। ৪। 'চাঞা'ক; 'চাহিয়া' খ। ৫। 'রে' প-র-সা। ৬। 'থাইতে ডোরে'ক, চ। ७वा जान ।>

নন্দরাণি বাহু গো ভবনেং।
তোমার গোপাল আনি দিব বৈলি অবসানে॥
লৈরা বাছি তোমার গোপাল রাখিব বসাইয়া ।
আমরা ফিরাব ধেনু চাঁদ-মুখ চাইয়া ॥
লৈরা যাইতে তোমার গোপাল পাই বড় হখ।
বেণুতে কিরার ধেনু এ বড় কোঁডুক ॥
যে দিন বেবা মনে করি কানাই ভাহা জানে।
খুখা লাগিলে অন্ন কোথা হৈতে আনে॥
এক দিন দাবানলে মরিভাম পুড়িয়া।
ভাহাতে রাখিল গোপাল > কেমন করিয়া॥
নন্দরাণি ভেঞি ভোমার গোপাল লৈয়া যাই।
সল্ভেডে সাজিল পাছে এ দাস বলাই॥

পাঠান্তর

16175571

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৫৪ সংখ্যক পদ।
- ২। 'নক্ষরাণি' ইত্যাদি হলে 'কাই পো ভবনে
রাণি কাই পো ভবনে।' খ। ৩। 'বাইছি' প-র-সা।
৪। 'বসাঞা' ক। ৫। 'চাঞা' ক। ৬।
'গাই বড়' হলে 'বড় পাই' ক, চ। ৭। 'বেপুরবে' খ। ৮। 'বে' খ। ৯। 'হইলে' প-র-সা।
১০। 'কানি কোখা' প-র-সা। ১১। 'কানাই' খ।

তুপালী।১

আজু গোঠেরেই সাজল দোন ভাই।
নাম কানাইই সোঠে সাজে
বোড়ই শিক্ষা বেণু বাজে
বন্ধল পড়িল খাওয়া খাই ॥ এই ॥
চৌদিকে অল-বধ্ সকল গান্নভ
মূনহিত কতহঁ নন্নান।
আগে লাখে লাখেই খেলু গগনে উঠিছেই বেণু
বিকাশনে করে বেদ গান ॥

মুবহর হলধর ধরাধরি করে কর
লীলায় দোলায় দিল অক ।

ঘনায়া ঘনায়া কাছে মউরা মউরী শলাচ
চান্দে মেযে দেখি এক সল ।

হবল তুলিল বানা যেখানে বলাইর থানা
রাখালের কান্ধে ভাল সালে ।
রাম কানাই কুতুহলে সাজিলা যে আগু দলে
বলাইর যুগল শিলা বাজে ॥ ৭৮১২২২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৫৫ সংখ্যক পদ।
২। 'গোঠে' খ, ঘ। ০। 'কাফু' খ। ৪।
'কোরে' ক, খ, ঘ, চ। ৫। কেবল প-র-সা
পুথিতে 'ক্র' আছে। ৬। 'আগে লাখে লাখে'
হলে 'লাখে লাখে বার' প-র-সা। ৭। 'উড়িছে'
প-র-সা। ৮। 'লিলারা দোলারা' প-র-সা। ৯।
'ঘনাঞা ঘনাঞা' ক, 'ঘনারা ঘনারা' ঘ। ১০।
'মউরা মউরা' হলে 'আনন্দে ময়্র' ক, ধ; 'নান্দে
মউরি' য়, চ।

তথা রাপ ৷১

কানাই বলাই চলে দোন ভাই विनाय बहेश मारा। নন্দ বশোমতী স্লেহাধিক অতি সলে সলে চলি योत्र । কত যে যতনে পিভা মাভাগণে निक गुट्ट भागेरिया। মত বলরাম অভিশন্ন প্রেম বিচিত্ৰ জৈগেল হিয়া # (वद्राकुन-मानः সহিত সগণে⁴ जन-बाज (शना चत्र। ভাহার পিরিভে **অগ্নেয়ান** - চিত্তে किति हरण रलधन ॥

ভূলিয়া সধার প্রেমের আবেশে
কানাই চলিলা বনে।
বলাই ফিরিল কিছু না জানল
এ দাস উদ্ধানে ভণে ॥৮॥১২২৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৭৫৬ সংখ্যক পদ।
 ২। 'ব্যাকুল নয়নে' ক; 'বেয়াকুল মন' প-র-সা।
 ৩। 'সগণ' প-র-সা।
 ৪। 'আগে আন' ব।
 ৫। 'স্থায়' প-র-সা।

ভাটিরারি ৷১

শিক্ষা বেপু বেত্র বাধা কটিতে জাঁটিয়া।
সাজল রাধালরাজ সজে শিশু লৈয়া।
শ্রীদাম ডাকিয়া বলে ভাইরে কানাই।
এ সব রাখাল মাঝে বলাই দাদা নাই॥
ভূমি যদি বেণু পূরি ডাক এক বার।
বড় মনে সাধ আছে ভালি খাব তাল॥
শ্রীদামের কথা শুনি হর্ষিত হৈয়া।
হাসি পূরে বেণু দাদা বলাই বলিয়া॥
ঘনরাম গালের মন করে উচাটন।
দাদা রে বলাই বলি ডাকে ঘনে ঘন ॥
॥॥১২২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৫৭ সংখ্যক পদ। 'ভাটিয়ারি' হলে 'ভথা রাস' ক। ২। 'বলরাম' প-র-সা। ৩। 'বলে খন' হলে 'নিওসণ' ক, খ, চ।

नावण ()

বট ভাণ্ডিরে খাবি বলাই আরু রে কার। ররজ-বালক সব ভোর মুখ চার। ধেনু তৃণ নাহি খায় তোহারি ধেয়ানে।
উচ্চ-পুচ্ছে ধায় সব ব্রজ-পুর পানে।
যমুনার ভীরে যত রাখালের মেলা।
নাহিক নটন গীত নাহি কারু খেলা।
ভো বিন্দু নাহিক স্থুখ গহন কাননে।
যাদবেক্স ভাকে ঝাটণ দেও দুরুশনে॥

1135561061

পাঠাস্কর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৫৮ সংখ্যক পদ। ২। 'উচ্চ পুছহ' ক, প-র-সা। ৩। 'ঝাটি' প-র-সা।

তথা রাগ।১

ধাইয়াং আইল নন্দরাণী কেশ নাহি ঢাকে।
বাছার মুখের বেণু তোরে কেনু ডাকে ॥
কানাইর মুখের বেণু শুনিয়া বলাই।
মাতল রোহিণী-স্ত ডাকে ভাই ভাই ॥
শিক্ষা-রবে বোলে কেনেও ডাক রে কানাই।
নিকটে বাইছি আমি আর ভয় নাই॥
ঘনরামণ দাস বোলে শুন যশোমতি।
জান না এমতি হয় রাধালের পিরিতিও॥
॥১১॥১২২৬॥

পঠিক্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৫৯ সংখ্যক পদ।
'তথা রাগ' হলে 'ছড়ী' খ; 'মলল' প-র-সা। ২।
'ধাই' খ, প-র-সা। ৩। 'বোলে কেনে' হলে
'কহে কেন' ক, চ; 'কেন কেন' খ। 'আনিছি'
ক, চ; 'আনেছি' প-র-সা। ৫। 'বলরাম' প-র-সা।
१। 'মতি' ক, চ; 'রিতি' প-র-সা।

यक्त 13

রকিয়া রাখাল সাথে বাঁকুয়াৰ পাঁচনী হাতে वाहित देहलां दर्शिक्ति-नम्पन। भिषा पिया है। त-मूर्य উভ করি দিলা ফুকে শিক্ষা-রবে ভেদিল গগন ॥ পরিধান নীল ধটী গলে শেভে হেম কাঁঠি কোটি চক্র জিনিয়া বদন। আৰুৰ্ণ শোভিত ঠান আঁথিয়ুগ খুৰ্মান শোভে কভ রতন-ভূষণ ৷ দেখিতে লাগয়ে সাধ धक कारन दर्भकनम व्यात कारण भकत-कृशन। জিনি ময়-মত হাতী গমন মন্তর-গভি थत्री कत्रद्य देलमल॥ বাহির হৈলা বলরাম না দেখিয়া ঘন-শ্যাম **अरम इनइन छुनग्रन।** खानमारमर्ज्य क्य মিলিলা রাখালময় माटक कति नटम्बत नम्पन ॥১२॥১२२१॥ পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৬১ সংব্যক পদ। প-র-সা পুৰিতে নির্দাধিত পরার দারা পদটি আরম্ভ করা হইবাছে, ববা—

'বাম ককে শিলা বলাইর কাপে রালা ফুল।
বিহানা বারুণী পানে ছই ঞাখি রাডুল ॥'
২। 'বাখুরা' প-র-সা। ৩। 'বাহির হৈলা' ছলে
'বেইরাইল রে' প-র-সা। ৪। 'ভানচক্র লাল'
প-র-সা। 'মিলিরা' ক, খ।

দেশবয়াড়ী।>

কত কোটি চন্দ্ৰ জিনি উজোর বাংন থানি ।

মল-ছাঁদে পরে নীল ধটা।

কর পাই হুরাজুল জিনি কোক্নদ ফুল

বিনোর-ক্লপের পরিপাটা ঃ

वनाहे भद्रादिए जहिना कान्यन শ্ৰীকরে চম্পক বেড়া চাঁচর চিকুরে চড়া শিখি-পুচ্ছ উড়িছে প্রনে।ধ্রা भटन देवकश्रसी माना কনক অঙ্গদ বালা मकत-कृधन अक कारन। কান্ধে শোভে শিক্ষা বেত্র বুর্ণিভ রাতুল নেত্র রাতা উত্তপল আর কাণে॥ বাধানে আসিয়া হুখে मिना निम ठाँप-मूर्य ডাকে শিক্ষা ধাও ধাও বলি। শুনিয়া শিক্ষার রব थारेल थवली मव **मिल राम दाथान-मखनी**॥ হাঁকি নিজ নিজ পাল সব করি সমিশাল সভে মেলি করি এক ছাঁদ^e। বলাই রক্তিয়া বড়ি হাতে নিল ছান্দন-ডুরি চলিলা যেমন পোণার টাদে । সকল রাখাল সচ্ছে পরম কোতৃক রঙ্গে তাল-বন পানে ঘন চায়। রূপ গুণ বেশ দেখি তুড়ায় ভাপিত আঁখি প্রেমদাস কি বলিবে ভার ॥১৩॥১২২৮॥

পঠিক্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৬২ সংখ্যক পদ।
'লেশ বরাড়ী' ছলে 'বরাড়ী' ছ। ২। 'বলাই' "
শব্দ ব পুথিতে নাই। ৩। 'বাথানে' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৪। 'হুমিশাল' চ। ৫। 'ছান্দে'
প-র-সা। ৩। 'ছিল' ক, খ, প-র-সা। १।
'বেন' ছ। ৮। 'চান্দে' প-র-সা।

विश्राम ।

আসিয়া বলাই বলে কানাই ওরে ভাইয়া।
আমারে ভাকিয়া ছিলা কিসের লাগিয়া।
হাসিয়া কানাইং বলে বলাইণ ওরে ভাই।
বেমুক নারিয়া সভে ভাল কল বাই।

শুনিরা বলাই॰ মনে হর্ষিত হৈয়া।
সামাইলাণ তাল-বনে কোতুক লাগিয়া॰ ॥
ক্ষিয়া আইল ধেমুক বলাই দেখিয়া।
লীলায় মারিল ভারণ পুচ্ছ ঘুরাইয়া॥
ভাল ফল লৈয়া সভে করিলা ভোজন।
ঘনরাম দাস হেরি আনন্দিত মন॥

11281175591

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র সাপুথির ১৭৬০ সংখ্যক পদ।
২। বিলাই' ক। ৩। কোনাই' ক। ৪।
বিলাই মনে' হলে বিলাইর কথা' ক। ৫। প্রবেশিলা' প-র-সা। ৬। কেরিয়া' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৭। তারে প-র-সা।

ভাটিনারি ৷১

চলিলা রাথালগণ বথা গিরি গোবর্জন
ধেকুগণ ধায় আগে আগে।
ঘন বায় শিক্ষা বেণু গগনে গো-কুর-রেণু
চরণে শরণ মহী মাগে॥
বমুনার তীরে তীরে গোগণ আনন্দ চরে
পাছে পাছে ধার রামকামু।
শীদাম স্থদাম দাম ধাইছে ডাহিন বাম
উভ করি মুখে দিয়া বেণু॥১৫॥১২৩০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৬৪ সংখ্যক পদ। 'ভাটিয়ারি' হুর্লে 'বয়াড়ী' প-র-সা।

वानचे ।>

নানা খেল্পা খেল্পা শ্রম্ভ হৈয়া বসিলা ভরুত্ব মূলে। মলন্ত্র-পাবন বহুত্বে সংঘন শীত্রু বমুনা-কুলে ॥

इरम चत्रम আলসে বলাই শুইলা স্বল-কোরে। কানাই দেখিয়া আকুল হইয়া পাদ সম্বাহন করে॥ নবীন পল্লব लहेया जीमाम ं मघरन कंबरय वीग्र। বসন ভিন্ধাঞাং যতনে খানিয়া মোছারত বলাইর, গার ॥ আম দূরে গেল শীতল হইল वनतारमत्र औ-अन्। সব স্থাগণ হরসিত মন শিवाই দে**খয়ে রঙ্গ ॥১৬॥১২৩১ ॥** পঠিবির

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৭৬৫ সংখ্যক পদ।
 ২। 'ভিপায়া'প-র-সা। ০। 'মোছয়ে' প-র-য়া।
 ৪। 'বলাই' ক, চ।

অথ যজ্ঞপত্নী-অন্ন-ভোজন ভাটনারী।>

ब्रीनम -नमन ক্রি গোচারণ मलिन ७ मूथ-मन् । স্ব স্হচর সঙ্গে হলধর वश्मीवरे अज्ञान वितर ॥ খুধায় আকুলং সকল রাখাল কহয়ে ভেজিয়া লাজ। কি খাবে বলিয়া হৃদয় বুঝিয়া **পুছ**য়ে রাখালরাজ ॥ वर्षे कटर छोरे अन थारेट हारे বদি খাওয়াইতে পার । তবে স্থুখ পাই গোধন চরাই

किছू ना हाहिएत जावर ॥

ৰটুর বচন শুনিয়া তখন
হাসি নবঘন-শুাম।
এ উদ্ধবদাস চির দিন আশ
পূরাহ- মনের কাম ॥১৭॥১২৩২॥
পাঠাত্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৭৬৪ সংখ্যক প্র।
২। 'নব্দের' প-র-সা। ৩। 'মিলি তক্ষ' ঘ।
৪। 'আসি' প-র-সা। ৫। 'ব্যাকুর্ন' ক। ৬।
'ক্ষর বুঝিরা' ছলে 'ক্ষদ্রে ঝুরিরা' প-র-সা। ৭।
'পারো' প-র সা। ৮। 'আবো' প-র-সা। ১।

গ্ৰীরাগ-একতালী তাল ।১

'পুরাও' ক, চ, প-র-সা।

শ্ৰীদাম স্থদামে ভাকি কহয়ে কানাই। যাজ্ঞিক নিকটে চাহি অন্ন আন যাই ॥ কহ গিয়া যাজ্ঞিক ব্ৰাহ্মণগণ আগে। রামকৃষ্ণ খুধায় ভোমারে অল মাগে ॥ শুনিয়া শ্রীদাম গিয়া মুনিং বরাবর। রামকুষ্ণ অন চাহে° কি কহ উত্তর ॥ মুনি কৰে কোন রামকৃষ্ণ কহ শুনি। বলে ত্রজরাজ-স্থৃত পরিচয় জানি ॥ व्यक्रग-नग्रत्न भूनि मरकाथ-वहन। বজ্ঞ-অগ্রভাগ চাহে গোপের নন্দন I দেবভারে অন্ন নাছি করি সমর্পণে। গোপ কাভি আপে মাগে ভয় নাহি মনে " निन्मा छनि श्रीमामापि कितिया चाहेना। মুনির ভৎ সনা রামকৃষ্ণেরে কহিলা ॥ অম নাহি দেয় আর কহে কটুবাণী। শুনিয়া উদ্ধবদাসের কাতরণ পরাণি 🛭

174175001

পাঠাতব ১। ইহা প-ম-সা প্ৰথিম ১৭৬৭ সংখ্যক পদ। ২। 'বুলির' প-র-সা। ৩। 'বাংগ' প-র-সা। ৪। 'পোরাল' প-র-সা। ৫। 'আবুকুল' প-র-সা।

তথা রাগ 15

শুনিয়া শ্রীদামের কথা অন্তরে পাইয়া বেখা কহে ভূমি যাহ পুনর্বার। যাহাঁ যজ্ঞপত্নী রহে कर कुछ अज्ञ ठार्ट क्षितिल देनत्रांभ नटह कात्र॥ শুনি আর বার ধাইং যজ্ঞপত্নী-ভানে যাই৽ কৃষ্ণ-আজ্ঞা কহিলা সম্বর। কহি তোমাদের আগে রামকুষ্ণ অল মাগে ইথে মোরে কি কহ উত্তর ॥ শুনি কৃষ্ণ-পরসক প্রেমে পরিপূর্ণ অক থরে থরে থালী সাকাইয়া। দিব্য অন্ন ভরি ভরি চলিলা যে সারি সারি কুল-ভম্ম লঙ্জা তেয়াগিয়া॥ আর এক মুনির নারী তার পতি করে ধরি वाधिला निर्द्धन-गृट्ट তারে। নিজ তমু তেয়াগিয়া यारेवादत ना भारेग्रा শ্রীকৃষ্ণ ভেটিল দেহান্তরে॥ নানা অন্ন ব্যঞ্জন रेनग्रा मूनि-পত्नीगग যেখানে বসিয়া রামকামু। নবখন-শ্যাম দেখি প্রেমে ছল ছল আঁথি সমর্শিল অন্ন সহ ওমু । নিরখিয়া খ্যাম-রূপ কি কোটি কন্দর্প-ভূপ भ**प्त-**जल कदाय नि्हिन। এ উদ্ধবদাস কয় निश्ति नशिनः नव व्यथित व्यभिग्ना-त्रम-थनिष् ॥১৯॥১२७॥॥ পাঠাত্তর

) । देहां श-त्र-मा शृथित ১१६৮ मृश्याक शर ।

२। 'बाहेबा' भ-ब-मा। ७। 'बाहेबा' भ-ब-मा।

श भारकः च। ६। 'शूर्व , देवकः शन्य-गां

৬। 'সংহ' ক, খ, চ, প-র-সা। १। 'লখিলে লখিল' হলে 'নিখিলে নিখিল' হ; 'লিখিলে লিখন' প-র-সা। ৮। 'খানি' প-র-সা।

পরিসরে'চ। ৮। 'মগন' ইত্যাদি ছলে 'নিষপন রমণীর মন'ক, ধ;'নিমগন রমণি-সিন-মন' ছ।

यज्ञ ।>

নবখন জিনি ভসু मिथन करत्राज त्वन স্বলের কান্ধে বাদ-ভুজ। চ্ড়া বান্ধাং শিখি-পুচছ বরিহা মালতী-গুচছ ভাত ভূক নয়ান অসুজ॥ অলকা তিলক ভালে কাণে মৰুর-কুগুলে পাকা বিন্ধু জিনিয়া অধর⁸। দশন মুকুভা-পাঁতি কন্থ-কণ্ঠৎ শোভে অভি মণি-রাজ হিয়া পরিসর ॥ বনমালা ভহিঁলকে সারি সারি অলি চুম্বে ক্ষীণ কটি স্থপীত বসন। নাজি-সরোবর পাশে ত্রিবলী-লতিকা ভাসে मगन त्रम्यी-मीन-मन् রামরস্তা উরু-ছাম্দে কত বিধু নখ-চান্দে चक्रग-कमल भए-उता। দাড়াঞা কদম্ব-তলে বঙ্কিম লগুড় হেলে तत्र-जत्री नग्रान-वक्षात । ত্রিভন্ত-ভলিম রলে (वर्भ नहेवत्र-व्यक्त হাসিয়া মধুর মৃত্ বোলে। এ দাস উদ্ধৰ ভৰে **ज्**लिन त्रमगीगरन क्रिश दिश्य ना हत्य ।२०॥>२०८॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৭৬৯ সংখ্যক পদ।
২। 'বাদ্ধা' শব্দ ক পৃথিতে নাই। ৩। 'ভলী'
ক, ৬, চ, প-র-সা। ৪। 'অধরে' ব,চ। ৫।
'কঠে' ব। ৬। 'লোভা' ক,চ, প-র-সা। ৭।
'হিবা পরিসর' হলে 'হিবার উপরে' ব; 'হিবা

शंभरक्ति।

यख्य-পত्नी व्यव मिया নয়ান-ইঞ্চিত পায়া নিজ গৃহে করিলা গমনে। व्यव शहिर वन मांट्या व्यानत्स्य वाशास्त्र वाशास्त्र वाशास्त्र वाशास्त्र वाशास्त्र वाशास्त्र वाशास्त्र वाशास्त्र স্থা সহ বসিলা ভোজনে॥ অগ্রন্থ শ্রীবলরাম কৃষ্ণ করি নিজ বাম टोनिएग दबछिया नव नथा। আনিয়া পলাশ পাত বাঢ়িলা ব্যঞ্জন জাত কি আনন্দ নাহি তারঃ লেখা। খাইতে খাইতে হুখে কেহণ দেই কারু মুখে বতা ভোজন রস-কেলি। খাইতে খাইতে আগে• ব্যঞ্জন যে ভাল লাগে প্রশংসি প্রশংসি ভাল বলি 🛭 কক্ষভালি দিয়া দিয়া ভুগুয়ে আনন্দ হিন্না হুংখর সাগর মাঝে ভাসে। ভোজন হইল সায় আচমন কৈলাণ ভাষ গুণ গায় এ উদ্ধৰ দাসে ॥২১॥১২৩:॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৭৭০ সংখ্যক পদ। ২। 'পাঞা' ক; 'পাইরা' চ। ৩। 'আনন্দ' থ, খ। ৪। 'আর' থ। ৫। 'কেছ' থ। ৬। 'ফ্থে' প-র-সা। ৭। 'ক্রি' প-র-সা।

তাথ বন-বিহার যথা।

ছটা।

রাখালে রাখালে মেলা খেলিতে বিনোদ খেলা

অতিশয় শ্রম সভাকার।

ননীর পুত্নী শ্রাম ববির কিরণে যাম

শ্রমে যেন মুকুজার হার।

ত্রীদাম আসিয়া বোলে বৈসহ তরুর তলে कानांचे बहेटव मार्ट्य वाका। ষম্না-পুলিনে ভাই কংসের দোহাই নাই কেছ পাত্র মির কেছ প্রবা। ৰনফুল আন যত সপত্ৰ কদম্ব শভ অশোক-পল্লব জাত্র-দাখা। শুনি শ্রীদামের কথা সকল আনিল তথা নবগুঞ্জা-গুচ্ছ শিখী-পাখাই ॥ গাঁথিয়া ফুলের মালে কদম্ব-তক্ষর তলে রাজপাট করি নিরমাণ্ড। এ উদ্ধৰ দাসে ভৰে कक्कडोलि चरन चरन व्यांचा व्यांचा वांकांग्र वंशान ।२२।১२०१॥

পঠিক্তির

>। ইহা প-র-সা পুৰির ১৭৭১ সংখ্যক পদ। ২। 'নৰ' ইত্যাদি স্থলে 'নবগুঞ্চ শিৰিপুচ্ছ পাধা' ছ। ৩। 'করি নিরমাণ' স্থলে 'করিল নির্দাণ' প-র-সা।

वाननी ।>

বিবিধ কুষ্ম দিয়া সিংহাসন নিরমিয়া
কানাই বসিলা রাজাসনে।
রচিয়া ফুলের দাম ছত্র ধরে বলরাম
গদগদ নেহারে বদমে।
আশোক-পল্লব করে স্থবল চামর করে
স্থানের করে শিথি-পুচছ।
ভারসেন গাঁথি মালে পরার কানাইর গলে
শিরে দের গুঞ্জাকল-শুচ্ছ।
ভারস্কাং পুভি বানা ঠাঞি ঠাঞি বসাইলা থানা
আজা বিনে আসিতে না পার।
জীলাবাদি দুভ হৈরা কানাইর দোহাই বিরা
চারি পালে সুরিয়া বেজারুঃ।

করবুগ বৃড়ি তবি অংশুমান করে স্তৃতি

 রাজ-আপ্তা বচন চালার।
বটু করে বেদ-ধ্বনি পড়ে আশীর্বাদ-বাঁশী
দাম বস্থদাম নাচে গায়।
ভাতি মনোহর ঠাট নিরমিরা রাজপাট
কতেক হইল রস-কেলি।
এ উদ্ধবদাস কয় সধ্য-দাস্ত-রসময়
সেবয়ে সকল সধ্য মেলি ॥২০॥১২৩৮॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুশির ১৭৭২ সংখ্যক পদ। ২। 'ডোকক্কক' খ,চ।

माबक 15

নোহন যমুনা-মাঠে অশোকের বন।
নবীন পল্লব সব অতি স্থানাভন ॥
তার মধ্যে ছাই ভাই কৃষ্ণ বলরাম।
সখা সজে বিহররে অতি অনুপাম ॥
নবীন-জলদ-শ্যাম-তনু মনোহর।
ধাতু-রাগ-নবং-গুঞ্জা-শৃন্ধ-বেপুধর ॥
কদন্থ-মঞ্জরী কাণে শিধি-চক্ত চুড়ে।
শীতবাস পরিধান বনমালা উরে ॥
শীদামের অংসে বাম ছন্ত-পল্ল দিয়া।
দক্ষিণ হন্তেত এক পল্ল মুরাইরা॥
দাঁড়াইয়া তক্ত-তলে সজে বলরাম।
নব মেবে চাক্ষে কিয়ে ভেল এক ঠাম॥
মাহীর-বালক সব বেড়ি চারি পাল।
মনের ছরিবে দেখে নবচক্ত দাস॥

পাঠান্তর

. 158175031

>। देश श-ब-मा श्रवित्र ১१४० मश्याक शर । २। विभिन्नवा वर्षम् (वास्वयक् श्रव्यक्ता) १ (दवा ধর' ক। ৪। 'অংক' ব, প:র-সা। ৫। 'রাম' ক, চ; 'ডেহ' প-র-সা। ৬। 'বাম হল্ক' প-র-সা। ৭। 'মেম চাক্ষ' প-র-সা।

विद्यात ।>

পীত-ধটা হেম-কাঁঠি ছান্দন ভূরি মাথে।
গাবী-দোহনং-ভাগু শোভে বাম হাতে ॥
শিলা বেণু মুরলী দক্ষিণ কক্ষ-মূলে।
ধবলি বলিয়া ধায় কালিন্দীর কুলে ॥
লক্ষিত শুঞ্জার মালা গোরোচনা ভালে।
গোধূলি-ধূসর অল কাণে ফুল-ভালে ॥
ছান্দনের ভূরি আর রালা লড়ি হাতেও।
নবচন্দ্র দাস রহে চাহি এক ভিতে॥
॥২৫।১২৪০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুর্বির ১৭৭৪ সংখ্যক পদ।
 ২। 'লোহনের' প-র-সা। ৩। 'হান্দনের' ইত্যাদি
ভণিতার কলি কেবল প-র-সা পুর্বিতে দৃষ্ট হর।

श्रीशंचात्र ।>

निखग्र (मनि পাল জড় করি नामादेल यमूनात्र करल। करत्र जनभारन चानटम टगांगटन পিও পিও সভেং বোলে॥ জলে পেট ভরি উচ্চ পুচছ করি উপৰে উঠিল ধেমু। হেলিয়া হেলিয়া° রাখাল বেলিয়া चन बान्न भिका त्वर् ধেসু খাইরা খাইয়া° মৰ তুণ পাইয়া खनदत्र यमूना-कीदत्र। ক্ৰি গোচারণ म्यामन गटक किर्व ।

বেলি অবসান দেখি বলরাম

ধেমুগণ লৈয়া ফ্থে।

কৃষ্ণ মাঝে করি স্থাগণ খেরি

চলিলা গোকুল মূখে॥

গোঠে প্রবেশিয়া গোগণ রাখিয়া

পালেতে মিলিলা মায়।
পুত্র কোলে নিলা পরাণ পাইলা

দাস গোবর্জন গায় ॥২৬॥১২৪১॥

ইতি ভৃতীয়-শাখায়াং ঘাবিংশতিপল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৭ঃ সংখ্যক পদ।

২। 'সদা' প-র-সা। ৩। 'ছলিরা ছলিরা' ক, খ,
চ; 'ভূলিরা ভূলিরা' প-র-সা। ৪। 'থাইরা
ধাইরা' হলে 'ধাওরাইরা' প-র-সা। ৫। 'পোপাল'
প-র-সা।

অথ গোবর্দ্ধন-যাত্রা। তহুচিত-শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

श्रीनांकात्र ।>

দেখ দেখ অপরূপ গৌরাজ-বিলাস।
পুন গিরি-ধারণ পুরব লীলা-ক্রেম
নববীপে করিলা প্রকাশ । গ্রন্থ ভক্তি গোবর্জন পূজা কর জগ-জন
এই বিধি দিলা কলি মাঝে।
শ্রেবণালি নব অল করাতরুময় শৃকং
পঞ্চ-রস ফল ভাবে সাজে ॥
পুলক-অঙ্কুর শোভা অশ্রু-জল মনোলোভা
মন্দ্র বায়ু বেপপু স্থুন্দর ।
নিজেক্রির-উপচারে সেব সেই গিরিবরে
ব্রেম্-মণি পাবে ইক্ট-বর ॥

দেখিয়া লোকের গতি কলিযুগ-স্থুরপতি কোপে তমু কম্পিত হইল। কুমতি-ইন্দ্রাণী সাথে **অধরম-**ঐরাবতে সসৈয়েতে পাজিয়া আইল ॥ কাম-মেঘ বরিষণে ক্রোধ-বন্ত নিক্ষেপণে লোকের হইল বড়° ভর। লোভ-মোহ-শিলাঘাতে মাৎসর্যাদি-খর-বাতে ধৈষ্য ধর্ম উড়ে নিরম্ভর॥ শ্রীগোরাক দয়ানয় জানিয়া জীবের ভয় উপায় চিखिला मटन मटन। ভক্ত-ভাব-সারোদ্ধার নিজে করি অস্কার ভক্তি-গিরি করিলা ধারণে॥ ভাহার আশ্রয়ে লোক পাসরিল ছঃখ শোক कलि-छग्न थशिल जकला। ভবে কলি-দেবরাজ পাঞা পরাভব-লাজ স্থাতি করে চরণ-কমলে 🛚 অপরাধ ক্ষমাইয়া⁸ কৰে কিছু দীন হৈয়া যত জীব প্রভুর আশ্রয়। বেবা তব গুণ গায় তাহে মোর নাহি দায় এই সভা করিল নিশ্চয়। প্রভু তারে দয়া কৈল ধতা কলি নাম থুইল व्यक्षां निरं ८ घाष्ट्रम अश्मात । চৈডক্মদাসেডে বলে গোবৰ্দ্ধন-লীলা-ছলে यूर्ण यूर्ण कीरवत छक्कांत ॥>॥>२8२॥

পঠিবির

३। देश भ-त-ना श्वित २११० नश्यक शहा 'श्रीनाकात' च्या 'यानमा' भ-त-ना। २। 'यम' क, य, ठ, भ-त-ना। ७। 'तहा' य, भ-त-ना। ३। 'यमहोता' क, य, ठ।

তথা রাগ ৷১

গাও রে গাও রে হুখে কুফের চরিত। গিরি গোবর্জন-যাত্রা মনোরম শ্রবণ-মঙ্গল গীত। প্রণ। এক দিন ত্রজে ইন্দ্ৰ-পূজা কাজে সাজে গোপ গোপী যত। জানিয়া কারণ नटमत्र नमन ক্ৰেন আপন মত। শুন ব্রজ-রাজ গোপের সমাক ना शृंक प्राप्तत त्राका। মোর লয় মনে গিরি গোবর্দ্ধনে সাবধানে কর পূজা ৷ এহি দে উচিত মোর অভিমত পাইবে বাঞ্ছিত ফল। নানা উপহারে বস্ত্র অলঙ্কারে সহরে সাজিয়া চল। विध्य एम मान হইবে কল্যাণ মা ভাবিহ আন চীতে?। कर्ड कुरुषांत्र সভার উল্লাস শ্রীবাস-বচন-রীতে ॥২॥১২৪৩॥ পাঠান্তর)। रेहा भन्द्र-मा भूषित्र ১१११ मश्याक भन्।

क्यां बांच 15

.२। 'हिएक' क, व, भ-ब-मा।

কি আনন্দ আজু বৃন্দাবনে।
গিরি-গোবর্জন-পূজা না বার কহনেই এই।
দল্দ আদি গোপ গোপী একতা হইরা।
গিরি-গোবর্জন পূকে নিকটে বাইরা।
দিকীন প্রদান আনি ধরিলা সকলে।
ক্ষ-ত্ব পার নানা খাত কোলাবলে।

বেশই সময়ে কৃষ্ণ দেব-মারা মতে।
আরোহণ এক রূপে করিলা পর্বতে।
বেখি গোপ গোপীগণে প্রণাম করিলা।
সভে কহে গোবর্জন মূর্ত্তিমন্ত হৈগা॥
প্রণাম করিয়া কহে নন্দের নন্দন।
বেখ দেখ কি ভাগ্য যভেক গোপগণ॥
যত প্রজ্ঞ-বাসী সভে পাইয়া আহলাদ।
পর্বতের স্থানে মাগি নিল আশীর্বাদ॥
নানা দ্রখ্য অলক্ষারে সাজায়া গোধনে।
বেদের বিহিত দান দিলেন প্রাক্ষণে॥
কৃষ্ণের সহিত ভবে গেলা গোবর্জনে।
ইন্দ্র-মথ-ভক্ত-কথা কৃষ্ণদাস ভণে॥

11885611011

পঠিক্তির

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৭৭৮ সংথ্যক পর। ২। 'গিরি-গোবর্জন' ইত্যাদি পংক্তিটি কেবল প-র-সা পৃথিতেই দৃষ্ট হর। অক্তান্ত পৃথিতে 'কি জানন্দ' ইত্যাদি পংক্তির পরেই 'ঞ'।চহু আছে।

ख्यां बान । >

যত গোপগণ পুজে গোবৰ্দ্ধন ना देकल हैटन्द्रत श्रृजा। পাই অপমান কোপে কম্পমানং मिना (मरवद्र द्रांका ॥ कुष्ठ-निमा करत মহা অহম্বারে অজ্ঞানে মোহিত হৈয়। ক্ৰে গোপ-পুরী মহাবৃষ্টি করি আজি ডুবাইব বাঞা॥ ডাকি মেঘগণে যতেক প্ৰনে আজা দিলা হুর-পতি। শিলা-বৃত্তি ক্রি ভাল ভ্ৰম-পুরী বাহ বাই শীত্র-গভি।

আপনে তখনে চড়িয়া বারণে वकु रुख (मवन्नाक। সঙ্গে সেনাগণ ছাইয়া গগৰ আইল গোকুল মাঝ॥ **ठ**ञ्जर्षिश स्मर थांत्र वांत्र् - त्वर्ग मित्न देश्न व्यक्षकात्र। খর বরিষণে বজের কেপণে ভান্দিল ঘর ছুয়ার 🛭 প্রলয়ের হেন বৃষ্টি-ধারা ঘন বঞ্জনা চিকুর পড়ে। হাহাকার করি পথাপথ ছাড়ি खनवांनो नव नटफ्⁹ ॥ পড়িয়া সকটে कृरकात्र निक्रि আইলা গোকুল-বাসী। মূপে মূথে কভ ধেমুগণ যত দাঁড়াইল নিকটে আসি 1 কুক্ত মহামতি গোকুলের পতি কর পরিত্রাণ বোলে। চৈতভোৱ দাস করি এই আশ এবার রাখ গোকুলে 1811>২৪৫।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপৃথির ১৭৭৯ সংখ্যক পদ।
 ২। 'কম্পবান' প-র-সা। ৩। 'বাহনে' ক, ४, 'বিমানে' প-র-সা। ৪। 'বাউ' ४, 'বছ' প-র-সা।
 ৫। 'থেপনে' ४। ७। 'চিকুর' প-র-সা। १। 'লড়ে' প-র-সা। ৮। 'য়্থে য়্থে ফড' য়লে 'য়্থ য়ৢৠ য়ৢড়' প-র-সা। ৯। 'টেডভয়লা' ফ।

क्या जान ।>

নন্দ আদি গোপ গোপী বইলা বিকল। দেখিয়া জানিলা কৃষ্ণ ইন্তে^২ করে বল ॥

এতেক ভাবিরা কৃষ্ণ নন্দের নন্দন। **এक रुख जुनिया धतिना (गावर्षन ।** कम्मुटकत श्रीत्र शिति धित्रहा टकोकूटक । সভারে ডাকেন আর জননী জনকে। আইস আইস সভে শিশু বৎসগণ লৈয়া। এই গৰ্বে থাক আসি নিৰ্ভয় **হ**ইহা^৩ ॥ (श्रीभगन वर्ण कुक एन ८इ वहन। হাত হৈতে তোমার° যদি পড়ে গোৰ্গ্ধন ॥ সকল গোকুল-পুরী বাবে রসাভলে। কিসে হৈতে° রক্ষা ভার° পাইবা সকলে। कांग्मिया यर्गामा रमवी कटक र्गालगरन। একাকী পর্বত কুফ ধরিব² কেমনে ॥ কোথা রেণ্ড কৃষ্ণের প্রিয় শ্রীদান স্থদান। সভে মেলি গোবর্জন ধর বলরাম ॥ চৈতগ্ৰদাসেতে কৰে শুন যশোমতি। গোকুল রাখিতে ভুয়া সহায় শ্রীপতি ৷

16175861

পঠিবির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৭৮০ সংখ্যক পদ।

২। হৈক্রে ক। ৩। 'এই' ইত্যাদি পংক্তি হলে
'আনার নিকটে সভে থাকর আসিরা' প-র-সা।

৪। 'ভুরা' ব। ৫। 'হবে' প-র-সা। ৬। 'ভবে'
প-র-সা। ৭। 'পাইবে' ক, থ, চ, প-র-সা।
৮। 'রাণী' প-র-সা। ৯'। 'ধরিবে' ক, থ, প-র-সা।
১০। 'কোধারে' হলে 'কোধার' প-র-সা।

তথা দাপ 15

বেন কালে স্থা মেলেং রাই-কনক-গিরি
আচ্ছিতে দরশন দিলা।

দাড়াএল মাণের তরে ধরি সহচরী-করে

মুখ বিশি শশী বোলকলা

রাই নিব ফুমেরু-ফুঠান। স্মিত-স্বরধুনী-ধারে त्राम्य व्यवना वाद्य হেরি হেরি তৃষিত° নয়ান• ॥ স্থির নাহি বান্ধে চিত্তে নৰ অনুৱাগ-বাতে भागविना निक मविवात । কাঁপে ততু পরহরে পর্বত ডোলরে করে भाग्नात्म भागिम भाग्नाम **॥** লগুড় লইয়া করে কেহো কেছো গিরি খরে উদার ত্রজের গোপগণ। ननिज (मवी (ये इंमि मा शहेलां १ जाटम जानि वाहरवा कविना १ अनुर्मन । ভাব সম্বরিয়া হরি व्राचिन (गांकून-পूत्री रेट्यद्य कतिया भन्नाकत्र। হৈতক্মদাদের বাণী जिञ्चरम अग्र-ध्वनि গোবর্জন-লীলা রসময় ১৩ ৫৬॥১২৪৭॥

পাঠান্তর

>। देश श-व-मा श्रीवंत्र >१৮> मश्युक श्री १। '(मिनि' प; 'मिनि' श-व-मा। ०। 'वृष' देणांकि वरन 'वृष त्व किनिया मिनिकना' श-व-मा। ०। 'क्रीवं क, ठ; 'क्रुकांत्म' थ। ८। 'फ्रिनि' क। ७। 'नियान' थ। १। 'केंग्रिल छक्च' वरन 'केंग्रिलम' थ। ७। 'त्वांत्म' थ। १। 'केंग्रिल छक्च' वरन 'केंग्रिलम' थ। ७। 'त्वांत्म' क, व, श-व-मा। २। 'त्वांत्म' क, ठ; 'छांकांदेवा' व। >>। 'तांद्रांत्म' क; 'वांद्रांत्वा' क, ठ; 'छांकांद्रांवा' व। >>। 'तांद्रांत्वा' क; 'वांद्रांत्वा' ल; 'वांद्रांत्वा' ल; 'वांद्रांत्वा' क; 'वांद्रांत्वा' लन्न-मा। >२। 'क्रिया' क।

তথা নাগ।>
জর জর অঞ্চেল-নন্দম।
অজের জীবন প্রোণ-ধন ।
শরিবার সহ অজ-বাসী।
গর্জ বৈতে উঠিলা হর্মী।

(महबादन नीमात्र विदति। অপিলেন গোবৰ্জন গিরি 🛭 नम जापि यड रशाभगरन । जानीकील करत कांग्रमत्न । (करहा (करहा करत्र चालियन । স্থাৰ্গ স্থাতি করে দেবগণ । য়ােলা বাহিনী হর্ষ পাঞা। हैं।प-मूच इच्हारा हाशिया ॥ আনন্দেতে নাচে বিভাধরী। পুষ্প বর্ষে অপ্সরাঃ কিন্নরী। দেববাজ পাঞা পরাভব। कत्र युष्डि॰ करत नाना खर । निक जाभेत्रांथ (क्रमाहेग्रा। (गला जाभनात गण देलवा ॥ তৈত্তস্থানেতে ইহা গায়। ৰূপে ৰূগে ভক্তের সহায় ॥৭॥১২৪৮॥

পাঠান্তর

১। देवा श-द्र-मा श्रुवित ১१৮२ मश्याक शरा ২। 'স্ব' প্-র-সা। ৩। 'আনস্থেত নাচে' ছলে 'মানন্দে নাচেন' হ। ৪। 'অপছরি' গ-র-গা। १। 'त्वांदफ' ह।

भूनम्ह यथा।

कृत्कत्र जारमण शांका हे सन्य विकासिका नन जापि वड भागगा। नकरल এकत रेस्श्रो নানা উপহার লৈয়া जारेटनन यथा टगांवर्कन । রাজে অন ব্যঞ্জন महत्व महत्व बन এक श्रेकि रेनद्रा करत तानि। बाठी-बार्ल बदन बन पश्-कृथ-गरत्रावत हतिय मानाव जन-वामी।

শ্রীকুষ্ণের অন্তিমত পাক কৈল বস্তু মত সুপান্ত° পায়স শিখরিণী। ব্যঞ্চনের কত কুপ পৰ্বত সমান স্তুপ অন্নকোটি করিলা সাজনি # নানা বাছ্য বাজে কত নৰ্মকী নাচৱে খড সহস্র সহস্র লোকে গায়। যত গোপ গোপীগণ অলক্ষত স্ব জন আনন্দ অবধি নাহি পায়। (समू वर्म मोकारेश कड वर्ग-मूस। रेमब्रा वाकार्गात (पर नमत्रोग्र। মহা মহোৎসব রোল কে কার শুনয়ে বোল এ মাধ্ব দেখিয়া বেড়ায় ৯৮।১২৪১।

পাঠান্তর

১। हेहा अन्त्र-मा भूषित्र ১৭৮० मश्याक शव। ২। 'না.ধার' ক। ৩। 'হুপাঞ' ক, ধ, ব, চ; 'গুণার' প-র-সা। বোধ হয় 'হুণার' গুদ্ধ পাঠ हहेरव । ८। 'अबरवांनि' श-ब-मा।

श्रीवांत्र ।>

নানা মত অন্নকোটিং করিয়া সাজন। त्गावक्रत्न विश्वभग टेक्स ममर्**र्ग** ॥ मृर्खिमस शावक्षन वाश्रत वाहेगा। অন ব্যঞ্জন সব ভোজন করিলা । প্রসন্ন হইয়া বর দিলা গোপগণে। मिक खब्ब-वांगी गण मिक्यम मन्त्र । कुक्ष करह এই भिन कत्र नमस्त्रीत । मार्गि वत लाह मए ए य हेन्स् वार्ध म वत्र मिश्रा रगावर्षन व्यवकान रेवना॰। প্রণাম করিয়া সভে বিশ্বয় হইলা ॥ গোবর্ছন,-প্রসাদ সভে করিলা ভক্ষণ। আনন্দিত ত্ৰজ-বাসী প্ৰসন্ন হৈল মন।

1>1>24+1

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির 3°৭৮৪ সংখ্যক পদ। ২। 'অরবোটা' প-র-সা। ৩। 'বৈলা' অ, চ। ৪। 'গোবর্জনের' প-র-সা।

शांवनी ।>

श्रुका देवना रंगावर्कन যত ত্ৰজ-বাসীগণ ना कतिल हैट्यत वर्कनः করিল শৈলের পূজা শুনি ইন্দ্ৰ মহারাকা ক্রোধ করি ডাকে॰ মেঘগণ॥ मरात्कार्य रेज्यस्य প্রলয়-কালের মেঘ ठांत्रि करन जिल्ला कानिन। অভি কোপঃ-মন করি নন্দের গোকুল-পুরী · **जुवारेए** जारत बाजा मिन ॥ ভবে দেব হুরপতি আনি ঐরাবত হাতী वांभणि कतिला वाद्राह्ण। গোধন নাশিতে মেঘ বায় অতি বায়-বেগ উপনীত নন্দের ভবনং 🛚 উড়াইল বুক্ষ বর প্রনে করিয়া কড় मूबन-धात्रांत्र शर् कन। ঝনকি তড়িত পাত ঘন হয় বজাঘাত करन पूर्व देशन छक्त चन । कृटकात्र जाएमम शाहा। दगांधनां मि नव देनहा त्भावकत्नत्र महेना भन्न । কুম্ব-চন্ত্ৰ অভি ত্ৰন্তি প্ৰাৱিয়া বাম হস্ত **प्रतिरमन शिवि ८गावर्कन ॥** তার নধ্যে গোপগণ ८४कू वदम धन जन সশক্তিত হইয়া রহিলা। बुष्टि कविश् भवरीन रैखरपर माउ॰ पिन श्रीखर जाशनि मानिना ॥३०३**३**३०३३०

->। देश मन्त्रजा श्रुवित ३१४८ अरवीय श्रद

২। 'অশ্চন' প-র-সা। ৩। 'ফোখ করি ছাকে'
ছলে 'ভাকে খন খন' প-র-সা। ৪। 'ফোখ' ক।
৫। 'ভূবন' খ, চ। ৬। 'জড়' প-র-সা। ॥
'ঝড়কি' প-র-সা। ৮। 'সপ্ত' প-র-সা। ৯। 'করে' প-র-সা। ৮। 'সপ্ত' প-র-সা। ৯। 'করে' প-র-সা। ১০। অভঃপর ধ পুথিতে 'ইভ্যাদি শ্রীক্রক্ষমকলে।' ও ধ পুথিতে 'ইভ্যাদি।' পাঠ ছুই হয়।

তথা রাপ 15

পর্বত-গভরে থাকি জ্ঞ-বাসীগণ।
কৃষ্ণ রাখিলেন প্রাণ এই সভার মন।
পরাভব মানি ইন্দ্র গেলা নিজ-ছান।
ধেমু বৎস লইয়া উঠে যত গোপগণ।
নন্দ যশোমতী অতি হর্ষিত হৈয়া।
বহু দান কৈল কুষ্ণের কল্যাণ লাগিয়া।

=>>।>২৫২৪

ইভি তৃতীর-শাধারাং ত্রয়োবিংশভিপল্লবঃ। গাঠান্তর

)। देहा भ-त-ना भूषित ১१৮७ मरश्रक भाषा

অথ শরৎকালীয়-পূর্ণিমায়াং মহারাসঃ। তদ্হচিত-**শ্রি**গোর**চন্দ্রঃ**। ছু**ট**।

বৃদ্ধাবন-লীলা পোৱার মনেতে পজিল।

যমুনার ভাব স্থরধুনীরে করিল।

স্থানর দেখি বৃদ্ধাবনের ম্যান্ত।

সহচরগণ গোপীগণ অসুমানং ।

গোল করতাল গোরা স্থানিক করিলা।

ভার, নাকে নাকে গোরা স্থান করিলা।

যাস্থানের নামে আরে করতে বিভাগে করিলা।

যাস্থানের নামে আরে করতে বিভাগে করিলা।

যাস্থানের নামে আরে করতে বিভাগে করিলা।

পাঠান্তর ১। 'সমানে' ব, চ। ২। 'অভুমানে' ব, চ।

TCAIR I নাচত গোর রাস-রস অন্তর গতি অতি ললিত ত্রিভঙ্গী। वत्रक-ममाक वमिश्रिश देवहन তৈছন অভিনয়-রঙ্গী। (तथ (तथ नवदीश माव। বাওত গাওত মধুর ভকত শত মাঝহি বর-বিজরাজ ৷ধ্রা ভা ভা জিমি জিমি মাদলং হুবাঞ্চত ঝুতু ঝুতু তুপুর রসাল। রবাব বীণাণ আর সর-মগুল হুমিলিত করণ করতাল। এ হেন আনন্দ না হেরিয়ে ত্রিভুবনে ় নিরুপম প্রেম-বিলাস। ও হুখ-সিক্ষু পরশ কিয়ে পাওব কৰ রাধামোহন দাস ||২||১২৫৪॥

পাঠান্তর

১। 'नमांब' क, प। ২। 'মৃদক' क, চ। ৩। 'बी॰' क, च, চ। ৪। 'করু' ব।

অভিদার।

কাৰ্য। । ১
শরদ-চন্দ পৰন মন্দ
বিপিনে ভরল কুসুম-গন্ধ
ফুল মলিকা মালতি যুথি
মন্ত-মধুকর-ভোরণি ।
হেরভ রাভি ঐছন ভাভি
ভাম মোহন মদনে মাভি
মুরলি-গান পঞ্চম ভান
কুলব্ভি-চিড চোরণি ।

শুনত গোপি প্রেম• রোপি মনহি মনহি আপন সোপ তাঁহি চলত যাঁহি বোলত মুরলিক কল শোলনি ।। বিসরি১১ গেহ নিজ্ঞ ১২ দেছ এক নয়নে কাজর-রেছ বাহে রঞ্জিত কঙ্কণ একু১৬ একু কুগুল ডোলনি । भिथिल-इन्म निविक वक्रभ বেগে ধাওত যুবভিবুন্দ খসত বসন রসন চোলি>• গলিভ বেণি লোলনিং। তত্হিঁ ১৮ বেলি স্থিনি মেলি কেন্ত কান্তক পথ না হেরি এছে শলল গোকুল-চন্দ त्ग्रिक्ममाम् गाञ्जिक् ॥ ०॥ ३ २ ००॥

পাঠান্তর

১। ইहा প-র-সা পুলির ১৫০০ ও প-র পুলির

৩৮।২ সংখ্যক পদ। 'কানড়া' স্থলে 'টোড়ি রাগ'

প-র-সা; 'কেদার' প-র। ২। 'বুডি' ক, চ;

'জোডি' थ; 'জুথি' घ, প-র-সা। ৩। 'জোরণী'

ক, থ, घ, চ, প-র। ৪। 'হের' थ; 'হেরই' প-র।

৫। 'চোরণী' ক, থ, ঘ, চ, প-র। ৬। 'প্রেমহি'

থ। ৭। 'মনহি মনহি' ঘ। ৮। 'আপনা' ক।

১। 'মুরলিক কল' স্থলে 'মুরলি কনক' প-র-সা।

১০। 'কোনী' ক, থ, ঘ, চ, প-র। ১১। 'বিছুরি'

ক, থ, ঘ, চ। ১২। 'নিজহি' প-র-সা, প-র।

১৩। 'কঙ্কণ একু' স্থলে 'মজির এক' প-র। ১৪।
'জোননী' ক, থ, ঘ, চ; 'দোলনি' প-র-সা, প-র।

১৪। 'নিবি নিবছা' প-র-সা, প-র। ১৬। 'চৌনি'

প-র-সা। ১৭। 'লোলনী' ক, থ, ঘ, চ, প-র;
'ললনি' প-র-সা। ১৮। 'ভ্রুহি' প-র। ১৯।

'ঐছনে' ক, ধ, प, চ, প-র-সা। २०। 'বোলনী' ক, ধ, प, চ; 'গায়নি' প-র-সা।

मलोत्र १३

বিপিনে মিলল গোপ-নারি
হেরি হসভং মুরলিধারি
নির্মিধ বয়ন পুছত বাত
প্রেম-সিন্ধু গাহনি ।
পুছত সবকং গমন-খেম
কহত কীয়ে করব প্রেম
ক্রেজক সবহু কুশল বাত
কাহে কুটিল চাহনি ॥
হেরি ঐছন কর্মনি গোর
তেজি তরুণি পতিক কোর
কৈছে পাওলি কর্মনি ওর কি
পোর নহত কাহিনি ।
গলিত-ললিত-ক্বরি-বন্ধ ।
কালে ধাওত যুবতিবৃদ্দ
মন্দিরে কিয়ে পড়ল দক্দ ।

বেঢ়ল বিপথ-বাহিনি> ॥
কীয়ে শরদ> চান্দনি রাতি
নিকুঞ্জে ভরল কুস্থম-পাঁতি
হেরত শ্যাম ভ্রমর>৮-ভাতি

বুৰি আওলি সাহনি । এতই কহত ২ না কহ২ কোই রাধত কাহে মনহিং গোই ইহহি আন নহই কোইং

रगाविन्ममात्र गांडनि^{२०} ॥८१५२०७॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ র-সাপুথির ১৫০১ ও প-র পুথির ওচাত সংখ্যক পদ। 'মলার' ফ্লে 'তথা রাগ' প-র-সা, প-র। ২। 'হাসত' য, প-র। ৩।

'বিয়ান' ক, চ। ৪। 'পাহনী' ক, ধ, ঘ, চ; 'গাওনী' প-র। १। 'मकन' भ-द्र-मा। ७। 'ርጥዛ' ኞ | 9 | 'कहड कीख' ऋल 'कहड কিৰে' क; 'কছ অব কিৰে' প-র। 'नकन' भ-त्र। अ। 'ठाहनो' क, थ, ब, ह, প-র। ১০। 'হেরি এছন' স্থলে 'ছেরত এছে' প-র-সা; 'ছেরত ঐছন' প-র। ১১। 'পাওল' च, ह। ১२। 'टेक्ट्इ' हेन्डानि ऋत्न 'काट्ड आवनि কানন ওর' প-র-সা, প-র। ১০। 'কাহিনী' क, খ, ঘ, চ, প-র। 'থোর' ইত্যাদি স্থলে 'কছ না (थांत्र काश्नि)' श-त । '३८। 'तृत्त्र' क, च, घ, घ, ১৫। 'ৰন্দ' ক, খ, পার-সা। ১৬। 'বাহিনী' ক, খ; 'বাহনি' চ; 'বাহনী' ধ। ১৭। 'কীরে শরদ' স্থলে 'কিলে শারদ' ক। ১৮। 'ভর্ম' প-র-সা; 'শ্রম' প-র। ১৯। 'সাহনী' কি, খ, ৰ, চ, প-র; 'শোভনী' পাঠান্তর থ: 'সাছিনি' প-র-সা। ২০। 'এত হঁক হত' স্থলে 'এত হি কহি' প-র-সা, প-র। ২১। 'না কহ' হলে 'নাহক' চ। ২২। 'মোহে' প-র। ২০। 'ইহহি' ইভ্যাদি यान 'हेरहे जान न हारे कारे' व, ह; 'हेरहि আন কোহি না হোই' প-র-সাঃ 'শুনি আনন বিরদ হোই' প-র। ২৪। 'গায়নী' ক, ব, চ; 'গাওনী' 위-로 I

টাকা

৩—৪। "নিরখি" ইত্যাদি। (শ্রীক্রফ) পোণা-সনাদিগের বদন নিরীকণ করিরা বার্তা জিজাদা করিতেছেন,—(যেন) প্রেম-দিল্লুতে অবগাহন।

শেন শপ্তত ইত্যাদি। (প্রীক্ষণ) সকলের গমন কুশল বিজ্ঞাগা করিতেছেন এবং বলিতেছেন, (ডোমাদিগের) কি প্রীতি-হচক কার্য্য করিব ? বজের সকলের মকল-বার্ত্তা বটে ত ?—কেন কুটিল দৃষ্টিপাত (করিতেছ ?) ভুলনা কক্ষন,—
'যাগতং বো মহাজাগাঃ প্রিরং কিং ক্রবাণি বঃ। বজ্ঞানাময়ং কচিদ্ ক্রতাগমনকারণ্যু।'

---- विनडांशवड, ১०१२॥>१।

৯—১২। হিছরি" ইত্যাদি। এক্সপ খোর (আছকার-বুক্ত) রক্ষনী দেখিয়া, ঘূবতী (তোমরা) খামীর ক্রোড় পরিত্যাগ করিয়া কির্মণে কানন-প্রাম্ভে উপস্থিত হইলা १—(ইহা) অল কথা নহে।

১৩—১৬। "গলিড" ইত্যাদি। স্থন্দর কবরীবন্ধন অলিত হইরাছে—এরপ ব্বতি-বৃদ্ধ (তোমরা)
কি জন্ত (বনে) ধাবিত হইতেছ; গৃহে কি কল্
উপন্থিত হইরাছে? বিপথ-গামিনী অর্থাৎ কুল্টা
ত্রীগণ কি (তোমাদিগকে) বেষ্টিত করিরাছে?
(কুল্টাদিগের সাহচর্য্য কুল্বতীগণের গৃহ-ত্যাগের
বলবৎ কারণ বটে।)

১৭—২০। "কীরে" ইত্যাদি। কিংবা (আঞ্জ)
শরৎকালীর কোৎসাময়ী রঞ্জনী; কুস্থম-সমূহে কানন
পরিপূর্ণ করিয়াছে; শুমান্স (প্রিরুক্ষকে) ভ্রমর(প্রেরুর) ক্সার দেখিয়া স্থাধীনা (তোমরা) বোধ
হর, (এথার) আসিরাছ! ('হেরত' ভাবে
সপ্তমী)।

২১—২৪। "এতছ" ইত্যাদি। (প্রীকৃষ্ণ) ইহা কহিলে, কেহ (কিছু) কহিলেন না; (তথন প্রীকৃষ্ণ বলিলেন) কেন (মনের কথা) মনে গোপন করিরা রাখিতেছ ? এখানে অক্ত কেহই নাই!— গোবিন্দদাসের এই গান।

वानना ।>

প্রছন বচন কহল যব কান।
ব্রজ-রমণীগণ সজল-নয়ান ॥
টুটলং সবছাঁ মনোরণ-করণি।
অবনত-আননে নথে লিপু ধরণি॥
আকুল অন্তর গদগদ কহই।
অকরুণ-বচন-বিশিখ নাহি সহই॥
শুন শুন কুকপট শুগার-চন্দ।
কৈছে কহসিং ভুহাঁ ইহ অনুবর্ষণ॥
ভাঙ্গলি কুল-শিলং মুরলিক সানে।
কিছেরিগণ জন্মু কেশ ধরি আনে॥

অব কহ কপটে ধরমযুত্ত বোল।
ধার্ম্মিক হরের কুমারি-নিচোল।
ভোহে সোঁপিত জিউদ তুরা রস পাব।
তুরা পদ ছোড়ি অব কো কাই। যাব।
এতত্ত কহল অজ-যৌবত মেল।
শুনি নন্দ-নন্দন হর্মিত জেল।
করিণ পরসাদ তহি করুরে বিলাস।
আনন্দে নির্ধয়ে গোবিন্দদাস॥१॥১২৫৭॥

পাঠান্তর

> ইহা প-র-সা পুথির ১৫ • ৪ সংখ্যক পদ।

২ । 'টুটল' ক ; 'ছুটল' প-র-সা। ৩ । 'কহন্ত'
প-র-সা। ৪ । অভঃপর প-র-সা পুথিতে নিম্ন-লিখিত কলি ঘারা এই পদটি শেষ করা হইরাছে।

হথা,—'নয়নে গলয়ে জল বুক বারা পড়ে।

কালরে মজিল কুচকুন্থুম পাধালে ॥'
প-র-সা পুথিতে অতঃপর 'বধা রাগ। পরমধার্শ্রিক
হরা ধরম নিধাও হে। জ্ব ॥' পংজি বারা একটি
নৃতন পদ আরম্ভ করা হইরাছে। ৫। 'কুল্মীল'
ক, ধ। ৬। 'মুরলিক সানে' হলে 'মুরলীর পানে'
প-র-সা। ৭। 'কপটে ধরমবুত' হুলে 'ধরম
কপটবুত' প-র-সা। ৮। 'জ্বীউ' ক, ধ, প-র-সা।
৯। 'কহত'ক, ধ। ১০। 'কবি'ক।

মহারাদঃ।

কামে। । ১
কাঞ্চন মণিগণে ও জমু নিরমাওল
রমণী-মওল সাজ।
মাঝহি মাঝ মহামরকত-মণি
শুগামর নটবররাজ।
ধনি ধনি অপরুপ রাস-বিহার।
শীর বিজুরি সঞ্জে সঞ্জুক জলধর
রস বরিধারে জনিবার। গ্রা

কত কত চান্দ তিমির পর বিলসই
তিমিরক্ত কত কত চান্দে ।
কনক-লতায়ে ভমালত দ কত কত
হত হৈ ত তমু তমু বান্ধে ॥
কত কত পত্নমিনি পঞ্চম গাওত দ মধুকর ধরু শ্রুতি-ভাব।
মধুকর দেলি কত পত্নমিনি গাওত
মুগ্ধল গোবিন্দ্রদাস ॥৬॥১২৫৮॥
পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১৫১৫ ও প-র পুথির ৩৮। সংখ্যক পদ। 'কামোদ' হুলে 'ধাননী' প-র-সা। ২। 'মণিগণ' ক, প-র-সা। ৩। 'সম' ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'ধনি ধনি' প-র-সা পুথিতে নাই। তৎ ছুলে 'রুল্লাবনে' প-র। ৫। 'চঞ্চল' ক, প-র-সা। ৬। 'ভিমিরহি' ক। ৭। 'চাল্ল' প-র। ৮। 'ভমালহ' খ। ৯। 'বাদ্ধ' প-র। ১। 'পঞ্চম গাওভ' হুলে 'বারভ গারভ' প-র-সা। ১১। 'কম্লানি' প-র।

অত্যন্তরে অন্তর্কানং যথা।

ক্ষোর।>
রাস-বিহারে মগন শ্যাম নটবর
রসবতি রাধা বামে।
মগুলিং ছোড়ি রাই-কর ধরি হরি
চললি আন বন°-ধামে ॥
বব হরি অলখিত ভেল।
সবহঁ কলাবতি আকুল ভেল অতি
হেরইতে বন মাহা গেল। জ্রা॥
স্থিপণ মেলি সবহঁ বন চুঁড়ইণ
পূহ্ইণ তক্ষণণ পাল।
কাই। মন্মু প্রাণ-নাথ ভেল জলখিতা

ना दमित्रा जियम निराम ।

কৰ কৰ কুস্থম-পুঞ্জ তুক্ত ফুল্লিভ শ্রাম-ভ্রমর কার্হা পাই। কোন উপায়েশ নাৰ মঝু মীলবংশ উদ্ধবদাস তাই। যাই ॥৭॥১২৫৯॥ পাঠান্তর

১। ইহা গ-র-সা পুথির ১৫১৭ সংখ্যক পদ।

২। 'মগুল' ক, ধ; 'মগুলী' প-র-সা। ৩।
'আন বন' হলে 'নিকুল' গ-র-সা। ৪। 'সকল'

যা ৫। 'চুড়ই' য, চ। ৬। 'পুছুই' ক, ধ,
প-র-সা। ৭। 'কাহাঁ' ইত্যাদি হলে 'কাহাঁ মঝু প্রাণনাথ ভেল অতি অল্থিত' ক, ধ। ৮। 'কুল' প-র-সা। ৯। 'কোন উপারে' হলে 'কোনছ উপার' প-র-সা। ১০। 'মিলব' ক, চ, প-র-সা।

द्या होत्र १३ পনস পিয়াল চুভবর চম্পক व्यत्नांक वकून वक नीन। একে একে পৃছিয়াং উত্তর না পাইয়া আওল তুলসি সমীপ॥ জাতি যৃথি॰ নব-মল্লিক॰ মালতি शृंहन मझन-नश्रादन। উতর না পাই পতিনি সম মানই **मृत्रिं कत्रन भग्नात्न** ॥ পুন দেখে তরুকুল অভিশয় ফলফুল-ভবে পড়িয়াছে মহি-মাঝ। কামুক হেরি প্রণাম করল ইয ध भर्ष हनन खन-त्रांन । এত কৃষি বিরহে বেয়াকুল অভিশন্ন खक-त्रमगीत्रन द्वाता। উদ্ধবদাস বহ খ্যাম ভেল অলখিও क्षि धर्म मीनव भाषा ॥।)२७।।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'পুছিরা' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'যুখী'
ক। ৪। 'মলিকা' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'পাইরা'
ক, চ। ৬। 'দেখি' প-র-সা। ৭। 'মিলব'
ক, প-র-সা।

छ्या जात्र।>

মুখে যুখে রঞিণি বরজ-বর-কামিনি যামিনি কানন মাহ। সব জন পরিহরি কুঞ্চে চলল হরি করে ধরি রাইক বাহ। प्रक्रमी.º व्यव हित (कान कानन माहा (गल। গুণবৃতি গুণহি মনহি মন বান্ধল নাগর অমুকৃলঃ ভেল ॥ ঞ । ঠামহি ঠাম চরণ-চিহ্ন হেরই রাই করল যাই। কোর। কুম্ম ভোড়ি বছ বেশ বনায়ল স্থাত-রভসে ভেল ভোর ॥ কিশলয়-শেক ঠামহিঁ ঠাম হেরই টুটল° কত ফুলমাল°। দুহ অঞ্পরিমলে কামন বাসল शक्षरत मध्कत-कान ॥ धनि धनि व्रमनि-भिरवामनि सम्मिवि व्यात्राथल मनम् ५ (प्रव । (भाभानमात्र कर ७ नरहित नरू त्राधांमांधव दमव ॥३॥३२७३॥

পাঠান্তর

১। देश भ-तःना श्वित ১৫১२ नश्याक भव।
६। 'ब्र्ल यूल' क। ७। 'नकनि' क, च, ठ,
भ-त-ना। । 'ब्रब्र्ज्न' क, थ। ६। क्वन भ-त-ना श्वित् 'क' िक बाह्र। ७। 'हेंकन'

ক, চ, প-র-সা। ৭। 'কুলবান' প-র-সা। ৮।
'কান' প-র-সা। ৯। 'গোপালদান' ইত্যাদি ফলে
'গোপালদাস কহমে সহচরি সহ' প-র-সা।

थाननी ।>

সকল রমণিগণ ছোড়ি বর-নাগর রাইক কর ধরি গেল। বনে বনে ভ্রমই কুমুমকুল ভোড়ই (कम-(वम कत्रि (मल । চলইতে রাই চরণে ভেল বেদন কান্ধে চড়ব মন কেল। বুঝইতে ঐছে বচন বহু-বল্ল ভ নিজ তমু অগখিত ভেল। না দেখিয়া নাহ তাহিঁ ধনি রোয়ত হা প্রাণনাথ উতরোলে। ব্ৰজ-রমণীগণ না দেখিয়া মন-ছুখে ভাসল বিরহ-হিলোলে ॥ উদ্দেশে কেই কোই বনে পরবেশিয়া হেরল রোদতি রাধা। मिश्राम (मिल संत्रि भन्न ल्रेहे॰ **उद्य**वनाम हिटल वांथा । ১०॥ ১२ ५२॥

পাঠাস্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫২০ সংখ্যক পদ। ২। 'বুৱইতে ঐছে' হলে 'বুঝাইতে ঐছন' প-র-সা। ৩। 'তাহি' দ; 'তহি' প-র-সা। ৪। 'ব্রহাক রমণ'থ। ৫। 'সূঠই' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাখ।>

সভে মিলি বৈঠন কালিন্দি-ভীর। কর কর সবহঁ নয়নেং বহ নীর॥ কাই। গেও নাহ° ছখ-সাগরে ডারি। অবলা-মতি কৈছে তরইতে পারি°।

বিবছ-বিয়াধি° -বিরামক লাগি। গাওত তছু গুণ যামিনি জাগি॥ विध-जन वानि वर्ष खद्य दाथि। অব কাহে মার্সি অক্রণ-আঁখি॥ যবন্ত চলসিও বন গোধন সাধ।, নিমিখে মানিয়ে জমু যুগ-শত যাত। অব কৈছে ভুয়া বিমে ধরৰ পরাণ। তব বচনামুত্র না করিয়ার্থ পান ॥ ८७ भव²-भक्क (कांमन कांनि। স্তন-যুগে রাখিতে ভয় অমুমানি ॥ देक एक क प्रेक - वरन क ब्रिश विश्व विश्व । সোভরি সোভরি জিউ ধরই না পার১১॥ এত কহি রোয়ত গদ গদ ভাষ। কহ রাধামোহন দাসক দাস #১১#১২৬৩#

পঠিস্তির

১। हेहां भ-त-नां भूचित्र ১৫२১ मरशाक शहा २। 'नवन' घ। ७। 'नाथ' क, ४, च, ठ। ८। 'व्यवना' हेजानि ऋत्न च পुबित भाई ख्यां— 'भहित्न बिवार भागाँठ भून माति।' १। 'भटवाधि' थ, प। 'চলল' প-র সা। ৭। 'চরণামৃত' প-র-সা। ৮। 'क्बिरब' क। २। 'छव' श-ब्र-मा। ১०। '(वहांत्रि' म। ১১। 'नात्रि' ह।

बबाढी ।>

় তব কথামুডং ডপ্তজীবনং कविकित्रीष्ठिः कन्मश्राभशः। শ্রবণমক্ষলং শ্রীমদাততং **जू**वि शृंशिख त्य ज़्तिमा कनाः । পাঠান্তর

১। এই শ্রীমণ্ডাগবতীর শ্লোকটি প-র-সা

हेरांक चडड भए-कर्म ग्रीड क्तिरम २८म भन्नदित्र निर्किष्टे भए-मरशा वाष्ट्रिया यात्र । তথাপি भएक ब्र-তক্র সকলগুলি পুথিতে গ্লোকটি উদ্ধৃত হওয়ার উহা আমরাও উদ্ধৃত করিলাম। ২। 'কবিভিন্নী-ড়িতং' হলে 'কৰিভিন্নীরিতং' ক, ধ, চ পুৰি।

विका

"ভবে"ভ্যাদি। শ্ৰীকৃষ্ণং প্ৰতি গোপী-জন-বাক্যম। তব কথা এব অমৃতং ভূরিদাঃ পূর্বজন্মনি বহ-দাতারো জনা পরম-স্কৃতিন ইত্যর্থ: ভূবি সংসারে আততং বিস্তৃতং যথা স্যাৎ তথা গৃণস্তি প্রাপ্ন বস্তি। क्थामृडः कीमृनम् ? उश्चानाः সংসারানলদ্ধানাः कोवनः कोवनबरकोवधः कविष्ठिर्वकामिष्ठिबीष्टिष्ठः স্তাহ্য কলাষাপ্তং পাপনাশনং শ্রীম্থ সৌভাগ্যাম্পদং কল্যাণাবহমিতি ভাব:।

অমুবাদ

সংসারে বাঁহারা পর্ম-পুণাবান্ ব্যক্তি, তাঁহারাই এদ্ধাদির প্রশংসিত ক্সুব-নাশন, প্রবণ-মুদ্দ ও কল্যাণকর আপনার কথামৃত প্রভূতরূপে লাভ कवित्रा शंदकन !

বিছাপতা 13

অক্সামক্ষ্মামন্তরা মাধবো মাধবং মাধবং চাস্তবেপাক্ষনা। ইখমাকল্লিতে মণ্ডলে মধ্যগো **(त्व्या जःकर्शा (प्रवकी-मन्प्रनः ॥** 11212481

পাঠান্তর

 हेर्हा श-व्र-त्रा श्रुबिव ३६२७ त्रःश्राक श्रह । টাকা

১--৪। "অখনা"বিত্যাদি। মাধবঃ অখনাং क्रमताः क्रमता श्राप्तित्रवाननावत्रत्र मधावकी । 'व्यव-(त'क) वात- त्वारा विक्रीता। ज्यमना ह मांथवर मांथवर পুৰিতে উদ্ভ এবং চ পুৰিতে গণিত হয় নাই। অস্তরেণ প্রভাকমাণব প্রকাশরোঃ মধাবর্জী। 'অর-

রেণে'তাব্যমবোগে বিতীয়া। ইখং অনেন প্রকারেণ আকলিতে রচিতে মগুলে চক্রাকারেণ রাদ নৃত্যে মধ্যগো মধ্যবর্তী সন্ দেবকীনন্দন: শ্রীক্রফঃ বেণুনা সংলগৌ গানং ক্রতবান্। "অক্ত সর্প্রকাগনা-মধ্যপতত্ত্বং অলাতমিব দর্শনং চক্রন্তমন্তারেন নৃত্যবিশেষকোশ-লেনেতি বোধ্যং ন হৈখার্গেণ।" ইতি রাধানোহন:।

অমুবাদ

প্রত্যেক ব্রদাসনা-ব্রের মধ্যে প্রীক্ষণ ও বছরপে প্রকাশমান, প্রত্যেক শ্রীকৃষ্ণব্রের মধ্যে ব্রদাসনা— এইরূপে সংগঠিত রাস-মণ্ডলের মধ্যগত হুইয়া বেবকীনন্দন শ্রীকৃষ্ণ বংশীর গান বিস্তার ক্রিলেন!

তাৎপৰ্ব্য-ব্যাখ্যা

রমণীবন্ন পরস্পারের কর ধারণ করিয়া মণ্ডলা-কারে বে নৃত্য করেন, উহাকে রাদ বা মণ্ডগী-নৃত্য বলা হয়। সহস্ৰ সহস্ৰ ব্ৰাক্ষাদিগের সম-ভাবে व्यानम-वर्त्तन कतिए हरेल, जीकृष छांशांपरशत প্রত্যেকের সহিত যুগপৎ নৃত্যাদি করিতেছেন, তাঁহাদিপের মনে এই বিখাদ উৎপাদন করা আৰম্ভক। অবগ্ৰ শ্ৰীভগবানের পিক্ষে ইহা অসম্ভব नरह। 'रवारगंधरतम कृरक्षन जानाः मरशा इरबा-ৰ্ষা:। প্ৰবিষ্টেন পূৰীতানাং কণ্ঠে স্থানিকটং গ্ৰিয়:॥' এই ভাগৰতীয় শ্লোকের শ্রীধর-স্বামি-ক্লত ব্যাখ্যার আভাবে বুঝা ৰাম্ন ৰে, এক্সিঞ্চ বোগ(মায়া) ৰাৱা ৰুগপৎ বহু মূৰ্ত্তি পরিপ্রাহ করিয়া এই কার্যা সিদ্ধ क्रिवाहित्यन । क्रिक श्रीकृष्णगीमात्र वित्यवनगी সনাতন গোস্বামী ও বিখনাথ চক্রবর্তী শ্রীক্রফের মধুরভাবাত্মক ত্রল-লীলার ঐখর্য্য প্রকাশ অবৌক্তিক मरन कतिका. व्याच्या कतिबारकन रा, वच्छाः अवहे কৃষ্ণ নৃত্য-পটুতা হেডু এক সমরেই সকল গোপী-দিপের নিকটে আছেন বলিয়া প্রতীত হইয়াছিলেন। বিখনাথ চক্রবর্তীর মতে পুর্বোক্ত ভাগবতীয় শ্লোকের 'ক্ষেন' ও পরবর্ত্তী 'তত্তাতিশুগুভে তাভির্ভগবান্ (एवकी खुळ:। याधा मनी नार (हमानार महामात-কতো ৰথা ॥' লোকের 'মহামারকড:' এই এক-वहनाख शब-वत्र वाता अहे अधिआतहे ऋहिक हत्र।

বস্ততঃ প্রশিধান করিলে টীকাকারদিগের এই মতবিরোধের বিশেষ সার্থকতা দেখা বার না। বে
অন্তুত নৃত্য-কৌশল ধারা নর্ভক ব্গণৎ সহস্র সহস্র
প্রকাশরণে প্রতিভাত হইতে পারেন, তাহা
অলৌকিক ও তজ্জুরুই অতিপ্রাক্ত বলিরা স্বীকার
করিলেও বোধ হর কোন ধোব হর না। বস্ততঃ
শীক্ষ্য-চরিজের বহু অবদান উহার পক্ষে সহল ও
স্বাভাবিক হইলেও সাধারণ মানবের পক্ষে বে একান্ত
অসাধ্য ও অসম্ভব, ইহা অবশ্যই স্বীকার করিতে
হইবে।

ভথা রাপ ৷১

যভ নারীকুল বিরহে আকুল रेभत्रक भतिएक नांदत्र। রসিক নাগর ৰুঝিয়া অন্তর্ मंड़िल यमूना शादत ॥ কদম্বের তলে বসি কোন ছলে शृक् शृक् वादय वाँनी। শুনিতে শ্রবণে ভ্ৰ-বধুগণে তাহাই মিলল আসি মরণ-শরীরে পরাণ পাইল क्षेत्र मरहं एडलि। বন-দাবানলে পুড়িয়া বেমন व्याभिग्ना-मात्रदत्र ८कलि ॥ চাভকিনী-গণত ८इति नव∙चन মনের আনন্দে ভাগে। वनन ञ्चन किनि भग्धत हरकाविशे हावि॰ शार्म ∎ বিরহে তাপিত ভেল ভিরপিভ वितर्थ व्यभिग्रा-वाणि। च्याटमत्र रमटन छानमात्र करह वाथ क्रेयल हानि ।>०।>२७०।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৫২২ সংখ্যক পদ। ২। 'সমর' প-র-সা। ৩। 'ব্রজবধ্গণ' প-র-সা। ৪। 'চারু' प; 'চাৰু' প-র-সা।

८वरकांशंत्र ।> বাজত ডক্ষ রবাব পাৰোয়াজ করতল তাল ভরলং একু মেলি। চলত চিত্ৰ-গতি সকল কলাৰতি करत करत नग्रत्न नग्रत्न करू (थिन ॥ নাচত শ্যাম সলে ব্রজ-নারি। জনদ-পুঞ্জে জমু তড়িত-লভাবলি অঙ্গ-ভক্ষ কত রক্ষ বিধারি ॥ এ ॥ नहेन-हिर्लाल-लाल मिन-कू थल व्यय-कल एल एल वस्तर्खं हम्में। त्रम खरत गलिख मलिख कूठ-कक्षक নীবি খসত অরু কবরিক বন্ধ॥ कुछँ कुछँ मत्रम भवन-तम लागरम আলিসই রহ তমু লাই।। গোবিন্দদাস পত্ত মুরতি মনোভব কত যুবতী[•] রতি[•] আরতি বাঢ়াই 🛚

পাঠান্তর

112812561

১। ইহাপ-র পুথির ৩৮।৬ সংখ্যক পদ।
২। 'চরণ'প-র। ৩। 'শ্রমজ্বল' ইত্যাদি হলে
'শ্রমজ্বল চরচর মুখ-জ্বরিন্ধ' প-র। ৪। 'জ্ব'
ঘ; 'উক্র' চ। ৫। 'আলিক্রই' ইত্যাদি হলে
"'তক্র তক্ত আললে রহ তক্ত লাই' ক, খ; 'আললে
বহুত ললাই' চ। ৬। 'বুরতি' ক, খ; 'বুরতি' ঘ।
'বুরতি' পাঠে ছন্দোভল ঘটে। ৭। 'মৃতি' খ।

(पन श्रीकृति।

বলায়ানাং নৃপুরাণাং কিন্ধিণীনাঞ্চ বোষিতাং। সম্রিয়াণামভূচছব্দস্তমুলো রাস-মণ্ডলে ॥ ॥১৫॥১২৬৭॥

नेका

"বলয়ানা"মিত্যাদি। রাসমগুলে স্প্রিরানাং ক্ষুস্বিতানাং বোবিতাং দ্বীণাং বলয়ানাং কর-ভ্ৰণানং নুপুরাণাং পদভ্ৰণানাং কিছিণীনাং কটি-ভ্ৰণানাং চ নৃত্য-বেগ-চঞ্চলানামিতি ভাবঃ ভূম্লঃ স্কীর্ণঃ বলয়-নুপুরাদি-শিক্ষিত-মিশ্রঃ শক্ষোহভূৎ নিনাদো ভাতঃ।

অমুবাদ

রাস-মওলে শ্রীক্তফের সহিত সম্বিলিতা ব্রদাননা-দিপের বলর, নৃপ্র ও কিছিণীর ধ্বনি-মিশ্রিত শব্দ উদ্ভূত হইল।

(क्षांत्र।)

কালিন্দি-ভীর স্থীর সমীরণ
কুন্দ কুমুদ অরবিন্দ বিকাশ।
নাচত দোরং ভোরণ মন্তং মধুকর
শুক সারিকং পিকু-পঞ্চম ভাষ॥
মধুবনেণ নিধুবনণ-মুগধ মুরারি।
মুগধ গোপ-বধু অধিক লাখ সঞ্জে
রজে বিহুরে বুখভামু-কুমারিদ ॥ এ ॥
নাচত নটিনি গাওয়ে নট-দেখর
গাওত নটিনি নাচেণ নট-রাজ।
শুসার গোরিণ্ণ গোরি সঞ্জে শুসারর
নব জলধরে জমুণ্ণ বিজুরি বিরাজ॥
হেরি হেরি অপক্রপণ্ণ রাস-কলা-রস্ণ
মনমুণে লাগল মনমুণ ধন্দ।
ভূললাণ গগনেণ্ণ সগণেণ রজনীকর
চৌদুলেণ্ণ কির্মন্ত দ্বীপধরণ্ণ ছন্দ ॥

ভারা-গণ সত্থে ভারা-পতি হেরি
লাজে লুকায়ল দিনমণি-কাঁতি।
গোবিন্দ দাস পত্ত জগ-মন-মোহনং
বিহরইং ভেল কলপ সম রাতি ॥
॥১৬॥১২৬৮॥

পাঠান্তর

)। **देश भ-त-मा भू**षित ১४৪१ ७ भ-त भूषित ৩৮/৫ সংখ্যক পদ। ২। 'ময়র' ক। ৩। 'ভোর' শব্দ প-র-সা পুর্বিতে নাই। ৪। 'মত্ত' শব্দ থ পুৰিতে নাই। ৫। 'শারি শৃক' ব, চ; 'গুক সারি' প-র-সা। ७। 'सधुत्र' कः। १। 'निधुत्रत्न' **थ**ः 'নাচড' প-র-গা। ৮। 'কিশোরী' প-র-সা. প-র। ১। 'গার' कः 'গারে' চ। 'নাচত' প-র। ১১। 'শ্রামর গোর' ক. ५: ভোষক গোরি' প-র-সা; 'গ্রাম গোরি' প-র। >२। 'देव(क' भ-द्रा >ा 'दान' भ-द्रा >8। 'विनाम मरनाइत' श-द्रा) ८। 'उँवन' श-द्र-मा। ১৬। 'मगर्प' भ-द। ১१। 'मगर्प' भ-द-माः 'भगरन' भ-ता अना '(ठोबिरग' क, ठा ३३। 'मील श्रवि इन्म' कः 'मील श्रक इन्म' ल-व। २०। 'क्श-मन-स्थाहन' करन 'नहेरतु-स्थत् भन्त । २०। 'বিছরিজে' প-র।

ীকা

e—१। "মধ্বনে" ইত্যাদি। রাধানোহন ঠাকুর লিখিরাছেন,—'বধুবনে মথুরামগুলে তক্তমে নিধুবননার গুণবদে মুগধ মুঝো হরিরিতি। ব্যা নিধুবনমুঝা 'রতং নিধুবনং মৃত'মিত্যর্থা। অর্থাৎ 'নিধুবন-মুগধ' শন্দের অর্থ মধুবন-ছিত নিধুবননামক উপবনে' কিংবা নিধুবন শব্দ অভিধানে 'ক্স্রত' অর্থে প্রসিদ্ধ বলিয়া 'প্রস্ত-মুঝা'। 'অধিক লাখ সঞ্জে' বাক্যের অর্থ 'লক্ষ সংখ্যা অপেক্ষাও অধিক'।

১২-১৫। "ছেরি" ইত্যাদি। অপূর্ব রাস-কলা-উৎসৰ দৃষ্টি করিতে করিতে করণের অর্থাৎ কন্দর্শের চিজে মন্মণ অর্থাৎ অপ্রাক্ত মদন (প্রাক্তম্ব)
ধাঁধার ভার বোধ হইল ! (প্রীভগবানের নিকাষ
প্রেম-লীলা যে, কন্দর্পের নিকট হবোধ্য বলিরা
প্রতিভাত হইবে, তাহা সহজেই অন্থমের)। গগনে
নিজের গণ অর্থাৎ নাত্রসমূহের সহিত নিশাকর
চক্র (রাস-লীলা-দর্শনে) মুগ্র হইলেন এবং প্রদীপধারী অর্থাৎ মশাল্ডির ভার, (রাস-ত্বলী আলো
ক্রিড করিয়া) টোদিগে ঘুরিতে লাগিলেন।

CORIA IS

মণ্ডিত-হল্লীযক-মণ্ডলাং ।
নটয়ন্ রাধাঞ্চল-কুণ্ডলাং ॥
নিধিল-কলা-সম্পদি পরিচয়া ।
প্রিয়সখি পশ্য নটভি মুরজয়ী ॥ ধা ॥
মুক্তরান্দোলি ভ-রত্ন-বলয়ং ।
সনয়ন-বলয়ং । কর-কিশলয়ং ॥
গতি-ভলিভিরবশীকৃত-শনী ।
স্থিতি-সনাতন-শঙ্কর-বনী ॥১৭॥১২৬৯॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৫১৫ ও প-র পুথির ৩৮।১৫ সংখ্যক পদ। 'কেদার' ছলে 'ভৈরবী' প-র। ২। 'মগুলা' প-র-সা। ৩। 'কুগুলা' প-র-সা। ৪। প-র পুথি ব্যতীত অক্সান্ত পুথিতে 'ক্র' নাই। ৫। 'বলহা' প-র-সা। ৬। 'সনহন' ইত্যাদি ছলে 'সনহন চলহন' ক, প-র; 'সনহন্ চলহন' ঝ, চ; 'সনহন বলহন' ঘ। ৭। 'কিশ্লহা' প-র-সা।

निवा

১০৮। "মজিতে" ত্যাদি। মঞ্জিতং শোভিতং হলীবক মঞ্জণ রাদ-চক্রং বরা তাং চলকু গুলাই চঞ্চলকর্ণাভরণাং শ্রীরাধাং নটছন্ নিধিল-ক্লা-সন্মুছে পরিচন্নী পারদর্শী সুরারিনটিভি--হে প্রিয়স্থি। পঞ্চ। ক্থং নটভি?

— মৃহকারং বারং আন্দোলিতং রত্বলয়ং বজিন্।
প্রশ্চ নয়নেন সহ বলয়ৎ বিবৃর্ণয়ৎ করকিশলয়ং
বজিন্। তৎ য়ণা ভাং তথেতি ক্রেয়া-বিশেষণং। মৃরআয়ী পুন: কীদৃশঃ ?— গতিজ্ঞীতিঃ নৃত্যকালীনালসঞ্চালন-বিশেবৈঃ অবশীক্ষতঃ কামাকুলীক্ষতঃ শশী
চল্লো যেন। প্রশ্চ হলিতঃ নিম্নায়েছেকাৎ জড়ীক্ষতঃ
সনাতনঃ তয়ামকো যোগীখায়ঃ পকে তয়ামকঃ কবিঃ
শঙ্কণত বেন স চাসৌ বশী চেতি তাদৃশঃ। 'কৃষ্ণবিক্রীড়িতং বীক্ষ্য ব্যমুহান্ ধেচরজ্বিয়ঃ। কামার্দিতঃ
শশাক্ষণ্ড সগণো বিজিতোহ্তবং ॥' ইতি শ্রীদশ্মে
শ্রীক্তকবাক্যমন্থসক্ষেম।

অভুবাদ

১—৮। হে প্রিয়-স্থি। দেখা রাদ মগুল-শোভিনী চঞ্চল-কুগুলা জীরাধাকে নর্ভিত করিয়া নিখিল-কলা-পারদর্শী মুরারি নৃত্য করিতেছেন। নৃত্যবশে তাঁহার রত্ম-বলয় বার্ম্বার আন্দোলিত ও নয়নের সহিত কর-পল্লব বিঘূর্ণিত হইতেছে। জিতেজিয় ভাঁহার নৃত্যকালীন অস্ভঙ্গী দর্শনে শশাক কামাকুল এবং সনাতন ও শক্ষর স্তর্জীভূত হইতেছেন!

विष्णाडा । अवसा

কণু রুণু রুণু রুণু বুণু বুণু ক্ষণ কর রণরণি।

কম কম ঘাঁঘর ঘাঘটি কটি কিছিনি

কলণ বুমর ধননি ॥

ডগ মগ ডগ মগ ডফ ডিমিকি ভূমি

পী পী বেণু-নিসানে।

চলত চিত্র-গতি নর্ত্রন-পদ অভি

মাধব ইহ রস গানে ॥১৮॥১২৭০॥

পাঠান্তর

১। 'বিহাগ' ক। ২। 'উআরে' ৰ।

৩। 'ভিকি' চ। ৪। 'আ ইরা আ ইরা' ক্লে
'আইয়া ইরা' ক, থ, চ। ৫। 'ঝুত্থ ঝুত্থ ঝুত্থ
ঝুত্থ হলে 'ক্তুক্ত কৃত্থ কৃত্থ ক, ৪। ৬।
'বাঘাটা' ক, 'বাঘটা' ৰ, চ। ৭। 'পি পি' ক।

বিহুপড়া ৷১

চৌদিকে চারু

রিজনি কন্ত গায়নিং।

ক্রেন্তাণ থৈয়া থৈয়া বোলনি।

মাঝে বিরাজে শ্রাম স্থাড় শিরোমনি।

কিন্ধিনিং কিনি কিনি বোলনি।

ভোগরং ন ধোগ্গা ঘেটিঙা ঘেটিভা বেটি
তী বেনে নাঙ্ তীস্তম্ম তীস্তম নাঙ্।

গরণ খেনাতীনি ভা খিটি তৃমং তীম্মর ঝাঁ।

বর্ণিত রাস বিভাপতি সূর।

রাধামোহন দাস রস-পুর ॥১৯॥১২৭১।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১২০৭ সংখ্যক পদ।
'বিহগড়া' হলে 'ডুক' প-র-সা। ২। 'গাউনি'
ক, ব, ব, চ। ৩। 'কেডা' হলে 'ক্রডাডা' ক,
ব, চ; 'কুডিডা ক্রতিতা' প-র-সা। ৪। 'বাবে

ক্ষণ ক্ষ' প-র-সা। ৫। 'তাগর' ইত্যাদি অবশিষ্ট শংক্তিশুলি প-র-সা পুথিতে নাই।

(क्षांत्र १३

ও নব-জলধর অল ।
ইহ থির বিজুরি-তরক ॥
ও বর-মরকত ঠান।
ইহ কাঞ্চন দশবান ॥
রাধামাধবং মেলি।
মুরতি মদন-রস কেলি ॥
ও তমুও তরুণ তমাল।
ইহ হেম যৃথি রসাল ॥
ও নব পতুমিনি সাজ।
ইহ মত্ত মধুকর রাজ॥
ও মুখ চান্দ উজোর।
ইহ দিঠি লুবধ চকোর॥
অরুণ নিয়ত্তে পুন চন্দেও।
বোবিন্দলাস রহু ধন্দ ॥২০।১২৭২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র পৃথির ১২।৫ সংখ্যক পদ।
 ২। 'রাধানাধ্ব' ফ্লে 'দেখ রাধানাধ্ব' প-র।
 ৩। 'নব' প-র। ৪। 'ছন্দ' খ।

বরাগ।>

রাস-অবসানে অবশ ভেল অস।
বৈঠল ছুহুঁ জন রভস-তর্দ্ধ ।
শ্রেম-ভরে জ্বল যাম বহি যার।
কিছ্মরিগণ করু চামরের বায় ॥
শৈঠল সবহুঁ যমুনা জল মাহুও।
শামি-সমরে ছুহুঁ করু অবগাহুও।
মাজি-মগন জলে মগুলি কেলং।
ছুহুঁ ছুহুঁ মেলি করুইও জলবেল ॥

কণ্ঠ-মগন জলে করল পয়ান।
চুম্বরে নাহ তব সবহু বয়ান।
ছলে বলে কামু রাই লেই গেল।
যো অভিলাস করল ছহু মেল।
জল সঞ্জে উঠি সভে মাহুই শরীর।
জমু বিধু-মণ্ডিত যামুন তারু ॥
রাস-বিলাস করি পানি-বিলাস।
দাস অনস্তুক পুরল আশ ॥২১॥১২৭৩॥

পঠিক্তির

ইহাপ-র-দাপুথির ১৫১৮ সংখ্যক পদ।
 (রভস-ভরদ' ছলে 'দথীগণ সদ' প-র-দা।
 (যাই'প-র-দা। ৪। 'কর অবগাই' প-র-দা।
 (অঞ্চল ফেলি'প-র-দা। ৮। 'করল'প-র-দা।
 (তব' ক, খ, চ; 'দব' প-র-দা।
 (যামুন নীর'ক, চ; 'ব্যুনাক তীর'প-র-দা।

८क्षांत्र १३ কেলি সমাধি^২ উঠল ছহুঁ তীরহি বসন ভূষণ পরি অস। রতন-মন্দির মাহা বৈঠল নাগর করু বন-ভোঞ্চন⁹-র**জ**॥ व्यानत्म (को कक्ष ७३। বিবিধ মিঠাই খার বহু বনফল जुक्षरे नन्म-किट्मात ॥ अ ॥ মাগর-শেষ লেই সব রঙ্গিণি ভোজন করু রসপুঞ্চ। ভোজন সমধি তামুল সভে খাওল শুভলিং নিজ নিজ কুছে। ললিভানন্দ কুঞ্ল যমুনা-ভট• শৃতল যুগল কিশোর। দাস নরোত্তম করতহি সেবন व्यनम नवन (रुवि (छात्र । १२॥) २१८॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৫২১ সংখ্যক পদ।
'কেদার' স্থলে 'বেহাগ' প-র-সা। ২। 'সমাধি'
স্থলে 'সমাধিয়া' প-র-সা। ৩। 'করু বন-ভোজন'
স্থলে 'করণ ভোজন' প-র-সা। ৪। 'স্লিনী'
প-র-সা। ৫। 'শুত্রি' ক, খ, প-র-সা। ৬।
'বাস্ন-তেট' ক, খ, ঘ, চ।

कारमाम 13

কমুম-আসন হেরি বামে কিশোরি গোরি रेवर्ठन कूक्ष-कूछीरव। চিবুকে দক্ষিণ কর ধরি প্রিয় গিরিধর मुशानि निष्या (लहे भिरव । (त्रथ मिथ अश्रुक्तश हार्या । প্রেম-জলধি মাঝে खुद**ल दृष्ट् कम** मनम् পिष् राम कार्य ॥ রভন পালক পর শেজ বিরাজিও শূতল যুগল কিশোর। শ্মের মধুর মুখ-পঞ্চল মনোহর মরকত কাঞ্চন জোর ৷ প্রিয় নর্ম্ম-সহচরি বীজন করে ধরি বীজাই মারুত মন্দ। धाम-जन मकल करमवत्र भौदेम হেরই পরম আনন্দ।

> ন্দ্ৰনী।> কোধল-শশি-কর-রম্যা-বনাস্তর-নিশ্মিত-গীত-বিলাসং।

প্রিয়জন সেবই বিধানে ॥২৩॥১২৭৫॥

(म वन-मधुत्रिम-भारन।

আশ পদ-পক্ত-

নিন্দ গেও স্থিগণ

মরোত্তম দাস

निक निक कुरक्ष

তুর্ণ-সমাগত-বল্লব-যৌবত-বীক্ষণ-কুত-পরিহাস॥ জয় জয় ভাসু-সূতা-তট-রঙ্গ-মহানট इन्पत्र नन्प-कूमात्र। শরদলীকুত-দিব্য-রসাবৃত-৩ মক্লণ - রাদ - বিহার । এ। গোপী-চুম্বিত রাগণ-করম্বিত মান-বিলোকন-লীন। গুণ-বর্গোন্নত-রাধা সক্ষত (मोक्ष-मण्यामधीन ॥ ভবচনামূত-পান-মদাহ্যত-বলয়ীকুত-পরিবার। স্থর-তরুণীগণ-মতি-বিকোভন খেলন-বল্লিত-হার॥ অমু-বিগাহন-নন্দিত-নিজ-জন-মপ্রিত-যমুনা -তার। হুখ-সন্বিদ্যন শূর্ণ-সনাতন निर्धाल-नोल-भन्नोत्र ।२८॥১२१७॥ ইত্যাদি শর্থকালীয়-মহারাসঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র পুথির ৩৮।>৪ সংখ্যক পদ।
২। 'রসাণ' ব। ৩। 'রসামৃত' ব। ৪। 'মগুণ'
ক, ব। ৫। 'রাক' ব। ৬। 'বাস' ব। १।
'মুনামৃত' ক, ব, ব। ৮। 'বিলোভন' চ। ১।
'বামুন' ব, প-র-সা।

ीका

১—২০। "কোমবে"ত্যাদি। আবে) এবপদং ব্যাধ্যারতে — ভাতুত্তভারাকটমেব রলঃ নর্কনরানং তত্ত্ব মহানট নটলিরোমবে হে স্থান্তর নৰাজন শ্রীকৃষ্ণ ঘং কর অব সর্বোৎকর্বেণ বিরাশ্ব। ঘং কীদৃশঃ ?—শরদি অলীকৃতঃ দিব্যেনাপ্রাকৃতভাই-রাপোবৃহতো সকলো রাসবিহারো বেন তৎসবোধনং।

भूनः कीवृभः १ -- ८कामन-मनि-कटेतः त्रत्या खन्यत्त গীভবিহারকারিন্। তুর্ণদমাগত গোপ-বুবতিসমূহক ভাবীকণাম পরিহাপ-কারিন। হে হে রাগকরম্বিত রাগাণাপকারিন গোপীচুম্বিত কান্তানাং মানজ পর্বান্ত বিলোকনেন লান কুভান্তর্জান ছে। তপ্ৰবৈশিক্ষতদা অসমোদ্ধগুণবত্যা রাধ্যা সহ সক্ত হে। ভক্তা যা সৌস্দ-সম্পৎ প্রেম-সম্পত্তিঃ ভক্তা অধীন। যথা গুণবর্গোলভারাং রাধারাং সঙ্গতা या जोक्षपत्रम्म ७ वर्षीन ए । 'कश्माविवर्षि मःमावः বাসনাবন্ধশৃঞ্জালাং। হাধামাধায় হৃদয়ে তত্যাক এক-क्षत्री:॥" रेकामि अवरमय-(शारकन अक्रिक्र) রাধাপ্রেমাধীনত্বং কুটমেব। ভাসাং গোপীনাং বানি ব্চনামূভানি ভেষাং পানেন ধো মদক্তবিষয়কেন প্ৰেৰা মন্ততা তেনাজত তাদাং দদখানীত হে। বলগী-কুত: মণ্ডলাকারেণ স্থাপিত: পরিবার: গোপাগনা-রূপ-পরিক্রো বেন তৎসম্বোধনং। প্রবতরুণীনাং ৰৎ মতিবিক্ষোভনং বুদ্ধিচাঞ্চ্যকারকং থেলনং রাস-নৰ্ত্তনং ভেন বল্লিডঃ উল্লফ্নশীলো হারো বস্য তৎ-मरवाधनः। अपूर्विशाहरनन क्न-क्कीएवा निक्टिः श्रीनिटेडः निवक्टनम खिठः यमूनाठीतः यन ७९-সংখাধনং। সূধং আননঃ স্থিৎ জ্ঞানং ত্রোর্থনঃ শাক্ষানন্দবিজ্ঞানরূপ ইত্যর্থঃ পূর্ণঃ আপ্রকামঃ সনা-ভনক্তে ভৎপ্ৰোধনং। পক্তে সুধস্থিদ্বনেন পুৰ: কুতাৰ্থীক্কতঃ সনাতননামা ক্ৰিৰ্যেন তৎসংখ্যাধনং। मिर्जन-नीगमबीय अमन-स्नीन-करन्यत्र।

অমুবাৰ

> — ২০। বমুনা-তট-রক্ত্মির নটরাজ হে

ক্ষের নক্ষ্মার ! তোমার জয় হউক। তৃষি

শরৎকালে অপ্রাক্ষত-রস-পূর্ণ মক্ষক্ষনক রাস-বিহার

প্রকাশিত করিবাছ। তৃমি কোমলচন্দ্র-কিরণ ঘারা

স্থায় বন-স্থলীতে গীত-বিলাসের অফ্টান ও দ্বরার

সহিত স্মাগত গোপ-ব্রতিগণের ভাব-পরীক্ষার

নিমিদ্ধ পরিহাস করিবাছ। হে গোপীচ্ছিত রাগা
লাপক্রারী প্রীকৃষ্ণ। তৃমি প্রিয়াগণের পর্ক্তাব

দর্শনে অন্তর্ভিত হইরা শুণ-পণ-বরেশ্যা এীরাধার

সহিত সম্প্রিক এবং তাঁহার প্রেম-সম্পাদের অধীন হইরাছ। তুমি গোপীসপের তৎকালীন প্রেম-পূর্ণ বচনামূত-পানে বিমুগ্ধ হইরা তাঁহাদিগের সমীপে উপস্থিত ও তাঁহাদিগের বারা পরিবেটিত হইরাছ এবং তুমি প্ররাজনা-সপের চিভোন্মাদক ফ্রীড়া বারা চক্ষণ-হার-বিশিষ্ট হইরা বিরাজ করিতেছ। ভোমার জল-কেলির বারা আনন্দিত গোপাসনারূপ পরিজন বারা ব্যুনার তার-ভূমি স্থশোভিত হইরাছে। ছে নির্ম্মণ-নীল-কলেবর শ্রীক্ষক। তুমি চিদানন্দ-মূর্ত্তি ও পূর্ণ-সনাতন। (পক্ষে-তুমি চিদানন্দ বারা কবি সনাতনকে ক্রতার্থ করিরাছ।)

ত্রীতৈতত্ত-নিত্যানন্দ-চরণ-ধ্যানেন এড্নগাতসংগ্রহঃ।

> অথ পুন*চ রা**সঃ।** শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

> > कारमाम ।

দং দ্ৰিমিকি জিমি মাদল বা**ল**ভ কভ্**হ**ঁতান স্থাস্থা^২।

অধিল ভুবনক নাথ নাচত শ্রীবাদ আদি সভে গামুয়া° ॥

জামু-লব্বিত বা**ত্-**যুগল কলিত কলধোত ঠামুয়া।

অরুণ-অন্বরে ভূবন ওপমণি বৈছে প্রাতর⁸-ভাতুরা।

খণহি কম্পিত খণহি পুলকিত খণহি করযুগ-চালমা^ৰ।

খণছি উচ করি বোলই হরি হরি

পুরব-প্রেমক পালনা ॥ চাঁদ অবংশত
১াকুর অংশত

সকে সহচর মেলিয়া।

ক্তরে রামানন্দে কুলিশ সরসরে

দারু দরবিত কলিয়া ॥২৫॥১২৭৭॥

পাঠাম্বর

১। 'জিমি' ফ্লে' জিমি জিমি' ক, ধ, চ। ২। 'তান স্তার্যা' ফ্লে 'তাল স্থতার্যা' ক, ধ। ৩। 'পাস্থা' ব; 'পাস্কা' চ। ৪। 'পাত্র' ক,ধ। ৫। 'কর্থুগলানা' ব। ৬ 'লর্ব্ডি' ক,ধ।

(करोत्र 15

একে দে মোহন যমুনাং কুল আরে দে॰ কেলি-কদম্ব-মূল আবে সেং বিবিধ ফুটল ফুলং আরে সে শরদ-যামিন। ভ্রমরা ভ্রমরি করত রাব পিকু কুন্ত কুন্ত করত গাব निषित बिषित मधुव वालिनि বিবিধ রাগ গায়নি। বয়দ কিশোর মোহন ঠাম নির্থি মুর্ছি পড়ত কাম সজল-জলদ-শ্যাম-ধাম शियुलभ वनन मामिनि। भाडनभ्र धवनभ्र कालिभ्र (शांत्रि বিবিধ বসন > বনি কিশোরি নাচত গারত রস-বিভোরি> जवर्ष²⁰ वत्रक-कामिनि। বিণা কপিনাসং পিনাক ভালংদ .পপ্ত-সূর্ঞ বাজত তাল

এ সর-মগুল মন্দিরা ডক্ষ্ণ মেলিংগ কডক্^{থ্} গায়নি। মুপুর খুসুর্থ মধুর বোল ঝনন ননন্দ্রটন লোলংগ্ হাসি হাসি কেহ্ণ করত কোল ভালি ভালিণ বোলনি। বলরাম দাস পঢ় ৬২৮ তাল গাওত মধুর অভি রসাল শুনত শুনতংশ জগত উমত হৃদয়-পুতলি দোলনি ॥২৬॥১২৭৮॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র পুৰির ৩৮।১১ সংখ্যক পদ। २। 'वमूनांब' क, थ। ७-८। <। 'क्न' क, थ, ठ, প-র। ७। 'রাব' চ। ৭। 'মধুর বোলনি' ছলে 'সঞ্জি ধার' প্রা ৮। 'বিবিধ' ইত্যাদি স্থলে 'গাওত বিবিধ রাগিণী' 'युन्सव' भ-व। > । 'পিয়লি' প-র। ১১। 'শাঙলি' প-র। >२। 'धवनि' भ-त्र। ১**०। 'कांनिम' क, ४, 5। ১৪। 'वन्रत्म**' ১ং। 'করত কেলি' 'সঙ্গিতি' প-র। ১৭। 'বিমা কপিনাস' ভূলে 'विनोक विभाग' भ-ता ১৮। 'त्राव' भ-ता ১৯। 'বীণা সপ্তস্থা' প-র। ২০। 'ডম্ভু'ক; 'ডম্প' **छ। २२। 'क्लि' क, ४। २२। 'कब्रफ' भ-त्र।** २०। 'वांतर' भ-ता २८। 'यन यम बान' भ-त। २६। '(ज्ञान' श-त्रा २७। '(क्ह' क, था २१। 'ভালি ভালি ভালি' খ, খ, চ; 'ভাল ভাল' প-র। २৮। '११ के ७' थ ; 'भफ़ ७' ह। २२। 'फ़ूगफ' क, 4, 4, 51

তথা নাগ।>
নাচত বৃথস্থা-কিশোরি
অঙ্গে অঙ্গে বাহু জোরি
মেঘ উপরে হৈছে দামিনি
কিরত ঐছন ভাতিরা।।
ডক্স ডমাল শ্রামনাল
মাঝে রহতং ধরত ডাল
ভালি ভালি করত রহতং
গমম মহুর গাভিয়া। ॥

মুপুর বলয়া কছণ সাজ কন কন কনদ কিজিণি বাজ ভালে রিক্ত স্বড্লেথর

তালে রিকাত শ্ব্রুত্শেখন
ভূবল জলদ-কাঁতিয়া
বসন ভূবল কবিন-ভার
খোলি পড়ত বার বার
হসত খসত কোই পড়ত
রঙ্গিন রক্তে মাতিয়া ।
তাল মূদক্ষ ও ডক্ফ বাজ
বিণা পাখোয়াজ মধুর গাজ
সব স্থিগণ স্ত্রিয়া ।
রস-ভবের উহু ১৭ খীণ ৮ অক
রাই বৈঠলি শ্রাম সক
মন্দ্র মন্দ্র হসত খসত
১

কামু-অজে অজিয়া^২ ॥২৭॥১২৭৯॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ও প-র :পুৰির ৩৮।১ সংখ্যুক পদ। ২। 'ব্যভাহ' ক, ধ, ব, চ, প-র-সা। ৩। 'বৈছে দামিনি' স্থলে 'জম্ तोशियनी' भ-द-मा ; '(यन मोशियन' भ-द । 8 l 'ভাঁতিরা' চ; 'পাতিরা' প-র-সা। ৫। 'মাঝে' প-র। 🗣। বিহতে প-র; বৈহ' প-র-সা। ৭। 'পাঁতিয়া' চ; 'ভাতিরা' প-র-সা, প-র। ৮। 'কন কন কন' ছলে 'কুত্ব কুত্ব কুত্ব' প-র-সা; 'রুত্ব কুত্ব কুত্ব' প-ता । 'बोसङ' क, थ, घ, छ। २०। 'ख्राद-শেখন্ন' প-র। ১১। 'রসিকসিন্দ্রা' প-র-সা; 'রসক সিত্রম' প-র। ১২। 'বারহি বার' প-র-সা, প-র। ১৩। 'ভাল মুদদ' ছলে 'বিবিধ ভাল মিলি' প-র। ১৪। 'ডম্ফ বারু' ছলে 'পাবঙারু' প-র-সা; 'পাধারু' প-র। ১৫। 'বিনা' ইত্যাদি चरन 'छन्फ वीना सावत शाब' भ-त्र-मा ; 'वीन ७७ কতহি বাজ' প-র। ১৬। 'ভাসুনব্দিনি' প-র।

১৭। 'উলসই' প-র-সা; 'স্ব' প-র। ১৮। 'শিপিল' প-র। ১৯। 'রহত' প-র-সা; 'কান' প-র। ২০। 'কাফ্' ইত্যাদি থলে 'আলে আল হেলিয়া' প-র।

বিহগড়া ৷ ১

नम-नमन সঙ্গে শোহনং নওল গোকুল-কামিনি। তপন-নিম্মিনি-তীরে ভালি বনি ভুবন-মোহন লাবণি ॥ ভাতা পৈয়া পৈয়াণ বাজে পাধাওজঃ মুখর কন্ধণ কিন্ধিণি। বিশসে গোবিন্দ প্রেম-আনন্দ সঙ্গে নব নব রঞ্জিণি ॥ তুত্ক অম্বর ণ্ডাত্রীবী ফাব भवत् यक्षण (पानिनः। ভরলদ শ্রেমজন ত্বত কলেবর মোতি মরকত হেম মণি বাজত কিঞ্চিণি উর্হিঁ ১ লোলনি মুপুর-ধ্বনি অমুস্বিয়া। नग्रन-नाहनिभ्भ गीय-प्रानिन সলে রসবতি রকিয়া^{১২}॥ विविध विलम्हे १० রাদে মধিব স**লে** সলিনি^১° মাতিয়া। শ্যাম-সুরতি नील प्रत्रभगः হেরত গোবিন্দ দাসিয়া।২৮।১২৮০।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ও প-র পুলির ০৮।১০
সংখ্যক পদ। 'বিহুগড়া' ফ্লে 'কেদার' প-র।
২। 'মোহন' প-র-সা। ৩। 'হাবৈ তাবৈ'
প-র-সা; 'তা ডা বৈ বৈ' প-র। ৪। 'বাজে
পাথাওক' ফ্লে 'মুদল বাজই' প-র-সা; 'মুদল
বাজত' প-র। ৫। 'চীক চিত্রিত' ইজাদি অব-

भिट्टे कनिकानित भतिवार्क भ-त-मा भूषिए निम-লিখিত পাঠ আছে; ৰখা,---'উরে লম্বিত कनक ठम्लाक-शांम कर्षम हम्मदन। লোহ কলেবর ভেল শ্ৰমকল মোতি মরকত কাঞ্চনে॥ রালে মাতল नरक बढ़ बढ़ कुश्कानत्न ब्रावह । ७० निबी निक চাতক ডাক্ক ভ্ৰম্বা পঞ্চম গায়ই॥ রাগ মুপ্তল গোপিনীকুল अधि मुद्भ नव त्रक्षिती। বোলে ভালি ভালি ছেট করতালি कामीमात्र वनि कारेनि ॥ ७। 'किकिक' भ-ता १। 'स्मान्त' भ-ता ४। '(छन' भ-द्र। २। 'कांकरन' भ-द्र। >०। 'উরছি রণরণি'প-র। ১১। 'চাংনী'প-র। ১२। 'मिषका' প-त। ১**०। 'तारम' हे** छानि

'রাসে মধুকর কুঞ্জে নাচত' >8। 'त्रमबर्खि' भ-त्र। >६। 'मृत्रभर्ग' भ-त्र। विरुष्ठा ।

হলে প-ৰ পুৰিব পাঠ, বথা---

नाट दत्र नागत्र-भिरतामि । युर्व यूर्व शास्त्रोत्रात श्वज तमने ॥ त्रक्रिम व्यथ्दत मृष्ट्र मधूतिम राम । বঙ্ক নেহারণি পিরিভি-সম্ভাষ। वि छाडा थि छाडा (कह (कह (वान। वनश्रार-सूर्भुद्र मनि-किकिनि (वाल । চৌদিগে গাওত কত কত রমণী। মাৰে বিরাজে খাম হুছড-শিরোমণি ॥ 1129175771

পাঠান্তর)। 'वृ(थं वृ(यं) क। १। 'कनद्रा' क। (क्श्रंत !

নটছিং নটবর রাস-মণ্ডল त्रमणि-मधन माय (त्र। হেম-করিণী-নিকর অন্তরে विरुद्ध कुळात्र-त्रांक दत्र ॥ ক্নয়া-কন্তণ सन्द्र यन यन त्रजन-किकिनि (वाम (त्र। দ্রিমিকি দ্রিমি দ্রিমি ভাগ ভাগেব बांग-बर्ग मन एकांब रब । গোরি গোপিনি বাছ স্থবলনি শ্যাম তরুণ তমাল রে। বৈছে যমুনাক মাঝে বিহরই कनकमग्र मित्रिशाल दत्र। স্থুভগং আনন যামময়-কণ मृषिष्ठ मननिक व्यवः। দাস অনস্ত কৰে ও রূপণ বরণি নছে

পাঠান্তর

वितर्भ कछ कछ त्रत्र ॥७०॥১२৮२॥

 'निष्टि' ऋषा 'निष्टि' च, छ। 'निष्टे' वांध इव ७६ शांठ इहेव। २। 'अ्डक' व। ७। '७ क्रभ' ऋरग 'क्रभ्तर' क, च।

TICHTE I

ठमन हाम কুত্বদ নব কিশলয় मन भवन भिक्-ताव। বরিহা কপোত জোরে জোরে নাচত চীতক নিজ পর্থাব # ভালি রে ভালি অভিনব মদন-সমাজে। রাধা রসবভি অভি রসে আরভি कामू त्रिक-वत्र त्रांट्य ॥ अ ॥ কুম্মিত কুঞ্চহি রঞ্জন মনসিক नव नव त्रिक्षि (मिनि।

রসময় ভূক কত্তু রস মধুকরি

শুমি শুমি করু রস-কেলি ॥

ধনি রে ধনি রে ধনি ছেই রুপ্ লাবণি

ধনি বৈদগধি কত ভাতি।

ভার কেই কই কত ছেই রসে উন্মত

ভ্রান কৰে নাহি দিন রাতি॥

॥৩০॥১২৮৩॥

পাঠান্তর ১। 'রূপ'ক। ২। 'কেহ'খ।

তথা রাগ।

মনমথ-যন্ত্ৰ-স্থীর স্নায়রি
শ্রামস্কর রস-সীম।
সব বৈচিত্র-কলা-রস-চাতৃরি
নাগরি গুণ-গরীমণ ॥
বিলসই রাসে রসিকবর কান।
রাই বিনোদিনি শোভই বাম ॥ ধ্রু ॥
নয়নক অঞ্জন কামু-কৃত রেখহিং
রাই তাহি ভেল ভোর।
প্রেমে পরশ-রস লিলাও-রস-লহরি
ত্তু তমু ভাবে উলোর ॥
চঞ্চল চারু চিকুরে শিখি-চন্দ্রক
স্কুম্বর সিন্দুর দাগ।
স্কুই ক্লেয়ে উদয় স্থ-সম্পদ
ভ্রান কহে ধনি অমুরাগ ॥৩২॥১২৮৪॥
গাঠান্তর

১। 'ঋণ গরিম' ক; 'ঋণ গরীম' ধ, ঘ। ২। 'রেধহি', ক, চ। ৩। 'লীলা' ক।

> হুবই। নাগরি নাগর স্থাম রসরাজে⁾। রজে মিলল চুর্ভ মগুলি মাঝে ॥

অভিরসে পুলকিত অঞ্চ।
উপজত কত কত মদন তরজা।
বিগলিত কেশ-বেশ ভেল অঞ্চ।
রতি-রস-আবেশে বাঢ়ল মুহুঁরজা।
রাসে রসিকবর বিলসই রাধা।
গৌর আধ তমু শ্যামর আধা। এল।
মুহুঁ সুখে আপনে নাহি রস-ওর।
হেম মরকত জমু লাগল জোর।
ভুজে ভুজে বেটি অধর-রস নেল।
মুহুঁ মুখ-চাঁদে মুহুঁ চুম্বন দেল।
মুহুঁ ক মরম মুহুঁ জানল ভাল।
স্থানদাস কহে মদন দালাল। ৩০৮১২৮৫॥
পাঠান্তর

১। 'রসরাজে' ছলে 'রাজে' ক. ধ।

८वटनाइर्रात्र ।

রাস-বিলাসে রসিক বর-নাগর विलंगरे तमवि भारत। कुछ विन वश वयम देवनगिष अविध कविशा धनि माटक ॥ এক অপরুপ রস এহ খিতি-মণ্ডলে মধুময় কুস্থমিত-কুঞ্চে। রাধা রাতি দিবস রস-আরতি भागत-घन-तम-**পুঞে** । অলিকুল-রবঃ শুক-রাব। (काकिलकुल शुक्र शक्षम गांव ॥ अ ॥ ফিরত মনোহর মউরক পাঁতি। मनन-हाँ अफ़्र्य मिन वां । বাজত বিবিধ যন্ত্ৰ একতান। নিজ সব সজে রজে রস গান । নারি পুরুষ ছ্রু ভাবে বিভোর। छानमात्र कर कि करव अत्रर 1081; २৮७। পাঠান্তর

১। 'वत' क, थ। २। अपटः भत्र क, च ७ 5 পুৰিতে নিম্নলিখিত প্ৰক্লিপ্ত পদটি দৃষ্ট হয়, বৰা,—

गर्दक छोम मदाहत होना। লীলা-রভস মনোহর ফাব্দ ॥ তাহে কত বেশবিশেষ পরিপাটি। হেমমণি রমণিক হদরক শাটি॥ ধনি বনি আওল মোহন রায়। ব্ৰজ-বনিতা বনি সঞ্জিত গায়। ভালে বিশশ্বিত চন্দ্ৰক-চূড়। কত কত মধুকর উনমত উড়॥ কিমে হিন্ন-হারক চন্দ্রক-জ্যোতি। ৰুত্ব আৰিয়ার তলে গত-মোতি॥ কটি কিমিপ ধটি উপরে কাত। क्य मम मोनामिनि थित चाह ॥ **ठत्रवक्षम् मिर्गिश्चन (वान । ভানদাস আনন্দ উতরোল** ॥

এই পদটি ৰ পুৰিতে নাই ও ইহার সহিত রাস-দীলার পূর্বের ও পরের পদ্ভলির সামঞ্জ নাই। रेरांटक धिकिश ना विगटन २४म भन्नद्वत्र निर्मिष्ठे পদসংখ্যা অপেকা একটি পদ বৈশী হইরা পড়ে: च्चार बिविध कांत्रत्नहें धहे भन्छि धाक्तिश्च विन्ता ৰুবা ৰাইতেছে।

क्रात्में हैं।

विवास (गाविन्म

প্রেয়-আনন্দ

मरक नव नव ब्रक्तिनि।

চারু চিত্রিভ

উরে লম্বিভ

তুত্ঁক অম্বর

প্রবনে কিঞ্চিত দোলনি।

হার চম্পক-

नाम कर्षिम ठक्ताव।

ছুছঁক কলেবর

ভরল শ্রেম-জল

মোভি মরকভ কাঞ্চনে।

कनक मत्रभग

ভাল বেচল

মাঝে শ্রাম নট-রাজ রে।

নৰিন জলধহের

थीत विक्रुती

নবিন শশধর সাজ রে ॥

बलया बनवनि

কনক-কিন্ধিণি

মুপুর-ধানি অনুসন্ধিয়া।

নয়ন-চাহনি

প্রেম-দোলান

टिबरे नव नव बिष्या ॥७८॥১२৮१॥

পাঠান্তর

>२৮० मरश्रक भागद € मरश्रक भाकित्वत उद्देश।

८वटनायांत्र ।

বিনদিনি রাধা নব নাগর কান। নটন-বিলাস-উলাস পুলক-ভন্ এক শক্তি ছুই একই পরাণ॥ ধ্রু॥ একে নব কুঞ্জ কুন্তুম অতি মনহর ভ্রমরা ভ্রমরিগণ গাওয়ে রসাল। রতনক দীপ নীপ পর হিমকর मननदार दर्भादन नहेत्राकः বাজত বলয় মুপুর মণি-কিঙ্কিণি শ্যাম-বামে রহু গোরি কিশোরি। ভূল হত হত ক কান্ধ পর শোভই नव वांतिए क्यू विनष् विकृति ॥ মুছ মধুরশ্মিত মিলিত-দুগঞ্চল আনন্দে হেরি হুছঁ হুছঁক বরান। অধিল ভুবন স্থ-সাগরে শুভলু ভানদাস চিতে ঐছন ভান ।

পাঠান্তর

100125441

>। সকল পুথিতেই 'নটরাজ' পাঠ আছে-बनिश्व छोहाटक दीन-मिनन मात्र बढि । २ । 'विटनांब' का था 'कडम' क, था

বিহপড়া।

ছ্হ জন নটন- পরিশ্রম অভিশয় প্রিয়-সহচরিগণ মেলি। নিকটিহি যমুনা- নীর সুশীতল

পৈঠি করত জল-কেলি॥ দেখ রাধামাধ্য রঙ্গে।

হেম-কমলিনি সঞ্চে নাল-কমল জমু
ভাসই ধমুনা-ভরকে॥
গ স্থিগণ করে করে বন্ধন

মাঝহি রাধা কান।

জল-মপুকং-ধনিও করে জল উছলনি
আনন্দে কয়ল সিনান ॥
অপক্ষপ খ্যাম- চরিত কোই সমুঝ্র
স্থি সঞ্জে কেলি-বিলাস।
স্ব জন মন্তমে নিকটে মঝু বিহরত
কহতহিঁইছ খ্যামদাস ॥৩৭।১২৮৯॥

পঠি।স্কর

১। 'সনে' ক। ২। 'মঙক' খা ৩। 'ধ্ৰনি' ক, খা

তথা রাগ।

রাধামাধব সখিগণ সক্ষ।
নাহি উঠল ভিরে মাছল অক ।
লভে নেলি কয়ল বসন পরিধান।
করভহি বছবিধ বেশ বনান ।
বৈঠল তুহুঁ জন নিরজন-কুঞ্জে।
রভন-পীঠ পর আনন্দ-পুঞ্জে।
বছ উপহার ভাহি আনি দেল।
ভোজন কয়ল সখীগণ মেল।
ভোজন কারি শয়ন-পরিষক্ষে।
মাপরি শুভলং নাগর-ক্ষেটা

ললিতা তামুল বীড় বনাই। উদ্ধবদাস কবে দেওব° বোগাই॥
॥৩৮॥১২৯০॥

পাঠান্তর

১। 'छोरत' क, च। २। 'छछन' क। • ७। 'करव रम ७व' ऋरन 'करत रम छन' ह।

श्नम्ह ।

ধানশী।

শরদ-পূর্ণিমা নিরমল রাভি উজোর সকল বন।

মলিকা মালতী বিকসিত তথি^১ মাতল ভ্ৰমরাগণ।

তরুকুল ভাল ফুলং ভরি ভাল সৌরভ পুরিল তায়। দেখিয়া সে শোভা জগ-মন-লোজা

দেখিয়া সে শো্ডা জগ-মন-লোজা ভূলিলা নাগর-রায়॥

নিধুবনে আছে রভন-বেদিকা
মণি মাণিকেতে বান্ধা।
ফটিকের তরু শোভিয়াছে চাক্ল
ভাহাতে হীরার ছান্দা॥

চারি পাশে সাজে প্রবাল মুক্তা গাঁথনি॰ মাঠনি কত।
কাষ্ট্রাক্ত কেন্দ্রাক্ত কঞ্চ-কটীর

তাহাতে বেঢ়িয়া কুঞ্জ-কুটীর নিরমাণ শত শত ॥

নেভের পতাক। উড়িছে উপরে কি তার কহিব শোভা। অতি রম্য স্থল বেদ"-অংগাচর

কি কহিব তার স্বাভা।

মাণিকের ঘটা কিরণের ছটা

এমতি মণ্ডপ-ঘর।

চণ্ডীদাস বোলে অতি অপরূপ নাহিক বাহার পর ১৩৯।১২৯১। পাঠান্তর ১। 'छर्जि' क, थ, हा २। 'क्न' थ, या ° ७। 'शंबनि' **प**, ह। ८। '(एव' थ। कांट्यान । বিলসিতে মন রুমণী-মোহন हरेल मद्राम श्रुनि। शिया बन्मावटन বসিলা যতনে রমিতে বরজ-ধনি ॥

> পুরে বনমালী मधुत्र मृत्रनी রাধা রাধা করি গান। একাকী গভীর বনের ভিতর বাজায় কতেক তান 🛙

> বাজিছে সখন অমিয়া-নিছন মধুর মুরলী-গীত। व्यविष्ठल कूल-রমণী সকল

শুনিয়া হরল চিত 🛭

ভাষণে বাইয়া রহল পশিয়া বেকতে বাজিছে বাঁশী।

আইস আইস বলি ডাক্রে মুরলী ষেন ভেল স্থ-রাশি॥

আনন্দ-অবশ পুলক-মানস স্কুমারী ধনি রাধে।

গৃহ-কর্ম্ম বড হৈল বিসরিত मकल कत्रिल वाद्य ।

যতেক রমণী রাইরের অগ্রেতে কহয়ে সধুর বাণী।

७३ ७३ ७न কিবা বাজে ভান **किमन कबरब्र शानी** ।

সহিতে না পাার মুরলীর ধ্বনি পশিল হিয়ার মাঝে।

বরজ-ভরুণী হইল বাউরী रित्रम कूरमत मारम

কেহো পতি সনে আছিল শয়নে ত্যজিয়া তাহার সঞ্চ।

কেহো বা আছিল স্থীর সহিত কহিতে রভদ-রঙ্গ।

কেহো বা আছিল ত্বথ-আবর্তনে চুলাতে রাখি বেসালি।

তেজি আবর্ত্তন হই আনমন **केइरन रम रमल हिला**

কেহো শিশু লৈয়া কোলেতে করিয়া ष्ठ्य क्यारार भान।

निश किल पूरम हिल (शन खरम শুনি মুরলীর গান।

কেহো বা আছিল শয়ন করিয়া नग्रात्न आहिन निम्म ।

যেন কেহো আদি **টোরাই লইল**° মানসে কাটিয়া সিক্ষ⁸ ।

কেহো বা আছিল রন্ধন করিতে ভেমতি চলিয়া গেল।

कृष्ठ-मूची देशम মুরলী শুনিয়া সব বিসরিত ভেল 🛭

शाहेल जमनि जकल त्रभगी কেহো কাহো নাহি মানে।

ষমুনার কুলে कमरखन मूल মিলল খ্যামের সনে 🛊

ত্রজ-নারীগণ দেখিয়া তথ্য रानिया मागव-वाव ।

রাস-বিলসন क त्रण वहन े विक हशीनांटन भार 18-152241

পাঠান্তর

১। 'कब्रिएड' च। २। 'कब्रारवन' क। ৩। 'বেন' ইত্যাদি স্থলে 'বেন চোরাই লইল' क; '(व क्टर्।' देखानि च। ४। 'निन्त' क; 'नीन्त' थ। १। '(कह काहा' क; '(करही कारही' ह।

মকল।

হেরি হর্ষিত মন ব্ৰজ-নাগরিগণ নাগর নটবর-রাজ। উলাসহি নিমগন নটন-বিলাস-**ट्रोक्टिंग** त्रमणि-ममाञ ॥ করে কর ধরাধরি युष्य यूष्य भाव मछिल ब्रिहिया स्कान। উপান্ন পাখাওজ বাজত বীণ মাঝহি রাধা কান॥ গগনহিঁ 8 নিরমল শরদ-সুধাকর কাননে কুন্তুম-বিকাশ। গাওয়ে অতি হস্তর কোকিল ভামর অমল কমল পরকাশ ! হেরি হেরি ফেরি ফেরি বাছ ধরাধরি নাচত রঙ্গিণি মেলি। নাগর রসময় জ্ঞানদাস কহ कक्र॰ कड (कोडूक-(कि ॥

পাঠান্তর

182175901

১। 'রম্বীগণ' ক; 'নারিগণ' থ, চ। ২। 'চৌদিৰে' ক। ৩। 'বুখে বুখে' ব। ৪। 'গগ-निर्वि च, ह। ६। 'ट्रक्ति एकति' इत्न 'क्ति किति' क; 'रक्ति' व। ७। 'क्त्र' क।

(क्लांच ।

শ্রামর-স্কল-কলারস-সাম। (भाति नागित कछ श्रमिट भनीम । হুত্ বনি বেশ বয়স এক-ছান্দ। রাজিত কঞ্চ মুঞ্চ মুখ-চাঁদ ॥ বিলসই° রাসে রসিক-বর নাহ। নয়নে নয়নে কত রস নিরবাহ॥ कुछ देवनगिध कुछ हित्य हित्य लाग। তুত্ঁক মরমে পৈঠে তুত্ত্ঁক সোহাগ। দুরুঁক পরশ-রসে দুর্ছ ভেল ভোর। বোলইতে বয়নে উগয়ে নাহি বোল ৷ পুরল হুহু ক মনোরখ-সিন্ধু। উছ্লিত ভেল তহি[®] সেদ বিন্দু বিন্দু । তুর্ত্ক পরশ-রঙ্গে তুর্ভ উমভায়। জ্ঞানদাস কহ মদন সহায় ।৪২।১২৯৪॥

পাঠান্তর

১। 'কুল্ল' ব। ২। 'মুল্ল' পাঠ সকল পুৰি-৩। 'বিলসহ' থ। ৪। 'ভেল তহি' খলে 'ছছ ভেন' ব।

युष्ट्रे ।

কুমুম নব পল্লৰ

কুঞ্জ-কুটীর ভ্রমরা ভ্রমরি কত রঙ্গে। পুরুখ যোড়ে যোড়ে সারি নারি শুক মউর মউরি কভং সঙ্গ ॥ রস অতি মোহন ভুবনে অমুপ রাস-ষড়-ঋতু নব নিভি নিভি। নিভি নব নিরবাহে রাই কাসু তাহে খেনে খেনে নবিন পিরিতি॥ পরশিতে গুণ দশ নয়নে নয়নে রস**°** ' বিহসিতে শত গুণ রঙ্গ। হুদ্র পরশাইতে (थरन (थरन खनरम ভাবে ভরয়ে হুহুঁ অস।

কোই কোই বাওত নাচত গাওত বিলসিতে বিগলিত বেশ। আবেশে অবশ তমু ভানদাস কহ তাহে কত কেলি-বিশেষ॥

1180122211

পাঠান্তর

১। 'কোরে কোরে' ব। ২। 'নউরি কড' গুলে 'ময়ুরীক' ক। 'মউরিক' ব, চ। ৩। 'রোব' क, थ। 8। '(त्रांव' क, थ।

Bair 13

ভরি নায়রং-কোর*। বিলস্ট রাই° সুখের নাহি ওর ॥এ॥ ধনি বৃক্তিণি রাই। বিলসই হরি সঞ্জে রস অবগাই ॥ হরি মানস সাধা। বিলসই শ্রাম পরাজিত বাধা ॥ रुति कुन्मत्र मूर्थि । ভাষুল দেই চুম্বই নিজ স্থাত । थनि त्रिणि (छोत्र। ভূলল গরবে কামু করি কোর॥ हुए हुए - खन भाग्रे । একই মুরলি-রক্ষে তুজন বাজায়॥ (कर करर मृद्ध ভाष। · নাগরি-পরশে অবশ পিতবাস ॥ **(क्र कां**ष्ट्रि नाम (वर्षे । রাস-রসে আজু ভূলল কাসু ।

188175941

পাঠান্তর

)। देश भ-त भूषित १८/৮ मरबाक भगा 'निवान' दल 'दनगंद' श-त्र। २। 'छति नांदद' ছলে 'হরি নার্রি' প-র। ৩। ধ পুর্বিতে প্রভ্যেক

অবুগা চরণের শেবে (২) অর্থাৎ পুনক্**জি**র চিচ্চ আছে, স্থতগ্ৰাং ধ পুথির মতামুগারে ভিরি নারর-কোর ভরি নারর-কোর।' ইত্যাদি পাঠ বুরিতে হইবে। 81 'नावती' क, था १। 'विनमहे हित मध्या স্থলে 'হরি বিলস্ট কত' প-র। ৬। 'পরাভব' প-র। १। 'मूर्थ' প-त्र। ৮। 'हृषहे निक ऋर्थ' ऋरन 'ह्यन यन ग्रंब' श-द्र। 🔊। 'जूनन' क, ब। ১०। 'इह' रेडामि भववर्षी कनिश्वनि भ-व श्रविटड नारे, তৎপরিবর্জে নিম্নলিধিত ভণিতা দৃষ্ট হয়, যথা---'বিদ্যাপতি কবি ভাব।

কহততি হেরত গোবিল্লাস ॥

क्ष हो।

वाकु अरमः वामन निर्ण। প্রেমে ভাসল সব বৃন্দাবন-বাদী । শ্যাম-খন বরিখয়ে কত রস-ধার। कारत तकिनि त्रांश विकृति मकात । कार्य भिष्म भव गमन स्वकः। गुगमत-हम्तन-भतिमल भद्र । দীগ° বিদিগ নাহি প্রেমের পাণার। ডুবল নরোত্তম না জানে সাঁভার ॥

পাঠাক্তর

186132391

>। 'ब्रह्मब्र' पा 'মুর্ক' ধ। ৩। 'सिन' का

থীৰাপ।

चारत, निकृक्ष-वरन ত্যামের সনে किक्रिश (पिथ्यू बोरे)। কেমন বিধাতা গঢ়লং মুর্তি লখই নাহিক যাই" ৷ কান্তুর বরণ **ठ**ण्लक-वज्ञी जारे।

মৃণি মরকড ঐছন রহল ঠাই ॥

কাঞ্চনে কড়িন্ড

কিয়ে অপরূপ

রাস-মণ্ডল

ब्रम्भी मधन-घटे।।

. পাইল **অ**চেডন•

দেখিয়া ও অক-ছটা ॥

ৰদনে মধুৰ

মনম্প-মন

হাস অধ্রের

रुपरम सपरम मण।

কোন রসবতী

রসের আবেশে

কুত্ম-শয়নে অক ৷

নবীন মেখের

নিবিড় আভা

তাৰে বিজুরি উলোই।।

मांग लांहरनव

রাই সরবস

ও রদ-আবেশ মোই ॥৪৬॥১২৯৮॥

পাঠান্তর

১। 'কিন্ধপ রাই দেখিলু' ব। ২। 'বটন' ক; 'বটল' চ। ৩। 'লখই' ইভ্যাদি হলে 'পিরিভি লখিতে নারিলু' ব। ৪। 'মিশাই' ব। ৫। 'মনে' ক, খ, চ। ৬। 'চেতনে' ক, খ, চ। १। 'রোই' চ; 'বোই' ক, খ। ৮। 'আবেশে' ক, চ।

दक्षात्र ।

আজু ছছ ভালে বনি।

হছঁ কান্দে ছহুঁ ভুল দোঁহে দোঁহা প্রেম-পুঞ্জ লাবণ্য-সায়রে যৈছে চান্দ চান্দনি । এজ।

হুন্দর সে মুখ ভাল ভিলক ত্রিভল লাল

হুন্দরী-সিন্দ্র-বিন্দু ইন্দু-বদনা।

শিরে শিখণ্ড বেণী মন্ত মউর ফণী

অভিরসে অবশ বিনদ বিনদিনী ॥

রস-ভরে পীনস্থানী ব্দশ্পিত জ্বন দলি

কটি টুটি পড়ে ভরে ফুক্রে কিছিণী।

অরণ চরণ-ভলেও ছহু প্রেম-রস-রজে। কুকুম-রঞ্জন নখ-মণি খনি খনি॥ ॥৪৭।১২৯৯৫

পাঠান্তর

১। 'চক্রিনি'য। ২। 'পিনছনি' য়ু 'পীন-হনি' চ। ৩। 'ভবি' য়। ৪। 'রবি' য়ু।

ততঃ সম্ভোগঃ।

ভূপানী।১

রাখাং-বদন হৈরি কাপু আনন্দ॰।
জলনিধি উছলই হেরইতে চন্দে॰॥
কতন্তু মনোরথ কৌশল কত রি॰।
কুম্ম্ব-শরে রাই কাপু অসম্বরি॰॥
পুলকে পুরলং তমু হৃদয় উলাস৮।
নয়ন চুলাচুলি আধ আধং হাস॥
সূত্র অভি বিদগধ অতুলনং নেহা।
রসের আবেশে বিছুরলং নিজ দেহা॥
হার টুটল পরিরস্তাং-কেলি।
মুগমদ চন্দন সব ছ্রেংং গোলিং৽॥
খসল কুম্ম কেশ ছত্র অভি ভোর।
নিলম্পিং৽ কাঞ্চন জড়িত উলোর॥
॥৪৮॥১৩০০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্ৰির ০৮০ ও প-র প্ৰির
০৭০ সংখ্যক পদ। 'ভূপালী' বলে 'ধান ব্রী' প-র।
২। 'রাই' প-র। ০। 'আনক্ষা' প-র। ৪।
'জলনিধি' ইড্যাদি বলে প-র প্রির পাঠ,—'জলবি
উচ্লে বৈছে হেরইতে চন্দা।' ৫। 'কড রি'
বলে 'ক্রি' ক; 'ভরি' প-র। ৬। 'ক্স্বেশ'
ইড্যাদি বলে প-র প্রির পাঠ—'রাধা কাম ক্স্বেশপর স্বরি।'

৭। 'পুরিড' ক; 'পুরিল' থ, চ। ৮। 'উরান'
ক, থ। ১। 'আধ আধ' স্বলে 'লহ লহ' প-র।
১০। 'অত্ল' থ; 'অনবধি' প-র। ১১। 'রসের'
ইত্যাদি স্বলে 'রস আবেলে বিসরি' প-র। ১২।
'দ্রে' ক, থ। ১৩। 'মুগমদ' ইত্যাদি স্বলে 'মুগমদ
কুর্মে পরিমল মেলি ১' প-র। ১৪। 'নীলমণি'
য়, চ।

শক্ষাভরণ।

কুহুমিত মধুবন মধুকর মেলি। পিককুল গাওত মনমৰ-কেলি ॥ निश्वरन भूगथल नागति कान। এক-কলেবর ছুত্ঁ ওকই পরাণ এজা **চান্দ চন্দন মন্দ মলয়জ** বাভি॰। অতিরসে বাদর নহে পরভাতি৽ ॥ রাধামাধব মধুর বিলাস। শহু অবলোকনে মুত্র মৃত্র হাস। রূপ কলা গুণ ছতু সমতৃলং। প্রেম পরশ-রস আরতি অমূল 🛚 নিবিড় আলিজন কয়ল অপার। চুম্বনে বদনে রচয়ে সিভকার[।] ॥ পুরল মনোরথ বিগলিত স্বেদ। ছুছ ভুমু একই নহত লব ভেদ। বিগলিত কেশ বদন ভেল আন। জ্ঞানদাস কহ একই পরাণ ॥৪৯॥১৩০১॥

পাঠান্তর

্)। 'হহ' শক্ষ ক, ধ পুথিতে নাই। ২।
'একুই'ক। ৩। 'বাডে' ঘ। ৪। 'পরভাতে'
ক। ৫। 'সমজুক'ক, চ। ৬। 'করক' ক, ধ,
চ। ৭। 'নীতকার'ক।

fatra

বড় অপরপ দেখিলুঁ > সঙ্গনি নয়লি মনিকুশ্ব মাৰে।

इसनील-मि কনকে স্বড়িভ হিয়ার উপরে সাজে কুত্বম-শগ্ননে মিলিভ নয়নে উলসিত অরবিক্ষা।। শ্যাম-সোহাগিনী কোরে ঘুমায়লি চান্দের উপরে চন্দা^e ম কুঞ্ছ কুফুমিত স্থাকরে রঞ্জিত তাহে পিককুল গান। मब्राम मनन-वान দোঁৰে অগেয়ান কি বিধি কৈল নিরমাণ # मन्म मलग्रक পবন বহ মৃত্ ও হুখ কো কক্ল অন্ত। দোঁহার তুহুঁ জন मद्रवम धन ক্ৰয়ে বায় বসস্ত ॥৫০॥১৩০২॥ ইভি তৃতীয়-শাখায়াং চতুর্বিংশভিপল্লবঃ।

পাঠান্তর

১। 'পেথিলু' থ। ২। 'নরলী' ক; 'নঙল' থ। ৩। 'কুঞ্জের' ক। ৪। 'অবেবিন্দ' ক। ৫। 'চান্দ' ক।

> অথ গোষ্ঠবিহারঃ। তহ্চিত-শ্রীগোরচন্দ্র:।

> > ञ्हरे। ভাটিরারি।>

লাধবান-ছেম- বরণ গৌর-জুভিং
মুখ বর শারদ-চান্দ।
অধিল ভুবন-মন- মোহন মনমথ°মনমথ° রাজকি ছান্দ ॥
দেখ গৌরচন্দ্র নব কাম॰।
আনন্দ-সার৽ মিলিভ নববিপেণ
প্রকট ভাব অবিরাম ॥ এ ॥

সঙ্গবশ-স্থসময় হেরি খেনে বোলড
হোয়ব গোঠ-বিহাবে।
পুন ভব বোলভ> সফল জিবন ২০ ভদু
যো ইছ রূপ নিহারে॥
ব্রহ্মপতি-নন্দন চান্দ চলভ বন
সৌধ উপরে চল ২০ যাই।
রাধামোহন ইছ রস ২২ মাগয়ে
সোই চরণ জমু পাই ১১॥১৩০৩॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮০৬ সংখ্যক পদ। 'প্রছই। ভাটিয়ারি' ছলে 'প্রছই' প-র-সা। ২। 'জ্যোতি' ক; 'মৃতি' চ; 'জুথি' প-র-সা। ৩-৪। 'মনরথ' প-র-সা। ৫। 'নব কাম' ছলে বর কান' প-র-সা। ৬। 'আনন্দ-সার' ছলে 'আজু সব মিলিড' প-র-সা। ৭। 'নবছীপে' ক, চ। ৮। 'সঙ্গর' ক, খ। ৯। 'রোরড' প-র-সা। ১০। 'জীবন' ক, চ। ১১। 'চলু' প-র-সা। ১২। 'বর' ক, খ।

मात्रुव ।> (पर दिन खारक श्रीत- तिर । বিজয় করু নিজ হুতে গোধন সঙ্গে কি করব না পায়ই থেই ॥ধ্রু॥ মুখ ধরি চুম্বন করতহিঁ পুন পুন नग्रदन शंलार्य कल-धांत । ভীগিং পড়য়ে ঘন ন্তন-গভ বসন ক্ষীর-ধারণ অনিবার 🛭 বিনিহিত নয়ন ব্য়ন-কমল পর रेयहन हान्मः हरकात्र। कीरमः भून (इत्रव দিন-অবসানে অমুমানি হোয়ত বিভোর। প্রেম ঘটায়ল কো বিহি অদভূত छाट्ट श्रुन देव श्रवमान ।

ভণ রাধামোহন অসুদিন ঐছন হোয়ভ রস-মহিযাদ ॥২॥১৩০৪॥

পঠিস্তির

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮০৭ সংথাক পদ। ২। 'ভিগি' ক, প-র-সা। ত। 'ক্ষীর ধারা' ক, চ। ৪। 'চেন্দ্র' ব; 'চেন্দ্র' চ। ৫। 'কিরে' ক, প-র-সা। ৬। 'হোড' ক; 'হোওড' ২, চ। ১। 'অভ্ত' ঘ, চ।

তথা রাগ। মওল ভাল।>

আজু বিপিনে যাওতং কান মুরতি মুরত° কুস্থম-বাণ অসু জলধর রুচির অক্স ভঙ্গি-নটবর-শোহনি। ইষত হসিত⁸ বয়ন-চন্দ তরুণি-নয়ন-ময়নণ-ফন্দ विष्यू-अधरत मूत्रलि-धूत्रलि ত্রিভুবন-মন-মোহনি ॥ কুন্ত্ম-মিলিড চিকুর-পুঞ চৌদিগে ভ্রমর ভ্রমরি গুঞ্জ পিঞ্চ-নিচয়-রচিত-মুকুট মকর-কুণ্ডল ডোলনি¹। চঞ্চল নয়ন খঞ্জন জোর সঘন্দ ধাওত ভাবণ-ওর গীম শোহত রতন-রাজ মোতিম-হার লোলনি> ॥ কটি পিত-পট>> কিন্ধিণি বাজ মদগতি অতি ২ কুঞ্চর-রাজ জামু ১ খন বিভ কদম্ব-মাল মত মধুকর ভোরণি>। छा इन १ - वजून ठ जून - कश्च ভক্লণ-ভরণি>ং-কিরণ গঞ্চ

গোবিন্দদাস-হৃদয় রঞ্জ^{১৬} মঞ্জ-মঞ্জির বোলনি ॥৩॥১৩•৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৫৭ ৩ ১৮০৮ ও প-র श्रुवित शह ७ २१।० मरशाक भव । 'जबा तांभ' ऋत्व 'কল্যাণ' প-র-সা; 'মাউর' প-র। ২। 'আবওত' क. थ. भ-ब-मा ; 'हनहे' भ-ब २१।०। ०। 'खबरु' খ। ৪। 'হাসত' ক। ৫। 'তক্লি-নয়ন-ময়ন' (সা-প. २०) नः পूथि) ऋल 'उक्ती-नम्रन-नम्रन' क, म, ह; 'ভক্ষণীগণ-নয়ন' थ: 'ভক্ষণিনয়ন বয়ন' প-র। ৬। 'ৰচিত' প-র। ৭। 'দোলনি' ক, ঝ, প-র ২।৫। ৮। 'সম্বন' ক, ধ, ঘ, চ। ৯। 'শোহত' (প-র ও সা-প, ২০১নং পুথি) স্থলে 'শোহন' ক, খ, ঘ, চ, थ-ब-मा) • । 'सामिन' थ-ब-मा ১६१०नः श्रम । ३)। 'शीख भंडे' क ; 'शीखशंडि' भन्त, २१।७। >२। 'মদগতি অতি' স্থলে 'ময়মন্তগতি' প-র-দাঃ 'মন্তগতি জিতি' প-র; 'মরমদগতি' সা-প ২০১ পুথি। ১৩। 'बनार' १-त २१।०; मा-१ २०> পृथि। >8। '(कांबवी' প-त २९।०। ১৫। 'अक्रम' প-त, जा-भ. २०५ श्रुषि। ५७। 'त्रक्षन' च. छ।

षुषी ।ऽ

গোঠেং বিজই ও অঞ্চরাজ-কিশোর।
জননী-বিরচিত ও বেশ উজোর ॥ধ্রু॥
আগে অগণিত কত গোধন চলিয়া।
গাছে অজ-বালক হৈ হৈ বলিয়া॥
সম-বয়-বেশ সবছ করে ছান্দ।
রাম-বামে চলু শ্রামর-চান্দ॥
মউর-শিখণ্ড চুড়ে ঝলমলিয়া।
মণিময় কুণ্ডল গণ্ডে টলমলিয়া॥
শির পর ছান্দ অধর পর মুরলি।
চলইতে পত্ত্বে করয়ে কত পুরলিশ॥

কটি-ভটে পীত পটাম্বর বনিয়া।
মন্থর-গতি চলু গলবর । জিনিয়া।
মণি-মঞ্জির বাজত ক্লণিকুনিয়া ।
গোবিন্দদাস কহই ধনি ধনিয়া। ৪॥১৩০৬।

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮০৯ ও প-র পুথির
২৭।২ সংখ্যক পদ। 'তুড়ী' ছলে 'করুল ভাটিয়ারি'
প-র। ২। 'গোঠ' ক, ধ, দ, প-র। ৩।
'বিজয়ী' ক। ৪। 'বিরাজিত' প-র। ৫। 'আগে'
ইত্যাদি ছলে 'আগে আগে গোধন অগণিত চলিরা'
প-র। ৬। 'এক' প-র। ৭। 'ধাম' প-র-সা।
৮। 'চাল্ম' প-র। ৯। 'খুরুলি' ৫। ১০। 'কুঞ্জর'
প-র। ১১। 'রণ্ডানিরা' ক, ও; 'কুনিকুনিরা' দ।

मलात्र ।>

গোঠে গোচর গৃঢ় গোপাল। গণ্ডকিরি গুর্জ্জরি গাওত গমকে গোরি গোল গান্ধার । গোপী-গোপ-গ্ৰীগণ8-গোপক (गांकुल-गांम - विश्वि । গুঞা গৈরিক গোরদ-গরভিত रगारबाहन-क्रहि--धाती **॥** গহন-গ্রহাগত গোচারণ-রত গো-দোহন-গভিঃ-কারী। গো-গিরিধারি গুড় গরবাইত ১٠ खक्र-रगीवव-भवताती ॥ গজ-গতি-গামি গান-গুণ-গুন্ফিড্>> गगटन हत्रस खुत्रवृत्म । গোরস-গাছিস্ शित्री वत्र १०-नमन गांख्य मांन (गांविन्म ॥८॥১७०१॥ পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সাপুথির ১৮১০ ও প-র পুথির ২৭।ৎ সংখ্যক পদ। 'বলার' ছলে 'মালফ' পার। ২। 'পোচারই' প-র। ৩। 'পোরিগণ' প-র-সা।
৪। 'গরিমগুণ' ক, ঝ, প-র-সা; 'পরীমগুণ' অ,
চ; 'গাবিগণ' প-র। ৫। 'গীম' প-র-সা। ৬।
'ভাবিত' প-র। ৭। 'ফ্রচির' ক, প-র-সা। ৮।
'গৃহাগত' প-র-সা। ৯। 'রভি' ক, ঝ। ১০। 'গো'
ইত্যাদি ফ্লে 'গো গিরি গুড় গুরুষা গরবাইত' প-র।
১১। 'গুক্তিও' অ। ১২। 'গ্রাহি' প-র। ১৩।
'গোঠেমার' প-র।

अग्रकश्रही ।>

মুদির-মরকত-**মধুর মূর**তি মুগধ মোহন ছান্দ। মল্লি-মালভি-মালে মধুকরং मछ मनमथ-काग्न । স্থুঘড়-শেখর শ্যাম স্থন্দর শরদ-শশধর-হাস। স্থবে**শ সম**-রস⁸ भटक भवग्रभ সতত হুখময় ভাষ ॥ঞ॥ চিকুর-চুম্বিত চিক্ণ চাঁচর চারু চন্দ্রক-পাঁতি। চকিত গাহনি চপল চমকিত চীভ-চোরক ভাতি। গিরিক গৈরিক গোরজ-গোরচন গন্ধ-গরভিত বাস। গরিম গুণ-গণন গোপ গোপন গাওত গোবিন্দদাস ॥৬॥১৩০৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮১১ ও প-র পুথির ২।১০ সংখ্যক পদ। ২। 'মধুমত' প-র। ০। 'সমবর' (পাঠান্তর—ক, খ), প-র-না, প-র। ৪। 'সমবেশ' প-র। 'ত্বেশ সমরস' হলে 'বরশ রসমর' প-র-না। । 'চরিত' খ। ৬। 'মণ্ডিত' প-র। ৭। 'পর্ম বর্মবিত' খ; 'গোরস প্রভিত' প-র-সা, প-র।

৮। 'গোগণ' ष; 'গোপাল' প-র-সা। ৯। 'গুণ-গান' ক, খ।

সারক।১

গোধন সক্তে त्राच्य यष्ट्रनम्बन् বিহরই যমুনা ঃভার। माम जीनाम স্থদাম মহাবল त्गांभ त्गांभांनः म्हां वनवोत्र॥ वाज्ञ घन घन विषाण (तन्। रेट रेट त्रव হামারব গরজন আনন্দে মগন চরত সব ধেতু ॥এ॥। সম-বয়^চ-বেশ কেশ পরিমণ্ডিভ চূড়ে^ শিখণ্ডক কুন্থম উজোর। মণিময় হার গুঞানব মঞ্ল হেরইতে জগ-জন-মন করু ভোর। কনক কটিণ কিন্ধিণি বলয় বিশাল म्পूद् क्रन् यूष्ट्र वाक । গোবিন্দদাস-পত্ নিতি নিতি ঐছন विश्वरे नव-घन विभिन ममाय ॥ 11600611611

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮১২ সংখ্যক পদ।
২। 'নন্দনন্দন' ব, চ, প-র-সা। ০। 'বামূন' ব;
'যমূনাক' প-র-সা। ৪। 'গোরাল' ক। ৫। 'সলে'
শক্ষ চ ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৬। 'নিসান'
ব; 'বিশাল' ক, চ। ৭। কেবল প-র-সা পুথিতে
'গ্রুণ আছে। ৮। 'রসমর' প-র-সা। ৯। 'চুড়' ব,
চ। ১০। 'কনক কটি' হলে 'কটি পর' প-র-সা।

অথ দিবাভিসারঃ।

থ্যট সারস ।>

তপনক তাপে তপত ভেল মহিতলং অতল বালুক দহন সমান। চঢ়ঙ্গ মনোরথে ভাবিনি চলু পথে তাপ তপন নাহি জান॥ প্রেমক গতি তুরবার³। নবিন-যৌবনি ধনি চরণ কমল জিনি তবহিঁকয়ল অভিসার ॥⊈॥ কুল গুণ গৌরষ সভি-যশ অপ্ৰধ **जृ** १ कि व ना मानस्य त्रास्य। मरशमिथ উছलल মন মহা মদন ছোড়ল কুল-মরিযাদে। জাতল অমুরাগিণি কভত্ বিঘিনি সাধল মনমথ-ভন্ত। নিবারিতে স্থবদনি গুরুজন-নয়ন পাঠ করয়ে মণিমন্ত। কেলি-কলাবতি কুত্বম সর্রাস কুলে (कोणत्न कग्रन भग्रान। ষত ছিল মনর৭⁸ পুরল মনমথ ইহ কবিশেশর গান ॥৮॥১৩১০॥

পাঠান্তর

३। हेडा প-द-मा পुश्चित ১৮১० मरबाक भन्। 'ख्रुबंहे नांत्रक' ऋरण 'ख्रुबंहे नांत्रको' च। २। 'सही-ভল'ক। ৩। 'অনিবার' ক। ৪। 'অনুরথ' চ। ध। 'मत्नात्रथ' च, ठ; 'करूत्रथ' च, च।

7147 IS

त्रत्य नम-नमन् महत्त्र मरण কত কত মত করি থেল। সময় বুবিং তৈখনে রাইক গমন-আন ছলে আপহি গেল। मक्त दांत्र (पथ भी गना-द्रका रेष्ट्रन जननिधि চাঁদক দরশনে উছলিত অধিক তরক' । প্র।

দূরহি ত্বহ মুখু হেরইতে তুওঁকর नग्रनिः वानमः नीत्र। ছহ অঙ্গ পুলকিত তুত্খরমাইভ কম্পিত হুহুঁক শরীর 🛭 কতভাঁযতনে ত্বভাঁ হোয়ল একঠাম ছুত্ত রুপ পিবইতে চাহ॥ রাধামোহন পত্ত চ কুর-শিবোমণি খেলত রম অবগাহ 🛭 🗦 🗎 ১৩১১ 🛭

পাঠান্তর

 हेर्श श-त्र-मा श्रुचित्र २०२० भःथाक श्रम । 'नाइक' ऋटल 'नातको' घ, छ। २। 'यञ्जका' क। ৩। 'मझनी হোর' ছলে 'मझनि হোর' ক, খ; 'সজনি হর' চ, প-র-সা। ৪। 'মিলন' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'অধিক তরঙ্গ' হলে 'আর কড तक' भ-द-मा। ७। 'क्र ' क, भ-द-मा।

रावनी ।>

দুরহিঁ ছুই হেরি ত্বহু পুলকাইত ছছ ভেল ভাবে বিভোর। छ्छ पाई। नित्रथर नव्रटन नव्रटन यव তব वहर व्यानन्म-(लाव ॥ मकनो (एथ द्राधामाध्य-(श्रम। ছহু নোহাঁ কি করব থেছ না পাওড जयु इन् मात्रिन-(रम 1810 ছ্ছ কর বচন রচন পুন গদ গদ वृष्टं अत्र (उन स्कम्भ । হুছঁ দোহাঁ পরশিতে তুহঁ ভেল নিমগন এছন হোরত স্তম্ভ । অপরুপ বিধূ-মণি ভূত্ত কিয়ে বিধুবর मयू मम कत्र ज्ञांभारम। রাধামোহনগ্-পক্ত ছহু অভি নিরুপম जिष्क्रवन कक्र व्यव**ः**म । 12001101

পঠিস্তির

১। देश প-त्र-मा পूषित ১৮১৫ ও প-র পুषित
১৫।২৫ সংখ্যক পদ। ২: 'বহু' প-র। ৩।
'বোর' খ। ৪। কেবল প-র-মা ও প-র পুষিতে
'গ্রু' আছে। ৫। 'ছছু' ইত্যাদি স্থলে 'হহুক ডেলছি কম্প' প-র। ৬। 'স্থরগ্রু' প-র। ৭।
'গৌবিন্দ দাস' প-র। ৮। 'অবশংস' ক, এ, চ, প-র-মা; 'পরশংম' প-র।

河河河 13

ঘন ঘন চুম্বন ঘন পরিরম্ভণ जूरक जूरक मधन वकान। খাতন তুত্ত জনং घन घन नथ-भंद्र-আনন্দে আপনা নাও জান। অপরুপ নিধুবন-কেলি। **क्तिविँ** होशे मांध्य অতি রসে নিমগন मनन-कनन छुद्रि (शिला ध्रमा তুত্ত দোঁহা উর পর নিচল-কলেবর করত সঘন সিতকার। থার বিজুরি কিয়ে অভিনব ঘনবর বেড়ি রহল অনিবার॥ मान यञ्चनमन কৰ সোই হেরব (शंग्रव (विन व्यवमान। তবছি নিবেদব শুক্ষুগ হেরি করইতে সো সমাধান ১১১৯১৩১৩

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৮১৬ সংখ্যক পদ।
'সারক্ষ' হলে 'সারক্ষী' ধ, চ। ২। 'বন ঘন' ইতাদি
পংক্তি ছইটির হলে—

'বন নথশর বাত ছহ' অন আনন্দ আপনা আপনা নাহি জান।' প-র-সা। ৩। 'নাহি' ক, ব, চ। ৪। 'অপরূপ' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'দ্রে' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'বির' ক, প-র-দা। ৭। 'ভবর্চ' ক, খ, প-র-দা; ভবহি'চ।

अहरे ।>

রাধা মাধ্য যের হত্ত মেলি।
নিদাঘক দাহ স্বর্গ্ত ক্রেই গেলি॥গ্রাঃ
তহিঁ পুন সরোবর মন্দির মাকা।
কল-জল-শাকরু-নিকর বিরাজ॥
সৌরভ-মিলিত সন্ধ্রহ মন্দ।
কি কর্ম দিনম্নি-ক্রিণ্ক বন্ধ॥
তহিঁ বর হুরত-বাপিণ অনগাত।
রাধামোহন পত্ত রসিক হুনাত ॥১২॥১৩.৪॥
ইত্যাদি গ্রীজ্ঞ সময়োচিত-মিলনম্।

পাঠাস্তর

> : ইহাপ-র-সাপুণির ১৮১৭ সংগ্যক পদ।
২। 'পুবে' ক, প-র সা। ৩। 'কন-জল-শীকর'
ক; 'ফল-জল-শীকর' চ। ৪। 'বাণী' ৮,
প-র-সা।

টীকা

৩—৪। তিছিঁ ইত্যানি। ওপার শ্রেবরন্থিত
মন্দিরের মাঝে কল কর্থাৎ ক্লোরারার জ্ঞল-কর্পা-সমূহ
বিরাজ করে। 'কল: শিল্প-বিশেষঃ ফুলারা হাত
ক্রাধানোহন ঠাকুরের টীকা। ৭। "তহি" ইত্যানি।
'স্করত্বের বালি দার্থিকা' ইতি রাধানোহন।

थाननो ।>

রাই নিয়ড় সঞ্জে চলু বরং কান।
সধাগণ মাকহি কয়ল পয়ান।
ফুরহিং নেগরি ধেমুগণ ধার।
স্হচরগণ সব মাললং তায়ং॥
ধেমুগণ অক্সহিং দেওতং হাত।
উচ্চাং পুচছ করি ধুনায়তং মাণ॥

সবহুঁ স্থাগণ পূ্ছত্ত্ব তাই।
কোন কাননে ছিলা ভাই কানাই॥
কাহে মলিন ভেল ভোহারি বয়ান।
যতুনন্দন হেরি আকুল পরাণ॥১৩১৩১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮২৬ সংখ্যক পদ।
২। 'ধ্ব' ক, চ। ৩। 'দ্রহি' ক, খ। ৪।
'মিলল' ক, প-র-সা। ৫। 'আর' ঘ। ৬। 'সক্ষি'
ঘ। ৭। 'দেরল' ঘ। ৮। 'উদ্ধ' ক, খ, প-র-সা।
৯। 'ঢুলারত' প-র-সা। ১০। 'পুছ্ড' ক, চ,
প-র-সা।

কক্লণ ভাটিরারি ।১

হিয়ায় কণ্টক দাগ বয়ানে বন্দন-রাগং
মলিন হৈয়াছে মুখ-শনী।
আমা সভা তেয়াগিয়া কোন বনে ছিলা গিয়া
তেয়া বিনে সব শৃত্য বাসি॥
নবখন-শ্যাম তমু ঝামর হৈয়াছে জমু
পাষাণ বাজিয়াছে রাজা পায়।
বনে আসিবার কালে, হাতে হাতে সোঁপি দিলে
ঘরে গোলো কি বলিব মায়॥
বেলাব বলিয়া বনে আইলাম ভোমার সনে
বিলয়া থাকিব ত্র-ছায়।
বনে বনে উক্টিয়া তেয়ের লাগি না পাইয়া
আমা সভার প্রাণ ফাটি যায়॥

11281170701

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮২৭ সংখ্যক পদ।
২। 'বন্ধন নাগ' ক; 'বন্ধন রাগ'ণ, প-র-সা।
৩। 'বেকেছে' ক; 'বাজিছে' প-র-সা। ৪।
'ঘর'ন, চ। ৫ 'থাক রে' প-র-সা। ৬। 'তলাসিন্ন'
প-র-সা।

অথ উত্তর-গোষ্ঠ-গৃহাগমনম্। শ্রীগোরচন্দ্র:।

তুড়ী।১

বেলি অবসান হেরি শচিং-নন্দন ভাবহিঁ গদ গদ বোল। কাপুক গমন-সময় অব হোয়ল रुनिरग्न (वनुकः (वांन ॥ সজনি না বুঝিয়ে গৌরাঞ্গ-বিলাস। প্রেমহি নিমগন রহত্হি অনুখন কথিত নাহি অবকাশ ॥ধ্ৰা খেনে পুন কহই निकरे श्वित्य अवध ঘন হান্তা-রব রাব। হেরইতে শ্রাম-চন্দ্ৰ অমুমানিয়ে গোকুল-জন যত ধাব ॥ এছন ভাতি করত কত অমুভব যো রসে কৃত-অবভার। রাধামোহন-প্র দো বর শেখর ভৈছন সভত বিহার ১১৫॥১৩১৭॥

পাঠান্তব

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮২৮ সংখ্যক পদ।
২। 'শচীনন্দন'ক। ৩। 'গুনিরা' দ, চ। ৪।
'ধেফুক' প-র-সা। ৫। 'কভিছ' ক, খ। ৬।
'নিকট' ইত্যাদি স্থলে 'নিকটই গুনিরে' দ, চ;
'নিকটিই গুনই' প-র-সা।

কাদতা বা পৌরী।১

গো-পুর-ধূলি উছলি ভরু অথব ঘনত হাথা-রবং হৈ হৈ রাব।

বেণু-বিষাণ- নিসান সমাকুল

সজে রজে সব সহচর ধাব।

বন সঞ্জে গিরিবরধর ঘর আভিয়ে । জলদ হেরি জমু হর্ষিত চাঙ্কি ব্রজ্বন্দাগণ মঙ্গল গাওয়ে ॥ধ্রু॥ কুটিল অলককুল গোরজ-মণ্ডিত° वर्श-मुक्ठे भरनारत हाना। বিপিন-বিহারি ছরম বরমাইত ঝামর নিল উতপল মুখ-চান্দ। ললিত মণি-কুওল কিশলয়-বলিত গগু-মুকুরে উজিয়ার। নটবর-শেখর (गाविक्समाम-পङ् হেরইতে জগ ভরি মদন বিথার॥ 11 JC02115C

পাঠান্তর

১। ইহা প্র-সা পুৰির ১৮২৯ ও প্র পুৰির ৩৫।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'রব' শব্দ প্র-র-সা পুৰিতে নাই। ৩। 'বনতে' প্রা ৪। 'বন সঞ্জে' ইত্যাদি এদ্ব-ক্লিটির স্থলে প্র-র-সা পুৰির পাঠ, বধা—

'বন সঞ্জে গিরিধর বরহি আয়ল

অলদ হেরি জয় আওয়ে।

সব জন হরষিত ব্রজ-রমণীগণ

মুলন সব ৩৩ণ গাওয়ে॥'

৫। 'মাওলা' ঘ। ৬। 'বরিহা' ক। ৭। 'ছরমে'

ফ। ৮।, 'নীলা' ক, খ। ৯। 'মুকুর' প-র।

পৌরী।১

ভরুণা-লোচন- ভাপ-বিমোচনহাস-স্থাকুর-ধারা।

মন্দ্র-মরুচ্চল- শিস্কু-কুভোজ্জ্লমৌলিরুদার-বিহারী।
স্থলরি পশ্য মিলভি বনমালী।

দিবসে পরিণভি- মুপগচ্ছভি সভি
নব-নব-বিভ্রম-শালী। গ্রা

ধেমু-খুরোজ্ত ২ রেণু পরিপ্ল তফুল-সরোকহ-দামা।
আচির-বিকসর লস্দিন্দীবরমণ্ডল-সুন্দর-ধামা॥
কল-মুরলী-ক্তি- কৃত ভাবক-রতিরত্র দৃগস্ত-ভরজী।
চারু-সনাতন- ভুমুরমুরঞ্জনকারি সুক্ষদগণ-স্থা॥: ৭॥১৩১৯॥

পাঠারর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৮০০ ও প-র পুথির ৩৫।৫ সংখ্যক পদ। 'গৌরী' ছলে 'মলার গৌরী চলত' থ, চ: ২। 'ঝুরোদ্বুও' (প-র) ছলে 'ঝুরোদ্বুত' ক, থ, ব, চ, প-র-সা, প-র।

6 41

১-->৫। রাধামোহন ঠাকুর-ক্বত টীকা ব**থা,** --"ওতঃ শ্রীক্বফং দৃষ্ট্য প্রাদাদ-শিখরাক্টা ব্রহ্মদেব্যঃ 'ভক্কণী-লোচন' ইভ্যাদিকং পরম্পরমৃচুঃ। হে স্করি! বনমাণী মিলতি বগৃংমাগছতীতি পশ্র। कीषुन:--- उक्नी-लांहनानाः उपिष्ठका या श्रान-সুধাস্কুরন্তদ্ধারণশীল:। তথা মন্সমক্তা চলেন চঞ্চ-লেন পিঞ্নে ক্বড উজ্জ্বলো মৌলির্যন্ত স শোভন-বিহরণশীলঃ মহাবিহারী বা। তথা দিবদে পরিশতিং भाष्टिः প্রাপ্তে সভি নবনববিজ্ञমো नौनाবিশেষো कावविर्णायां वा उत्पृकः। स्थल्थुरत्राकुरुन द्रश्ना পরিপ্লুতঃ তথা ফুল্ল-সরোকহদামা স চাসে) স চেতি। **७९कानविका**धि-लम्भिवदम्खनामव स्मादः धाम স্বৰূপং ৰক্ত তাদৃশ:। মধুরমুরলীশব্দেন কতা ভাৰকানাং ভবদীয়ানাং প্ৰীতিৰ্যেন সঃ। অন্ত স্বন্ধি দৃগগুতরদী। চাকী হকরীসনাতনী তহুর্যভ পকে স্নাত্ননামানং গোসামিনং তনোতি অৰ্থাৎ সানস্কং করোতি ধাতৃনামনেকার্থতা কলনা। তথা অহরলন-কারি-মুদ্দাণানাং সলী।"

অস্বাদ

১-->१। (इ ख्लाति ! एत्य, वनमानी चात्रसन

কারতেছেন। তিনি তরুণীগণের গোচন-ভাপনাশন হাস্ত-ম্ধাছ্র-ধারী, মল পবন-চঞ্চল শিধি-পুছে
উজ্জ্ল-চূড়া-বিশিপ্ত ও স্থল্পর ক্রীড়াশীল। দিবাঅনুসান হইলে তিনি নব নব বিলাস-বিভ্রম প্রাক্ষা থাকেন। তাঁহাব ফুল্ল-পঞ্জ্ঞ-মাল্য ধেছুখুরোদ্ধৃত ধূলি হারা সমান্ত হইয়াছে; তিনি অচিরবিক্সিত নীলোংপল পুঞ্জের ভার কান্ধি হারা শোভা
পাইতেছেন। তিনি মধুর মুরগী-রব হারা ভোমার
প্রীতি উৎপাদিত করিয়া, ডোমার পানে পুনঃপুনঃ
বৃদ্ধিম দৃষ্টি-পাত করিতেছেন; তিনি মুল্লর সনাতনতম্ব (পক্ষাস্তরে—গোভামা সনাতনের আনন্দারী)
ও চিত্তাম্বঞ্জনকারী হৃষ্ণগণের হারা বেষ্টিত
হইমা রহিয়াছেন।

दा हिंदू

গোঠেং প্রবেশ করায়ল গোগণ मधागप निक निक मिस्ति (शल। বৎসক বান্ধি ছান্ধি ধেমুগণ ঘন ঘন দোহন কেল। প্রশার শ্রামর-গঙ্গ। রঙ্গ পটাম্বর হার মনোহর (गा-भृति-धृमत अम ॥ ध ॥ নব নব পল্লব-গুচ্ছ-স্থমণ্ডিত চুড়ে শিশগুক বেঢ়ল দাম। মকরাকুত মণি-কুগুল দোলনি হেরই চমকি পড়য়ে কত কাম॥. বন-ফুল-মাল বিরাজিত উর পর কিঞ্চিণি-রণরণি নৃপুর পায়। গোবিন্দদাস-পত্ জগ-মন-মোহন ব্রজ্বনমণাগণ হর্ষিত ভায়।

পাঠাক্তর

1020611461

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'গোঠ' খ। ৩। 'করারল গোগণ' স্থলে 'গোপ স্থাগণ' প-র-সা। ৪। 'স্থাগণ নিজ নিজ' স্থান 'নিতি নিতি' প-র-সা।

> ष्यथ निर्भाखरत (गार्छविशानि। श्रीरागेत्रवस्य।

> > হুৰ্ট সাৰুল।১

হ্মরধুনি-ভীরং তীর মাহা বিলসই नम-वय वीलक नत्र। বলিত হরি হরি ধনিত করতল-তাল-নাচত নটবর-ভঙ্গ ॥ खग्न भहि-जन्मन8 ত্রিভূবন-বন্দন পূর্ণ পূর্ণ অবতার। জগ-অমুরঞ্জন ভব-ভয়-ভঞ্চন সংকীর্ত্তন পরচার॥ চম্পক-গৌর প্রেম-ডরে কম্পই ঝম্পই সহচর কোর। অঞ্চি অঞ্চ পুলককুল আকুল क्क-नग्रत्न कंक्र लाज ॥ ধনি ধনি ভাঙনিং চতুর-শিরোমণি विषग्ध-कोवन कीव। **८गाविक्सनाम** এ হেন রুদে বঞ্চিত অবহু শ্রবণে নাহি পাবু ॥১৯॥১৩২১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুশির ১৮৩২ সংখ্যক পদ।
২। 'ক্রর্থুনী-জীরে' ক। ৩। 'ধ্বনি' ক, ধ,
প-র-সা। ৪। 'শচীনন্দন' ক। ৫। 'ভাঙনি'
(প-স ও ব পুশি) হলে 'ভাবিনী' ক; 'ভাবিনি' ধ,
চ,প-র-সা। ৬। 'পিব' ক,প-র-সা।

শ্রীনিত্যানন্দচন্দ্রস্থা।

তথা রাগ।১ শোভা করে মুখ-শশী কমল জিনিয়া আঁখি कक्रगांत्र मञा भारन हांग्र । বাত পসারিয়া বোলে আইস আইস করি কোলে প্রেম-ধন সম্ভারে বিলায় ॥ কাঁচনিং কটির বেশ শোভিছে চাঁচর কেশ বান্ধে চূড়া অতি মনোহর । বুঁক বাহি পড়ে লোরে नाष्ट्रेया-ठेमरक हटन বিবিধ জীবের তাপ-ছরঃ। হরি হরি বলং বলে ভাহিনে বামে অল দোলে त्राम (गोत्रोमारमत गमा सति। নিতাই প্রেমের ফান্দ वश्रमांथा गूथ-हान्य ভাব-সিকু উছলে লহরী ॥ নিভাই করুণা-সিন্ধু পতিভ্ৰুণ জনার বন্ধ কক্ষণায় জগত ডুবিল। প্রসাদ হইল ধন্দ महन-महारू ७ भक्त নিতাই ও জিতে না পারিল ॥২০॥১৩২২॥

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৩৩ সংখ্যক পদ। २। 'क्रांक्ति' च, ह। ७। 'मरनांच्रत्र' च। ८। 'क्रांभ स्टब्न' थ। १। 'ट्यांग' श-ब-ना। ७। 'छाहिन' ৰ, চ। १। 'নিতাইর' ব। ৮। 'ভবসিছ্' ক, थ, घ, छ। । 'छेइटन नहत्री' ऋटन 'वनिहात्री' প-त्र-ना। ১०। 'व्यथम' প-त्र-ना। ১১। 'मरपत्र' ক। ১২। 'নিতাইহ' প-র-সা।

পাঠান্তর

पृष्ठी ।>

धीरत हमू माधन যমুনাক ভীরে मन्म मध्र त्वन् वां छहेर दि। বরজ-বধু কামিনি ইন্দিবর°-নম্ন সম্মন ডেজিয়া বনে ধাওই রে।

অসিত অন্মধর অসিত সরসিরুহ অভসি-কুম্বম অহিমকর স্বভা-নিরণ। रेख-नीलमणि উদার মরকভ-

শ্ৰী-নিন্দিত বপু-আভা• রে॥ निरत निथधनन नव कशाकन নিরমল মুকুভা লম্বিণ নাসাতলদ। নব কিশলয় অবভংস গোৱোচন

অলক তিলক মুখ শোভা> রে ॥ শ্রোণি পিভাম্বরণ বেত্রণ বাম কর कश्च-कर्ण वनमाना मरनाश्वारः। ধাকু-রাগ-বৈচিত্র> কলেবর

চরণে চরণ পরি শোভা রে॥ (गा-धुलि-धृमत विभाल वक्त थल) রজ-ভূমি জিনি বিলাস নটবর গো-ছান্দন রজু>৬ বিনিহিত কন্ধর क्राप खुवन-मनालाखांभ (द्र ॥

ত্রগা>৮ পুরন্দর দিনমণি শঙ্কর (या চরণার্ম্ম সেবে নিরন্তর> । সো হরি কোতুক জ্ঞজ-বালক সাথেং

গোপ-নগরিং> অভিলাসা রে॥ দো পত্ঁ-পদতল-পরাগ-ধূসরংং মানস মন করু আশা নিরস্তর। অভিনৰ সংকৰি দাস জগনাপ कननि-कठेब-छग्र-नाभा दि ॥

1157170501

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৩৪ ও প-র পুথির ২৭।৮ সংখ্যক পদ। ২। 'বাৰ্ট' প-র-সা। ৩। 'हेस्मीवत्र' क। ८। 'वध्' क, थ, भ-त्र-ना, भ-त्र। 'অসিত কুত্ৰ অহি করত ভূতানি রে' ক, ধ; 'অতসীকুত্ম মহিষকর ভাধানিরে' প-র-সা; 'অসিত কুমুম আহী মকর মুভা নির' প-র।

'রাভা' চ। १। 'ক্ষিড' ক, প-র-সা; ৮। 'নাসাতল রে' প-র । ৯। 'শোভনি' খ : ১০। 'গীতাম্ব' ক, খ। ১১। '(वर्ग' भ-त-मा। ১२। 'मरनाहत (त' क. প-র-সা। ১৩। 'বিচিত্র' প-র। ১৪। 'বক্ষত্রন' कः 'ককতল' প-র-সা, প-র। ১৫। 'নটবর রে' ক; 'নটবরে' প-র-সা। 'রঙ্গভূমি' ইত্যাদি স্থলে 'রক্তৃমি পর নাচত নটবর' প-র। ১৬। 'রজ্জু' ক, थ, भ-त्र-त्रां, भ-त । ১१। 'मरनारनांखा' क । ১৮। 'ব্রহ্মা' ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ১৯। 'নিরস্তর রে' ক, প-র-সা। ২০। 'সো হরি' ইত্যাদি হলে **'কৌভূকে সোহরি বর**জ বেশ ধবি' প-র। ২১। 'গোপ-নগরি' হলে 'নন্দ মন্দির' প-র। ২২। 'দো পহঁ ইত্যাদি (প-র) পংক্তিবয় ক, ধ, ঘ, চ ও প-দ্ৰ-সা পুথিতে নাই।

শ্ৰীপাছার।১

खब-नम्मकि नम्भन भीलम्भीर। इतिश-ठम्मन-छोमक खात्म तनी ।। শিখি-পুচছকি বন্ধনি বামে টলী । ফুল দাম নেহারিতে কাম ঢলী। অতি কুঞ্চিত কুম্বল লম্বি চলী । মুধ নীল-সরোরুহ বেটি অলী। **ज्ज-**मर्छ विश्विष्ठ दश्मभीः। নৰ বারিদ বিদ্যাত পার জনী>>॥ অতি চঞ্চল লম্বিভ পীত ধটী সং। 🌣 কল-কিঙ্কিণি সংযুত পীত কট্টি১০ 🛭 পদ-নৃপুর বাজ ভ পঞ্চ-শরং১৪। কর-বাদন নর্ত্রনাধ গীত বরং॥ পদ-নৃপুর বাজত পঞ্চরসে। किवा (वर्ष) विद्याशिष्ठ भेग में मटन । যোগি বোগ ভূলে মুনি ধান টলে। ধার কামিনি কাননে ঙেজি কুলে ৷

গজ সর্প সঞ্জে গিরিরাক চলে।

স্থা>-রূপ-ভূ-বীরুধং পুল্প-ফলে ॥

স্থাসূর লজ্জিত শাস্ত মনে।

পদ-সেবক দেব নৃসিংছ ভণে ॥

• ॥২২॥১৩২৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৩৫ সংখ্যক পদ। २। 'नौनम्बि' क, भ-त-मा। এই भन्नि '(ভাটक'-ष्ट्रान्य त्रिष्ठ ; हेशंत्र ०त्र, ७ंक्रे, २म ७ २२ म वर्ग अत्र ; স্তরাং অন্তা বর্ণটি শুক্ত হওয়া আবশ্রক। ১। 'হেরি'ক, ধ, পর-সা। ৪। 'বনি'ক, ধ, প-র-সা! ৫। 'পুছেক' क, थ, প-র-রা। ७। 'টিলি' क, च, भ-त-मा १। 'हिन' क, च, भ-त-मा । ৮। 'ठिनि' क, अ, अ-त-मा। २। 'खनि' क, अ, अ-त-मा। >। '(रुसमनि' क, च, ठ, প-র-সা। ১১। 'बनि' क, थ, প-ब्र-मा। ১२। 'धरि' क, थ, প-ब्र-मा। ১০। 'কটি' ক, খ. প-র-সা। ১৪। 'পঞ্চশরং' ক, চ। ১৫। 'নৰ্স্তক' প-র-সা। .৬। 'কিবা বেণু' चरन '(रवपू' क, थ ; '(रवपूस्तिन' च । ১१ । 'र्वाालिड' घा ১৮। 'मिश' क, थ, घ, প-র-সা। ১৯। 'শুক' প-র-সা। ২০। 'ভূবিকৃধ' ক, প-র-সা; 'ज्वोकन' य ; 'ज्वोत्रध' थ।

টা কা

৭—৮। "ভূর" ইত্যাদি। (শ্রীক্ষের) ভূজরূপ দণ্ড দারা স্থানরপ মণি পরাজিত হইরাছে।
(তাঁহার স্নীল অঙ্গ ও পীত ধড়া) বেন নবীন মেদ ও হির বিহাৎ।

১৭—১৮। "গজ" ইত্যাদি। (প্রীক্তকের
দর্শন লালসা হেতু) গজ সর্প প্রভৃতি প্রাণিগণ সজে
গিরিরাক হিমাচল ক্র্থ-জনক রূপবিশিষ্ট ভূমি, লতা
ও পূলা-ফলের সহিত সমাগত হয় অর্থাৎ তাঁহার
দর্শনানকে গৃথিবা পূলা-ফলে সরিপূর্গ হইরা উঠো।

विज्ञात ।>

শ্রুতিপাশ বিলাস মণি-মকরাকুতি कुछन मधिज गर्छ (मार्टन। চুড়াং শিখি সাজনি नहे-दिन इंटकन মালতি-মাল প্রসন্ন গলেও॥ বেণু বাজায়ত ধেন্দু চরায়ত कालिन्मि-छोत्र श्रुणीन - वरन। প্রিয় দাম শ্রীদাম স্থাম মহাবল এ সব গোপ স্থা সগণে ॥ অভি মন্দ স্থান্ধ বহে মলয়ানিল• উরত চূড়ে মউর-শিখও। धविल जाडल পিয়লি ডাকই মণি-মণ্ডিত করে পাচনি-দণ্ড॥ भिथि-शुष्ट्-भिरत्न नव-८भघ-क्रि**रि** मिन-कांक्करन-कृषिक (तन्-कतः। সিভ-চন্দনে চর্চিড নীল-তমুং বনমাল্য **গলে** বর-পীত-পটং॥ 120120261

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৮৩৬ সংখ্যক পদ।

২। 'চুড়া' ক, ঝ। ৩। 'দলে' ক, ঝ, ঝ, চ।

৪। 'পুলিন' ক, ঝ, চ, প-র-সা। ৫। 'সম্বনে'
প-র-সা। ৬। 'অতি মৃদ্ধ' ইড্যাদি কলিট কেবল ম্ব পুৰিতে আছে। ৭। 'লিখি-পুদ্ধ' ইড্যাদি প্লেটি প-র-সা পুথিতে নাই।

नीवण 13

গিরিধর লাল গিরি পর খেলন ভক্ন হেলনং পদ-পদ্ধক দোলনিয়া। অভি বল হ্বল মহাবল বালক কান্ধে ছাল্দ করে ভাড়া দোছনিয়া। গিরিবর নিকট বেলত খামকুম্মর খুৰ্ণিত নম্ন বিশালা। নোৰুন তৃণ হেরিয়া বসুনা-ভট **ठकल भाग (गांभाना ॥** স্থাগণ সজে त्रक नम-नमन উপনিত• যমুনা-ভার। পাঁচনি বেত্র বাম কক্ষে দাবই अञ्चल ভরি পিয়ে नोत ॥ প্রিয় বহুদাম এদাম মধুমকল তিরেশ রহি হেরত রঙ্গ। শ্রামল সুন্দর মুর্তি মনোহর হেরি যমুনা অতি বাঢ়ল ভরক ৷ 12811/0261

পাঠান্তর

১। 'গিরিধর' ইত্যাদি পদটি প-র-সা পুথিতে ১৩২৫ সংখ্যক পদের শেষাংশ-রূপে দিখিত হইরাছে।
২। 'হিলন' ব, চ। ৩। 'ভাঙ' ক; 'ভাড়ে' ব, চ।
৪। 'খ্যামস্থলর' ছলে 'নন্দনল্পন' প-র-সা। ৫।
'ব্যুনা-তট' ছলে 'সব বন মাহা' ব। ৩। 'উপনীড'
ক। ৭। 'অ্যাম' ক, ব, চ; 'দাম স্থ্যাম' প-র-সা।
৮। 'ভীরে' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাগ। ১

গলিত রজত-গিরি জিনি তমু স্থান জামু লখিত বন-মাল।

নীল বসন বনি অপক্সপ শোভনি

মরকতে ছীরং মিশাল॥

ধাওত ধবলি পাছে বলরাম।

চঞ্চল নয়ন চুলয়ে জমু প্রজ হোর মুগধ ভেল কাম ॥ জ্বা

উভ করে ধবলি শাঙলি বলি ডাকই

কোমল বংস লেই কাজে। সহলে খসয়ে শিখি-

পিঞ্• মনোহর

ছাব্দন-ভুরি দেই বান্ধে।

বয়ান চান্দ অধর জমু গ্রাহ্মলি

তাহে মধুর মৃত্ হাস।

বরিখনে অমিয়া শ্রবণ ভরি পীবইণ সহতর ফুল্দর দাস ॥২৫॥১৩২৭॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮৩৭ সংখ্যক পদ। ২। 'হীরক' ক; 'হারা' প-র-সা। ৩। 'ঢুলারে' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'করি' ক, খ।৫। 'কেমন' প-র-সা। ৬। 'পুছে' ক। ৭। 'লিনি' ক, খ। ৮। 'নরন' ক, খ। ৯। 'পিবই' ক, প-র-সা।

कांद्रियाति ।>

नील वनन

রতন ভূষণ

নাটুয়া মোহন বেশ।

বদন-ছাল্মেং

मनन कारमा

ठामत्री ठाँठत्र ८कम ॥

ভাহাতে বিনোদ চূড়া।

শিখণ্ড রচিত

গুঞ্জায় খচিত

বিবিধ কুহুমে বেড়া । ঞ ॥

গণ্ড-মণ্ডলেণ

এক' কুগুল

এক মঞ্চরি^{*} ফুল।

ठान्म-वम्दन

শিক্ষার নিসানে

ধাওয়ে ধবলিকুল॥

ৰধু-মঞ্চল

বামে স্থবল

ममूर्थ हिक्ग कामा।

ভার মাঝে রাম

জিনি কোটি কাম

যমুনা ছ কুল আলা।

मधागन সনে

जाशीरत्रतः वरम

ষমুনা-পুলিনে রৈয়া।

डबारग्रप् ८थन्त्र

वाकादम् (वनू

मान चन्मरवः रेनश ॥२७।५७३८॥

পঠিক্তির

> । ইছা প-র-সা পুথির ১৮৩৮ সংখ্যক পদ

২ । 'চালে' ঘ । ৩ ৷ 'বালে' প র-সা । ৪ ।
'মগুল' ঘ । ৫ ৷ 'দোলরে' প-র-সা । ৬ ৷ 'মুঞ্জি'

ক ; 'মঞ্জরী' খ, প-র-সা । ৭ ৷ 'ভাগ্ডির' ঘ ।
৮ ৷ 'চরার' ক , খ ; 'চরাইছে' প-র-সা । ১ ৷
'বাঞার' ক , খ ; 'বাজাইছে' প-র-সা । ১ ০ ৷
'মুল্লর' ক , খ , প-র-সা ।

पूड़ी ।>

চলত রাম স্থন্দর শ্রাম
পাঁচনি কাচনি বেত্র বেণু
মুরলি-খুরলি গান রিং।
প্রির শ্রীদাম স্থদাম মেলি
তর্মিণ-ডনরা-তীরে কেলি
ধবলি শাঙলি আও রি আও রি
ফুকরি চলত কান রিং॥
বরেসং কিশোর মোহন ভাতি
বদন-ইন্দু জলদ-কাঁতি
চার্য়-চন্দ্রিণ গুঞ্জাহার
বদনে মদন-ভান রি।
আগম নিগম বেদসার
লিলারণ করত গোঠ-বিহার
নিরমামুদ করত আল
চরণে শরণ দান রি॥২৭॥১৩২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৩৯ সংখ্যক পদ। ২। বেংপ-র-সা। ৩। ভেক্লি ক। ৪। বেং প-র-সা। ৫। বেরেসে ক, চ। ৩। ভিক্লিণ খা ৭। সীলার ক, খ। थानगी ।>

মরকত রক্ষত মিশাল।
শ্রাম রাম রূপ ভাল ॥
অংসহি ভুক অবলম্বি।
তৃত্ত তৃত্ত ললিত ত্রিভঙ্গী ॥
হেলন কেলি কদস্ব।
বনি বনমালং বিলম্ব ॥
দুক্ত মুখ চান্দ উজোর।
শ্রামদাস-চিত ভোর ॥২৮॥১৩৩০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুলির ১৮৪০ সংখ্যক পদ।
 ২। 'বিনি বন্দাল' ছলে 'বলি বলবান' প-র-সা।

অথ দানলীলা।

औरगोत्रहस्स।

মলার। সমতাল।>

হোর দেখ নব নব

मग्रमहि नित्र वह

গোরাজ-মাধুরি

রূপে জিতল কোটি কাম।

অক্ত অক

ঘামকুল সঞ্চরু

যৈছন মোভিম-দাম।

কম্পই থির নহ

হাসি কহত মৃত্ব বাত।

কো জানে কি কণে ঘর সঞ্জে আয়লু

ঠেकि राग् भागत शंख।

বেশক উচিত দান কভু না শুনিয়ে

কাহাঁ শীখলি° অবিচার।

वृत्थि दिश्य निवस्त वन (म॰ গোবর্জন॰

সূটবি ভূত বাটপার।

কো ইহ ভাব- ভরছি ভরমাইত

কিঞ্চিত পাটল আঁখি।

ন্ধাধামোহন কিয়ে আনন্দে ভূবৰ^দ ও রস-মাধুরি দেখি ॥২৯॥১৩৩১॥ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৪১ সংখ্যক পদ।
২। 'নীর'ক। ৩। 'কী' ঘ। ৪। 'শিখণি'
ক, চ, প-র-সা। ৫। 'বন সে' ক ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৬। 'গোবর্দ্ধন কানন' প র-সা। ৭। 'লুটবি'ক, প-র-সা। ৮। 'ডুবব' ক, চ, প-র-সা।

🔊 কৃষ্ণস্থ রূপং অস্মোচিতং যথা।

शननी ।

মুদির-মরক ড

মধুর মূর্তি

মুগধ মোহন ছান্দ।

মল্লি-মালভি-

মালে মধুক্র

यख मनमथ कान्स ।

ইভ্যাদি।*

অথ অভিসারাসুবন্ধঃ।

बाबने ।)

ञ्चलि छमहर बाष्ट्रक कथा।

তাপ দুৱে গেল

मव जान देशन

हें हा ॰ डे भिज्ञन यथी ॥ अ ॥

व्यक्षन উদয়ে

ত্রাশাণ-নিচয়ে

আইল গোকুল মাঝ।

জরতীর° স্বানে

किन निर्वतरन

আপন মনের কাজ।

এই পদটি ইতিপুর্বে :০০৮ সংখ্যক পদরপে উদ্বৃত হইলেও সক্পগুলি পুর্বিতেই এ খলে
পুনরার উদ্বৃত হইরাছে। এই পদটি এ খলে গণনা
করিলে নির্দিষ্ট পদ-সংখ্যা বাজিয়া বার; অভয়াং উহা
এ খলে সম্পূর্ণ উদ্ধৃত ও গণিত হইল না।

আমরা হরিবে গোবৰ্জন পাশে করিব যজ্ঞের কাম। ঘুত দিবে ৩থি যে গোপ-যুৰ্ভি रे**के** वंद्र भारत मान ॥ জটিলা শুনিয়া আমারে ডাকিয়া যভন করিয়া বৈল[ে]। গাবী-মুত লৈয়া বধুরে সাজাঞা তুরিতে তাহাঁই চৈল• ॥ সব সখীগণে এ সব বচনে बाइरयद्र कानन रहाय। গুণের সাগর সে ছেন নাগর मत्र**म ब्**रेटव ८मोग्र ॥ অভিরসে ভরি এত মনে করি অঞ্ছ হুবেশ কেল। স্থতের পদার সাজাঞা সহর मा प्राप्त कि कि ताम u এ কথা জানিয়া **८म ८य विद्या**णिया বান্ধিয়া ও চূড়া-চান্দে। ञ्चवलामि लहेग्रा व्याय भरव याहेवा त्रहल मानीत हाटम ॥ বেশুর নিসান করয়ে সম্ম वाकांग्र ७ व्यय-जूती। এ যত্ত্ৰন্দ্ৰ করে দরশন নিষিত্ আনন্দে ভরি ॥৩০॥১৩৩২॥ পাঠান্তর हेरा श-त-मा श्रुवित ১৮৪२ मःवाक श्रम । ২। 'শুন শুন' প-র-সা। ৩। 'ইছ' প-র-সা। ৪। 'স্বুবভীর' প-র-সা। ৫। 'কৈন' প-র-সা। ७। 'हन' प। १। 'ब्राहेब' क। ४। 'हात्म'

क, च, च, 'ठांक' श-त्र-मा। २। 'हांक' श-त्र-मा।

कांद्रिवाचि ।> **ठन**ि द्राजभ**र**भ রাই স্থনাগরি নাসবেশ করি অকে। স্থুত দধি চুগে সাজাইয়া পসরাং প্রিয় সহচরি° করি সঙ্গে । (वनन³ शाट्छेत्र कारक বান্ধিয়া কবরীণ বেজিয়া মালতী-মালে। সিঁথায়* সিন্দুর লোচনে কাজর অলক তিলক চাক্লী ভালে ৷ মণিময়-অভরণ এবণে কুণ্ডল गीरम ऋरतभन्नो रात । রূপ নিরুপম বিচিত্ৰ কাঁচলি পীন পয়োধর ভার । রাতুল আলভা চরণ-কমলে वाकनः नृशूत्र वादक । গোবিদ্দদাস ভণে ७ भ काभ दशेवदन ক্লিডব^{১২} নিকুঞ্জ-রাব্দে ১৩১॥১৩৩০॥ পঠিক্তির

বিনাগ।> অলকুল-নন্দন চান্দ হাম পেখলুঁ অপক্লপ কম কড বেরি।

প্রতি সঙ্গ রক্ত ভরক্তিম শোভন পুরবহি এতহু না হেরি। সজনীং কো ইছ মাধুরি অপার। যো হ্বধা-সিন্ধু विन्द्र नव भून भून মঝু আঁখি পিবই না পার ॥ঞ্॥ তমু তমু অতমু-युष किएम सम्बद्ध কিয়ে রুপ আপহি সেব। কিয়ে স্থমনোহর কান্তি-রূপ-ধর किएय वत-तम- श्राधित्व ॥ এত কহি গোরি ভোরি পুন অনিমিখ-नयन- हरक कक् शान। কিয়ে রাধামোহন সো বচনায়তে শ্লাঘই⁸ পাত্ৰ কান ॥৩২॥১৩৩৪॥ পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৮৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'সজ্জনি'ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'চ্যক' ক; 'চুসক' প-র-সা। ৪। 'লাখ্ছি'ক,খ,ঘ। টীকা

৮—১১। "তম্ম" ইত্যাদি। কন্দর্প-সমূহ কি (তাঁহার) প্রতি অজ সেবা করিতেছে? কিংলা তিনি নিজেই নিজের রূপের সেবা করিতেছেন? (তিনি) কি (জনির্বাচনীর) রূপ ও কাত্তিধারী! (তিনি) কি শ্রেষ্ঠ (পুলার)-রূসের জধিষ্ঠাতৃ-দেবতা?

यत्राष्ट्री ।>

সহচরি সজে রজে চলু কামিনি দামিনি বৈছে উজোর।
গোবর্ত্ধন-ভট নিকট বাটহিং
লেই বজ্ঞ-ম্বুভ ঘোরণ ॥
দেশ সখি অপরুপ রঙ্গ।
নিরুপম বিগাস রসায়নণ পিবইডে
দুলুঁ কন পুরাকিত অক্স ॥

ত্ব সঞ্জে দর্শন অনিষিধ লোচন
বহত হিঁ আনন্দ-নীর।
আনন্দ-সায়রে ডৃবলং তৃত্ জন
বহু খণে ভৈ গেল থীর• ॥ গু॥
অভিশয় আদর বিদগধ নাগর
রাই নিয়ড়ে উপনীত।
ইহ যতুনন্দন নির্ধই তৃত্ অন
অভিন্থে নিমগন-চীত ॥৩৩॥১৩৩৫॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮৪৫ সংখ্যক পদ।
২। 'নিকট বাটহি' ফ্লে 'নিকটিছি বাট' ক,
প-র-সা। ৩। 'ঘোর'(প-র-সা) ফ্লে 'ঘোল' ক,
গ; 'থোর' ব, চ। ৪। 'নিকপম' ইন্ড্যান্ডি ফ্লে প-স গ্রন্থের পাঠ—

'নিকপম প্রেম- বিলাস রসায়ন পিবইতে পুলকিত অক।' ৫। 'ডুবল' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'পির' ২, প-র-সা। ৭। •'চিত' ক, প-র-সা।

ত্রথ রূপোল্লাসঃ।

थाननी ।>

ञ्चन त्र वनत्व

সিন্দুর-বিন্দু

শাঙরং চিকুর-ভারণ।

অনু রবি শশি সক্ষহি উরল

পিছে করি আধিন্নার ॥

রামা হে॰ অধিক চল্রিমণ ভেল।

কত নাণ বতনে কত অনস্তুত

বিহি বহি ভোহেণ দেল ॥ধ্রু॥

উরজ-অঙ্কুরণ চিবেনণ কত না গোপদিণ

হিমেণ গিরি না শুকার ॥

চঞ্চল-লোচনে বৃদ্ধ নেহারণি>

অন্ত্রন শোভন ভার>

অনু ইন্দাবর পবনে পেলল>

আল-ভবে উলটায় ।

ভগ্ন বিস্থাপতি

এ সব এরূপ জান

রায় শিবসিংহ রূপনারায়ণ

লাহ্মা দেবি প্রমাণ ।৩৪৪১৩৩৬॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৪৬ ও প-র পুথির ১৬।० : मरश्रक भरा २। 'मांडन' क, स, ह, প-র-সা। ৩। ভারা প-র। ৪। আহিয়ারা প-র। ৫। 'রামা তে' ফলে 'রুধামুখি' প-র। ৬। 'চাকম' প-র-সা: 'চন্দ্রীমা' প-র। १। 'কভ ना' ऋरन 'कडक' भ-त्र। । 'वह खांह' ऋरन 'নিধি ভোরে' ক, ४; 'না ভোহারে' প-র-সা। ১। 'উর্জ-অভুর' ফ্লে 'উরত উর্জ' প-র। ১০। 'होरब' क, थ, श-ब-मा। >>। 'र्थात र्थाब' ऋग 'পুন পুন' প-র। ১২। 'কত না' ছলে 'কতহ' প-র। ১৩। 'না পোপদি' ফ্লে 'লুকাওই' প-র। ১৪। 'हिबा' भ-ब-मा; '(रूम' भ-व । ১৫। '(नहा-রই' প-র। ১৬। 'শেভন তার' ফলে 'শেভন পার' ক, খ; 'শোভিত পার' প-র। ১৭। 'প্রনে (भनन' ऋरन 'भरत (भनिन' घ, ठ, भ-त्र-मा; 'भवत्न दिनम' भ ; 'भडत्न (भनम' भ-त्र। ३৮। 'क्र्ट्र' भ-त्र। ১৯। 'धनर पुर्विक' ऋरण 'धन ञ्चवहनि' भ-ता २०। 'এ नव' ইভাদি স্থল 'এ সৰ স্বৰূপ জান' ধ; 'তুরা রূপ স্বন্থপান' প-র। २)। 'त्रात्र' हेन्डावि ऋल প-त्र পूबित्र शांठ रथा--'मित्रा किवा निधि নির্মিল বিধি

যোহিতে নাগর কান ।' টীকা

>--৪। "অ্বনর" ইত্যাদি। (তোনার) ক্সবর বয়নে সিন্দুর-বিন্দু ও কেপ-ভার স্থামবর্ণ; (বোধ হয়) যেন (সিন্দুর-বিন্দু-রূপ) ক্র্যা (চন্দ্র-বিন্দুরূপ)
চল্লের সলে পশ্চান্তাগে (কেশ-পাশরূপ) অন্ধরার
করিয়া উদিত হইল ! ("অভুতোপমা" অলম্ভার)।

৫---৭। "রামা" ইত্যাদি। হে ক্মন্দরি!
(রবি ও চক্র একল উদিত হওরার) অধিক ল্যোৎসা
অর্থাৎ প্রকাশ হইল ; না লানি কত বত্বে বিধি
তোমাকে উহা (বহি = ওহি) দিয়াছেন !

वबाडी ।>

বচন রচনগণ কাসুক্ মধুর শুনইতে নায়রিং ভোর। মধুরিম-হাস-মিলিভ নয়নে থোর চাহনি তাকর ওর ॥ সজনী কো কন্ত প্ৰেম-বিলাস। निक निक कीरन হেরইতে ঐছন নীছন করু প্অভিলাধ ॥ প্রাণ ॥ নয়ন-শর বরিষণে তুত্তন নয়ন হানল ছহ কর চীত। রস-আকুতে ভরি আন ছলে নাগরি অনতহি ভেল উপনীত। নাহ রসিক বর পত্ব আগোরল কহতহি চভুরিম বাত। আনন্দে নিমগন मान वष्टनमन শুনতহি পুলকিত গাড় ॥৩৫॥১৩৩৭॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্ৰির ১৮৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'কাহর' ক, চ। ৩। 'বচন রচনপণ' হুলে
'ৰচন রচন' ক, ঝ; 'রচন ভনিতে' প-র-সা। ৪।
'ভনইতে নাররি' হুলে 'নাগরী হইলা' প-র-সা।
৫। 'নীছন করু' হুলে 'নিছন করু' ফ; 'নিছন
করি' প-র-সা। ৬। কেবল প-র-সা প্রিতে 'রু'
আছে। ৭। 'নরনে' ফ। ৮। 'চিড' ক, প-র-সা!

সিমুড়া ।১

আহির্-রমণী যত চালাঞা বাহির পথ আপনে যাইছ॰ আন ছলে।। वाह नाडा पित्रा यांड॰ मानी भारन नाहि हांख এত না গরব কার বলে। হেদে লো কিশোরি গোরি শুনহ বচন মোরি ভোর দান না করিব আন। এতেক শুনিয়া তবেদ হাসিয়া বোলয়ে সভে किया मान कह (मिश्र कान ॥ পুন হাসি কহে বাণী শুন অংহ বিনোদিনি অল্ল নিব>> তোহারি>২ পিরিতে। সে বা যত দান চায় পীত-বাস কাম-রায় ভাহা পুন>**॰ না পারিবে দিতে ॥**>° এক লক্ষ দান তার গলে গলমোভিঃ - হার कुरे लक्क जिँबाग्र जिन्सृत। দান মাগে পীত-বাস তিন লক কেশপাশ চারি লক্ষ পায়ের নৃপুর॥ পাঁচ লক্ষ দান তারি> कुञ्चम-कवत्री वृत्रि

মোগ করোঁ শ্বাজ-সেবা কাঁচুলীতে সুকা কিবাস্ দেখাইয়া করাও পরতীত ॥ কেশ জানে কিসেয়ং দান,

नरह कह (य दश উচিত।

কি বোল বলিলে কানং ।

অন্ত হৈলেং আমি ভালে জানি।

বদি পুন হেনং বোল মাধার ঢালিব ঘোলং হাসিল জনস্ত-প্রভূতিনি ॥৩৬॥১৩৩৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৪৮ ও প-র পুথির ২৮।৪ সংথাক পদ। ২। 'আইীর' ক্র 'আহিরি' প-র-সা। ০। 'চালাইরা' ব, চ; 'চলাইরা' প-র-সা। ৪। 'আপনি চলবে' প-র

ৰ। 'জুলে' প-র-সা। ৬। বার' ব। ৭। 'বোলে' ব, চ। ৮। 'সভে' প-র। ৯। 'তবে' প-র। ১০। 'ওবে' ক, ব, চ, প-র-সা; 'হের' প-র। ১১। 'লব' প-র। ১২। 'তোমার' ক। ১০। 'তুমি' ক, প-র। ১৪। অতঃপর প-র পুথিতে নিয়লিখিত কলিটি দুই হয়, বধা—

ণানীরে ভাড়াঞা গোরি নিতি বাও মধুপুরী হেন কান্ধ না হয় উচিত।

ভন ব্ৰভাহ্ব বি আঁচলে ঝাপিলে কি দেখাইয়া কর পরতীত ॥'

১৫। 'গলার মোভির' প-র ৷- ১৬। 'কুম্ম' ইড্যাদি কলিটি প-র পুথিতে নাই। ১৭। 'ক্স্ম' ধ, 'ক্র' প-র-সা। ১৮। 'লুকি কিবা' প-র-সা। ১৯। 'কো' থ। ২০। 'কেশের' থ। ২০। 'কিবোৰ' ইড্যাদি স্থলে 'কিবা বলিলেন' প-র-সা। ২২। 'নহে' প-র। ২০। 'এমন' ঘ। ২৪। 'ডবে পাবে প্রতিফ্ল' ক, খ, ম, চ।

দ্বাড়ী।>

এই তং বৃন্দাবন-পথে।

নিতি নিতিও করি গতায়াতে ॥

যদিও হাতে করি লইয়েও সোণা।

ভূমি কে না কহে কোনও জনা ॥

ভূমি দেখি পুছহ বড়াই।

কিসের দান চাহেনও কানাই ॥ এ৮ ॥

সঙ্গে সবেও স্থাতেরওও জঞ্চাল ॥>>

ভূমি কেনে এতেক জঞ্চাল ॥>>

ভূমি কেনে করিবে জকাল ॥

ভূমি কেনে করিবে জকাল ॥

দূর কর হাস পরিহাস।

কহতহি ১২ গোবিক্ষদাস ॥৩৭॥১৩৩১॥

পাঠাত্তর

>। देश প-त-ना পृथित >৮৪> ७ প-तु পृथित २৮१० गरशुक्र भग। २। 'अहिड' প-तु-ना क, । 'মিভি' শক্ষ প র-সা প্রিতে নাই। ৪। 'বিদি'

শক্ষ ক, খ, চ ও প-র-সা প্রিতে নাই। ৫। 'করি

লই যাই' ক, খ, চ; 'করি লইরা' ব; 'করা

লঞা' প-র; 'করি লরা' প-র-সা। ৬। 'হেন'

ব, চ। 'তৃমি' ইত্যাদি স্থলে 'কেহত না বোলে

কোন' প-র-সা। ৭। 'মাগেন' প-র। ৮। কেবল

প-র প্রিতে 'ঞ্জ' আছে। ৯। 'সভে' প-র-সা,

প-র। ১০। 'দ্ধির' প-র। ১১। অতঃপর প-র
প্রিতে নিম্নিরিভিত পংক্রিবর দৃষ্ট হয়, যথা—

'সবে আছে স্বত হগ্ধ দৰি। ইহাতে পাইবে কোন নিধি॥' ১২। 'দেখতহ' প-র।

धाननी : >

গরবহি জন্দবি চললহ আন্তং নাগ্ৰ পদ্ম আগোৱ। কহতহিঁ বাত দান দেহ মঝু হাত আন ছলে কাঁচলি ভোড়ে ॥ অপরুপ প্রেম-তর্ক।

দান-কেলি-রস- কলিভ মহোৎসব বর কিলকিঞ্চিত-রক্ষ । শ । অলপ পটিল ভেল অথির দৃগঞ্চল ভহি জল-কণ প্রকাশ ।

ধুনাইত ভুক্ত-ধ্যু পুলকে পুরল ত্যু অলথিত আনন্দ-হাস ৷

· ঐছন হেরি চকিত পুন তৈখনে• বাহুড়ল পদ ছুই চারি।

রাধা মাধব **চুত্ঁকর পদতলে** রাধামোহন বলিহারি ॥৩৮॥১৩৪০॥

পঠিবির ১। ইহা প-রংসা পুথির ১৮৫০ সংখ্যক পছা। ২। 'চলল আপন পথ' কঃ 'চলল আন পথে' শ,ব,চ। ৩। 'ডোর'ক, ব,চ। ৪। 'ফ্র' খ, খ, চ। ৫। 'পুরল' ক। ৬। 'তৈথন' ক, চ। ৭। 'পদতল' প-র-সা।

विवर्ग

১--->৫। পদকর্ত্তা রাধামোহন ঠাকুর শক্ত টাকার লিখিরাছেন,— "ততঃ গরবছি ফ্লারি" ইত্যাদিনা তৎকোশগম্দাহরতি। অপুর্কোহরং প্রেম-বিলাসঃ বেন দানকেলিরসে কলিতো জনিতো বো মহোৎসবস্তার বরঃ কিলকিঞ্চিত্ত রকঃ কৌশলো জাতঃ। তল্লকণং বণা শ্রীমহজ্জগনীলমলে),— 'গর্কা-জিলাব-ক্লান্ত-শিতাছ্যা-ভর-ক্র্ধাং। সঙ্করীকরণং হর্ষাহ্চাতে কিলকিঞ্চিতং॥' 'আনত' অক্তা। অল প্রথমচরণে গর্কঃ ম্পাইঃ। 'অলপ পাটল' ইত্যানেন জোধঃ। 'তহি জল-কণ' ইত্যানেন রোদনং। 'র্নাইত ভূক-ধরু' ইত্যানেনাস্থা। 'পূল্ভে প্রকা' ইত্যানেনাভিশারঃ। 'অলখিত আনন্দ-হাস' ইত্যানেন শ্বিতং। 'তেগ্রেন বাহুড়ল পদ হই চারি' ইত্যানেন ভরং ইতি সপ্ত।' টাকা প্রাঞ্জল বলিয়া অনুবাদ জনাবশ্যক।

ভাটিমারি ৷১

দানী হইয়াছ **এই मन्त वरन** ছুঁইতে রাধার অস। রাথাল হইয়া बाज-कूमाबी जटन॰ কিসের রভস⁶ রজ। এমন আচর নাহি কর ডর খনাঞা পাসিছ কাছে। করিব গোচর গুরুবর আগে তখন জানিবাদ পাছে ॥ ছুইয় না ছুইয় না निज्ञ कानारे व्यामना भरतन नानी। পর-পুরুবের गटिएन भे निर्मात कि ।

গিরি গিয়া যদি গোরী আরাধহ পান >> কনক-পুমে। কামনা করহ কাম-সাগরে (वनी-वन्त्रिकाव्याम ॥ সূর্য্য ২-উপরাগে मरख स्मारी ব্রা**ক্ষণে করহ সাত** । ভোমার শক্তিঞ তভু হয়ে নহে› त्राह-कारक मिटल हां ॥[>] বচন মানহ ८गाविन्स मारमञ না কর এমন छ। যোই নাগরী ও রসে আগরিণ কর্ছ তাক্র্য সঙ্গ ॥৩৯॥১৩৪১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-না পূথির ১৮৫১ ও প-র
পূথির ২৮৮ সংখ্যক পদ। ২। 'এমন বলেতে'
প-র-না। ৩। 'স্কে' ক, ধ, ঘ, চ। ৪।
'স্বরত কসের' প-র। ৫। 'আচার' ঘ। 'এমন
আচার' ইত্যাদি কলিটি প-র পূথিতে নাই। ৬।
'বনাইরা' ঘ, চ। ৭। 'গোচরে' ঘ। ৮। 'গোনিবে'
ফ। ৯। 'ছুইও না ছুইও না' ক; 'ছুর না
ছুর না' ঘ। 'ছুইর না' ইত্যাদি কলিটি প-র-না ও
প-র পূথিতে নাই। ১০। 'সচেল' ঘ। ১১।
'পান কর' ক, থ, চ, প-র-না, প-র। ১২। 'স্বরজ'
ক, ধ, ঘ, চ, প-র-না। ১০। 'সাথ' প-র-না।
১৪। 'ভুলু তো না হুর' প-র-না; 'ভবে হর নর'
প-র। ১৫। 'তুরা অধিকার' পর। ১৬। অভংপর

গোএর মলা বদি তুলিয়া কেলাই
সেহ হর কাচা সোনা।

ইথের যায় বদি বুছিরা কেলাই
সে হর চাক্ষের কোণা ॥

বাছ গন্ধ নাই তোনার কথার
বুছকি বুচকি হাস।

এ রূপ দেখিরা আগেনা চাছিতে, ছিছি কাজ নাহি বাস : ১৭ ৷ 'আগোরি' অ, প-র-সাং ১৮ ৷ 'তাহার' প-র-সা, প-র :

ोका

১৪। "পান" ইত্যাদি। রাধামোহন ঠাকুর গিধিরাছেন,—'পান কনক ধুমে' ইতি কনকধুম-পানং অতি-কঠোর-ভপত্যাবিশেষঃ যতেছেখেমুখঃ সন্কনকবণধুমং পিবন্ ছল্লাভাগিবত-সিদ্ধার্থং তপতি।' অগাৎ 'কনক-ধুম-পান' শক্ষের অর্থ অভিকঠোর তপত্যাবিশেষ,—বাহাতে উদ্ধান্ধ ও অধার্থ-ভাবে থাকিয়া কনক-বর্ণ ধুম অধাৎ আমি-শিধার অব্যবহিত অ্পাত্ত ধুম পান করিয়া অভাই-শাভের ক্ষম্ভ তপ্যা করিতে হয়।

शांत्री ।>

তোহারি হৃদয় বেণি-বদরিকাশ্রম উন্নত কুচ-গিরি কোরং। কনক-ধৃম পিৰি क्षमात्र वषन-छनि তত্ত্বি তপত জিউ॰ মোর। স্থন্দরি ভোহারি চরণযুগ° ছোড়ি। कारी छाँग या धर গোরি-আরাধনে ভূত সে ভিরিথময়ি° গোরি ॥ পা मुशमनः भदन्तः সিন্দুর স্থান্তর এহি" সুরজ-গ্রহ আনি"। রাজহি দোঁপলু তুলা পদ-নখ-দিজ> --স্থন্দরি সহস্র>> পরাণি>ং ॥ मरकरे निभगन কাম-সাগরে হাম কাম পুরবি তুর্হ রাই। **हर एन नां रेन वि** শ্যামর বলি অব ১০ (गांविसमात्र सूच ठाइ 1801) 2821

পাঠাক্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৫২ ও প-র পুথির ২৮।৯ সংখ্যক পদ। ২। 'জোর' প-র। ৩। 'মন' প-র। ৪' 'নিরড় অব' প-র। ৫। 'তিরিথমর' ক, থ, চ, প-র-সা, প-র। ৬। 'মৃগমদে' ক। १। 'মৃগমদিকু সিকুর পরশন' প-র। ৮। 'এই' ক; 'সেই' প-র। ৯। 'জান' প-র। ১০। 'বিজ' ক, থ, চ, প-র-সা, প-র। ১১। 'সহজ' প-র। ২২। 'পরাণ' প-র। ১০। 'রামক বোল' প-র। ১৪। 'নাহি' প-র।

मध्य ।>

স্থিগণ সমুখহিং কাতরে কামু যব ञ्चविनय् कत्रमहिँ मीर्र्छ । তৰ তহু অভিমত করইতে কোই স্থি গোপতে বচন কহু মীঠে ॥ স্থন্দরি অলখিতে হও তিরোধান। কুটিরে অতি গোপতে গিরিবর-কুঞ্জ-যাই রাখহ নিজ মান । ঞ ।। চরিত বর গিরিধর ইছ অতি চপল-কিয়ে জানি করু বিপরীতে। 🗢 নি উহ স্থবচন ভীতহিঁ জমু জন রাই করল সোই নীতে॥ বুঝি পুন নাগর সব গুণ-আগর অলখিতে তহি উপনীত। দেখি স্থনাগরি রাধামোহন व्यानरम्य निमर्शन-होड ॥४५॥५७४०॥

পাঠাকৰ

১ : ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৫৩ সংখ্যক পদ। হা 'সমুখেহি' থ। ৩। 'সবিনর' থ। ৪। 'ফিঠ' প-র-সা। ৫। 'কহ মিঠ' প-র-সা। ৬। 'আঙ' য। ৭। কেবল প-র-সাপুথিতে 'ক' আছে।

वाननी ।>

পরশহি গদ গদ নহি নহি বোল।
তমু-তমু পুলকিত আননদ হিলোল।
কো করু অমুভব পূর্ভ ক বিলাস।
এক মুখে সিতকার এক মুখে হাস।
নিমিলিত নয়ন নয়ন করু থীর।
মণিত-বলিত মণি-মঞ্-মঞ্জীর।
নাগরি দেওল খন-রস দান।
রাধানোহন প্রভ অমিয়া সিনান।

188041581

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৮৫৪ সংখ্যক পদ। ২। 'মণি ভর্নিভ' ক; 'মনিভ রনিভ' ধ, দ; 'মিনিভ ব্নিভ'প-র-সা।

भूनर्गार्छ-गमनम् ।

मात्रम ।)

নদ্দের নন্দন যায় বেণু বাজাইয়া।
মরুক মেনং গৃহ-কাল দেখ বাছির হৈয়া।
কার ঘরের বন্ধুয়া যায় রূপ দেখি বাইয়া।
বিদি না শুনং আমার বোল মরিবা ক্রিয়া।
নীল উত্তপল শুমা বসন শোভা ভালা।
বীর বিজুরি মেঘেণ করিয়াছে আল ॥
রতন-খিচনি মোহনং বাঁলী শোভে বাম হাতে।
চলিতে মা চলে অল দোলায়ং রাজপথে ॥
৪৪৩/১৩৪৫৪

পাঠাকর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৫৫ ও প-র পুথির ২৭।> সংথাক পদ। ২ । 'মক্তক বেন' প-র-সা ; 'থাকুক বেলো' প-র । ৩। 'বেথো লাডাইয়া' প-র-সা ; 'চল বেথি বাঞা' প-র । ৪। 'কার প্রাণ্যকু বার দেও বারি হ্ঞা' প-র । ৫। 'কার ভূনি' প-র-সা। ৬। 'ছুকুল বাহিরা বার নরন না চাঞা' প-র। १। 'ছিরণ-ক্রিরণ শ্রামবরণ শোভা করে ভাল' প-র। ৮। 'মেবে বেন' প-র। ৯। 'মোহন' শব্দ প-র পুথিতে নাই। ১০। 'দোলে' প-র।

ভাটিয়ারি ৷১

কালিক্দী কিনারে নাগর ধার²।
আমা পানে চাইয়া ঘনাইয়া বাঁলী বার²।
খেণে খেণে শ্রীদামের কান্ধে অবলবি।
খেণে খেণে বাজায় বাঁলী হইয়া ত্রিভঙ্গী॥
নখ-মণি ইন্দু জিনি² রাজা চরণেত² সাজে।
ছু গাছি² সোণার মুপুর না চলিতে² বাজে॥
মণিমর অভরণ বসন পিয়লি।
নব জলধরে যেন² পড়িছে বিজুরি॥

পঠিক্তির

188170861

निका

৬। "হুগাছি" ইত্যাদি। (শ্রীক্লফের চরপ্রর
এরপ স্কেক্ষল বে, বেধি ভ্রুর বেন) সোনার নূপুর
হুগাছি না চলিতেই বাজিতেছে। (এ হলে জাতিলরোক্তিমূলক প্রতীয়মান 'উৎপ্রেক্ষা'-অলফার
হারা নূপুরের স্ক্রকলতা-রূপ বস্ত ব্যক্তিত হইভেছে)।
মৃত্যকালে সকল নূপুরই বাজিরা থাকে; স্ত্তরাং
"নাচনিতে' পাঠ ধরিলে অর্থের কোন বৈচিত্র্য থাকে
না। প্রাচীন পুথির 'ল' ও 'ন' প্রায় এক রক্ষ
এবং অনেক সময়ে শক্ষারের মধ্যে ফাঁক না রাধাতেই এই পাঠ-বৈষ্য্যের উৎপত্তি হইরাছে।

তথা রাগ।>

নীল-কমল-দল

बिमूब-मशन

ঈষত মধুর মৃত্ হাস।
নাচিতে নাচিতে যায় গো-ধূলি লাগ্যাছে গার
আহীর-বালক চারি° পাশ॥

মণিময় ঝুরি ঝাপে কনয়া^০ পাঁচনি হাডে রভন-নূপুর রাজা পায়।

আগে আগে ধেকু ধায়° পাছে বাম শাদরার বরিহা উড়িছে মন্দ বায় ॥

সভার সমান ঝুঁটা কপালে চন্দন-ফোঁটা রাখাল কোন জনা বিন্দিয়া ।

শ্রীদানের কান্ধে হাত ওই যায় >> প্রাণনাৰ রাই দিছেন চিনাইয়া চিনাইয়া>
॥৪৫॥১৩৪৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্রথির ১৮৫৭ ও প-র পুর্বির ২৭/১১ সংখ্যক পদ। 'তথা রাস' কলে 'কফৰা' প-র। ২। 'নীল-ক্ষণ' ইত্যাদি কলিটির ক্লে প-র পুর্বির পাঠ, ব্যা—

'আহির-বালক চারি পাশ। নীল-কমল-মল শ্রীমুখ মওল ঈষত মধুর শ্বহ হাস।' ০। 'চারু' ব। ৪। 'সোনার' প-র। ৫। 'নাচিতে নাচিতে' প-র। ৬। 'বার' ক, ধ, প-র-সা, প-র। ৭। 'পাছে' চ, প-র-সা, প-র; 'ধার' ক, ধ। ৮। 'গোধুলি-ধুসর ভামকার' প-র। ১। 'র্ফা' থ; 'ঝোটা' প-র। ১০। 'বিনোদ রাধাল কোন জনা' ক, ধ, ব, চ, প-র। ১১। 'মার মোর' প-র। ১২। 'মিরাছেন দেধাইয়া' প-র-সা; 'রাই দিছে চিনিয়া চিনিয়া' প-র।

তথা রাগ ৷১

মকর-কুগুল মেলে কনক-কেতকী দোলে
কেওয়াই নহে কামের করাতি।
উপরে বিজুরি-ভাতি হেম-অভরণ-কাঁতি
গীত পিন্ধন কত ভাতি॥
সজনি পেখলুঁ ব্রিহা চূড়া মালে।
মাতল ভ্রমর জানিই ঘুরিয়া যুরিয়া বুলে
পড়ে জানিই নয়ন-কমলে॥
কুন্দে কুন্দাওল কালা কনক কেয়ুরং বালাই
ভাম-অভে করে ঝিকিমিকিই।
ক্রের সৌরভ পাঞা অলি-কুল্ম আইল ধাঞা
লাখে লাখে মদন ধানুকী॥৪৬৪১৩৪৮॥
গাঠাত্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৫৮ সংখ্যক পদ।
২। 'কেরা' সা-প ২০১নং পুখি। ৩। 'কালে'
ক; 'করু' প-র-সা। ৪। 'কনি' সা-প ২০১ নং
পুথি। ৫। 'বিজুরি' চ, প-র-সা। ৬। 'মালা'
ক, ধ, প-র-সা, গ-র। ৭। 'বেক্ষকি' সা-প
২০১নং পুথি। ৮। 'অলিরাল' ক, ধ, ঘ, চ,
প-র-সা, প-র।

ডথা রাগ।> কামুক গোঠ গমন ছেরি রাই। বিরছে বেয়াকুল মিরক্তনে বাই॥ তহি মুধরা সধি সক্তে উপনীত।
রাইক মুখ হেরি গদগদ চীত।
সো কহে কাহে বিলপদিং অমুরাগে।
হাম মিলায়ব তোহে কামুক আগে।
ধনি কহে এক দিন হেরিলুঁ তাহে।
উদ্ধব কহয়ে গোঠেত কানন মাহে।

1680411681

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পূথির ১৮৫৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বিলাপসি' ক; 'বিলসি' ধ। ৩। 'পোঠে' শক্ষটি ম পূথিতে নাই।

বরাড়ী।১

বড়ি মাইং কান্তুরে পরাণ পোড়ে মোর। যমুনা-পুলিন বনে দেখ্যাছি রাখাল সনে (थला-त्रत्म देश्याहिल (छात्र^०॥ ছায়া অতি সুশীতল বংশী বটের তল তাহাতে যাইতে না॰ লয় মন। মুখানি ঘামিয়াছিল त्रवित्र कित्ररण ठान्म-ভোখে আঁখি অরুণ-বরণ ॥ পীত ধড়ার অঞ্চল খানে ভিতিয়াছিল" ধুলার ধুসর শ্রাম-কারা। यनि नरहे लोक-खग्र মোর মনে হেন হয় আঁচর কাঁপিয়া করোঁ ৷ ছায়া # কি করিব কোথা যাব এ তুখ কাহারে কৰ ना कहिरल मरन (वर्श नार्श। কি করিবে লোক-ভর वःशीवनदन क्य कह यादेश यटभागात आह्य । १८०१/०४०॥

পঠিবিদ্ধ

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৬০ ৩ প-র পুথির ২৭।১০ সংগ্যক পদ। ২। 'মাই গো' প-র। ৩। 'ছইরাছে বিজোর' প-র। ৪। 'ভাতে বাজ্যে নাহি' প্ৰা ধ। 'ভোগে' প্ৰ-না; 'ভূষে' প্ৰ।
৬। 'অফ্ৰ ব্যন' প্ৰ-না; 'মলিন ব্যান' প্ৰ।
৭। 'থড়ার অঞ্ল ডার' প্ৰ। ৮। 'থামেডে
ভিলিয়াছে' প্ৰ। ১। 'না হ্য' প্ৰ-ন্সা। ১০।
'ক্রো' ক; 'ক্ফ' খ; 'ক্রঙ' প্ৰ-ন্সা।

युष्टे ।>

কহিতে কহিতে এ সব কথা।
বিশুণ ভৈগেল অগুরে বেথা।
ক্রপের লাবণি অসীম গুণে।
সোঙরি ধৈরজ না ধবে মনে।
পুন পুন গোঠং-গমন-লীলা।
কহিতে নয়ন নীরে ভরিলা।
স্থীগণ কহে প্রবোধ-বাণী।
হেরিয়া উদ্ধব আকুল প্রাণী॥৪৯॥১৩৫১॥
পাঠাত্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৮৬১ সংখ্যক পদ। ২। 'লোঠে' ক, খ, প-র-সা।

वाननी ।>

কাসুক গোঠ-গমনে ধনি রাই।
বিরহে বেয়াকুল থীর না পাই।
স্থিগণে কৰে হইং বিরহে বিভোর।
কৈছে মিলব আজু নন্দ-কিশোর।
জান্মক তাপ তব মিটব হামারও।
গোগণে কানন ভেল বিথার।
গোগণে কানন ভেল বিথার।
আজু কি করব মিলন বিচারও।
কৈছনে যাওব ইহ দিন মারও।
যতুনন্দন ভুয়া সঙ্গহি সাজও।
গাঠান্তর

ইছা প-র-সা প্রির ১৮৬২ সংখ্যক পদ।
 ইছ' প-র-সা। ৩। 'অন্তরক তাপ নিটব তব

মোর' ক, প-র-সা। ৪। 'আৰু' ইত্যাদি পংক্তিটি ক ও প-র-সা পুথিতে নাই। ৫। 'কৈছে বাওব এই দিন মাঝার' প-র-সা। ৬। 'বছনন্দন' ইত্যাদি পংক্তির পরে প-র-সা পুথিতে নিম্নলিখিত পংক্তি দুই হয়, ৰখা—'স্ব স্থা কক ধনিক সাহ'।

অথ দান-লীলা। সক্ষেত-মুরলী। ভত্তচিত্তীগোরচক্রঃ।

(वटनोग्नोत्र १)

সোঙ্কি পুরব-লীলা ত্রিভঙ্গ হইয়া।
মোহন মুরলী গোলা অধরে লইয়া ॥
মুরলীর রক্ষে, ফুক দিলং গোরাচাঁদ।
অঙ্গুলী চালাএা করে স্থললিত গান ॥
নগরের লোক যত শুনিয়া মোহিত।
স্থরধুনী-ভীরে ভক্ত লতা পুলকিত॥
ভুবন মোহূনং গোরা-মুরলীর স্বরে।
নাস্থদেব ঘোষ ইথে কি বলিতে পারে ॥
॥০১॥১৩৫৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৬০ সংখ্যক পদ। ২।'দিয়া'ক। ৩।'জুবন মোহিল'(পাঠান্তর—চ)।

वित्रांग ।>

পেলা-রসে ছিলা কানাই শ্রীপামের সনে।

কোন কালে রাধারে পড়িয়া গৈল মনে।
আপনার ধেতু সবং সন্ধিগণে দিয়া।
রাধা বলি বাজায় বাঁণী ত্রিভক্ত হইয়া।
রাধা বলি কানাই পুরিল মোহন বাঁশী।
শ্রীরাধিকার কাণে তাহা প্রবেশিল আসি।
শুনি ধ্বনি স্বদনী অথির হইয়া।
বন্ধুরে আপনা দিয়া মিলিবং যাইয়াং॥

রায় শেখর কহে এই কথা বটে।
চল সভে বাই আমরা যমুনার ভটে ॥
॥৫২১১৩৫৪॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সা পুথির ১৮৬৪ সংখ্যক পদ।

২। 'অ্বলের' (পাঠান্তর—ধ) প-র-সা। ৩।
'বচ্ছ' প-র-সা। ৪। 'মিলব' দ, চ। ৫।
'বন্ধুরে' ইত্যাদি হলে 'বন্ধুরে ভেটিৰ বারা আপনাকে
দিয়া' প-র-সা। ৬। 'এ কথাটি' প-র-সা।

৭। 'চলো আমরা বাই সভে কালিন্দীর তটে'
প-র-সা।

পান্ধার ৷১

আকুল হইয়া সভে° মোহন মুরলী-রবেং व्यात हिन्छ धत्रत्य ना यारे। মথুরার বিকে যাই চল চল বড়ি মাই দান-চলে ভেটিব কানাই # **हमू वृष्डांगू-नमिनी**। আনন্দে আকুল চিত অঙ্গ ভেল পুলকিত अनिया शाविक शर्व मानी ॥अ॥ স্থত দধি ছেনা পুরিং স্থর্বের ভাগু **ভ**রি⁸ সারি সারি পসরা উপর। ভাৰতে ওচনি ভালি বিচিত্ৰ নেভের ফালি प्रांभी भिरत करत अनम्म ॥ शांशनि छेममल करत নিতম্ব-শুরুয়া-ভরে (यन मयु-मख कतियी। लाउन लाउं व शिर्क कांकानि नुकां प्रमूर्क ভাবে শোভে বিচিত্ৰ কিছিণী। বেন মুকুভার দাম मूर्थ ह्यारेट याम (रन वृति कुमूरमत मधा। রহিয়া রহিয়া বার শীতল তক্ষর ছায় यम्बा-किनादन मिन दम्था ।

নাগর আছিল। কভি দেখিয়া সে কুলবভী দান ছলে আগুলিলা ও আসি।
দাস জগলাথে কয় মুখ নির্ধিয়া রয়
বেমন ১১ চকোরে মিলে শৰী।

1990/1091

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৬০ সংখ্যক পদ।
২। 'হ্মবে' প-র-সা। ৩। 'রহিতে নাদিল হুরে'
প-র-সা। ৪। 'প্রতি' প-র-সা। ৫। 'ছানা
আদি' প-র-সা। ৬। 'উড়নি' ক, ২, চ, প-র-সা।
१। 'ডালি' ক, ২, চ। ৮। 'কাকালি' ছ।
১। 'তথি' প-র-সা। ১০। 'আগ্রেরলা' প-র-সা।
১১। 'বেন' ক।

थानगै।>

চলইতে গজ-পতি বেচনেং যাহ।
কনক-মুকুর কত মুখ নিরবাহ।
অধর অরুণ-ছবি মাণিকং কাঁতি।
দশনে চোরায়সিং মোতিম পাঁতি।
এ ধনি কমলিনি কি বলিব আন।
সভে তোহে ছোড়ব গোরস-দান।
উর পর বিরাজিতং কনক-মছেল।
চামর-ধাম স্থবাসিত কেল।
সিন্দুর-বিন্দু ভাল পর শোভং।
দানি নাহি ছোড়েয়ে বিদ্রুম-লোভং।
দানি নাহি ছোড়য়ে বিদ্রুম-লোভং।
ব্যানক অঞ্জন কঠকং হার।
ইবে জনিং আছুয়ে কত্ত্রেং বেভার।
সধি সঞ্জেণ সুগতি করহং আন ঠামে।
ভ্রানদাস কহবংং পরিণামে ॥৪৪॥১৩৫৬।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৬৮ ও প-র পুথির ২৮।১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'বেড়দ' প-র-না। গাণিকের'ক, খ, ঘ, চ, প-র-সা। ৪।
 'চোরারল প-র। ৫। 'আবরু' প-র। ৬।
 'শোভা' প-র। ৭। 'লোভা' প-র। ৮। 'কঞ্ক' ক, খ; 'কাটক' প-র-সা। ৯। 'জানি' খ, ঘ, চ, প-র-সা, প-র। ১০। 'কহরে' ক, খ, চ, প-র-সা। ১১। 'সনে' ক, খ, প-র-সা। ১২। 'করবে' ক, খ, প-র-সা। ১০। 'জব করহ' প-র-সা।

তথা রূপোলাদ।

আইসং বৈস তক্ত-মূলে শশি-মূখি রাই।
তোমার বদন-শোভার° বলিহারি বাই॥
চর চর ক্ষিল-কাঞ্চন-ভুসু গোরি॰।
ধরণী পড়িছে নব-যৌবন-হিলোরি॰॥
বদন শরদ-স্থানিধি অকলক।
মনমথ-মথন অলপ দিঠি বন্ধ॥
আলো রাই কি বলিব আর।
ভূবনে দিবার নাহি ভূলনা ভোমার॥ প্র॰॥
কুটিল কুস্তল বেঢ়ি কুসুমের আদ।
স্থাক্ত সিন্দুর সিলে॰ বড় পরমাদ॥
উন্নভ উরক্ত কিবা কনক-মহেল।
মূঠে॰ ধরিয়ে৽ কিবা খিন মার-দেশ॥
উল্টি-ক্দলী উক্তং> গুরুরা নিভন্থ।
আনদানের পত্ত লীয়ে এই১০ অবলম্ব॥

পাঠান্তর

116 30 (11 21

३। देहा श-व-ना श्रीवत २४-७१ नरशक शव।
३। 'लाहें' छ। छ। 'लाखा' क, श-व-ना।
६। 'लावि छष्ट' श-व-ना। ६। 'हिशष्ट' श-व-ना।
७। दक्षण श-व-ना श्रीवर्ष 'क' चांद्ध। १।
'निरंत' क, थ, श-व-ना। छ। 'छेष्पत्र' थ, य, छ, श-व-ना। ३। 'ब्रुट्टे' क, थ, छ, श-व-ना। २०। 'विवर्ष क, छ। २२॥ 'खेष्प्र' लें के विवर्ष के विवर्ष

मार्व ।>

কবরী ভয়ে চা-মরি গিরি-কলরেং মুখ-ভয়ে চান্দ আকাশ। र्वतिनि नग्नन-छर्ग স্বৰ-ভন্নে কোকিল গতি-ভয়ে গল বন[্]-বাস•॥ সন্দরি কাছে মোহে সম্ভাষি না বাসি। তুয়া ডারেম্ ইর সবং তুর্হি**' পলায়ল** তুহুঁ পুন কাহে>> ভরাসি।এ। क्ठ-७ एत कमल- (कांत्रक १ कारण मृति तह १० घढे भः दिएम छ छ। एमः। माज्या श्रीकल গগনে বাস করু শস্তু গরল করু প্রাদেশ । जुब छात्र कनक-মুণাল পঙ্কে রছ কর-ভয়ে কিসলয় কাঁপে। বিহাপতি কহ্ম কত কত এছৰ করহাদ দমনাল পরভাপেশ 🛊 resident

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৬৮ ও প-র পুথির
১৬)১ সংখ্যক পদ। 'বায়ুর' ছলে 'ভিরোধা
ধাননী' প-র। ২। 'কবরীক ভরে নিথি গেও গিরিকল্পরে' প-র। ৩। 'আকালে' ব। ৪। 'ছর'
ব, চ। ৫। 'বর' চ। ৬। 'বালে' ব।
৭। 'এ ধনি ভুল্ল পুন কালে না সভাবি'
প-র। ৮। 'ভরে' ব। ১। 'কালে ন' ব। ১২।
'রুক্ল' প-র। ১০। 'বিলি সেও' প-র। ১৪।
'রুক্ল' প-র। ১০। 'বিলি সেও' প-র। ১৪।
'গরাসে' প-র। ১৭। 'ভাজিম' প-র। ১৬।
'গরাসে' প-র। ১৭। 'কবিশেধর ভব' প-র।
১৮। 'কবল্প-র। ১১। 'বল্প-র ভব' প-র।
১৮। 'কবল্প-র। ১১। 'বল্প-র ভব' প-র।
১৮। 'কবল্প-র। ১১। বল্প-প-র। ২০।

বরাড়ী।১

ছেন রূপে কেন যাও মথুবার দিকে।
বিষম রাজার ভয়ে ঠেকিবা বিপাকে॥
দিনকর-কিরণে মলিন মুখখানি।
হেরিয়া হেরিয়া মোর বিকল পরাণী॥
বিসয়া ভরুর ছায় করহ বিশ্রাম।
শ্রেম-জল-বিন্দু যেন মুকুভার দাম।
বংশীবদনে কহে শুন হে নাগর।
বৃধিলাম বট ভূমি রসের সাগর॥

1491100381

· পাঠান্তর ১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৬৯ সংখ্যক পদ।

क्षेत्रकात ।>

' না যাইয় না যাইয় রাইং বৈদ ভরু-মূলে। আদিতে পাইয়াছ বেঝা⁹ চরণ-যুগলে⁸॥ মণি মুকুতার দামণ অঞ্চ ঝলমলি। खरकत विवयं रहात लहरवं नकलि ॥ **ठाँ**ठत ८करमंद (वनी छुलिट्ड ८कांमरवर । ক্ৰীর ভরমে বেণী গিলিবে ময়ুরে॥ मीन अष्टनोत्र भारत मूथ भाषा करत्र । लोगांत कमन वनि मश्निटन खमरत ॥ क्ति-कुष्ड-प्रश्व जिनि कुछ कूठ-गिति। **গজের ভরমে পাছে পরশে কেশ**ী॥ ৰ্জ্বন-গঞ্জৰ আঁথি>> অঞ্চন ভাল পোডে। विश्वित्वक बार्थ (रूम-रुतिगीत) १ (लाएक । সিন্দুরের বিন্দু ভালে^{১৩} ভামুর^{১৪} উদর। রবি শশী বলি মুখ রাজ গরাসয়> 🛊 माननी-मनन बाहे छव मूथ करव। ভ্ৰমর ছাড়িবে কেনে^{১৬} রস নাহি পিলে^{১৭}। ভড়িত ভড়িত বসন ঘন উত্তে। भारेरन रेट्जब बांव शास्त्र बालि भरकश्र

বংশীবদনে কৰে কহিলে সে ভাল>>। বিদগধ বট ভূমি ভাহা জানা গেল।৫৮॥১৩৬০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৮৭০ ও প-র পুথির २৮।>> मरश्रक भेषा 'श्रीनाद्याद्र' एटल 'भक्षम' भ-द्र । २। 'ना बाहरू ना बाहरू बाहे' क; 'ना बाख ना ষাও রাই' প-র; 'আইস আইস বিনোদিনি' ৩। 'আন্ত কাছে বাজে পাছে' প-র। भ-ब्र-मा, भ-ब्र । প-ब्र-मा। ७। 'हाक्रब' भ-ब्र-मा। १। 'निरदक' थ। ৮। 'कमरत्र'थ, श-त-मा। २। 'डेवृतिद' ষ; 'উড়নির' প-র-সা। ১০। 'নীপ' ইত্যাদি কলিটি প-র পুথিতে নাই। ১১। 'জাঁথে' প-র। ১২। 'ছেম হরিপের' ক; 'ছেন হরিণীর' প-র-সা। ১৩। 'ভাল' ক, চ। ১৪। 'রবির' প-র-সা। ১৫। 'মূৰ' ইত্যাদি স্থলে 'রাহু গিলিবে ভোমার' প-র। ১৬। 'ভ্রমর' ইত্যাদি স্থলে 'চকোর না हाफ़िरवक' क, थ, ठ, भ-त्र-मा ; 'ठरकात ना हाफ़िरव রাই'ব। ১৭। অভঃপর প-র পুথিতে নিম্নদিধিত কলিটি সৃষ্ট হয়, বথা—

'নানা অভরণ অজে করে ঝলমলি।

দাকুণ অজের চোরে গইবে সকলি॥'

১৮। 'পাইলে ছাড়িবে না দাকুণ অমুরে ''
প্রা ১৯ ।

'গোবিন্দ দাসের বাণী শুন বিলোবিনি। শ্রাম সঙ্গে রস-রঙ্গে কর বিকিকিনি॥'---পানা।

शांत्रकी 13

ওবে নাগর খনাইরা খনাইরাং আইস কাছে।
সোণার বরণ মোর দেখিরা কৈরাছ ভোর
ভরমে পরশ কর পাছে ॥এ।
আমরা ড॰ কুলবতা ভূমি সেং রাখার কাছি
কি কবিকে কিবা কছা কারি ।

বাঙ্কনেন্তেশ্চান্দ বেন ধারতে কররে মন
সেইশ দেখি ভোমার কাহিনী ॥
সহনে চুলাও মাথা শুনিয়া না শুন কথা
পসারি আসিছ> চুটি বাস্ত ।
না বুবিয়া কর> বল পাইবা তাহার ফল
তথন কথা না শুনিবে কেন্ত ॥
শুনিয়া কর্তমেই দানী শুন শুন বিনোদিনি
না শুরিবা আমারে বঞ্চিতে ।
বিকি না ছাড়িবা ভূমি আমি ভ্ৰুই ঠেকিবা মোর হাতে ॥৫৯॥১৩৬১ ॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্থির ১৮৭১ সংখ্যক পদ।

২। 'হমাঞা' ক, থ; 'হমায়া হনায়া' প-র-সা।

৩। কেবল প-র-সা পুথিতে 'গ্রু' আছে। ৪। 'সে'

প-র-সা। ৫। 'ডো' প-র-সা। ৬। 'মতি'

প-র-সা। ৭। 'হয়' প-র-সা। ৮। 'বাঙ্লের'

হ; 'বামনে এ' প-র-সা। ৯। 'ডেঞি' প-র-সা।

১০। 'প্সারিয়া আইস' প-র-সা। ১১। 'লি

বুঝি করহ' প-র-সা। ১২। 'ডনি ডনি কহে'

প-র-সা। ১০। 'ডো' প-র-সা।

व्याभावत्रो ।>

ওহৈ নাগর,

কেমনে ভোমার সঙ্গে পিরিতি করিবং।
বোণার বরণ

তুইলে বণল পাছে হবং ॥ধ্রা॥
ভোমার গলায়

আমার গলায়
গল-মোভি।
বিকড়াাদ বনের ফুলে

স্টরেরস>-পুড্র-২ তার সাবী ও ॥
নাহি অভরণ
সাক্রিকে বনের সুলে।

চূড়াটি বেট্রা>
তাহে কি রমণী ভূলে ।
কি জানি কি করা। রাখালে ভূলাঞা>
আইলা কোন বনে থুঞা।
আমরা রাখাল নই চন্দুর>
ভূলাইবা কি বোল বলিয়া ॥৬০॥১০৬২॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৭২ ও প-র পুৰিয় ২৮I>• সংখ্যক পদ। 'আশাবরী' স্থলে 'আলোয়ারি' প-ब-मा ; 'ভাটিয়ারি' প-র । ২ । 'কেমৰে তোমার' ইত্যাদি পার-সা ; হলে 'তুমি রাখাল রাজ-নন্দিনি আমি কেমনে' ইত্যাদি প[্]র। ৩। 'সো**ণার** वद्रव कामि भ-त। ४। 'कश्चरमद्र भूक कृमि भ-द्र। e। 'बूर्टल त्वांमन' हेजामि च ; 'क्राम कूला मिनन हर्व श-त। ७। 'स्थात' च, ह। १। 'स्थात গলে' প-র-সা। ৮। 'নিক্ডিয়া' প-র-সা। »। 'ফুলের' প-র-সা। ১০। 'বাজিগছে' ব, চ। 'বাদ্ধিয়া আছ' শক্ষ হইটি প-র-সা পুথিতে নাই। ɔɔ। 'मशुव',कः, 'मखेद' **थ, व,** চ। ऽ२। 'পাখা' প-র-সা। ১৩ । 'সাধী' ক । ১৪ । 'ভূষণ' প-র। ১৫। 'চুড়ার উপরে' প-র-সা; 'চুড়ার উপরে কত' প-র। ১৬। 'শ্রমর' ক। ১৭। 'কি আনি' ইত্যাদি কলি প-র পুণিতে নাই। তৎস্থলে নিম্নিথিত কলি দৃষ্ট হয়, বধা—

'অবপা ভিতরে পাইরা অবলা বিবাদ না কর কালা। বংশীদানে কর ভাল না হইবে আমরা কুলের বাণা ॥"

>৮। 'চডুরি' ব।

গিছ্ডা—তেওট।> শুন লো সুন্দরি প্রেমেড জাগরিৎ ডোমার অনুরাগে মরি। ডোমার লাগিরা স্কল ছাড়িরা। জাইলাম গোকুল পুরী। ভোষার কারণে

ধেনু রাখিবার ছলে।

শুসিয়া শুসিয়া

ছলে বসি ভক্ততলে ॥

রাই আমি সে ভোমারণ দানী।

সকল ছাড়িয়া রাধা নাম ধেয়াঞা

নামের মহিমা শুনিং ॥৬১॥১৩৬৩॥

গাঠাত্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৮৭০ সংখ্যক পদ।
২। 'না কহি চাজুরি' প-র-সা। ৩। 'ভোমারি'
ক, ধ। ৪। অতঃপর প-র-সা পুথিতে নিয়নিথিত
অতিরিক্ত কলিখান দুই হয়, বধা—
'নাগরের বাণী শুনি বিনোদিনী
প্রেমে হল হল আঁথি।
ডোমার হথে ত স্বাই হথিত
ভোমার হথে ত মুবী ॥
খন হে নাগর দ্যার সাগর
দ্যা না হাড়িহ তুনি।

বকল হাড়িরা তেমার লাগির।

হবির পদারিণী আমি ॥'
উদ্ভ কলি ছুইটি পরিভ্যাগ না করিলে পরবর্তী
প্রেয় সহিত অদামঞ্চ হর বলিরাই, বোধ হর

বৈশ্বদাস উহা পরিভ্যাগ করিয়াছেন।

কানোদ।>

বেদে তে কিশোরি গোরি, ভোবে পরিহার করি
শুনি কিছু কর অবধান।
শু চান্দ-মুখের হাসি জদরে রহল পশি
বৈদগধি দগধেশ পরাণ॥

নাই ভোমার বৈদগতা॰ কি কছিব ভার কথা কহিতে উপলে হিয়া মোর।

ন্দ বেশিয়া ভোনারে পরাণ কেম্বন করে ভোনার গুণের নাছি ওর 🖟 বে জন প্রণত হয় তাহারে তেজিতে নর

মনে বিচারহ এই কথা।

তৃমি যে কহাও বাণী তাহাই কহিরে জামি

নিশ্চর জানিহণ সর্ববধা।

বে পণ কর্যাহণ তৃমি সেই পণ দিব জামি
তুমি মোরে দয়া না হাড়িহণ।

জ্ঞানদাসেতে কর ছহুঁ তমু একই হর পরাবে পরাবে বাদ্ধা পুইছ ৪৬২॥১৩৬৪॥

পঠিকির

১। ইহা গ-র-সা পুথির ১৮৭৪ সংখ্যক পদ।
২। 'বধ' ক; 'বধহ' খ, চ; 'না বধ' ছ। ৩।
'বৈদগ্যতা' ক। ৪। 'লানিও' ক। ৫। 'করহ'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৬। 'হাড়ির' ছ। ৭। 'আনদাস' ক, খ, ঘ, চ। ৮। 'এক' ক। ৯। 'পুইর' চ।

कारमाय--- नजन 13

কিছু বৈলং না হে কৈর° না হে
কথা শুনি ফাটে মোর বুর।
ভোমা না দেখিলে প্রাণ সদা করে আনছান॰
দেখিলে সে জিরে॰ চাঁদ-মুখ । প্রদা
ভূমি জল আমি মীন আমি দেহ ভূমি প্রাণ
ভূমি চক্র আমি বেন নিশি।
কে জানে কে হেদে কেনে॰

তোহে পরিহার করি আধু তিল তোমা বিলে

ব্যথান। আপুনাণ জলম সম বাসি ॥

কলমে রহল পশি সরল সারিকা হাম পঞ্চর তোমার প্রেম্থ

পরাণ ॥ তাহে বন্দীশ হইরাছি হরি।

ক কহিব ভার কথা ভোমার বিরোগে হাম সমাই বিরোগী ছে

যো মোর। তেথি আনিশ স্থির প্রাম্থি ।

পরাণ কেম্বন করে সাড়াঞা পরের মাঝে ভিলাঞ্জনি নিলাক সাজে

হিছি ওর ৪ ডুয়া গুরুব বাজায়াণ্য নিলাক।

বের দেখ ওহে শ্রাম, চুই বাউছে ১০ ভামার নাম
দাগিরা রাখিরাছি নিজ প্রাণ ॥
বৈধরজ ধরিতে নারি এক নিবেদন করি
না হইও মোর বধের বধী।
বংশীবদনে কর এ কথা অশ্রথা নয়
এক কিউ চুই কৈল বিধি ॥৬৩॥১৩৫৬॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ১৮৭৫ সংখ্যক পদ। ২। 'বলা' ক, খ, চ। ৩। 'কৈছ' ঘ। ৪। 'আনচান' ক, খ। ৫। 'জুড়ার' প-র-সা। ৬। 'কে জানে' ইত্যাদি হলে 'কি জানি এ দেহ' প-র-সা। । 'বদ্ধ' প-র-সা। ৮। 'বদ্ধ' প-র-সা। ৯। 'তাহে লাগি' প-র-সা। ১০। 'বাজাঞা' ক; 'বাজাইরা' ঘ। ১১। 'বাছরে' ক; 'বাজতে' ধ।

धामनी ।>

তোমার বদন আমার জীবন
সরবদ ধন ভূমি।
তোমা ধরি চিতে খুঁজিতে খুঁজিতে
আদিয়া পাইলাম আমি ।
রাই হে, কি মোর করম ভাগি।
বাবের জীবন সভাকার ধন
আসিয়া পাইলাম লাগি ॥ধ্রু॥

দারিজের মত ফিরিয়ে জগত চনক-মুঠের আশে।

ভার মাবে বেন হেম-বরিষণ

বিধি সিলায়ল পাশে #

এডকণে মোর আগ পূর্ব ভালন মনের ধনা।

बाह जानत-ठम्म १६९१) ७७७।

পাঠান্তব

)। देश श-त्र-ता श्रृचित ১৮१७ त्रश्यक श्रेत ।

जुनानी ।>

রাধামাধব নাপ-মূলে।
কেলি-কলা-রস দান ছলে।
ছরেং গেও সখিগণ সহিতে বড়াই।
নিজ্ত-নাপ মূলে বৈঠলং রাই।
জুজে ভুজে বেঢ়ি দোঁছার বয়নে বরুনং।
কমলে মধুপ যেন হইল মিলনং॥
দোঁহার অধর-মধু দোঁহে করু পান।
নিজ অসে দিল রাই ঘন-রস দান।
মালল ছত্ জন পুরল আল।
আনন্দে সেবই গোবিন্দদাস ॥৬৫॥১৩৬৭॥
ইত্যাদি অমুরাগযুক্ত-দানপর্য্যায়ো গীতঃ
বাপর-মনোহরসাহি-শ্রীসংকীর্তনামুসারেশ

হত্যাদ অমুরাগযুক্ত-দানপ্যায়ে গাভঃ
পূর্ব্বাপর-মনোহরসাহি-শ্রীসংকীর্ত্তনামুসারেণ
এভদ্গীত-সংগ্রহঃ। তত্র সকলের পদের
ভণিতা নাস্তি, কৈবলং গানামুসারেণ সংগ্রহঃ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুথির ১৮৭৭ সংখ্যক পদ।
'ভূপানী' ক্লে 'গোরী' ক, খ, প-র-সা। ২।
'দুরে' ক। ৩। 'নুঠই' ক, খ, খ, চ। ৪।
'ব্যানে ব্যানে' প-র-সা। ৫। 'মিলনে' প-র-সা।

व्यथ मान-८किनः श्रकांत्राखद्रः यथा ।

তত্ৰ গৌৰচক্স।

यहरे 13

গৌরাফটাদের মনে কি ভাব উঠিলং।
নদায়ার মাঝে গোরা দান সিরজিল ।
কি রসের দান চাহে গোরা বিজ-গণি।
বেত্র দিয়া আঞ্চিরা রাধ্যে তক্ষণী।

দান দেহ দান দেহ বলি গোরা ভাকে।
নগরের নাগরী সব পড়িল বিপাকে।
কৃষ্ণ-অবভারে আমি সাধিয়াছি দান।
সে ভাব পড়িল মনে বাহুঘোষে গান॥

1440110841

পাঠান্তর

>। देश भ-ज्ञ-ना शृथित २৮१৮ नःश्वाक शृष् ।
२। 'गिष्म' भ-ज्ञ-ना। ७। 'मासादा' क, थ।
३। 'किरनद' क, थ, ठ, भ-ज्ञ-ना। ६। 'मास दिस् बिन खादक' भ-ज्ञ-ना। ७। 'मास दिस् दिस् विन चन चन खादक' भ-ज्ञ-ना। १। 'सिन्दा' भ-ज्ञ-ना।

শ্রীরাপ।>

কে যাবে কে যাবে বড়াই ডাকে উচ্চশ্বরে। मिथ क्या शुरू श्वाम मथुतात्र (विविद्युष् ! मा**कारेया** भगवा वारे फिल पांत्रीय मार्थि । চলিলা মথুরার° বিকে রলিয়া বড়াই॰ সাথে॥ পথে যাইতে কহে কথা কামু-পর্সঞ্জ। প্রেমে গরগর চিড পুলকিত অঙ্গ। নবীন প্রেমের ভরে চলিতে না পারে। **इक्का इ**तिशे त्यन मोगण त्नहाद्व ॥ হোর কি দেখিয়ে বড়াই কদম্বের ভলে ।। ভড়িতে জড়িত যেন নব জলধরে। ভাহার উপরে শেভে নব ইন্দ্র ধনু। वफारे वटन विक ना नटमत्र (वर्षे। कांगू ॥ মধুরার বিকে বাইভে > আর পথ নাই। পাভিয়া মঙ্গল-ষট বন্থাছে ২ কানাই 🛭 বাহুদেৰ বোষ কছে দ্ধির প্সারিণি । পাভিয়া মঙ্গল-ষট বলিয়াছে দানী 1691১৩৬৯ 1

পাঠাৰর

) देश প-ब-मा शूचित्र ১৮৭৯ मध्याक भग २ । (बारद बन्मा/ व, ठ । ् ७ । ्यदिक

করিবাবে' প-র-সা। ৪। 'বাবে' থ। ৫। 'নপুনা' ক। ৬। 'বড়াইর' থ। १। 'প্রেমে গদগদ' প-র-সা; 'আনন্দে আকুল' থ। ৮। 'দিগ' ক, থ, ঘ, প-র-সা। ৯। 'নিহালে' ক। ১০। 'হোর' ইত্যাদি তিনটি কলি প-র-সা প্রিতে নাই। ১১। 'বাই' ক। ১২। 'বসেছে' ক। ১৩। 'বাহ্নেব' ইত্যাদি ভণিভার কলিটি কেবল প-র-সা প্রিতে দৃষ্ট হর।

ভাটিদানি ৷>

এমনেং কেমনে যাব পথে খ্যাম দানী। আপন৷ খাইয়া কেনে আইলাম ভোমার সনে জাতি জাবনে টানাটানি । এ। ঘরে হৈতে বারাইতে⁸ কতং না বিপদ পৰে मानिनो हिलगा (गल वाटम । তথনি বলিগাস আমি হাস্তা না শুনিলা ভুমি না জানি কি হয় পরিণামে चां कि कित्रशार्द्ध माना নীপ-মূলে করি থানা कानाइ देशब्राट्ड महानानी। আময়া সে কুলৰতী ভাহে নব যুবতী কি করিলে কিবাণ হয় জানি ৷ হাতে বাঁশী মুখে হাসি পথের নিকটে>> বসি আঁথি-ঠারে ত্রিস্থবন ভূলে। ভারি গ্রাম ছেনা গ্রাম পসার পরশে যদি वां भं मिन यमूनात्र करल ॥ মনে না করিহ ভয় (गा-बटनव लामी मन শুন শুন রাই > বিনোদিনি। स्टब्रक्क माटन ट्वाटन বাট আইস ভক্তলে ষ্পানশ্যে করহ বিকিকিনি ১৬৮১১৩৭০। . ३। हेरा भन्त-मा भूषित ३५५० मरबाक श्रहा

र। 'व गरप' भ-म-मा। ।। 'त्यामा' स्राह्म

'वादिवारेएक' श-व-मा । हे हे 'बेक्स शुक्रमा।

📭। 'হানিলা' প-র-সা। ৭। 'হবে' ক; 'হবে' 'বাটের' ইত্যানি কলিটি কেবল প-র-সা প্রিতে দৃষ্ট ধ, চ। ৮। 'রাজপথ করি' প-র-সা। ১। (क' भ-ब्र-मा । >० । 'कि ना' **५**, भ-ब्र-मा। วว । 'के भरब' भ-ब-मा। २२ । 'शिवि' क, थ, घ, ठ । ১৩। 'ছানা' প-র-সা। ১৪। 'রাধা' প-র-সা।

बित्रांत्र 15

क्रभेष्ठे-मार्नितः इत्न विभिन्न देत्रग्राट्य। o পথে কেমনে বাব দানা ছোয় পাছে॥ এমন হইবে বল্যা° আমি ত না° জানি। মধরার বিকে যাইতে পথে মহাদানী॥ বিকি শিখাইব বল্যা ' লৈয়া আইলা সাথে। আনিয়া সোঁপিয়া দিছ রাখালের হাতে ! वः नीवप्रतन वरल अन धनि अदि । দান সাধে ফিরে পথে রসিক কানাই॥

16250431

পাঠান্তর

১। इंडा भ-त्र-मा श्रुचित्र ১৮৮১ मश्याक भए। २। 'बानीब' क। ७। 'देवरम' श-ब्र-मा। ८। 'আমি নাহি' খ। ৫। 'ৰলি' ক, খ, চ, প-র-সা। 🎐 ৷ 'বংশীবদন' ইন্ড্যাদি ভণিভার কণিটি কেবল প-ব্ৰ-সা পুৰিতে দৃষ্ট হয়।

भोत्रात ।>

কোণা যাও গোয়ালিনি কোণা তোমার ঘর। **কিলের পদরা দাসীর মাথার উপর**॥ দ্ধি হয় খ্ৰভ বোলে পসরাং আমার। কে ভূমি ভোমার বোলে ওলাব পসার॥ वाटिक वाटियान वामि भटनक महानानी। আজি দান দিতে হৈল শুন বিনোদিনি॥

190130921

' পাঠান্তর " । देश भन्न-मा श्रीवन २४४२ मरवाक भग।

वज्राही।ऽ

চিকুরে চোরায়সি চামর-কাঁতি। দশনে চোরায়সি মোভিম-পাঁতি॥ এ গজ-গামিনি ভো বড়ি সেয়ানং। বলে ছলে বাঁচসি গিরিধর-দা**ন** ॥ অধ্যে চোবার্যস স্থারক্ত পরার। বরণে চোলয়সি কুকুম-ভার 🛚 কন্যা - কল্স দট । রস ভরি তাই। হৃদয়ে চোরায়সি আচরে ঝাঁপাইশ। তেরিজ অতি মন্থর গমন্থ-সঞ্চার। কোন তেজবংগ তোহে বিনহি বিচার। স্থবল লেহ তুর্ত গো-রস দান। রাই করহ অব কুঞ্চে পয়ান॥ याहै। टेवर्रेड मनमथ महाबाज। গোবিদাদাস কৰে গড়ল অকাল ॥

193130901

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ১৮৮০ ও প-র প্রির ২৮।৭ সংখ্যক পদ। ২। প-র-সা পুথিতে এ পজ-গামিনি' ইত্যাদি পংক্তিশ্ব ধারা পদটি আর্ভ ক্রা হইয়াছে। 'সিয়ানি' প-র । ৩। 'দানী' প-র। 8। 'निन्तूर' भ-त-मा। ८। 'कनक' क। ७। 'कनरम' क, थ, घ, छ। १। 'नड' हेडामि 🔻 ३ 'ভট্ রস ভারি চার' প-র-সা । ৮ । 'ছাপার' প-র-সা। 🔊 । 'তাহে' প-র-সা; 'ঔে' প-র। >०। 'हत्रन' क, च। >>। '(छाड्च' श-त्र-ता) 'हाफ्बें' भ-व।

वानने ।>

স্থন্দরি শুনিয়া না শুন মোর বাণীং। ना जान कानार পर्य नानी ॥

সিঁথার॰ সিন্দুর ভোষার নরানে কাজর।
ছইণ লক দান ভার মাধ্যে গিরিখর।
ছম্পরেণ কাঁচুলি গলে গল্প-মোতি হার।
চারি গল্প দান মাগে করিয়া বিচার।
করের কল্প আর কটিভে কিছিনী।
ছয়ণ লক্ষ দান ভার মাগে মহাদানী।
রক্ষণ আলভা পারে রভন-নূপুর।
আই লক্ষ দান মাগে দানীর ঠাকুর।
এই লব দান বুলি দেহ দানি-রাজে।
আমি নিব দান ভোমার সলিনী সমালেণ।
ভামি নিব দান ভোমার সলিনী সমালেণ।
ভ্যানদাস কছে ভূমি ছাড় টাঠপনা।
ভূমি মহাদানী ভোমার ঠাকুর কোন জনা।

ছমি মহাদানী ভোমার ঠাকুর কোন জনা।

পাঠান্তর

 ইহা প-র-সা পুরির ১৮৮৪ সংখ্যক পদ।
 'হক্ষরি' ইত্যাবি পংক্তি-বর হতে প্-র-সা পুরির পাঠ বর্বা—

'বাৰ বেহ তন বিনোদিনি। আন না বে আমি এ গণের মহাবানী।' ৩। 'অপালে' প-র-সা। ৪। 'ছর' প-র-সা। ৫। 'হিরাম' প-র-সা। ৩। 'ছই' প-র-সা। १। 'আজি বান বুঝি নিব স্থীর স্যাক্তে' প-র-সা।

निष्का ।>

ত্ব ত্ব ত্ব হুজন কানাই

ত্বি সেণ্ নৃত্বণ দানী।

বিকি কিনির দান গো-রসেণ মানিরে

বেশের দান কভুণ নাহি ত্রনি ন

বিবার সিন্দ্র নরানে কাজর রজণ আল্ডা পার।

(ই কিণ) বিকি কিনির ধন ধারীর বোর্ষণ

ইংগু ভার কিবা ক্রিয়

ষণি-পাতরণ আদ্যুগ কোনাছিল।

বাদ দানের এ গতি ভূমি ত গোকুল-পাঁতিল

দান সাধহ খবে খবেল।

আমরাল চলিতে না জানি, কহিতেল বা জানি

ভোমারে কেনে বা বাজেল।

জ্ঞানদাসলক্ষে কেমনে জানিবল
পরের মনের কাজে ॥৭৩॥১৩৭৫॥

পাঠান্তর

১। ইহা পার-সা প্ৰির ১৮৮৫ ও পার প্ৰির ২৮।৫ সংখ্যক পদ। ২। 'গুন' শলটি পার-সা প্ৰি ব্যতীত অল্পান্ত প্ৰিতে নাই। ৩। 'গু' পার-সা। ৩। 'কড়' শল্প পার-সা। ৩। 'কড়' শল্প পার-সা। ৩। 'কড়' শল্প পার-সা। প্রিক' ক। 'লুবপ' পার-সা। ৯। 'গুকে' ইন্ত্যাদি পার-সা। ৯। 'গুকে' ইন্ত্যাদি পার-সা। ৯। 'গুকে' ইন্ত্যাদি পার-সা। ৯। 'লোকোকের প্রতি পার-সা। ১৯। 'লোকোকের প্রতি পার-সা। ১৯। 'লোক সাথ প্রতি ব্যরে ব্যরে' পার। ১৯। 'নোরা' পার। ১৯। 'গোলোকের প্রতি পার ব্যরে' পার। ১৯। 'ব্যেরা' পার। ১৯। 'লোকাকের ব্যরে' পার। ১৯। 'ব্যেরা' পার। ১৯। 'লাকিকে' পার।

कार्टमासे । ३

নী। দানী দেখি কাঁসিছে পাঁৱৰ ।

গা-রসেং মানিরে নাে বদি জানিভানং পাছে, এপথে ৰুক্তীক পাছে,

নাবি প্রনি । জবে মরেরং না রুইভান হাছির এ

নারনে কালক সরে বৈজে রারাইছেং ও চাকং-টেলিল নামে

ইাজি লিটীং শক্তিবন বাম্ব

विषम लोगीत्रभ्य नाग्र এক লয় আর চায়>২ ना भाहेरल कत्ररम् विवाह । मान निवात (वटन Cनय वाम मिवात (वटन (मय): একেক লক্ষের পরিবাদ^{্ধ} ॥

ম্ণি১৬-অভরণ ছিল ডরে ডরে সব দিল उम् नानो ना (नग्न काज़िया। মো> হইলাম সোণার গাছ

দানী ত না ছাড়ে পাছ্য ডালে মূলে নিবে> উপাড়িয়া। **পर्थ रे**वत्रो महानानीरः घरत्र देवत्री ननिषनी (मट्ट्र देवती इडेल (योवन । যমুনায় দিয়ে ঝাঁপ হেন মনে উঠে ভাপ ना त्रांशिव এ ছात्रर कीवन ॥ বলে হাত্ত্ত দিতে চার অবলা বলিয়া গায়^{২২} পসারিয়া আইসে চুটি বাহু। মোর মনে হেন লয় জ্ঞানদাসেতেং কর

পাঠান্তর

हाटम्स (यन शर्ताम्बर्यः व्हाल ॥१४॥)७१७॥

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৮৮৬ ও প-র পুषित २৮। २৮ मः थाक भव। २। 'विष् मारे माने' ইত্যাদি প-র। ৩। 'এত না গণিল' প-র। ৪। 'चरत्र' च, ह। १। 'वात्राहर्रं, थ। ७। 'উচাল' প-র সা; 'এ চাল' প-র। ৭। 'বিটি' খ। ৮। 'নাপড়িল' 🔻 ; 'নাভিণিলাম' প-র-সা। ৯। 'পলারা' প-র-সা, প-র। ১০। 'তেমতি' भ-त्र। ১১। 'विषय दिन प्रात्मतः' भ-तःमां, भ-त्र। ১২। 'একে দিলে আরে চার' প-র-সা; 'একে লর আহের চার' প-র। ১৩। 'করে পরমার' भ-ब-मा, भ-ब। **>८। 'नाब' क, च, भ-छ।** >८। 'একে কলছের পরমাদ' ক, চ; 'একেক লক্ষের 'আকে' প-র-সা, প-র भव्याप' प । ১७। ১৭। 'बुब्बिंग' शन्त्र। ১৮। 'काइ' क, थ, ह। २०। 'टेरन नराशानी' >>। 'नदव' भ-व ।

ष, চ; 'ঐরী হৈল দানী' প-র-সা। ২১। 'পাপ' প-त्रमां, भात । २२ । '(पश्चिम्न छात्र' भ-त्र। २७ : '(कांग' भ-त । २८ । 'अभिनेत्ससारम' প-द। २०। 'ठान्म शद्राटम रेग्रह्म' भ-द।

बब्राड़ी ()

হেদে হে নিলজ কানাই

না কর এতেক চাতুরালী। যে না জানে মানসভাং তার আগে কহ কথা মোর আগে বেকত সকলি ॥ধ্রু॥ (तफ़ारेला गरू ेलग्रा (म लांक रफ़्लिला भूरेग्रा এবে হৈলা দানী মহাশয়। রাজপথ কর মানা কদম্ব-ভলায় থানা **प्रिटन** पिटन वोज़्लि विषय ॥ ভূমেতে না পড়ে পা আন্ধার-ৰৱণ কাল গা কুল-বধু সনে পরিহাস। व्याभनातक ठाख (मिनि এ রূপ নির্যাথয় व्यारे व्यारे लाक नाहि वाम ॥ মা তোমার যশোদা তার মুখে নাহি রা नम (चार अकलक निधि। কাজ কর জিনি **কংসে** জনমিয়া তার বংশে এ বৃদ্ধি তোমারে দিল বিধি॥ দেখা শুনা আট পর একই নগরে ঘর ঠিল আধ নাহি আঁখি-লাজ। রাজারে না করে ভর

১। ইছা প্-র-সা পুথির ১৮৮৭ সংখ্যক পদ। ২। 'মাত্ৰতা' চ। ৩। 'গাবী' ক; 'পোক' च ; '(अस्' अ-त-ना। ४। '(तच ठांबा' अ-त-ना। €। 'वंटमोना त्रांगी' श-त-मा । अ । 'वांगी' भ-त-ना। १। 'काममारम छ' च; 'वश्मीवस्तम' প-ब-मा। ৮। 'क्ब्र' क्।

পাঠাম্বর

এ দেশে বসতি কিবা কাল ॥৭৫। ১৩৭৭॥

রায় শেখরে কয়

দৌরাষ্ট্রী ।১

किंगित वर् কহ লগু লগু ভোমারে সভাই জানে। কহিতে কহিতে অনেকং কহিছ ে এড না গরব কেনে ॥ পসরা লইয়া যাইছ চলিয়া मानोदत ना कत छय। রাজ-কাজ করি দান সাধি ফিরি এপা কিবা পরিচয়॥ এ রূপ যৌবনে নানা অভরণে যাইছ মথুরারণ বিকে। वृत्रि मान निव তবে যাইতেঃ দিব আমি ডরাইব কাকে। অমুল্য রতন করিয়া গোপন• রাখ্যাছ হিয়ার মাঝে। নিজ-ভালদ চাহ খসাই দেখাহ रेए कि जामात्र लाटक ॥ এত কহি হরি হু,বাহু পদারি রহে পথ আগুলিয়া। জ্ঞানদাসে কয় কিবা কর১১ ভয় যাহ হাত ঠেলা দিয়া ॥৭৬॥১৩৭৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুৰির ১৮৮৮ সংবাক পদ। ২। 'জনেকি' থ, চ। ৩। 'মথুৱা' ক, চ। ৪। 'ৰাইতে না' প-র-সা। ৫। 'কাথে' ঘ, চ। ৬। 'বতন' প-র-সা। ৭। 'রাখিছ' প-র-সা। ৮। 'লাভ' প-র-সা। ১। 'থসাইরা দেহ' প-র-**সা। ১**•। 'আঞ্চুরা' প-র-সা। ১১। 'কারে করো' প-র-সা।

रबाडी ।> হেদে হে মন্দের হুত কে তোমাং করিলে মহাদানী। দণ্ডে কাচ° নানা কাচ® না ছাড় রমণীরং পাছ व्याहरण ना वृत हिछ वानी । अ। শুনিয়াছি শিশুকালে পুতনা বধ্যাছ হেলে তৃণাবর্ত্তের লৈয়াছ পরাণ। এখনি• নন্দের বাড়ী দেখিয়াছি গডাগডি এখনি সাধিতে আইলা দান ॥ কাড়ি লব পীত ধড়া আলুয়্যা ও ফেলিব চূড়া বাঁশীটি ভাসাঞা> দিব জলে ৷ कूर्वाम विमवा यमि মাথায় চালিব দ্ধি বসিতে না দিব ভক্নতলে॥ মোহন চাতুরী করি বাঁশীতে সন্ধান পুরি বুকে হান মনমথ-বাণ। त्रमणी-मधन कत्रि অভরণ লব কাড়ি>২ ভাল মতে সাধাইব ১০ দান ॥ রাখাল বর্বর ভাতি ধেনু রাখ্য দিবা রাতি महिस (गांधन वदम्भः लक्षांभः। कूल-वधु मान हाम - है दिश नाहि गांक वाम এখনি কংসেরে দিব কয়্যাঞ ॥৭৭॥১৩৭৯॥ পাঠাক্তর

)। हेर्रा भ-द-मा পृथित ১৮৮৯ मृश्यांक भूग। ২। 'তেগমার' প-র-সা। ৩। 'ক্লর' প-র-সা। ৪। 'कांक' भ-त-ना। ६। ब्रिंगमी' क, ४, ठ, भ-त-ना। ৬। 'এখন' ক, চ; 'তথনি' ধ; 'অথনি' প-র-সা। গ। 'কলি কাগি' প-র-সা। ৮। 'অংশনি' প-র-সা।) 'निव' क। > । 'अन्तारेश' क; 'बांडेनारे' ग-त-ना। **२२। 'कानारेश' क**। २२। 'कांक्वि' व। o। 'नियाहेव' भ-त्र-मा। ১৪। '(यद्भ वाय' च्टन 'বেছ রাবে' ক, ধ; 'নাঠে থাকো' গ-র-না। ১৫। 'बष्ट्' या २७। 'लक्श' यः, 'लटेवा' या २१। 'क्का' थः 'क्हेना' यः

श्रुष्ट्र । ३

কি করবং সোরস দান।
আপনে দিল সমাধান।
অধবে অমিয়া-রস ভোর।
বৌবনং বোধং আগোর।
ভোকে কহিং ফুলরি রাধে।
হরি সঞ্জে না করু বাদে।
ক্ত-কনকাচল পারে।
শোভে তথি মোতিম-হারে ॥
কুণ্ডল চক্রণ বিকাশে।
বেণি ভুজজিনি পালে॥
ভাঙ ধমুয়া জমু ভজ।
খর শর নয়ন-তরজ।
অতয়ে বুঝিয়ে রণ-আশ্পণ।
কহভহি গোবিদ্দ দাস॥৭৮॥১৬৮০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৯০ ও প-র পুথির ২৮% সংখ্যক পদ। ২। 'করিব' পর-সা। ৩। 'আপনি' ক। ৪। 'বৌবনে' ক, খ। ৫। 'বোধি' ক; 'বোভা' খ; 'কোধে' ঘ, চ। ৬। 'বেতে কহি' হলে 'গুন খুন' প-র। १। 'কর বাদে' প-র-সা; 'কর বিবাদে' খ। ৮। 'পরে' প-র-সা। ৯। 'শোভে' ইত্যাদি খুলে 'হার-স্ব্রেখরী ধারে' প-র।
১০। 'চক্র' প-র-সা। ১১। 'রস আশ' খ; 'রণ-ভাস' খ; 'মন আশ' প-র-সা।

পঠনদ্বনী।>
নাই-মুখ ছেরি মুখনা কছে।
এত কি আমার পরাণে সহে।
নাখাল হইরা ছুইতে চার।
অব কি করব নাহি উপার ।
দানী অবসর ব্বিয়া কাজে।
সুকাহ বাইরাং নিকুঞ্চ মাবে ।

এত কহি সতে ধাইয়া চলে।
নিক্ষে রাই লুকায় ছলে ॥
বিসিক নাগর বুঝিয়া কাজ।
লুকায়া। চলিলা কুঞ্জের মাঝা।
রাই কামু তাইা দরশ পাই।
রহে মুহেঁ মুহাঁর বদন চাই॥
প্রতিঅকে দানা লইলা দান।
রতি রতি-পতি মুরতিমান॥
বে ছিল মানস পুরল আশ।
আনন্দে মগন শেখর দাস ॥৭৯॥১০৮১॥

পাঠাৰৰ

>। देश প-त-ना পুথির ১৮৯১ সংখ্যক পদ।
२। मुकाই वार्ट क, थ; 'जुकात वार्टता' छ। ०।
'मृकाঞा' क, थ; 'मृकार्टता' छ। ४। 'ध्रह (बार्टा' क, थ; 'দোহে দোহা' छ।

পুনশ্চ দিনাস্তে।

ষাবুর।১

গোঠেং বিজই অজ- রাজ-কিশোরবর* বাজত বেশু বিষাণঃ।

করি কত ছল্ম পল্ল-মূখি নিক্সই

হেরইভে বিপিনে পয়ান॥ স্কুন্দরি হেরই না পায়ল রক্ষ।

ফুব্দর প্রবদন ক্রেড চলি গেও বন

না কানিয়ে কোন তরঙ্গ। প্রশা

८भघ-नाम श्वनि देयहन ठां छिनि

थां अन भानिक चार्नि ।

माकृ प्रस्थि भवत्न प्रथ (प्रथम

रेड शिल **उ**र्वाह रेनब्राल्य १४०॥४७०२॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৯২ সংখ্যক পদ। ২। 'গোঠ' ৰ , 'গোঠেতে' প-র-সা। ৩। 'রাজ- কিশোর ক, প-র সা। ৪। 'বিশান' চ; 'নিশান'

ব। ৫। 'পাশে' ক, ব। ৬। 'নিকিণ' ক। ৭।

'বেয়ন্ত' প-র সা। ৮। 'মেব-নান' ইত্যদি পংক্তি
চারিটির মূলে প-র-সা পুথির পাঠ, বধা---

শ্বেষ-নাদ শুনি বৈছে চাতকিনি
ধাওল পানিক আসে।

উছন প্রেম আরতি নাই পাইরে
নিমিধে ত যুগ ছতালে॥

দাক্ষণ দ্বিশ প্রবনে হুণ দেরও
তৈ গেল তবহি নৈরাশে।

পৃষ্টি শ্বতর তাহে রবি প্রথর
কহতহি গোবিন্দ দাসে।

पाननी कि

কামুক গোঠ-গমন তহি হেরইতেং অভি উতক্তিত রাই। मिनदा निक मह-**ठित्र मदन देवर्ठलि**॰ भा मूच कृषि व्यवगारे ॥ সজনি কি করব অব হাম থেছ। গুরুজনে বঞ্চিয়া देक्डन मोनव॰ শ্রামর রসময়-দেহ ॥ এ ॥ धेष्टन बहन রচন তব করইতে मुचत्रा मिलल (मांहे शिम। ভাকর বদন হেরি তহি জানল পুরব সব মনকাম । মুখরা কহড° তব চল সভে বাওব

সঙ্গহি মোহনদাস ॥৮১॥১৩৮৩॥ পাঠাছর

ভহিঁ সৰ বেচৰণ

্ গোবৰ্জন গিরি পাল।

দধি স্থুত গোরস

)। देश भ-त्र-ना श्रीवेत अन्नक नश्याक भवः। २। 'छक्टि ह्वाहेटक' वृत्त 'नाहि ह्वित्रिश' क्, ब, ह, भ त्र-ना। ७। 'निक्टित' हेछावि व्ह्रूल 'मिन्दित বৈঠলি নিজ সহচরি সনে' খ। ৪। 'মিলব' ক, চ, প-র-সা। ৫। 'তহি' প-র-সা। ৬। 'কংহ' খ। ৭। 'সব' চ। ৮। 'তহি' ইত্যাদি ছলে 'সাজাইরা পসার' প-র-সা।

वब्रांडी । >

দধি খ্বত গোরসে সাক্ষার।। পসার।

চীরহিঁ ঝাপন পদেওল তার ॥

কিক্ষরিগণ সব শির পর নেল।

মুখরা সক্ষেধনি তহিঁ চলি গোল ॥

সহচরি সকছি বিনোদিনি রাই।

দুরহি কামুক দরশন পাই ॥

পুলকে পুরল তমু গদ-গদ বোল।

ঘামহি জীগল নীল নিচোল॥

কো ইহ কেলি-কদম্বক মূল।

নব মেঘে বিজুরি জড়িত সমত্ল॥

বাহু জুলিয়া উহ ডাকরে কায়।

মুখরা কহয়ে ইহ দ্বব রস রায়॥

পম্বহি মাগয়ে গোরস্দান।

মোহন কহে মোহে ঐছন ভান॥

112170F81

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮৯৪ সংখ্যক পদ।
২। 'সাজাঞা' ক, খ; 'সাজাইরা' ছ। ৩। 'বাপিরা'
ছ; 'বাপন' প-র-সা। ৪। 'ভার' ছ, প-র-সা।
৫। 'কিছরগণ' ক, খ, প-র-সা। ৬। 'বলি ভহি'
ছলে 'ধনী' খ। १। 'ভূহ' প-র-সা। ৮। 'হই'
গ র-সা।

चररे ।)

কপট দানের ছলে দান সিরজিয়া। ঘট পাভি বসিয়া রৈয়াছে বিনোদিয়া।

वड़ाई प्रिश्ना कटह वहन हां जुड़ी। कांत्र घटतत वधू देलता यां अरक कति॥ क्रिश त्वीयत्न क्वांश तिया यात्र वधुः না জানি অস্তবে উহার কত আছে মধু॥ স্থকোমল চরণ-ভলিমা শোভা অতি। এ বেশে বাহির করে কেমন বা পতি। বড়াই কহে এত কথা কিবা প্রয়োজন। (यथारन रमधारन रकन ना कति[®] गमन³॥ পর-বধু প্রশংসিয়া ভোমার কি কাজ। ঘনায়্যা॰ আসিছ কাছে নাহি বাস লাজ। ভোর পিতা নন্দ রায় পরম উদার। ভাহার ভনর হয়্যা হেন ব্যবহার ঃ এই পথ দিয়া মোরা যাই মথুরাতে। পথেতে বিরোধ কর কুল-বধৃ সাথে॥ চাঁভুরী না কর কানাই চতুর সিয়ান । কংস রাজা শুনিলে লইবে জাতি প্রাণ্ণ।

পাঠান্তর

115013076H

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৮৯৫ সংখ্যক পদ।
২। 'ভদিমা শোভা' হলে 'শোভা দেখিরে সে'
প-র-সা। ৩। 'করে' প-র-সা। ৪। অতঃপর প-র-সা
পুৰিতে নিয়লিখিত ভণিতার কলি বারা এই পদটি
সুমাধ্য করা হইরাছে; ব্ধা,—

"ৰংশীৰদনে ৰোলে কি কাল ভোষার। আমরা ৰাইৰ গো-রদ বিকিবার॥"

ষ, চ ও প-র-সা পুথিতে 'পর-বধু' ইত্যাদি বাকি
চরপ্রপাল অভন্ন পদরপে নিথিত হটরাছে। ৫।
'বনাঞা' ক, খ; 'বনাইরা' ষ। ৬। 'হইরা' ষ।
१। 'পথের' ক, খ, চ, প-র-সা। ৮। 'নিরোধ'
চ। ৯। 'নেরান' ক, খ। ১০। অতঃপর প-র-সা
পুথিতে নির্নিথিত ভবিতার কলিটি বৃত্তী হয়;
বধা,---

"বংশীৰদনে বোলে ছাড় টাটপনা। ভূমি মহাদানী ভোষার ঠাকুর কোন জনা॥"

্ প্ৰীয়াগ (১

কানাই কন্ত ফরকাহ চুল।

দানী হই রাং বে জন ৈ গৈয়ে
ভার ধরম গণ্ডার মূল ।
আহে মেনং ভোমার চাঁচর কেশ
টানিয়া বাদ্ধ্যাহ ভালে।
ভাহার উপরে শিখী-পাখ্যের পাখা
জড়ান বকুল-মালে ।

এ ভাড় ভোড়ল বলয়া বাঘর
ইণে আহে বুঝি ভাড়া।

নন্দরাজ ঘরে নবনা **খাইয়া** হৈয়াছ উমাদ যাঁড়াশ ॥৮৪।১৩৮৬। পাঠা**ৰ**ব

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৮১৬ সংখ্যক পদ।
২। 'হৈয়া সে',ক। ৩। 'তার' ইত্যাদি হলে 'তার
ধরম গণ্ডা মূল' ক; 'অব ধরম গণ্ডা মূল' গ-র-সা।
৪। 'মেনে' ক, খ; 'বেন' গ-র-সা। ৫। 'বাছিছ'
প-র-সা। ৬। 'পাথের পাথা' চ; 'পাথা দেখি'
প-র-সা। ৭। 'অভান' ইভ্যাদি হলে 'অভান বক্ল
ফুলে' ক, খ, চ; 'লবল মালতি মালে' প-র-সা।
৮। 'সাড়া' খ, চ; 'গাড়া' প-র-সা। অভংগর
প-র-সা পুথিতে নিয়লিখিত ভণিতার কলিটি সৃষ্ট
হরঃবথা,—

ৰশোণা বেমন ছ-করে বাহিতো স্থাপিতো তোমারে কেবা। কহে মনোহর কেমন বাটপাড় বাটপাড়ি নিধি বাবা ॥°

वैश्रीत 15

দানী কৰে ফির ফিরং না শুনরে রাই। বাস্তু প্রায়িয়া দানী রাখল ভাইণ।

कट्ट किरत भगारत विषातिः (मिथ धर्षा। আগে বুঝি নিব দান পাছে কব কথা 🛚 যত অভরণ গায় বেশ ভূষা আছে। সব লেখা করি দান দেহ মোর কাছে॥ নিতি নিতি গভায়াত কর এই ঠাঞি। এ পথে মদন-রাজ কভু শুন । নাই। কত ভক্তে কথা কহ ভয় নাহি বাস। রাজ-অনুগত জনে হেরি পুন হাস। কাহার গরবে যাহ দিয়া বাছ নাড়া। ভূষণ যৌবন ধন সব হবে হারা ॥ तः**नी कहर**ण यूचि अत्रोक्षक देहल। পৰে বাটোয়ারি করা নহিবেক ভাল।

1166176231 পাঠান্তর

11-017-01-11

১। ইছা প-র-সা পুর্বির ১৮৯৭ সংখ্যক পদ। २। 'किति किति' क। ७। 'उषाई' প-র-সা। ८। 'विशादा' क, य। १। 'शाकू' य, छ। ७। 'ताक' क। ৭। 'শুনি' ক, খ, প-র-সা।৮। 'সারা' প-র-সা।

ख्यां मार्ग ।>

রাজা এথা থাকে কোথা কেবা সাথে দান। किया ठायूर किया नयूर (क्या कर्त्र जान । কুল-নারী হেরি হেরি ঠারে কও কথা। गटक वृद्धी हाट नड़ी घन नाटड़ माथा । এখনি বাইয়া কৰ° গোকুল সমাজ। **ट्यांचा वाट**व मान माथा काणा वाटव माळ । কোথা পলাইয়া যাবে স্থবল রাখাল। তিলেকে ভালিয়া বাবে সব ঠাকুরাল ॥ ব্দত্তরে আমার বোলে হও সাবধান। কুলবড়ী দেখি আর না করিছ আন । वः नीवमरन करह दकवा श्वरन कथा। **এখনি দেখিয়া লবে বেবা থাকে বথা #**

পাঠান্তর

३। हेरा भ-त-मा भूषित ১৮৯৮ मःश्वाक भन्। २। 'ठांड' श-त-मा। ७। 'किवा नव' चरन 'रकवा लंब प; 'किया नात' थ; 'किया नाख' भ-ब-मा। 8। 'करव' च ; 'करछा' भ-व-मा।

বান্ধিয়া চিকণ চূড়া বনফুল তাহে বেড়া গুঞা-মালা তাহে বন-সোণাই। গোঠে থাক খেতু রাখ আপনা নাহিক দেখ বড় হেন বাসহ আপনা ॥ व्यत्य कानां हे विषय भारेशा देशा (खाताः। আঁখি মটকিয়া হাস আপনা কেমন বাস আন হেন নহিয়ে আমরা ।ধ্রা গাম্বের গরবে ভূমি চলিতে না পার জানি রাজ-পথে কর পরিহাস। রাজ-ভয় নাহি মান কংস-দর্বার জান ্দেখি কেনে নহ এক পাশ 🛭 চহুরে চাহুরী কভ আর কছ অবিরভ काठा॰ काकारनत्र नमान। खाननाम करह হিয়ায় ক্ষিয়া লছ

कारा नटर कविष् भाषान ॥৮१॥১०৮३॥ পাঠান্তর

३। हेरा भ-त-मा भूबित ১৮৯৯ मश्बाक भवा। ২। 'বন-সোণা' হলে 'বলো সোনা' প-র-সা। ৩। 'रेहरन' क, थ, छ। ८। 'र्खाना' क, थ, इ, श-ब-मा। e। 'काँठा' क, च, ठ। ७। 'कनिवा' च. **इ : 'क्त्रिवा' भ-ब-मा। १। 'काँडा' क, ५, ५।** ৮। 'क्निष्ठि' व. ह।

काहिबाति ।>

ওহে কানাই এ বুদ্ধি শিখিলা কারং ঠাঞি। भरवन नम्ये दम्य সহনে ফিরাও আঁখি पष् कर्नात शांख दोक नारे ॥अ॥

আন্ধার-বরণ গা ভূমিতে না পড়ে পা कि शत्रद्व चन चन होता। বনে বনে চডাও গাই আপনাকে চিহ্ন নাই হায় ছিছি লাজ নাহি বাস : পেঁচ রাখি পর ধড়া টেড়া করি বান্ধ চূড়া কাণে গোঁজ বনফুল ভাল। ডিগর লইয়া সাখী বনে ফির নানা ভাতি বেচাইবে ব্রজ রাজের পাল ॥ বনে মাছে ফলগুলা তাহা তুলি পর মালা গারে সদা রাকা মাটী মাখি। . এত' বেশ ভূষায় কিষা পরনারী ভুলাইবা वः नीमारभद्र भरन राष्ट्र माथी ।

114411703011

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ১৯०० সংখ্যক পদ। ২। কারু থ। ৩। দিড়' খ, প-র-সা। ৪। চিরার' খা ৫। 'চিন' প-র-সা। ৬। 'ফুলগোলা' ঘ, চ। १। 'অ' খ। ৮। 'মনে দের' ছলে 'মনে দেখ' চ; 'মনে' ছ।

ভণা রাগ।১

স্থাও দেখি শ্বৰল সখা কার ঘরের এ হটীং। कि खान कतिन (इ দেখিতে দেখিতে মোরে ধেপা কৈলে এই বে॰ মায়াটি° ॥ধ্ৰা লোক জন অগোচরে পার চোর চুরি করে ধন কড়ি সব লয় ছরি। দেখিতে দেখিতে মোর এ বডি বিষম চোর ভমু মন সব কৈল চুরি। मात्रादिक (वर्ण धविद्योदक মার্যাণ নর এই বে निण्ठम त्म वार्षात्रावी वर्षे । সাবধানে দেখ ভাইয়া বল-বাস যুচাইয়া कि कि थन देशन निक ए ।।

এত বলি গোপী-নাথ निटंड हाट्ड शास्त्र बांड চুম্বন করিতে বারে বার। উচিত কহিল ভোৱে দান দিয়া যাও মোরে নহে ত উতার অলম্বার । শুনিয়া ললিভা বলে वन मार्च नरह जारन রাজ-পথে এত কি জঞ্চাল। আপন নগর ঘরে यमि नाशि भारे ८७।८व তবে সে জানিয়ে ভালে ভাল ॥ मानो करह स्माहाई व्याटक रेलग्रा यात त्राकात कारक তবে সে জানবা ভালে তুমি। वःशीवम्य क्य মোরে না করিহ ভয় বিরোধ ভালিয়া দিব আমি ৮৯॥১৩৯১॥

পাঠান্তর

>। देश প-त-ना श्वित >> > मश्याक शवा २। 'इंडि' क, ह; 'इंडि' य, च। ७। 'स्न' च। इ। 'स्मग्रांडि' च; 'माहेशांडि' च। द। 'स्मग्र' च। ७। 'स्मग्रांत्र' च। क। 'चस्त्र' भ-त ना। ৮। 'डानि जान' च, ह।

वानने ।>

শুন শুন নীগজ শকান।
কা সক্রে মাগহ দান ॥
সবে দধি ঘুতের পসার।
কাহে করহ অবিচার ॥
সহজই ভুহুঁ সে অধীর।
ধর কুল-বধুগণ "-চীর ॥
রাজ-ভয় নাহিক তোহার।
পথ মাহা এতছুঁ বেভার ॥
গোপ গোপালগণ সজ।
অহনিশি কৌতুক রজ ॥
তেত্রিং সাহস এত ভেল।
পরশহ কুলবভি-চেল ॥

বিপরিত কর পরিহাস।
কহ রাধাবল্লভ দাস ॥৯০॥১৩৯২॥
পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপ্ৰির ১৯০২ সংখ্যক পদ। ২। 'নিল্ক' ক,চ,প-র-সা। ৩। বিধ্পূণ' ক।৪। 'পোরালাগণ' ক। ৫। 'ডেঞিড' প-র-সা। ৬। 'বিপরীড' ক।

'রাই-মুখ হেরি মুধরা কহে' ইত্যাদি গেয়ম্। পুনশ্চ দান-কেলি যথা।

शहर ।>

ত্রিভূবন-বিজই মদন মহারাজ।
বৈঠল বুন্দাবনে নিকুঞ্জক মাঝ ।
ব্যোরস আওতং রসবতি ঠামণ।
হজিল: বিপিন-পথে সরবস দান ॥
ভোহে কহোঁও গোপিনিও আয়ানেরং রাণি।
কেমনে জানিবা দানা সহজে আয়ানি ॥
ভূছাঁ গজ-গামিনি হরি জিনি মাঝ।
নব বৌবন-মদে নাহি দেহ রাজ ॥
মোহেংও গিরিধর বলি সোঁপল কাজ।
ভাপনে আপন কথা কহিতেহ লাজ ॥
কেবল গোরস-দানে কেনে দেহ ভজ।
বিচারেংও চাহিরে দান প্রতি অক্তে অস্ত ॥
এ সব দানের কথা জানয়ে বড়াই।
গোবিন্দদাস কহংও চপল কানাই ॥

1060(1661

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯ ৩ ও প-র পুৰির ২৮।২ সংখ্যক পদ। ২। 'আওল' ক। ৩। 'ঠান' প-র-সা ৪। 'পুজিল' প-র-সা। ৫। 'কহ' ক; 'ক্হে'ব; 'ক্হঙ' প-র-সা। ৬। 'আলো রাখে'

প-র। १। 'রারাণের' ए। ৮। 'জানিবা দান' ছলে 'জানিবে জুমি' প-র। ৯। 'জুছ' ইত্যাদি ছলে 'এ পজগামিনি ধনি' প-র। ১•। 'মোরে' প-র; 'তোছে' ए। ১১। 'বিচারি' চ, প-র-সা। ১২। 'কছে' ক।

ভাটিরারি।১

माधव छूदबर कत खेल हे नग्रान । সোই চাতুরিপনা জগ মাহা জানিয়ে যোই রাখয়ে নিজ মান । ধ্রা হাসি হাসি নিয়তে আসিছ অবলা হেরি॰ ভাল নহে॰ তোহারি॰ বেভার। লোক-লাজ ভয় এক বা মানসি ७ क्रां करम प्रवर्गत ॥ নহোঁ পুলটা হাম বর-কুল-কামিনি নিকটে ভাত-ঘর মোর। ভুত্ত বন-চারি তোর মতি চঞ্চল ভাহে>ঃ সাহস এত ভোর 🛭 শ্ৰুতি-সম্ভব্য নহ ইহ স্ব কুবচন (वं भव कहिन मयु जारंग। खांगमांग कह এছে কছসি কাছে>৮ আওলি নৰ অনুৱাগে ১৯২॥১৩১৪॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সাপুলির ১৯০৪ ও প-র পুলির
২৮।১৬ সংখ্যক পদ। ২। 'দুরে' ক। ৩। 'উলট নরান'
হলে 'না কর বরান' প-র। ৪। 'অবলা' প-র।
৫। 'আসিছ' ইত্যাদি হলে 'নিরড়ে ডুছ্ আওসি'
প-র। ৬। 'নহ' খ, চ। ৭। 'তোহার' খ, চ। ৮।
'তোহারি বেভার' হলে 'ইহ ব্যবহার' প-র। ৯।
'একই' প-র। ১০। 'উ' খ। ১১। 'কুলে' ক।
১২। 'দরবার' প-র-সা। ১৩। 'নহ' ক। ১৪।
'কি দেখি' প-র। ১৫। 'স্বর' ক। ১৮। 'বাং

ইত্যাদি ছলে 'এত সে না বোলহ' পর। ১৯। 'আওলি' ইত্যাদি ছলে 'ধনি কামুধনি অফুরাগে' পার।

পঠমন্ত্রী 1১

নিতি নিতি যাও বাই মথুৱা নগরে।

স্থাত দ্বি ছ্বং ঘোলেং সাজাঞাং পদারে।
আমি পথে মহাদানী বিদিত সংসাদে।
কার বোলে কোন ছলে যাও অবিচারে॥
দেহ মহাদান রাই বিদয়া নি টে।
এক পণ অধিক কাহণ প্রতি ঘটেং॥
চির দিন আছে দান সমুখে আসাড়িং।
আকে বন্ত-মূল ধন আরু না : * ড়ি॥
সিঁথার সিন্দুর দান কহনে না যায়।
নয়ানে কাজল-রেখে ধর্ণী বিকায়॥
কি বসিধে বল রাই না সহে বেয়াজ।
ভূমি ধনী আমি দানী ইথে কিবা লাজ॥
উষত চাহনি হাদি আধ আধ ক্থা।
ভ্রানদাস কহে দানী বিশ্ব বিধাতাং॥

1136:50:50

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-দা পুণির ১৯০৫ ও গান পুণির ২৮।১৭ সংখ্যক পদ। 'পঠমঞ্জরী' স্থলে 'শ্রীবাগ' পর। ২। 'ঘাহ' পর। ৩। 'হগ্ধ' ক; 'দ্ধ' ঘ। ৪। 'থালে' খ। ৫। 'দাক্রায়াট' চ। ৬। 'কর' ক, খ। ৭। 'ঘাটে' ঘ, প-র-সা, পর। ৮। 'চির দিন আছে' ইত্যাদি স্থলে 'সমুখে আচরে' ইত্যাদি ক, খ, ঘ, চ। ৯। 'আবর' পর। ১০। 'বিষম বিধাতা' স্থলে 'বাদ্ধ প্রেমলতা' প-র।

निका

৭—৮। "চির দিন" ইত্যাদি। দান অর্থাৎ শুল্ক প্রহণ করিতে হটলে ভিনটি জিনিস থাকা আবশ্রক,—(১) দানের প্রথা, (২) দান-প্রহণ-

কারীর সামর্থা, (৩ দান গ্রহণের উপযুক্ত জবা। এ স্থলে ঐ তিন্ট জিনিদের কোনটির অভাব নাই--ইছা দেবাইবার জন্ত শ্রীঞ্ক বলিতেছেন,—চির দিন দান অর্থাৎ দানের নিয়ম আছে; সমুৰে আযায়ী অর্থাৎ দণ্ডবারী রহিয়াছেন; ভার পরে জীরাধার অজে দানের উপযুক্ত বহু-মূল্য অসমার ও বসন র্থিয়াছে; প্রতরাং এ স্থলে দান ন: দেওয়ার কোনই কারণ নাই। ['পালাশো দণ্ড আবাঢ়ঃ'; अমর-কোষ; 'অপাজিলায়াচ্ধর: প্রসঙ্ভবাক্' কুমার-সম্ভব। একাসারার বৃত পলাশ-দ**ও হহতেই বোধ** হয় 'আবঢ়' (অপভংশে আগাড় ; শক্ষের সাধারণ দিও ও 'গাষ্টা', অপ্রংশে 'আ্সাড়ি') শঙ্কের সাধারণ **प्रथानो वर्श आमिशास्त्र। श्रीकृष्ण (बाद हम** র্মাপকতা করিয়ার ।নজের হস্ত-স্থিত গো-চারণের যৃষ্টি অপুৰা বংশাটিকেই মণ্ড বলিয়া করিয়াছেন 🗀

♠ 경기 1

গণ ছাড় গতে কানাই কিবা বল কর।

যার বাহাব নতে না পাছিং তার করে ধর।

গোনি মরন হউ এ ছিল কপালে।

ব্যভাব-শুভা-ভত্ন ছুইলে রাখালে॥

একে শে হোমাবে ভা । বাদেশ কংসাজর।

এ বোল শুনলে হৈবেল দেশ হৈছে দূর।

কে ভোমাবে বিষয় দিলে ফেল দেখিশ পাটা।

ভূমিও নুহন দানা আমরা নহি টুটাশ ॥

থাকিবা খাইবাস ঘদি যমুনার পানা।

গোপীগণে না রাখিহ ল ইউও দানীশং॥

1>811৩৯৬।

পাঠান্তর

১। ইতা প-র-সা পূ'থব ১৯০৬ ও প-র পুশ্বির ২০।২ঃ সংধ্যক পদ। 'শ্রীরাগ' ক্লে 'দিকুড়া' প-র। ২ । 'নিতে না পা**ও' ক্লে 'দইতে নার'** প-র-সা। ৩। 'হাত' প-র-সা। ৪। 'হউক' প-র-সা।
৫। 'হার' প-র। ৬। 'ছুইবে' প-র-সা। ৭। 'না
বাসে' ক, খ। ৮। 'হইবে' খ, চ। ৯। 'রাফ' প-র।
১০। 'তুমিও' ইত্যাদি হলে 'তুমি সে বড়ার পো আমি
কিলে টুটা' প-র। ১১। 'থাকিবে থাইরা' প-র। ১২।
'না ছুইও গোপিকার অল না হইও দানী' প-র-সা;
'গোপীগৰে না খাটাহ পথে হঞা দানী' প-র।

পঠমঞ্জরী।১

जिल्हा ना याहेर उज़ारे धित ट्लामांत शाय ।
कि लागि नटम्पत्र ट्ला॰ धित्रा त्रश्य ॥
चरत्रत्र वाहिरतः टेकला॰ विलया क्रिया ।
जानिया ताथाटलत्र हाटल किला ट्य ट्लांशिया॰ ॥
जानिया ताथाटलत्र हाटल किला ट्य ट्लांशिया॰ ॥
जानिया ताथाटलत्र हाटल किला ट्य ट्लांशिया॰ ॥
जानिया हरेया कानी कान मार्थ वाटले ॥
जानी टेह्या टकवा होटन जाटलत्र वमन ॥
कानी टेह्या टकवा होटन जाटलत्र वमन ॥
कारवाथ नटम्पत्र ट्लाला ना काटल काटला ।
वालीवमटन ट्वाटल क्रियाल हिया ।
कानी नटह नैम्मञ्ज जाटल कांगुहेशा ॥

116000011

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯০৭ ও প-র পুথির
১৮/১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'বালা' প-র। ৩।
'রহর' প-র-সা। ৪। 'বাহির' প-র। ৫। 'কৈলা
মোরে' পর। ৬। 'আনিরা দানীর হাতে দিরা
বাও ছাড়িবা' প-র। ৭। 'এ দেশে' ইত্যাদি বাকি
চরণঙলি ভেবল প-র-সা পুথিতে আছে।

क्षिनो ।)

হেম-ঘট পাইয়া পাথারে। চোরার মন সাত পাঁচ করে। তুমি ইহায়ং পুছহ বড়াই।

কিবা ধন মাগরে কানাই ।

মাকছের হাথে নারিজ্লা ।

খাইত্যে সাধ ভান্সিতে নাহি বল ।

তুমি কি না জান বনমালি।

রাখালে কি ভজে চন্দ্রাবলি।

সাপের মাধা(য়) মণি জ্লো ।

বড় কহে বাশুলির বলে॥৯৬৪১৩৯৮॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-ব-সা পুথির ১৯০৮।১৯১১ ও প-ব
পুথির ২৮।২১ সংখ্যক পদ। 'স্থাছনী' স্থলে 'বরাড়ী'
প-র। ২। 'উহায়'প-র-সা; 'দেখি' প-র। ৩।
'মাগেন' প-র। ৪। 'মাকড়ের' ইত্যাদি কলিটি
কেবল প-র পুথিতে আছে। ৫। 'ভেটে' প-র।
▶। 'সাপের' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি ঐগুক্ত
শিবরতন মিত্র মহাশয় একখানা প্রাচীন পুথিতে
প্রাপ্ত হইয়াছেন। 'চঞীদাসের পদাবণী'—বলীয়সাহিত্য-পরিষ্দের সংস্করণ, পরিশিষ্ট।০ পৃঠা জুইবা।

টাক1

e— । "নাকড়ের" ইত্যাদি। মাকড়ের অর্থাৎ
মর্কটের হাতে নারিকেল (বে প্রকার),— (মর্কটের)
থাইতে সাধ হয়, কিন্তু (নারিকেল) ভালিতে বলে
কুলার না (শ্রীক্রংক্ষর শ্রীরাধাকে পাওয়ার বাশা
সেইরূপ অসম্ভব।)

শ-৮। "তৃমি" ইত্যাদি। ছে বনমালী । তৃমি কি কান না ? চন্দাবলি অর্থাৎ চন্দাবলিনারী ত্রীরাধা কি রাধানকে ভল্কনা করে ? ত্রীযুক্ত শিবরতন বাবুব প্রাপ্ত

'নিসেদ (?) নীলক বনমালি।
বাধানে কি ভেটে চন্দ্ৰাবলি॥'
পাঠের 'নিসেদ' ও 'বাধানে' শব্দ ছুইটি বে 'নিবেধ'
ও 'রাধালে' শব্দের স্থলে অওম পাঠ, তাহা সহবেই
বুঝা বার। বুলীর-সাহিত্য-পরিবদের প্রকাশিত

চণ্ডীদাসের 'প্রীক্লফকীর্ত্তন' প্রন্থে 'চন্দ্রাবলি' শক্ষ কেবল প্রীরাধারই নামান্তরক্ষণে অনেক স্থলে ব্যব-স্থত হইরাছে এবং ঐ গ্রন্থে 'মর্কট' বা 'বানর' অর্থে অপজ্ঞংশ 'মাকড়' শব্দেরও ক্ষেকটি প্রয়োগ আছে। 'মাকড়' শব্দের এইরূপ প্রয়োগ চণ্ডীদাসের পরবর্ত্তী বালালা সাহিত্যে পাইয়াছি বলিয়া ত্মরণ হয় না। 'হেম্বট' ইণ্ড্যাদি পদটি প্রীরাধার স্থীর উক্তি; এ স্থলে চন্দ্রাবলিনায়া প্রতিপক্ষ-নায়িকার কোন প্রসাদই নাই; স্থতরাং উল্লিখিত নানা কারণেই আমরা এই পদের 'চন্দ্রাবলি' শব্দের প্রতিপান্ত প্রারাধা ও পদটি বড় চণ্ডীদাসের রচিত বলিয়া সিদ্ধান্ত করিতে বাধ্য হইয়াছি।

পঠমঞ্জী ।>

আজি কেনে নাহি বাজাও বাঁণী।
অপাত্ত-ইপ্লিড ইবত হালি॥
কিবা ভরসায় আইস কাছে।
না জানি মরমে কি ভাব আছে॥
পসরাং ছুইতে করহ সাধ।
বরাকের দানী সোণায় সাধ॥
মুখের হুখেতে কহিতেও চাও।
বিপরীত ইথে করিলে পাও॥
কালা হৈয়া এত রসের ভোরা।
খঞ্জন কমলে দেখিলা পারা॥
কি গুণ দেখাঞাও সঘনে চাও।
হাতে কি চান্দের পরশ পাও॥
জ্ঞানদাস কহে পোণ-বিয়ারি।
বলিতে পারিলে এত কিং বলিং ১৭॥১৩১৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯১৪ সংথকে পদ। ২। 'পদার' ক, খ। ৩। 'কইতে' ক, খ, প-র-সা। ৪। 'গুণ দেখিয়া' খ; 'গুণেতে তুমি' প-র-সা। ৫। 'কি এডেক' ক, প-র-সা।

টাকা

৯—১০। "কালা" ইত্যাদি। তুমি কৃষ্ণকার হইয়া এক্রপ রসে বিভোব, (ইহা বড়ই বিচিত্র); বোধ হয় যেন, তুমি পল্মের মাঝে ধঞ্জন-পক্ষী দেখিনরাছ! (পল্মের মাঝে ধঞ্জন-পক্ষী দৃষ্ট ছইলে শাক্ষন-শাক্ষ অনুসারে দর্শকের বিশেব সৌকাগ্য স্থাচিত করে।) তুলনা কক্ষন,—

'একো হি ধন্ধনবরো নলিনীদলম্বো দুইঃ করোতি চতুরস্বলাধিপত্যম্ ।'

— শুণার-ভিলক।
স্থীর উক্তির অপর গুচ অর্থ ইহাও বটে বে, জুমি
বোধ হয়, শ্রীরাধার বদন-কমলে থঞ্জনের ভার চঞ্চল
নয়ন-ভঙ্গী দেখিয়াছ; তাই একেশ রসে বিজ্ঞোর
ইইয়া পড়িয়াছ!

अवात 15

সংজই তমু ভিরিভন্ন।

এমন হইয়া এত রক্স ॥

যবেং ভূমি ক্মনর হইতা ।

তবে নাকি কাহারে থুইতা ॥

আপনা চতুর হেন বাস।

কি দেখিয়া কি বুকিয়া হাস॥

চাহিতে সঘনে আঁখি চাপ।

পর-নারা দেখিয়া না কাপ ॥

যে দেখি মরমে এই ভাব ।
ভেতিঞ সে বাতাসে রসে ভূব ॥

ভ্যানদাস কহে শুন শ্যাম ।

ভ্যানদাস কহে শুন শ্যাম ।

ভ্যাপনা না ভাব অনুপাম ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ১৯১৫ ও প-র পৃথির ২৮।২০ সংখাক পদ। ২। 'বছি' প-র। ৩। 'হইতে' প-র। ৪। 'গুইতে'। অতঃপর প-র পৃথিতে নির্নিধিত অভিরিক্ত ক্রিটি টুই হয়, বথা—

'পরশে ভোমার ঝুর্যা মরি। তেঞি দে তোমারে ভাল বলি॥' ে। 'দেখি খন' প-র। ৬। 'ভাবো' প-র-সা। ১৪। 'কমা' ক; 'কেমা' প-র-সা। १। 'वाकाम' क. श-द। ४। 'पुरवा' श-द-मा। ৯। 'রাই' প-র। ১•। 'কহিতে জানিলে এত कहें भन्द ।

অথ শীকুফোল্ডি:।

यानचे ।>

कि लागिशार व्याह्मा पुत (पर्म। তোমার সহজ রূপ কাম হেরি কান্দে হে खूरन जूलल ७ ना (राज ॥ ध्रम **षाइम देवम॰ द्यांत कार्ट्ड द्रबीर प्र॰ मिलाउ পार्ट्ड** বদনে করিয়ে মন্দ বায়¹। এ চুখাত্রি রাজা পায় কেমনে হাঁটিছা তায় দেখিয়া হালিছে মোর গায়॥ কেমন তোমার ওক্তন

कि मार्थ माधिलभ्भ धन কেনে বিকে পাঠাইল ভোমা। ভোর নিঞ্চ পতি যে কেমনে বাচিবে স পাঠাইয়া ত চিতে দিয়া খেমা ত হাসি হাসি মোড় মুখ বসনে ঝাঁপিছ বুক (पिश्रा इहेन् वफ़ प्रशी। कानमात्मात्क कम्र श्रमात्री (य जन इस রসাল বচনে করে বিকি ॥৯৯॥১৪০১॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯১৬ ও প-র পুথির र। 'नानि' भ-ता । '(ना' भ-ता ह। 'कुनिन' ४, ६। ৫। 'योत्र कोत्रा' १-द्र। ७। 'देवनक' क। १। 'बिरत छात्र' श-ब-ना। ৮। 'হাটিছ'ব; 'হাটিবে' প-র। ৯। 'কেমনে' প-র। ২৮/২৬ সংখ্যক পদ। ২। 'পর্ম' প-র-সা;

১০। 'ডোর' প্র। ১১। 'সাধিব' প্র। ১২। 'বাচয়ে' পর। ১৩। 'পাঠাইল' প-র।

धानभी ।>

विद्यापिन त्या वर्ष छेनात्र नानी। সকল ছাডিয়া দানী হইয়াছি ভোমার মহিমা শুনি ॥ধ্রু॥ অঞ্নে রঞ্জিত খঞ্জ-নয়ন ভাহে কটাক্ষের বাণ। নাসিকা উপরে **অমূল্য মুকুতা** উহার অধিক দান। অলকা উপরে কুটিল কবরী **७**टि ठम्मानत (देश)। পরশ্ব-দাপনিত क्रिनि ग्रथशनि (क करत मार्नित (लभा I পীন পয়োধর স্থমেরু-শিখর তাহে মুকুতার হারে।' রতন অধিক যতন করিয়া कि धन टेलग्रोड " टकाटन ॥ -চরণ উপবে কনক-নৃপুর চলিতে করয়ে ধ্বনি। করি আগুসার রুসের পদার প্রবোধ করহ দানী ॥ वश्मीवम्दन करल यज्य अनह ब्राकाव वि। উচিত কহিতে যানে মন্দ ভাব जाँदल वाँशिला कि ॥> • ॥> 8 • २॥ পাঠান্তর ১। हेहा भ-त्र-मा भूषित ১৯১१, भ-त्र भूषित 'পরেদ' প-র। ৩। 'দর্পনি' च; 'দাপিনি' প-র। কেবল প-র পুথিতে আছে; তৎপরিবর্ত্তে প-র-সা ৪। 'নিজ' ক, ধা ধা 'কেডন' পর-সা। ७। 'कि धन' हेजामि भ-त्र ऋल 'अ धन रेनश बाउ'क, थ, घ; 'सन नहेबा' हेलामि श-त्र-प्रा। १। 'क्ट्रिंग' भ-त्र-मा। ৮। 'वाम' भ-त्र।

তথা রাগ 13

ट्रिफ ट्या विरामिति ध शर्थ किम्रिट যাবে ভূমি। শীতল কদম্ব-তলে ু বৈসহ আমার থালে সকলি কিনিয়া নিবং আমি "প্রা হাতিন প্রের ধূলা এ ভরঃ তুপর বেলা ক্মল জিনিয়া পদ ভোৱি। রোজে খামিয়াছে মুখ দেখি লাগে বড় ছুখ শ্রম-ভরে আউলাইলা কবরা ৷ অমুল্য রতন সাথে গোঙারের ওয় গণে লাগি পাইলে লইবে কাড়িয়া"। এই পথে মহাদানা তোমার লাগিয়া আমি তিল-আধ না যাও । ছাড়িয়া॥ মধুরা অনেক পথ ভেজ অতা মনোরপ'' भात्र कार्ट्स देवम विस्नाकिन । এই সে উ'চড ঽয় यः भी यम्दन क्य শ্যাম সঙ্গে কর বিকিকিনি ॥১০১॥১৪০৩॥ পাঠাম্বর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯১৮ ও প-র পুথির ২৮।২৭ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' স্থলে 'প্রীরাগ' भन्ता २। '(कब्रान' क, थ, शन्त-मा, शन्त। ७। 'नद' भ-दा । (जिद्र' भ-दा । (ज्रुवः । (त्या' भ-त्र। १। 'कामाहिन' १; 'अन्-क्रांगा' ह, भ-ता हा '(जीवादत्रत' था ना 'कांक्तिश' च, श-त । >०। 'मिंड' श-द-ना ; 'वां€' প্ৰ। ১১। 'মধুৰা' ইত্যাদি ভণিতাৰ কণিটি

পুথিতে নিম্নিখিত পাঠ দৃষ্ট হয়, যথা---ভিনিয়া কামুর বানা সদয়ে হরি**ষ ধ**নী প্রেমভরে গ্রণর মঞ্চ। বংশাবদনে বোলে বৈদ ধনি ওক্সুণে 'ইবাটো করহ কাত্র-সঙ্গ ।।'

कल्ल वर्ताडी ।>

মোছন বিজন্ধ থনে সুরে গেল স্থীগণে একলাও রহিলা ধনা রাই। তুটি আঁখি চল ছলে চংগ-কমল-ভলে কান্তু আসি পড়ল লোটাই। জন্ম স্ফুর জেল মোর্ড। ভোমা হেন গুণ-নিধি তথে আনি দিলা বিধি আনন্দেব কি কৰিব ওর' ॥ধ্রা। **চান্দ-মুখ ঘামিয়াছে** রবির কিরণ পাণ্ছে সুখর মঞ্চার ও ছটি পায় ১ । হিয়ার উপঝেরাখি, জুড়াও সং সেমোর আৰি ১০ চন্দন চচিচত করি সায় ১৪ বা এতেক মিনতি করি রাইয়ের লরেডে ধরি বসায়ল নিজ পীতবাদে। নিৰ্জ্জন নিকুঞ্জ বনে মিলল দোঁহার সনে मत्न मत्न शत्म वश्नीतितम ॥>०२॥>००॥

পাঠাগুর

১। ইহা পার-সা পুলির ১৯২০ ও পার পুলির ২৮।১০ সংখ্যক পদ। 'কঙ্গণ বরাড়া' হলে 'ধান 🚉' প্র। ২। 'বিজই' প্রসা; 'নিকুল' প্রা ত। 'একলি' প-র। ৪। 'ছল ছল' প-র। ৫। 'ভল' প্-র। ৬। 'জনম' ইত্যাদি স্থলে 'বিনোদিনি জনম' ইত্যাদি প-র। ৭। 'মিলারল' প-র-সা। ৮। 'আফুকার হথের নাহি ৬র' প-র-সা। ১। 'কিরণে তোমার' প-র। ১০। 'হুবের মঞ্জরি' প-ता ১১। 'পा' भ-ता ">२। 'क्षांक्' भ-ता ১৩। 'চাক্ষম্বি' প-র। ১৪। 'গা' প-র। 'রবির কিরণ' ইত্যাদি কলিটির হলে প-র-সা পুথির পাঠ, বথা— 'পাতিরা বসনথানি আইস বৈস বিনোদিনি হুথের মঞ্জরি ছটি পা। রবির কিরণে পাছে চান্দ-মুথ বামিরাছে চন্দন-চর্চিত করি গা॥' ১৫। 'এতেক বিনতি' ইত্যাদি ভণিতার কলিটি ক্ষেবল প-র-সা পুরিতেই আছে।

यत्रम ।

রাধানাধব নীপ-মূলে।

কেলি-কলা রস-দান ছলে ॥

ছুহুঁ দোহাঁ। দরশই নয়ন-বিভক্ত ।
পুলকে পুরল ওত্ম জরজর অক ।

ছুরেং গেল স্থিগণ সভিতে বড়াই।
নিজ্ত নীপ-মূলে কুঠই রাই ॥

দোহাঁ দোহাঁ ব্রেরইতে প্রুই ভেল ভোর।

চাক্ষ মিলল জন্ম সুবধ চকোর॥

ছুহুঁ জন জনয়ে মদন প্রকাশ।
স্থিগণ ছেরি ছুরে বাঢ়ল উল্লাস ।> ০॥১৪০৫॥
পাঠাবর

১। 'शृंबन' का २। 'पृत्त' का ७। 'बृत्न' का ८। 'बृहेदे' क; 'बृहेत्त' च, हा दा 'इहं' क, चा ७। 'पृत्त' का

बद्राड़ी 1>

বিনোদিনি মুঞি বড় উদার দানী।
সকল ছাড়িয়া বিষয় লৈয়াছি
ডোমার মহিমা শুনি ঃ
হেম-বরণ মণি-অভরণ
সদাই নরনে দেখি।
পাসরিতে নারি হিয়ার ভরি
পাসটিতে বারি জাখি ঃ

ভূমি সে পরাণ সরবস ধন

এ ছই নয়ানের ভারা।

এভ কলাবতা গোকুলে বসভি
কারো নহে হেন ধারা॥

কি জানি কি গুণে হিয়ার মাঝারে
পশিয়া করহ বাস।

অপরপ নহে এমতিং সহজে
কহয়েং বংশীদাস॥১০৪॥১৪০৬॥

পাঠান্তৰ

)। हेक्। প-त्र-मा পूथित ১৯২১ সংখ্যক পদ। २। 'कांक' क, थ। ७। 'এমন্ত' क, थ। ८। 'कहरत ध'थ।

थामणी ।>

এনাং ছান্দে কে না বান্ধে চুল।

চূড়ায় মজালোও জাতি কুলং।

কেবা নাহি পরে বন-মালা।

মালার এতেক কেন জালাং॥

কেনা থাকে গ্রিভন্নং হইয়া।
প্রাণ কান্দে এ রূপ দেখিয়া॥

কেবা নাহ কহে কথা থান।

চাঁদ-মুখে সুধা খনে জানিংই।

কেবা নাহি ধরে রূপ কালা।

তোমারংই রূপে গ্রিভ্রনই জালা।

ভোমারিনে মনে নাহি লয়।

ভানাদাস কহে ভাল হয়ই ॥১০৫॥১৪০৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯২২ ও প-র পুথির ১৪৷১৪১ সংব্যক পদ। ২। 'এড' ক, ব। ৩। 'চুড়ার মজিল' প-র; 'ডোমার চুড়ার মজাইংল' ব। 'তোমার' ইত্যাদি পাঠে ছলঃ-পতন ঘটে। ৪। অতঃ-পর প-র প্থিতে নিম্বলিথিত কলিটি দৃষ্ট হর, যথা— 'এই ত চল্লনের ফোটা কেবা নাহি পরে। কপাল-শুণে ঝলমল করে ঃ'

শোলার' ইত্যাদি ফ্লে 'তোমার মালার সে
এতেক' ইত্যাদি ক, ঝ; 'তোমার মালার এতেক'
ইত্যাদি খ, চ; 'তোমার মালা এত কৈল আলা'
প-র-লা। ৬। 'কেনে থাক' প-র-লা, প-র।
१। 'অভিজ্ঞা' ঝ। ৮। 'বে' ক। ৯। 'বা'
প-র। ১০। 'ভ্লেরে' প-র। ১১। 'চাদ-মুঝে'
ইত্যাদি প-র ফলে 'তোমার চান্দমুঝে হুখা থালে
আনি' ক; 'তোমার চান্দমুঝে হুখা আনি' ঝ;
'তোমার চান্দমুঝে হুখা হেন আনি' ঝ; 'তোমার
চান্দমুঝের হুখা আনি' প-র-লা। ১২। 'ভূয়া'
প-র। ১০। 'সে ভ্বন কৈল' ক, ঝ, ৸, ৮;
'ভূবন কৈলে' প-র-লা। ১৪। 'আনন্দান' ইত্যাদি
স্থলে 'আনে কহে এই ভাল হয়' প-র।

जुर्भागो ।>

হাপক ই দরপণ মাথক ফুল।
নয়নক অঞ্চন মুখক তাম্বুল॥
স্থান্যক মৃগ-মদ গীমক হার।
দেহক সরবস গেহক সার॥
পাখিক পাখ মীনক পানি।
জীবক জীবন হাম ঐছে জানি॥
তুতুঁ কৈছে মাধব কহ তুতুঁ মোয়।
বিভাগতি কহ তুতুঁ দোহাঁ হোয়ে॥

1108 CII 20 CI

ইত্যাদি গোষ্ঠবিহারাদি-দানলীলা। তৃতীর-শাখায়াং পঞ্চবিংশতি-পল্লবঃ।

পঠিস্কির

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯১০ ও প-র পুথির ১৪।১৪২ সংখ্যক পর। 'ভুগানী' ছলে 'ধান-ॐ'

প-র। ২। 'হাডক' ক, চ, প-র-সা; 'হাথকি' প-র। ০। 'বেহকি' প-র। ৪। প-র পুথিতে 'বিভাপতি কহ' ইডগদি পংক্তিটি নাই; উৎার স্থান ফাক রাথা হইয়াছে।

> অথ নোকা-বিলাস। ভচ্চিত শ্রীমহাপ্রভু।

> > षुष्ठी ।>

না জানিয়ে গোরাচাঁদের কোন ভাব মনে।

স্বর্ধনী-ভীরে গেলা সহচর সনে ॥

প্রিয় গদাধর আদি সজে ত করিয়া।

নৌকায় চড়িলা গৌর প্রেমানেশ হৈরা॥

আপনেই কাণ্ডারী হৈয়া বায় নৌকাধানি।,

ভূবিল ভূবিল বলি সিঞ্চে সভে পানি ॥

পারিষদগদ সবে হরি হরি বোলে।

পুরব সোঞ্জি কেনো ভাসে প্রেম-জলে॥

গদাধর-মুধ হেরি মৃত্ মৃত্ হাসে।

বাস্থানে খোবে কহে মনের উল্লাসে ॥

পাঠান্তর

12178091

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৯২৫ সংখ্যক পদ।
 ২। 'আপনি' ক, চ, প-র-সা। ०। 'বংহ'
 প-র-সা। ৪। 'হরিবে' প-র-সা।

वहात ।>

সবছ ং স্থাগণ চলু ঘর মাই।
নব নব রঙ্গিণ রস্বজি রাই।
মানস-ফুরধুনি ছ কুল পাথার।
কৈচনে সহচরি হোয়ব পার।
প্রারুট সময়ে গরজে ঘন ঘোর।
ধরজর পবন বহই ভহিঁ জোর।

ছুর্ছিং নেহারত নাগর শ্রাম।

তরণী লেই মিলল সোই ঠাম।

হাসি হাসি কহরে নাবিকবর কান।

চঢ়ং সভে পার উতারব হাম।

শুনি স্বদনি ধনি হর্মিছ ভেলিং।

চঢ়লং তরণি পর সহচরি মেলিং।

নৌহুন নাবিক কছু নাহি জানং।

বৈগতে তরণি ভেরি ভেল তরাস।

সিঞ্যে পানি করেংই জ্ঞানগাস হয়১৪১০ট

১। ইংগ প-র মা পুথির ১৯২০ সংথাক পদ।
২। 'সকল' ক, থ, প-র-সা। ৩। 'একুল' ক;
'দো কুল' পর সা। ३। 'দ্বহি' ক ে ৫। '১৬'
ক, প-র-সা। ৬। 'ভেল' ক, ঘ, চ, প-র-সা।
१। '১ড়ল' ক, প-র-সা। ৮। 'মেল' ক, ঘ, চ।
১। 'জানে' থ। ১০। 'পমানে' থ। ১১।
'টুটিল' ক; 'টুট' থ, চ, প-র-সা। ১২। 'মিঞ্জে
ইত্যাদি স্থলে 'সিঞ্জে পানি করি' ক; 'সিঞ্জে
পানি করি' ব, চ; 'সিঞ্জে পানি করে' প-র-সা।

পাঠায়র

काहिशांति ।) মানস-গুলার জল খন কৰে কল কল তু কুলং বাহিয়া যায় চেউ। গগনে উঠিল মেঘ প্ৰনে বাঢ়িল্ড বেগ তরণি রাখিতে নাহি কেউ। দ্বেখ স্থি নবান কাভারী শ্যামরায়। কখন না জানে কান বাহিবার সন্ধান জানিয়া চঢ়িলুঁ। বেনে নায় ॥ খ।। নায়্যারং নাহিক ভয় হাসিয়া কথাটি কয় कृषिल नशांत्न हांग्र॰ त्यादत । ভয়েত কাঁ পছে দে ্ এ জালা সহিবে কে काछाती यतिया करत ८काटत ।

অকাজে দিবস গেল নেকা নাছি পার ছৈল
পরাণ হইল পরমাদ।
ভালদাস কহে সধি থির হৈয়া থাক দেখি
এখন না ভাবিহ বিষাদ ॥৩॥১৪১১॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯>**৭ সংখ্যক পদ।** ২। 'দোক্ল'প-র-সা। ৩। 'পাড়িল'খা ৪। 'উঠিফু' চ। ৫। 'নেয়ার' চ। ৬। 'চাহে' ক,ঝ,প-র-সা। ৭। 'তুনি'প-র-সা।

এবাগ 15

যৰ লক্ত লক্ত গ্ৰি মরমে মরমেং পশি নারে চচায়ল ওইখ। তৈখনে মঝু মন ভেলহি অন্চনঃ বেকত ধয়ল ফল সোই।। এ স্বি হরি স্ত্রে মানহ কুঞ্জ-বিনোদ। ইহ নাবিক অভি চঞ্চল চপল-মভিদ অা যেন্ত তেন্ত পরবোধ ॥ধ্রণা বিজুরি খন ঝলকই গুগনহি সঘন দিনহি ভেল আন্ধিয়ার। ভরণি ঘন স্বরভঃ• খরভর প্রনে পৈঠত জল অনিবার ৷ চুরজন জানি পড়ল জিউ সহটে इर्थ क्रिनिंग्न कत्रह विहात । তুথা ইপ্লিতে অবং২ সব সথি জীবউ^{১৩} (शाविन्त्रताम कर मात्र ॥८॥ ३॥ ३॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৯২৮ ও প-র পৃথির ২৯৮ সংধাক পদ। 'শীরাগ' ছলে 'কামোদ' প-র। ২। 'রহল' ক। ৩। 'এই' চ, প-র-সা; 'ডোঘ' পার। ৪ 'আন ছল' ক, প-র; 'আছন' প-র-সা। €। 'সোর' প-র। ৩। 'ফুফ্রি' প-র। ৭। 'মানই' প-র-সা। ৮। 'চপল চরিত মতি' প-র। ১। 'ঝন ২। 'আশ' ঘ, প-র-সা। ৩। 'গৌরব' প-র-সা। यन करु भन्ता ३०। 'घृबरु' क, 5, भ द-मा, भ-व । >> । 'कानि' भ-व-मा। >२ । 'बाक्' भ-व । ५७। 'बीवड' क ; 'बिडें' श-ब-मा ; 'बिवहें' श-ब।

महात्र १३

কহ সখি কি করি উপায়। নাম্বের নাবিক হৈয়া এ যৌবন চায় ৷ भन्नमात देशन महे भन्नमात देशन। নায়ার গলার মালা মোর গলে দিল। ट्रिल क्रभारल महे (य हिल क्रभारल। নাবিক ছইয়া মোবে পরশিল বলে। कला इंडेल महे कला इंडेल। वाल काल नांग्रा (माद्र Cकारल कविर निल ॥ জ্ঞানদাস কৰে ধনি না ভাব বিষাণ। নন্দের নন্দন নায়া কিসের পরমাদ।৫॥১৪১৩। পাঠান্তর

১। देहा भ-त-मा भूभित ३३२३ मरशाक भन। २। 'क्त्र' क।

सबस्य १३। । ३

ৰায়্যা হে এখন লইয়া চল পার। পুরিল ভোমার আশাং কি আর বিচার॥ অকলত্ব কুলে মোর কলত্ব রাখিলে। এখন কিবা মনে আছে না বোলহ ছলে । नाता। टेस्त्रा रूफ़ा ढाक मब्द्रव भार्थ। देश कि शबव॰ कब कूल-वध् मार्थ । পারে মাও নুতন নায়া না কর বেয়াল। ভাষদাস কৰে নায়। বড় রসরাজ ॥৬॥১৪১৪॥

ंकः। वेदां नन्यान्यां गुवितः ५००० मध्याचः नत्।

পাঠাত্তর

৪। 'নেও' ক, প-র-সা।

बाननी ।>

শুন বিনোদিনি ধনি আমার কাণারী তুষি (जामात काशांती कर कारत। তৃয়া অমুরাগে প্রেম- সমুদ্রে ডুবাছিং ভাষি আমারে তুলিয়া॰ কর পারে। যোগী ভোগী নাপিভানী ভোমার লাগিয়াদানী ওঝা হইলাম ভোমার করিবে। ভূয়া অনুরাগে নোরে লৈয়া ফিরে খরে খরে जुग्रा लागि कतिन् पाकात्न ॥ मना किति रस्यू मत्न রাখাল হইয়া বনে ञ्रा नागि वरन वनहात्री। তোমার পিরিভি পাইয়া এ ভালা ভরণী লৈয়া जुग्ना लागि इहेनुं कांधावी । র্মণীর শিরোমণি না বোল কুবোল ধনি ভুয়া প্রেমে কি না করি আমি। না ঠেলিহ রাজা পার मान कंगनार्थ क्य कां जियन धन जूमि ॥१॥१८०॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯৩১ সংখ্যক পদ। ২। 'ভূৰিরাছি' ক। ৩। 'ভূমি মোরে ভূলি' প-র-সা। ৪। 'বুলি জুলী' ব, চ। ৫। 'বাদিয়া বনিকিনী' প-র-সা। ७। 'बानो' প-র-সা। १। **'क्स्बा'** 어-국-커 |

willaifa 13

না ৰাও নবীন কাণ্ডারি। क्लाक উঠाর कन खार कीना। मति॥ স্তুরার তরশী লৈয়া তীরে আইলা স্থাম। 💛 🔻 সকল করিলা বিধি প্রিল সনকাস।

নবনিং মাধন ছেনা যে ছিল পসারে।
সকল দিলেন খ্যাম° নাগরের করে।
অঞ্চলি অঞ্চলি করি করিলা ভোজন।
সভে মেলি চুলিলেন আপন ভবন।
আইলা মন্দিরে রাই স্থাগণ সঙ্গে।
হরিষে বসিলা ধনা প্রেমের তরকেও ॥৮॥১৪১৬॥

কীর্ত্তনিয়ামুখাৎ শ্রুত্বা নানামতে সংগ্রহঃ গাননির্বাহকার্থে। ইত্যাদি মানস-গ্রুয়ায়াং নৌকাবিলাসঃ।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৩২ সংখ্যক পদ।
হ। 'নবীন' ক। ৩। 'ধনী' প-র-সা। ৪।
কভংগর প-র-সাপুথিতে নিয়লিথিত ভণিতার কলি
ফুট হয়, বথা—

'वश्नीवमरन रवारण काहा मित्र मित्र । इरण वरण वसुत्रा मिरण दासिका कुन्नद्री ॥'

অথ যমুনায়াং নৌকাবিলাসো যথা। শ্রীরাধাকৃষ্ণ-চরণে মনো দহাবধীয়তাং। আদৌ শ্রীমহাপ্রভুঃ।

वाननी ।>

আরে মোর আরে মোর গৌরাজ রায়।

স্থারধুনী মাঝে বাইয়া নবীন নাবিক হইয়া

সহচর মিলিয়াং-খেলার ॥

প্রের গভস-রজে

নৌকায় বসিয়া করে কেলি।

ভূব ভূব করে না বহরে বিষম বা

দেখি হাসেণ গোরা বনমালী ॥

কেহো করে উতরোল খন খন হরিবোল

ছ কুলে নদীয়ার লোক দেখে।

ভূবন-মোহন নায়া। দেখিয়া বিবশ হৈয়া

যুবতী ভূলিল লাখে লাখে ॥

অগজন-চিড-চোর গোরস্ফার মোর

যে করে ডাহাই পরভেক।

কহে দীন রামানফো এ হেন আনক্ষ-হক্ষে

বঞ্চিত রহিলুঁ মুঞি এক ॥১॥১৪১৭॥

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯⁵০ সংখ্যক পদ। ২। 'মেলিয়া' ক, য। ৩.। 'হাসি' খ। ৪। 'তাই' খ। ৫। 'হইলু' প-র-সা।

পাঠান্তর

TENTE IS

দধি-ম্বভ-পদরা লেই সব রঞ্জিণিং व्याखन कानिन्म॰ जीद्र । ষমুনা-তরজ-রস হেরি আকুল পরশ না পায়ই নীরে ॥ প্রাবিট-সময়ে উঠয়ে ঘন খুৰ্ণন• গরজন তু কুল পাথার। এছন হেরি কহই সব কামিনি কৈছনে হোয়ব পার॥ মুখরা সত্তে ধনি রমণি-শিরোমণি বদন পাণিতলে নাই। হেরি নাগর-বর হর্ষিত অন্তর ভরণি লেই চলু ধাই। কর্ণধার-বর চড়িয়া ভরণি পর আওল রাইক পালে। • উভারব এ ধনি চড় সভে পারে কিছু নাছি ভাব ভরাসে । এড কহি সবছ পাণি ধরি নাবিক্

তরণি উপর সভে লেল>।

शब्न भानि मांबा ८गम ॥>०॥>॥>॥

্লেই রম্পিগণ

कानमात्र ७१

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৩৪ সংখ্যক পদ।
২। 'সন্ধিনী' প-র-সা। ৩। 'কালিন্দির' ক, খ,
ঘ, চ। ৪। 'পাবই' খ, ঘ; 'পাই' চ। ৫।
'স্ব্তি' প-র-সা। ৩। 'ছ্ছ্ল' কৃ। ৭। 'পান'
কা ৮। 'তরাস' ক। ১। 'পানি' ইত্যাদি
অংশ ক পুথিতে লিপিকর-ভ্রমে পরিত্যক্ত হইরাছে।
১০। 'পোন' ক।

আশাবরী ৷১

যমুনার ছ কুল আলা কৈল নায়ার রূপে ।

জগজন-মন ভুলে দেখিয়া স্বরূপে ॥

গলে বনমালা দোলে শিরে শিবি-পাখা।

দেখি মেন আভি কুল নাহি যায় রাখা ॥

মুচকি হাসিয়া নায়া যার পানে চায়।

যাচিয়া যৌ্বন দিতে সেই জন ধায় ॥

ঠেকিলু নায়ার হাতে কি করি উপায়।

বজর পড়িল সখি কুলের মাধায় ॥

বংশীবদনে কহে থির কর হিয়া।

তোমরা এমন হৈলা না কাহতে নায়া।

পাঠান্তর

118686116611

)। इहा भ-त-मा পूबित २२०६ मः स्पृक्त भन।

१। 'वनुमान इक्न कतिरन' देखानि क, स, च,

। 'ा 'दिस्स करून की । । 'सित' क।

१। 'तिम' भ-त-मा। ७। 'खित' क, छ। १।
'दिस्त' क, छ।

তথা রাগ।>

রাই কাসু বমুনার নাবে^২। ক্লিব্রে ভ্রণী পুত্র-লোল কুল লাভে ১৮%

কুন্তীর স্করণ

মান উঠত

স্থনে বদন ভূলি।

হরিষে বমুন। উপলে দিওপা রাই কামু রূপে' ভূলি॥

ক্রহয়ে ললিতা হৈয়া সচকিতা
শুন লো মুধরা বুড়ি।

তোহারি কথায় চড়ি ভা**দা নার** পরাণ সহিতে মরি॥

মুখরা কহরে বে মাগে কাণ্ডারী

তাহাই করহ দান। এ ভাক্সা তরণী পাব হবে এখনি

टकटन वा यां^डटन खांग ॥

এ সৰ বচন শুনিয়া কাণ্ডারী কহই ললিতা পাশে।

ভোমার স্থীর প্রশ মাগিয়ে । বংশী শুনিয়া হাসে ১২॥১৪২০॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-স! পুথির ১৯০৬ সংখ্যক পদ।
২। 'মাঝে মাঝে' ক, খ, খ, চ। ০। 'মগর'
খ। ৪। 'গেল' প-র-সা। ৫। 'নায়া' খ।
৬। 'অমনি' প-র-সা। ৭। 'মাগরে' প-র-সা।
৮। 'বংশীদাস শুনি' প-র-সা।

कांद्रियात्र ।>

শুন লো বড়াই বুড়ি তৃমি সে নাটের শুঁড়ি^থ
আনিয়া করিলি পরমাদ।

মোর মনে যত ছিল সকলি বিফল হৈল
দূরে গেল ঘরু যাবার সাধ।

তু কুলে বহিছে বায় কাপিছে রাধার পারণ
নন্দ-স্তুত নবীন কাণ্ডারী।
ভরণী নবীন নয় ভার দিতে করি ভর

ী নবীন নয়° ভার ।গভে কার ভর ভালা নায় বসিতে না পারি°। क्रांजि वर्ण भावित्रारि भाव क्रवि छत्र नाहि অশ্ব গজ কত করি পার ।। **(सवडा शक्कर्य कड भात्र देहाइ) भड भड़**ेर যুবতীর যৌধন কত ভার>৽॥ **अनिश्वितामिनी बार्ड** নয়ান-ইন্সিতে চাই कानू-मनः कतिरमनः हति। হাসি হাসি ১৭ ধীরে ধীরে ভাঙ্গা ভরণীর পরে ১৮ **जांहरल धित्रल याहे रुति ।** मधीनन (पिच तकर আন ছলে দেই ভক রাই কামু রছে এক পাশেং। কাম-কলহ-বাদ পুরল মনের সাধ **ब**त्रविक (मर्थ^{२२} नःभीमारम^{२०} ३)% 82)॥ পাঠান্তর

১। रेहा भ-ब-मा भूषित ১৯৩१ ७ भ-त भूषित १ भाग मरबाक भाग । २। 'खिष्' च, भ-त ; 'खित' **१-इ-मा। ७। 'विको' १-इ। ८। 'वा'** १-इ-मा, প-র। ৫। 'গা' প-র-সা, প-র। ৬। 'তর্ণী' ইত্যাদি হলে 'ভঙ্গণ নৰিন নায়' প-র। १। 'ভরা দিতে নারি' প-র। ৮। 'হও' প-র। ভা 'অবিরত'। ১•। 'পার করি' প-র সা। ১১। 'করি' প-র-সা, প-র। ১২। 'কত শত' প-র-সা। ১৩। 'ভারি' প-র-সা। ১৪। 'ভনো' भ-ब-मा। se । 'दक्त मन' भ-ब-मा। se । 'করিলেক' প-র-সা, প-র। ১৭। 'পার হও' প-র। ২৮। 'বলিয়া ব্যুলাভীরে' প-র। ১৯। ্রজাঁচল ধরিতে চাহে' প-র-সাঃ 'আঁচল ধরিলা यांका' श-वा २०। 'व्यक' या २०। 'वारे ब्रास् কাছ এক পালে' ক; 'ৱাই বহন কাম পালে' भ-म। २२१ 'क्षि' भ-त्र। २०। 'मधौत्रव' ইভ্যাৰি ভণিভার কলিটি প-র-সা পুথিতে নাই।

धाननी ।>

এ নব নাবিক শ্যামর-চন্দ্রং।

কৈছন তোহারি॰ হৃদয়-অনুবৃদ্ধং ॥
তুয়া বোলে গোরস যমুনহিং ঢারণ।
ফারলু কাঁচুলি ডারলু হার ॥
কর অবসরণ নাহি সিঁচইতে নীর।
অতিখণে তবহু ১০ না পাওল ভীর ॥
হাম নিরস ভুকু হাসি উভরোল।
কেহ জিউ ভেজই কেহ হরি বোল ১৭ ॥
এত দিনে কুলবতি-কুলে পড়ু বাজ।
চড়ি১০ ইহ নায়ে দুরে গেও১০ লাজ ॥
উভরি১৭ পার যব যো ভুকু মাগ।
কাহু সঞ্জে মাগি১৭ ধরব ভুয়া আগা॥
গোবিন্দদাস কহ সময়ক কাজ।
নাবিক বেতন নাওক১৭ মাঝা॥১৪॥১৪২২॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা প্থির ১৯৩৮ ও প-র পুথির
১৯।৭ সংখ্যক পদ। ২। 'চান্দা' প-র-সা। ৩।
'তোমার' ক; 'তোহার' থ, খ, চ। ৩। 'নিরবদ্ধ'
প-র; 'নিরবাদ্ধা' প-র-সা। ৫। 'বমুনার'
প-র-সা, প-র। ৬। 'ভার' চ। ৭। 'ভোড়িস্'
প-র-সা। ৮। 'অবসান' ক। ৯। 'নিঞ্ছতৈ'
ক, খ, খ, চ। ১০। 'এডখনে' প-র-সা। ১১।
'অবহ' ক, খ, খ, চ। ১২। 'হাম' ইভ্যাদি
গংক্তিবরের হলে প-র প্থির পাঠ, বথা—

'মঝু মুখ নীরস তুহ' বন হাস।
কোই জিউ ডেজই কোই হরি হরি ভাষ ।'
১৩। 'চড়ি' প-র। ১৪। 'লেল' প-র। 'বুরে
পেও' হলে 'তিরাগিলু' প-র-না। ১৫। 'উতরি'
ইত্যাদি হলে 'উঠত কুলে পারে' ক, ঝ, ঝ, চ;
'উতরিলে পার অব' প-র-না। ১৩। 'ঝোলি'
প-র-না, প-র। ১৭। 'নাবক' ক, ঝ, প-র-না;
'নাবক' প-র।

शून क पिनारेख ।

মুখরার সঙ্গে রাই স্থীগণ সনে। যমুনা সাঁতার দেখি ভাবে মনে মনে। ভাক দিয়া বলে নায়া না আন ঘাটে। আমরা ছইব পার বেলা সব টুটে॥ দেখিরা নাগর-রাজ জীর্ণ তরি লৈয়া। হাসিয়া কহয়ে কথা কাণ্ডারী হইয়া। কি দিবে আমারে কহ কতেক বেতন। একে একে পার করিব যত জন। রাই কৰে যাহা চাও ভাহা আমরা দিব। কাগুারী কহয়ে হিয়ার রতন লইব॥ मशी मा अ दर्भ दिन विद्यापिनी। তরক বাড়িল তায় কীর্ণ তরিখানি। ভরজের রঙ্গে নৌকা ভুবু ভুবু করে। হৈরি সব সহচরী কাঁপয়ে অন্তরে ॥ তরুক্ত দেখিয়া খরহরি কাঁপে রাই। কোলে করি বায় নৌকা কাগুারী কানাই। রাই কোলে করি নাগর হর্ষিত চিতে। এ পার হইল নৌকা দেখিতে দেখিতে ॥ **হুছ অক্ত** পরশিতে হুর্ত প্রেমে ভাসে। त्नोका-विलाम कटह উद्धवर्गाम ।১৫॥১৪২৩[॥]

পাঠান্তর

%। 'त्रूबंत्री-वहरम' कः, 'त्रूबंत्रात्र तरन' थे, ह। २। 'त्ररम' कः, थ। ७। 'वात्र' कः, थ। ६। 'क्ररम' कः, थ।

शमनी ।>

খিরং সর মাধন সহচরি দেল।
মাৰিক সো সব কছু নাহি নেল।
রাইক আঁচরু হোড়ি না যায়।
সূব স্থিপণ ভবে রচয়ে উপার।

নাবিক কহয়ে দেহ বেওন মোর।
তব হাম ছোড়ব আঁচর° ভোর।
কহি কহি চুম্বয়ে রাই-বয়ান।
পুরয়ে মনোরপ নাগর কান।
পুরল মনোরপ আনন্দ ওর।
ব্যভামু-কুমারি ও নন্দকিশোর।
নিজ নিজ মন্দিরে সভে চলি গেল।
বংশিবদন চিতে আনন্দ ভেল।১৬॥১৪২৪।
ইতি যুমুনায়াং নৌকা-বিলাসঃ।
ইতি তৃতায়শাখায়াং ষড়্বিংশাত-প্রবঃ।
পাঠাবর

১। हेश প-तमा পুषित ১৯০৯ সংখাক পদ। २। 'कित' क, ६। ७ । 'व्यां हम' क, प।

প্রার্ট্-সময়-শেষে শরৎ প্রবেশিল।
কলে কলরুছগণ নিরমল হৈল।
বুন্দাবন-চন্দ্র গোণী সঙ্গে।
করিল রাগাদি-লালা নানা-রস-রঙ্গে।
শরতের অস্তে সে হেমন্ত আছু নাম।
ভাছে যে বিলাস রাধা কৃষ্ণ অমুপাম।
কুমারিকাগণ-বন্ধ হরিলা কানাই।
ভূনি রাধা স্থবদনার কৌছুক সদাই।
ভেমস্তের অস্তে নব শিশির প্রবল।
অভিশয় শীতে ভন্ম সদাই চক্ষণ।
শীতে ভাত স্থামুগা প্রবেশে কুঞ্জেভে।
দেখি কৃষ্ণচন্দ্র ভবে মিলিলা ভখাতে।
নানা রস-কৌছুক মদন-যুদ্ধ করি।
নিবারিলা শীত দোঁহে নাগর নাগরী।
**

 ^{&#}x27;প্রার্ট-সময়-শেষে' ইত্যাদি পদার দ প্ৰিতে
ব্যত্ম পদ-ক্রেপ গণিত হর নাই; ইচাকে একটি
পদ বলিয়া প্রণনা কারলে সপ্তবিংশ পদ্ধবের নিন্দিট
পদ-সংখ্যা হইতে একটি পদ বেশী হয়; অভয়াং
এই প্রারটি পদ-ক্রপে গণিত হইল না।

व्यथ तमछ-लोला तमछ-शक्षग्राः।

তত্র শ্রীমহাপ্রভু:।

यमख्यांग ।>

एमच एमच च कू-तोक वमख ममग्र ।

महत्त्र मएम विश्व द्यांता वे तांग्र ॥

काश्व त्थल एभातातिम्म नमोग्रा नगदत ।

यूवजीत विष्ठ हृदत्र नग्रत्नत्र मदत्र ॥

महत्त्र त्थलि काश्व एमग्र त्यांता-गांग्र ।

कूकूम भिव्या लाहे एकह दकहण्या ॥

नामा यद्य स्थान कतिग्रा न्यानियाम ।

मार्थित व्याम मद्य कत्र विनाम ॥

हित विन वाह जूनि नाद्य हितमाम ॥

वाश्यम दाय तम कतिल श्रवाम ॥

1121128541

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৭৮ সংখ্যক পদ।

। 'গোর' ক, প-র-সা। ৩। 'লেই' ইত্যাদি

ছলে 'লইরা কেল কেল' ব; 'লইরা কেংগ'
প-র-সা।

उथा वान ।>

অভিনৰ-কুটালকুঞ্চিত কুন্তল-ভার।
প্রাণয়ি-জনেরিত কন্দন-সহকৃতচূর্ণিত-বর-ঘন-সার॥
জয় জয় ফুন্দর নন্দ-কুমার।
সৌরজ-সঙ্কটবৃহ্দিত-বসন্ত-বিহার॥গ্রনা
অধ্য-বিহাজিতরোচিত্র-নিজ-পরিবার।

हर्जून-पृशक्षम- व्हिल्ड•-वर्गाक्तन°-वाधा-माम-विकास ॥ ভুবন-বিমোহন-

মঞ্জ-নৰ্জন-

গতি-বল্লিড-মণি-হার।

নিজ-বল্লবণ-জন-

স্থহ" সনাভন

চিন্ত-বিহরদবতার ॥২॥১৪২৬॥

ূ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৭৯ ও প-র পুথির ৩০:৯ সংখ্যক পদ। ২। বৈরুন'ক, খ, প-র। ৩। 'লোচিত'ক, খ, ঘ, চ, প-র। ৪।, 'রভস' প-র। ৫। 'রসোজ্জন' প-র-সা। ৬। 'বল্লড' থ, ঘ, প-র। ৭। 'ক্ষ্ম' প-র-সা; 'স্ক্ড' প-র।

১-১৫। "অভিনব-কুটুল" ইত্যাদি পদের রাধামোহন ঠাকুর-ক্বত টাকা, বথা--'ভতত্তৎস্থা স্বলো নিরতিশয়-মহোজ্ঞলরপং ঐক্তমং অভি-নবেত্যাদিকমাহ। ধে স্থলর! হে নক্ষরার! দং অন্ন কর নিকোৎকর্ষমাবিছুক। এডাগুরুণীঃ পরাজিতা: কুর্বিতি ভাব:। অতা বীপায়াং विषः। অভিনবকুট্যলানাং বিকাশোমুধকোরকানাং ঋচ্ছ मयारमोक्दनाः यत्राद दर जानुम । कृष्णिजः कृषण-ভারো ৰস্য তথাভূত। প্রণায়জনৈরীরিতো নিকিথো বন্দনেন বসস্তথেলোচিত-চুৰ্ণবিশেষে**ণ সহস্ততো** मिनिक्क निरका बन्नः ध्याका पमनातः कर्नुद्रा विवन् তাদৃশ। সৌরভেন সহটে ব্যাপ্তে বৃন্ধাবনতটে विहिन्छ: कृष्ठा वनस्विकाद्या द्वन ॥ अ ॥ व्यवत-বিরাক্তিন মন্দভর্বিভেন রোচিত **আনন্দিতো** निक्प विवादा (वेन छोन्न । हरून-पूत्रकान हक्न-क्ठाटकन ब्रहिट्डा ब्रह्माद्धादकन बाधाबार मनमगा त्थात्रा विकारता त्यन । ज्वनवित्मारमरे **४९ वस्**न-নৰ্ত্তনং তদ্য গভ্যা ভগা বলিতঃ স্থান্ধাৰ্মানঃ ৰণি-হারো বস্য। হে নিজবরবক্ষক্ষণ ! হে স্নাভন ! ट्र **हिट्छ वि**श्वत्रवर्छाद्या गौगाविद्यत्या वना छाष्ट्रम । পক্ষে সনাতলগোখামিনশ্ভিতবিহরদৰভার 🛚

>-->१। दर क्रिक-दक्त विकास विकास

যুথ কোরকাবলি ভোমার অল-সংলগ্ন হইরা অধিকতর সমুজ্জল এবং প্রিরজনের নিক্লিপ্ত কর্পুর-চূর্বমিশ্রিত ফল্ক-চূর্বে ভোমার দেহ অশোজিত হইরাছে।
হে অক্লর নক্ষ্কমার! ভোমার বলিহারি! সৌরতপরিবাপ্ত বুক্লাবন-পূলিনে তুমি কি অপূর্ব্ব বসত্তবিহারই করিতেছ! ভোমার অধরে মৃত্-মধুর
হাত প্রক্লুরিত হইরা নিজ-পরিজনগণকে আনন্দিত
এবং ভোমার চঞ্চল কটাক্ষ-রাজি রস-বিহ্বলা
ক্রানার প্রেম-বিকার উৎপাদন করিতেছে। ভোমার
ক্রান-মেহন মধুর নর্জনের গতি হারা ক্লম-ছিত
মণি-হার নর্জিত হইতেছে; হে অফুগত-গোপ-জনবান্ধর স্নাতন শ্রীকৃষ্ণ! তুমি আমাদিগের, পক্ষাস্তর্ম—স্নাতন গোরামীর অস্তরে ভোমার অবভারদীলা বিভার করিতেছ।

তথা রাখ ৷১ কেলি-রস-মাধুরী-ততিভিরতিমেলুরী-কুত-নিখিল-বন্ধ-পশুপালং। श्रम विश्वज-हम्मनः क्कूत्रमञ्जल-वस्मनः र **দেহ-**রুচি-নির্ভিত্তত-তমালং ॥ शुक्ति याधवयवक्यामः। রত্বময়-দোলয়া মিত্ৰ-কর-লোলয়া চলিত-বপুরভিচপল-মালং ॥ধ্র॥ রচিত-গোরোচনা-ব্ৰহ্ম-ছবিগ-লোচনা-ভিলক-ক্লচি- ক্লচিরতর-ভালং। বদন-শশি-শোভয়া ব্দ্বিত-জনিত-লোভয়া বিজ্ঞমিত-নব-যুবতি-জালং ॥ পুষ্পচয়ঃ-মগুডং নর্ম্মনর্ভ পথিতং রমণমিত বক্ষসি বিশাসং। প্রিয়মধি সনাতনং প্রণতং-ভন্ন-শাতনং (गार्छ-कन-मानग्रे महानः । ११) ४२१। পাঠান্তর इंदा प-द-मा श्वित >>> ७ प-त श्वित

ত্থাৰ সংখ্যক পদ। ২। বৈদ্ধনং' ক, খ, চ, পাৰ-সা। ৩। 'নৰ্ম্ময়' পাৰ-সা। ৪। 'পুষ্ণা-কুল'পাৰ। ৫। 'প্ৰেণ্য' প্ৰে।

নী কা

১--১৫। "কেলি-রদে"ভাদি। ছে অ্সারি। প্রীরাধে ! মাধবং শ্রীকৃষ্ণ অলং অভ্যর্থং ধবা স্থাৎ ख्ना खरकतम् खर्टाकम् । कीमृनः जीकृत्वः १---(किनि-त्रम माधुर्या विकारितः अकि-सिक्षीक्रकाः मकन-ব্দু-গোপালকা ধেন তথাভূতং। জনি গুত-চন্দনং क्तूबन अक्नवर्णा बन्मनः वमन्तः (अर्जाहि अहर्न-विरन्धः ৰশ্মিন তথা দেহ-কচিনা নিৰ্ভিন্ন গুমালো যেন তথা-ভূতং। মিত্র কর-চঞ্চলয়া রত্বখচিত দোলয়া করপেন চলিতং ৰপু: তথা অভিচপলা মালা বস্যা তথাভূতং। ব্ৰজ-হরিণ-নম্নাভিঃ রচিত্স্য গোরোচনা-ভিল্ক্স্য ক্রচিনা ফুল্বভরং ভালং ললাটং ৰ্গ্য তথাভূতং। স্মিতেনেৰ্দ্ধাস্যেন জনিতো গোডো ব্যা তথাভূত্ৰা মুখ-চন্দ্ৰ-কাঞ্চা বিভ্ৰমিতঃ জাত বিভ্ৰমঃ নবীনালনানাং সমৃংহা যেন তথাভূতং। নশ্মনরপঞ্চিতং জীড়া-রীতি-কুশলং পুৰুৱাজিভূষিতং বক্ষসি বিশাশং গোপালনা-পীল-প্রোদর-পরিসর-মন্দ্রনাচিত-বিশাল-বক্ষকপাট-মিতার্থ: ইচ আত সংসাতে প্রণতজনালাং ভয়-নাশনং অধিবং প্রিঃ গোঠজিত জনানাং মানগং চিত্তমেৰ মানসং সরঃ তত্ত্ব মরালং রাজভংগ-শ্বরণ স্কাতনং পুরুষং পক্ষে স্নাতনন্তলামক: পদকর্তা অস্যান্ডীতি অর্শাদিকাৎ অচ্সনাডনগোলামিনঃ প্রভূমিতার্থঃ।

অপুৰাদ

>—>৫। হে ফুলরি জীরাধে! তুমি জীকুঞ্চকে উত্তম-রূপে নিরীক্ষণ কর। তিনি কেলি-রসমাধুর্ব্য বিস্তার করিয়া নিজের হুত্থ সমস্ত গোপালগণের চিন্ত প্রেমার্ক করিয়াছেন; তাঁহার বক্ষে
খেত চল্লন-চিত্র-রাজির সহিত অক্প-বর্ণ মন্তর্পুর্বাজ পাইডেছে এবং তাঁহার দেহ-কান্তির নিক্ট
তমাল-তক্ষ পরাজিত হইরাছে। মিত্রপ্রের করচালিত রক্ষমর ধোলার, শাষ্টিত হওরার তাঁহার দেহ

সঞ্চালিত ও কঠের মান্য দোছগামান হইরাছে।
ব্রন্ধ-হরিগাকীদিগের রচিত গোরোচনা-ভিলকের
কান্তি দারা ঠানার গলাট অধিকতর ফুলর হইরাছে
এবং তিনি লোভ-জনক ঈর্থ-চাস্য-র্ক্ত মুথ-চল্লের
শোভার নব-বুবতীগণেব ডিক্ত-বিভ্রম উৎপাদন
করিতেছেন। তিনি কেলি-কৌশলে স্থনিপুন, পুলারাজি-বিভূষিত ও বিশাল-বল্গাঃ; তিনি প্রণত জনের
ভর্মাশন, গোপগণের সম্ধিক প্রির, সনাতন-মূর্ত্তি
(পক্ষান্তব্য-পদক্তা সনাতনের আগ্রন্থভ্ত)।

বসস্ত ৷১

শিশিরক অন্তরে আওয়ে বসস্ত।

ফুরলং কুত্ম সব কানন-অন্তঃ

শীর্ন্দাবনং পুলিনক রজ।
ভোরল মধুকর কুত্মক সজ॥
নব নব পরবে শোভিত ডালা ।
সারী শুক পিক গাওয়ে রসাল ॥
ভহিঁ সব রজিণি মেলি এক সজে।
ভেটল নাগরি নাগর রজে॥
বিহরই কাননে যুগল কিশোর।
নাচত গাওত রজিণি জোর॥
বাজত গাওত কত কত ভান।
গোবিন্দাস অবধি নাহি পানং ॥৪॥১৭২৮॥

পঠিক্তির

় ১। ইছা প-র-সা পুৰির ১৯৮১ সংখ্যক পদ। ২। 'কুটল' ক, খ। ৩। 'শ্রীরুন্দাবনে' ক, খ। ৪। 'ভাল' প-র-সা। ৫। 'নাহি পান' হলে 'নাজান' প-র-সা।

ख्या त्रांश । >

লাওড রে ঋতুরাজ বসস্ত। বেলড হাই কামু গুণবস্ক। ভক্তক্ল মুক্লিভ অলিক্ল ধাব।
মদন-মহোৎসব পিকৃক্ল রাব ॥
দিনে দিনে দিনকর ভেল কিশোর ।
শীত ভীত॰ রহু শীধর,-কোরণ ॥
মলয়জ পবন সহিতে৬ ভেল মীতণ।
নির্থি নিশাকর যুবজন হীতা ॥
সরবর সরসিজ শ্যামর লেহা।
ভ্যানদাস কহে রস নিরবাহাণ ॥৫॥১৪২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৮২ সংখ্যক পদ।
২। 'কিশোরি' ঘ। ৩। 'ভিতে' চ, প-র-সা।
৪। 'শিথর' ক, খ, প-র-সা। ৫। 'কোরি' ঘ।
৬। 'প্রন সহিতে' স্থলে 'সহিত প্রন' ঘ। ৭।
'মিড' ক, চ, প-র-সা। ৮। 'হিড' ক, চ, প-র-সা।
১। 'নিধিবাহা' ক, চ।

টাকা

e—ভ। "দিনে দিনে" ইত্যাদি। দিনে দিনে
দিবাকর কিশোর হইলেন অর্থাৎ বালোচিত সুহতা
পরিত্যাগ করিয়া বৌবনের প্রাক্কালোচিত তীব্রতা
ধারণ করিলেন; (তাহাতে) শীত তীত হইয়া পর্কতের
শিধরে রহিল অর্থাৎ পরাজয়-ভরে গিরিপুল-রূপ
হর্গের আশ্রর গ্রহণ করিল। তুলনা করুন,—

"দিনকর-কিরণ ভেল পৌগও।"

—বিভাগতি , প-ক-ত, ১৪০১ সং পদ।

৭—৮। "মলমল" ইত্যাদি। কেন্দর্শ-নূপতির
সহার) নিশাকরকে যুবক-জনের হিড-কারী অর্থাৎ
অমুক্ল দেখিরা (কন্দর্শ-নূপতির অপর রহার)
বসন্তেরও (সম-কার্য্য-কারিড হেডু) মলর-প্রনের
সহিত মিত্রতা জারাল অর্থাৎ বসন্ত, কন্দর্শের সহার
চক্র ওমলর প্রনের সহবোগে বুক্ক-জনের প্রীতিবিধানে প্রায়ন্ত হইল। ভুলনা কন্ধন—

"মলর-প্রন সহ ভেল অভুরাগ।" —(১৪৩০) বিভাগতি ; প-ক-ড, ১৪৩১ সং গই।

ভণা রাগ।১

ক্ষল অশোক নাগ বঙ্গণ মালতী।
পরিমলে ভরল মাধবী বজলতী।
পাটল্ কিংশুক শোভা কাঞ্চন কেশর।
কঙ্গণ কমলং কুন্দ করবীর-বর্গ।
মুকুলিত রসাল বকুল গন্ধরাজ।
ললিত লবক্ষলতা বন্ধুজীব সাজ।
লংস সারস পড়ে মেলি ছই পাখা।
আনৈকে আনকুল গুণ গুণ স্থরে।
মধুমদেং মাতি পড়ে ফুলের উপরে।
মধুমদেং মাতি পড়ে ফুলের উপরে।
বেশকিল পঞ্চম গায় শিখিকুল নাচে।
মলম্ব-পবন বহে গন্ধ পাছে পাছে।
নির্মাল বযুনা-জল পুলিনের শোভা।
এ বছ্নন্দন-পত্ত ভেল মনলোভা।

10178001

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৮০ সংখ্যক পদ। ২। 'কোষল' ক, খ, খ, চ। ৩। 'পর' খ, খ। ৪। 'ঋঞ ঋঞ' ক, খ, খ, চ। ৫। 'বধুলোভে' প-র-সা।

🦟 তথা রাগ।>

আরলং অত্-পতি নাল বসস্ত।
থারলং অলিকুল মাধবি-পত্ন।
লিক্কর-কিম্বন ভেল পোগও।
কেলারকুত্ব ধরল কেনাতঃ।
ফাকন-কুত্ব ছত্র থক্ন মাধব।
বেশীল রসাল-সূকুল জেল ভার।
সাকুবারি কোটিল প্রকার গার।

শিখিকুল নাচত অলিকুল যন্ত্ৰ।
আন বিজকুল পড়ু আশিষ-মন্ত্ৰ।
চন্ত্ৰাতপ উড়ে কুফ্ম-পরাগ।
মলয়-পবন সহ তেল অমুরাগ।
কুম্ম-বল্লিং তরু ধরলং নিশান।
পাটল তৃণ আশোক-দল বাণ।
কিংশুক লবজ-লতাং এক সজ।
হৈরি শিশির রিপুংং আগে দিল ভজ।
হৈরি শিশির রিপুংং আগে দিল ভজ।
হৈরি শিশির কিপুংং আগে দিল ভজ।
হৈরি শিশির কিপুংং আগে দিল ভজ।
তথারল সর্বিজ পরিল নিরমূল।
ভিধারল সর্বিজ পাওল প্রাণ।
নিজ নব-দলেংং করু আসন দান।
নব-বৃদ্ধাবন রাজ্যেং বিহার।
বিভাপতি কহু সময়ক সার॥৭॥১৪৩১॥

পাঠাকৰ

১। ইছাপ-র-সাপ্ৰির ১৯৮৪ লংখ্যক প্:।

২। 'আঙল' ক, খ, খ, চ। ৩। 'বাওল' ক,

য়, চ। ৪। 'পাতি' প-র-সা। ৫। 'বাখি'
প-র-সা।৬। 'কুন্দবিলী' ক; 'কুন্দবেখি' প-র-সা।
৭। 'ধ্বল' ধ। ৮। 'তুল' ক। ৯। 'লভাবে'
য়। ১০। 'বাড়' ক। ১১। 'সৈন' য়। ১২।
'কুল' ক, চ, প-র-সা। ১০। 'জন-বদনে' ধ।
১৪। 'রাজ্য' প-র-সা।

नेग

১—২। "আহল" ইত্যাদি। অতু-পঠি বসভনুপতি আসিলেন; (সেই সংবাদ বোষণা ভ্যার
অন্তই বেন নুপতির পরিচারকত্থানীর) মধুক্র-সমূহ
মাধবীর পথে অর্থাং মাধবী-গতার হিকে থাবিত
হইল। (ছচতুর পরিচারকর্পণ বেরপ নুপতির
বিবেশ হইতে গুভাগ্যন-বার্তা সর্বাধ্যে নুপতির
প্রিয়ত্যার নিউট ভাগ্ন ভ্রিয় উহার স্বোধবিধান বারা নুপতির প্রিয় হইতে চেটা ভ্রে, তত্ত্বপ
মধুক্রেরাও বস্তের প্রিয়ত্যা যাধবী-সভাকে বস-

ৰের ওভাগমন বিজ্ঞাপিত করার লক্কই তাহার নিকটে ধাবিত হইল, ইহাই ব্যঞ্জিত হইতেছে)।

১৩-১৪। "কুন্দ-বল্লি" ইত্যাদি। তক্ব (তদা-প্ৰিত) কুন্দ-লভাকে নিশান ধরিল; গাটল অর্থাৎ পাটলি-পুন্স (বসস্ত-নূপভির) তুণ ও অশোক-(পুন্স)সমূহ বাণ হইল। তুলনা কক্ষন,---

"মিলিড-শিলীমুখ-পাটলি-পটল-

इंड-चव-छूब-विनादम ।"---गील्डाविक । ১६-->७। "विश्वक" हेलामि। विश्वक ও नवष-नजादक अरु गृत्य (पविद्या (वगरखत) भक्त শীত-ৰাডু প্ৰথমেই (পরাজয় খীকার করিরা) ভঙ্গ দিল। (কিংকক পুলা শীতের শেব-ভাগে ফুটিতে আরম্ভ করিয়া বসস্ত ঋতুরও প্রায় মাঝামাঝি পর্যান্ত থাকে; কবি অভিশবোক্তি-অণহারের সাহায্যে ইহাকেই শীভ-ৰাতুর শক্ত বসন্তের সহিত কিংশুকের देसबी विश्वा वर्गन कतिया. 'द्वित' हेजामि वाका-ষ্টিত প্রতীরমানা উৎপ্রেক্ষা-অলভারের সাহায্যে ৰুৱাইডেছেন বে, নিষের অনুগত ব্যক্তি, শতার অহপত ব্যক্তির সহিত বোগ দিলে, অরের আশা পরিভাগে করিরা পৃঠভদ দিতে হর, এ স্থলেও শীত-ৰভু সেইরপ নিৰের আশ্রিড প্লাশ-পুপকে ৰসভেৰ আশ্ৰিত শবদ-লতা পুষ্পের সহিত যোগ बिट्ड स्थिता, जांत करतत जांना नाहे छावित्रा भनावम कतिन।)

मार्व ।>

নৰ স্থানাৰ নবীন তক্ষগৰং
নব মৰ বিকসিত কুল।
নবিন° বসস্তা নবিন° মলয়ানিক
মাতল নব অলিকুল ।
বিহরই নওল কিশোর।
কালিন্দি-পুলিন কুঞ্জ নব শোভন
নৰ নৰু ধ্যোমণ বিজোৱ । এই

নবিন-রসাল- মুকুল-মধু-মাতিরা
নব কোকিলকুল গার।
নব যুবজীগণ চিত উমভারইদ
নব-রসে কাননে ধার ।
নব যুবরাজ নবিন নব নাপরি
মীলায়ে নব নব ভাতি।
নিতি নিতি ঐছন নব নব খেলন
বিভাপতি-মতি মাতি ॥৮।১৪৩২।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৮৫ সংখ্যক পদ।

২। 'লভাগণ' ঘ। ৩-3। 'নবীন' ক। ৫।
'সোহন' প-র-সা। ৬। 'নব' ক, খ। १।
'প্রেমে' থ, প-র-সা। ৮। 'উমাভারই' থ, চ্;
'উমভাওই' ঘ। ৯। 'মিলরে' ক, থ, প-র-সা।

অথ হোরি।

শ্রীগোরচন্ত ।

बगख ।>

দেখ দেখ অপরূপ গোরাজের লীলা।

রীকৃং বসত্তে সকল প্রিরগণ মেলিও

কলনিধি-ভীরে চলিলা ॥এ।

এক দিকে গদাধর সচ্চে সমুগ দামোদর

বাসুঘোষ গোবিন্দাদি মেলিও।

গোরীদাস আদি করি চন্দর পিছকা ভরি

গদাধরের অতে মের প্রেলিও॥

সমুণ নিজ্পণ সাথে আবির লইয়া হাতে

সমুণে প্রেলি গোরা-গার।

গোরীদাস খেলি প্রেলি ব্যারাজ জিভুক্ নলি

করতালি হিরাজানে ধারু॥

ক্ষবিরা শ্বরূপ কর হারিলা গোরান্ত রার ক্ষিত্তল আমার গদাধর। কৃষ্ণালি দেয় কেছ নাচে গায় উর্জ-বাছ এ দাস মোহন মনোহর ৪৯॥১৪৩৩।

পঠিবির

>। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৯৮৬ সংখ্যক পদ।
২। 'ৰাছু'ক, খ, প-র-সা। 'ৰাভু' পাঠে ছলঃপক্তন ঘটে। ৩। 'মেলি' শক্তি প-র-সা প্রথিতে
নাই। ৪। 'মিলি'ক, খ, ঘ, চ। ৫। 'ফেলি' প-র-সা। ৬। 'ফেলার' প-র-সা।

তথা রাগ।>

ঋতুপতি বিহরই নাগর শ্যাম। রাধা রজিণি সজিনি বাম এঞা পরিমল কুকুম চুয়াং চন্দন **কান্ত-রজে॰ সব অরণ ভার।** মাতল ম্নসিঞ্চ মদনমোহন হৈরি যুৰ্তি-যুপ শত গায়ত ঝুম্রি (क्छ्' ज्यत्र ध्रम কেত্ হার হর কেছ">> তমু পরশিয়া রহল বিভোরি^{১২}। क्छ लाहे मून्त्र কেছ লেই মুরলি ছুর্হি দুরে রহি । গাওত হোরি। উপাক্ত পাথাওক ভক্ষ> রবাব কর্ডল-ভাল হুমেলি করি।

পাঠান্তর

নাচভু গাওত ভাল ধরি ॥১०॥১৪০৪॥

গোবিদ্দদাস-পত্

নটবর-শেশর

১। ইহা প-র-সা পুষির ১৯৮৭ ও প-র পুষির ৩০।২ সংখ্যক পদ। ২। 'চুরা' ক, খ, খ, প-র-সা, প-র। ৩। 'মুগ্রহণ' প-র। ৪। 'অলে' প-র। ৫। 'বিক্ট' প-র। ৩। 'হোরি' প-র-সা। ৭। 'কোই' প-র। ৮। 'বৃদ্ধ বিশ্বর' চ, প-র। ১।

'কোই' প-র। ১০। 'ধক' প-র। ১১। 'কোই' প-র। ১২। 'পরশিবা' ইড্যাদি খুলে 'পরশিবা রহণহি ভোরি' ক, চ, প-র-সা; 'পরশি পুলকি রহু ভোরি' প-র। ১০। 'কেই' ক; 'কোই' ধ, প-র-সা। ১৪। 'দফ্'ধ।

बम्ख ।>

বিহরই নিধুবনে যুগল কিশোর।
ফাগু-রজে আজি সভে হৈয়াছে বিভোর।
চুয়া চন্দন ভরি পিচকারি।
শ্যাম-নাগর-অজে দেওত ডারি॥
ললিতা বিশাখা আদি স্থাসণ মেলি।
রাইক নিয়ড়ে কামু লেই গেলি॥
সব স্থা ডারত নাগর-অজে।
নাগর খেলই রাইক সজে॥
বাণ রবাব মুরজ কপিলাস।
বিবিধ যন্ত্র লেই করয়ে বিলাস॥
কোই কোই গাওত নব নব তান।
ভ্রানদাস হেরি জুড়ায় নয়ান॥১১॥১৪৩৫॥

পাঠান্তর

১। इंश भ-त-ना श्र्वित ১৯৮৮ नरवाक शर्म।
२। 'আজি नष्टि' व्हल 'नव' भ-त-ना। ७। 'काख'
क, व, व, ह। ८। 'शिनान' क। ८। 'क्तिर्द्ध'
व; 'क्तुरु' भ-त-ना। ७। 'क्लिरे' क, व,
भ-त-ना।

ভৰা ৰাগ ৷>

থেলত কাপ্ত বৃন্দাবন-চান্দ।
ঋতুপতি মনমথ-মনমথ হান্দ॥
ফুন্দারিগণ করং মগুলি মাঝ।
রাজণি প্রোম-ভরজিণি সাল ॥

व्यक्ति कांक दहरे नांगदि-नग्रदन। অবসরে নাগর চুম্বয়ে বয়নে 🛚 **চকিতে চক্রমুখি সহচরি-গহনে।** थारे धवन शिविधाविक वन्तरमः ॥ তরল-নয়ানি ভুরিতে এক থাই। কর সঞ্জে কাঢ়ি° মুরলি লেই ধাই॥ খন করতালি ভালি ভালি বোল। হো হো হোরি তুমুল উতরোল।। অরুণ ভরুণ ভরু অরুণহি ধর্ণী। **শ্বল জলচর ভেল সভে** এক-বরণী ॥ जरूपि नीरत जरूप जरविका। अक्र १- क्षत्र १ (खन मात्र (गाविन्स ॥

1175178091

পাঠান্তর

)। देवा भ-त-मा भूभित ১৯৮৯ मरश्रक भव। ₹। 'कक्र' श-ब-शा ७। 'श्वल' का ।। 'গিরিধরকি রসলে' প-র-সা। ৫। 'একা' ধ। 'क्'िक' क, छ। १। 'क्लरब' क, च; 'छनब'

जनवर्षी ।>

व्यक्षायु क्यांत्र नम्मक्यात्र। হোরিকং রজে ञरण अक्रनायत मन जानम ज्ञात ॥ নিরখত বর্নণ নয়ন*-পিচকারিত° Cधम-खनांव मनकि मन नांग । তুত অজ-পরিমল ह्या हम्मन काश्च-রঙ্গ তাহিঁ নৰ অনুৱাগ 🛭 খেলত তমু মন **লোরি ভোরি ছহ**ঁ কভরে ভঞ্জি॰ রস-ভাতি। তমু তমু সন্মস পরশে মন শাতল ছব পর ছব পড় মাতি।

ব্ৰজ-বনিতা যত बीवि विवास्त রস-গারি মৃত্রু ভাব। অম-জল-কলেবর হেরিয়া চামর চুলায়ত উদ্ধবদাস ॥১৩॥১৪৩৭॥

পাঠান্তর

)। देश भ-त-मा श्रुवित ১৯৯० मश्युक भए। २। 'द्रांति' थ। ७। 'नत्रन' थ। ४। 'दन्नन' प। ८। 'शिठकांति' क, थ, प, छ। ७। 'ख्य' क। १। 'त्रियि' क; 'त्रियिकि' श-त्र-शा। ৮। 'রীঝারত' ব, চ। ৯। 'বৃহ বৃহ্' প-র-সা।

8-1 "नित्रथक" देखानि। (श्रीवाश ख গ্রীক্তঞ্চ) পরম্পারের বদন নিরীক্ষণ করিলে (উভরের) नवन-ऋग शिहकां वी वर्षां वन-वर्षां व व हरेए প্রেম-রূপ শুলাব অর্থাৎ গোলাপ-জল (উভয়ের) मत्न मत्न नथ रहेन; ভারতে অর্থাৎ এই অপুর্ব ভাৰাত্মক হোরি-ক্রীড়ার উভরের অল-সৌরভ চুরা-চন্দন ও নব-অন্থরাগ কাওর রং (হইন)। (অন্থ-রাগকে লোহিডরণে বর্ণন করা 'ক্বি-স্বয়-সিদ্ধ' ৰলিয়া অলভার-শাজে উক্ত হইরাছে। 🤊

देशन कलानी ।>

রীভুরাজং অজ-সমাজ হোরি রজে রজিয়া ৯৫% নাগরি-বর হোরি-রজ- উন্মত-চত স্থাম-সজ ৰাচত কত° ভবিয়া ॥**ধ**। সাওত কভ॰ রস-প্রসঙ্গ বাওত কভ বি৭০ ৰোচল रेथना रेथ॰ युक्तिया ह চঞ্চল গতি অতি স্থান নিয়খি সূলেণ কত অনক निक नक खुन्निया। चत्रमधन नवः ज्ञानः मधूत गर्भ केशांकिया ।

(थनि श्रमान १ वक नान

স্থানর বর^{১২} ক্যুতি রসাল **রজিণিগণ সভিরা**। **গুজ-বধুসণ^{১০} ধরত তাল** গাওত পদ নন্দলাল

ব্ৰজ-বৰুসৰ শ্ৰমত ভাল সাওত পদ নন্দলাল রাই অজে শ্ৰমিয়া॥

হো হো করি করভ ভাষ

করতালি ঘন^{্ধ} মন উলাস **জন্ম কয়** বর চঙ্গিয়া^{১৬}।

গোবিন্দ-গুণ করি প্রকাশ

রচিত গীত^১° উদ্ধব দাস **ংগরি^{১৮} রস-**ভর**জিয়া^{১১} ॥১৪॥১৪৯**॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৯১ সংখ্যক পদ।

২। 'ঋতুরাজ' ক, প-র-সা; 'রিতুরাল' চ। ৩।
'কর' খ। ৪। 'গাওত কত' হলে 'গাওত' ক,
খ। ৫। 'কত বিণ' হলে 'বীণা' ঘ। ৬। 'বৈরা'
প-র-সা। ৭। 'ভূলে' ক, চ, প-র-সা। ৮।
'সলীত সর' হ। ৯-১০। 'বর' ক। ১১।
'সোলাল' ক, খ, ঘ, চ। ১২। 'বর' শব্দ ক, খ
পূথিতে নাই। ১৩। 'বধ্পণ' ক। ১৪। 'নলে'
ক, খ; 'অলেড' প-র-সা। ১৫। 'ভালি'
প-র-সা। ১৬। 'ভলিয়া' প-র-সা। ১৭। 'রচিত
সীড' হলে 'রচি গাইল' খ। ১৮। 'হেরি' চ।
১৯। 'রসেতে রলিরা' প-র-সা।

বসপ্ত 1>

আৰু রজে হোরি
থেলত শ্রাম গোরী।
স্থিগণ মিলি গাওত বাওত
কিলোর কিলোরি মাচি নাচাওত
আনুষ্কে মন ভোরি।

বিবিধ যন্ত্ৰ ভাষা মৃদক্ষ
কোই মোচক্ষ বাওয়ে উপাক্ষ
তৰ নন নন ভোরি ।
তথ তথ তথ তত্ত থৈয়া
দৃগতি দৃগতি দ্বিমি ধৈয়া
চঙ্ক লঙ্ক লঙ্ক লোরি ।
কুড়ু গুড়ু গুড়ু গুড়ু দাং দ্রিমিদাং
কিট কিট কিটধাং ভূগধাং

শিবরাম গাওয়ে হোরি ॥১৫॥১৪৩৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ১৯৯২ সংখ্যক পদ।
২। 'বিবিধ বর' ইত্যাদি কলিট ক, ধ পুৰিছে
নাই। ৩; 'তাল নানা নানা তোরি' প-র-সা। ৪।
'ত' ক, ধ; 'তঃ' ঘ; 'তউ' প-র-সা। ৫। 'চঙ
লউ লউ লোরি' ক, ধ; 'চঙ চঙ চঙ নোরি'
প-র-সা। ৬। 'পুড়ু' চ, প-র-সা। १। গাওরে
বাওরে' ঘ।

তথা রাগ।>

রাধামাধৰ নাচত হোরি-আনন্দে। অক্লণ তাল ধৰে অরুণ ডক্ষ করে বাওত কতহি প্রবন্ধে ।ধা। **उरेथ उरेब उ**र **था जिमि जिमिरग** जा (बा (बा (बान मुनन। वीग-नाम अनि क्म क्म क्म धनि अत्रमश्रम-भारतः मृत्राह जनम । ধঞ্চন-গতি ভলিম क्षित हर्न क्नमन मित्र (वारण । সুমরি° সুমরা কোই° क्षम क्षम सूमित বাওরে ডক্ষ উভরোগে।

অরুণ নেবের কাছে অরুণ চন্দ্র নাচে
নথতর অরুণ আকাশে।
অরুণ কোকিল গায় অরুণ ময়ুর শায়
ইহ শিবরাম রস ভাবে 1১৬1>৪৪০।

পাঠান্তর

>। ইহাপ-র-সাপুথির ১৯৯০ সংখ্যক পদ।

২। 'জিমিথো' দ। ০। 'ধ্বনি' ক। ৪।
'থারে' ক। ৫। 'বোল' প-র-সা। ৬। 'ঝুমরে'
ক, খ। ৭। 'ঝুমুঝীকোই' খ; 'ঝুমরানাই' প-র-সা।
৮। 'উভরোল' প-র-সা। ৯। 'নখতরু' খ;
'মথভার' দ। ১০। 'মরুঝ' ক।

भागून 13

त्राच्य दश दश दश्ति। খেলত নওল কিশোরী।ঞ। বাক্ত ভাল রবাব পাখাওজ স্থিগণ খন করতালি। আবির উড়ত ঘন कुक्रम हन्सन वित्रधन्य अपू शिहकांत्रि ॥ क्ट क्ट (अलन° সমর-প্রবন্ধহি ছছ পর ছত পড় ভোরি। किछन् किछन् वन তুত্ত-জন গরজন म्बिशन छन वत्रकाति । খেনে খেনে থকিত वमन छ्रह निद्रथन

ছেরি **হালে খো**রি থোরি।১৭।১৪৪১।

मांग-मन जानरन

े रेक्न ठाँम ठरकाति।

ভহিঁ শিবরাম

পাঠান্তর

३। देश भ-ब-ना श्रुषित >>>> नेश्याक भव।
 १। 'विविधन्' कः। ०। 'विकन' भ-ब-ना। ३। 'विव क्षिति' कः।

कूड़ी बनख ।> হোরি হো রকে মাভি। व्यविद्य व्यक्तन श्रामि भामत्र-काँडि॥अ॥ নিপত্তিত বদ্ৰে হুরজিদ কুছুদ চুয়া চন্দন কেশর সাথা⁸। कोिपरग व्यवित्र উড়ায়ত ব্ৰজ-বধু ব্দরুণ তিমির কিয়ে ভেল দিন রাভি ॥ বীণ উপাঞ্চ মুরজ সরমগুল ডক্ষ রবাব বাওয়ে রুড ভাতি। কোই মাউর হুরট কোই সারক্ষিণ কোই বসস্ত গাওয়ে সর-জাতি ! নাচত মোর ঘোরা খন কোকিল রোল বোলে মত মধুকর পাঁতি। মনোহর খেলন ঋতুপতি পরম হেরি শিবরাম হরিখে ভরু ছাতি 🛭 #>**#1>882**#

পাঠান্তৰ

>। ইহাপ-র-সাপুধির ১৯৯৫ সংখ্যক পদ।
২। 'প্রাম' ক। ৩। 'নিপতিত' ক। ৪।
'সাতি' ঘ। ৫। 'মাযুর' ক। ৬।, 'সারল' ক,
খ। १। 'মযুর' ক। ৮৭ 'থোর' প-র-সা।
১। 'বোল' খ, ঘ, প-র-সা।

বিহণ্ডা।>
বাজে দিগ দিগ বৈ বৈরা হোরি রজে ৯ঞান
কিশোর কিশোরি স্থিনি স্বেলি
তপন-ভনরা-ভীরে কেলি
ক্থমর অভি মধু ঋতু-পভি
রভিপতি ভবিং সজে ।
মহণ মুহণ চুবক চকান
বন্ধ রজে বরিধে স্বান
অন্ধন্ধ ব্যান

বীণ মুরজ সর উপান্ধ

জিমিকি জিমিকি জিমি মুদজ
চক্ষল গতি খঞ্চন জিতি

নৃত্যতি অতি ভলে ॥
গাওয়ে গমকে গোপি মেলি
গোরি শুরুজির রামকেলি
স্বভগা স্থাইনি সুহুই সাহানিণ
স্বিভাগ রস-তরজে।
মূথে মূথে মুবভির্নদ
মাঝে শোহত গোকুল-চন্দ
গোবর্জন হাদি বর্জন

করু মর্দ্দন অনকে ॥১৯॥১৪৪৩॥ পাঠাম্বর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ১৯৯৬ সংখ্যক পদ।
২। তাম' থ। ৩। 'তক্রণ' প-র-সা। ৪।
'লোলিড'চ, প-র-সা। ৫। 'ভ্বণ' ঘ; 'সঘন'
প-র-সা। ৬। 'সলীত' ফ। ২। 'ইললে' ঘ,
প-র-সা; 'হনলে' চ।

थानने ।>

খেলত রাধাং

শ্রাম রঙ্গ ভরিণ

वुम्ना-विभिन मगान ।

ह्या ज्यान

वनान कुकूम

রক মুটকি ভরি সাল।

देवर्डण ग्राम

স্তে মধুমকল

ন্থ্ৰল স্থাদিক সাথে।

त्रांशा निका^द विभाषा नाहि॰ সহচति

পিচুকারি করি নিক হাতে।

कामूक शिक्कांति वविरं वित्रथं

्र अकृष्टि भक्त भूक शहर ।

गरहि (वित्

क्य क्य संस् वर बार्ट ।

वह्रविथ त्रम

অজ সব ভীগত

আঁচরে মোহত মুখা।

জিতলুঁ জিতলুঁ ভাষি হালি দেই শক্তালি
কাণে কাণে বাঢ়ত সুখাগ।
গাওত বাওত আবির উড়ারত

কোই নাচয়ে মনরঙ্গে।

ডক্ষ রবাব সবহু মেলি শ্বন্ধর

উদ্ধব দাস ভছু সঙ্গে ।২০॥১৪৪৪॥ শাঠান্তর

১। ইছা প্র-না পুথির ১৯৯৭ সংখ্যক পদ।
২। 'রাধামাধব' প্র-র সা। ৩। 'রকে ভোরি'
প্র-না। ৪। 'মটুকি' খ। ৫। 'গলিতা আদি'
প্র-না। ৬। 'বিশাধা আদি' হলে 'বিশাধা'
প্র-না। ৭। 'বব' ক; 'ববহু' প্র-র-না। ৮।
'হুথ' ক, চ, প্র-না। ৯। 'জিভল জিভল' ক,
ঘ। ১০। 'ভেই' ধ। ১১। 'হুথ' ক, চ, প্র-র-না।

47W 1

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পৃথির ১৯৯৮ ও প-র পৃথির ৩০।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'রাশিভিরভিশঙ্ক্' খ, চ। ৩। 'মূল্রপি' প-র। ৪। 'ক্লর তদ্ফু' খ, প-র-সা, প-র।

টীকা

১->৫। "विष्यकी"ठामि। तनो विनानी 🕮 কৃষ্ণ: রাধিকরা সহ বিহরতি ক্রীড়তি। কৃত্র ? मधुना वमरस्थन मधुरत मरनाहरत हेह . चळ वृद्धावन-श्रीति । कीषृतः कृषः ? हर्व-छत्रशे चानत्सालान-বান । ভতঃ ক্রীড়ন-প্রকারমাহ 'বিকিরতী'ভ্যাদিভিঃ। রাধা নববৈরিণি এককে ব্যস্তবিতং ব্যর্ভালিতং কুছুম-পৰং কুছুম-দ্ৰবং বিকিন্নতি বৰ্ষতি অপীত-কুৰুম-ক্ৰমত জীৱাধাৰ-পাম্যাৎ কৃষ্ণপ্ৰিয়দাৎ ভগ্য ধারকথাচেতি বোধান। অরং শ্রীক্লোহপি অবি-**শব্দং নির্ভ**রং বথা স্যাৎ তথা মৃগমদ-রস-রাশিভি: मुश-मह-क्षव ममुदेदः पत्रिकाः व्यवस्थाः श्रीवाशाः निकाछ। मृग-महस्रवमा श्रीकृष-वर्ग-मामार श्रीवाधा-প্রির্বাৎ শ্রীরাধারাঃ ত্বপীতাকে শ্লাকে কলছ-তস্যান্তি-শোভাধায়ক ৰাচ্চেতি বোধাম। देशर उक्रनयूत्रमर श्रीत्रांशाक्काविकार्यः नवः अखिनवर তেন হেডুনা অবশ্ভরং অতিলোহিডং পটবাসং হুগদ্ধ-চূৰ্বং ক্ষিপতি অঞ্চোহন্তং প্ৰতি বৰ্ষতি। তথা অভতুবিলাসং কলপ-জনিত-বিভ্ৰমং বলব্দিপ্ৰমং বা क्षत्र त्रहत्र क्षिष्ठर क्षिष्ठर महद्वि (नवः मूह्दीतः-वातर पश्चिमक्राणि। कोषा-मर्नमः स्वनः बनमानी জিতবানিতি খন-করতালীং রণমতি বাদমতি শ্রীকুঞ্-পক্ষপাভিত্তাদিভি ভাব:। छथा. जैत्राधिका-मधी ললিতা মম আলী সধী প্রীয়াধেত্যর্ব: সনাতন বঙ্গভং প্রিরং প্রীকৃষ্ণ অনুরত পঞ্চাবলোকরেতি বদতি তস্যান্তবৈবাছর পদাধিতি ভাবঃ।

व्यक्तांत

১-->৫। বিলাগী ও হবেৎসুর **এই**ক এই বস্তান্ত্রনার সুকাবন-পুলিনে **এই**গ্রিক সহিত কীড়া করিতেছেন। শ্রীরাধা অব-রিপু শ্রীক্ষের উপরে যত্ত্ব থারা কুকুম-বারি বর্ষণ করিতেছেন; শ্রীক্ষণ মুগ-মন-বারি বারা প্রেরসীকে সেচন করি-তেছেন। তরুণ-বৃগন নব ও অভিশ্র অরুণ স্থান্ধন্দ করিছেলেন ও অভস্থ-বিলাস প্রকাশ করিছেলেন ও অভস্থ-বিলাস প্রকাশ করিছেলেন। "বনমানী লিভিরাছেন" বলিরা স্থান বন করতেছেন। "বনমানী লিভিরাছেন" বলিরা স্থান বন করতানি বাদন করিতেছেন; লালতা বলিতেছেন,—দেখ দেখ; আমার সধীপ্রিরতম (পক্ষান্ধরে—পোষামী সনাতনের ব্যক্ত) শ্রীক্ষণকে পরাজিত করিরাছেন।

তাৎপৰ্ব্য ဳ

শীরাধার বর্ণ-সাম্য হেতু পীত-বর্ণ কুছুম-বারি
শীরুফের প্রির ও তাঁহার স্থামালে মরকতে প্রপসংযোগের স্থার উহা নিতান্ত শোভাবিধারক বলিয়া
শীরুফের দেহে কুছুম-বারি বর্বপ হারা শীরাধার
অপূর্ব প্রিরায়কুলতা ও বৈদক্ষা ব্যক্তিত হইতেছে।
তক্ষপ শীরুফের বর্ণ-সাম্য হেতু কন্তরী-বারি
শীরাধার প্রির এবং উহা তাঁহার অলে শশান্তের
কলক-চিল্লের স্থান শোভাবর্দ্ধক বলিয়া শীরুফ
শীরাধার অলে কন্তরী-বারি সেচন করার তাঁহার
প্রিরা-নিঠতা ও বৈদক্ষা ব্যক্তিত হইতেছে।

क्षा जान ।>

খেলাতে হারির। শ্রাম পলাইতে চার।
চৌদিকে ব্রজ-বয় পথ নাহি পার।
আবিরে অরুণ আঁথি মেলিতেং না পারি।
হারিলুঁ হারিলুঁ শ্রাম বোলে বারে বারে।
কর সঞ্জে মুবলী ভূমেতে পড়ে খলি।
করভালি দেইং সব স্থীপণ হালি।
শিথি-পুছে আউলাইং পড়ে মহীতলে।
অরুণিভ বসন ভিজিলং প্রমান্ধলে।
শ্রামের বিভোর দেখি রসবর্তী গাঁই।
অরুণভ বসন দিল্লী ও মুখ্য মুহাই।

11251178861

সংহাসনে বৈসে রাই কোরে করি খাম।
আম-ভরে ছহঁ অলে পরিপূর্ণ বাম।
তীরভিমঞ্জরী দোঁহেণ চামর চুলায়।
তীরূপমঞ্জরী দোঁহেণ ডামুল যোগায়।
তীগুণমঞ্জরী দেই স্থাসিত জল।
এ মোহনদাস হেরি নয়ন সফল।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ১৯৯৯ সংখ্যক পদ।
২। 'মিলিতে' ঘ, চ। ৩। 'দেম' ক, প-র-সা।
৪। 'এলাইরা' ঘ; 'আল্যারা' চ। ৫। 'ভিগল' প-র-সা। ৬-৭। 'ছহ' প-র-সা।

কাষোদ (১

নাগরি নাগর অরুণ বসন ধরং ख्य-खर्त्र यात्र वात्र चाम । বিন্দু বিন্দু চুয়তত छ्छ। यूथ-हेन्स् অক্লণিভ মুকুভাত-দাম॥ पृष्टं यन जानम-श्रुष्ट । হেলি হুহুঁ হুহুঁ তুমু वह्रविष (षणि • বৈঠল নিরজন কুঞ্চে। ধা। আসন মণিময় রতন-াসংহাসন ফুলচন্ন-রচিভ স্থঠান। করভহিঁ সেবন সকল সৰীগণ সময়োচিত বত জান । तिह श्रीमश्रीव বারি কারি ভরি কোন সৰি চাষর চুলার। ভামুল বোগারই অ্রক অধ্যে কোই উद्धव मांग वनि वात्र ।२०॥५८८१।

) विशे शन्त्र-मा श्रीवत २००० मरवाक शन। २। अन्तर के विशेष हैं। या विशेष के

পাঠান্তর

'চোরত' প-র-সা। ৪। 'রুক্তার' ক, ঝ, প-র-সা। ৫। 'হড়' তহু' ক, ঝ। ৩। 'পান' ছ।

বীরাগ ।>

রুদ্দাং-রচিড° কতেক পরকার।
স্থিগণ আনল বহু উপহার ॥
রতন-থারি ভরি রাখল তাই।
বারি ঝারি ভরি দেওল যাই ॥
রতন-আসন পর বৈঠল কান।
ভোজন কয়ল আপন মন মান ॥
আচমন সারি তলপে মুখ্যাস।
ভোজন করু ধনি স্থিগণ পাল ॥
বো কছু লেষ ভুজল স্থি সাথ।
আচমন কয়ল মোহল পদ হাত ॥
গ্যাম-বামে ধনি বৈঠল বাই।
প্রির-সহচরি কোই ভাসুল যোগাই ॥
গ্রতন শেকু রাই ঘন-শ্যাম।
চামর বিজন করু দাস বলরাম ॥

15 4178811

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুধির ২০০১ সংখ্যক পদ। ২: 'বুলার' ক। ৩। 'চর্চিড' প-র-সা। ৪। 'ভুলন'ক, ধ, প-র-সা। ৫। 'গুডন' ক, প-র-সা। ৬। 'বীকন'ক, ধ, প-র-সা।

অথ বাদন্তী দোলা হোরি-বিলাস। 🗢 🦿 ভত্র 🕮গৌরচক্ত ।

नगय ।)

কো ক**হু আজুক আনন্দ-ওর।** ফুল-বনে দোলত গোর কি**লো**র।

• 'त्यावि-विनान' चरन 'त्यावि वरण' 🛡, ४, 'त्यानी' ५, छ । নিত্যানন্দ গদাধর^২ সঙ্গে।

শান্তিপুর-নাথ গাওই রজে।
সহচর কাপ্ত পেলই° গোরা-গার।
ধারই শুনি সব লোক নদিয়ার।
ধোল-করতাল-ধ্বনি হরি হরি বোল।
নয়নানন্দে আনন্দে বিভোৱ। ২৫॥১৪৪৯॥

পঠিবির

)। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০০২ সংখ্যক পদ।
 ২। 'গদাধর আদি' প-র-সা। ৩। 'লেপই' ক;
 'কেলরে' প-র-সা।

चवा बान ।>

নিপভভিং পরিতো বন্দনত-পালী।
তংগ দোলরতি মুদা স্কেদালী।
বিলসভি দোলোপরি বনমালী।
তরল-সরোক্ত-শিরসি বধালীও ॥
অনরতি গোপী-অন-করভালী।
কাপি পুরো নৃত্যভি পশুপালী।
অরমারণ্যকত-মগুন'শালী।
অরমারণ্যকত-মগুন'শালী।

পাঠান্তর

)। देश প-त्र-ना गूचित २००० ७ श-त शूचित ७०१० नश्यक शव। 'छथा त्रांग' इत्व 'ब्यानावित' श-त्र। २। 'निश्विष्ठ' श-त्र। ७। 'वह्नन' क, थ, १८। ६ विष्ट' क, थ, प, ह। ६। 'नित्रनिक थानी' क,थ, प, ह। ७। 'ब्यानावर्गक' क, थ, श-त्र-ना। १। 'वश्वन' क,थ, प, ह, श-त्र-ना।

गिका

১—৮। "নিপততী"ভাবি। বোলায়াঃ পদ্ধাক্ষতেকপ্রি বনবালী প্রীক্তকো বিলস্তি। ভ্রোপ্রা
ভ্রক্স সংবাদধ্য পদ্ধা পিরসি জলী বথা ভূক
বৈ ধর। পরিভঃ স্বভাৎ ব্লন-পালী ক্যুত্তিভিঃ

নিগততি। অ্বকালী মিউপ্রেণী চ মুলা ক্রেণি তথ লোগরতি চালরতি দোলা-প্রেরইণরিতি ভাবঃ। গোপী-জনানাং করতালী জনরতি কৌতুক্ষিতি শেবঃ। কালি পশুপালী গোপী প্রিরস্য পুরো নৃত্যতি। অবং শ্রীকৃক্য: আরণ্যক-মঙ্গলালী বন্ত-পূম্প-পত্ত-ভাবান ক্রিক্টি: কৃতত্বণঃ তথা সনাতন-রস্যা ভিরন্থারিক আনক্ষয় পরিপোবকঃ করতি খেনোংকর্বেণ বিশ্বা-ক্রতে। পক্ষে সনাতন্য্য রস্যা প্রবর্জকঃ।

व्यक्ष

>—৮। চড়ুর্দিকে কন্তুর্ণ-রাজি বর্ধিত হইতেছে; স্থান্বর্গ প্রীক্ষককে আন্দোলিত ক্রিডেছেন। বনমানী (পলাক্ষতি) দোলার উপরে বিধাজিত রহিরাছেন,—বেন চঞ্চল পল্পের উপরে ক্রম্ম
শোভা পাইতেছে। গোপীজনের কর-তালী ভাঁহার
কৌড়ুক উৎপাদন করিতেছে। কোন গোপী প্রিয়ভব্যের সন্মুখে নৃত্য করিতেছেন। বস্তু ভ্রথে বিভূষিত ও
অনত-আনন্দের (পক্ষান্তরে—পদকর্জা সমান্তনের
আনন্দের) পরিপোষক এই প্রীক্ষের বলিহারি!

ख्यां अंश ।)

মধ্বনে মাধব দোলত রলে।
অল-বনিতা ফাগু দেই প্রাম-অলে।
মানু ফাগু দেয়ল প্রন্দরি-অলে।
মুধ মোড়ল ধনি করি কত তলে।
কাগু-রলে গোপী সব চৌদিসে বেড়িরা।
প্রাম-অলে ফাগু দেই অঞ্চল ভরিরা।
কাগু ধেলাইতেং ফাগু উঠিলং পগনে।
বুন্দাবনং-তক্র-লভা রাতুল বরণে।
রালা মর্ব নাচে কাছেং রালা কোকিল পার।
রালা কলে রালা ভ্রমর রালা মধু খার।
রালা বাবেং রালা হৈল কালিনীর পারী।
গগন ভূবন দিগ বিদির না জানি।
বভি ভার রতি জয় বিজকুলে গার।
আন্বারে কিছ নর্ব ভুরার ৪২০৪১৪৪১৪

পাঠান্তর

>। देश १-त्र-ना शृथित २००८ मरथाक १४। १ (वंगादे १। ०। 'केफिन', १-त्र-ना। ८। 'त्राद्ध' १-त्र-ना। ८। 'त्राद्ध' १-त्र-ना। ७। 'वात' क, ४।

তথা রাগ ৷১

দোলত রাধা মাধব সজে।

দোলায়ত সব সধিগণ বহু রজে ॥
ভারত কাণ্ড চুহুঁ-জন-অকে।

হেরইতে চুহুঁ-রূপ মুরুছে অনজে ॥
বাণত কত কত বদ্ধ স্তান।
কত কত রাগ-মালং করু গান॥
চন্দন কুরুম ভরি পিচকারি।
ছুহুঁ অজে কোই কোই দেওত ভারি॥
বিগলিত অরুণ বসন চুহুঁ-গার।
ভাম-জল বিন্দু বিন্দু শোভে তার॥
হেম-মরকতে জন্ম জড়িত পঙারং।
ভাহে বেচুল গলমোতিম-হার॥
দোলোপরি ছুহুঁ নিবিড় বিলাস।
ভানদাস হেরি পুরুরে আশ ॥২৮৪১৪৫২॥

পাঠান্তর

১। ইছা প্ৰ-র-না প্ৰির ২০০৫ সংখ্যক পথ। ২,৪ 'রাল বাল' ক, খ, চ, প্ৰ-র-না। ৩। 'বোডা করে' থ। ্বু। 'পোডার' প্-র-না। ১৫। 'বোল প্রি' থ; 'বোলা পর' প্-র-না।

निका

e-। "বাওত" ইডাাদি। ছন্দর-ভাগবিশিই

ক্ত ক্ত ব্য বাদন করিডেছে (এবং) কত কত
বাদ-বাদা পান করিডেছে। তুলনা কর্ম--'গাওত
বাদ-বাদিকা' ভানবাদ; প-ক-ত, ১০০০ সংখ্যক

35-00

चार्गावत्री ।>

আঞ্চলি ভরি কাপ্ত লেই স্থিপণে।

রাই-কামু-অলে দেই যনে খনে ॥

বোলোপরিং ছুর্ছ দোলত ভাল।

গাওত কোই স্থি ধরিং তাল ॥

বাওত কত কত বল্ল অরঙ্গ।

বীণ রবাব সর-ম্থলং উপাল ॥

শোভিত ভক্লকল বিক্লিত কৃলং।

ঝহরু মধু-মদে সব অলিকৃলং॥

মলর-পবন বহে বামুন-ভীর।

নাচত শিধিকূল কুঞ্জ-কুটীর॥

বিলসই ভহিং দোলোপরিধ কান।

ইহ নবকান্ত দুর্ছাক গুণ গান ॥২৯॥১৪৫০৪

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০০৬ সংখ্যক পদ।
২। 'বোলা পরি' ক; 'বোল পরি' থ। ৩। 'ধরি
করে' ক, প-র-সা। ৪। 'সরবল্প' ক, থ, ছ।
৫। 'কুল' ক, চ, প-র-সা। ৬। 'কুল' ক, চ,
প-র-সা। १। 'ভাহি' ঘ, চ। ৮। 'বোল পরি'
থ; 'বোল পর' প-র-সা।

ততো হোরি-সম্ভোগস্থ রসোদগারঃ। ভত্ত শ্রীগোরচন্দ্রঃ।

বিভাব (১

(भोत्र-वत्रन

वित्रन-कित्रन

বকুণ বসন তার।

রাভা উত্তপল

নর্ম-যুগ**ল**

(काम-भाता वरि चात । (तथ (तथ मक्षीश-ताकर ।

ভাবে বিভোগ

न्यां भव भव

মধুর ভকত নাব ।ধা।

ক্ষরে আবেশে পুরব-বিগাসে

মধুর রঙ্গনী-কথা।

শমিরা-করণ ঐছন বচন°

হরল মনের বেথা।

শুনি হরবিত সকল ভক্ত

প্রেম্মের সাগরে ভালে।

লেণ্ড সব সোভরি কান্দরে গুমরি

দীন গোবর্জন দাসেণ্। এ০।১৪৫৪।

পাঠান্তর

>। देशं श-त्र-ना शृथित २००१ त्रश्याक शव। २। 'विकाम' क, थ, ठ, श-त्र-ना। ७। 'वत्रश' य। ७। 'त्ना' क, थ, 'त्न' श-त्र-ना। ८। 'त्नांथिक कांत्र' श-त्र-ना।

छवा जान ।>

ঋতু-পতি-রয়নিং বিশাসিনি কামিনি नानम हुन हुन जावि। কাঞ্চন-ব্রণ-হরণ তমু অরুণিত मधुत-मधुत युद्ध काचि ॥ সৰ সহচরিগণ আওল তৈখন धक कम कत्रत्व शृहाति। कर शनि देकहरन गित्रिवद-धद्र म्हा कंगि (बननि भिष्ठकाति ॥ পদ্ধা সহচরি देक्ड्रान वाँठनि॰ বাঁচলি॰ ভূমুল সংগ্রাম। গুহ-পত্তি-সেবদ कारक त्रक्तुं ७व যাই বা পেখলু হাম 🕼 ত্তৰি তৰ বসৰভি विक्रिक खत्रन मि বহ লোই কোতুৰ-ভাব। লো ক্লাবুড रेर॰ भागवंत वाल १००१० ४८८१

পাঠাকর

') । ইহা প-র-সা পুথির ২০০৮ সংখ্যক পছ।
২। 'রজনি' ক, খ, চ, প-রসা। ৩। 'হরণ বরণ'
ক, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'গিরিবর দরশ্বে' ক।
৫। 'বাচলি' প-র-সা। ৬। 'রাচলি' ক, 'বাচলি'
প-র-সা। ৭। 'তমূল' খ, চ। ৮। 'হরবে'
প-র-সা। ৯। 'এও' প-র-সা।

টীকা

৯—>•। "পলা" ইন্ডাদি। (চন্দ্ৰাৰণীর)
স্থী পলাকে কি প্রকারে বঞ্চনা করিরাছিস্,—
(চন্দ্রাবদীর) সহচরীদিপের সহিত তুর্ল কলহ
এড়াইরাছিস্। (পূর্বাকলি-ছিত্ত 'কহ ধনি কৈছনে'
বাক্যের সহিত অবর। প্রীরাধার সহচরী চন্দ্রাবদীর
স্থীদিপের সহিত তুস্ল কলহ এড়াইরা প্রীকৃষ্ণকে
কিরপে হতপত করিরাছিলেন,—"বিদ্যাধাধন" নাটক
অবলঘনে ১৪৫৭ সংখ্যক পালের ব্রণিত সেই ঘটনা
'পলা সহচরী' ইত্যাদি বাক্যে ইলিত করা হইরাছে।)

निवान 13

ভন ভন স্থি

ভাজুক রভস্থ-কেলি।

পিরার সহিছে থেলিতে থেলিতে

ভৈ গেলুঁ একই নেলি।

ভাবির লইরা ফ্রানে কেওল

করে কচালিরে জাঁথি।

থেনই সময়ে ব্যানণ চুম্বরে

ভারে কের্ছ নাহিণ কেমি।

পিচকারি বেন ব্রিমরে ব্ন

হেন বেলে পিরা নিরড়ে আসিরা হাসিরা কয়ল কোরণ। এ উদ্ব-সীতিদ পিরতি-ভারতি

বন্ধুয়া জানয়ে ভোরু ॥৩২॥১৪৫৬॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০০৯ সংখ্যক পদ।
২। 'রহদ' প-র-সা। ৩। 'রেগ' ক, খ, খ, চ।
৪। 'বরানে' প-র-সা। ৫। 'নেহে' প-র-সা।
৬। 'বেন' প-র-সা। ৭। 'কোরে' প-র-সা।
৮। 'চিতে' প-র-সা। ৯। 'ভোরে' প-র-সা।

थाननी ।>

শুন খালুক কোতুক-কাল। মীললং যব হাম নাগর-রাজ। हिल्लाविन निक जरहित स्मिन । ব্যাপ্তল কামু সঞ্জে করইতে কেলি। ভৈখনে ছব গতে হেবপু হান। বুৰহি যুধ কয়ল এক ঠাম। ख्यांत्रिक जानि मीनन (भात्र। বছভর কাশু উড়ারল সোর। **কাণ্ড-রজে স**কল করলুঁ° অধিয়ার°। मात्रि भूक्रव कारे नथरे ना भात । ঐছনে কামুক সাঝহি খেরি। আনসু । নিধুবনে সো নাহি হেরি। खादी वाहे नवह दाहे अक श्रीम। शिन्ना मरक रथनि शूतात्रन्ँ° काम ॥ সো সৰ কি কহৰ পূছ' সধি-পাল। গোৰ্মান কৰ পূৱল আল 1001/8691

পাঠাত্তর

)। देश क्षेत्रका श्रीवर २०३० गरवाक वर। १६३ अम्बिताल' के, क्षेत्रका। ७। 'द्राव' के, १९१६ में १९७० है। 'क्षाका' क्षेत्रका। ८। 'व्यक्तिवादी'

ধ। ৬। 'পারি'ধ। ৭। 'আনল'ক; 'আরসূ প-র-সা। ৮। 'হই' ক। ৯। 'পুরাওল' ঘ। ১০। 'কহ'ক।

निष्का ।>

আবিরে অরুণ সব বৃন্দাবন

উড়িয়া গগন ছায়।

বজুরা আমার হিরার মাঝারে

কেহু না দেখিতে পায়।

চপল নর্ম পিচকারি যেন

নিরখে॰ নরন মোর।

নব অমুরাগ- ফাগুণ ভরল

ভমুমন করি কোর।

শুধুই শামল অল-পরিমল

চন্দন চুয়াক ভাতি।

মোর নাগা জমু ভ্রমরী উম্ভি

তত্থি পড়ল মাতি।

नश्रत नश्रत वश्रत वश्रत

क्षपदा क्षपदा प्रामि ।

তুহুঁ কলেবর অফুণ অখর

वाँ निया क्यन क्लि।

রসিক নাগর নসের সাগর

কয়ল ঐছন কাল।

এ উদ্ধৰ ভণ চতুৰ ছ কৰ

রসবতী রস-রাজ । ৩৪।১৪৫৮।

পাঠান্তৰ

)। हेरा श-त-ना श्वित २०३३ नरपाक शव। १। 'दकर' क, श-त-ना। ७। 'वित्रवि' श-त-ना। ८। 'कोधता' थ। ८। 'वत्रव सम्बर' श-त-ना।

ग्रेका

८—৮। "5गग" रेखानि। (बेह्नस्कत्र) इक्न नदन राम निक्रकांदी वर्षाद केंद्रा इक्न निक् ভারীর স্থার প্রেম্বরস বর্ষণ ভ্রিভেছে, এরপ আবার
নমন সৃষ্টি ভ্রিল ; (এবং) নবীন অন্থ্রাপ-রাপ
ভাওতে (উভরের) দেহ ও মনকে একজ করিরা
(সর্বাল) পূর্ণ করিল। তুলনা কর্মন,—
"নিরপত বরন নরন-পিচকারিত
প্রেম-গুলাব মনহি মন লাগ।
হহঁ অল-পরিমল চুয়া চক্ষন কাওরক্ষ ভহিঁ নব অন্থরাগ॥"

-- छेबरबान ; श-क-छ, ১৪७१ शह।

यहिनी ।) কি কহব সো রসং-রজ। ৰাসু খেলই মরু সল। ত্বল স্থা করি বাম। সমুখে দাঁভায়লু হাম। ললিভা ভাহিনে রন্ত্* মোর। হেরি কামু ভেল ভোর[়] 🛊 করহি খসল পিচকারি। এতে পড়ল তমু চারি। সচকিত হোইণ হাম ধাই। কোরে অগোরলু তাই। बन्नत्व बन्नत्व वव (मन । ইবত খাস ভব ভেল্। करत कति मोक्रिय मुच्छ। (देवहेट विषव्दा वृक्ष । ষ্ণাকে চেডন বৰ ছোই। क्रीकिएन एवज्रेट लारे। क्रहे बाहे काहै। (भन। रेर प्रथ विदि कांद्र त्यम । शंग निक शतिहत्र-वारी। क्ष्य करमूँ पति भानि । क्षे मूच रहतरे त्यात । श्व वर्ष कार्त्व जारतार्थ

স্থিপণ সচ্চিত থারি।
বন্ধনে দেয়ল তব বারি।
বৈঠল কুঞ্জবিঁ বাই।
তবিঁ সব কহলুঁ বুঝাই।
তথ্য-বিচিত্র-বিলাস।
কহ পোবর্জন দাস ॥০৫॥১৪৫৯॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০১২ সংখ্যক পদ।
২। 'সব' ক, চ, প-রসা। ৩। 'কছ' খ। ৪।
'বিভার' ক, খ, চ, প-র-সা। ৫। 'হই' क।
७। 'করি মানিরে' ছলে 'কর মানই' প-র-সা।
१। 'সুখ' ক, চ, প-র-সা। ৮। 'বুক' ক, চ,
প-র-সা। ৯। 'কহল' ক, খ, চ, প-র-সা।

অথ অভিসারামুরাগ। দৃত্যক্তি।

क्षे । १

আজু কোই কুলবতি নাহি বাহিনাব।
বমুনা সিনানে কোই নাহি যাব।
বিপতি পড়লং আজু যুবতি-সমাজ।
সখাগণ সজে খেলই যুব-নাজং।
পছহি পছং খেনল চৌ ওরং।
সব অ্জ-বাজক তাহে আলোন।
বটু সূবলং ছহুঁ ভেল এক ঠান।
বুধহি যুখ করল নিরমান।
ভারি শিচকারি লাই সভে হাত।
যন বর্ষিণ জমু পড়ভহিঁং মাধ ।
বাবিরে না হেরিলেং লীপ বিজিমং।
রচ্গে বসন বহি বাওত তীগৃং।
কহু গোবর্জন রহু গুছু মাহ।
ক্রোক্তিন রহু গুছু মাহ।

100121001

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০১০ সংখ্যক পদ।
২। 'পছব' খ। ৩। 'রজ-রাজ' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৪। 'পছ বিপছ' ক, খ, চ। ৫।
'চছুর' ক। ৬। 'রুবল' ক, খ, চ, প-র-সা। ৭।
'পছু ভহি' প-র-সা। ৮। 'হেরই' প-র-সা।
৯। 'দির বিদির্গ ক, চ, প-র-সা। ১০। 'ভিগ'
ক, চ; 'ভিক' প-র-সা। ১১। 'জানি' ক,
প-র-সাঃ।

काटमान ।>

ষন সুরলী-ধবনি ডক্ম-শবদ শুনি
উমড়ই ক্ষম বিশাল।
হো হো হোরি স্বনে তহি গরজন
উনমত যত ব্রজ-বাল॥
মাঝাহি মনমধ-রাজ।
নবমন জ্মণ- বরণ তমু হেরইডে
'তেজই কুলবতি লাজ।ধ্রা।
চুৱা চন্দন মৃগ-মদ কুকুম

পিচকারি ভরি সভে॰ লেই।

সব জন কোপেও কোপিত হইণ ছহঁ ছহঁ

নয়ন বয়নদ পর দেই॥

ইহ দিনে কৈছে রহিতে কহ বর মাহাণ

সো স্থাে হাই নৈরাশ।

বাই ভহিঁ হেরব

সজে গোবার্কন দাস ॥৩৭।১৪৬১॥

পাঠান্তর

े १ देशं भन्य-जा भूषिय २०२८ म्हण्य भए। १६ विश्व कर्षा भन्य-जा। ०। (द्वित कर्षा विश्व विश्

नगढ ।

ব্রজকে চেঠনাং খেলত হোরি।
সক্ষমি গোকুল-বাল বিজোরি।
বাটমি বাটমি রহই আগোরি।
আবির গোলাব রচই বাককোরিণ।
কেশর-কুত্ম গোলালকিং রজ।
ভারি পিচকারিছাঁ ভীগতং অজ।
ভামত্দার মনমোহন রায়।
সহচর সক্ষমি কাণ্ড খেলায়।
তান্ত্র সক্ষমি কাণ্ড খেলায়।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৫ সংখ্যক পছ।
২। 'চঠোনা' খ; 'চেটোনা' চ। ৩। 'ঋদাক'
ক; 'পোলাপ' প-র-সা। ৪। 'রকা ঝোরি' ছ।
৫। 'কুছ্ম গোলালকি' ছলে 'কুছ্ম গোলালকি'
ক, খ; 'কুছ্ম গোলাবিক' প-র-সা; 'কেশর' ৩
'কুছ্ম' একই পদার্থের নামান্তর; হুভরাং 'কেশর
কুষ্ম' ইভ্যাদি পাঠই স্মীচীন। ৬। 'ভিগভ' ভ,
চ, প-র-সা।

ही का

 ৫। "কেশর" ইত্যাদি। কেশর-কুথ্য অর্থাৎ কুলুর ও গুণাগ-নামক রঞ্জন-য়বোর রং অর্থা কেশর (কুলুম), কুন্ম অর্থাৎ কুলুগ্ত-পূলা ও গুণালের রং।

चथ ट्रांति श्रकातास्त्रः यथा।

नगण ।ऽ

নীলাচলে কনকাচলং গোরা।
গোৰিন্দ-ফাগু-রজে ভেল ভোরা ।
ক্বে-কুমারি নারিগণ সজেও।
পূলক-কলম্ব-করম্বিত অঙ্গেও।
কাগুরা খেলত গোর-তন্ম।
গ্রেমক মুধা-নিম্ম মুবতি অন্ম ৪৪৪।

কাণ্ড-অরুণ তমু অরুণহি চীর।
অরুণ নয়নে বহে অরুণহি নীর ॥
কণ্ঠহি লোলত অরুণিড॰ মাল।
অরুণ ভকত সবং গাওরে রুগাল॥
কভ কভ ভাব বিধারল অকুণ।
নয়ন চুলাওত প্রেম-তর্ক্ত ॥
হেরি গদাধর লক্ত লক্ত হাস।
সো নাহি সমুম্বল গোবিন্দ্রদাস ॥৩৯॥১৪৬৩॥

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০১৬ ও প-র পুথির ৩০।১ সংখ্যক পদ। ২। 'কলক কাঁচন'থ। ৩। 'সদ'ক, থ, চ। ৪। 'অদ'ক, খ, 'চ। ৫। 'অফুণহি'প-র। ৬। 'স্ণ'প-র। ৭। 'অদ্দে' প-র-সা, প-র। ৮। 'তর্দ্ধে' প-র-সা, প-র।

পাঠান্তর

रगढ ।>

খেলত ফাগু গোরা বিজ্ঞ-রাজ।
গদাধর নরহরি দোঁহার সমাজ।
নিতাই অবৈত সহ খেলইং রসাল।
খেনে গালি খেনে কেলি প্রেমে মাতোরালও।
সার্বভোম সজেও খেলে রায় রামানক।
শ্রীবাস স্বরূপ সহ মুরারি মুকুক্দ।
দোঁহে দোঁহেও খেলে ফাগু করি হরি-ধ্বনি।
গদাধর সহ খেলে গোরা বিজ্ঞমণি।
কৈই নাচে কেই গার করতালি দিয়া।
দীন কৃষ্ণদালে কহে জানক্ষে ভাসিরা।

পাঠান্তর

. 18 - 13 8 : 81

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৭ সংখ্যক পদ। ২। 'থেলাই' খ। ৩। 'রাভরার' প-র-সা। ৪। 'সহ' খ, প-র-সা। ৫। 'কোহা' খ।

ज्या जान। >

मध्विभूतछ वमरछ।

খেলঙি গোকুল- যুবভিভিক্লজ্ল-

পুষ্প-স্থান্ধ-দিগন্তে ॥ এ॥

প্রেম-করম্বিত-

রাধা-চুন্মিড-

মূখ-বিধুরুৎসবশালী **६**

ধুত-চন্দ্ৰাবলি-

দীরু-করাস্থূলি-

রিহ নব-চম্পক-মালী।

নব-শশি-রেখা-

লিখিড-বিশাখা-

তমুরধ ললিতা-সন্ধী।

শ্রামলয়াঞ্চিত্র-

বাহুক্দঞ্চিত-

পত্মা-বিভ্রম-রক্ষী ।

ভন্তা-লম্বিত-

শৈব্যাদীরিত-

রক্ত -রজোভরধারী।

পশ্য সনাতন-

মূর্ত্তিরয়ং খন-

वृत्मावन-क्रिकात्री ॥8>॥>8७৫॥

পাঠান্তর

>। ইং। প-র-সাপুথির ২০১৮ ৩ প-র পুথির ৩০।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'খ্যামলয়াপ্রিড'ক, খ। ৩। 'বক্তু' প-র-সা।

ग्रेका

১—১৫। "মধুরিপু"রিত্যাদি। অন্ত বসত্তে
মধুরিপু: প্রিকৃষ্ণঃ পোর্দ-ব্রতিভিঃ বেণতি ক্রীড়তি।
ভীচুশে বসতে ?—উজ্জলীঃ নির্মাণঃ পূলারগরিদিগলাঃ কুক্স-বাসিত-বিগল্ডরালাঃ বিন্দি তথাভূতে।
ভীচুশঃ প্রিকৃষ্ণঃ ?—বেশ-কর্মিতা অনুরাগ-বৃদ্ধা
বা প্রীরাধা তরা চুহিতো বুধচল্লো বল্ল ভথাভূতঃ
তেল উৎসবলালী আনন্দোৎসববান্। গুলাং চল্লাদ্ বল্লাদ্বাক্ষরালুলিঃ বেন তথাভূতঃ। তথা নক্ষ্
চল্লাক্ষরালুলিঃ বেন তথাভূতঃ। তথা নক্ষ
চল্লাক্ষরাল্লিঃ বিনাধারাভিল্লাং বাজাক্ষেত্র।
পুরঃ কীচুলঃ ?—সবশ্বিরেশ্যিতঃ অর্ক্রভ্রাক্ষিক্ষ
র প্রিক্রিট্রা প্রিভা বিশাবারাভন্তবির অর্ক্রভ্রাক্ষিক্র। ভবা লিভারাঃ সলো বিভতে বভেতি তথাভূতঃ। ভাৰসমা ভরারা শ্রীরাধা-স্থ্যা অঞ্চিতবার্ত্ত্র প্রায়াভ্যাম-চন্দ্রাবলি-স্থ্যা উদ্ভিতবিশ্রমরণী উল্লিজ-বিলাসকোত্নী। পুন: কীলুনঃ পূ
ভ্রমরা স্থা। আগবিত্তরা মুক্তরা শৈব্যরা উদীরিত
উচ্চালিভ উৎক্ষিপ্তা বে৷ লোহিত-চূর্ব-সমূহতঃ
বার্ত্তিত্ব শীলং বভেতি তথাভূতঃ। অরং বনকুম্মাবন-ক্ষতিকারী বলবদ্দাবনাম্বাদী স্নাতন-মূর্তিঃ
স্নাতন-বেহঃ পক্ষে স্নাতনগুরামকঃ অভা অতি
নিভাঃ বাসক্রপ ইতি স্নাতনা। অশাদিখাৎ অচ্।
ভাত্তী মূর্তিঃ বডেতি তথাভূতঃ প্রভাবলোকর।

অমুবাদ

১—১৫। পূপা-ছারভি নির্মাণ আকাশবিশিষ্ট বসত্তে আৰু মধুরিপু শ্রীকৃষ্ণ গোকুল-মুবতিগণের সহিত ক্রীড়া করিজেছেল ॥ক্রা অহ্বরাগর্কা শ্রীরাধা ইবাঁর চক্র-বন্দল চুখিত করার, ইনি আনক্ষোৎসবমুক্ত হইরাছেল; ইনি চক্রাবলীর হ্মন্দর-করাস্থান ও নবচম্পাকের মাল্য ধারণ করিরাছেল। ইনি
(নথাছ-রূপ) নব-চন্দ্র-কলা ঘারা বিশাধার কলেবর
আছিত করিরাছেল ও ললিতার সঙ্গে বিরাজিত
রহিরাছেল; ইনি শ্রামলা কর্তৃক ধৃত-বাহ ও প্যার
বিলাসোক্রেক দর্শনে ক্রোডুক্যুক্ত। দেও! ইনি
ভ্রা স্থী সহকারে লৈব্যা কর্তৃক উৎক্ষিপ্ত লোহিতক্রু-চুর্ম-ধারী বুক্ষাবনাহ্রালী নিত্য (পক্ষে স্নাতন
ক্রোড্রানীর শর্প) বেহ-ব্রিনিষ্ট।

क्यां मान ।>

विक-बाक्यानिक-एडाय-उत्तवस् । बाट्य कवा द्रन्यांतन-उत्तवस् । बाद्यादिन- केन्न-निक्षित्र-नाजा । बाद्यादिन-केन्न-नाजा । बाद्यादिन-केन्निक-साम्बद्ध-नायम् ।

পাঠান্তব

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৯ ও প-ম পুথির ৩০।১০ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ'ছলে 'আসাবরি' প-র। ২। প-র পুথিতে 'রাধে' ইভ্যাদি চরণ বারা পদটি আরম্ভ করা হইরাছে।

টাকা

১----। "ৰতু-রাকার্পিতে"ভ্যাদি। ছে রাধে। वृत्यावनक तकः विनामः एक वनोकृतः व्यवताकः পখ্যেতার্থঃ। কীদুশং বিলাসম্ १--- ঋতু-রাজেন বসজেন व्यर्थिकारणवामः धारमान-नद्द्या विचन् छ्या-ভূতম্। তমেব বিলাস-প্রকারং দর্শরতি মলরামিলে-णाविष्ठिः। यनश्चनित्नम् **अङ्ग**नाशान्यस्य निक्रिष्ठ-লাকা উপদিষ্ট-নৃত্য-কলা উচ্ছনহান্তা খেতপুলজনের হাসকারিণী লভাবলিঃ নটভি নৃত্যভি। ইহাল ঃসা-বনে পিকতিড়িঃ কোকিলকুলং মুদদং বাদয়ভি কল-नरिवर्गवन-ध्वनिमञ्करताठीठि छातः। अञ्चत्रवदः अबुबळ्टान द्यामांकडामहर उक्कनर ভঃর্ত্তনাদিকমিতি শেষঃ। অন্তত-শীলা বিচ্ছিত্র-চরিত্রা ভূক-ঘটা ভ্রমরপঞ্জিঃ গায়তি ভরুমশলৈঃ गीडः करतांछ। स्वतः भव वःभीव। সাণ-সনাতনী চিরস্বারিনী দীলা কেলিইডাঃ। পকে সমাত্রেন পদকর্ত্তা বর্ণিতা লীলা বজাঃ।

चरू वान

১—৮। তে শ্রীরাধে। বসত নৃপতি কর্তৃক
জনিতানল বুলাবনের বিলাল অবলোকন কয়।
বলরানিল ভয় কর্তৃক নিকিত-নৃত্যালীলা (পুলক্ষেকে)
উজ্জন-হাজ-কারিলী লভাবলি মৃত্যু করিভেছে।
কোকিল-কুল (কল-নানজ্বলে) মৃথপ বাজাইভেছে
এবং (অছ্ব-জ্বলে) রোযাঞ্চিত-বেছ ভরুত্বল (নৃত্যু)
ঘর্লন করিভেছে। অভ্ত-চরিত্র ক্রমর-পংক্তি নুমাভ্রম-(প্রক্রে-স্নাভন-বর্ণিড)-শ্রীরা-বিনিষ্ট আরার
ক্রমীর করি গাম ক্রিকেছে।

ফাগু-জরুণ তমু অরুণহি চীর।
অরুণ নরনে বহে অরুণহি নীর।
কঠিছি লোলত অরুণিত শাল।
অরুণ ভকত সবং গাওয়ে রুগাল।
কভ কভ ভাব বিধারল অকুণ।
নয়ন ঢুলাওত প্রেম-তরক্ষ।
হেরি গদাধর লক্ত লক্ত হাস।
সো নাহি সমুঝল গোবিন্দদাস।৩৯॥১৪৬৩॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০১৬ ও প-র পৃথির ৩০।১ সংখ্যক পদ। ২। 'কনক কাঁচন' ও। ৩। 'সল' ক, ও, চ। ৪। 'অক' ক, ও, 'চ। ৫। 'অক্লণহি'প-র। ৬। 'সণ' প-র। ৭। 'অকে' প্-র-সা, প-র। ৮। 'ভরকে' প-র-সা, প-র।

बमछ ।>

থেলত ফাগু গোরা বিজ-রাজ।
গদাধর নরহরি দোঁহার সমাজ॥
নিতাই অবৈত সহ থেলই রসাল।
থেনে গালি খেনে কেলি প্রেমে মাতোয়াল ॥
সার্ব্বভৌম সজে থেলে রায় রামানক।
শ্রীবাস স্বরূপ সহ মুরারি মুকুন্দ॥
দোঁহে দোঁহে খেলে ফাগু করি হরি-ধ্বনি।
গদাধর সহ খেলে গোরা বিজমণি॥
কেহ নাচে কেই গায় করতালি দিয়া।
দীন কুঞ্চদাসে কহে জানন্দে ভাসিয়া॥

পাঠান্তর

180128 48H

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৭ সংখ্যক পদ। ২। 'থেলাই' থ। ৩। 'মাতরার' প-র-সা। ৪। 'সহ' থ, প-র-সা। ৫। 'দোহা' থ। — তথা রাগ।১

मधुतिश्रुत्रस्य वमरस्य।

খেলভি গোকুল- যুবভিভিক্লজ্ল-

পুষ্প-স্গন্ধি-দিগন্তে। ধ্রা

প্রেম-করম্বিত-

রাধা-চুন্থিত-

गूथ-विश्वक्रप्रमवणांनी।

ধুত-চন্দ্রাবলি-

চাক্ল-করাঙ্গুলি-

विश् नव-ठण्शक-भानी ।

নব-শশি-রেখা-

লিখিত-বিশাখা-

তমুরথ ললিতা-সন্ধী।

শ্রামলয়াঞ্চিত্র-

বাছরুদঞ্চিত-

পত্মা-বিভ্রম-রজী ।

ভদ্ৰা-লম্বিত-

শৈব্যাদীরিত-

রক্ত -রজোভরধারী।

পত্য সনাতন-

মূর্ত্তিরয়ং ঘন-

वृन्मावन-क्रिकाती ॥४८॥५८॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৮ ও প-র পুথির ৩০।৪ সংখ্যক পদ। ২। 'শ্রামলরান্সিড' ক, ধ্। ৩। বিজ্ঞু' প-র-সা।

विका

১—১৫। "মধুরিপু"বিত্যাদি। অভ বসত্তে
মধুরিপু: শ্রীকৃষ্ণ: পোকুল-বুবৃতিভি: ধেগতি জীড়তি।
কীলুশে বসত্তে ?—উজ্জনী: নির্মাণ: পূলাকুপরিদিগল্ডা: কুম্ম-বাসিত-দিগল্ডরালা: যদিন্ তথাড়তে।
কীলুশ: শ্রীকৃষ্ণ: ?—প্রেম-কর্মিতা অন্থরাস-মুকা
বা শ্রীরাধা তরা চুমিতো মুধ্চলো বত অধাড়তঃ
তেন উৎসবশালী আনন্দোৎসববান্। মুক্ত চলাবল্যাশ্চাককরাজুলিঃ বেন তথাজুতঃ। তথা নক্দলাশ্চাককরাজুলিঃ শুন তথাজুতঃ।
বাল্য-ধারণেন শ্রীরাধারাম্বরাগাতিশরঃ বাজাত্তা।
প্র: কীলুনঃ ?—সম্পশিরেথাতিঃ অর্চ্ছান্তির্মান্তির্দিণিতা অভিতা বিশাধারাভার্বেন ক্রাজ্তা।

ভবা ললিভারা: সলো বিশ্বতে বভেতি তবাভূতঃ। ভাষণরা ভরায়া প্রীয়াবা-সব্যা অঞ্চতবার্থ্ণ ভূতঃ প্রায়াভয়াম-চন্তাবলি-সব্যা উদ্ধিতবিশ্বরম্বলী উল্লিক্ত-বিলাসকোত্কী। প্ন: বীদৃশ: পূ
—ভদ্রমা সব্যা আল্বিভয়া মুক্তয়া শৈবায়া উদীয়িত
উল্লালিভ উৎক্ষিধ্যো বো লোহিভ-চূর্ব-সমূহতং
বারয়িভূং শীলং বভেতি ওপাভূতঃ। অয়ং বনবৃন্ধাবন-ক্রিকারী বলবব্দাবনাম্বরাগী সনাতন-মূর্বিঃ
সনাতন-কেহঃ পকে সনাতন স্বয়ামকঃ অভা অতি
নিভাঃ বাসরূপ ইতি সনাতনা। অর্শাদিশাৎ অচ্।
ভাত্তী মূর্বিঃ বভেতি তথাভূতঃ পভাবলোকর।

অমুবাদ

১—১৫। পূপা-মুরতি নির্মাণ আকাশবিশিষ্ঠ বদতে আবা মধ্রিপু শ্রীকৃষ্ণ গোকুল-ব্বতিগণের সহিত ক্রীড়া করিডেছেন ॥এ॥ অম্বরগর্কা শ্রীরাধা ইহাঁর চন্দ্র-বদন চুহিত করার, ইনি আনক্ষোৎসববুক্ত হইরাছেন; ইনি চন্দ্রাবাদীর স্থান্তন-করাজুলি
ও নবচম্পাকের মাল্য ধারণ করিয়াছেন। ইনি
(নথাছ-রূপ) নব-চন্দ্র-কলা ঘারা বিশাধার কলেবর
আন্তিত করিয়াছেন ও ললিতার সঙ্গে বিয়াজিত
রহিরাছেন; ইনি শ্রামলা কর্ত্ক শ্বত-বাহ ও প্রারাক্
বিলালোক্ষেক দর্শনে কৌতুক্যুক্ত। বেথ! ইনি
ভ্রা স্থী সহকারে শৈব্যা কর্ত্ক উৎক্ষিপ্ত গোহিতকৃষ্ক-চুর্ল-ধারী বুন্ধাবনাম্বরালী নিত্য (পক্ষে সনাতন
গোন্ধানীর শরণ) বেহ-ব্রিশিষ্ট।

WIN 13

वक्-शंकार्निक-रणस-जन्नम् । शर्षे क्व द्रनारन-त्रक्रम् । संस्कृतिस-कन्न-निक्क-नाणा । त्रहेति अवीदित्रक्रमन-राणा । গায়তি ভৃত্ত-ঘটাভুত-শীলা। মম বংশীৰ সনাতন লীলা ॥৪২॥১৪৬১॥

পাঠান্তর

- >। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৯ ও প-র পুথির ৩০।১০ সংখ্যক পদ। 'তথা রাগ' ছলে 'আসাবরি' প-র। ২। প-র পুথিতে 'রাধে' ইত্যাদি চরণ বারা পদটি আরম্ভ করা হইরাছে।

টাকা

১—৮। "ৰাজু-রাজার্পিতে"ত্যাদি। হে রাবে। वुन्नावनच ब्रह्मः विनामः ভक जनोकुक व्यवत्नाकः পখেতাৰ্থঃ ৷ কীলুশং বিলাসম্ 🏞 ৰাজু-রাজেন বসন্তেন অপিতাভোষতরকা: প্রমোদ-লহর্য্যো বিশ্বন ভ্রথা-ভূতম। তমেব বিলাস-প্রকারং দর্শরভি মলয়ানিলে-ত্যাদিভি:। যলমানিলেন গুরুণাধ্যাপকেন শিক্ষিত-नाजा जनमिष्ट-न्डा-क्ना উच्चनहाजा (चंड्यूमक्त्न्य হাতকারিণী লভাবলিঃ নটতি নৃত্যতি। ইহাত বুন্দা-বনে পিকততিঃ কোকিলকুলং মুদদং বাদয়ভি কল-नरिवर्गवय-ध्वनिययकरताठीि छातः। अङ्ग्रववर অভুরচ্চলেন রোমাঞ্চিদেহং ভক্রুলং পশ্রতি ভঃর্ত্তনাদিকমিভি শেষঃ। অন্তত-শীলা বিচিত্র-চরিত্রা ভূল-ঘটা অমরপঙ্জি: গারতি ওঞ্জনশলৈ: गीजः करताजि। क्व ? यम वश्मीव। कोषुनी সা?-সনাতনী চিরস্থারিনী শীলা কেলিইভাঃ। পক্ষে স্নাতনেন পদকর্ত্ত। বর্ণিতা লীলা যক্তাঃ।

অমুবাদ

১—৮। বে প্রীরাধে। বসন্ত নৃপতি কর্তৃক
ভানিতানন্দ বুলাবনের বিলাস অবলোকন কর।
নলরানিল শুকু কর্তৃক শিকিত-নৃত্যলীলা (পুলাছেলে)
উজ্জল-হাক্ত-কারিনী লভাবলি নৃত্যু করিতেছে।
কোকিল-কুল (কল-নাৰছেলে) মুদ্ধ বাধাইভেছে
এবং (অছুর-ছেলে) রোমাঞ্চিত-বেহু ভরুত্বল (মৃত্যু)
হর্পন করিভেছে। অছুত-চুহ্নিত প্রমন্ত্র-প্রতি স্বাধারী
ভারতি নাম্প্রিক্তি

তথা হাপ ৷১

নটবর-ভঙ্গী কাঞ্জ-রজী নাগর অভিনব নাগরি সঙ্গ। ঋতুং-পত্তি-গীত• চীত° উমভায়ল **ट्टित वनन त्रमावन-त्रण**ः ফাগুয়া খেলত নওল,-কিশোর। बादा-ब्रमन ब्रमनि-मन-हांब ॥ ध्रम স্থন্দরিব্রন্দ- 🗸 করে কর মণ্ডিভ মণ্ডলি মণ্ডলি মাঝাই মাঝ। নাচত নারিগণ্ ঘন পরিরস্তণ **চুম্বন-লুবধল** নটবর>-রাজ ॥ কামু-পরশ্-রসে অবশ্ > রম্পিগণ অলে অকে>২ মিলি>০ কাঁপি রহু। श्रुतम नवस् मानादश मन ७ वर्भ **মোছন > ९ (गांविन्म मांग- शह्य ॥ ४०॥** ১५७ १॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০২০ ও প-র পুথির ৩০।৩ সংখ্যক পদ। ২। 'ঝড়ু ঝড়ু' ক। ৩। 'গীডি' ক, খ, घ, চ, প-র-সা। ৪। 'চিড' ক, প-র-সা। ৫। 'হেরি' ইডাাদি স্থলে 'ফিরি রুক্লাবন মদনতরকে' প-র। ৬। 'নলে' প-র। ৭। 'মগুলি মগুলে' খ, 'বগুল মগুলি' প-র। ৮। 'নারবি' প-র। ১। 'গণ' শ-র। ১০। 'নাগব' প-র। ১১। 'জল' প-র। ১০। 'বেলি' প-র। ১৪। 'মনোভব' ক; 'মনম্বণ' ঘ। ১৫। 'গাওড' প-র।

পूनण्ड मिनाखरत ।

ख्यां त्रांत्र ।>

ঋড়-পতি রাধামাধ্য সঙ্গ। বিবিধ বিলাস হোরি-রস-রঙ্গিঞ্জ আরিরে অরুণ হুই অফ ॥এং॥

অকুণিত খ্যাম-রাইক প্রভিবিম্ব লাগি। ভরমহি আন त्रमणि मटन मानिहा মানিনি ভেলি বিরাগী। রসিক স্থনাগর রাইক মানং ছেরি মিনতি করত কর কোরি। পীত বসন গলে সাধই পদতলে রাই রহল মুখ মোড়ি । প্রিয়-সহচরি যভ কভয়ে বুৰায়ভ মুখ সঞ্জে কাছে বিপরীত। . विक रित्रमान কহত কাহে বোধলি প্রেমক ঐছে চরীত 1881>৪৬৮॥

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুথির ২০২১ সংখ্যক পদ।
 বাইক মান' হলে 'বিমুখি' ए; 'রাই মান'
 চ। ৩। 'চরিড' ক, চ, প-র-সা।

তথা রাগ ।>

এ ধনি মানিনি মান নিবারোং।

আবিরে জরুণ শ্রাম- লল-মুকুর পর

নিজ প্রতিবিদ্ধ নেহারোণ।

তুহঁ এক রমণি- শিরোমণি রসবিতি

কৌনং ঐছে জগ মাহ।

তোহারি সমূপে শ্রাম সঞে বিলস্ক

"কৈছন রস-নিরবাহ।

ঐছন সহচরি- বচ্ছ প্রাম্থ বিলস্ক

সরমে ভরমে মুখ কেরি।

ইবভ হালি মনে মানু ক্রেমিন

পুন সব জন খেলিং করমে বিনোদ কেলি
পিচকারি করি নিজ কাডে।
বিজ হরিদাসা আবির বোগায়ত
সকল স্থাগণ সাথে ॥৪৫॥১৪৬১॥
পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ২০২২ সংখ্যক পদ।
২। 'নিবার' ক। ৩। 'নেহার' ক। ৪। 'কোন'
ক, খ, প-র-সা। ৫। 'সরমে ধরমে' ক।
৬। 'মিলি' চ। ৭। 'করি নিঅ' হলে 'করি'
ক, 'করি লেরল' ম। ৮। 'চণ্ডীদান' ক।
চণ্ডীদানের রচিত নিঃসন্দিশ্ধ ব্রন্ধ-বোলি পদ পাওরা
মার নাই এবং খ, ম, চ ও প-র-সা পুথিওলিতে
'চণ্ডীদান' হলে 'হরিদান' পাঠ আচে,—এই উতরবিধ কারণে আমরা এই পদটি ছিল হরিদানের রচিত
মলিরাই অমুমান করি।

दशक्ष 13

কাঞ্চ থেলত বর নাগর-রার।
রাধা রজিণি বছবিধ গার°।
ছালি ছালি ফুন্দরি মনমথ-রজে।
কাঞ্চ লেই ভাররে নাগর-অজে॰।
রলে ধসধস তন্ম আধ আধ হেরি॰।
চুলা চন্দন পুটে বেরি বেরি।
চুলা চন্দন কুচ পরশল খোরি।
চমকি চমকি মুখ রহলিছাঁ গোরি।
আধ্রহি চুল্ল কল্প তব কান্ন ।
ব্যাহিশ্যাল ছুলু ভাগ গান।৪৬৪১৪৭০।
ব্যাহিশ্যাল ছুলু ভাগ গান।৪৬৪১৪৭০।

्री देश केशना वृद्धि २०२० ७ शन श्रीपा तथ प्रशासना । या कावना या ०। (वर-

বিধ গার' ছলে 'কাওরা খেলার' প-র। ৪। 'কাও लहे' हेकामि क्रम 'काक वावित्र (महे शावित्य-অকে'প-র। ৫। 'রসে ধসধস' ইভ্যাদি পংক্তি-ৰয় প-র পুথিতে নাই। ৬া^{ল, 'চন্দন} **অলে' ব**। १। 'लाहरन क्यांव' क. थ : 'लाहरन खांव' व. ह । বোধ হয়, লিপিকর-ভ্রমে কোন পুথিতে 'রোর' শক্ষের 'রো' বর্ণটি 'ৰো' লিখিত হওয়ার, উহাই পরে কোন পণ্ডিতম্বত লিপিকর-কর্তৃক 'জো'-রূপে সংশোধিত (?) হইয়া 'লোচনে জোর' এই অমুত পাঠের স্থাট করিয়াছে। ব**ন্ধত: চকুর সন্নিকটে কাও দিলে** স্ভাবতই চকু মুদ্রিত হয় ; স্থতরাং চকু-মুদ্রণের অব-गरत यूप-कृपन्तर উদ্দেশ্তে রসিকচ্ডামণি खैक्क কর্ত্তক শ্রীরাধার নরন-প্রান্তে কাণ্ড-চূর্ণ নিক্ষিপ্ত হওয়াই স্থানত। 'লোচনে', তাহাতেও আবার 'ৰোৱে' ফাৰ-নিক্ষেপ বৰ্করোচিত কাৰ্য্য; পুক্ৰোন্তৰ ঞীক্ষকে কোনন্ধণেই উহা সম্ভবপর হইতে পারে না। ५। 'मुनन' क, च, च, ठ; '(यानन' अ-व-ना। ১। 'চকোর' क ; 'চকোর' পাঠে ছলোভল ঘটে এবং এ স্থলে 'চকোর' শব্দ প্রয়োগেরও কোন সার্ক-क्छा (मधा यात्र ना। >। 'व्यथत्रहि' हेजाबि গুলে 'অধরহি চুম্বন করু কতে কান' ক, ধ, চ, প-র-সা; 'অধর চুখন তহি করনহি কান' প-র।

७व शंगाणि। अर्थाती।>

রাধা প্যারি সহ খেলত নন্দত্নাল।
অরুণিত মরকত অরুণ^২ হেমযুত
ঐছন মুরতি রসাল।এ॥
অরুণাথর বর শোহে[©] ক্লেবর
অরুণ মোডি মণি-মাল।

ন্টপটি পাগ উপরে শিখি-চক্রক' উচুরি রঞ্জ গোলাল । পিচকা^e রজে পাখাল। অক্লপিত যুবতী-জাল ॥ অরুণিত ভক্নকুল অকণ লতা ফল অরুণ ভ্রমরগণ ভাল। অরুণিত শারী শুক শিখি কোকিল উদ্ধব ভণিত রসাল 1891১৪৭১॥ পাঠান্তর

)। देश भ-त-मा श्रुवित २०२८ मध्याक भेगा ২। 'অক্ৰিড' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'খোডে' দেখ শ্রাম গোরি সখি মেলি। क। ४। 'हिक्किक' भ, भ-त्र-मा। ४। 'भिष्ठ- आविद्रत अक्कम

कांबि' क, थ, श-ब-मा।

ভেওট মারুর।১

वृत्यांवरन धूम পড़ल ब्रक्ष रहाति। নওল কিশোর ফাগু-রঙ্গে রঙ্গিমং রলিণি নওল কিশোরি।এ। সবছ সখিগণ মেলি করে লেই ভরি পিচকারি। স্থন্দর-মূখ ছেরি ছেরি সমুধহি ভাম-পুন পুন দেওত ভারি। রোখি॰ খ্যাম পুন श्वम मधा गरम र्वित स्मात⁸ मूथ भाति। অজে ঘন বরিখত পিচকা॰ রক্ত মোছভ° আঁৰি মূৰ মোরি ॥ সহচর সহচরি মটুকি মটুকি ভরি विविध शक्त क्रम (चांत्रिक । দেয়ত বোগাই রাই শুনি খেলত छवनमात्र मन ट्याति ।शन्त्रअवरा

গঠিবের

>। ইহা প-র-সা পুশির ২০২৫ সংখ্যক পদ। অরুণিত যমুনা- পুলিন কুঞ্জবন ় । 'নওল' ইত্যাদি পংক্তি ছুইটির ছলে ক পুথির পঠি, वर्षा- 'कांश्व त्राक्त त्रक्ति त्राक्ती नश्चन किर्णाती' क्। ७। 'त्रांद्य' क, ह। ४। 'ख्याबी' প-র-সা। ৫। 'পিচক' ক। ৬। 'রছে' চ। ৮। 'मछेकि मडेकि' थः 'भूषेकि भूषेकि' क, ह, श-त्र-मा। । '(बानि' ५, ६, भ-त्र-मा।

> ७वा मात्र ।> পিচকারি খন হোয়ল ভুমুলং খেলি ॥ঞা স্থা সূবল করিয়া সঞ্গ। জয় জয় বলি দেই করতালি হাসি হাসি রস-রঞ্চ 🛚 সধী ললিতা বিশাধা সাথে। হাসি খল খল बिउन् बिउन् বলে পিচকারি হাতে ॥ রস-শেখর রসিকা নারি।

> শ্রম-জল তুত্ বয়ন ভরণ এ উদ্ধৰ বলিহারি ॥৪৯॥১৪৭৩॥ পাঠান্তর

)। देश भ-त-मा भूषित २०१७ मरवाक भए। २। 'कुबून' ह। ७। 'नरक' श-त्र-त्रा। हो 'त्ररक' **१-ब्र-मा** ।

Said 17 শ্রম-জলে চর চর की भगर जुल्लीय वाग्।

जानक करहे ना वात्र। াচামর করে কোই - वीक्न वीक्र কোই বারি লেই ধায় এখা তামুল বোগায়ই চরণ পাধালই (कार्ड माहायर याम। ঐছন চুহুঁ তমু শিভল• করল জমু क्रवनम हल्लाक-माम । আর সহচরিগণে वद्यविश्व (मवरन ध्यम-कन कर्यनिहं पृत । इन् मूथ (रवरे আনন্দ-সারুরে গোৰ্জন হিয়া পুর ॥१०॥১৪৭৪॥

পঠিক্তির

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ২০২৭ সংখ্যক পৰ। ২। 'ভিগল' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'শীডন' ক।

ভত্তাসুরাগাভিসারোৎকণ্ঠা।

ভথা রাগ।>

কি করব এ স্থি মন্দির মাহ।

ইহ মধু-যামিনি সব অজ-কামিনি
বুন্দা-বিশিনহি যাহ।এমঃ
হোরীং-রজ- তরঞ্জিত শ্রামর
বিহরই কালিন্দি-তার।
শোভরি সোভরি মন করত উচাটন
বজনে না হোরত থারণ।

বিহরু প্রক্রমন
ইহ সব বুড়াই ডেহার।

युग-मा ठलान

কুসুমঃ হারগণ

বভনে ঝাঁপি লেছ হাত। ভামুল কপুরযুত লেই চলহ ক্রভ গোবৰ্জন চলু সাধ ॥৫১॥১৪৭৫॥

পঠিবর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০২৮ সংখ্যক পদ। ২। 'হোরি' ক, খ, চ; 'হেরি হেরি' প-র-সা। ৩। 'খির' ক, প-র-সা। ৪। 'কুছ্ব' ক। ৫। 'কপুরবুধ' প-র-সা।

काटमान ।>

শ্বভূ-পতি-বামিনি কালিন্দি-খ্তার।
বিক্সিত ফুলচর কুঞ্জ-কুটার ॥
কোকিল-কুল° পঞ্চম করু গান।
শুপ্ররি চঞ্চরি করু মধু-পান ॥
চান্দনি রক্তনি উজোরল তারুং।
শুমলর পবন বহুই মৃতু বার ॥
ঐছন সময়ে বিহরে মবু নাহ।
কি করব অব হাম মন্দির মাহ ॥
লো স্থাং যবং মবু উপলরে চীতা।
শুতি উতক্তিত না মানরে ভীত ॥
কতরে মনোরধ মন মাহা হোর।
বৈছন রক্তসে মিলব পিরা মোর ॥
শুরিতে চলহ সথি পূরব আশ ॥
সম্পেছিণ চলবং গোবর্জন দাস ॥৫২॥১৪৭৩॥

পাঠান্তর

>। देश भ-त-ना भूषित २०२० नरशाक भण।
२। 'काणिकी' ह, भ-त-ना। ०। 'तभ' भ-त-ना।
ह। 'कात' भ-त-ना। ६। 'त्य' क, ब, ह, भ-त-ना।
६। 'तय' व। १। 'हिक' क, भ-त-ना। ৮। 'तथक'
क, ब, व, ह। ०। 'हम् क्य' व; 'हमक्रि'
भ-त-ना।

कारमान बन्छ ।>

পল্লা স্থি স্হ আওল শূন্লু^২ খেলব নাহক সাধ।

वः **नै** थ है - जिन्न वृद्धि

কাগু-বন্ধ করি হাত।

সঞ্জনি ইছ দারুণ পরমাদ। ঐছন ভাতি রচন ফরি চল স্থি

যাই করিয়ে সব বাদ ॥এ।

ভন্তা খ্যামল- য়া সহং মীলবং

যুথে যুথে এক হোই।

সভে মিলি ফাণ্ড- তিমির করি বেড়ব লখই না পারই কোই ॥

ঐছনে কামু লেই সভে আওব ভুরিতহি নিধুবন পাশ।

গোৰদ্ধন কহ আনন্দে খেলহ'

পদ্মা পাউণ নৈরাশ ॥৫৩॥১৪৭৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০০০ সংখ্যক পদ।
২। 'শুনলু' ক, চ; 'শুনল' প-র-সা। ৩। 'নিগন'
ক, খ, প-র-সা। ৪। 'বচন' ক। ৫। 'সহজই'
প-র-সা। ৬। 'নিগব' ক, খ, প-র-সা। १। 'থেলই'
क। ৮। 'লাউ' চ, প র-সা।

जिका

১—৪। "পলা" ইত্যাদি। শ্রীরাধার সধী দলিতা
বলিতেছেন,—গুনিতে পাইলার, পলা (জাঁহার)
সধার (চল্লাবলীর) সহিত ফাগু-বন্ধ অর্থাৎ পিচন্
কারী হাতে লইরা আসিরাছে; (মনের বাহা এই
বে) লাথ শ্রীক্ষের সহিত (ফল্ক)-জ্রীড়া করিবে;
বোধ হর, (এড ক্ষরে) বংশীবটের নিকটন্থ (বমুনা)প্রলিনে (শ্রীকৃষ্ণের সহিত ভাঁহারিপের) বিদন হইল।
বেনা বিগর্ চল, ব্রৈর্গ বোটনা করিরা বাই,
(বাহাতে) সকল পঞ্জারতে পারি।

৮—১১। "ভজা" ইভ্যাদি। (নামরা আ আ বুধ
সহ বাইরা) ভজা ও ভাষণা (বুণেধারীবরের) সহিত
সন্মিলিত হইব (এবং) বুণে বুণে (মিলিরা) এক
হইরা, সকলে মিলিরা ফাঙর আত্মকার করিবা
(শ্রীকৃষ্ণকে) বেষ্টিত করিব—(বেন) কেইই
(তাঁহাকে) কল্য করিতে না পারে।

১২—১৫। "এছনে" ইত্যাদি। ঐ প্রকারে
প্রীকৃষ্ণকে লইরা সকলে নিধুবনের নিকট লইরা
আসিব; (প্রীরাধার অন্তত্ম সধী-স্থানীর) পোবর্জন
লাস কহিতেছেন—তোমরা (প্রভাবিত প্রশানীতে)
আনন্দে (ফ্লড)-ক্রীড়া কর,—(চন্দ্রাবনীর সধী)
পদ্মা নৈরাক্ত প্রাপ্ত হউক।

Buirt 13

মধুর শ্রীরুন্দাবনে ঋতু-পতি বিহরণে
তরু লভা প্রফুলিত সব।
ফল ফুলে নম্র ডাল পুম্পোভান-শোভা ভাল
কোকিল-শুমর-শিধি-রব॥

হোরি-রকে উনমত নানা বস্ত্র° চমৎকৃত -গার বায় বিলসরে শ্রাম।

রাই নিজ গৃহে থাকি অনুরাগে ওগমণি গমনঃ-ইচ্ছুক সোই ঠাম। স্থী সজে বিনোদিনী কান্তি জিনি সোদামিনী

ভাহে চিত্ৰ অৰুণ বসন। বৈহে চলে পূৰ্ণচক্ৰ সত্তে লৈয়া ভানাৰুন্দ

তৈছে ধনী বার কুঞ্চবন ।
বহুবিধ বল্প কছুবুদ আবির রুঞ্চের্ছ কুরুদ আবির রুঞ্চের্ছ কুরুদ আবির রুঞ্চের্ছ কুরুদ আবির রুঞ্চের্ছ কুরুদ আবির বুঞ্চির্দিত ।

मिनम नागत गरक व्यात्रस्थिमा (यमा बरक मित्रपर त्यायक्त वाग बरहा) हेवान

পাঠাতৰ

े हैं। न-प्र-मा श्रीप १-०० मार्चक के रकारक समझार का स्वाद के প-র-সা। ৩। 'বাইডে' ব । ৫। 'বারে' ক। ৬। 'নৃভাঙ্গীডে' ইভাদি পংক্তিবর ক প্ৰি ও ভদয়-বারী বটভলার মূজিত প্রত্যে পরিত্যক্ত কইরাছে।

বিহুগড়া ৷>

বিহুরে শ্রাম নবিনং কাম
নবিনং বৃদ্দা-বিপিন ধাম
সক্ষে নাবন নাগরিগণ
নব শ্বত্-পতি-রাভিয়া।
নবিনং গান নবিনং ভান
নবিনং নবিন ধরই মান
নোভুন গভি নৃত্যতি অভি

নবিন নবিন ভাতিয়া ।
ইবত সরস মধুর ভাব
সরসে পরশে করু বিদাস
রসবতি ধনি রস-শিরোমণি

সরস রভসে মাডিয়া। সরস কুত্ম সরস প্রথম সরস কালনে ভেলি ভূষণ^{১১} রসে উনমত কাস্কডি^{১২} কত

সরস অমর-পাঁডিয়া ।
মধুর কেলি মধুর মেলি
মধুর মধুর কররে খেলি
মধুর শ্বাডি শাবে মধুর
ভাষর - গোরি-কাঁডিরা।
কিবা সে ছুক্ ক > ব্দন-ইন্দু

फाटर क्षम-क्षत्र विन्तू विन्तू कांतरक मश्रम (शावर्षम्

(द्विया खर्गभ इंजियां १८८१) 8928

: ीशां<mark>जीख</mark>त

१ हेश क्षाना गुवित १००६ मध्यास ग्रह। १ काम विकास स्टार्ट निवित्त सार्व सम्योजन

ष्टि। ১১। 'क्यश' क। ১২। 'बङ्ग्छ' ह, প-র-সা। ১৩। 'बश्रुवी' च। ১৪। 'ब्रुवि' প-র-সা। ১৫। 'ভাষ' क। ১৬। 'বোহক' च। ১৭। 'शंग গোবর্দ্ধন' ক, এ, চ, প-র-সা। ১৮। 'ভরব' ক, ধ।

বস্ত । >

যুথহি যুথ রমণিগণ মাঝ।
বিহরইং নাগরি নাগর-রাজ ॥
বরিখত চন্দন-কুরুম-পঙ্ক ।
নাচত গাওত পরম° নিশক ॥
ঝাতু-পতি রয়নি উজোরল চন্দ।
পরিমল ভরি বহু মারুত মন্দ ॥
বাওত কত কত বস্তু রসাল।
কত কত্ত ভাতি ধরইং করেং তাল ॥
সারি শুক শিখি-কুলং কোকিল-রাব।
সৌরতে মধুকর মধুকরি ধাব ॥
অপরুপ তুল্ল জন অত্তমু-বিলাস।
গোবর্জন হৈরি বাঢ়য়ে উলাস ॥৫৬॥১৪৮০॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৩০ সংখ্যক পদ। ২। 'বিহররে' থ, প-র-সা। ৩। 'পর্ক' ক। ৩। 'ধর্রে' ক। ৫। 'কর' থ। '৬। 'শিথি' প-র-সা।

> অথ বসস্ত-বিহার প্রকারান্তর। ভত্ত শ্রিমদেগারচন্দ্র।

> > नगढ 15

নধু-শুজু বিহরই পৌর কিশোর। নহাধর-মুখ হেরি আনক্ষে নরহরি পুরুষক্তথানে জেন ভোর।

मविनश् मछ। नव পল্লৰ ডক্লকুল मलम नवबोश शाम । বছত মধুকর ফুল কুত্ৰমচন্ন সুখদ এ॰ ৰাজু-পতি নাম । গহন অতি স্থললিত মুকুলিত চূত-কোকিল-কাকলি-বাব। স্থাপুনি-ভীরঃ সমীর গন্ধিত चरत चरत मक्ल गांव । मनमथ ताक मान (मरे कोत्र**र**य़° বন,-ফুল ফল অতি শোভা। সময় বসস্ত निम्रा-भूत स्मन् **উक्षरणाम-मन-लाखा** १८९।১८৮১।

১। ইহা প-র-সা প্রির ২০০৪ সংখ্যক পদ।
২। 'নবীন'ক। ৩। 'ক্র্থদর' ধ; 'ক্র্থদর'
ক, ব, চ, পর-সা। 'ক্র্থদর' বা 'ক্র্রদরে' কোন
পাঠেই ভাল অর্থ হর না; 'ক্র্র্থদর' নিবিত হওয়ার
এবং উভর শংক্রে মধ্যের ফাঁকটি কোন লিপিকর
কর্ত্ত্ব প্রেয়র এই পাঠ-বিত্রাটের ক্ষৃষ্টি
করিরাছে, অক্সান হর। ৪। 'তীরে' ক, ধ,
প-র-সা। ৫। 'নেই ক্রিরে' ছলে 'নেই ফ্রিরে'
ক, চ, 'কররে বন' পর-সা। ৬। 'নব' ক।
৭। 'প্র ক্ষ্কর' ছলে 'প্রক্রর' ক।

পাঠাকর

শভিগার।

थानने ।>

সাজল রসবতি সহচরি সল।
মনস্থ-সমর মনহি মন রজ।
কালিজি-কুলে নিকুঞ্জ মাধা।
বজ-তৃমি অতি অ্পলিক সালা।

শকু-পতি চমু-পতিং নৰ পরবেশ।
আওল বিপিনে রচন করি বেশ ।
মদন-কুঞ্চ মাহা শ্রাম রণ-বীর।
সাজলি তহিঁ ধনি সমরে স্থীর ।
তাহনে হেরইতে কামুক পাল।
কহইতে আওল বলরাম দাস ।৫৮॥১৪৮২॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ২০৩৫ সংব্যক পদ। ২। 'সৃণভি' (?) ব ; 'চুম্পভি' প-র-সা।

দুত্যক্তিঃ বৈপরীত্যরসোচিতা যথা।

शंकात 15

যাকর মাক হেরি মুগ-রাজং। **करत्र रेश्वेम**॰ शिद्धि-कव्यत्र मात्र ॥ं শুনইভে চমকিত' সবহু মহল। **চরণ** हि स्मांभन निष्य श्रि-खन ॥ व्यानि (परे निष लाइन-प्रजी। वन भवरवन्त नवह कूबकी। मजन-कनम भट्यांश्व (कांत्र। তঁহি নব পল্লব অধর উজোর । टोनिटम॰ मधुकत मळ छठात । ঋতু-পতি যোধে ভেল° **আঞ্চ**নার ॥ **এकिन इक्रांग मरनात्रक मार ।** पुरु कति क्कूक क्यूग ग्रांट । च्य कि कत्रव रति कत्रक्ष विष्ठाति । ভূরা পর স্করি সাজল ধারিণ । এই। **ट्यां**ठन-वाटन क्यून महकान । मैंन निम जन्द (क्ल क्विज़ान 🛊 वर क्टब भवना कुष्ट्रक हार्ग्यः। . चन अति सञ्चा विशा शहर कि स्वास কুন্ম-বিশিধ যব লেওব হাত।
পড়ব কুন্ম-শর বন্ধর-বিষাত্ত ॥
বিধুমুখি নিধুবনত্ত-সমরে স্থার।
যতনে পঠারলত্ত অতু-পতি বীর॥
সোইত করব তহিঁ বীরক দাপত্ত।
তাকর কোন সহব পরতাপ॥
সো যব আওব রক্ষক ঠাম।
কহ বলরাম কি হয়ে পরিণামত্ত ॥৫৯॥১৪৮৩॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুথির ২০০৬ ও প-র পুথির
১৬।১৫ সংখ্যক পদ। ২। 'মৃগক্লরাজ' ক, খ,
প-র-সা। ৩। 'শৈঠলি' ক, প-র। ৪। 'সচকিড' ক; 'চমকত' প-র-সা; 'চমকই' প-র।
৫। 'চৌদিগে' ক। ৬। 'ফোরে' খ।
৭। 'পছিল' প-র। ৮। 'চচল মনোরথ'
ছলে 'চচল বনে মনোমথ' প-র। ৯। 'করি'
ইড্যাদি ছলে 'কঞ্ক তহি করিল' ইত্যাদি প-র।
১০। 'বিচার' প-র-সা। ১১। 'ধাড়ি' খ; 'ধার'
প-র-সা। ১২। 'কুছম' ক, খ। ১০। 'নিঘাত'
প-র। ১৪। 'নিধ্বনে' য়, চ। ১৫। 'পাওল'
ক, খ। ১৬। 'নো সব' য়। ১৭। 'নোই'
ইড্যাদি পংক্তিমর প-র পুথিতে নাই। ১৮। 'কি
ছল্পে পরিশাম' ছলে কহিও পরণাম' প-র-সা।

টাকা

১—২৬। (প্রীমার দৃতী প্রীক্তকের নিকট বাইনা প্রীমানর বিপরীত-সভোগেজা ইলিতে ব্যক্ত করিছেলে। "অব" ইত্যাবি। হে হরি! এখন কি করিবে,—বিচার করিবা হির কর। কুন্সরী রাধা অব-বারণ করিবা ভোনার উপর অর্থাৎ উক্তেপ্তে (বৃদ্ধে) সাজিরাছেল। এ। (প্রীমানর পরাক্তন কিরপ, তাহাই বলিতেছেল) 'বাকর' ইত্যাবি। বালার মধ্যবেশ করিবা প্রশাল করে বিরিক্তনর-মধ্যে প্রবেশ করিবার। (বিশ্বিক্তনর-মধ্যে প্রবেশ করিবার। (বিশ্বিক্তনর-মধ্যে প্রবেশ

नकन चाननामित्रव शिल-क्यी छीतात हवेले नव-र्णं कवित चर्वार शिंछ-छत्री श्रीशांश हत्राव चर्णं कतिया, डाहात भरन गहेन : आन्नाहित्वत अवन-छन्ते আনিয়া দিয়া অৰ্থাৎ বাঁচার নহনে সম্পূৰ্ণ করিয়া হরিণী সকল (বৈরাগ্য হেডু) বনে প্রাৰেশ করিল: (বাঁহার) কুচ-মুগল (মদন-নুণভির) মঞ্ল-ক্লস (এবং) ভাহাতে উজ্জ্বল অর্থাৎ আর্বক্তিম অধ্য নৰ-পর্ব-শ্বরণ; মধুকরগণ (বাঁহার) চড়জিগে (র্ণ-অংমর) মত্র উচ্চারণ করিতেছে (এবং) ঋতু-রাজ-রূপ বোদা (যাঁহার) আগে আগে অগ্রসর হুইভেছে ; (সেই শ্রীরাধা) মুদ্দ করিয়া কঞ্ক (এক আর্থে---কাঁচুলি, অন্ত অর্থে—বর্ম) বন্ধন করিয়া (বীরমূর্পে चाउन माराया-निवालक रहेना) এकांकिनी अन-क्रम 'রবে আরোহণ করিয়াছেন। (শ্রীরাধার বৃদ্ধ-প্রাণানী বর্ণন করিতেছেন) শ্রীরাধানন্দ্রন-বাবে (আকাশ) **শর-कानপূর্ণ করিলেন—দশ দিক্ সমস্তই অধ্কার इरेन। (७िन) यथन भूल-४म् कर्याता लार्ग** করিলেন, তথন হইতে আমার হাদর ধর ধর করিয়া কাঁপিতেছে। (ভিনি) বধন পূলা-শর হাতে লই-বেন, (তথন) পুশা-শর বস্ত্র-নির্ঘাত অরপ পতিত विधुम्बी (निक्टे) ब्रेडि-बूक् व्यवि-চলিত,—(ভাহাতে আবার সহায়বন্ধণ) গড়-রাজ वीव्रक (चार्था) शार्व हेवारहन। वींब-मर्भ कविदव । त्क छोरांब ध्यकांव मस् कविदव १ তিনি অর্থাৎ সেই জীরাধা বধন (রতি-রণের) রখ-कृषिण चानिरवन-वनताम कहिरलह्मन, ज्यन कि পরিণাম হইবে ?

অন্তোত্তরং যথা।

গানী।>
শুনইতে উলসিও সব অস মোর।
ভেটৰ সমরে ধীর স্থি টোর।
সঙ্গর,-রঞ্জনের মুকু আছেণ।
আন্দে ভুকু সুরবি সুরব হার পাইণ।

এ স্থি এ স্থিত তুহুঁ নাহি ডরবি। ভাষারি বীরপণ দেখি কিয়ে মরবি ॥**এ**শঃ निःह मङ्ग कृतक नह (कारे। ত্ৰিজুবন-শোষন-মোষন হোই। ় ঋতুপত্তি-কোটি ছোটি কবি জান। মনমথ-কোটি-মথন ভাম কান। कि করব মধুকর• মল্ল উচার। শ্যাম-ভ্রমর হাই। কমলং বিহার 🛚 व्यवना कि कत्रव द्रग वल-थीगा। সহচরিগণ রণ-মুগতি-বিহীনা। किरत हिरत क्ल-थ्यू कुल्मक वान। बिर्य मिन-किन्नगरिंग कत्रव रेमलान ॥ ভাত চাপ মঝু বিশিখ কটাথ। ৰবিখনে জনজন করবহি তাক n ভুক্তবুগ-বল্ল-পাশে করি বন্ধ। পিরব গিরায়ব । কড । করি ছন্দ ॥ (मा धनि कर्**न** त्यां) र कक्ष्क मन्ना १०। মখর-কুপাৰে ছাম করন বিভিন্না ১ निवारय सारय-कशांद्रक हाट्य । লাভাৰ> কু5-গিরি আগন প্রতাপে ॥ ब्रन-ब्रथं के सम्बन कर्तर कारलाय। যুঝৰ যুঝায়ৰ করি কভ দস্ত॥ ় নৰপল্লৰ জিনি অধর হুরাতে ১৭। कत्रव विश्वत त्रमन>४-विद्याटि >> । **७व विम टेमटेव कत्रदार विभावीट ।** केबन मुगांड कत्रव अंग होएउ॥ **अववस (मेर्ड (अववर्ष्ट क्रावर्ष)** थान-भराष्ट्रिक (में भिष हत्तात I ছুত পদ সেবন ছিথে খ অভিলাস । ৰল্মান দান হিয়ে এ বড়ি উলাস 🛭

14:138:81

পাঠানত

>। ইছা প-র-সা পুৰির ২০৩৭ ও প-র পুৰির 'ধানদী' স্থল 'ডড়ী' 'नकर' च. ह. भ-ब-नाः 'नकक' ा 'बाह् क, थ। ইত্যাদি স্থলে 'আগে ভৃত্ত' শব রিশবর' (🕈) ক 🕫 'আগে তুত সব বিসরব হাম পাছে' ব, প-র ; 'আগে তুত সৰ বিসরৰ মঝু পাশ' খ; 'আগে তুই' সরৰ সরব হাম পাছ' প-র-সা। 'ব'-কার ও 'র'-কারের গোলবোগ ও ছেদের অভাব হেড এই পাঠ-বিভ্রাটের উৎপত্তি হটয়াছে। প-র-সা পৃথির পাঠ না পাইলে প্রক্রত পাঠ নির্দাবণ করা অসাধ্য হইত। ৫। 'এ স্থি' হলে 'রঙ্গিণ' প-র। ৬। 'অলিভুল' প-র। ৮। 'किउनिक' क. थ। 'ভূজ' ইত্যাদি স্থলে 'ভূজ-যুগ পালে করব ভিরা वक्ष' श-त्र । १० । 'शिश्राबख' च । ১১ । 'कण्डक्' o 'कुक्षक' थ। o । 'हाम' हे शामि >৮। 'वहन' थ। >>। 'वहन विश्वादक' ইত্যাদি কলির ছলে প-র পুথির পাঠ ব্ধা,—

"অন্যে জন্মে পছ সেবন আন। গোবিন্দ দাস চিতে বড়ই উল্লাস ॥"

১—২। তনইডে" ইত্যাবি। (এক),
বীরাধার স্থীর উক্তির প্রত্যুক্তরে ক্রিডেছেন)—
ভোনার স্থীর পরাক্তম তনিবামাক আমার স্কল্
আল হর্বোৎকুল হইবাছে; (লাবি) স্মূরে বীরা
ভোনার স্থীর সলে স্থিতিত হুইবুঃ

०-- । "नवत" रेफारि । क्ट्रिकेस जानाव व्यवस्थ जाहत । कृति जाहत जाहत (स्थातात्र স্থীর অবহিতি-হলের পথবেধাইরা) বাইবে—সাবি পাছে পাছে বাইব।

৫—১। "এ স্থি" ইত্যাদি। হে স্থি। তুনি (আমার পরিণাম ভাবিরা) তর পাইও না; আমার বীর-পণ (এই বে)—দেখিব কিংবা মরিব অর্থাৎ তোমার, স্থীর বীরত্ব একবার পরীক্ষা করিব; যদি মরি, তাহাতেও ক্ষতি নাই।

প্রক্রিক । "সিংহ" ইত্যাদি। (পূর্ব-পদে স্থীর বণিত জীরাধা কর্ত্ব সিংহ, মাতল প্রভৃতির পরাজারের উদ্ভবে বলিতেছেন)—আমি (তোমার বর্ণিত)
সিংহ, মাতল কিংবা কুরল—(ইহাদিগের) কোনটি
নহি, আমি তিভ্বনের শোতা ও মোহের জনক
(জীক্ষ)।

২৯—৩২। "তব" ইত্যাদি। তবে যদি অর্থাৎ
পূর্ব্বোক্ত বীরত্ব করিলেও বদি দৈবে বিপরীত
(এক অর্থে—পরাক্তর; অন্ত অর্থে—বিগরীত
সংস্থাস) হটে,—(তাহা হটলে) আমি মনে এইক্রপ যুক্তি করিব—সর্বাত্ব দিরা তাহার শরণ লইব
এবং আমার পরাক্তিত (এক অর্থে—বিক্রমধারা
প্রাভৃত; অন্ত অর্থে—বেক্রমধারা বশীভৃত) প্রাণ
তাহার চরবে সমর্পন করিব।

कारमाम ।>

সাজল শ্রাম ত্রত-রণ-পণ্ডিত
করে করি কুত্ম-কামান।
সৌরতে জমরে কত্ত কত মধুকর
জীতলং মনমধ-বাণ॥
ধনি ধনি অপক্লপ হালে।
বৈশ বিলাল ল- রসময় মাধুরি
কামিনি-লোচন-কালে।
ইয়া চন্দ্রম

কঙ্কণ-কিঞ্চিণি **খনখন⁶ রণরণি•**রভি-রণ-বাজন বাজে।
জ্ঞানদাস কর খসিক-**শিরোনণি**

जांकन तमनि-जमारक १७>१>৪৮৫।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ২০০৮ সংখ্যক **পছ।** ২। 'কিডল' ক, প-র-সা। ত। 'বিচি**ল'** প-র-সা। ৪। 'চরিঅ' প-র-সা। ৫। 'ঝল-কন'ক। ৬। 'ঝনঝনি' প-র-সা।

विद्युष्ठी ।>

कुरुँ कुरुँ नश्राम नश्राम (अनं सिनि। লথই না পারি কলহ করে কেলে । शहशह वहन करहे नाहि भावि । रेयइन ८२/८४॰ व्यवन त्रक्ष शांति । ভাত্ত-ধনুয়া পর করই সন্ধান। মরমাহ হানল মনমপ্-বাণ # খা চপতি সমতি সৈনপতি'-রাজ। আগহি ভেজল সময়ক সাজ । মুকুলিত চূত **অশোক বক্**দৃণ । ভৈ গেল সবহ বিশিষ সমতৃল । তাহে মলয়ানিল ভেল অমুকূল। বাওই রণ-বাজন বিজকুল ॥ व्यनक्रभ उक्कृषि वन मावं ।। रेशर्वन प्रवं जन नमय-नमाज । व्याप-वाद >>- नयूम- भव्यादन । **जानन जरहित क्रुवेह दिस्तात्वार ।** खुर्स कृत्य हुई कम क्य-इन्न । वनक्षेत्र भीनं कट्ड गांगनं स्मार्गः।

HAI) SHA

পাঠান্তর

>। देश भन्द-मा भूबित २००३ मरशाक भए। २। 'नाबरे' कः 'नावरे' थः 'नाटब' व। ७। 'क्बन' भ-त-मा। । 'द्रार्द' क, च, च, छ। ৫। 'শৈলপতি' খ, च ; 'সেনপতি' क ; 'সৈল পরি' **हा था 'स्त्रम्क' क, था १। 'वक्क्न' क,** ৮। 'সমভূল' ক, চ, প-র-সা। **চ,**্প-র-সা। विवक्न'क, ह, भ-त-ना। >०। 'त्राक' थ। ३३। 'बीबक' कः 'विबक' छ। ३२। 'विद्यादा' क, हा २०। 'बन्द' के ; 'बन्द' हा

১-२। "इइ" रेडानि। (भनक्डा द्द-ল্পানে সংখ্যাপ-দীলা বর্ণন করিতেছেন) উভরের मत्रत नत्रत गांकार रहेग; (हेहां) विवान, कि ক্রীড়া, গব্দ্য করিতে পারি না।

৩—৪। "পদপদ" ইত্যাদি। প্রেমিক-যুগল পদ্পদ ৰাক্য ৰলিতে পারিতেছে না; বেন ক্রোধে অধীর হইরা রহিরাছে। (সাদিক-ভাবের ভার क्षादिश्व अपूत्रम वाका वहित्रीठ श्व वाकाख्छ इस)।

"ভাঙ" ইত্যাদি। উভবে জ্ৰ-ৰূপ ধন্ত্র উপর স্থান করিয়া (উভরের) মর্লে স্মণ-আৰম্ভ বাণ অৰ্থাৎ কটাক্ষ বিদ্ধ করিল।

"ৰতুপতি" ইত্যাদি। দৈল্পতি-দ্বাব্দ অৰ্থাৎ সেনাগতি-শিব্বোষণি কন্দৰ্শ (নিব্ৰের অস্তুচয়) ৰাভুপতি বসভের সহিত যুদ্ধের সক্ষা আগেই পাঠাইন।

»-->२। "बुक्शिण" रेकामि। (बूर्वत नका কি কি, ভাহাই বলিভেছেন) বুকুলিভ চুড অৰ্থাৎ **চ্छ-बूक्न, चार्लाक-श्र्या, वक्क्न-- नवछहे वार्लव** कुना बरेन ; जाराज मनत-भवन अञ्चल वर्षार बूरबन ७७-ए०क रहेन ; विरुक्त (मधुन निनाह ৰাৱা) ব্ৰ4-বাভ বাৰাইতে গাগিল।

১e-->७। "ब्रक्टिन्बन" देखाहि। व्रक्टिन्बन-वीत व्यविक-प्रारमत्र नवन-भन्न-मन्द त्राता (कीक भरेता) जरण्यीतम् ननावन् कश्चित्, (क्षि वर्त्यन् । जिल्लाम् निक्क निक्क क्षित्रे क्षित्रे क्षित्रे क्षित्रे क्षित्र

ब्र्जर्मानत कोज्रम (रज्) एत स्टेटक व्यक्टिक লাগিল।

टक्संत्र १३

রাধামাধ্য কুঞ্চহিং পৈঠল রতি-রণ-রঙ্গ রসালা ।। त्रग-राजम धन কোকিল-কলরব वक्क मधुकत-मानाः॥ अवनी दर्बि इ**ह**ै पिठि॰ वाँभा

मनमथ-जगरत কুজুমন্পর কো কছ সোঙরি সোঙরি জিউ কাঁপ ॥ঞা পহিলহি রাই नग्रन भटब्र हानन আকুল কুঞ্চক রাজ।

ভুজযুগ-বরুণ-পাদে ধরি বান্ধল নিকরুণ হাদয়ক মাঝ।

द्रांथिंग ब्राइ ভাহি'ণ পুন হরি-উরে কুচ-কাঞ্চন-গিরি शंन।

সো গিরিধর বর্ষণ ं नशंदत्र विश्वतिश বিচলিত মানিনি-মান ।

অস-ভরে ছত্ত ছত্ व्यथन-मधु शिवहेश्य ছত গুৰু প্ৰশংসা प्रच प्रच³ १७- यूक्राप्त भ निम हार ८रवि भ **खतमिर द्वं कक्र प्रश्मः**

বাণ হৈরি মাধ্ব সিন্ধুর সহন-मुगमन-जनरम निकाष्ठः ।

পিছ-মুকুট ভরেং (वि-क्षिति विमूर्वेदेश महि शिष् वाष्ट्रिश !

NO-19-783 ৰাতন স্দূৰ্-जनक-जडून मारि माम। ভোড়ৰ নিৰি-বৰং রভি-রণ ভূমূলংও পূলককুল-সর্গ ঘন ঘন মঞ্জির বোল।

নিজ মলে মদন পরাভব পাওলংও
কুণ্ডল গণ্ডহি লোল।

অনুধণ কম্বণ কিছিণি কম্বরু রভি-জন্ম-মঞ্চল-তুর।

মনমধ-কেন্তু মকর গড়িংশ যাওড গোবিন্দদাস কহ ফুরংশ ॥৬৩॥১৪৮৭॥

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুৰির ২০৪০ ও প-র পুৰির २। 'निकृत्भ' भ-त्र। (तक त्रमाना' करन 'तक त्रमान' भ-त-मा; 81 'बागा' भ-त-मा। e। '(मारु' श-त-मा। ७। 'मिर्क' च। १। 'कह' का छ। 'मद्र' या ३। 'धनि' क, ४, १५द्रा >०। 'छिस्' क, ब, ब, छ। >>। 'बत' প-त्र। **১২। 'भीवहे' थ, य; 'भिवि भिवि' भ-त्र। ১८। 'পরশংসে' পর।** be! 'हर्ड कन' श-त्र। >७। 'बुक्त' भ-ता >१। 'निक छाह द्वित' श्रटन 'द्वित खत्रमिंड' ष, भ-त ; 'निक छारे (द्वि' भ-त-मा। ১৮। 'कत-वृद्धि हेकाहि करन 'निक हार (रुनि इर रुर्ट्म' प्र श-ब । ১৯ । 'निकास' भ-ब-मा; 'निवाड' भ-ब। २०। 'करब' भ-ब-मा। २১। 'विभविष्ठ' भ-ब। ६२। 'बाड' न-ब-मा; 'बाड' न-ब । २०। 'निन्न' र्भ-मा २८। 'त्रीयकत्र' क, ब, ठः 'त्रीम' श-म। २८। 'इह' नाहि' एरम 'किहूरे ना' भ-त्र। २७। 'त्रभ क्रमुल' स्टल 'ब्रटन क्रूबल' श-व । भन्ता दिला 'बिक' वा २०। 'सूब' क, 5,

1

ests est | filles "entileit" | est est

স্থী অন্ত স্থাকে বলিভেছেন) শ্রীরাধারক গতিরণের রল-ভূমিখরণ রসাল অর্থাৎ মনোহর নির্জন
প্রবেশ করিল; কোকিলের খন খন কল-ধ্যনি রপু:
বাল (হইল); মধুকর-শ্রেণী (বংশীর ভার) বভার
দিভেছে।

e—१। "সন্দানী" ইত্যাদি। হে সথি ! (জীরাধাক্ষেত্রর রভি-বৃদ্ধ) দেখিরা দেখিরা (জামার) ছই চন্দ্র্
(ভরে জাপনা-আপনি) বৃদ্ধিত হইতেছে ! কে
বলে কলপ-বৃদ্ধে (ভ্রেকামল) পুস্পমর বাণ !
(সেই ভীবণ বৃদ্ধ) স্থরণ করিরা করিরা আনার প্রাণ
কাঁপিতেছে ।

৮—>>। "পহিনহি" ইত্যাদি। (সধী বৃদ্ধপ্রণানী বর্ণন করিয়া কহিতেছেন) প্রথমেই শ্রীরাধা
(শ্রীক্রক্ষকে) নয়ন-শর দারা বিদ্ধ করিল; (উহিতে)
কুল-বিহারী শ্রীকৃষ্ণ অভিন হইরা (নিজের) ভূজবৃগলব্রণ বহুপের পাশ-অভ্র দারা (শ্রীরাধাকে)
ধরিয়া (নিজের) কঠিন বক্ষের মধ্যে বাদ্ধিরা
বাধিল।

তং—তং। "অমুখণ" ইত্যাদি। (বদি
পূর্ব্যেক্ত অবহা বারাও কাহার কর, কাহার পরাকর
বটল, তাহাতে কোন সন্দেহ থাকে, সেই বক্ত)
স্থী-ছানীর পোবিক্রদান স্পষ্ট করিবা বলিতেছেন
বে, (রতি-রুণিনী শ্রীরাধার) কছণ ও কিবিনী
(তাহার) বৃদ্ধ-অরম্ভাক মাললিক জুবী-বাজের ভার
অবিরত করার দিতেছে; (কন্দর্শ-ক্রণী শ্রীক্রকের
প্রাক্রর ক্তিত করিবা) মকর-বাহন মন্মধ্যের ধ্যরাদ
অরপ (শ্রীক্রকের কর্ণ-বিত্ত মকর-ক্তালের) নকর
(জ্বলে) গড়াগড়ি বাইতেছে।

ख्या तान ।

রাধা মাধব কুঞ্চ-গৃহে।
বেরইডে রূপ খনন-মন মোতে।
ফুর্জন বৈঠি কহছে রূপ-ভার।
আন-ভালে ফুর্জুক ভিপনা মুদ্ধ বানে? ।
বিশ্বই-মাধন

পাঠান্তৰ

>। 'ব্যবাস' ক, ব, চ। এই প্রের বাকি অংশ কোন পুরিতেই পার্বরা বার নাই।

व्यथ भूनम्ड मिनाखरत यथा।

224 1

ভক্স ভক্স নব কিশ্লের বন লাগি।
কুম্ম-ভরে কত অননত শাধি।
ভহিঁ শুক শারিণি কোকিল বোল।
কুম্প নিকুপ্ত ভ্রমর করু রোল।
অপরূপ শ্রীরুন্দাবন মাঝ।
বড় শ্রুত্র সক্ষে বসস্ত শ্রুত্র-রাজ।
বিক্সিভ কুবলয় কমল কদম।
মাধবি মালভি মিলিভ কুলম্মং।
কাই। কাই। দাছরি উনমত গান।
কাই। কাই। চাতক পিউ পিউ ফুর।
কাই। কাই। ভাকর পিউ পিউ ফুর।
কাই। কাই। উনমত নাচয়ের মউর॥
গোবিন্দাস কহ অপরূপ ভাতি।
চৌদিকে বেঢ়ল কুম্মক পাঁভি।৬৫॥১৪৮৯॥

পাঠান্তর

১। ইবা প-র-না পুথির ২০৪১ সংখ্যক পদ।
২। 'বিলিড স্কলব' চ হলে 'মিলি ডক্ল লব' ক, ব;
'ভক্ল লভা লব' ব। চ পুথির পাঠ ব্যতীত অঞাল
পাঠে কোন অর্থ হর না; অসভর্ক লিলিকর কর্ত্বক
অবধা পহছেবে হওরার 'বিলিভ কলব' পাঠই 'মিলি
ভক্ল লব' এই অমুভ পাঠে পরিণভ হইরাছে।
'রোলব' শব্দের 'রো' অক্ষরটি লঘু-বর্ণ-রূপে এ হলে
ব্যবহৃত হওরার, সকল পুথিতেই 'রো' হলে 'ক'
লিখিত হইরাছে; স্কভরাং প্রক্লভ সংস্কৃত শক্ষি
'রোলব' হইলেও অপ্রংশ 'কলব' শক্ষই মূলে স্বীচীন বলিরা শুরাভ হইন।

विका

>--- । "ভক ভক" ইভ্যাদি। বনে ভক ভক অৰ্থাৎ প্ৰভি-ভক্তেই নবীন পত্নৰ লগ্ধ অৰ্থাৎ উত্পত এবং কত বুক পৃষ্ণভৱে অবনত হইয়াছে।

৭—৮। "বিক্সিড" ইডাদি। (বসজের সহিত বড়্পুড়র একল আবিজ।ব-স্চক) প্রনর-বৃক্ত নীলোৎপল, পল্প, কদৰ, বাধবী ও বালড়ী বিক্সিড হইল।

गर्ठमक्षत्री ।ऽ

কুম্ম-ভরে নব পল্লব দোল।

মধু পিৰি মধুকরি মধুকর রোলং।

তাহে নব কোকিল পঞ্চম গার।

হকু জন আরতি চন্দন-বার।

পুনমিক রাতি মোহন ঋতু-রাজ।

বৈদগধি বিদগধ মিলল সমাজ।

নাই মালমণি বরণ হঠাম।

রাই মুকুর কাঞ্চন দশবান।

দৌহে দোঁহা হেরইভে ছকু ও জেল জোরি।

রাই জেল শুসম শুসম্প হাস।

আলিজন কর্ইতে উপজল হাস।

ওক্লপ বলিহারি বলরাম দাস। ১৬৪১৪৯০।

পাঠাকৰ

>। ইহাপ-র-না পুৰির ২০৪২ সংখ্যক পদ। ২। 'বোল' ক, চ, প-র-না। ৩। 'বোহ' ম; 'বোহে' প-র-না। ৩। 'ঞান্ন' খ।

गिका

গৃহত্বন ইত্যাদি। চক্ষর-বার্তে অধীৎ ।
চক্ষরকাপগলিত নলবাচলের বার্বারা শীরাধা
ককের আরতি অধীৎ বল্প আরতির প্রন-ব্যক্ষর
(কইতেছে)।

৭—১০। "নাহ" ইত্যাদি। নাৰ জীৱক নীগকাত নৰিব কৰেই ভাই ছক্ত্ৰ ও জীৱান নিৰ্দ বশবান পূর্ণের বর্ণণ-শরণ; উভরে উভরকে কেথিবা-রাম উভরেই রাজ হইল; (কেন না, প্রীরাধার পীড অলে প্রীকৃষ্ণের নীল অল-কাজি প্রতিবিভিত হইরা নীল ও পীড বর্ণের বিশ্রণে) প্রীরাধা (নব-দূর্কাললের ভার) ভার ও (প্রীকৃষ্ণের দেহকাজি প্রীরাধার পর্ণ-কাজির প্রাচুর্ব্যে আজানিত হওরার) প্রায় অর্থাৎ প্রীকৃষ্ণ গৌরালী প্রীরাধা-শর্মণ হইলেন।

छवा त्राप ।

অপরপ নব মধুমাস।

চৌদিশে কুন্থম বিকাশ ।

নিধুবনে মধুকর রোল ।

পিককুল পঞ্চম বোল ॥

নাহ রসিকবর রার।

রসবতি মীললিং ভার ॥

উপজল রস-পরসল।

নোহন দেখত রজ ॥৬৭॥১৪৯১॥

দিনান্তরে।

पगण ।

মলরক প্রনভান উলসিও জ্ঞল-নারী।
উলসিও পুলবিত সহর্ লতা তরু
মদন ভেল অধিকারী ॥
মুকুলিত চূত দুত ভেল বটপদ
শ্বদ্ধি দেল> বাধাই।
সন্ত বসন্ত পুলারলং বরে বরেণ
ক্লপ-ক্ষমে আনন্দ বাঢ়াই॥
চাতক পাত্রং ক্ষম লিখন বুঝাই।
বিক্রম সন্ত বিহল শ্ব-মুখেণ

কুঞ্জ লভা পর সাজস ঋতু-পড়ি वहविध हिज् विधारन। কুত্ৰ বিকাশল ब्राग-यन बन्धन কামু শুনল নিজ কাণে ঃ মাধবি মধুমজি বিমল চন্ত্ৰ-মুখি मञाकादा कहित वृकारे। नाति याहै। देवक्रद्रम রস-পরধান স্ক্ৰি রসবতি রাই। ভ্ৰিয়া রসলায়িনি ইৰ মৃত্ৰু বচন पृशे वनान छनारम । গুরুয়া গমনে তঃ• हिलाफ ना स्मर्थ भव जवह कहन धनि शारण **॥** কানু পাঠাওল . শুনহ বচন মোর (मार् कहलि निज कार्ज। শ্রাম গ্রহড় मागत वन-(लंभव त्रांग क्वर रन मांट्य ॥ দুভিক বোলে (मार्ल चन कश्चन व्यानत्म यदा पृष्ट वाथि। রাধা হৃমূখি সফল তমু মানই भून भून कर हम (म्ब ॥ यडनह जानदन व्यान नाभ्य द्वाराय স্বপনে নাহি আন ভান। ব্লাভি দিবস ধনি আন না ভাবই নয়নে না হেরই আন ॥ কুঙ্কুম কস্তুরি **ठम्मन (क्थ्रंब क्रि** কুচযুগ শোভিত হারে। বো বাহা সাজল বেশ বনাওল जेहनः ठमन विदारत ॥ চললি ধনি সুন্দরি त्रिकिनि मध्य मिक मकंक्र गाँदे। নৰ অসুৱাগে ___ জাগি রুপ্ শ অস্তবে नत्क त्मनि कामन वारे ।

বর-রসে আগরি লব নব নাগরি द्रज-खदत हल है ना भाति। व्यक्त करत्र देशभग শুরুয়া নিডম্ম ভরে হেরইতে কত মনহারী ! ছুহু ক ছুলহ ছুহু मत्रभद्भ शश्निश् व्याथ नयून-व्यविक्त । মুহু ভমু পুলকিড ইষদবলোকিত বাচল কভই ১৫ আনন্দ। সন্তাষ মধুর দিঠে পহিলহি হাস পরশিতে প্রেম-তরক। ছ্ছ রসে উনমত কেলি-কলা কভ ভাবে ভরল তুওঁ অজ ৷ চুলাচুলি উরে উরে • নয়নে নয়ান व्यथ्दत्र व्यभिग्ना-त्रम (नम । য়াস-বিলাস খাস বহ ঘন ঘন ঘামে ভিলক বহি গেল ! বিগলিত কেশ-কুম্বম শিপি-চন্দ্রক> বেশ ভূষণ ভেল আন। ছুছু ক মনোরপ পরিপুরিত ভেল ছুত্ ভেল অভেদ পরাণ ॥ धनि वुन्मावन ধনি রঞ্জিণিগণ ধনি রাস-রসময় কান। কলারস ঋতু-পতি ধনি ধনি সরস कानपात्र श्रुनशान ॥५৮॥>८३२॥

পাঠান্তর

১। 'দেৱল' ক। ২। 'পুজারল' ক।

৩। 'বর বর' ক; 'বলৈ বর' চ। ৪। হত্তলিখিত পুথির 'পাঅ' শক্ষটি 'পাঅ' কিংবা 'পাঅ' ছই
রক্ষই পড়া বাইতে পারে। কোন কোন মুজিত
সংক্রণে 'পারে' শঠি আছে; 'পাঅ' শক্ষে কোন
কোন লিপিকর 'পাঅ' করনা করার, উহাই পরে
'পারে' পাঠে পরিশৃত ই্ট্রাছে। বাহা হউক, 'পাঅ'

किश्वा 'शांत' शांठि अ चरण रकाम वर्ष इत्र मा। পূर्क इरोडि के लिएक 'प्रथम' बगरखन व्यक्षिकांनी व्यवीद কাৰ্য্যাধ্যক ও 'বটুপদ' (বহু পদৰ হেডু শীল্পামী) দুভ रहेन-- এরণ বর্ণিত रहेबाह् ; পরেও বিক্রব সর্ত্ত विश्व भूक-मूर्व शक्षम (वह शहाहे' वांत्का सक-প্রসুথ বিহলদিগকে 'বিজ্ঞবন্ধ' কলনা করা হইয়াছে; হুতরাং 'চাভক পাত্র' ইত্যাদি মধ্যবন্তী চন্নপ্রে---'চাভক, কণোত ও বয়ুর বসন্তের পাত্র অর্ধাৎ কার্ব্যা-कांवक रहेवा (श्रीमक-बूशनटक (महत्वत्र जात्वध-স্চক) শিপি বুঝাইলা দিভেছে' এইরূপ অর্থই সমী-होन त्वांथ हव । <। 'मूच' व, ह। ७। 'भफ़ाहे' क, हा वा 'विविध' क, थ, हा छा 'देवमद्म' षा । (मधू क, था) । (शमन मङ् षु 'প্ৰন্ত'চ। ১১। 'আন'ৰ'। ১২। 'নাহি' का ७०। 'बेह्रस' ४, हा ७३। 'क्रम' का sel 'क्खरब' प, हा sel 'खेब^{के} क, था ১१। 'हिक्किक' थ।

होका

৪১—৪৪। "রজিণি" ইত্যাদি। স্থন্ধরী নারিকা (প্রীরাধা) রজিণী স্থীনিগের সঙ্গে চলি-লেন এবং (তাঁহানিগকে) লইরা সন্ধীতের সঞ্চার করিলেন; (প্রীক্তকের প্রতি) নব অন্তরাস ক্তেড় (প্রীক্তকের) রূপ (তাঁহাদিপের) ক্লরে আসিল; (অতএব) সকলে মিশিরা ভামস্থ্রের (৩৭) গান করিতে লাগিলেন।

जूगोनी ।>

বিদগধ নাগরি নাগর রসিরা।
মধুকর মধু পিরে কমলিনি পশিরা।
বাঢ়ল রস-সিফু ছুহেঁ এক হিয়া।
কালা মেদে কাপল কুমুদ বজুরা।
রাই কামু নিধুবনে মধুর বিলাস।
ছুহুঁ হুছুঁ মুধু হৈছি মাধুরে ক্লীনে।

পুনিম₂-চান্দ-মুখে সেদ বিন্দু বিন্দু।

অনক লাবণ্য-ফুলে পুজল ইন্দু ।

বিগলিত কেশ বেশ বিগলিত বাস।

রতি-রস-শ্রেমে[®] বহে দীঘ'নিশাস॥

আলসে মুদিত আঁখি বয়ানে বয়ান।

জ্ঞান কৰে চান্দে কিয়ে চান্দের[®] মিলান॥

১৯৯৯১৪৯৩৪

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৪০ সংখ্যক পদ।
 ২। 'পুনিম' ক, প-র-সা; 'পুনমিক' খ।
 ৩। 'ছরমে' ক, খ, য়, চ; 'ছরমে' পাঠে ছলোডল
 হর, য়ৢতরাং প-র-সা পুথির 'শ্রমে' পাঠই সমীচীন।
 ৪। 'চাক্র' ক, খ।

व्यथं वांमखी तांमलाता। ভত্তচিও শ্রীগোরচক্র। शांत्री वा वम्छ।> नवदीर्भ डेएग्र कतिमा विष-त्रांक। কলি-ভিমির ঘোর (गात्राहारमः উव्याद পারিষদ-ভারাগণ মাঝ এবঃ व्यक्ष भूगि-भूगत कीर्फाटन एवं एत হালত ভাব-ভরতে। বোলত হরি হরি ক্রে করতাল ধরি ক্ষেণে কেণে রহই ত্রিভবে। কান্ধের উপরে তার বামে প্রিয় গদাধর ञ्यनिष्ठ वांक् जाकारन⁸। আকুল অমুখণ সোভরি বুন্দাবন थात्रा वर्ष चक्रण-महारम । (यन नव जनभन আঁথিযুগ বার কার मणन विष्कृती किनिः छो। কলি-জীব উত্থানিতে বাহুদেৰ ঘোৰ গীতে

পাঠান্তর .

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০৪৪ সংখ্যক পদ।
২। 'গোরাটাদের' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'বেলড' ः
थ। ৪। 'আঞ্চানো' খ, 'অঞ্চানে' প-র-সা।
৫। 'বেন্' প-র-সা। ৩। 'বরিখড' খ।

च्हरे ।>

মধু-ঋতু-বামিনি স্বরধ্নি-জীর।
উল্লোর স্থাকর মলয়-সমীর ।
স্বচর সঙ্গে গোর নট-রাজ।
বিহররে নিরুপম কার্ত্তন মাঝ ।
থোল করতাল-ধ্বনি নটন-হিলোল।
ভুজ তুলি ঘন ঘন হরি হরি বোল ॥
নরহরি গদাধর বিহরই সজ।
নাচত গাওত কড্ড বিভজ ।
কোকিল মধুকর পৃঞ্চম ভাষ।
নর্মানস্প-পত্ত করয়ে বিলাস ॥৭১॥১৪৯৫॥
পাঠাত্তর

পাঠান্তর ১। ইহা প-র-সা প্রথির ২০৪৫ সংখ্যক পদ।

অভিসারিকা।

ছুগানী।>
চান্দ-বদনি ধনি করুং অভিসার।
নব নব রজিণি রসের পসার ৪
মধু-ঋতু রজনি উজোরল চন্দেং।
ত্মলর-পবন বহুরে মৃত্ মন্দ ।
কপুর চন্দন অজে বিরাজ।
অবিরত কজণ কিজিণি বাজ ।
মুপুর চরণে বাজরে রুপুরুতু।
মদন বিশ্লইং মানং হাতে ভুল-খনু ।

্ৰবিশ্বলং ছবি-নাৰ-ঘটা ৷৭০৷১৪৯৪৷

বৃশা-বিপিনে ভেটল শাম রায়।
কোকিল মধ্কর পঞ্চম গায়॥
ধনি-মুখ হৈরি মুগধ ভেল কান।
বৈঠল ভক্তলে তুর্ এক ঠান ॥
পূরল তুর্ ক মরম শ- অভিলাম।
আনম্দে হেরত বলরামদাস শ দ্বা ১৪৯৬॥

পাঠাশ্বর

১। ইহা প-র-সাঁ পুথির < ০৪৬ ও প-র পুথির
১৫।১৫ সংখ্যক পদ। হ। 'ধনি করু' হুলে 'ধনি হুরি'
প-র-সা, 'চললি' প-র। ৩। 'মধু-ঝড়ু' ইড়ালি
কলিটি প-র পুথিতে নাই। ৪। 'বিজ্ঞারি' ক, প-রসা। ৫। 'বাণ' ক, খ, ড়, চ, প-র। ৬। 'ভেটিল'
ক। ৭। 'কোকিল মধুক্র' হুলে 'নব নব কোকিল'
প-র। ৮। 'বভ্লে' থ। ১। 'বৈঠল' ইড়ালি
হুলে 'করে ধরি কুঞ্জি করল প্রান' প-র। ১০।
'ক্রেক মর্ম-' হুলে 'বড্লু হুদ্ধ-' প-র। ১১। 'আনক্রে' ইড়ালি হুলে 'দ্রিছি দুরে রছ গোবিন্দদাস'
প-র।

कारनाम ।>

সরস বসস্ত সমর বন শোহন
মোহন মোহনি সক্ষ।
অপারুপং রাস- বিলাসহিও নিমগন
হুহুঁ ছুহুঁ অঙ্গ হি অন্ন ॥
কেখ সন্ধি রাস-বিলাস।
কত কত বল্ল তল্ল সংগ্রন্ত
কভহুঁ রাস প্রকাশ ॥
প্রাথহি যুথ মেলিও সব কামিনি
বামিনি বিলসই ভালও।
নাচত রন্ধিনি প্রোপাল ॥

বাওরে উপাল ডক্ম সর-মণ্ডল
কল্প-কিজিপি-রোল।
বহুবিধ ডাল মান ধরু করতলে
অনন্তঃ আনন্দ হিলোল ॥৭৩॥১৪১৭॥
গাঠাতর

>। ইহা প-র-সাপুথির ২০৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'অপক্রপ'ক। ৩। 'বিলাসই'ক, খ, চ;
'বিলসই'প-র-সা। ৪। 'মিলি'ক, চ, প-র-সা।
৫। 'মামিনি' ইত্যাদি স্থলে 'বিলসই ভালহিঁ ভাল'
খ। ৬। 'অনক্ত দাস'খ, চ, প-র-সা।

CTTT 1>

ফুটল কুসুম অলিক মেলি। कुरुत कांकिल वितर्भ किला কপোত নাচত আপন রছে। রাই নাচত শ্রাম সঞ্চে। (मध वि मधि कुछ मात्र। শ্যাম নায়র নায়রিণ সাক # বিবিধ যন্ত একই ভান¹। গাওত বাওত অথগুণ মান্ত । ভাতা জিমিকি জিমি মুদল। সরশ পরশ **অজ**> অজ । _ **महरक भामः निन्-जन।** তাহে कडह १२ महेम> - फल । नग्रान नग्रानः मधुत्र मीठे १ । অমিয়া-অধিক বোলয়ে মীঠ১৬ 🛊 হিয়ে হির-হার আলস লোল। **চরণে मक्षित्र चुलत বোল**। ज्यस्त् मध्य मुद्रम होत्। कानगान-विक-निमानः । १४८। ५८ ३৮।

পাঠান্তর

)। देश भ-त-मा भूषित २०৪৮ ७ भ-त **भूषित** अन् 50 मरबाक शव । 'दक्तांत्र' व्हल 'कांनक' भ-त । २। 'वित्रहां' क, थ, ४, ४। 8 | 'am' n-3 | e | 'am' n-, मानित्र', भ-ता १। 'छान' भ-त-मा। ৮। '५७' षा 🛪। 'मान' প-র-সা। ১०। 'অक्टि' প-র। >>† '#्रांब्यू' श-द्रा >२। 'क्टब्क्' श-द्र-त्रा। ১७। 'नदन' कः। ১৪। 'नदन नदन' প-दः। ১८। 'मिठे' क, भ-ब-मा। ১५। 'मिठे' क, भ-ब-मा। **७१। 'डेनान' ४।**

ভাটবাৰি।১

कुम्मा-विभिद्रन विष्ठत्रहे मार्थवि माथव अक्रिया । তুত্ঁ-গুণ ছত্ জনং গাওত স্থললিত চলত নৰ্ত্তন^৩-গতি-ভাতিয়া ।ধ্ৰা কুণ্ডল শোহই ভাবণ-যুগলে নবং কিশলয় ভোড়িয়া। ভুজ শোহই তুহু কান্ধে তুহু **চুস্বই মুখ-শশি মোড়িয়া** । মুরলি তাহে বায়ে वंख कोविन নাচত শিখিগণ মাতিয়া। धारे (वज़न टिक मक्त्रम মুখর মধুকর-পাঁতিয়। । কুন্ত্ম বরিষণ সকল স্থিপণ

मान भाविका ও রস-সায়রে গাহিয়া৽ ॥৭৫॥১৪৯৯॥

কবহি হেরব

আনন্দে ও রসে ভাসিরা ।

গাঠাতর

"5 । देश भेजन्म श्रीवेत २०४२ ७ भ व श्रीवेत कार मरवाक नव । 'कार्रवाति' वर्ग 'द्वरमात्रात्र' न-व । १ । वहर देशादि दरन 'इस के पन इस' भ-त्र। ७। 'मर्डक' भ-त्र। ८।' 'मरिमर भ-त्र। <। '(नाहरे चभन्नंग' भन्ता : ७। '(वादिवा' प्र **প-র-সা। ৮। '७ রং**স ভাসিরা' **হলে 'রংস সব**

'বিহশড়া।১

মধু-ঋতু মধুকর-পাতি। মধুর-কুস্থম-মধু-মাভি। मध्य बुम्नावन मावा। *মধুর মধুর রস-রা**ল** ॥ মধুর যুবভিগণ সঞ্ব। মধুর মধুর রস-রঞ্গ ॥ मधूत्र यक्ष त्रमाल । মধুর মধুর করতাল 🛚 মধুর নটন গতি-ভঙ্গ। মধুর নটিনি নট-রাজ ॥ মধুর মধুর রস-গান। মধুর বিভাপতি ভাগ 1৭৬৪১৫০০।

পাঠান্তর

১। हेहा भ-त-जा श्रवित २०८०. मश्याक भवा। २। 'तन मक्ष' ऋरन 'दन दक्ष' ष । 'व । 'वेन-तक' व्हाल 'श्रेष वक' या हा 'बहेनि' क, य, 9-3-71 1

क्लांव ।>

ঋতু-পতি-রাতি রসিকবর-রা**ল**। র্দ্মর রাস-রভর্স রস মাঝ 🛊 রসবভি রমণি-রতন ধনি রাই। রাস-রসিক সহ রস অবগাই 👢 विकितिगत बना - बक्दि नहेरे। बनबनिः कडन किकिनि बहेरैर ॥

রহি রহি রাগ রচরে রসবস্ত।
রতি-রতণ -রাগিণি-রমণ বসন্ত॥
রটতি রবাব মহতি কপিলাসণ।
রাধারমণ করু মুখলি-বিলাস॥
রসমর বিভাপতি কবি ভাণ।
রূপনারারণ ভূপতি জান॥৭৭॥১৫০১॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুধির ২০৫১ সংখ্যক পর।

২। 'বর-রাজ' ছলে 'রস-রাজ'ছ। ৩। 'সব'

ড়, খ, চ, প-র-সা। ৪। 'রুপু রুপু' প-র-সা।

৫। 'রচই' ক। ৩। 'রসবতী' প-র-সা। ৭।
'বহজি', খ, প-র-সা; 'সহতি' চ। ৮। 'কপিনাস' ড়, খ; 'কোপিনাখ' প-র-সা।

(वदनांबांब 1)

বাৰত জিগি জিগিং ধোজিমি জিমিয়া। নটভি কলাবভি খাম সঞ্চে মাতি করে করু ভাল প্রবন্ধক ধনিয়া**ু**॥ ভগমগ ডক্ষ जिमिक जिमि मानन क्रन यूप् मक्षित दर्गन। किश्वित त्रनत्रनि বলয়া কন্যা মণি निष्वत्न जान जुमून छिउदतान । बीन त्रवाव मूत्रक मत-मधन সারি গম প ধ নি সাবছবিধ ভাব। ৰেটিভা বেটিভা বেনিণ युक्त गत्रक्रि **हक्न जर-मधन, धक् राव ।** শ্রম-ভরে গলিভ नानिष क्वतीयुष्ठ मानिक-मान विश्वातन द्यांकि। नमम यम् রাস-রস-বর্ণন বিভাপতি-মতি ক্লেভিড হোডি

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাৃপুথির ২০৫২ সংখ্যক পদ। হ। জেসি জসি'খ। ০। 'থবনিরা'ক, খ, প-র-সা। ৪। 'রজ্বজু'প-র-সা। ৫। 'লুখি' প-র-সা। ৬। 'জভি'প-র-সা।

ভূপানী।১

त्राम-विलातमर भूगध नहे-त्राक । যুপহি যুপ রমণিগণ মাঝ 🛮 চুম্বয়ে রময়ে সবছ সম-ভাব। হেরইতে সুবদনি ভেল বিভাব ॥ कार्ण क्यन-मूचि कंद्रल शहान। বৈঠলি ভিমির-কুঞ্জে করি মান । मधल ছোড় बारे यव शिल। হেরি নাগরবর চমকিত ভেল । षाकृष (शाकृष-वद्म छ कान । ছাড়ি° সব রঞিণি করল পরান ॥ विलगरे मनमय-वाटन छह भीन। ঢ় ড়ই পবছ কুঞ্জে মভিহীন ॥ बारे ना পारे यारे এक कूछ। রোয়ত বৈছন মধুকর গুলা। কাহাঁ গেও বিধু-মুখি কহি পুন রোর। পুন किरम ला धनि मीलव शाम ॥ विनर्भ दायर ता वन-विद्या। আকুল উদ্ধৰ দাসক সন্মিয়া 1921/৫০৩1

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৫০ সংখ্যক পদ।
২। 'বিলাস' ম। ৩। 'ছোড়ি' প-র-সা। ৪।
'বিলপিড' ম। ৫। 'চুড়াই' ম। ৬। 'বরুমুখি' ম। ৭। 'বিলখ' ক, প-র-সা। "

তত্ত্ব শ্ৰীগীতগোৰিন্দে যথা।

मामिक्रः हिन्छ। विरमाका बुछः वधुनिहरवन । সাপরাধভরা ময়াপি ন বারিভাতিভয়েন ॥ হরিহরি হতাদরভয়া গতা সা কুপিতেব ॥ এ কিং করিয়াতি কিং বদিয়াতি সা চিরং বিরচ্ছে। किः थरनन करनन किः मम कीविर्छन शुर्द्दश्यां চিন্তরামি ভদাননং কুটিল-ত্রু কোপ-ভুরেণ। শোণ-পল্পমিবোপরি ভ্রমতাকুলং ভ্রমরেণ। ভামহং হাদি সক্ষতামনিশং ভূশং রময়ামি। কিং বনেহসুসরামি ভামিহ কিং রুথা বিলপামি n তবি বিলমসূর্যা হৃদয়ং ত্বাক্লয়ামি। তন্ন বেদ্মি কুতো গতাসি ন তেন তেহসুনয়ামি। দৃশ্যসে পুরভো গভাগতমেব মে বিদধাসি। किः भूटतव अमञ्जयः भत्रित्रञ्जनः न प्रपानि ॥ क्मग्राञामभन्नः कताभि उत्तनुनः न करतामि। **८१६ि जुला**ति पूर्णनः मम मन्नार्थन करनामि ॥ वर्गिङः क्याप्तवत्कन स्टब्रिविषः श्रवत्न । (कम्कृतिचे-मग्रज-मञ्जर द्राहिगीत्रमत्न ।

পাঠাক্তর

0 1 3 C 0 8 1

১। ইহা প-র পুথির ২১।৯৪ সংখ্যক পদ।
'গুর্জনী' হলে 'বরাড়ী' প-র। ২। বদিও সকলগুলি পুথিতে এবং সুত্রিত বলীর সংহরবে 'কিং ধনেন'
ইত্যাদি ছলে 'কিং ধনেন কিং লনেন কিং নৰ স্থাবন
গৃহেপ' পাঠ আছে, কিন্ত উহা বে ছন্দোতন হই, তাহা
বংসম্পাদিত প্রীক্রীতগোবিনের ৭৯ পৃথার পাদটাকার সবিভারে আলোচিত হইরাছে; আনরা ঐ
পান-টাকা হইতে করেক ছত্ত নিরে উছ্ ত করিলান;
—"বানিরং চলিতা বিলোক্য বুজং বধুনিচরেন'
ইত্যাদি পীত্তির বুরা বাতীত অভাত সকল চরবেই
সগুরুতি অক্ষর গুলিজারে স্বা, ৩ই, ৮ন, ১১শ,

১০৭ ও ১৬শ অকর ওক ও অবশিষ্ট অকর গণু ছৃষ্ট হর; বোঘাই নির্ণর-সাগর বছের মুদ্রিত প্রজ্ঞেক এবং রিস্ত-প্রিরা ও রস-মন্তরী টীকার বে পাঠ গুইাত ও ব্যাধ্যাত হইরাতে, তাহাতে পূর্বোক্তরপ অকর-বিক্তাস রক্ষিত হইরাতে। এ করু আমরা অগত্যা ঐ পাঠই গ্রহণ করিতে বাধ্য হইরাতি। • • • মহাকবি করদেবের রচনার ছলোভঙ্গ অস্তর্বাদ সর্বাদ্র বাহণ্য।" করদেবের টীকা ও অন্তর্বাদ সর্বাদ্র স্থাত বলিরা এ স্থলে দেওরা হইল না।

তথা রাগ ৷১

কহেই হেন হবে কি আমারে।

এ নয়নে দেখিব রাইয়েরে।
ললিতা-অঙ্গুলি করে ধরি।
অভিসার করব সুন্দরী॥
দে বদন-চান্দের মাধুরী।
দে হাস্ত সে বিনোদ-চাজুরী॥
দে নয়ন-কোণের চাহনি।
মুত্ হাস্ত মুখ-মোড়ায়নি॥
বলয়া-কিঙ্কিণী-ধ্বনি শুনি।
মদনকে জাগায় মোহিনী॥
ভাহা আমি শুনিব কিন্ন কাণে।
চমক পাইবেই মোর মনে॥
এ বজুনন্দন দাস ভবে।
রাই বিমু না রহে জীবনে॥৮১॥১৫০৫॥

পাঠান্তর

১। ইংগ প-র-সাপুথির ২০৫৪ সংখ্যক পদ।
'তথা লাগ' বংগ 'বিহাগড়া' প-র-সা। ২। 'কব'
क; 'কবে' চ, প-র-সা। ৩। 'সে' ক, খ।
৪। 'পাইবে' ক।

छथा जोग ।>

হেনই সময়ে এক স্থী। निक्श-मन्दित हारे पिथि । कट्ट यात्रि विटनान नागटन । দেখ রাই কুঞ্চের ভিতরে। अतिशा व्यक्ति उठि कान। সধী সত্রে করল পয়ান। बाहै। वभिर त्राधिका कुम्मती। मगूर्थ कहर्य कद रयां फ़ि॰ ॥ (क्य धनि मञ्ज व्यवसाध। হেন প্রেমে না করহ বাদ # হাম ভুয়া অনুগত কান। काट्ड क्विंग ट्याट्ड॰ यांन ॥ এত কহি চরণে ধরিয়া। गांधरत्र व्यवनी लागिहित्रा ॥ ্ কাতর দেখিয়া ধনী রাই। করে কর ধরে মুখ চাই॥ षुद्र (११७ मानिनी-मान। प्रवृत्तमन खन गांन ॥৮२॥১৫०७ ॥ পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা প্রির ২০৫৫ সংখ্যক পদ। ২। 'বৈসে' প-র-সা। ত। 'যুদ্ধি' দ। ৪। 'রুকো' প-র-সা। ৫। 'ধরি' ক, প-র-সা।

वाननी ।

রাই হেরল যব সো মুখ-ইন্দু।
উছললং মন মাহা আনন্দ-সিকু।
মান-জনিত তুখ সব ছুরেং গেল।
ছুছুঁ মুখ দরশনে আনন্দ জেল।
লালিডা বিশাখা আদি যত স্থিগণ।
আনন্দে মগন জেল দেখি ছুই জন।

নিকুঞ্জের মাবে দোরীর কেলি-বিশাস। ত্রহি দূরে রন্থ নরোন্তম দাস।৮০॥১৫০৭॥

. পাঠান্তর

)। 'উছम' थ। २। 'मृद्य' क, थ।

বিহণ্ডা ৷>

সরস বসপ্ত কুধাকর নিরমল

ু পরিমল বকুল রসাল।

রনের পদার পদারল রসবভি

गांरक मननत्रांशांन ।

वृन्तांवरन क्ली-क्ला-निधि कान।

হাস-বিলাস- মগন দিঠি মন্থর হেরি মুরছয়ে পাঁচবাণ ॥ঞ্চ

নব যুবরাজ পরশি ভরল মণি

পুছই মূলকি বাত।

ভরল-নয়ানি হাসি মূখ মোড়ই

ঠেলই হাভৰি হাভ ॥

ছ্তু রসে ভোর ওর নাহি পার্ট

त्रम हांचेर यहन हांनान ।

দাস অনন্ত কহ 📑 ইহ রস-কোতুক

विवक्न करर डांनि डान १৮८॥১৫०৮।

পাঠান্তর

১। এই পেষ্ট ২র শাধার ৪র্ব পরবে ২০৯ পৃঠার একবার উদ্ভ ক্রাছে; প্রভরাং পাঠাতর ও টাকা সেই ক্লে এইবা।

CHRIS IS

রজনি উজাগরি নাগর নাগরিং আঁখি মেলিতে নারে সুমে। অভিশয় রসভবে শুাম নাগরেরণ কোরে অজ তেলি রহণ নিসুমে। দেশ স্থি অপর্প ছান্দে।

ভাম নাগর-কোরে শুভিরা রহল ধনিও
কামু নেহারে মুখ-চান্দে ॥এ॥

কুটিল কুন্তল সবং শ্রীমুখ বেড়িল গোদ
সিন্দুর ভিলক মোছেও হামে।

কুয়লাও কবরি আধ বেননও পাটের জাদ
বীড়াও খসল কর বামে ॥

নীল বসন ভিগি অলে লাগিয়াছে গোওও
শ্রীজ্ঞা দেখিতে উদাস।
বৈছেও চান্দের কলাও মেহে ঝাপিয়াতে গোওও
নির্ধইওং গোবিন্দদার্গ ৮েব।১৫৩৯॥

পাঠান্তর

)। हेहां भ-ब-मां भूषित्र ১৫৩२। २०६१ ख প-র পুৰির ৩৯।৭ সংখ্যক পদ। 'কেদার' ছলে 'ধানশী' প-র-সা। ২। 'নাগর নাগরি' হতে 'রাই অনাগরি' প-র। ' ৩। 'অতিশয় রসভরে' স্থলে 'অধিক অলসভরে' প-র। ৪। 'নাগর'- খ, य। ৫। 'প্রাম' ইত্যাদি খনে 'রভির ছরমে রাই' প্-র। ৬। 'রহণ ধনি' হলে 'রবাছে গো' প্-র। १। 'कृष्टिन कुखन नव' श्रान 'कृषित कृषन' क, ब, ब, ठ, भ-त-ना। ৮। 'श्रेषुष विक्रिन भी' इरन 'डारन मानिवारह' क, थ, व, ठ, भ-व-मा। »। 'जिनक स्थारक' श्राम 'कांबन मुक्' क, ब, ठ, প-ब-मा। > । 'कूक्म' প-ब। >>। 'विनन' कः, '(वनम' ह, भ-द। १२। 'मिविक्' भ-द। ১০। '(बा' क, ब, ब, ह ७ भ-द्र-मा প्रविष्ठ नारे। >8। '(यमन' श-जू। >e। 'हारम' क। ১৬। 'त्वरच' रेकाबि ऋल 'बनल वानिश्राट ला' প-র। ১৭। '(**ছরত' প-র**।

महित्य ।)

দেখি সখি গোরি শুতল শ্রাম-কোরই। নাগলত নীল বতন কিয়ে কাঞ্চন কুবল চম্পক **জোর**। গোরি স্থনাগরি অধরে অধন ধরি ঘুমায়লণ বিদেশধ চোর। ক্নয়-ক্মলে অলি মাতি রহল অমুণ হিমকর শ্রামণ চকোর # তৃত্ব মনোহর পীন পদ্মোধর রাতৃল করযুগ> সাঞ্চ>। বিকচ কিয়ে ঝাঁপল উল্টি>২ কমল কনয়>৩ ধরাধর-রাজ>।। নাগরি গুরু উরু> নাগর বেচ্ল নাগরি-ভুজ • বেঢ়ি অ**জ**১৭। कलात विकृति करू বেচুল ছুছ ডমু (गाविक्सपान कर तक ॥৮५॥३७३०॥ পাঠান্তর

১। हेहा भ-त्र-मा প्षित्र २०८৮ ७ भ-त्र প्रिक ৩৯৮ ও ৪২।৪৯ সংখ্যক পদ। ২। 'কোরে' প-র-সা। ৩। 'লাগল' প-র-সা। ৪। 'রভবে' প-द। १। 'Cकारत' প-त-मा। ७। 'च्यन' প-র। १। 'কিরে' প-র। ৮। 'श्यिकदत्र देवरक, ब-या अ। त्वक, अ-य विश्वानात्रका 'করতল' প-র। 'লাকে' >>1 >२। 'खेलके' श-त। >०। 'कवलब' (१) थ। ১৪। 'दारक' भ-द्र। ১৫। 'छेरद्र' क, ह, भ-ता। भ-त ४२।४३। अम्। 'रियह' क, थ, य, ह, शन्त-मा। >>। 'तह धना' -वृत्व 'कह तृष्ट् भ-व उर्भाप्त ।

রাখকেলি।১ নলিনগণ হাসভ হিমকর মলিনং অরুণ-কিরণ হেরি থোর[®]। (कांकिल (वाटल° ভ্ৰমরকুল আকুল ভেজত কুমুদিনি-কোর॥ रेकरह चुमायुष्ठ यूगम किरमात । চঙ্জি কহত শুক সারিক জোর ॥ধ্রা নিচল-তমু খ্যামর কিশলয়-শয়নে মরকত কাঞ্চন গোরি⁹। কীয়ে কুত্বম-শর-তৃণ শুন ভৈল কিয়ে মুহু রভি-রসে ভোরি 🔏 সহচরি ছোড়ি মন্দির জমুগ্ণ যাওত জাগত্> সুন্দরি রাধে। গোবিন্দদাস-পত্ত শুনইতে কাতরুংং (कान क्यल वन-वाटल ॥৮१।>१>।। পাঠান্তর .

১। ইহা প-র-সা প্থির ২০৫৯ ও প-র প্থির ৩৯/১৪ সংখ্যক পদ। ২। 'কিরপে' প-র। ৩। 'হাসউ' ক, খ, ঘ, চ। ৪। 'বোর' প-র-সা। ৫। 'গানে' প-র। ৬। 'ঝামরু' প-র। १। 'আরি' প-র। ৮। 'ভোর' প-র। ৯। 'ছাড়ি' খ। ১০। 'চিলি' প-র। ১১। 'আগহি' প-র। ১২। 'আকুল' প-র।

গলত।

পদউধং কাক কোগিলা বামিনী শেবং।
ভূরিতে নাগরীং গেলা নিজ হর
বান্ধিতে বান্ধিতে কেশং ॥
ভারশ আলিসে ঠেসান বালিসেং
ভূমে চূলু জূলু আঁথি।
বসন ভূষণ হণনি উঠিয়া দেখি ॥

যবে মোর বালী শাশু ননদা

মিছা তোলে পরিবাদ।

জানিলে এখন বুইবে কেমন

বড় দেখি পরমাদ।

চণ্ডীদাসে কছে শুন লো স্কর্মার

তুমি সে বড়ুয়ার বহু।

শ্যামের মোহিনী - গুণের কর্মী শ্
লখিতে নারিবে কেন্তু ॥৮৮॥১৫১২॥
ইণ্ড্যাদি বাসন্তী-রাস-লীলা।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৬০ সংখ্যক পদ।
২। 'পথউধ' থ। ৩। 'কোকিলার' প-র-সা।
৪। 'শেষে' প-র-সা। ৫। 'নাগর' ক। ৬।
'কেশে' প-র-সা। ৭। 'ঠেলানা' ক; 'ঠেলাল'
প-র-সা। ৮। 'বোদল' থ, চ। ৯। 'মোহন'
ক, থ, খ, চ। ১০। 'কারণ' ক, থ, খ, চ।'

টাকা

১০—১৬। "চঙীদানে" ইত্যাদি। চঙীদান কহিতেছেন, হে স্থলরি। তুমি প্রবণ কর; তুমি কিনা বড়রার বধু (তাই তুমি তোষার নির্মাণ কুলে কলম্ব হবৈ বলিয়া কত আশহা করিতেছ।) কিছ স্থামের মোহিনী বিভার কার্য্য (এইরপ বে), কেইই তোষাকে লক্ষ্য করিতে পারিবে না।

শ্রীকৃষ্ণ চৈতত্ত্য-শ্রীনিত্যানন্দ-শ্রীঅবৈতচন্দ্র।
বগস্ত-সময়োচিত-গীতং।
বাসন্তী-রাগলীলা প্রকারান্তরং যথা।
তচ্চতি শ্রীশ্রীমহাপ্রভূ।
তুরা।
নাচেরে নাচেরে নিভাইং গৌর বিজয়ণিরা।
নামে প্রিয় গদাধর শ্রীনাগ কবৈত বর
গারিষদ ভারাগৃণ শ্রিনিয়া।

বাজে খোল করভাল মধুর-সংগীত ভাল হেন অবভারে গগন ভরিল ছরি-ধ্বনিয়া। চন্দন-চচিচ্ছ গায় काश विन्यू विन्यू छात्र वन-माना (मार्ल जारनः विनया। গলে শুপ্র উপবীত স্থাপ কোটি কাম কিত চরণে নৃপুর রণরণিয়া। हुरे छारे नाहिया यात्र সহচরগণ গায় গদাধর-অঞ পড়ে ঢুলিয়া ॥ পুরুব রন্তস-লীলা এবে পত্ত প্ৰকাশিলা (गरे दुन्मावन এই निष्या। ৰিহ্বে গঞার তারে (महे धोत मभीदत ব্ৰন্দাবনদাস কৰে জানিয়া ৮৮৯।১৫১৩ঃ পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৬১ সংখ্যক পদ। ২। 'নাচে নাচে' ক, থ, খ, চ। ৩। 'মধুবস গীত' প-র-সা। ৩। 'ভাল' ক, খ, প-র-সা। ে। 'কাজে' খ। ৬। 'হ্রে' চ; 'শোডে' প-র-সা। ৭। 'ইবে' ক, খ, চ।

क्नानि।)

গৌরাক কুন্দর নাচে। শিব বিরিজির অগোচর প্রেমং विट्डाव रहेवा बाट ॥ अ ॥ ब्राटमवर्ग कारवरम व्यक्त हत हत **हिन्द ब**ानाग्रा भट्छ। সোণার বরণ यूनोत्र शुक्तो कृत्य गड़ागड़ि बूल् । শুনিয়া পুরুষণ ष्माश्रम देवस्य वुक्तावन-व्रम जीना । कोई न-बार्ट्स প্রেম-সিকু মাবে **पृ**विना महोत्र वामा ॥

ংন অবভারে বে অন্য বঞ্চিত
ভারে করু কুপা-লেশেং।
শ্রীকৃষ্ণতৈভয় ঠাকুর শ্রীনিভ্যানন্দ
শুণ গায়ণ বৃন্দাবনদাসে ॥১০॥১৫১৪॥

পঠিকির

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০৬২ ও প-র পৃথির ১০০০ সংখ্যক পদ। 'কলাণী' হুলে 'বিভাৰ' প-র। ২। 'প্রেমধন' ক, ব, ব, চ। ৩। 'ভাবের বিভোর' ক, ব, ব, চ। ৩। 'ভাবের' প-র। ৫। 'গলপন' প-র। ৬। 'আলাঞা' ক; 'আউলারা' প-র-সা; 'আল্ঞা' প-র। ৭। 'ননীর' ক; 'নোনির' ব; 'স্থানর' চ। ৮। 'ভানিরা পুক্র' হুলে 'পুক্বে বে কিছু' প-র। ৯। 'নিক' ক; 'নিকাং' প-র-সা। ১০। 'আনকো' প-র। ১১। 'বরণ কর নাব' প-র। ১২। 'কর' ইডাাদি হুলে 'কুপা কর নাব' প-র। ১০। 'ঝণ পার', বুলে 'গার' প-র-সা।

ত্রভিসারিকা। ভূগানী।১

নব মধুমাস কুকুমমর গন্ধ।
রক্তনি উলোরল গগনহি চন্দ।
মলর-পবন বহে সৌরভ মেলি।
কৈতিল রাবং শুমর করু কেলি।
ঐচে বজনি হেরি রসবিতি রাই।
সহচার সহ নিজ বেশ বনাই।
কর্বাই চলাল ধান কালিক্সি-তীর।
ক্রামণ সহ তুই মাললং কান।
তুই ক্রন হেরই তুই কু বয়ান।
তুই মুখ হেরইতে মুতু মুছু হাস।
আন্দাস কর্বাই হুই বিশাস।
১৯৯১৫১৫৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৬০ সংখ্যক পদ। ২। 'রাও' প-র-সা। ৩। 'অপরূপ'ক। ৪। 'ফিলন'ক, প-র-সা।

धाननी ।>

মধুর যামিনি কাম কামিনি
বিহরে কালিন্দি-তীর।
কোকিল কুহরতথ স্থান ॥
রাধা মাধ্য সঙ্গণ।
সক্ষে সহচরি নাচয়েৎ ফিরি ফিরি

গাওয়ে রস-পরসক্ত । দ্রা

করছি বন্ধন কামকে কছণ
চরণে মঞ্জির রোলা।
কটিতে কিছিনি বাজায়ে কিনি কিনি
গণ্ডে কুগুল দোলাদ্ধ

রাই নাচ্ড কডকু রসভৃত • কামু হুত কড গাওই • ।

সবছঁ সখি মেলি রচয়ে মগুলি জ্ঞানদাস মতি ভাওই›› ।৯২।১৫১৬॥

পঠিবির

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৩৫ সংখ্যক পর।
২। 'কুহকত' ব। ৩। 'বহক কীর' হলে
'বহন কিরণ' প-র-না। ৪। 'সকে' প-র-না।
৫। 'নাচত' প-র-না। ৬। 'পরসকে' প-র-না।
৭। 'বোল' ক, ব, চ; 'বোলে' প-র-না। ৮।
'বোলে' প-র-না। ৯। 'কডক্ রন্ত্ত' হলে
'কডক্ রন্ত্ত' চ; 'কবক্রন্ত্ত' প-র-না। ১০।
'গারই' ক। ১১। 'ভারই' ক।

(क्षांत्र 1)

রাধা মাধ্ব সক।
বিহরত্বে প্রেম-ভরক্ত ॥
চৌদিশে সইচরি মেলি।
মণ্ডলি করি করু কেলি ॥
করিং করিং বন্ধান।
মাঝহি রাধা কান ॥
বছবিধ রাগিণি ছন্দ।
গাওত কভন্ত পরবন্ধ ॥
কত কভ যন্ত্র রসাল।
ভেদ পরনং ধরু তাল ॥
অপরূপ রাস-বিলাস।
কহ জগুমাহন দাস ॥১০॥১৫১৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৬ঃ সংখ্যক পদ। ২। 'করহি করহি' দ; 'করহি কর' প-র-সা। ৩। 'কডহি' প-র-সা। ৪। 'পরণ' প-র-সা।

***1461** 1

জিনি কাদখিনি আড়খিনিই পটা।
সম্পায়ন কম্পা কম্পিত চম্পা
কম্পিত বিখাধর কিখা অগুল
ডিখালর-স্থিতই ছটা। প্রা
ইন্দুবাংনি সিন্ধু অমিময়
বিন্দুই বিমলই সিন্দুর ক্লচিচয়
চন্দন বন্দন কেশার বেশারবর-মোতি-ঠটাই।
খল্লন-সভি-গল্পন লোচন
আচলর-অল্লন-রঞ্জন
ডম্প-ভাপ-বিভল্পন পদা
বিশ্বিশ্ব শ্রম্পন স্কটা।

শিবরাম শুণির তাগরধুগ্ নাগরধুগ্ তদ্ধি লীজ লীজ নীজ মুদল রলির তির-শুলির ঘটা ॥১৪॥১৫১৮॥

পাঠান্তর

১। 'আড় নিতৰিনী' ক। ২। 'ছবিড' ব।
৩। 'বিমু' ক, ব, চ। ৪। 'মিনব' ক, ব।
৫। 'ছটা' ক, ব। ৬। 'ডবিতরা' ক, ব, ব।
৭। 'নাগরধুগ্' ক, ব পুবিতে নাই। ৮। 'ডবির'
ব।

টাকা

১—৪। "বিনি" ইত্যাদি। (রাস-নৃত্যকারিশী অঞ্চলনাদিগের) পট অর্থাৎ পরিধের-বসন
আড়বরমর কাদবিনী-চয়কে জর করিরাছে। (উাহাদিপের দেহ-কান্তি) চল্পকপুল্সমূহের কল্প-সল্পাদন
ও (কান্তির) আজ্ঞানন করিরাছে। (তাহাদিগের)
বিবাধর কল্পিত হইডেছে; (তাহাতে নাসার নিরে
দলন-পঞ্জি কিন্দিৎ দৃশ্য হওরার) বেন ভিশ্-মুক্ত
নীড়োপবিষ্ট (শুক) পক্ষীর ভার শোতা হইরাছে।
(বোধ হয়, এ বলে শুকপক্ষীর চঞ্ নাসিকা-রূপে ও
দত্ত-রাজি অন্ত-পংক্তিরশে করিত হইরাছে; শুক্ত
চঞ্র সহিতে নাসা উপ্রিত হর বলিরা, এ বলে
অন্তর্গা শক্ষে শুক্ত-পক্ষীই বুরিতে হইবে)।

ছ-৮। 'ইন্দ্ৰদ্নি' ইড্যাদি। ইন্দ্ৰদনী (ব্ৰভাজনার।) অষ্ত্ৰ্যর সমুদ্ৰ-অৱপ; (তাঁহাাদপের) বিন্দ্-রপে শোভনান নির্দান সিন্দ্র, চলন, বৰ্মন (ক্ষ্-চূৰ), কেশর-(কুছুম) ও বেশর-নামক নাসা-লভাবের মুক্তার ঠাটু কি দীর্ভিবর।

৯—১২। "ধর্মন" ইত্যাদি। (তাঁহানিপের)
লোচন ধর্মনের গতিকে গরুবা করে ও অচলিত
অর্থাৎ অচ্যুত কজ্মল ধারা রঞ্জিত। (তাঁহানিপের)
চরণ-মৃপুরের বঞ্জন-রটিত শক্ষ শ্রীক্তকের (কল্মণক্রিত) বেহ-তাপের শান্তিকারী।

>७-->७। (नव-कडी) निवदांव 'कानवदुन्

নাগন্তবৃগ্ ইত্যাদিরপ বৃহদ-নদিশী অর্থাৎ বৃহদ্ধান্তব-বতা (ব্ৰক)স্ত্রীদিপের ভদীসমূহ বর্ণন করিভেছেন।

CHESTS IN

বিনোদিনি বিনোদ নাগর।
প্রেমে নাচে আনন্দে বিভার।
বাজত কড কড তান।
কড়ং রস করতহি গান॥
গগনে মগন ভেল চন্দ।
ফিরয়ে দীপ ধর° ছন্দ॥
অপরূপ তুহুঁক বিলান।
কহ বাধামোহন দাস॥১৫॥১৫১৯॥

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ১৫১৪ সংখ্যক পছ। ২। 'কত কত' ক, খ, খ, চ। ৩। 'থরি' প-র-সা। -

ी का

৫ -৬। "গগনে" ইত্যাদি। আকাশে চন্দ্র (শ্রীক্ষকের সহিত) ব্রজালনা নগের রাগ-লীলা নর্গনে বোহিত হইলেন এবং প্রদীপ-ধারীর ভার (রাগ-ছলী আলোকিত করিরা) পরিশ্রমণ করিতে লাগিলের। ভূগনা করুন,—

"ভূগণ পগনে সগণে রজনীকর চৌদশে কিরত শীপনর ছক।" —পোনিকান্য; গ-ক-ত, ১২৬৮ সংখ্যক পর্ব।

विश्वाच ।>

বৃন্দাবন রম্য স্থান কোটি-চিন্তামণি-বাম রঙন-মন্দির মনোহর। আনন্দে কালিন্দা-জলে রাজহংস কেলি করে ক্ষাক-ক্ষাল উত্তপল। ভার মধ্যে হেম-পৃষ্ঠং অন্টনলে বেপ্তিভ
অই সধী প্রধানা নারিকা।
ভার মধ্যে রত্মসন° বসিলেন তুই জনং
শ্রাম গোরী স্থানর রাধিকা॥
তংক্ষপ লাবণ্য-রাশি অমিয়া পড়িছে ধসি
হাস পরিহাস সম্ভাবণে।
নরোত্তম দাস কর নিত্যানন্দ স্থান্য স্পাই সোভক্ষক ও মোর মনে ও ॥
॥৯৬॥১৫২০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৬৬ ও প-র পুথির
৪০৪৮ সংখ্যক পর। 'শ্রীরাগ' ছলে 'কানড়া'
প-র-সা। ২। 'হেমপীঠ' ক; 'অই প্রেষ্ঠ' প-র।
৩। 'রমা ছানে' প-র। ৪। 'বসিরাছে' ক, খ,
প-র-সা, প-র। ৫। 'জনে' প-র। ৬। 'মণি'
প-র। ৭। 'নে' প-র। ৮। 'হাস পরিহাস'
ছলে 'সহাস মধুর' প-র; ৯। 'রসমর' ক।
১০। 'শ্রক্ক' প-র-সা।

পঠবল্পদ্রী।১

ভাগি মনোহর সুক্ষরি সক।
ভূতেই সূহাঁং হেরি হেরি করু কত রক।
নর মধু মাসে নিধুবনং গাজ।
তৃত্ত সুধ মঞ্ল কুঞ্চ বিরাজ॥
রাধামাধর রভিং -রস-কেলি।
বিদ্যাধ নাগর বৈদগধি মেলিং ॥
লুড় পরিরম্ভণ পুলক ভূজ দও।
চূম্বনে লুবধল সূত্ত জন-সও॥
তৃত্ত -অধরাম্বত চূত্ত জন শীব।
ভূতেনে পুলত হেমক শীবং॥
আন্তৃত্ত নামগ্র আনুত্ত কানং।
আন্তিরসোহেলে জ্ঞালাগীতেনাব ॥

তুহঁ গুণ-রূপ-কলা-রূস-সামা।
জ্ঞানদাস কর তুহুঁক মহামা ১৯৭॥১৫২১॥
পাঠাতর

১। ইহাপ-র-সাপ্রির ২০৬৭ সংখ্যক পদ।
২। 'বোহেঁ ছক্' ক; 'ছক্ ছুহে' প-র-সা। ৩।
'নিধ্বনে' ক, খ, খ, চ। ৪। 'ছক' প-র-সা।
৫। 'বিদগধ' প-র-সা। ৬। 'শিব' ক, খ,
প্-র-সা; 'সীব' খ। ৭: জানদাসের পদাবলির
মুক্তিত সংকরণে 'অধুত নার্রি অধুত কান' পাঠ আছে,
কিন্তু আলোচা কোন প্থিতেই ঐরপ পাঠ ছুই হইল
না। ৮। 'সীমা' প-র-সা। ৯। 'মহিন' ক, চঃ
'মহিমা' প-র-সা।

টাকা

৯—১০। "ছহ" ইত্যাদি। উভরে উভরের অধরামৃত পান করিতেতেন, (অধিকন্ধ) **উরুক্ত** উৎপল (করাস্থালি) বারা অর্পের নিবলিদকে (জীরাধার পরেধির) পূজা করিতেছেন।

১১—১২। "কার্ড" ইত্যাদি। (গাছ আলিলন হেতু) নাগরী শ্রীরাধা (শ্রীক্লফের অভবারা)
আছোদিত এবং শ্রীক্লফ (শ্রীরাধার অভবারা)
আছোদিত, পঞ্চবাপ কলপ রসাধিক্য হেতু অবশ
হইল অর্থাং তাহার আর বিক্রম প্রকাশের শক্তি
রহিল না। ('অন্বত নাররি' ইত্যাদি গাঠের 'অন্বত'
শকটির এ হলে কোন সভত অর্থ হয় না; 'র্মবীর'
অর্থে 'অন্বত' শক্ষের প্ররোগ দেখা বার না; 'র্মবীর'
অর্থ 'অন্বত' শক্ষের প্ররোগ দেখা বার না; 'র্মবীর'
অর্থ তারলে 'অতিরুসে ভেল অবশ পাঁচবাল' পরবর্ষী
গংক্তির সার্থকতা থাকে না; স্কুতরাং 'এন্তুড'
ইত্যাদি পাঠ কোন প্রত্তে পাঙরা গেলেও উত্থা
লিপিকর প্রমাদ কনিত বলিরাই বিবেচনা করিতে
হইবে।)

কোর।> রতি-রনে যাতল অভিনয় নাহ। অনিরা-সরোধনে ছুর্ছ অবগাহ। সহজে নিরশ্বশ নাগর-রাজ ।
ভাতে মনমগ-নৃপ-কেট্রক কাজ ।
দৃঢ় পরিরস্তবে ঘন সিতকার ।
অমুধণ কিন্ধিশি কররে ফুকার ॥
কর সহি রাখিও যুগ চকেবা ।
দংশইতে সরসিজ বারব কেবা ॥
কর ছবিবল্লভ সহচরি-কুলে।
দেশই নিস্তুতে উলাসহি ফুলে ॥

112012655

Assign Hole

পাঠান্তর

এই গদটি ২য় শাধার ৩য় শয়বে ৩০১
সংখ্যক পদয়পে উভ্ত হইয়ছে; স্তরাং পাঠাত্তর
ও টাকা ঐ পদে য়য়বা।

विश्वकृ ।>

স্থান্ত সমাপি শুভল বর নাগর পাণি রহল কুচং আপি। কনক-শস্ত্ৰ, বৈছে পুজকে পুরাওল नीम मदबाक्य वांशि॥ नाथ एवं एक भव-८क नि-विकारम[®]। मानि जिन-३मि নাহ আগোরল পুন রতি-রক্তক আশে 🛚 🗗 🖁 বদৰ মিলাই ब्र्ह्म सूथ-स्थ्रन कमाल मिलारे रिया हिन्छ।। শ্ৰমৰ চকোৰ গ্ৰহ রভদে মিলারই **পিবই अभिश्ना-मक्त्रम ॥** ় জাগি সৰ স্থিপণ बिणि-जब्दणद्य विष्ट्रम-छात्र कक्न (थम । ভণয়ে বিভাপতি माज्ञभ विवि देवन एकम ।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ২০৬৯ ও প-র পুৰির ৩৯/১০ ও ৪২/৪৭ সংখ্যক পদ। 'বিহুগড়া' এবলে 'বিভাস' প-র ৩৯/১০ । 'বরাড়ী' প-র ৪২/৪৭। এই পদটি ২৭৪৪ সংখ্যক পদরপে পুনক্ষভূত হইরাছে। ২। 'রহল কুচ' কলে 'প্রোধ্রে' পার। ৩। 'কুঙ্খ' পার-সা। ৪। 'পুজকে' ক। ৫। 'পুজারল' ক। ৩। 'স্থি হে' ইত্যাদি কলে ১৫২০ সংখ্যক পদ্মের ক, খ, ব, চ ও পার-সা পুৰির পাঠ, বধা—
'রাধা মাধ্য কেলি-বিশাদে।

আবেশে কোরে আগোরল পুন পুন অতিশর স্থয়ত ভিয়াসে ॥' ২৭৪৪ সং পদের ও প-র পুথির গাঠ, বুথা— "সথি কে মাধ্য কেলিবিলাসে। আরতি রভিরসে কোরে যুমারল

নগেক্তবাৰু মিধিলার ভালুগতের পুথি হইতে এই পাঠের পরিবর্তে নিমলিধিত পাঠ উভ্ত করিয়াছেন, যথা—

পুন পুন সুরতিক আশে ৷ঞ্৷"

"সথি হে মাধ্ব কেলি বিলাসে। মালতি রমি অলি নাই অপোরসি পুড় রতিরকক আসে॥"

সার প্রিরারসন সাহেবের সংশ্বরণে কিন্তু 'নাই' অংগারাস' পাঠের পরিবর্চ্চে 'নাই অংগার্নি' পাঠ দুই হয়। নগেন্দ্র বারু 'নাই' শব্দের অর্থ—'ভার' ও 'আসোরসি' শব্দের অর্থ—'ভার' ও 'আসোরসি' শব্দের অর্বাসান্ত্রীপদাবিল-সাহিত্যে দুই হয় না; 'আওলাইতেছে' অর্থেণ ন্যায়-পুরুবের স্বচক 'সি'-বিভক্তিযুক্ত 'আগোরসি' পাল হইতে পারে না; স্বভরাং নরেন্দ্র বারুর প্রতিপাদিত অর্থ সমর্থনিবার্গা নহে। সার প্রিরারসন এই পালের ইংগেনি অন্থবাদে 'নাই' শব্দের অর্থ 'bendeth' ও 'অগোর্নি' শব্দের অর্থ 'watohebh' লিখিরাছেল। ব্যক্তঃ এ ব্রলে 'নাই'

প্রকৃত পাঠ হইলে, উহার অর্থ 'নোয়াইরা' অর্থাৎ 'bending' হইবে; কিন্তু আমাদিগের বিবেচনা হয় কুবে, নগেক্ত বাবু কিংবা স্যন্ত গ্রিয়ারসনের শ্বত পাঠ শিশিকর-প্রমান-রহিত নহে। মৈথিল প্রথির প্রায় অফ্রপ বিশুদ্ধ পাঠ "হরিবল্লত" নামে প্রসিদ্ধ বৈক্ষবাচার্য্য বিশ্বনাথ চক্রবর্ত্তা মহোব্যের সক্ষণিত 'ক্লণ্যা-গীত-চিন্তামণি' গ্রন্থেই ষৃষ্ট হয়, ব্যা—

'স্থি হে কেখব-কেলি-বিলাসে। মানতি অলি-র্মি নাহ আগোরল

পুন রতি-রক্ত আশে॥'
অর্থাৎ 'স্থারত স্থানি' ইত্যাদি প্রথম কলিতে
নায়কের রতি-প্রান্তি বর্ণন করিয়া, দিতীর কলিতে
পাকর্কটা প্রীরাধার শরন-পদ্ধতি বর্ণন করিয়া বলিতেছেন বে, অলিদারা রমিত মালতী (ধ্বনি-পমা
অর্থে নারিকা) পুনর্কার রতি-বিলাদের আশার
নাধকে (ধ্বনি-পমা অর্থে নারককে) জড়াইয়া
ধরিয়া রাধিল। গীতিচন্তামনির পাঠই স্মীচীন
বোধে সুলে গুণীত হইল।

' অভংগর ১ ইং৩ সংখ্যক পদে ক, ধ, ব, চ ও প-র-সা পুথিতে নির্দিখিত প্রন্ধিত কলিট দৃষ্ট হর, বধা,—

'ছছ ছছ' নিবিড আলিলনে চুখই

ছছ'-রসে হছ' মন ভোর।

অধর-অধারদ পীবই ছছ' ছছ'

কো কহ আরতি-ওর ॥

প্ৰক্ষতক্ষ হৰ্ব দাধাৰ ২৭৪৪ সংখ্যক পৰে, কিংৰা 'প্ৰাষ্ঠ-সমূত্ৰ', 'প্ৰতিভাষণি ও 'প্ৰ-ব্যাক্ত' প্ৰাক্ত এই কলিট না ধাকাৰ এবং 'প্ৰদাসত-

রশ্বাকর' প্রছে এই কলিটি না থাকার এবং 'পদাস্ত-সমূল' প্রছে রাধানোহন ঠাকুর কর্ত্বক ইহার প্রার সম্ভূপ-ভাবাত্মক 'বছন নিলাই' ইত্যাদি কলিটি উদ্ধৃত ও ব্যাথ্যাত হওৱার, 'হ্হ' হ্হ'' ইত্যাদি কলিটি প্রাক্তির বলিয়াই প্রতীতি হইতেছে।

१। 'বছন' ইজ্ঞানি কলিটি ১৫২০ সংখ্যক পালে
নাই, কিছ ০ব লাখার ২৭১৪ সংখ্যক পালে ভ

'পৰামৃত-সমূত্ৰ' প্ৰভৃতি সকল প্ৰছেই আছে; স্থাভৱাং উহা অপৰিহাৰ্য্য বোৰে মূলে গৃহীত হইল। ৮। 'নিশি অবশেষে' ইত্যাদি তণিতার কলিট কেবল 'পদ-বভাকর' পুথিতে আছে; ইহার পৰিবর্জে নগেক্ত বাবু তালপত্রের পুথি হইতে নিম্নলিখিত পাঠ উদ্ভুত কৰিয়াছেন, বথা—

'ওপই অমিকর প্রন্থ মধুরপতি রাধাচরিত অপারে। রাজা সিবসিংহ জপনরাখন

স্থকবি ভনৰি ক**ঠ**হায়ে॥'

নগেল বাবুর ক্বত ইহার অর্থ—'অমিকর—অনুতকর, শিবসিংহের মন্ত্রী।' অনুতকর নামের সহিত
বুক্ত ভণিতা নগেল বাবুর সংগ্রহেও আর নাই।
বিশেষতঃ সার গ্রিমারসন ইহার পরিবর্তে নিরনিথিত পাঠ উদ্ধৃত করিয়াছেন, বর্ণা—

'গুণহি' বিভাগতি শুনহ নধুর পঞ্জি রাধা চরিত অপারে।

রাজা শিবনিঁহ রূপ নারারণ প্রাণবতী কঠহারে ৪°

এ হলেও ভাগ-পত্তের পুথির পাঠ প্রান্ত বলিরাই অন্তব্যান হর।

টাকা

৮—>>। "বদন" ইত্যাদি। (জীরাধার)
বদনে (নিজের) সুথমগুল, নিলাইরা (গ্রীকৃষ্ণ)
রহিলেন—বেন চক্র (নীল) কমলের সহিত নিলিত
হইল। (চক্রের সহিত কমলের স্বাতাবিক বৈরিতা
থাকার এই অসম্বন্ধিলন হারা 'অভ্যতোপনা'
অগ্রার ঘটিরাছে।) জীক্রক্ষের চঞ্চল-মর্বন-রূপ
ল্রমর ও জীরাধার নিঃশান্ধ-নরন-রূপ চক্রের পরশার্ভরূপ মধু পান করিভেছে।

তথা নাগ।
নওল কিশোর নওল নাগরিয়া।
আপন ভূজে তাম-মূখ-মণ্ডল তাম-উরে নিজ উর ধরিয়া ॥
করত বিনোদ তরণি তনয়া-তট
উপারে অমির-রস ভরিয়া ॥১০০॥১৫২৪॥
ইত্যাদি বাসন্তী-রাস-লীলা।

অথ ফুল-দোল। তত্র শ্রীমহাপ্রভূ। ভূজী।>

ফুলবন গোরাচাঁদ দেখিয়া নয়নে।
ফুলের সমর গোরারং পড়ি গেল মনে।
ঘন জয় জয় দিয়া পারিষদগণে।
গোরা-গায়ে ফুল পেলিও মারে জনে জনে।
প্রিয় গদাধর সজে আর নিজানন্দ।
ফুলের সমরে গোরার হইলও আনন্দ।
গদাধর সজে পত্ত করয়ে বিলাস।
বাস্থদেব খোষ এই করলও প্রকাশ।

পাঠান্তর

১। ইছাপ-র-সাপুথির ২০৭০ সংখ্যক পদ। ২। 'লোর' ক, প-র-সা। ৩। 'ফেলি' ক। ৪। 'সমরে' ইত্যাদি ছলে 'সমরে সৌর বিহরে' প-র-সা। ৫। 'রস' ম।

বরাড়া।>
বন মাহা কুন্থম ভোড়িং সব স্থিগণ
স্বাস সমর করু ভাহিঁ।
মারত বদন নেহারি কুসুম-শর

ি শোৰত সময়ক মাহি^ৰ ॥

কো কছঁ মরমক । কেলি ।

নওল কিশোর নওল বর গাসরি

ললিভা বিশাধা সধি মেলি ॥ এ ॥

মণিময় ভূষ । ভুমু ভুমু শোহন

রুণু বৃন্ধ নৃপুর বাজে ।

গোবিন্দদাস কহ রুমণি-শিরোমণি

জীতলা বিদ্যধ-রাজে ॥১০২॥১৫২৬॥

১। ইহাপ-র-সাপুৰির ২০৭১ সংখ্যক পদ।
২। 'ভৌরি' ব, 'ভেজি' চ। ৩। 'সাহি'
প-র-সা। ৪। 'সমরড' প-র-সা। ৫। 'নহ'
ক। ৬। 'ললিভাদিক' প্র: পুৰি। ৭। 'ঝুরু
ঝুহু'ব, প-র-সা। ৮। 'জভল' ক, চ, প-র-সা।

পাঠান্তর

कमानि ।>

 লেই সব স্থিগণ ফুলক গেন্দু ভারয়ে শাসক অলে। আন্তত শ্রামণ . সুবড় রণ-পণ্ডিড वर्षे मूवन कवि मान ॥ অপরুপ রাইক কেলি। দূরহি তাকি গেন্দু পেলি মারুরে শ্যাম-অকে স্থি মেলিং ॥ এই ॥ রোখলি তহিঁরণ- রসিক-শিরোমণি ফূল-ধ্যুক পেই হাত। এক বেজি ভারয়েণ শত শত গেন্দু সবছ সখীগণ মাণ্ড 🛚 রমণি ভেল একষুণ युथि युथ শ্যাসক অংক পড়ারে ফুলরাশি। ফুল-ধমু ছোড়ি করছি কর্ণ বার্তী भीत्रवाम दे**ष तम शतका**णि ॥

পাঠান্তর

১। ইছা প-র-সা পুৰির ১০৭২ সংখ্যক পদ।
২। 'আঙল' ক। ৩। 'ত্বৰল' ক, খ, চ প-র-সা।
৪। 'কেলি' খ। ৫।' 'শ্ৰাম-' ইত্যাদি ত্বলে
'কোডুকে শ্ৰাম সধী মেলি' খ। ৬। 'ফুল' ক,
খ, প-র-সা। ৭। 'ডারত' প-র-সা। ৮। 'সাধ' প-র-সা। ৯। 'এক্যুখ' ক, প-র-সা। ১০। 'ক্ত' ক, খ, চ। ১১। 'বারঙ' ক।

ভূপানী।১

নিধুবনে হাধামোহন-কেলি।
কুত্ম-সমর করু সহচরি মেলি॥
বুলা দেবা বোলাওত ফুলং।
বছনিধ গোডক হচিত বকুলং॥
সহচরি কুল্ম বিশেষ শুলম অল।
গোড়ল পিঞ্মুকুট বছ রল্প॥
লাখে লাখে গোল্দু পড়য়ে শুলম-গায়।
মধুমলল সহ স্থাল পলায়॥
স্বিগণ মেলি দেই করভালী।
কুল-ধত্ম লেই কিরমে বনমালা॥
রাইক সলে করমে ফুল-রণ।
কোই না জীতরে সমং তুই জন॥
আদভ্ভ তুরুঁ জন কুত্ম-বিলাসং।
বেরি বহুনন্দন জানন্দে ভাসং॥

#>=8#**>**\::P#

পাঠান্তর

ইহা প-র-সা পুথির ২০৭০ সংখ্যক পদ।
 ব্লপ ফ, চ. প-র-সা। ৩। 'বরুল' ক, চ,
 প-র-সা। ৪। 'বের' পার-সা। ৫। 'সহান'
 ব। 'কুসল'ব। ৭। 'উল্লেস্ প-র-সা।

छवा मान ।>

সমৰ সমাধিখা যুগল কিলোর। আওল তুত্ঁ যাহাঁ কুত্ম-কিটোরং # বুলা দেনি-রচিত ফুল-দোলা। কুলয়ে তুহু জন আনন্দে বিভোগ। ॥ কুন্থম বরিখে সব সহচরি মেলি। গাওত বহুবিধ মনসিজ-কেলি ॥ কত কত বন্ধ সুমেলি করি। নাচত গাওত ভাল ধরি॥ দোলত হুছ ভন কুত্ম-হিপোরে। कु किरा कु मिश्र दारे बारकारत ।। তডিতে জড়িত জমু । কলধর-কাভি। পা মলে ধাওলা মধুকর-পাঁতি॥ অপরূপ দোলত কেলি-নিকুঞে। হছ পর কুড়ম পড় 🏲 পুঞে পুঞে ॥ ছত মুখ হোর ছত মৃত্ মৃত্ হাস। বেরি মুগধ বহুনক্ষণ দাস ৪১০৫॥১৫২৯॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পু. ধর ২০৭৪ সংখ্যক পদ।

২। 'কুথ্মক ভোল'ক; 'কুথ্ম হিংগ্রাণ' ব, চ;
'কুথ্ম হিংগ্রাগ' ব, চ।
৪। 'ঝাঁকোরে' ব, চ; 'ঝোকারে' প-র-সা।
৫। 'ঝাড়ডে'ক, ব, চ। ৬। 'ডথ' প-র-সা।
৭। 'ধাওড' প-র-সা। ৮। 'পড়রে' ক, চ,
পর-সা।

गठेवक्षत्रो ।ऽ

क्न-बदन द्यानद्वर क्नम्ब ७० । क्नम्ब व ०३० ०८० क्न-पद्म ॥ क्रमम्ब विजिज्ञ क्रम्मम् क्रा । क्रमम्ब निव विवद्य क्रम-न्य ॥

বিনোদ মালা

ফুল-ভত্ম হৈরি মুগধ ফুল-বাণ।
ফুল-শরে হানল ফুলমর কান ॥
ফুলে উরল বন ফুল-বায়ু মন্দ।
ফুল-রসে গুঞ্জরেদ মধুকর-বৃন্দ।
অপরূপ ফুল-বোল ফুল-বিলাস।
ফুল করে রহ বত্নন্দনদাস ॥

>00# >600#

ইভ্যাদি বাসন্তী ফুল-দোল-লীলা।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৭৫ সংখ্যক পদ। ২। 'দেখিরা' ক, খ। ৩। 'ফিভিডল' ক। ৪। 'বরিখে' ক, খ। ৫। 'ফুল সরে' প-র-সা। ७। 'ফুলে' ক, চ, প-র-সা। १। 'ডফ্' প-র-সা। ৮। 'ৠয়রে' ক, খ, প-র-সা। ৯। 'পৃঞ্জ' प। ১০। 'ফুল' ক, চ, প-র-সা।

> অথ মাধবী-বিলাস। ভতুচিত শ্রীগোরচন্দ্র।

वैद्यान ।>

চৌদিকে ভকতগণ হরি হরি বলে।
রক্ষন-মালতী-মালা দেই গোরা-গলে ॥
কৃত্ম কস্তরী আর সুগদ চন্দন।
গোরাচাঁদের অকে সব কররে লেপন ॥
রাজা-প্রোক্ত পট্রাস কোঁচার বলনি।
কলমল করে কিরেই অলের লাবনি ॥
চাঁচর চিকুরে চাঁপা মনোহর বুটা।
উন্নত নাসিকা উদ্ধ চন্দনের কোঁটা ॥
আলামুলবিত সুল সরু পৈতা কাছে।
মন্ত্র বৈষ্ণন পাঁঞা বুলি কুলি কালে ॥

দেবকীনন্দন বলে সহচর সলে।
দেখ সভে গোরাচাঁদ শ্রীবাস-ভবনে ॥
॥> ০ ৭॥১৫৩%

পাঠান্তর

)। देश প-द-ना পুথির ২০৭७ मংখ্যক পদ। ২। 'ঝগমল ঝলমল করে' ক, খ, চ।

क्री।

विरनाम कुरलबर

विताम गतन तमातन। গাঁখিলে মালা कान विस्निमिनी वित्नाम वित्नाम कृत्न ॥ अ ॥ विद्रमान दक्ष বিনোদ বেশ विट्नाम वद्रग-शनि। গলায়• জালা विरनात्र माना विरनाम विरनामं १ रमामनि ॥ বিদোপ চিকুর विरमाप वक्रम বিনোদ মালা বেড়া। বিনোগ চাহনি विद्याप नग्नादन विटनाम आधित्र जाता ॥ विर्भाग मुप विदनाम युक विताम (भाषा करता। विट्नांग नागव विटनाम नगरत विरुद्ध । विद्नाम विद्नाम विरमाप हलम विताम वननः वित्मान निषया नत्य। विटमानिमी मुश्यू লোচন ৰোলে विटन्ष (भोत्राटक १००४) १००४।

)। देहा शन्त्रना श्रीवेत २०११ गरवाण श्रेषः। अहे श्रोति वर्षे भक्तिति २००२ गरवाण श्रेरकार

প্নক্ষ ত रहेशांছে। २। 'कूरन' क। ०। 'शांबिन' ष, ह (১৫৩२ त्रश्याक अन)। ।। '(त्रोद' क, ब, षु, ५ (১৫७२ मःथाक शह)। 🔞। 'नेबीब' क, ब, ष, ५ (১৩१२ मरबाक भए)। २১७२ मरबाक भएए ও প-র-সা প্ৰিতে 'গৌর' ও 'শরীর' স্থলে বধাক্রমে '(कम' ७ '(दम' भार्ठ चाह्न, डेहारे ममीहीन वारध मूरन शृशेष्ठ इरेन। ७। 'शना' क, ५, ६; 'भगारक' थ। १। 'विस्ताम' हेळामि ऋरग 'विनम लाननि' भ ; (भ, भ, ७ ह পूथिट 'विरनान' স্থলে সর্বাত্ত 'বিনদ' পাঠ আছে)। ৮। 'বান্ধা' क, ब, ब, ह (১৫: २२ मरबाक श्रम); 'वस्त' भ-द्र-ना। २। '(कभ' क, ब, ब, ह (১৫৩২ সংখ্যক भए)। ১०। 'विनम' क, च, **५** (२५७२ **मः** बाक পদ)। ১১। 'বসন' ধ (১৫৩২ সংখ্যক পদ)। >२। 'विद्नोमिनिव मदन' थ (२००२ मः बाक भन)। o। 'त्रात्राहात्म' थ।

बत्राड़ी।>

মাধৰ মাধবি মাধ্বি-কুঞ্জহিং वित्रहरे मांधवि-८वणः। মাধবি-ছার वनम् कत्र-कश्र মাধবি-স্থুরচিত কেশ। (मथ निव भाषवि-त्रक । যাকর কুত্মহি স্বমহি ভূলন मांधव मांधवि जल ॥अ॥ त्वा मथू-मरम छन-মত মধুকর বর অবিরত করত ঝঞ্চার। विज्ञान चन चन মজল-কলরব ভক্লগণ কল-ফুল>-ভার॥ कूडूम छलान युग-माम त्लाभन कक्र इकिनिश्रन अक्र।

শাৰৰ হেরভ রক্ষ ।১০৯।১৫৩৪। 🗀

ত্তমু তমু ১ উত্তপ্ৰ

তমু তমু বতমু মু-

্ পাঠান্তৰ

১। ইহা প-র-না পৃথির ২০৭৮ সংখ্যক পদ।
২। 'বাধব কুঞ্ছি' ক। ৩। 'কেশ' ক, খ,
প-র-না। ৪। 'বেশ' ক, খ, প-র-না। ৫।
'কুহ্মহি' ব। ৬। 'জুলন' ক, ঘ, চ, প-র-না।
৭। 'বিজবর' ক। ৮। 'জুক্রর' ক, খ, ঘ, চ।
৯। 'ফুলে' খ। ১০। 'সুতত্তু তর্ম্ম' ব পূথিতে
নাই।

भाष्त्र । >

চ্য়াং চন্দন

वस्तन॰ शादित्राहन

(लशहे इह जन जक ।

কুন্থন-শিক্ষার

কুস্ম-স্কুমারিক

করু সখি মাধ**ব স**ক্ত ॥

দেখ দেখ বিনোদ বিলাস। শ্রীরুন্দাবন নিরুপম

নিক্লপম-শোভন

আনন্দে ফুল ছলে ছাস। এ ॥ কোকিল শবদে পভিরণ গদগদ রবণ

কপোত-শবদে সিঙকার। মুক্ল পুলককুল আসবদ বার বার

जगू लाहरन जन-शंद ।

হেরি গুরুঁ স্থি সঞ্জে নিমগণ জৌড়নে ।

কত কত অভনু-বিলাস।

মাধব হৈরি মন আনন্দে ভূলন>>
আপন সহচরি পাশ ॥>> ॥১৫৩৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ২০৭৯ সংবাক পদ।
২। 'চ্বা' ক, চ, প-র-সা। ৩। 'আগর' ব;
'আগোর বহুল' চ; 'বহুল' চ, প-র-সা। ৩। 'আলে' প-র-সা। ৫। 'কুফ্র' ইক্যাদি পংক্তিবর হলে ব পুৰির পাঠ ববা;—

'इसन संस्थातिक सूनमें निर्माण कर्य गायनक सामका क्रिकेट e-- १। "দেখ" ইত্যাদি। (প্রীরাধা ও প্রক্রকের) মনোহর বিদাস-দীলা দর্শন কর। অভ্ননীর শোভা-মুক্ত প্রীর্ম্পাবন (ঐ দীলা দর্শন করিরা) পূলা-ছেলে হাক্ত করিতেছে।

৮—১১। "কোকিল" ইত্যাদি। (নীলাদর্শন করিয়া প্রীক্ষাবনের কিরূপ গদগদ প্রভৃতি
নাদ্বিক ভাবের উদয় হইরাছে, তাহা দেখাইতেছেন)
কোকিলের শব্দে (প্রীক্ষাবন) গভীর গদগদ-ধ্বনি
ও কপোতের শব্দে হছার প্রভৃতি শীৎকার-ধ্বনি
(প্রকাশ করিতেছে); (প্রীক্ষাবনের তক্ষসমূহের)
মুকুল (ভাহার) রোমাঞ্চ ও আসব অর্থাৎ মধু বেন
ভোহার) নরনে অঞ্জ-ধারা অব্ল বিগণিত হইতেছে।

थानने ।>

চন্দন-চরচিত বিরচিত বেশ।
কুমুম-বকুল-মালে বাবল কেশ।
মাধবি-কুঞ্জে রাই সধি সল।
বিনহ²-বিলাসে মগন স্থাম-অঙ্গ ।
কাঞ্চন-কেতকি চম্পক-দাম।
ধনি-অঙ্গে বিরচল নাগর স্থাম।
নাগরি কুবলয়ে বিবিধ শিকার।
নাগর-অঙ্গে রচত কত আর ॥
কুছুম চন্দন রাই অঙ্গে দেল।
স্থামতকু স্থামদে লেপন কেল।
স্থামতকু স্থামদে লেপন কেল।
ক্রমু তকু তৈছন স্বিলাওল বেশ।
কি ক্রব মাধব ভাকর শেব ॥
॥১১১॥১৫৩৫॥

ইভ্যাদি নাধৰী-বিদাস।
নুধাকে এতদগীতং গেরম্।
ইতি ভূতীর-নাধারাং নুধাবংশতিপারবঃ।

পাঠাব্রদ

১। ইহা প্ৰ-ল্ল-সা পুৰিল ২০৮০ সংখ্যক পদ। ২। 'বিনোদ' ক, প্ৰ-ল্ল-সা; 'বিনোদ' পাঠে ছলোভক ঘটে। ৩। 'বৈছন' ক।

অথ জৈাষ্ঠী-পূর্ণিমায়াং স্নান-যাত্রা। তত্ত্বচিত-গোরচন্দ্রঃ।

चूर्यानी ।>

শাখ সুন্দুভি-নাদং বাজয়ে সুস্বরে।

গোরাচাঁদের অভিষেক করে সহচরে।

গান্ধ চন্দন শিলা ধূপ বাপ জালি।

নগরের নাগরিগণ আনে অর্থ্য-থালীং।

নদীয়ার লোক যত দেখি আনন্দিত।

ঘন জয় জয় দিয়া সভে গায় গীত।

গোরাচাঁদের মুখ সভে করে নিরক্ষণে।

গোরা-অভিষেক-রস বাসু ঘোৰ গানে।

17176001

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৮১ সংখ্যক পদ।
-২। 'নাগ' ক, ধ পুথিতে নাই। ৩। 'বাজই'
প-র-সা; 'বাজার' ঘ। ৪। 'নারীস্প' ক, ধ।
৫। 'আ্যা' (আ্লাণু) প-র-সা। ৬। 'বেথে'
ক; 'গুনি' য। গ। 'স্ব' ক।

पत्राङ्गी (गणाक 1>

তৈল হরিন্তা আর কুরুস কন্তরী।
গোরা-অঙ্গে লেপন করে নব নব নারী।
স্থাসিত জল আনিং কলসেও পুরিয়াও।
স্থান্ধি চন্দন আদি তাহেও সিপাইরা এ
জয় জয় দিয়া জল চালে পোরা-গার।
ব্রিজ্য লোছায়াও কেহ বসন পরার ।

সিনাৰ-মণ্ডপে দেখ গোৱা নটবার। মনের হরিবে বাহুদেব খোব গায়॥২।১৫৩৭॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০৮২ সংখ্যক পদ।
২। 'পুরি' প-র-সা। ৩। 'কলসী' ক। ৪।
'আনিরা' প-র-সা। ৫। 'আনি' ক, দ, চ,
প-র-সা। ৬। 'মোছাঞা' ক, ধ; 'মুছার'
প-র-সা।

च्या यात्र । ३

বসিলা গৌরাকচন্দ্র রত্ত-সিংহাসনে। শ্ৰীবাস পণ্ডিত অফে দেপয়ে চন্দনে। গদাধর দিল গলে মালভীর মালা। ऋटभन इतिम पण पिश देशन जाला । বছ উপহার যত মিফার প্রার। বিভ্যানন্দ সহ বসি করিল ভোজন ॥ ভাষুণ ভব্দণ করি বসিলা সিংহাসনে। भंठी पाने वार्रेलन मानिनीय जत्म । পঞ্চাীপ ভালি তেহ[†] আরাত্রি° করিল। निर्पाक्षन कति भिटत थाक पूर्वा क्लि । **फल्कथन करत मर्छ भूभा** विश्ववन । অধৈত আচাৰ্য্য দেই তুলগী চন্দন । प्रिचिट्ड बांहेरन प्रव महत्र এक महत्त्व। निजानम जिल्ला वित्र दिन वित्र । পোরা-অভিবেক এই অপরূপ লীলা। পোবিক মাধ্ৰ বাহু প্ৰেমেড° ভাসিলা। 1013000

रेजानि औरगोनहस्त्र ।

श्रीविषय

)। देशें शन्त-नहित्तित्र २०४० मध्याक शहा १। 'विदर्श' क, य, य, छ। ०। 'बात्रव्हि' क। १। 'दबरवाक' क सन्तिना। वर मिक्क्ष वर्ग।

शामने ।>

शिविषर-नमग्र गृह मार । যশোমতি হরিষ বাড়াহ° ॥ कृष्टि जव शांकुल-लांदिक । নিজ হুতে কল্প অভিযেকে। গিরিয-তপন ভর লাগি। বাসই ক্সম-পরাগি। স্থশিতল° বারি মধুর। ৰলস কলস ভরি পুর । মলয়ল কপুর বিশাই। হিমকর-শীকর গাই। রভন বেদি নিরমাণ। ভাৰি বানাওল কান ॥ বাসিত তৈল লাগাই। मान मानिशर्य आहे । শির পর ঢালত বারি। মাধব ছোব বলিহারি #৪॥১৫৩৯॥

পাঠাব্দর

১। ইহা প-র-সা পুৰির ২০৮৪ সংখ্যক পদ।
২। 'পিরিপ' ব; 'পিরিপ' চ। ৩। 'বাচাই' ক।
৪। 'বাস্ত' ক; 'বাস্ত' ধ, ব, চ। ৫। 'ক্ষীড্রপ'
ক। ৬। 'সীকর' ক; 'সিকর' প-র-সা। ৭।
'ডইি' ক। ৮। 'ঢাস্ড' ক; 'ঢাস্ট' ধ, ব, চ।

णक्षिताति ।>

চৌদিকে অজ-বধু ধেই জনকার ।

ঘট ভানি শিন পন ধেই জল-ধার ।

আগত্রপ কাত্রক ইব আভিবেক ।

চৌদিকে আজ-রন শিবার নেব ।

কুমুন নোলাব কর্পের জারি ।

ঘট ভানি ক্রাল নিক্সির নির্দি

সিনান স্থাণি পরই পিতবাস।
সহচরগণ বেচল চারি॰ পাশ ।
বৈঠলণ মন্দিরে সহচর মেলি।
বেশ বনাওত আনন্দ কেলি।
মলরজ কুছুম ফুলিতলণ গদ্ধ।
বহুবিধ ঘূত্রণ লেপরে বহু ছন্দ ।
মলরজ-কপুরণ-বাসিত ফুলহার।
পরায়ল কতহুঁ রতন-অলছার।
হেরি বশোমতি তব আনন্দে ভাসণ।
মাধব দেখরে রাইক পাল্প। ৪৫1১৫৪০॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০২৫ সংখ্যক পদ।

१। 'বধু' ক। ৩। 'জফোকার' প-র-সা। ৪।
'শির' ইভ্যাদি হলে 'বেরল শির পর ডার' প-র-সা।

१। 'চৌদিকে' ক; 'চৌদিগে' চ। ৬। 'ফ্লীডল'
ক, খ, ঘ, চ। ৭। 'বেল্ল' ঘ। ৮। 'ফ্লীডল'
ক। ৯। 'কপুর' চ। ১০। 'ভানে' প-র-সা।

১১। 'পাবেশ প-র-সা।

शांवचे ।)

পহিলহি স্থাননি
ভোজন বহু উপহার।
নহচরি সজে গোপতে হেরি পিরামুখ
আনন্দ রক অপার ॥
বশোষতি-বচনহি গোরি।
রৌহিণি-কর পর কেই বহু উপহার
ভোজন কররে নন্দন³ গোরি॥এ॥
করমেং স্থাপন
হৈতিক করত প্রকাশ।
ভোজন ব্যাবি
আন্তর্মীয়ার ব্যাবি
আন্তর্মীযার ব্যাবি
আন্তর্মীযার ব্যাবি
আন্তর্মীযার ব্যাবি
আন্তর্মীযার বি
আন্তর্মীযার বি
আন্তর

বছবিধ লগতি বচন কহি বশোমতি ভোজন করাখন রাইরে। ও রস-সারর ঐহন নিভি নিভি মাধব অবধি না পাইরে" এ৬১১৫৪১৪ ইভ্যাদি গ্রীম্ব-কালোচিত অভিবেক।

পাঠান্তর

)। ইছা প-র-সা পৃথির ২০৮৬ সংখ্যক পদ।
২। 'প্রিরায়ুখ' ক। ৩। 'সক্ষ-নক্ষ্ম' ক। ৪।
'পরকাশ' প-র-সা। ৫। 'ক্ষম' প-র-সা। ৬।
'স্থীগণ' ক। ৭। 'পারে' প-র-সা।

वर्ष नीनां हनहस्त्र अनः यथा।

Michigifa is Biggi cangi i

বের হো নিলাসিরি*-রাজহি ।

স্তজ্ঞা বলরাম সত্তে জন্মুপার

সিনান-মণ্ডপ মাকহি । এল।

শব্দ ঘণ্টা কাঁশী বেপু বিপা॰ বাঁশি

মধুর ফুন্সুভি বাজস্ভি ।

সেবাভি পড়্যারি ঘট ভরি বারি

ঢারউ ভাকস্কু মাধস্তি॰ ॥

জর জর ধনি স্বর নর সুবি

স্তুভি নভি প্রণিপাত হি।

শীমুণচন্ত্রকু সোরভণ আউছ্প
গঙ্গেন্ত বেশউ' আগহি।

শুরু বন্তুপতি ভিন-পোক-পতি

বৰ উপহার ভোজবিঃ।

ন্পিকোঠাচলে^{১১} নালবেন্স^১২ বলে বেন্দ্-নারিমণ নাচন্টি ঃ৭১১৫৪২ঃ

विकारि जामराजा ।

াত্ৰ বিভাগ নাঠান্তৰ

)। हैर्हा श-द-मा भूबित २०৮१ मरबाक भग। श्रीकृतिवि' कं। ७। 'वावदि' छ। इत 'बीबा' क्। ८। 'अफ्बाबि' अ-ब-जा। ७। 'ढांबके' ইভাদি হলে 'ঢার উভাকরু মাধব্বি' ক, ধ। উড়িরা-ভাষার ছপণ্ডিত অধ্যাপক প্রীযুক্ত বোগেশ-চক্র রাম বাহাত্র আমাদিপের বিজ্ঞানার উত্তরে শিবিষাছেল বে, 'ঢারউ তাকলু মাধবি' বাকাটি वक्ष-भून ; 'छात्रछे' क्रान 'छात्रहे', 'छाकडू' क्रान 'ভাহাছু' .ও 'মাধন্তি' খলে 'মাথায়ে' শুদ্ধ পাঠ रहेरव। भवावनि-नाहिरछा चरनक चरन वर्तनान काल कृष्टीय श्रुकरमय अक्बहरन वा बह्बहरन 'हे' विकक्तित परम 'छे' विकक्तित आताम पृष्टे दत्र। স্তরাং প্রাচীন কালে উড়িয়া ভাষায়ও দেরুপ व्यद्मान त्य हिन मां, देश निन्छि वना यात्र कि ? 'ভাৰাৰু' কোন পুৰিভেই দুষ্ট হইল না—ত্মভন্নাং আৰমা মূলে 'ভাকৰু' পঠিই গ্ৰহণ করিতে বাধা হইলাব। 'বাৰভি' শক্টি 'রাকভি' শক্ষে নিজাকর बुर्छ , 'माबाद्य' मरम मिन बारक ना : कुछदार नवक्डां व शल 'मांबंखि' मक थातान ना कतिता 'ৰাধাৰে' কিংৰা ডজপ অভ কোন শব্দ প্ৰবোগ করিরাছেন বশিরা সভব বোধ হর নাঃ স্বতরাং ই্যা আচীন আয়োগ বলিয়া সমর্থন করাই বোধ হয় नवंछ। १। 'त्नोत्रदण' ४। প, চ, প-র-সা; 'লাউহ' प। ঐীবুক্ত বোদেল बाबु निविद्याद्यन, 'बाउँहि' एक शांउ व्हेटव। अ। 'বেশহঁ' ক। ১٠।: 'সোভডি' ব। ১১। তীবুক বোগেশ বাৰু লিখিয়াছেন—'মণিকোঠা চলে' বোধ दत्र 'मनिरकाठी खरन' दरेरव। 'खरन' नार्ठ रकान পুৰিতে নাই ; আনরা 'নণিকোঠাচলে' পাঠ ধরিরাই বর্ষ করিতে চেটা করিয়াছি। ১২। 'লালবেল' ক।

१—१। "रावािण रेजािश । क्षेत्रक त्यांरानी वाद निर्विवीरहरू त्व, 'रावािज' ७ 'शहािक' नरस्व सर्-'रावावर'। सम्बद्धाः "रक्ष 'रावािज'

করিয়াছে। "'পড়ারি' পড়িছারী, বংশুভ এভি-হারী; হারপাল। শুভরাং 'বেবাভি' ইড়াছি বাক্যের অর্থ--সেবারং ও প্রভিহারীরা বট পূর্ব করিয়া ভাঁহাদিপের অধীৎ নীলাচলনার, শুভরা ও বলরাবের মাধার চালিভেছেন।

১০—১১। "প্রীমুখচন্দ্রকু" ইত্যাদি। প্রীমুক্ত বোগেশ বাবুর প্রজিপাদিত অর্থ—"গ্রেক্ত-বেশ হইতে আগনি প্রীমুখচন্দ্রে সৌরত আনিতেছে। 'সৌরত' এখানে সৌন্দর্ব্য অর্থ করিতে হইতেছে। সংস্কৃত 'সৌরত্য' শব্দের 'সৌন্দর্ব্য' অর্থ আছে।"

২২—২৫। "জন" ইত্যাদি। বছপতির বলিহারি! তিনি জিলোকের আশ্রম-ছল; ভিনি রম্ববেদীরূপ অচলে অর্থাৎ নীল-পর্কাতহিত রম্ববেদীতে
(থাকিরা) ভক্তগণের প্রদন্ত বহু উপহার ভোলন
করিতেহেন। পদক্র্তা সাল্বেগ বলে (প্রভুর
সম্পুর্বে) দেব-নারী অর্থাৎ দেব-দানীগণ সূত্য
করিতেহেন।

कृषी ।>

এই বারং করণা কর চৈতন্ত নিতাই।
মো সমণ পাতকী জার ত্রিভ্বনে নাই।
মৃথ্রিণ জতি মৃঢ়-মতি মারার নকর।
এই সব পাপে মোর তত্ম জর জর।
সেচ্ছ অধন বত ছিল জনাচারী।
তা সভা হইতে বুকি মোর পাপ ভারী।
জলেব পাপের পাপী জগাই মাধাই।
জনারাসে উদ্ধারিলা ভোমরা চুই ভাই।
লোচন বোলেণ মো জধমেণ লরা নৈল ক্ষেত্রে।
ছুমি না করিলে লরা ক্যেক্রিবে জানে।

ইভি তৃতীয়-শাখারাং অকীবিংশক্তি পঞ্জবঃ।

े विकास सार कर संस्था के । जार के कि जो स्थाप विषे के, हो। १। '(बारम' के श्रीवरक नाहे। । 'वृद्धिः व्यवस्वरक' कः, 'वृद्धिः व्यवस्त' थ, भंजुन्ता।

> काथ कांबाए तथ-याकांगार किरगीतहत्क्क तथारक नर्सनः वथा। एसरे।

नीनांहरन कंगनांव नात्र। **७७**ठा-मन्मिट्त हिन यात्र ॥ অপরূপ রুধের সাজনি। ভাহে চড়ি বার বহুমণি ! (मिथ्रा कामांत्र भीत्रहति। निक्र १ लियां এक कति ॥ माना उत्पन मटक विद्या। व्यवाय निकटि यादेगा । রথ বেড়ি সাত সম্প্রদায়। कीर्खन कत्रदय (गात्रा तात्र । আজামুদাখিত বাছ ভুলি। यंग छैंद्रे रुति रुति विन । भगन एक पिन (मह श्वनि। পশ্য আর কিছুই না শুনি। निजारे क्रीयक स्त्रिमान। नाट बटक्यन जैनिवान । यूक्त चन्न नाम बात । ्मन वृति উচ্চবরে গায়। (शांविन्य माथव बाद्य द्यांव। যার গানে অধিক সজোব। ारक् बोबानक मन्दरि। গৰাৰৰ পাতিভানি করি। ा**ंक्ष्म प्रशा**न विकास । HERRIE HERRI

এই মত কীর্ত্তন নতনে।

কথোণ দূর করিল লকনে।

এ সভার পদ-বেপু আশ।

করি কবে বৈকবেরণ দাস ॥১॥১৫৪৪॥

পাঠাক্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২০৮৯ সংখ্যক পদ। ২। 'আসিরা' দ। ৩। 'গৌর' ক, ছেঃাডঃঃ 'কড'ক। ৫। 'বৈক্ষব'ব।

শ্রীচৈতক্সচরিতামতে যথা।

আপনে নাচিতে যবে প্রভুর মন হৈল।
সাভ সম্প্রণার তবে একত্র করিল।
উদ্দণ্ড নৃত্যে প্রভু ছাড়িয়া হছারং।
চক্র-শুমি গুমে কেন আলাভ-আকার।
নৃত্যে যাই। বাই। প্রভুর পড়ে পদতল।
সমাগর শৈল মহী করে টলমল।
তত্তে স্বেদ পুলকাশ্রু কম্প বৈবর্ণ।
নানা ভাবে বিবল গর্বর হর্ষ দৈল্ল।
১৯১৪ ৪৪।

শাঠান্তৰ 🚬 🦯 শাহা

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৯০ সংখ্যক পদ। ২ । 'হাড়িয়া হড়ার' হলে 'হাড়ি হুহুড়ারু' প-র-সা।

हेमन 13

ज्ञान ज्ञान-कारम।

नाटक दशीयों योग

गटक ६मान नाज

বত বত নহাভাগে ।প্রা

ভাবেচত অবশ্ব ক্রান্ত ক্রি রাজি বিশ

बारवरन किया ना जारन ।

thinks.

4100 Mr 41 WW T

খোল করতাল কীৰ্দ্ৰন বুগাল चन चन इत्रिरंगन। क्ष कर श्रमि ञ्च नत्र भूनि গগৰে উঠয়ে রোল ॥ बीलांडल-वांजी चात्र नाना (मन लाटकत खेबरन विहा। সভাই সাঁতারে তোষের পাধারে ছুৰী বহু অভাগিয়া ১০১১৫৪৬। পাঠান্তর

३ । हेर्स भ-त्र-मा भूषित्र २०৯১ मःश्वाक भव । 'देयन' चरन 'देयन कन्गान' श-व-ना। २। 'कारव' ष्, भ-ष-मा।

मनन। क्लर्गठान।>

कोषिटक महाख॰ (मनि कत्रद्य कीर्खन किन নাত সম্প্রদার গার গীত। ৰাজে চতুৰ্দ্দশ খোল গগন ভেদিল হোল ৰেখি জগন্ধাৰ আনন্দিত I উন্মন্ত নিত্যান্দ্ৰ আচাৰ্য্য **অ**খৈডচন্দ্ৰ পণ্ডিত এবাস হরিদাস। এ সভাবে সজে করি মাকে নাচে গৌর হরি **७०७-मधन** চারি পাশ । रित रित दोन दोएँन भग-करत मरी प्रांतन नम्राटन वरुट्य जल-शांत्र। सूरमक्र किनिया जन থেমের তরজ-রজ ভাৰে অই সাছিক-বিকার # ভাবাবেশে গোৱা ব্যায় . নাচিতে নাচিতে বায় নাচে পচীনন্দ্ৰ কৰি কলি সনাত্ৰ शिदन शिदन हरन क्षत्रनाथ ।

দূরে গেল ছঃখ শোক প্রেমার ভাসিলং লোক স্থাবর জন্ম পশু পাথী। (व (क्षेत्र-विनाग-धाम বচ কৰে অসুপীৰ বে দেখিল সেই তার সাধী ৷ 18136891

পাঠান্তর

>। देश भ-ब-मा श्रीवद २०३२ मरवास भव। ২। 'মোহস্ত' প-র-সা। ৩। 'চডুর্ছিশে' ব। ৪। 'পরিপণ তাহে' প-ম-সা। ৫। 'ভাসবে' মু চঃ 'ভাবার' প-র-সা।

त्रोगरकणि। छान-जर्रः।>

हिड्या निडाई बादा दमान कार्ड नात्हदार । খোল করভাল পঞ্চম রসাল তारेबज्ञा जारेबज्ञा॰ बाटक दत्र ॥ সোণার কমল করে উলমল প্রেম-সুধা-সিন্ধু মাঝে রে। तीन शैन जन **উछम मधाम** এ ডেউ সভারে বাজে রে. # 6#268F#

পাঠান্তর

३। हेर्ना नं-त्र-मा পुवित्र २०३७ मरवाक नव। 'তাनखबर' क, ब, ह ७ भ-त्र-मा श्विष्ठ नारे। १। 'চৈডভ' ইভ্যাৰি পংক্তির ছলে প-র-সা প্রথির পাঠ वथा-'टेज्ड निछारे । दब दबांन कारे नदम शविवन मारह रहा" ७। 'कारेब कारेब' भ-ब-मा। ।। 'क्यम' क, ब, ह, श-त-मा । e । 'बारब' श-त-मा ।

विश्वाचात्र ।>

ান করে সমুগ বালোকর। पानम विभावनम् दर्भ द्वान-तरकी हैत । शाह बाह बीमानन् व्यवस्थानिक

निय अविवासकार मार र

প্রভুর দুকিন পালে নাচে নরহরি দালে বামে নাচে প্রিয় গদাধর। নাচিতে নাচিতে প্ৰভু আউলাইয়া॰ পড়ে৽ কভু कांबांटवरम भटत क्षांबाद कद्र ॥ নিত্যানন্দ-মুধ হেঁরি বলে পত হরি হরি কৃষ্ণ কৃষ্ণ ডাকে উচ্চশ্বরে। সোঙ্ধরি শ্রীবৃন্দাবন প্রাণ করে উচাটন পরশ কররে রায়ের করে॥ 🗐 নিবাস হরিদাস নাচে গায় প্রেমোরাস প্রভুর সাধিক ভাবাবেশ। ইই রস প্রেম-ধন পাওল জগ-জন रगाविन्त मांगरम् धक रमम ॥७॥३४१२॥ ইতি ভূতীয়-শাখায়াং উনত্রিংশ-পল্লবঃ। পঠিস্তির)। हेहा भ-त-मा भूभित २०२८ मःश्रोक भन्। 'এবাদার' ছলে 'গাদার' ক। ২। 'মুক্ল' ইত্যাদি ছলে 'মাধৰ মুকুলানক্ষ' প-র-সা। ৩। 'बाडेगांका' कः, 'এबाहेबा' ४ ; 'এन्दाहेबा' ह। श्वाप्तःश्वापतः

অব আবৰ-শুক্লপক্ষে আন্দোলন-ক্রীড়া যথা। বুলন।

তত্র শ্রীগৌরচন্ত:।

দেশত সুলত গোরচক্র অপরূপ দ্বিজ্ञানিরা। বিধির অবধি রূপ নিরূপম

ক্ষিল কাক্ষন জিনিয়া। বুলায়ত কডং ভক্তবুন্দ

क्षेत्रम मनव महिना ।

नत्रन-कमल भूभ नित्रमण

भवष-हैं। ए कि निशा।

নগরের লোক ধার এক-মুর্থ হরি হরি ধ্বনি শুনিয়া॥

ধয় কলিযুগ গোৱা **অবভার** সুরধুনী ধনি ধনিয়া।

গোরাচান্দ বিনে আন নাছি মনে বাসুঘোষে কৰে জানিয়া ঃ১॥১৫৫০॥

পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৫ সংখ্যক পদ। । ২। 'ঝুলারত কত' ফলে 'ঝুলাওড' ক । ●। 'করি' প-র-সা। ৪। 'গোরাপদ' প-র-সা।

कारमान १३

দেখ সখি গৌরচন্দ্র বর রক্তীং।
বুণত যুগল

চলত সোই করি ভলীং॥ধ্রা

রচহ শিকার ঝুলন শ্বুণ হোদ্ধর মনহি ভেল উপনীত।

ভৈছন° সহচর সাওত আনন্দ গৌর পত্ঁক মননীত ॥

হেরি গদাধর লাভ লাভ বোলভ মন মাহা কিয়ে ভেল রঞ।

चाकू राम जूना गरन व्यनम विनन्द

अस्**ठत्रग**ण कतिः जल ॥

এছে বিলাস গোর পছ বিলসত্ত্ব পুরব প্রেম+রসে ভোর।

কৰ শিবরাম মনহি অ্থ ঐছম

কোই করব অব ওর ৷২৷১৫৫১৷ গাঠাতর

)। देश भन्तना गुवित २००० नश्याक भागाः २। 'तिनत' भन्तना । १ । दिनोब' भन्तना ।

*

গুট্ন প-র-সা। ৫। করি ভলী খলে
 ক্র ভলিয়া প-র-সা।
 গুলনে প-র-সা।
 গুলনে ক। ৮। বিনাধা ৯। করণ
প-র-সা।

和四 百

নব ঘন কানন শোহন কুঞ্জং।
বিক্ষিত কুস্থমে মধুকর গুঞ্জং ॥
নব-নবং পলবে শোভিত ডাল।
সারী শুক্ত পিক গাওয়ে রগাল॥
তহি বনি অপরুপ' র চন হিঁডোর'।
তাু/পুরি বৈঠলি কিশোর কিশোর॥
বেজ-রমণীগণ দেওত ককোর।
গিরত জানি ধনি করতহি ' কোর॥
কত কত উপজল রস-পরস্থ।
গোবিন্দান তহিঁ দেখত রক্ষ তো১৫৫২।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুণির ২০৯৭ ও প-র পুণির ৩০।১১ সংখাক পদ। ২। 'লোভন পূল' ক, খ, খ, চ। ৩। 'কুহুম' ক, থ, ঘ, চ। ৪। 'মধু-কর অল' হলে 'লোভিত অলিপুল' প-র। ৫। 'ন্ধ-ন্দ্র' হলে 'নৃত্ন' প-র। ৬। 'বোলত' প-র। ৭। 'বনি অপক্রপ' ছলে 'অপক্রপ ন্ব' প-র। ৮। 'হিজোল' ফ; 'হিভোর' খ, প-র। ৯। 'জানি ধনি' ছলে 'ধনি কামু' প্র-র। ১০। 'কর-লহি' প-র।

निका

৭—৮। "ত্রক" ইত্যাদি। ব্রক্ষনাগণ (সেই হিন্দোগাকে) বকোর অর্থাৎ ধাকা বিভেছে; ক্ষমরী জীরাধা পড়িবে কানিয়া (জীরুক) তাঁহাকে ক্ষোড়ে ধারণ করিতেছেন।

মাৰুগ।১ বিপিন্-বিহার করত নক্ষ-নক্ষম ত্ববদনি ধনি করি সঞ্চ। সকল কলাবতি তুহঁ প্রেম-আর্ছি मन मारा उपलल उल ह ্বৈঠল ছুহু জন রতন-হিণ্ডোর° পর স্থিগণ দেওত ঝকোরি। গগনহি মগন সগনং রজনীকর আনন্দে করত নিহাি 🖔 🛭 (पर्य (पर्य ज्यान्त्रभ इंटिंग्स । মদন-মোহন হেরি মাতল মনসিজ ' ় কামু নিহারে মুখ-চাঁদে। এ। গরজি স্ব খেরল বারিদ গরজি वूम वूम कक़ भाछ। কহ শিবরাম মলয় চল হ্ছ পর মূহ মৃত্র করতহিঁ । বাত ॥৪॥১৫৫৩।

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পৃথির ২০১৮ সংখ্যক পদ।
২। 'বিপিনে' খ, প-র-সা। ৩। হিন্দোল' ক।
৪। 'ঝোকারি' ক; 'ঝোকারি' খ, চ । ৫। 'সমন'
ক, ৬, চ, প-র-সা। ৩। 'নেহারি' ক, খ, চ,
প-র-সা। ৭। 'কায়' ইত্যাদি হলে 'কানন হেরি'
ক; 'কানন হের' খ; 'কানন হেক' চ, প-র-সা।
ম পুথির পাঠ ব্যতীত মন্তাল পাঠ মর্থন্ত ও লিশিকর-প্রমাদ-লনিত বলিয়া ম পুথির 'কায় নিহারে'
মুলে গৃহীত হইল। ৮। 'মলর' ইত্যাদি হলে
'সমরে চল ছহ' প-র-সা। ১। 'কহতহি' প-র-সা।

नमात्र ।>

নেখ সথি কুলত বুগলং কিশোর।
নীলমণি জড়ায়ল কাঞ্চন কোর।
লালিডা বিশাধা স্থা কুলায়ড স্থাৰত।
আনক্ষে বাগন হৈছি ছোঁহে হোঁহা-মুখে।

গরজত গগনে স্থনে হন খোর।
রিজিণি সজিনি ঘেরত চৌওর ॥
বিবিধ কুস্থনে সভে° রচিয়া হিন্দোলা॰।
দোলার যুগল সধী জানন্দে বিজোলা ॥
কুলাওত সধীগণ করতালা দিয়া।
বিগলিত চুকুল উদিত খেদ-বিন্দু।
জামিরা করয়ে খেন ছত্ -মুখ-ইন্দু ॥
হেরি সব সধীগণ দোহাকার শ্রাম।
চামর বীজন লেই করয়ে সেবন ॥
শ্রমর কোকিল সব বসি তর্র-ভালে।
রতি জয় রাধাক্ষ্ণ বোলে ॥
কর্হে জগল্লাথ কনে হবে শুভ দিনে।
সধী সহ দোহাকারে হেরিব বিপিনে ॥
॥৫॥১৫৫৪॥

পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২০১৯ সংখ্যক পদ। ২। 'গোরি' প-র-সা। ৩। 'কুস্থমে সভে' স্থ্রে 'কুস্থম সোভে' প-র-সা। ৪। 'হিখোলা' চ। ৫। 'ঝুৰমে' প-র-সা।

वित्रात ।>

দেশ সখি বুলত বিনোদ বিনোদিনা।
বুলন উপরে শোভে হেন নাল-মণি॥
বুলি বুলা বুলাওরে সকল সখীগণ
হেরি আনন্দে মাতিয়া।
হুছ ব গুণ সভে গাওত বাওতং
হেম-পুতলী-পাঁডিয়া।
কুণোড কীর শুক সারী কোকিল
মর্ব নাচত মাডিয়া।
হুছ ব মন নাহা উরল মনসিল

বরনে মৃত্ মৃত্ হাস উপক্ষত
হিলন ত্তঁ দোহাঁ-গাতিয়া।
রতি-রতস-রসে হাদয় গর গর
বিছুরল প্রেম-সাঙ্গাতিয়া ১৬৪১৫৫৫৪

১। ইহা প-র-সা পুথির ২১০০ সংখ্যক প্র। ২। 'বাজারত' প-র-সা। ৩। 'ছর্লক' ইত্যাদি প্রক্রি চারিটি ঘ পথি ছাড়া অভান্ত পুথিতে নাই, মুজাকর-প্রমাদে পরিত্যক হইয়াছে।

कश्यक्तो । ३ মাহ শাঙ্কন वित्रिध धन धन -হুত্বুলে কুঞ্চ মাঝ। বনি ফুল-মালা রচিত• দোলা তুত্ বিচ নটবর রাজ। গগনে গরজনি नमटक नामिनि ছুহু গাওয়ে বছবিধ ভান। কছেপীনা হুছ द्रवाव दौना করহিঁ কর ধরু মান[•] ১ मद्य मिष् সবহু বজিণি দ্ৰু গান-পণ্ডিত শুর। কৌ কানড়া কেদার কোড়া ছত্ রজ-সায়রে বুরু । षयु भिष्य मंभिनि রূপণ লাবনি ঝুলত ১ বাধা কান। শুক সারা মোর **ह**रकांत्र र्वामक **निवताम इर्छ ७१ गान ॥१॥>৫৫७॥** শাঠাস্তর

>। देश প-ब-मा श्रीव २००> मश्याक भव। २। 'बारब' भ-ब-मा। ०। 'विविष्ठि' क, ब, इ, भ-ब-मा। ७। 'बारब' भ-ब-मा। ६। 'छान' भ-ब-मा। ७। 'बाम' भ-ब-मा। १। 'रको' देखावि दरम 'रकाकिम छारक वाव रकाका क्रांडके প-র-সা। ৮। বুর ক, চ, প-র-সা। ৯। ক্লেপরস'ব; 'রপ্ত' প-র-সা। ১১। 'নর্ব' ক; 'মৌব'ব।

অভোচিত নর্ত্ত মারুর।

मक्ष्म मक्ष्म मह त्रम्म । यु र भारानि ज्य जल्म ॥ त्रम-माधुति धक्र भ व्यवस्य । **দউ** নৃত্যুত প্রেম-তরক্ষমে । উহ সঙ্গে ভামিনি* मगरक मामिनि মধুর বামিনি অভি বনি। সূভগ শাৰন বরিখে ভাতন वुन्नं स्नात निह्न निह्न ॥ বদত মোর চকোর চাতক कीत (कांत्रिम व्यनगणि। রটভ দরদর তোয়েণ দান্তর व्यवसायदा गतकनि । গাওয়ে স্থি রি জোরি জোরি। त्रम (रुति रामरे° (शांति (शांति° । द्यांति द्यांति हक्ष উপাক্ত আওজ বাজে পাখায়জ বিবি বিনাং। वानन वान मन् ঝাগর্না ঝাগর নন खागत्य नागत्य पिमि भे पिनार ॥ উহ দৃষ্টি ১২ ঠেরণ পহির ভূখণ यनदक वाहिति १० वाममणः। উষ্ট ষ্ট ষ্ট (बा मिग् मिग् Cचा निश्ः विश् विश्³ शूष शूषं नि वि वि वि नर्वे । वारण भू भू भीमा। यत-मधन रामवि रीवा ।

বর বীণ তাল প্রবীণ পূরল

প্রেম-ভরে হিরা হরখনি।

মণি-বিন্দু শরদ-ইন্দু

করত অমৃত বরখনি।
হংস সারস বদত পাবস

চারু চাতক রস-ঘনি।
বিহরে যে জন>
পরম পুর্বড় শিরোমণি।৮৯১৫৫৭॥
পাঠাতর

>। 'युनो' ह; 'यक' य श्रीवर्ण नाहे। २।
'(तो' क, थ; '(तांज' ह। ०। 'छाविनो' क। ८।
'विवत्ता' क; 'विवत्ता' थ, य। ८। 'छाद्रा' हत्थ्व ७। 'हात्र' क; 'हात्रजे' थ; 'हात्रजे' य। १।
'(शिति (धिति' ख्रान 'जेंद्याति जेंद्याति' क।
৮। 'एक' क, थ। >। 'जावित्राच्य' क। >०।
'वंत्रन २ नन' क, थ, ह। >>। 'जिनि जिनि' क,
थ, य। >२। 'ह्राहे' क; 'पृष्टे' थ, य। >०।
'वाँहित्र' थ, ह। >८। '(था नित्र' हेजांनि ख्रान
'(था नित्र नित्र नित्र नित्र क, थ। >८। 'निवि
निवि नर' क। >७। 'विहरत दिव सन' यहन
'विहत्रदार' क, थ, ह; 'विहरत विहत दा कन' यहन

> পুনশ্চ দিনান্তরে ঝুলন। ভহুচিত-শ্রীগোরচন্দ্র।

কানোছ।

কোপ দেশ বৃগত প্রৌর কিলোর।

ক্ষরপুনি-তীর গলাধর সলহি

চান্দনিং-রজনি উজোর ।

শারন মাস গগন ঘন গরজন

লগণিত লামিনি-মালণ ।

বরিশত বাবি প্রন মুদ্ধ সন্দাহি

স্বাধান্ত কারি বিশাল ।

ৰিবিধ স্থান রচিত ভবি দোলা थिक क्ष्यक्र १-नाम। বট-ভক্ল-ভালে ডোর ক্রি বন্ধন মালভি-গুচ্ছ সুঠাম। े देवर्जन ८गोत्र বামে প্রিয় গদাধর यूनम बन-ब्राम छात्र। সহচর মেলি ঝুলায়ত মৃত্ মৃত্ लाना यति ली भाभ । বাজত মুদক পুরব-রস গায়ত मःकीर्खन-सूध-त्रव । শান্তিপুর-নায়ক নিজানন্দ' द्विमान श्रीनियान नक ॥ পুরুষোত্তম সঞ্জয় আদি ব্যৱগ্ৰ क्कूम हन्दम मूल। উদ্বৰ বাস নয়নে কব ছেরব গৌর হোরর অমুকুল ১৯৪১৫৫৮॥ পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২১০২ সংখ্যক পদ।

২। 'চাল্প' ক, খ, চ। ৩। 'ভাল' প-র-সা।

। 'ভহিঁ দোলা' ছলে 'হিঁদোলা' ক। ৫।
'কুল্মন্ত্র' প-র-সা। ৬। 'দো' প-র-সা। ৭।
'বিজ্ঞানক্ত' প-র-সা।

देवन (बटनांशांत्र ।>

আজু রচিত নব রতন-হিঁডোর ।

অরধুনি-তার তুক্ত-তরত তহিঁ

রসমর গৌর কিশোর । প্রা

পরিকর প্রবড় ঝুলারত সহ সহ

সাওত তান সরস রস মাতি।

ইমটত শোল খোল তক থৈ থৈ

নাচত মধুর মাওত বহু ভাতি ।

নদীয়া নগর না রহণ কোই হর
তেজি চলত চৌদিশে নরনারী।
অধিক উহাহ হোরত হিয়েশ পছঁকর
হাস-মিলিত মুখ-চাঁদ নেহারি ।
অ্বনণ গগনে নগন গণ সহ মুখে
বরিধত কুম্ম করত জর্কার।
নরহরি ভণত ভুবন উমতায়ল
কো কহঁ অদভূত রজ অপার ॥১০॥১৫৫৯॥
০পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুথির ২১০৩ সংখ্যক পদ।
২। 'রতন হিডোর' বলে 'গণিত হিডোর' খ,
প-র-না। ৩। 'তরক' প-র-না। ৪। 'উষ্টড

অথে'প-র-না। ৫। 'কড'ক, খ। ৬। 'বাজারত'প-র-না। ৭। 'রহে'ক, খ। ৮। 'হিরে' প-র-না প্থিতে নাই।

बूलएव खुम्बव রসমর গোরা না কানি কি রঙ্গে মাভিয়া গো। **হেরি হেরি** গদা-धत्र मूथ कांचि- े ভঙ্গী করে কত ভাতিয়াং গো 🛊 নরহরি মুকু न्मानि निक्रगटन মুছ মুছ হাসি হাসিয়া গো। স্থরচিত নব হি ডোলা বতৰে বুলারত স্থাধ ভাসিরা সো। মধুর স্থারে गांग्र (करहा क्लरहा · एक भटन देशनक किन्ना दर्गा। म (माण प्रिध जाबि (क कितादब ्रिम् गरन गरन श्विगंश। रगा ॥ अष्ठ मिरन कून-ালাজ বাবে সৰ विनिद्ध भागभा बाह्यां द्या। मबर्बि-भाष टनदात्र वाटतक क्ष्त्रभूमी-जीत्त्र वारेज्ञा त्या ॥>>॥>०॥

হার লটকড

কুত্মচন্ন বর

পাঠাবৰ

>। हेरा भ-द-ना शृषित २००८ मःश्वाक भेषः।
२। 'कंकिस' ह। ००। 'मृक्ष व्यक्ति' च,
भ-द-ना। ८। 'हिएकाला' च। ८। 'एक कितादि'
व्रात 'कितावादि' कः, 'एक किताब' भ-द-ना। ७।
'अित्स' च। १। 'में भवे' व्रात 'में दान भवे' कः,
'में में में भवे' च, ह, भ-द-ना। ৮।
'बाहेर्द्द' कः, च, भ-द-ना।

মলার I> •

দেখ সখি ঝুলত রাধা শ্রাম। विविध यद्य चु-মেলিং স্থস্থর তান° মান হঠাম 🖟 আবাড়ঃ গভ পুন মাহ শাঙ্কন স্থদ যমুনা-ভার। ठाक्मिनि° तकनो ञ्चमग्र ञ्चनग्र• मन्द्र मन्त्र मनीत ॥ পরিপূর্ণ সরোবর প্রফুলিত ভরুবর া গগনে গরকে গভার। বোরু ঘটা ঘন দামিনি দমকত বিন্দু বরিখত নীর॥ (তহি) কলপদ্ৰুম-তন্ত ছাহ শীতল>• রচিত-রতন-হি ডোর। ৰুলয়ে ভছু পর>> গোরি শ্যামর यूनारय मधि छूटे अता ভড়িভ খন ১২ জনু 👉 সোলারে ত্রু ভনু ব্দধরে মৃত্ মৃত্ হাগ। বদন হেম নিল> কমল বিকশিত

বেদ-বিন্দু পরকাশ। ছরম ছেরি কোই বিজন^১০ বীজই

(मारन युवक वाकाय ! .

एवট मिष म-

কপুর ভাষুণ বোগাঁর।

ভ্ৰমর গুণ গুণ রোল । र:স সারস²⁶ ञ्সর-**শব**দিত³⁹ দাসুরি ঘন ঘন বোল্স্ (হুহু) ভালে চন্দন-চাঁদ চমকিড ভিলক রচিত কপোল। हकल भूकृष्टे স্থাক চন্দ্ৰিক **शी**ठ भन्न द्विन दमान । (হুহুঁ) প্ৰবণে কুগুল চপল বল মল হৃদয়ে শশি-মণি-ছার। ঝলকে অভরণ वङ्गुष्ठ वन वन् ঝুকিড ঝুলন-বিহার ঃ (কোই)মস্প ঘুস্ণ স্থগন্ধি ছিবকত শ্যাম-গোরি-অক হেরি। স্থি-ভাষ্ণ ইলিভ্ৰ मांग छवन করত কুস্থমক ঢেরি ১১২॥১৫৬১॥

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২১০৫ সংখ্যক পদ।

২। 'স্থানল' প-র-সা। ৩। 'তাল' প-র-সা।

৪। 'আবাঢ়' ক। ৫। 'চান্দ' প-র-সা। ৩।
'স্থোনর' প-র-সা। १। 'নন্দ মন্দ' ক, খা

৮। 'নেবে' প-র-সা। ১। 'করতর' প-র-সা।
১০। 'স্থাতল' ক, খ, খ, চ। ১১। 'গরি'
প-র-সা। ১২। 'দানিনী' প-র-সা। ১৩।
'নীল' ক। ১৪। 'বীলন' ক, খা ১৫। 'বোল'
ক, খ, চ, প-র-সা। ১৩। 'নিধি' খা ১৭।
'স্থার শ্বদিত' ক্লে 'স্থাব সর্বিত' কঃ 'স্থার
সর্বিত' খঃ 'সারস স্থাববিত' ব। ১৮। 'রোল'
খ, খা ১৯। 'ব্রশ্বণ প-র-সা। ২০। 'ভাল'
খ, খা ১৯। 'ব্রশ্বণ প-র-সা। ২০। 'ভাল'
খ, চ।

পাঠান্তর

् क्लानि ।>

বুশত শাম

আনন্দ-রক্ষে মাতিয়া ।

ইবত হসিত রভস-কেলি

বুলায়ত সব সধিনি মেলিং

গারত কত ভাতিয়া ॥ প্রু ॥

েহম মণিযুত বর হিঁডোর

রচিত কুসুম-সক্রে ভোর

পড়ল॰ ভ্রমর-পাতিয়া৽ ।

নবিন লভায় ঞড়িত ডাল

বুন্দা-বিপিন শোভিত ভাল
চাঁদ-উলোর হাতিয়া ॥

নবঘন-ভনু দোলয়ে শ্যাম

রাই সলে বুলত বাম
তড়িত জড়িত-কাঁতিয়া ।

রাই সলে ঝুলভ বাম ভড়িভ জড়িভ-কাঁভিয়া। ভারামণি চন্দ্রহার ঝুলিভে দোলিভ গলে দোঁহার ্হিলন তুহ^{*}ক গাভিয়া॥

বিধিকট বিশ্বা তাথিয়া° বোল
বাজে মৃদক্ষ মোহন রোল
ভিনিনা ভিনিয়া তা ভিয়া°।
ভোল পরণ গ্রাম-পূর
বোর শবদদ জীল° সূর
বরণ নাহিক বাভিয়া।
মণি-অভরণ কিছিণি বছ
বুলনে বাজয়ে সুমুর বছ

রাধানোহন-চরণে লাশ কেবল ভরসা উদ্ববদাস ্মান্তিভ পুরিত ছাতিয়াঁণ ১১৩/১৫৬২১

ঝন ঝন ঝঞাতিয়া।

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপ্থির ২১০৬ সংথ্যক পদ।
২। 'নাগরী' প-র-সা। ৩। 'পড়ত' ক। ৪।
'মাতিরা' প-র-সা। ৫। 'ডা থৈরা' ক, থ,চ,
প-র-সা। ৬। 'ডাডিরা' ক। ৭। 'প্রক' ক,
থ; 'গরল' চ। ৮। 'মরদ' ক, ঘ; 'মুরদ' প-রসা। ৯। 'কীতল' চ। ১০। 'পরিত' থা

(वरनामात्र :)

কুলত সুধ্ময় শ্যামরং গোরি। वृन्ता - विश्व मा विव्य माव मिल প্রিয় ল'লভাদি ঝুলায়ত থোরি । স্থললিত তথল হি ডোর মাঝ অভি ঝলকত যুগল-রূপ রুচি ধাম। यूगमत-वक्षन-পুঞ্জ-জন্ম-ভমু (क नत-तिन निष्ठ-नामिनि-नाम ॥ ি বিজয় নহ সম্ভূল শোভা ভুবন प्रच[ै] गुथ-हन्म विभल शतकामा । হেরি ছুরু ক গুণ গাওত চৌদিশে শুক পিককুল হিয়া আধক উলাস। वंदक्र खमत ষল্প কমু বাজত নৃত্যতি শিখিকুল উমগ অভন্ন। नत्रहित कर किय त्का वज्ञगव हेर রুন্দাবন মধি বিবিধ তরঙ্গ ॥১৪:১৫৬৩। পাঠান্তর

১। ইহা প-র-না প্রির ২১০৭ সংখ্যক প্র।
২। 'স্থাম' ক, চ। ৩। 'র্ফাবন' ক, ব,
প-র-না। ৪। 'ঘোরি' প-র-না। ৫। 'ডর' প-র-না। ৬। 'হর্ছ মুখ-চন্দু' ইভ্যাদি ভিন্তি
পংক্তি থ প্রিডে লিপিকর-প্রমানে পরিভাক্ত হইঃ
রাছে।৭। 'হর্ছ ক খণ' হংল 'হ্রু কুঞ্জন' প-র-না।
৮। 'করি' ক, খ, খ, প-র-না।

(क्षांत्र ।)

আজু দলিত হিঁডোর মাঝে। রজে ঝুলত নাগর-রাজে 🛭 दाई ञ्चवमनि वाम भाग। কভন্ত আনন্দ-সায়রে ভাস। কিবা অদস্ভ তুরুকৈং শোভা। নাহিক উপমা ভূবন-লোভা। पृष् पृष् पृष् पृष् (भ ८ १ दि । হাসিয়াণ চুম্ব দেই বেরি বেরি৽ 🛊 আঁখি-ভন্নী করে॰ কতেক ভাতি। কৰে গদ গদ রভসে মাতি ॥ ললিভাদি সধী সে স্থথে ভাসি। নেহারে দোহার বদন-ब्राच्य क्लायुङ मन्य मन्य । মিলিয়া গাওত গীত সুছন্দ ॥ वाक्क उवन बीन डेभान। मध्य भूतक मूतक ठक ॥ কেহ নাচে রুত ভঙ্গী করি। অতি মোহিত' তা দোঁহে হেরি। ञ्ब-नाबी निकागवह मर्व । পুষ্প-বৃষ্টি করত রক্ষে 👢 कंत्र क्या भक् वृत्सावन खति। শুনিয়া রজে মাতে নরহরি॥১৫॥১৫৬৪॥ পাঠান্তর

 रेहा भ-ब-मा भूषित २>०৮ मश्याक भए। २। '(बांट्क' च, भ-त्र-मा। ७। 'हांमि' क, च, ষ, চ। ৪। 'বেরি বেরি' খ্লে 'বেরি বেরি বেরি' का'दा किंदि' क, ब, ठ, भ-द-ना। ७। 'তান' খ; 'হুবীনা' ব। ৭। 'महिक' প-त्र-ते। ৮। 'निक्तन' क, ४, ६। 'बर बर भक् 'इंटन 'कर भवन' क, ४;

कांनिकीत्र क्न विकतिष्ठ सून मश्च अनिकून পড়বহি পাঁডিয়া। নাচত মোর করতহিঁ সোর অনক অগোরণ ফিরতহি মাতিয়া। কানন-ওর হেরইভে ভোর কিশোরি কিশোর প্রেম-রসে ভাসিয়া। क्लन (किन पृष्टं कन (भिन व्यक्त व्यक्त (किन হৃদয় উল্লাসিয়া » কভয়ে হুতান করতহি গান রাখত মান বন্ধ হুরঙ্গিয়া। দেই করতাল অভি সুরসাল করে ভালি ভাল वाश्वरय मुक्षिया। কত রস-ভাষ কমল বিকাশ মৃত্র মৃত্র হাস ত্ত্-চন্তাননে। উদ্ধবদাস-চিত-মন-আশ তুত্ক বিলাস मद्रभन कानटन ॥১७॥১৫७৫॥

পাঠান্তর

)। देश भ-त-मा পुवित २००३ मरवाक भए। २। 'कांगिकी' क, ह, भ-न्न-मा। ७। 'बारमान' क, ४, ४, १-इ-मा। ४। 'क्फ (३' क।

আৰু রাধা খ্যাম সলেতে বুলে। यशिषय नव - হিধোলাং সাজাইরা ् वःनीवछे-छछ कानिन्मि कृतन । ললিভাদি রঞে ज्यो कति (गर्भ বুলারই ছহঁ বদন চাঞা। । রসবভি ভুজ ं भगवि मात्रद गहन जान जान जानून देशहा ।

ভাম রজেং চারু

চুম্ম দেই বন মনের সুখে।

ভাষা দেখি সধী

বসন-অঞ্চল কাঁপিয়া মুখে।

কোডুক-বচন

কৃষি বুন্দা দেখী

ব্লায়ই পুন যভনে ধীরে।

কি আনন্দ বুন্দা
অয় জন্ম দিয়া রজেডা কিরে।

৪১৭৪১৬৬৬

পাঠান্তর

ইহাপ-র-সাপৃথির ২১১০ সংখ্যক পদ।
 ং (হিলোলা) ক। ৩। 'চাহিরা' ব, প-র-সা;
 'চাইরা' চ। ৪। 'হইরা' ব, চ। ৫। 'অলে'
 ক। ৬। 'হাসি' ক। १। 'রলেডে' ক, ব।

বিহগড়া কেছারিকা।১ उथलहे कालिकि-नीत्र। ভা**ट्र व्यक्ति स्था**त्र भीत्र ममीत्र ॥ শ্ৰীবৃন্দাবন মাঝ। কলপ-ভক্লণ-ভক্ল সাক্ত॥ ভাহে বনি রতন-হিঁডোর। পরিমলে জমর জমরিগণ ভোর 🛭 বিবিধ কুত্ম শোহে ভার। স্থৃত্ব মুদ্র প্রথম করু বার ॥ बुर्ल विनमिनि विनमित्रा । 'স্থিলায়ত সধি ছন্ত'-বদন চাহিয়া। চান্দনি বজনি উজোর। পিৰত অমিয়া-রস ভূখিল চকোর। क्षि नाहरे मन-त्रकः। वीशा त्रवाय बाकाटक मुक्टक ॥ কৃত্ত প্ৰবন্ধ কুতান। क्छ क्छ बाँग क्लि क्ले बान ॥

আনন্দ কো করু ওর। হেরি শিবরাম দাস রছণ ভোর॥
॥১৮॥১১৫৬৭॥

পাঠান্তর

)। देश भ-त-ना भूषित २००० नेश्याक शव। २। 'अदि' प। ७। 'विस्माविमी' क, ह। १। 'विस्माविमा' क, ह। १। 'नीमण्ड' प, ह। ७। 'वाक्यत' भ-त-ना। १। 'त्रव' प भूषिक नारे।

शननी ।>

নামিলা ভুরিতে বুলনা হইতে রসবভী রস-রাজ। বসিলা বছনে রডন-আসনে রতন-মন্দির মাঝ ॥ স্থচামর লেই वीजन वीजह (मवा-भन्नांत्रभ मधी। স্থাসিত জলে वहन शांधारम বসনে মোছাঞা দেখি। विविध बिठारे থারি ভরি কোই थति छ्लं-नम्द्रि । कण्हं कोजूरक স্থীগণ সহে ভোলন করিল অ্থে। ভামুল সালাঞা কোন স্থী লৈয়া (मार्थात वम्रत्न मिना। এ কেশং-কুমুমে निहिन्ना निहिन्ना निन । কুসুম-তলপে विजना वाषिका छात्र। जानामः नेगडः नम्भ मृतिष ट्यिया त्यादिक काम ह

দেখি স্থাগণে কডছ বডনে
শুভারল সূহ তার।
স্থার ইলিভে চনণ সেবিডে
এ দাস বৈক্ষর বার ॥১৯॥১৫৬৮॥
ইভি জুভায়-শাখায়াং ক্রিংশৎপক্ষরঃ।
পাঠান্তর
১। ইহা প-র-সা পুথির ২১১২ সংখ্যক পদ।
২। 'একেক' প-র-সা। ৩। 'অস্সে' ক।

থাভিষেক-বিলাসঃ। আনে) শ্রীগোরচন্দ্রত

ভৈৰবী।১

আজু শচিনন্দন-নব-অভিবেক।
আনন্দ-কন্দ নরন ভরি দেব।
নিভানন্দ অবৈভ মিলিং রলে।
গাওত উনমত ভকভহিঁ সলে।
বরিখরে সবহুঁ নয়ন°-খন-দেহা।
বরিখরে সবহুঁ নয়ন°-খন-দেহা।
পুন পুন নিরখিতে গোরা-মুখ-ইন্দু।
উহলন প্রেম-স্থারস-দিকু।
অগ ভরি পুরল প্রেম-ভংকে।
বঞ্চিত গোবিন্দান প্রস্কে।১৯১১।

३ । देश भ-्द्र-मा भूषित २००० मःश्वर भग ।
 १ 'विणि वह्य' भ-द्र-मा । ♦ । 'मदर्ब नद्दन'
 द्राम 'बद्दन मदह्य' भ-द्व-मा ।

পাঠাবর

ব্যই।>
আনন্দে ভক্তগণ বেই জন্নন্দ।
বীবাস পণ্ডিড-বনে মহামবোৎসন ॥
পঞ্চপন্য পঞ্চায়ত শত বট জনে।
মৌরাজের অভিবেক করে ফুডুকনে ॥

রতন-বেদীর পর বসি গোরাচাক।

অপরপ রূপ সে রমন্ত্রী-মন-কাদ ॥

শান্তিপুর-নাথ আর নিজ্যানক রায়।

হেরিয়াং গৌরাল মুখণ প্রেমে জাসি বায়॥

মুকুক্ল মুরারি আদি অ্মধুর গায়।

হরি বলি হরিদাস নাচিয়া বেড়ার॥

কটে কৃক্দাস গোরাটাদের অভিযেক।

নদীয়ার নরনারী দেখে পরতেক ঃ২৯১৫৭০॥

পাঠান্তর

)। देश श्रम्भना श्रुचित्र २००८ म्हण्यक् शरा २। 'द्वित' क्,च, श्रम्मना। ७। 'ज्ञश' श्रम्मना।

क्रमानी ।>

শব্দ কুন্দু ভি-নাদ বাজরে ত্বেরে।
গোরাটাদের অভিবেক করে সহচরে॥
গদ্ধ চন্দন শিলা ধূপ দীপ খালি।
নগরের নারীসংশ করে অর্থ্যালী ।
নদীয়ার লোক সবং দেখি আনন্দিত।
যন জর জর দিরা সভে গার গীত॥
গোরাটাদের মুখ সভে করে নিরক্ষণে।
গোরা-অভিবেক-২স বাস্থ্যের গানে॥
॥৩॥১৫ ৭ ১৪

পাঠাক্তৰ

১। ইহা প-র-সাপুথির ২১৪১ সংখ্যক পদ। ২। 'নাগরিগণ' দ; 'নাগরী লোক' প-র-সা। ৩। 'আর্যাছণি' প-র-সা। ৪। 'বড়' দ।

थानी ।>

আনন্দ-কল নিভাবন গোরচন্তে সকং।
প্রেনে ভাসি হাসি হাসি বোর-হর্ব কল ।
সীভাবাধ সেই॰ সাধ প্রিক্ত জীবাস।
স্বাধ্য সাধ্যের প্রবিদ্যাল ।

বরিবাল উচ্চরোল। কীর্ত্তনের সাধ।
গোর-শিরণ চালে নীরণ শান্তিপুরনাথ।
অভিবেক সভে দেখা পরতেক পছ।
নৃত্য-গীত-আনন্দিত প্রেম-হাস্ত লছ।
বট ভরি চালে বারি গৌরচন্দ্র-মাধ।
শুক্ষর্প গৌরবর্ণ ভাব-পূর্ণ গাত।
শুবিস্তারণ কেশ-ভার চামরের হান্দ।
মুখ-চন্দ্রণ-ভরে জন্ধকার বৈছে কান্দ।
মুখ-চন্দ্রণ-ভরে জন্ধকার বৈছে কান্দ।
সঙ্গ-চন্দ্রণ-ভরে জন্ধকার বৈছে কান্দ।
সঙ্গ-চন্দ্রণ-ভরে জন্ধকার বৈছে কান্দ।
সংহাসনে দিব্যাসনে বিশ্বনিলন বাই।
সংহাসনে দিব্যাসনে কন্দ্রপুলা কৈলা বভ।
করি নিভান্ত রামকান্ত ভাহাণ্ণকৈবে কত।

পাঠান্তর

#8#3492#

১। ইহা প-র-সা পুথির ২১৪২ সংখ্যক পদ।

হা 'স্পে' ক। ৩। 'অবে' ক। ৪। 'পেই'
প-র-সা। ৫। 'উতরোল' ক। ৬। 'নিরে' ক,
ঝ, প-র-সা। १। 'নীরে' ক, ঝ, প-র-সা। ৮।
'বেঝে' ক। ৯। 'ক্রবিজর' ক। ১০। 'র্থচল্লা ক, ঝ, প র সা। ১১। 'কোচি' ক, প-র-সা।
১২। 'পোরাচালা ঝ। ১৩। 'ভাহা সে' ক, ঝ,
য়, চ।

वंजन ()

সৌর স্থাদর পরম মনোহর পরম মনোহর পরম মনোহর পরম ।
সোণ-চম্পাদ- কনক-দরপণনিন্দি স্থাদর সেই ।
রাসিয়া গোলা পাছ হাসিয়া লাভ লাভ
ভারে পণ্ডিড ঠাম ।
ক্ষোহারি রেমন-মলে এ মোর প্রকাশে
স্থাহ সোণ পাছ হাম ৪

শুনিয়া পণ্ডিভ **पण्डिं । रहिंड Бत्र-एटा ग**फ़ियांत्र। করয়ে স্ত্রতি নতি প্রেম-ললে ভাসি भूलदक भूवन शात ॥ ভাগবভগণে व्यानिग्रा देखश्रम পত্ৰ কৰে অভিৰেক। বারি ঘট ভরি রাখল সারি সারি গন্ধ আদি পরতেক 🛭 मुक्त्म गनाधन পণ্ডিত দামোদৰ মুবারি হরিদাস গার। উঠिन अञ्चयनि मधन-व्रव छनि नमोशा-नवनांद्री थांत्र ॥ পণ্ডিত শ্রীবাস্য পছক শিৰে চালি বাবি। कोमिट्ग स्तित्वान বড়ই উত্যোগ मक्न-त्रवंभ भव होती # নিভাই অবৈভ • अधिष्टं दर्शविष्ठ (रबरे डाहिन वाम। সিনান সমাপল ১৭ বসন পরায়ল>৩ भूतन जव³⁸ मन-कांत्र ॥ কভছ উপচারি भूवन[>] (नोत्रहति ভোজন আসন বাস। দণ্ডৰত মতি कत्रन वह खरि कर शिवर्षम मांग ॥०॥১৫१७॥

পাঠান্তর

)। देशं शन्त-नां श्रवित २०४० नरशाक श्रवः १। 'श्रव्यव' य। ०। 'व्यादन' श्रवःनां। ६। 'व्यादन' श्रवः 'व्यादन' श्रवः व्यादने श्रवः श्रवः श्रवः व्यादने व्यादने व्यादने व्यादने व्यादने व्यादने व्यादने श्रवः श्यवः श्रवः श्यवः श्रवः श्यः श्रवः श्यवः श्रवः श्रवः श्रव

১২। 'স্বাপন' ক, ধ। ১৩। 'পরশ প্রারন' ক, ধ। ১৪। 'পূরক' ক। ১৫। 'পূলক' ক।

क्या अभ ।>

পূর্ণ কুখময় ধাম অম্বিকা নগর নাম ষাতে গৌর নিভাইর বিলাস। অতে প্রির নর্ম্ম-সখা স্থ্ৰল বলিয়া লেখা त्रीबीनाम ऋत्भ भवकाम ॥ এক দিন রাত্রি-শেষে দেখিলেন স্বপ্নাবেশে महाक्ष्य निजानम जत्न। কৰে ওতেং গৌরীদাস পুরিবে ভোমার আশ আমরা আসিব ছুই জনে ॥ নিশ্চয় করিয়া কহি ভোরে। ভোষারে হাড়িয়া খেনে সোয়াথ না হয় মনে (माँट दव टामाद मन्मिद ॥ ध ॥ উঠিয়া বসিলা জাগি শ্বপ-ভল-অমুরাগী मत्न देशन जानक द्रमम् । **অভিবে**ক বত কাজ ভুরিতে করহ সাজ वक्रभ हत्रग स्ति क्य ॥७॥১৫१८॥ পাঠান্তর

>। ইহা প-র-সা পুথির ২১৪৪ সংখ্যক পদ। ২। 'শহে' দ। ৩। 'পুরিতে' প-র-সা। ৪। 'আমারে' দ, খ, খ, চ। ৫१ 'সোরাহ' খ, 'মোহার' দ, চ।

ত্থা হাগ।>
আনন্দে ঠাকুর গোরীদাস।
ভাকিয়া আপনগণে কহিলেন জনে জনে
বে হয় চিজের পরকাশ ॥ প্রন্থ ।
আনহ সজল-জব্য ভূগ্ধ পূজা পঞ্চগব্য
ধূপ বীপ বড উপহার।
আন্ত্রশাধা ঘটে বারি কলা রোপ্য সারি সারি

শত ঘট পূর্ণ জল

যথ্য পাতি দিব্য সিংহাসন।
ভক্তবৃদ্দ-বত জন

আনহ করিয়া নিমন্ত্রণ
হেনকালে আচস্বিতে নিত্যানন্দ করি সাথে
কর-ধরাধরি তুই ভাই।
সেই স্থানে উপনীত পণ্ডিত আনন্দ-চিত
স্ক্রপাণ কহয়ে বলি যাই ৪৭৪১৫৭৫৪

পাঠান্তর

১। ইহাপ-র-সাপুধির ২১৪৫ সংখ্যক পদ। ২। 'রোপণ' ক, খ, চ, প-র-সা। ৩। 'জোড়া' পর-সা। ৪। 'অরপ' প-র-সা।

वत्राणी।>

দেখ চুই ভাই গোর নিভাই বসিগা বেদার পরে। গগন ভেজিয়া আসিলা নামিরাং

বেন শশি° -দিবাকরে ॥ হেরি হর্ষত ঠাকুর পশুিড

নিজগণ লৈরা সাথে। ।
জল স্থাসিত ঘট ভরি কভ
ঢালয়ে দোঁহার মাধে॥

শম ঘণ্টা কাঁশী বেপু বীণা বাঁশী ধোল করভাল বারং।

জর জর বোল হরি হরি রোজ চৌদিগে ভকত গায়⁶ ॥

সিনান করারা। বসন পরারা বসাইলা সিংহাসনে।

र्भ मीन देनना क्रै केंद्र म

উপহারগণ করায়া ভৌজন -ভাসুল চন্দন শেহৈ।

क्न-भाग निया जानाजि क्रिया काननिम क्रुक्ताल क्रिकेट १५०

পাঠানত

>। ইহা প-র-সা পুথির ২১৪৬ সংখ্যক পদ।

२। 'নাবিলা আসিরা' ক, খ, খ, চ। এল 'নিশা'

ক, খ। ৪। 'বাবে' প-র-সা। ৫। 'গাবে'
প-র-সা। ৬। 'আধ্যধানী' প-র-সা।

ৰথ নিত্যানন্দচক্রস্থাভিবেকঃ।

TEN 15

ব্দপর্মপ নিতাইটাদের অভিষেকে। ৰামে পদাধর দাস মনে বড় হুখোলাস थित्र भात्रियमग्रन (मर्थ । শত ঘট জল ভরি शक्षमवा आपि कति निजारेकारमञ्जाभारत जारम । ट्रोपिट्श ब्रम्गीत्रन জজকার খন খন আর সভে হরি হরি বোলে। ৰাম পাদে গোৱীদাস হেরই দক্ষিণ পাশ चारवरण नाहरत्र छेवात्र। বাহু আদি তিন ভাই वानमा मजन गारे वनक्षत्र युएक वांत्रन » খন হরি হরি বোল গগৰে উঠিছে রোল প্রেমার সকল লোক ভাসে। সঙরি° পরমানক ঠাকুর জীনিজানদ্দ **७**९ भात्र कुम्लावन मारम ॥३॥১৫९९॥

পাঠাকর

)। ইহা প-র-সা গুবির ২১৪৭ সংখ্যক পদ।
২। 'অভিবেক' ব, চ। ৩। 'বেশ' ব, ব। ৪।
'অয়কার' ক; 'অবোকার' প-র-সা। ৫। 'বাবে বেরি' প-র-সা। ৩। 'আনকে' ক, ব, প-র-সা। ৭ এলিকিবি' ক। ৮। 'নিত্যানক' ক, ব। and and it

জয় রে জয় রে জয় নিজানক্দ রায়।
পণ্ডিত রাঘব-ঘরে বিহরে সদার য়
পারিবদ সকল দেখরে পরতেক।
ঠাকুর পণ্ডিত সে করেন অভিবেক য়
নিজ্যানক্দ-রূপ বেন মদন সমান।
দীঘল নরান ভাত প্রসন্ন বরান য়
নানা অভরণ অলে বলমল করে।
আজামুলম্বিভ মালা অভি শোভা করে য়
অরূপ-কিরণ জিনি ছুখানি চরণ।
ক্রদরে ধরিয়া করে দাস বুন্দাবন য়
য়৴০য়১৫৭৮য়

পাঠান্তর

)। देश भ-त-ना भूबित २১३৮ मध्याक शहा

় তত্ত্ৰ পূৰ্বাভিষেক:।

वानचे ।>

श्रवधुनि-वाति वाबि कवि हावह পুন ভরি প্ন ভরিং চারি। কো জানে কাছে - লাগি অভিনিক্ইণ नीना वृत्रहें ना भावि ॥ (रत्रेट्ड म्यु॰ महन नानि वस् ।... সীভাগতি প্রতাহত পর । এ। बव बव कुलजी॰ यक्त मक्त्री তাহি দেই হাসি হাসি। কৰছ" গৌৰ পিড খামর লোহিড क्वर • बूबि शबकाणि । তাহিনে বছ পুক্ল-ৰোভৰ পণ্ডিত कामांचय बर्च बाम । অপদ্মণ চন্নিত द्दित गर हम्बिक् (शंक्षिणांन क्रानाम) ३३०॥>६१३॥

পাঠান্তর

> । देश भ-त-मा भूचित्र २२८२ ७ भ-त भूचित्र
> १ नरचाक भन । 'सामनी' इटन 'काटमान' भ-त ।
२ । 'भून' देखानि इटन 'भूनक छित छित्र' भ-त-मा ।
० । 'काट्ट' देखानि इटन 'कि नामि काट्ट भून
निक्टे भ-त । ८ । 'इनमी क' भ-त । १ । 'इटिट'
क, च, च, घ। ७ । 'कुनमी क' भ-त । १ । 'जिट'
देखानि इटन 'छिर भून' देखानि भ-त । ৮ । 'मिट'
क, च, च, घ, भ-त-मा । ১ । 'का बादन कछह्र'
क, च, च, घ, भ-त-मा । ১ । 'मन घमिक्ट' इटन
'इमक्छ एकन' भ-त । ১ । 'मन घमिक्ट' इटन

অধ শ্রীকৃষ্ণতা দেবাভিষেকঃ।

क्नानि ।>

ভর পাই অতি দেব স্থরপতি আসিয়া গোকুলপুরী। হর্ষিত হৈয়া নিভূতে পাইয়া भट्ड कुक-भम भति ॥ স্তুতি ৰতি করি পুন পুন পড়ি जनवाय क्यारेल। দেবগণ লৈয়া একত্ত হইরা कुक-विध्वक देवन । আলিয়া গ্ৰন্থতি কৃষ্ণ-শিরোপরি हानेएक छटनक कीत । শির পর চালি॰ দেবসণ মেল वाकान-शवात नीत ह विष्ठायती मोट পুন্ত বাবে गक्रति वश्व भाव । का का स्वी পড়ে স্বভি-থাণী 🐬

(प्रव-क्लब्र **মহাসহৈ। ২সৰ** নানা মতে পুলা কৈল। হৈয়া দণ্ডৰতে পড়িলা ভূমিতে **ठब्रटन भवन टेनन ॥** ुके देशा हित ७ ७ वृष्टि॰ कवि जब दमवंशन शादन । शम-त्रक देशका অভয় পাইয়া গেলা সব দেবগণে वाहेना खरन निम्मन नम्मन লোকে কেহ না কানিল। গাইল মাধ্ব কৃষ্ণ-অভিবেক (प्रवर्गात (यवा देकन ॥)२॥)१४०॥

>। ইহাপ-র-সাপুথির ২০৫০ সংখ্যক পছ। ২। 'হর্ষিত হৈরা' ব্লে 'হ্রিষ হইরা' য়। ৩। 'ছালে' য়। ৪। 'লুট' প-র-সা।

পাঠান্তর

অধ শ্রীরাধিকায়। অভিবেকো বধা।

"প্রীত্যা মজল-গীত-নৃত্য-বিশস্থীণানিবাডোৎসবৈ"রিত্যানি বিলাপ-কুসুমাঞ্চলৌ।

• তদ্বধা।

करियोग ।>

এক দিন সুন্দৰি

সব সহচরিগণ সন ।

বীবৃন্দাবনে

বৈঠন কোডুক-রল ॥
ভহিঁ পুন ভগবভি

অল-বনদেবিকি সাধ।
রাইক শুভ অভি
বেক করণ লাবি

वाका कानिक गाँव ।

কড খড়ং ঘট ভরি বারি স্থ্বাগিত ভাহি করল উপনীভ দ্ধি ছুত গোরস कुक्य हन्दन কুসুম-হার সুগলীত ॥ বাস ভূষণ উপ-হার রসায়ণ আনল ক্ত পরকার। देवर्रंत भाग-मुसि রতন-বেদি পর नियग्न (पर व्यवकात ॥ **बिवृत्या**वन ভূমীশ্বরি করি क्राविक कक्र व्यक्तित्व । टोपिट्ग अत्र अत्र মঞ্জ-কলরব चानरम (मारन (एथ १)०॥)०৮)॥ পাঠান্তর

১। ইহা প-র-সা পুথির ২১৫১ সংখ্যক পদ। ২। 'কড' প-র-সা। ৩। 'রুসলিড' ক, ধ; 'সুষ্লিড' প-র-সা। ৪। 'ভূবণ' ক।

CHEMINIS IS ৰীণা উপাঞ্চ ভক্ষ কত বাছত मधुत भूवण मदण कतलांग। टोमिटन जरुहित कर अप त्रव कित নাচত গাওত পরম ংসাল । দেখ দেখ রাইক শুভ অভিষেক। यमन हैं। म क्यू क्वक मुकूत छन् निश्मन नीरत सनरकर भररङक । বতন করি রাইক ভগৰতি কঙহ শির পরি॰ চালই বাসিত বারি। শত-মুখি স্বংধুনি সুমেক্ল-শিখনে কমু **Cबटन नितरम यदि औरक दनकाति #** ৰুঞ্চিত কুন্তন বাহি পড়রে জল চামরে মোতিম চরকে ঋশু। হেরইতে অধিল नत्रन भन ज्लादाः

जानत्य द्वारन जन्म-७५ १) ८१> ८৮२३

পাঠাতৰ

>। ইহাপ-র-সাপ্থির ২১৫২ সংখ্যক পদ। ২। 'নীবে নির্মণ'ক, খ। ৩। 'প্র'প-র-সা। ৪। 'কুশ্বে'ক, খ, প-র-সা।

द्या प्राप्त ।>

সিনান সমাধান মুচল অল। প্ৰিরণ নালিম বসন সুরস । শাপময় অভরণ ভগবভি দেশ। याहाँ (यह (भाष्ट्रम भिष्य (सम ॥ मिन-मिन्द्र माहा जात्रणि वाह । রতন-সিংহাসনে বৈঠল বাই 🛔 वनक्त-भाग (प्रमा वन एवि। क्षेत्र वस्त्रत वह या त्रवि ॥ दुम्मावद्यमित्र कि (छन नाम। **छाहित्न मिल्का विभाशा टेक्टम बाटम ॥** মধুমতি ছত্ৰ° ধরল ধনি মাধ। চিত্ৰাণ বিচিত্ৰ দণ্ড ধরুণ হাত 🛭 চম্পকলভিকা চামর করু গায়। भाग-कला भाग मध बोकन बाह्र । **७गर्वाठ भक्ष्मोभ क्रत (स्म।** আরতি করি নিরম্ভন কেল # আর সব সহচরি মঞ্ল গার। त्याश्न छुत्रशि (नशंत्रहे कांत्र ॥.

126126rel

পাঠান্তর

)। वेदा शं-त-ना श्वित २०२० नश्याक शृक्ष।
२। '(भावन' क, क। ०। 'बातन' क, ६। ६। 'व्यव्याक क, व, शं-त-ना। ६। 'व्यव्याक क, व्यव्याक शंक्रा का ७। 'द्वव्याक का क, व, ह, शं-त-ना। ६। 'व्यव्याक का क, व, ह, शं-त-ना। ६। 'व्यव्याक का

भूतम्ह औक्क्कां छिएत्रका यथा।

ভাষা ।

আকাশ ভরিরা উঠে জর জর ধবনি ।

নাচে শিব জ্বনা ইক্স চক্স দিনমণি ॥

জন্মতিথি-পূকা কৃষ্ণচক্র-অভিবেক ।

স্কুর-নর-মূনিগণ দেখেং পরতেক ॥

পঞ্চপব্য পঞ্চারুত শত ঘট জলো ।

জর জর দিয়া কৃষ্ণচক্র-শিরে ঢালে ॥

মানা বস্ত্র-বাভ গীত ভুন্দুভির বোল ।

এ তিন ভূবনের লোক বলে হরিবোল ॥

কলরব মহোৎসব জগত বেড়িরাণ ।

কান্দে হাসে তেনেন ভাসে ভূমিতে পড়িরা ॥

অখিন-জ্বনাও-নাথ নন্দের নন্দন ।

নরসিংহ দেব মানেণ চরণে শরণ ॥

১১৬৪১৫৮৪॥

পাঠান্তর

३। देश श-त्र-ता श्रीवेत २०१८ मः व्याप्त श्रम ।
 १ (एवर पा) १० (क्षित्रा) व ।
 १ (एवर पा) १० (क्षित्रा) व ।

CASIS 15

আছু বনি নব অভিবেক গোবিক্ষকি।
পর্মানন্দ প্রোম-ত্ত্ব-কদ্মকি ॥
কাকভ নীল-কলিনি মুখ-শোহাং।
ব্যেষ্ট্র অখিল-ভূবন-মন-মোহাং॥
গোরস কবি কৃত বলদিক নীরে।
গাগরি ভবি ভবি ছার্টং শিবে॥

বাজত ঘণ্টা॰ ভাল মুধজ।
জন্ন॰ ধেই স্থান-নামীনণ নজ।
বলি বলি বাডাই চরণানবিক্ষা।
পরমানককে পত্ত জীগোবিক্ষা। ৭৪১৫৮৫৪

रेणापि जिल्लक ।

পাঠাত্তর

- ১। ইহা প-র-সা পৃথির ২১৫৫ সংখ্যক পদ।
 । 'লোভা' প-র-সা। ৩। 'লোভা' প-র-সা।
 । লোভাই' সা। ৫। 'ভাই' সভা' প্রস্কান
- । চরিউ' ব। ১। বিটা কভ' পর্-সা।
- 61 '## ##' TI

জর জর গোরচজ্র জর নিত্যানন্দ ।
জরাবৈতচন্ত্র জর গোর-ডক্তবৃদ্দ ।
জর রূপ সনাতন ভট্ট রগুনাধ ।
শ্রীজীব গোপাল ভট্ট দাস রগুনাধ ।
শ্রীজীব গোপাল ভট্ট দাস রগুনাধ ।
শ্রীজাচার্য্য প্রভু জয়ং করুণা-সাগর ।
কুণা করি দেহং নিজ প্রেম-ভক্তি বর ।
ঠাকুর বৈক্ষব গোসাঞি দল্লা কর বোরে ।
দত্তে ভূগ ধরি ভাকেং এ দীন পাবরে ॥

ইভি একজিংশৎ পরবঃ। পাঠাত্ত্ব

)। हेंदो श-त-मा श्रुवित २०१० मरवाक श्रुव। करे नहीं चण्डा नश्त्रारा भनना कविरम, करे गजरवत निर्माह नव-गरवा। कर्नाह दिनो एक बहिना देदा गोन्ड स्ट्रेन मा। २। '(मात' क्रुवं। ०। '(स्टि' क्रुवं। ०। 'क्रांकि' ग-प्र-मा।